AAP BEETI

मोहिंदर सिंह रंधावा

अनुवादक

TRIPT KAUR

साथ
MANMEET KAUR

जून 2020

मूलतः यह पुस्तक 1985 में नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली द्वारा पंजाबी (गुरुमुखी) में प्रकाशित की गई थी।
यह अनुवाद 2014 के पुनर्मुद्रण का है, और इसका वित्तपोषण ओरिएंटल ट्रांसलेशन फंड द्वारा किया गया था।
रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड।

© रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड

अनुवादक की टिप्पणी

ऐतिहासिक व्यक्तित्व मानो समय में ठहर से गए प्रतीत होते हैं। उनका जीवन दो तिथियों - जन्म और मृत्यु - में सिमट जाता है और उनके बार-बार उद्धृत किए जाने वाले शब्दों के माध्यम से संरक्षित हो जाता है। जन स्मृति अतीत की इस प्रतीतिक रूप से स्थिर प्रकृति को संघर्ष और विजय, प्रेम और विरह की मार्मिक कहानियों में बदल देती है, जिससे इतिहास से जुड़े जीवन जीवंत हो उठते हैं। मोहिंदर सिंह रंधावा, जिनकी प्रतिमा आंद्रेटा स्थित शोभा सिंह की कला दीर्घा की शोभा बढ़ाती है और जिनका नाम चंडीगढ़ के गलियारों और सड़कों पर गूंजता है, अपनी आत्मकथा में

समय और स्थान की सीमाओं को पार करते हैं। उनका वृत्तांत इतिहास की स्थिरता को गतिशील रूप से व्यवस्थित और व्याख्यायित करते हुए उसे एक गतिशील धारणा में बदल देता है, जिससे पाठक राजनीतिक व्यक्तित्वों और स्थानीय जनजातियों से उसी विस्तार से परिचित हो पाते हैं। उन्होंने अपने संपर्क में आए हर व्यक्ति पर अपनी छाप छोड़ी।

अपने शानदार करियर में, रंधावा ने कई उपलब्धियाँ हासिल कीं: भारतीय सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले कुछ ही लोगों में से एक होने से लेकर, संयुक्त प्रांत में एक अधिकारी के रूप में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्य करने तक; विदेशों में कृषि सम्मेलनों में ब्रिटिश और स्वतंत्र भारत का प्रतिनिधित्व करने तक; विभाजन के दंगों के दौरान दिल्ली के उपायुक्त के रूप में कार्य करने तक; नवगठित पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के पुनर्वास तक; ग्रामीण विकास और पुस्तकालयों की स्थापना के लिए कार्य करने तक; कांगड़ा और गुलेर चित्रकला तथा गद्दी लोगों की लोक परंपराओं का संग्रह और दस्तावेजीकरण करने तक; खाद्य असुरक्षा की समस्या से निपटने के लिए उत्तरी भारत में हरित क्रांति को लागू करने तक; और चंडीगढ़ के मुख्य आयुक्त के रूप में नए शहर को आकार देने तक। यह लंबी सूची पूरी नहीं है। रंधावा ने कला इतिहास, कृषि, प्राकृतिक विज्ञान और विभाजन शरणार्थियों के पुनर्वास जैसे विविध विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं। अपनी आत्मकथा में, उन्होंने औपनिवेशिक और स्वतंत्रतोत्तर भारत की राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वे भारतीय राष्ट्र-राज्य के निर्माताओं का स्पष्ट मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं, तालुकदारों, ब्रिटिश अधिकारियों और धार्मिक समुदायों के समाजशास्त्रीय चित्र प्रस्तुत करते हैं; और पंजाब, संयुक्त प्रांत और दिल्ली के परिदृश्यों का वर्णन करते हैं। 'आप बीती' हमें उन गलियारों में ले जाता है जहाँ नेहरू और पटेल ने निर्णय लिए, उन पुस्तकालयों में जहाँ बच्चों को पढ़ना सिखाया गया, और पहाड़ियों में बिखरे हुए गाँवों में ले जाता है।

रणधावा की आवाज़ के अलावा, 'आप बीती' में उनकी बड़ी बहन हरबंस कौर और उनकी पत्नी इकबाल कौर की आवाज़ें भी दर्ज हैं। हरबंस कौर ने पुस्तक के पहले सात अध्याय लिखे हैं, जिनमें उनके वंश, परिवार के प्रारंभिक अनुभवों और बचपन व स्कूली शिक्षा से जुड़े किस्सों का विस्तृत वर्णन है। रणधावा की पत्नी इकबाल कौर ने बाग में अपने जीवन (और बाग प्रबंधक के रूप में अपने जीवन) के वर्णन के साथ

पुस्तक का समापन किया है; यह जीवन चंडीगढ़ जैसे पास के शहर की भागदौड़ से दूर होने के बावजूद काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा।
रणधावा की लेखन शैली स्पष्ट और संवादपरक है, लेकिन विषयवस्तु में बदलाव और भावों के उतार-चढ़ाव के कारण कुछ स्थानों पर लेखन में थोड़ी अटपटीपन आ जाती है। उनके विवरण तथ्यात्मक हैं और वे छोटे-छोटे वाक्यों में लिखते हैं। वाक्य अचानक समाप्त हो जाते हैं; वे अगले विषय पर चले जाते हैं और फिर पिछले संदर्भ पर लौट आते हैं। हालांकि, पुस्तक के एक भाग में वर्णित प्रसंगों को अक्सर दूसरे भाग में विस्तार से बताया गया है या दोहराया गया है, संभवतः इसका कारण यह है कि कई अध्याय मूल रूप से समाचार पत्रों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए थे।
मुझे जिन मुख्य समस्याओं का सामना करना पड़ा, वे थीं सांस्कृतिक काल से अपरिचित होना, पंजाबी की दोआबी बोली के शब्दों को समझने में कठिनाई (मैं पोआदी बोली बोलता हूँ), और उन विचारों और शब्दों का अनुवाद करने की चुनौती जिनका अंग्रेज़ी में सटीक पर्याय नहीं है। विशेष रूप से, पेड़ों और पौधों के स्थानीय नाम, वाद्य यंत्र, पक्षी, जाति के नाम, पंजाबी में स्थानों के नाम, पंजाबी में लिखे गए अंग्रेज़ी नामों का अंग्रेज़ी में अनुवाद, सक्रिय से निष्क्रिय में परिवर्तन और एक ही वाक्य में काल के अंतर, कुछ ऐसे मुद्दे थे जिनका मुझे समाधान करना पड़ा। मुझे इस बात को लेकर दुविधा थी कि क्या मुझे पंजाबी मूल शब्द (उदाहरण के लिए, रोटी) को बनाए रखना चाहिए या उसका अंग्रेज़ी रूप (बिना खमीर वाली रोटी) लिखना चाहिए, क्योंकि मैं पठनीयता और लेखन के मूल भाव को बनाए रखने के बीच संतुलन पर विचार कर रहा था।
यह पाठ कई भाषाओं का संगम दर्शाता है: दोआबी पंजाबी, अंग्रेजी में छपे अंग्रेजी वाक्यांश जो पुस्तक की गुरुमुखी लिपि में प्रयुक्त हैं, कांगड़ा क्षेत्र की पहाड़ी पंजाबी और अन्य भाषाएँ।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। इस अनुवाद में गद्दी समुदाय की भाषा, अदालती मामलों में प्रयुक्त शैलीगत कानूनी उर्दू (जिनकी सुनवाई रंधावा ने जिला मजिस्ट्रेट के रूप में की थी), और संयुक्त प्रांत में अपने कार्यों से संबंधित अध्यायों में प्रयुक्त हिंदी और अवधी वाक्यांश शामिल हैं। उर्दू और हिंदी के मेरे व्यावहारिक ज्ञान ने इन्हें अनुवाद

करने में सहायता की। पहाड़ी भाषा की कविताओं और लोकगीतों के लिए, मेरे समुदाय के बुजुर्गों से हुई चर्चाओं और मेरी माता मनमीत कौर के दोआब क्षेत्र (जो पहाड़ियों के निकट स्थित है, जिससे भाषाई समानताएं हैं) में बचपन के अनुभवजन्य ज्ञान ने महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। रामायण और महाभारत जैसे हिंदू मिथकों और सिख गुरुओं की कहानियों (जो रंधावा की सांस्कृतिक चेतना में समाहित थीं) से मेरी परिचितता ने अनुवाद प्रक्रिया को सुगम बनाया।

मैंने संगीत वाद्ययंत्रों और जाति नामों के निकटतम पर्यायवाची शब्दों की खोज करके, विदेशी स्थानों के नामों के लिए मानचित्रों का उपयोग करके, जहाँ संभव हो पौधों के वैज्ञानिक नाम प्रदान करके, पंजाबी संज्ञाओं को बनाए रखकर और उन्हें शब्दावली में समझाकर, तथा पाठ के अनुसार काल और वाच्य के परिवर्तनों का पालन करके चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास किया है, सिवाय उन मामलों के जहाँ वे अर्थ की स्पष्टता में बाधा डालते हों। जानवरों और पक्षियों के नामों का अनुवाद पंजाब वन्य पक्षी और वन्य पशु संरक्षण अधिनियम 1933 के संदर्भों के अनुसार किया गया है, जो इस क्षेत्र के विभिन्न जीव-जंतुओं की प्रजातियों के स्थानीय, अंग्रेजी और वैज्ञानिक नामों की सूचियाँ प्रदान करता है। जिन पौधों के वैज्ञानिक नाम मुझे नहीं मिल सके, उनके नाम मैंने लिप्यंतरित किए हैं। पाठकों के सुझाव किसी भी कमी को दूर करने में बहुमूल्य होंगे। कविताओं, लोकगीतों और मुहावरों के अनुवाद भी जहाँ संभव हो फुटनोट में लिप्यंतरित किए गए हैं, ताकि भाषा से परिचित लोगों को तुलना करने में सहायता मिल सके। पाठ में प्रयुक्त गैर-अंग्रेजी शब्दों को मैंने केवल तभी इटैलिक में लिखा है जब उनका पहली बार प्रयोग किया गया हो। ये इटैलिक शब्द शब्दावली में देखे जा सकते हैं। मैंने इस अनुवाद के लिए पटियाला स्थित पंजाबी विश्वविद्यालय के गुरुमुखी और शाहमुखी पंजाबी से अंग्रेजी शब्दकोश का उपयोग किया है।

'आप बीती' का अनुवाद करना एक ज्ञानवर्धक अनुभव रहा है। भाषाई अभ्यास के अलावा, इसने मुझे पौराणिक कथाओं, गद्दी समाज, विभाजित पंजाब और युद्धकालीन लंदन के बारे में शोध जैसे सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग करने और एक ऊर्जावान अधिकारी के आकर्षक जीवन का अन्वेषण करने के लिए प्रेरित किया। विभाजन के विद्यार्थी के रूप में, रंधावा द्वारा दंगों और शरणार्थियों का वर्णन विभाजन शरणार्थियों के जीवन में राज्य के हस्तक्षेप के मेरे विश्लेषण को और अधिक गहराई प्रदान करता है। एक और जुड़ाव जो उभरता है, वह है चंडीगढ़: चंडीगढ़ निवासी होने के नाते,

रंधावा द्वारा हमारे शहर के निर्माण के वर्णन का अध्ययन करना मेरे लिए मूल्यवान ज्ञान का स्रोत रहा। अंत में, 'आप बीती' ने मुझे एक महत्वाकांक्षी, सक्षम और उत्साही व्यक्ति से परिचित कराया, जो अपने अतीत से प्रभावित होते हुए भी भविष्य की ओर अग्रसर था।

यह अनुवाद संयुक्त प्रयास का परिणाम है। यह मेरे और मनमीत कौर के बीच हुई चर्चाओं से निकला है। हमने मिलकर अर्थ को गहराई से समझा, व्याख्या में सुधार और सुधार किए, और पंजाबी और अंग्रेजी भाषाओं के बीच भिन्नता के बावजूद स्पष्टता लाने के सर्वोत्तम तरीकों पर विचार-विमर्श किया। उनके बिना यह संभव नहीं होता। मैं मृणालिनी वेंकटेश्वरन का भी आभारी हूं, जिनकी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पीएचडी थीसिस को इस अनुवाद से समर्थन मिला है। जो एक अनौपचारिक बातचीत के रूप में शुरू हुआ, वह एक समन्वित प्रयास में बदल गया। उनके प्रश्नों, सुझावों और संपादनों से इस अनुवाद को और निखारा गया, जिसके लिए मैं वास्तव में उनका आभारी हूं। मैं रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के ओरिएंटल ट्रांसलेशन फंड का इस कार्य में सहयोग देने के लिए ऋणी हूं। मृणालिनी और अपनी ओर से, मैं लेखक के पुत्र श्री जतिंदर रंधावा को भी धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मुझे यह अनुवाद करने की अनुमति दी।

Tript Kaur
1 जून 2020

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

AAP BEETI

('आत्मकथा')

मोहिंदर सिंह रंधावा द्वारा

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना 9

I. बचपन

1. बचपन की मीठी यादें 17 2. एक खुशहाल घर 26 3. मुसीबतों का पहाड़ 33 4. ऊना 41 5. बोडलान 48 6. मुक्तसर 52 7. बोडलान गांव वापसी 62 8. गांव की चहल-पहल 70

II. छात्र

9. मिशन कॉलेज लाहौर 81 10. गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर 86 11. 1 तख्त या तख्ता 90 12. जर्नी अब्रॉड 97 13. लंदन 102

III. कार्य

14. सहारनपुर – बागों का घर 109 15. फैजाबाद (ग्राम सुधार का अनुभव) 117 16. अल्मोड़ा – कुमाऊं पर्वतमाला की सुंदरता 125 17. इलाहाबाद और आगरा 133 18. रायबरेली के तालुकदार 140 19. रायबरेली के जिला सचिव के हित 144 20. अंग्रेज और भारतीय अधिकारियों के बीच संघर्ष 150 21. रायबरेली से दिल्ली तक 155

1. शाब्दिक अर्थ, सिंहासन या तख्ता। यहाँ 'तख्ता' से तात्पर्य जमीन पर बैठने के लिए रखे गए लकड़ी के तख्ते से है, न कि लाक्षणिक सिंहासन की भव्यता से।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

22. मेरी पहली हवाई यात्रा 160 23. मुसीबत को न्योता देना 169 24. डर, डर और अत्यधिक डर 175 25. पंजाब का विभाजन और पंजाबी नेता 182 26. महान बलिदान 186 27. स्वतंत्रता और पंजाबियों का विस्थापन 191 28. दिल्ली के नेता और दंगे 197 29. विस्थापित पंजाबियों का पुनर्वास 200 30. पंजाब में पुस्तकालयों के नेटवर्क का विस्तार 208 31. पंजाब के गांवों का विकास 212

IV. कांगड़ा चित्रकला और लोकगीतों की खोज

32. Damthal Ashram 221 33. Nurpur 228 34. Nagrota 230 35. 2 “Palma Da Chilke Pani” 242 36. Andretta 249 37. Baijnath 256 38. Maharaj Nagar 263 39. Gwal Tilla 268 40. Sujanpur Tira 273 41. The Discovery of Guler Paintings 282 42. The History of Guler Painting 287 43. Kangra 296 44. Jwala Mukhi 306 45. “Aayega Nadaun, Jayega Kaun”3 313 46. The Journey of the Beas 318 47. Dehra Gopipur 324 48. Dada Sibba 329 49. “Loki Kangre Di Pyaari”4 335 50. The Gaddi people 345 51. The Folk Songs of Kangra 357 52. “Gallan Hoyian Beetiyan”5 365

2. कांगड़ा के एक पहाड़ी लोकगीत के बोल। मोटे तौर पर अनुवाद है 'पालम का ठंडा पानी'। 3. 'जो नादौन आता है, वह यहाँ से कौन जाता है?'
4. एक पहाड़ी गीत के बोल। इसका अनुवाद है 'कांगड़ा के लोग अधिक प्यारे हैं'। 5. एक पहाड़ी गीत के बोल। इसका अनुवाद है 'बीते हुए शब्द'।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

V. राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा की समस्या का समाधान करना और सौंदर्यीकरण करना चंडीगढ़

53. लाखों लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा की समस्या का समाधान 373
54. चंडीगढ़ 379
55. बाग में रहना 387
56. एक सड़क का इतिहास 397
57. खेती में हमारा अनुभव 407

—

इस अनुवाद में यह भी शामिल है:

शब्दकोष

परिवर्णी शब्द

उत्तर भारतीय पंचांग के महीने

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

प्रस्तावना

(पृष्ठ 9)6

वर्ष 1972 मेरे जीवन का एक सफल वर्ष था। कृषि और कृषि विज्ञान के विकास के क्षेत्र में मैंने जो कार्य किया, उसे भारत सरकार ने मान्यता दी और इसके लिए मुझे पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। कोलंबस स्थित ओहियो विश्वविद्यालय ने मुझे मानद डी.एससी. की उपाधि प्रदान की। उसी वर्ष, प्रोफेसर दलीप सिंह 'दीप' ने मेरे पंजाबी लेखों का विश्लेषण और चयन किया और मुझसे कहा कि वे मेरी जीवनी लिखने के लिए उन्हें समय दें। मैंने उनसे कहा कि वे मेरी जीवनी में केवल मेरी प्रशंसा ही करेंगे, इसलिए यह एक बहुत ही उबाऊ पुस्तक होगी। जीवनी का अर्थ है कि जो कुछ भी अच्छा या बुरा हुआ है, उसे सच्चाई से लिखा जाना चाहिए, इसलिए मुझे इस पर स्वयं काम करना चाहिए। 'दीप' से बात करने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि पंजाब के कुछ लोग मेरी पृष्ठभूमि के बारे में जानने में रुचि रखते हैं। पंजाबियों को भी लगता है कि मैंने पंजाब की प्रगति में योगदान दिया है। विभाजन के बाद, मैंने प्रवासियों के पुनर्वास और भूमि वितरण के लिए काम किया; मैंने ट्यूबवेल खुदवाने, बिखरी हुई जमीनों को समेकित करने और गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ने का काम शुरू किया—इन सभी ने आधुनिक कृषि की शुरुआत की और लोगों का जीवन आसान बनाया। मैंने चंडीगढ़ को फूलों से सजाया, संग्रहालय बनवाए, डॉक्टरों, वैज्ञानिकों, लेखकों और कलाकारों को कम दरों पर जमीन के भूखंड वितरित किए और इस नए शहर में उनके जीवन को सुगम बनाया। शायद मेरे सबसे बेहतरीन प्रयास पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना को पंजाबी गांवों के विकास का केंद्र बनाने में

समर्पित रहे।

(पृष्ठ 10)
जब इंसान को लगने लगता है कि वह हर क्षेत्र में सफल है और जीवन सुचारू रूप से चल रहा है, तभी अचानक कुछ घटनाएं बाधाएं खड़ी कर देती हैं। मोगा शहर में कुछ छात्रों और सिनेमाघर मालिक के बीच टिकटों को लेकर झगड़ा हो गया और पुलिस को गोलियां चलानी पड़ीं। यह विवाद बढ़ता गया और पंजाब के सभी स्कूलों और कॉलेजों में आंदोलन फैल गया - इसका असर मेरे विश्वविद्यालय पर भी पड़ा। अंत में विश्वविद्यालय को बंद करना पड़ा। इसलिए मैंने अपने जीवन की कहानी लिखने का फैसला किया क्योंकि उस समय सरकारी काम करना संभव नहीं था। आत्मकथाएं कहानियों से कहीं अधिक रोचक होती हैं।
मेरी बड़ी बहन हरबंस कौर को हमारे बचपन की बहुत सी बातें याद थीं। महिलाओं की याददाश्त पुरुषों से कहीं बेहतर होती है। हरबंस कौर मुझसे तीन साल बड़ी हैं। बचपन में वो पढ़ाई में मुझसे कहीं बेहतर थीं। उन दिनों लड़कियों की शिक्षा का चलन नहीं था, इसलिए वो प्राथमिक स्तर तक ही पढ़ पाईं। अगर वो आज के ज़माने में पैदा होतीं, तो किसी प्रतिष्ठित पेशे में काम कर सकती थीं। एक शादी में हमारी मुलाकात हुई थी, तभी मैंने उन्हें हमारे शुरुआती दिनों के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया। ये 1973 की बात है; उन्होंने चार महीने बाद मुझे अपने बचपन की यादें भेजीं। इस किताब के पहले सात अध्याय हरबंस कौर ने लिखे हैं। मैंने इन्हें संपादित और क्रमबद्ध किया है। बाकी अध्याय मैंने लिखे हैं। इस तरह मैंने 1947 तक के अपने अनुभवों के मुख्य अंश लिखे हैं।
मैंने ये सभी लेख सरदार प्रीतम सिंह को सौंप दिए और उन्होंने इन्हें नवंबर 1976 से अक्टूबर 1978 तक अपनी पत्रिका 'आरसी' में एक-एक करके प्रकाशित किया। इन लेखों को पढ़ा गया।

तुलना करने वालों के लिए, मूल पाठ के अनुसार पृष्ठ संख्याएँ दी गई हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। यह अनुवाद कई पंजाबी विद्वानों और मित्रों द्वारा

सराहा गया है। 1909 और 1947 के बीच इस देश में एक बड़ा बदलाव आया। देश को आजादी मिली, लेकिन पंजाब को इसकी कीमत चुकानी पड़ी। लाखों लोग विस्थापित हुए और लूटे गए; उन्होंने सब कुछ खो दिया और अपने देश लौट गए। मैंने इस उथल-पुथल भरे दौर में जो कुछ देखा, उसे ईमानदारी से लिखा है।

कांगड़ा चित्रकला पर मेरा शोध विश्व भर में प्रसिद्ध है, और कांगड़ा चित्रकला पर मेरी पुस्तकें प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं। कांगड़ा चित्रकला पर मेरे शोध की पृष्ठभूमि इस प्रकार है:

(पृष्ठ 11)

1945 में, मैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) का सचिव बना और दिल्ली आ गया। स्वतंत्रता और विभाजन के बाद, मेरा तबादला उत्तर प्रदेश से पंजाब हो गया।8 जब मैं 1948 में पंजाब आया, तो वह टूटा-फूटा और खून से लथपथ था, और शरणार्थी शिविरों से भरा हुआ था। 1949 में, पंजाब सरकार ने मुझे भूमि वितरण का कार्य सौंपा। मैंने त्रिलोक सिंह और प्रेम नाथ थापर की मदद से इसे पूरा किया।9 हमने शरणार्थियों का पुनर्वास किया और कुछ नई योजनाएँ विकसित कीं। कांगड़ा में वाह चाय बागान नाम के चाय बागान थे। कांगड़ा के निवासी उन चाय बागानों को अपने नाम करवाना चाहते थे। 1951 तक मेरा कार्यभार कम होने के कारण, मैंने इस क्षेत्र का दौरा करने और उन चाय बागानों को देखने का निर्णय लिया। मैं अप्रैल 1951 में पालमपुर पहुँचा और घोड़े पर सवार होकर कुछ गाँवों का दौरा किया। मैंने धौलाधार पर्वतमाला को दूर से देखा था, लेकिन यह पहली बार था जब मैं इसे इतने करीब से देख सका। इस खूबसूरत घाटी को देखकर मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा, ठीक वैसे ही जैसे रंझा पर हीर को पहली बार देखकर पड़ा होगा।10 मुझे ऐसा लगा मानो मैं उन चोटियों को हमेशा देखता रहूँ। उन यात्राओं के दौरान मुझे चित्रकार शोभा सिंह से मिलने का अवसर मिला। उन्होंने आंद्रेटा के एकांत में अपने लिए एक झोपड़ी बना रखी है। हमारी बातचीत के दौरान शोभा सिंह ने भवारना के मियां राम सिंह के स्वामित्व वाले कांगड़ा चित्रों के संग्रह का जिक्र किया। इससे मुझे कांगड़ा कला का अध्ययन और विकास करने की प्रेरणा मिली।

इस दौरान मेरा तबादला अंबाला के आयुक्त के रूप में हो गया। जालंधर के आयुक्त को अंबाला के आयुक्त की तुलना में अधिक अपीलें प्राप्त होती थीं, और जालंधर के

आयुक्त की कुछ अपीलों पर अंबाला के आयुक्त ने भी सुनवाई की। मैंने कांगड़ा क्षेत्र की अपीलों पर सुनवाई की, ताकि मैं कांगड़ा की यात्रा अधिक बार कर सकूँ। उन दिनों, कांगड़ा की चालीस प्रतिशत पेंटिंग लाहौर से शिमला स्थित पंजाब संग्रहालय में स्थानांतरित कर दी गई थीं। ये लाहौर संग्रहालय के खजाने से भारतीय पंजाब के हिस्से का प्रतिनिधित्व करती थीं। इनमें से कई पेंटिंग असाधारण रूप से सुंदर थीं। मेरा मानना था कि कला की साठ प्रतिशत कमी को दूर किया जाना चाहिए। हमने अंबाला में एक विशाल सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया। इससे प्राप्त आय का उपयोग कई पुस्तकालयों की स्थापना के लिए किया गया, और कांगड़ा घाटी में पाई गई पेंटिंग को शिमला स्थित पंजाब संग्रहालय में लाया गया और वहाँ रखा गया।

7. त्रासदी के भाव को दर्शाने के लिए मैंने इस पर ज़ोर दिया है। 8. तब इसे संयुक्त प्रांत कहा जाता था, और आज स्वतंत्र भारत में राज्य सीमाओं के आंतरिक पुनर्गठन के बाद यह काफी हद तक उत्तर प्रदेश के साथ ही स्थित है। जब भी इस पाठ में 'यू.पी.' शब्द आए, कृपया इसे संयुक्त प्रांत पढ़ें।
9 या तिरलोक सिंह, वैकल्पिक उच्चारण।
10. त्रासदी से घिरे प्रेमियों का लोकप्रिय पंजाबी महाकाव्य; इसके कई संस्करण और वर्णन हैं, लेकिन सबसे प्रसिद्ध गाया और अध्ययन किया जाने वाला संस्करण वारिस शाह का 'हीर' है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैंने पंजाब सरकार को कला संग्रह के इस आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। पंजाब के मंत्रियों सरदार प्रताप सिंह कैरों और सरदार उज्ज्वल सिंह की मदद से, हमें कांगड़ा चित्रों की खरीद के लिए प्रतिवर्ष 20,000 रुपये मिलने लगे। इस प्रकार, हमने भारत के दूर-दराज के शहरों में भी जो भी कांगड़ा चित्र मिले, उन्हें खरीदकर पंजाब संग्रहालय में रखा। भारत के सूचना एवं कला मंत्रालय ने मुझे 1953 में कांगड़ा कला पर एक पुस्तक लिखने के लिए कहा। मैंने कलाकार सुशील सरकार और फोटोग्राफर मोती राम जैन को कांगड़ा घाटी के भ्रमण पर ले गया। हमने कांगड़ा,

गुलेर, लंबग्राम और नादौन के राजाओं के कला संग्रहों में कांगड़ा चित्रों की खोज की। उसी वर्ष, पंजाब सरकार ने मुझे पंजाब का विकास आयुक्त नियुक्त किया और मुझे राज्य के सभी गांवों का भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुनर्वास विभाग में अपने कार्यकाल के दौरान भी मैंने पंजाब के गांवों का भ्रमण किया था। परिणामस्वरूप, मैंने जो जानकारी एकत्रित की, वह गांवों के विकास के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुई। कांगड़ा के गांवों में सेवा करना मेरे लिए सबसे सुखद अनुभव रहा।
अक्टूबर 1953 में, मैं शिमला से पंजाब की नई राजधानी चंडीगढ़ आ गया। यहाँ रहते हुए मुझे श्री डब्ल्यू.जी. आर्चर की पर्वतीय कला पर लिखी पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि श्री आर्चर ने लंदन में बैठकर पर्वतीय कला के बारे में कुछ धारणाएँ बनाई थीं और वे सभी सही साबित हुईं। श्री आर्चर के ईमानदार और गहन शोध कार्य के कारण मेरे मन में उनके प्रति बहुत सम्मान उत्पन्न हुआ। मैंने उन्हें व्यक्तिगत रूप से न जानते हुए भी पत्र लिखा। उन्होंने मुझे सौहार्दपूर्ण उत्तर दिया। मैंने उन्हें कांगड़ा आने का निमंत्रण दिया। मार्च 1954 में जब वे मुझसे मिलने आए तो मैंने उनका सहर्ष स्वागत किया। मैंने कांगड़ा घाटी की कई बार यात्रा की है। 1953 से 1962 के दौरान की गई मेरी यात्राओं का विवरण भी इस पुस्तक में शामिल है। मार्च 1959 से अप्रैल 1960 तक की मेरी यात्रा के दौरान प्रसिद्ध विद्वान श्री डब्ल्यू.जी. आर्चर और विख्यात भारतीय उपन्यासकार मुल्क राज आनंद भी मेरे साथ थे। 1962 में मेरी मुलाकात प्रोफेसर गैलब्रेथ से हुई। वे दिल्ली में तैनात अमेरिकी राजदूत थे और भारत के शुभचिंतक और मित्र थे। उन्हें भी कांगड़ा की कला से प्रेम हो गया और हम मित्र बन गए। मैंने 1962 में उनके साथ घाटी की यात्रा की और दिल्ली लौटने पर 'भारतीय चित्रकला' नामक पुस्तक लिखी।

(पृष्ठ 13)
जिस प्रकार कांगड़ा की कला 11 शिंगार रसों से परिपूर्ण है, उसी प्रकार कांगड़ा के लोकगीत प्रीत रसों से परिपूर्ण हैं।
सुंदर हिरनी जैसी आंखों वाली, दमकते शरीर वाली स्त्रीयां, विरह की आग से तड़पती हुई, अंधेरी रातों में छतों पर खड़ी होकर दूर चले गए प्रेमियों को याद करती हैं और उन्हें अपने दिल की बातें भेजती हैं। वे बादलों और पक्षियों से अपने प्रेमियों को अपनी

स्थिति बताने की प्रार्थना करती हैं। मिलन के दृश्य और गीत कहीं अधिक आनंददायक होते हैं। बिछड़े प्रेमियों का मिलन आत्मा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। आत्माएं जीवन से मिलती हैं, ठीक वैसे ही जैसे ज्वाला ज्वाला से मिलती है। यही परम सुख है; यही ईश्वर से मिलने का दर्शन है। जिन्होंने सच्चे प्रेम के सार का अनुभव नहीं किया है, उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ कर दिया है, चाहे वे कितनी भी प्रार्थना करें, जंगलों में कितना भी भटकें।

भरत के नाट्यशास्त्र में, श्रृंगार रस नौ रसों में से एक है (जिसका अर्थ है स्वाद/सार), और यह कामुक प्रेम, आकर्षण या सौंदर्य का प्रतीक है। नौ रसों का सिद्धांत भारतीय शास्त्रीय कला रूपों, चाहे वह संगीत, रंगमंच, नृत्य, कविता या मूर्तिकला हो, का आधार है। पंजाबी में श्रृंगार का उच्चारण शिंगार होता है। यद्यपि प्रीत रस नाट्यशास्त्र में सूचीबद्ध नहीं है, फिर भी इसे श्रृंगार रस के अंतर्गत ही रखा जाता है। यहाँ, 'प्रीत रस' का प्रयोग प्रेम के सार को दर्शाने के लिए लाक्षणिक रूप से किया गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। ईश्वर प्रेम है, निःशर्त सच्चा प्रेम जो आपको शरीर की भौतिकता को भुला देता है; एक ऐसा प्रेम जो परमानंद के सागर में तैरता है। कांगड़ा के इन गीतों में अनेक हृदयों की सच्ची आवाज़ है। ये हमें एक नाजुक दुनिया में ले जाते हैं, सच्चे प्रेम की दुनिया में।

कांगड़ा के गीतों पर अपने शोध और अध्ययन के माध्यम से मैंने पाया कि पंजाबी कांगड़ा, बिलासपुर, सुकेत, मंडी, जम्मू और चंबा की भी भाषा है। यह निष्कर्ष गहन शोध के बाद सामने आया और यह विशेष रूप से आज के समय में महत्वपूर्ण है, जब भावनाओं में बहकर लोग झूठ बोलने से भी नहीं हिचकिचाते। इस शोध ने सिद्ध किया कि पंजाबी भारत माता की आम भाषा है और यह किसी समुदाय या धर्म की निजी संपत्ति नहीं है। इस घटना से कांगड़ा के लोकगीतों की महानता और भी सिद्ध होती है। मैंने पंजाब के प्रसिद्ध कवि मोहन सिंह को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में मानद प्रोफेसर नियुक्त किया। एक दिन मैंने निर्णय लिया कि विश्वविद्यालय में उनकी स्मृति में एक फव्वारा स्थापित किया जाए, जिस पर उनकी कविता की एक-दो पंक्तियाँ उकेरी जा सकें। मुझे आम के पेड़ पर लिखी उनकी कविता बहुत पसंद आई, लेकिन वह बहुत

लंबी थी। मैंने उनसे कहा कि कांगड़ा के लोकगीतों में बहुत से हृदयस्पर्शी गीत मिलते हैं। एक युवती गर्व से अपने प्रेमी से पूछती है:
“हे चूड़ी बेचने वाले, मेरे लिए आकाश से एक स्कर्ट सिल दो, जिसकी किनारी धरती से बनी हो।” एक अन्य गीत में, दुर्घटना में अपने प्रेमी को खो चुकी नायिका अपने शोक को इस प्रकार व्यक्त करती है:

(पृष्ठ 14)
“अगर मेरी कमीज़ फट जाए तो मैं उसे सिल सकती हूँ; अगर मेरा आसमान फट जाए तो मैं उसे कैसे जोड़ूँ?” मोहन सिंह ने मेरे सवाल पर बहुत सोचा, लेकिन वे इस तरह का कोई गीत प्रस्तुत नहीं कर सके।
मैंने इस पुस्तक में पहाड़ी लोकगीतों की अपनी खोज के बारे में भी लिखा है। जब लोग किसी सफल व्यक्ति को देखते हैं, तो उन्हें लगता है कि उसका जीवन सुखमय रहा होगा और उसने संघर्ष नहीं किया होगा। वे यह नहीं समझते कि सफलता अनेक समस्याओं का सामना करने के बाद ही मिलती है। मैंने यह अनुभव किया है कि मनुष्य कष्टों का सामना करने के बाद ही स्वयं का व्यक्तित्व प्राप्त करता है, ठीक वैसे ही जैसे लोहा अग्नि ताप से गुजरने के बाद मजबूत होता है। इसी प्रकार, मानव जीवन एक कठिन संघर्ष है और मनुष्य कठिनाइयों का सामना करने के बाद ही मनुष्य बनता है। मुझे आशा है कि आज के छात्र मेरी समस्याओं और कठिनाइयों के वर्णन से प्रेरित होंगे और मैं कामना करता हूँ कि वे अपने संघर्षों में सफल हों।
मैं सितंबर 1976 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से सेवानिवृत्त हुआ। मैंने भारत के कृषि इतिहास पर लिखने की अपनी योजना को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) से स्वीकृत करवा लिया था। मैंने फरवरी 1982 में चार पुस्तकें लिखकर यह कार्य पूरा किया। सरदार प्रीतम सिंह और कई अन्य लोगों ने मुझसे 1949 से 1980 तक के अपने अनुभवों के बारे में लिखने का आग्रह किया। समस्या यह थी कि तेज लिखने पर मेरी उंगलियों में दर्द होने लगता था। पंजाबी ट्रिब्यून के संपादक सरदार बरजिंदर सिंह ने कहा, "अब आप जो कुछ भी लिखेंगे, मैं उसे अपने अखबार में खुशी-खुशी प्रकाशित करूंगा।" उन्होंने अपने उप-संपादक सरदार शिंगारा सिंह भुल्लर को समय-समय पर मुझसे मिलने और मेरे द्वारा बताई गई बातों को लिखने के लिए कहा। उन्हीं की सहायता से यह कार्य मार्च 1985 में पूरा हुआ।

1 March 1985 Mohinder Singh Randhawa

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

भाग 1: बचपन

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 1

बचपन की मीठी यादें

बोदलान, ज़ीरा, समराला और नवांशहर (1902 - 1913)

(पृष्ठ 17)

बचपन की मीठी और प्यारी यादें। सरदार शेर सिंह का जन्म सरदारनी मेहताब कौर और सरदार जैमल सिंह रंधावा के घर, कट्टक माह की 12 तारीख को बोडलान गाँव, तहसील दसूया, जिला होशियारपुर में हुआ था। उनका एक छोटा भाई था जिसका नाम मेहर सिंह था, और कट्टक माह में उनकी बहन और उनका जन्म होना कठिन जन्म माना जाता था। कहा जाता है कि कट्टक माह में जन्मा बच्चा जीवित नहीं रहता, और यदि जीवित रहता है, तो उसका जीवन यशमय होता है। यही कारण था कि मेरे माता-पिता हर साल कट्टक माह में प्रार्थना सभा और लंगर का आयोजन करते थे। वे पूरे गाँव में, यहाँ तक कि चमर्दी में भी, घोषणा करते थे कि उस दिन कोई खाना न पकाए और सभी को उनके घर में बने भोजन में आमंत्रित किया जाता है।13 सरदार शेर सिंह को पढ़ाई के लिए बेरचा गाँव भेजा गया। उन्होंने पाँचवीं कक्षा पूरी करने के बाद होशियारपुर में पढ़ाई शुरू की। बेरचा के रंगहर परिवार का एक लड़का भीखे खान उनका प्रिय मित्र था; वह शनिवार को होशियारपुर पहुँचते और दोनों बोडलान जाते, जहाँ वे रविवार का दिन आराम से बिताते। हर सोमवार को भीखे खान उन्हें वापस

होशियारपुर छोड़ आते थे। वे अच्छे दोस्त थे। हमारे पिता ने हमें अपने बचपन की कई कहानियाँ सुनाई हैं। 1918 में, तांगे से यात्रा करते समय उनका एक दुर्घटना में निधन हो गया था।

(पृष्ठ 18)
इस दुर्घटना के कारण उनके पैर में गंभीर चोट लग गई थी और दर्द के कारण वे रात को ठीक से सो नहीं पाते थे। वे मुझे अपने पास बिठाकर अपनी पुरानी यादें सुनाते थे। 14 मेरे भाई तब छोटे थे। वे उनके पैर दबाते-दबाते सो जाते थे, लेकिन मैं बड़ी थी इसलिए रात भर जाग सकती थी। मैं अपने पिता से बहुत प्यार करती थी। मेरे पिता मुझे बताया करते थे कि जब उनकी पहली शादी हुई थी, तब वे आठ साल के थे, उन्हें याद है कि वे कानों में बालियां और बालों में गहने पहनते थे। उनकी पहली शादी बचपन में ही सरदारनी बिशन कौर से दघाना गांव में हुई थी। वह एक देहाती महिला थीं और बहुत जिद्दी थीं। तब पिता ने मुझे बताया, “जब मैं नायब तहसीलदार बना, तब तक मेरे तीन बेटे और एक बेटी हो चुकी थी। मैंने उनसे शहर चलने को कहा, लेकिन वे कहने लगीं, “आप अब बंजारे हो गए हैं, आप इधर-उधर घूमते रहते हैं, लेकिन मैं घर नहीं छोड़ूंगी।” उन्होंने साफ इनकार कर दिया।” तब उन्होंने अपने पिता से कहा कि या तो वे अपनी पत्नी को जबरदस्ती शहर ले आएं या उनकी शादी कहीं और करवा दें, “मैं इस जिद्दी औरत के साथ नहीं रह सकता,” उन्होंने कहा। सरदार जरनैल सिंह सहमत नहीं थे, लेकिन दादी मेहताब कौर ने उनकी बात मान ली। माताएं अपने बेटों को बहुत प्यार करती हैं। उन्होंने उन्हें अनुमति देते हुए कहा, "बेटा, तुम जहां चाहो वहां शादी कर सकते हो।"

12 पारंपरिक महीनों का विवरण शब्दावली में दिया गया है। 13 चमड़े के काम में लगे दलितों को संदर्भित करने के लिए प्रयुक्त बोलचाल का शब्द 'चमार' (जो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है) मुख्य रूप से अपमानजनक अर्थ रखता है। यह एक जातिगत अपशब्द है, और उच्च जाति/सवर्ण व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किए जाने पर दलितों पर कानूनी अत्याचार माना जाता है। यह पाठ निस्संदेह पुराना है, लेकिन मैंने प्रामाणिक अनुवाद के हित में ऐसे शब्दों को बनाए रखा है। 14 यहाँ 'मैं' मोहिंदर सिंह की बहन हरबंस कौर का लेखन है, जैसा कि प्रस्तावना में उल्लेख किया गया है।

उनके शब्द उनके भाई के शब्दों, उनके माता-पिता और पूर्वजों की कहानियों के साथ गुंथे हुए हैं, कभी-कभी असंगत रूप से।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

पिताजी जीरा तहसील में काम करते थे। जीरा तहसील के फुवान सिंहवाला गांव के सरदार प्रेम सिंह ने अपनी बहन का विवाह उनसे करवा दिया। दादी ने गांव के नाई के माध्यम से दुल्हन के लिए गहने खरीदने के लिए उन्हें बहुत सारा पैसा भेजा था, लेकिन नाई ने पिताजी को थोड़ा ही दिया और बाकी खुद रख लिया। दादी जी ने डर के मारे घर में इस बारे में कुछ नहीं कहा, लेकिन नाई को फिर कभी उनके घर में आने की इजाजत नहीं मिली। जब वे किरपाल कौर नाम की दूसरी पत्नी को गांव लाए, तो दादी और पिताजी बहुत खुश हुए। वह सिखों की एक नेक बेटी थीं। दादी जी ने कहा, “बेटा, इसे कुछ समय के लिए मेरे पास छोड़ दो।” पिताजी अपनी मां की बात मानते थे, इसलिए उन्होंने अपनी नई पत्नी को गांव में ही छोड़ दिया। उन दिनों बिशन कौर टीबी से बीमार पड़ गईं और दयालु किरपाल कौर ने पूरे मन से उनकी देखभाल की। बिशन कौर की मृत्यु हो गई, लेकिन किरपाल कौर को भी यह बीमारी हो गई। दो साल के भीतर ही उनकी भी मृत्यु हो गई।

अब सरदार शेर सिंह का तबादला तहसील समराला में कर दिया गया। सभी कर्मचारियों को पता चल गया कि तहसीलदार की पत्नी का निधन हो चुका है और वह दूसरी पत्नी की तलाश कर रहे हैं।

(पृष्ठ 19)

बध सिंह वाला तखर गाँव में एक पटवारी काम करता था। वह जोगिंदर बूटा सिंह के घर में रहता था। उसने पिता को बताया कि सरदार बूटा सिंह की पोती और सरदार हुजूर सिंह की बेटी बछिनत कौर पढ़ी-लिखी और बुद्धिमान है, और उसके जैसी सुंदर कोई नहीं है। “अगर हुजूर उससे मिलना चाहें, तो मैं इंतज़ाम कर सकता हूँ। मेरी पत्नी और वह लड़की दोनों पहली मंज़िल पर साथ बैठकर कढ़ाई करती हैं।” तहसीलदार ने जबहरन गाँव का दौरा करने का फैसला किया।15 पटवारी ने अपनी पत्नी के साथ योजना बनाई कि चूंकि तहसीलदार उस दिन घोड़े पर सवार होकर उनके गाँव आ रहे

थे, इसलिए वह बछिनत कौर के साथ पहली मंज़िल पर कमरे के सामने बैठेगी ताकि वह लड़की को देख सकें। जब तहसीलदार ने लड़की को देखा, तो वह चकित रह गया और मन ही मन सोचने लगा, “यह सुंदर देवी कहाँ पैदा हुई है – उसका शरीर बलवान है, उसका रंग गुलाब की तरह गुलाबी है, आँखें सुंदर हैं...”
उसे देखकर वह प्रसन्न हुआ; उसने पटवारी से कहा कि वह उसके पिता से बात करके उनका विवाह तय करवा दे। पटवारी ने उसके पिता से बात की और उन्हें तहसीलदार से अपनी बेटी का विवाह करवाने के लिए मना लिया। उन्हें बताया गया कि पिता की केवल एक ही संतान है। विवाह समराला में संपन्न हुआ। कुछ समय बाद, वे बोडलान गए, जहाँ उसने तहसीलदार के चार बच्चों - तीन पुत्र और एक पुत्री - को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। सरदारनी बछिनत कौर एक बुद्धिमान, दयालु और आध्यात्मिक महिला थीं। उन्होंने अपने पति से सभी बच्चों को साथ ले जाने का अनुरोध किया। “हम उन्हें शिक्षित करेंगे और उन्हें कुशल बनाएंगे।” तहसीलदार मान गए, उनकी पत्नी ने स्वयं उनकी दिली इच्छा पूरी कर दी। अब पूरा परिवार एक साथ रहने लगा। तीनों पुत्रों - हरचरण सिंह, अमरिक सिंह और हरबंस सिंह को विद्यालय भेजा गया। उनके बाल कटवा दिए गए। लेकिन बीबी बछिनत कौर सिंह परिवार से थीं, इसलिए उन्होंने तीनों के बाल लंबे रखने का फैसला किया। उन्होंने बड़े ध्यान से उनके लंबे बालों को साफ किया और बांधा और उन्हें केशधारी बनाया। बच्चे बेहद खूबसूरत थे। उनके दादाजी भी बहुत सुंदर थे। कुछ दिनों बाद तहसीलदार का तबादला फिर से जीरा हो गया। पिताजी का निवास लाला मल्ला मल के घर में था, जो अग्रवाल गली में आज भी मौजूद है। यह आधा कच्चा और आधा पक्का मकान था। भूतल

15. तहसीलदार से हरबंस कौर का तात्पर्य अपने पिता, तहसीलदार से है। उन्हें आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है ('महामहिम' या हुजूर)।
16 सिंह से तात्पर्य उस सिख से है जो सिख धर्म के सभी सिद्धांतों का सही मायने में पालन करता है। 17 लंबे बाल रखने वाला, शाब्दिक अर्थ: केश का अर्थ बाल है, और धारी (प्रत्यय) का अर्थ है वह व्यक्ति जो बाल रखता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। इसमें दो कमरे थे, जिनमें से एक कमरा पहली

मंजिल पर था। भूतल पर एक गलियारा था, जिसके बगल में एक ड्रेसिंग रूम था। लाला मल्ला मल का बंगला इस घर से कुछ दूरी पर था, और प्रवेश द्वार पर बढ़ई सरदार चानन सिंह द्वारा बनाई गई एक सुंदर नक्काशीदार कलाकृति थी। जीरा के पुराने बाजार में 19वीं सदी की झलक देखी जा सकती है। जौहरी छोटी दुकानों के सामने के आंगन में गहने बनाते हैं। बाजार इतना संकरा है कि पार करते समय लोग एक-दूसरे से धक्का-मुक्की करते हैं।

(पृष्ठ 20)

पिछली शताब्दी में, इस साधारण ढंग से बने बाज़ार में काफी चहल-पहल रहती थी; महिलाएं गांवों से परंदी, लिपस्टिक, वैक्स आदि खरीदने आती थीं। ज़ीरा में जैन महाजनों के स्वामित्व वाली कई हवेलियां हैं जिनके लकड़ी के दरवाज़ों पर सुंदर नक्काशी की गई है। इस कलाकृति को 'साथी' कहा जाता है, और इनमें से अधिकांश कलाकार सरदार भगत सिंह की रचनाएं हैं। सरदार भगत सिंह को ज़ीरा के बढ़ई सरदार कपूर सिंह ने कला सिखाई थी। भगत सिंह के पुत्र, कलाकार सरदार किरपाल सिंह ने सिख इतिहास के दृश्यों को चित्रित करके प्रसिद्धि प्राप्त की।18 यह 19वीं शताब्दी की बढ़ईगीरी का एक सुंदर नमूना है। इन संकरी गलियों से गुजरते हुए भी हम इस कला की सुंदरता का आनंद ले सकते हैं।

जीरा में एक जैन मंदिर है जिसका निर्माण 1891 में लाला मेहताब मल की विधवा मैक़ाधा ने करवाया था। इसकी छत और दीवारों पर सुंदर चित्रकारी है, जिसे गोपाल 'चितेरा' ने बनाया था।19 कहा जाता है कि गोपाल बीकानेर से आए थे और जैन साहूकार उनके संरक्षक बन गए थे। मंदिर की छत को बढ़ई थम्मन सिंह द्वारा कांच के काम से सजाया गया है। लाला सावन मल का सराय जीरा की सबसे खूबसूरत इमारत है। उन्होंने इसका निर्माण 1901 में करवाया था। खिड़कियों के ऊपरी हिस्से पर चूना पत्थर की दिलचस्प नक्काशी दरवाजों को सुशोभित करती है। किनारों पर चूना पत्थर से बना एक हाथ और महाभारत और रामायण के दृश्य उकेरे गए हैं। सराय के गलियारे में भित्तिचित्र हैं जो उस समय के लोगों के शौक और इच्छाओं को दर्शाते हैं। एक दीवार पर ट्रेन का चित्र है और इंजन में एक अंग्रेज ड्राइवर खड़ा है। दूसरी दीवार पर कीकर सिंह और गुलाम भलवान को कुश्ती करते हुए दिखाया गया है। कीकर सिंह कीकर के पेड़ की तरह काले हैं और गुलाम गोरे हैं। यह तय करना मुश्किल है कि

उनमें से कौन जीता। मालवा के लोग आज भी इस कुश्ती प्रतियोगिता पर चर्चा करते हुए आपस में झगड़ पड़ते हैं और अपनी-अपनी लाठियों से लड़कर यह तय करने की कोशिश करते हैं कि कौन जीता। सावन मल की पहली शादी से कोई संतान नहीं हुई। उन्हें अग्रवाल के एक गरीब दुकानदार की बेटी पसंद आ गई। सावन मल ने उससे पूछा, "तुम्हारी बेटी कैसी है?" दुकानदार ने जवाब दिया, "मेरी बेटी चांदी जैसी है।" सावन मल ने उस लड़की को चांदी के सिक्कों से तौला और वह पैसा उसके पिता को दे दिया।

(पृष्ठ 21)

अपनी नई दुल्हन को घर लाने के लिए उसने सोने की पालकी बनवाई, जिस पर चांदी की जंजीरों के पर्दे लगे थे।

18. लोगों को उनके पेशे या जाति के नाम से उनके नाम के आगे या पीछे उपसर्ग के रूप में संबोधित किया जाता है, जैसे कि किरपाल सिंह, कलाकार। हालाँकि यह अंग्रेज़ी में अपरिचित लग सकता है, लेकिन पंजाबी में यह एक आम संबोधन है।
19. चित्रा: दृश्यों का कलाकार/चित्रकार। यहाँ भी, चित्रा कलाकार गोपाल के नाम के बाद लगने वाला प्रत्यय है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

जीरा तहसील का कार्यालय काफी पुराना है। यह एक किले जैसी संरचना है जिसके कोनों पर गुंबद बने हुए हैं, और इसे अंग्रेजों ने 1854 में कार्यालय में परिवर्तित कर दिया था।

1 जनवरी 1905 की सुबह तहसीलदार के घर में एक बच्ची का जन्म हुआ। उन्होंने तीन-चार महीने तक बच्ची से कोई संपर्क नहीं रखा। एक दिन जब वे दरबार से लौटे, तो बच्ची अपने पालने में खेल रही थी। माँ सुंदर थी और बच्ची भी। उन्होंने अपनी छड़ी के चांदी के हैंडल से बच्ची के चेहरे को धीरे से छुआ और बच्ची खिलखिला उठी। उन्हें बच्ची से स्नेह हुआ और उन्होंने उसे गोद में उठा लिया। उसके बाद से उनका स्नेह बच्ची के प्रति और भी बढ़ गया। बच्ची का नाम उसके भाई हरबंस सिंह के नाम पर

हरबंस कौर रखा गया। लेकिन हरबंस कौर एक अच्छा नाम नहीं है। इस नाम का व्यक्ति सुखी और सफल जीवन नहीं जी सकता।20 जब बेटी तीन साल की थी, तब 23-24 सितंबर 1908 की रात को उसके माता-पिता के घर जुड़वां बेटों का जन्म हुआ। दोनों ही बहुत सुंदर थे और रंधावा परिवार के लिए गर्व का स्रोत बने। उनके जन्म का जश्न मनाने के लिए प्रार्थना सभाएं आयोजित की गईं। उनके नामों के पहले अक्षर गुरु ग्रंथ साहिब से लिए गए थे – 'र' और 'म'। पहले बेटे का नाम राजिंदर और दूसरे का नाम मोहिंदर रखा गया, लेकिन उनके पिता उन्हें जुंगो और मौंगो कहकर पुकारते थे। तहसीलदार चाहते थे कि उनकी पत्नी एक घरेलू नौकरानी की मदद से जुड़वा बच्चों की देखभाल करे, लेकिन दूरदर्शी सरदारनी ने कहा कि वह अपने बेटों को खुद दूध पिलाएगी क्योंकि किसी और का दूध पिलाने से उनकी बुद्धि क्षीण हो जाएगी। दोनों बेटों की परवरिश के लिए पंजाबू नाम की एक महिला को सहायक के रूप में रखा गया था। वह चीम्बा जाति की थी और फिरोजपुर जिले के ताडोके गांव की रहने वाली थी। वह बहुत ईमानदार और अच्छे चरित्र की महिला थी। वह विधवा थी और उसका एक बेटा था जिसका नाम बिशन सिंह था। उसने कई वर्षों तक हमारी सेवा की। वह हंसमुख स्वभाव की थी। हमारे घर में एक ग्रामोफोन था। जब भी वह बजता था, मां और बेटा दोनों उसके चारों ओर बैठकर खूब हंसते थे। जब नाई बिशन के बाल मुंडवाता था, तो हम उसके सिर पर थपथपाते थे।

(पृष्ठ 22)
बोसवर्थ स्मिथ फिरोजपुर के उपायुक्त थे। वे एक अभिमानी और जिद्दी व्यक्ति थे और अपने पंजाबी कर्मचारियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे। एक बार जब उनके एक कर्मचारी को जम्हाई आई, तो उपायुक्त ने उसके मुंह में स्याही की दवात उंडेल दी। हमारे पिता एक स्वाभिमानी और ईमानदार अधिकारी थे। वे किसी से भी अपमान सहन नहीं कर सकते थे। उस क्रूर अधिकारी से दूर रहने के लिए उन्होंने लंबी छुट्टी ली। अब गांव में रहने की हमारी बारी थी। हमारी माताजी एक ऐसा सुंदर घर बनाना चाहती थीं जिसकी तुलना आसपास के किसी भी घर से न की जा सके। पिताजी इस सुझाव से सहमत हो गए और घर का निर्माण शुरू कर दिया। ईंटें और सीमेंट दूर-दूर से मंगवाए गए, और हमारे गांव के लोगों ने खुशी-खुशी बैलगाड़ियों पर उन्हें ढोने में मदद की। माताजी उनके लिए बड़े प्यार से खाना बनाती थीं। हलवा, सब्जी, रायता और

मांह दाल जैसी कोई मिठाई बनती थी। कर्मचारियों को भरपेट भोजन मिलता था। उन दिनों कर्मचारी उनके द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट भोजन की प्रशंसा करते थे और सभी उन्हें 'माताजी' कहने लगे थे।
बोडलान में यह दोहरी ईंटों से बना पहला घर था। इससे पहले 'नानकशाही ईंटें' नामक छोटी ईंटों का इस्तेमाल होता था। हमारे ड्राइंग रूम की खिड़कियों में पिताजी ने नीले, पीले, नारंगी, हरे और लाल रंग के रंगीन शीशे लगवाए थे। इस कमरे के सामने एक छोटी सी गैलरी थी जिसके चारों ओर घुमावदार ग्रिल लगी हुई थीं। दूर-दूर से जमींदार हमारा घर देखने आते थे। जब हम फिल्लौर में थे, तब एक सज्जन आए थे।

20. हरबंस कौर, एम.एस. रंधावा की बहन, ने इसे स्वयं लिखा है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। पिता से मिलने के लिए राजिंदर पिता के पास बैठा था, तभी उन्होंने हमारे घर की प्रशंसा करना शुरू कर दिया। बातचीत कुछ इस प्रकार थी और राजिंदर भी अपनी राय दे रहा था: पिता: “हमने अपने घर में बहुत सुंदर रंगीन कांच लगवाए हैं।” राजिंदर: “कई लड़कों ने उन्हें गुलेल से तोड़ दिया है।” पिता: “हमने फर्श बनाने के लिए बहुत साफ सीमेंट का इस्तेमाल किया है।” राजिंदर: “फर्श में दरारें पड़ गई हैं।”
इसके बाद पिताजी घर की और अधिक प्रशंसा नहीं कर सके। जब तक हमारा नया घर बन रहा था, हम अपने पुश्तैनी घर की पहली मंजिल पर रहते थे। हमारे चाचा मेहर सिंह और उनकी पत्नी भूतल पर रहते थे। हमारी चाची जी बहुत ही स्नेहशील महिला थीं।

(पृष्ठ 23)
हमारी माँ हमें आटे से बनी बासी चपातियाँ खाने नहीं देती थीं। हम अपनी चाची से बासी चपातियाँ लेकर उन्हें दही और चीनी के साथ मिलाकर, दरवाजे के पीछे छिपकर उस व्यंजन का आनंद लेते थे।
बोडलान आने के बाद दोनों बेटों का माँ का दूध छुड़ा दिया गया था। वे एक कमरे की खिड़की के पास बैठकर रोते और चाचा से शिकायत करते, “चाचा जी, माँ हमें दूध

नहीं पिला रही हैं।" वे एक हफ्ते तक रोते रहे और फिर चुप हो गए। बारिश होने पर, बिजली कड़कने पर और बादल गरजने पर हमें बहुत डर लगता था – माँ एक चादर लेकर हमें उसके नीचे छिपा देती थीं। हमें खुशी होती थी क्योंकि अब हमें डर नहीं लगता था।

एक गाँव के बागों में एक साधु रहते थे। वे घर-घर संदेश भेजते थे। वे सबको 'राम जी' कहकर बुलाते और कहते, "राम जी से कहिए कि वड़ी और चपाती बनाकर मुझे परोसें।" भाई अमरिक सिंह जाकर साधु को आमंत्रित करते। भाभी बसंत कौर, भाई हरकरण सिंह की पत्नी, और माँ बड़े प्यार से खाना बनातीं। हमारी दादी साधु के सामने सिर झुकाने से इनकार कर देतीं और कहतीं, "ये मेरे बेटे के घर को मुफ्त की रसोई समझते हैं"; साधु को देखते ही वे छिप जातीं। वे कभी उन्हें कुछ दान नहीं देती थीं। उनकी मृत्यु सुख से नहीं हुई। उनके निधन से कुछ महीने पहले हमारे पिता हमें नए घर में अपनी माँ की देखभाल के लिए छोड़कर चले गए थे। अपनी मृत्यु से तीन दिन पहले तक वे घर में इधर-उधर घूमती रहीं और सारे ताले खोलती रहीं। जब माँ उठीं और दादी का खाली बिस्तर देखा, तो वे चिंतित हो गईं। उन्होंने सबको जगाया। दादी भूतल पर चल रही थीं। जब उनसे पूछा गया कि वे क्या कर रही हैं, तो उन्होंने कहा, "बेटी, तुम्हारे ससुर आए थे। मैंने उनसे कहा, "देखो, तुम्हारे बेटे ने कितना सुंदर घर बनाया है!" मैं उन्हें पूरा घर दिखा रही थी।" प्रकृति के उतार-चढ़ाव देखिए—वे इतनी बीमार थीं कि हमें उनकी साफ-सफाई का ध्यान रखना पड़ता था, लेकिन हमें नहीं पता कि किस शक्ति ने उन्हें मृत्यु से पहले पूरे घर में घूमने-फिरने की शक्ति दी। फिर वे कहती थीं, "कृपया मुझे मत मारो, मैं खुद चल लूंगी।"21 इस प्रकार, लंबे समय तक कष्ट सहने के बाद उनका निधन हो गया।

(पृष्ठ 24)

अब उसकी चिता को सजाया गया - खसखस के फूलों को चांदी और सोने की पन्नी में लपेटा गया और

21 पाठ की ये पंक्तियाँ संकेत देती हैं कि वह तर्कहीनता और भूलने की बीमारी के दौर से गुज़रती थी। घर में उसका अनियमित रूप से घूमना और अनदेखे प्राणियों से मारपीट के बारे में बात करना यह बताता है कि रंधावा किस प्रकार इस बात का संकेत

देते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। बनारसी दुपट्टे से ढकी हुई। पिता नवांशहर से घोड़े पर सवार होकर आए और समय पर पहुँच गए। आगे हारमोनियम बज रहा था और रबाबी भजन गा रहे थे। कमल के बीज, मीठे सूखे मेवे और चांदी के बर्तनों में रखे सिक्के चिता पर डाले जाने थे। दो आदमी राजिंदर और मोहिंदर को अपने कंधों पर उठाए हुए थे। उनके हाथों में पंखा था और वे अपनी दादी की चिता को हवा दे रहे थे, जबकि जुलूस श्मशान घाट की ओर जा रहा था। लंबा जुलूस घर से श्मशान घाट के लिए निकला। पिता ने अपनी माता का अंतिम संस्कार बड़े सम्मानपूर्वक देसी घी और अन्य मसालों का प्रयोग करके किया। इसके बाद प्रार्थना सभा हुई। सत्रह दिनों तक, झिनरान के रबाबी प्रतिदिन दो बार कीर्तन करते थे। सत्रहवें दिन यह समाप्त हुआ। इसमें भारी जनसमूह था। बहुत सारा भोजन परोसा गया।

उनकी मृत्यु के बाद हम काफी समय तक गाँव में ही रहे। हम शाम को कूड़ा इकट्ठा करके जलाते थे। सुबह नहाकर नए साफ कपड़े पहनते थे। हमारे घर के सामने एक कुआँ था। कुएँ का पानी बहकर एक छोटा सा तालाब बना देता था। मैं गाँव के लड़कों के साथ उस तालाब में मेंढक पकड़ने जाया करता था। मेरे कपड़े गंदे और कीचड़ से सने हो जाते थे। शाम को उस तालाब में जुगनू नाचते थे। हम उन्हें कांच की बोतलों में भरकर उनकी सुंदर रोशनी का आनंद लेते थे। फिर नहाकर कपड़े बदलते थे। दोनों लड़के तौलिया और दरांती लेकर बाग में जाते थे। वे थोड़ी घास काटकर तौलिये में इकट्ठा करते थे। वे कहते थे, “मिमी के लिए घास मिली।” बछड़े का नाम मिमी था। गाँव में हमारे माता-पिता के एक और बेटे का जन्म हुआ, साधु ने उसका नाम हरकिशन सिंह रखा।

फिर पिताजी हम सबको नवांशहर ले गए। नवांशहर में हमारे घर के पास चूड़ी बनाने वाले रहते थे। वे काँच की चूड़ियाँ बनाते थे। वे हमें बड़े प्यार से अपने घर बुलाते थे और मीठे चावल खिलाते थे, जिन्हें हम बड़े चाव से खाते थे। एक दिन हमारे माता-पिता को पता चला कि हम एक मुस्लिम चूड़ी बनाने वाले के घर जाते हैं, और उन्होंने हमें डाँटा। उसके बाद से हम उनके घर जाने से बचने लगे।

हमारे पास भौर नाम का एक कुत्ता और काली नाम की एक कुतिया थी। एक दिन बिश्ना उन्हें नहला रही थी। पानी उनके कानों में चला गया और दोनों मर गए। पिताजी को कुत्तों से बहुत प्यार था, लेकिन उनके कुत्ते कभी जीवित नहीं रह पाते थे। उन्हें घोड़ियों से भी बहुत लगाव था। उनके पास दो घोड़ियां थीं और हर साल एक घोड़ी बच्चे को जन्म देती थी। वह उसे चीनी और घी खिलाते थे। घोड़ी और बच्चे को खिलाना मेरा काम था। बिश्ना चीनी-घी उठाकर मुझसे पूछती, "बीबी, क्या मैं इसे खा सकता हूँ?" मैं कहती, "खा लो, बहुत सारा है, हम घोड़ी को बाद में खिला देंगे।"

(पृष्ठ 25)
वह थोड़ा खाता और फिर घोड़ी को खिलाता। नवांशहर के पास संधवा फ्राला के नजदीक एक गाँव था। ठेकेदार शेर सिंह, जिसने बर्मा में बहुत धन कमाया था, उसी गाँव का निवासी था।22 वह अपनी बेटी की सगाई हमारे परिवार में करना चाहता था, लेकिन सवाल उठा कि जुड़वा बच्चों में से किसकी सगाई की जाए? इसका फैसला पर्ची निकालकर किया गया, इसलिए चार साल की उम्र में राजिंदर की सगाई तय हुई। नवांशहर में हमारे खेलने के लिए कबूतर पाले जाते थे। वे कई किस्मों के थे। हम उनके साथ खेलते थे। उन सभी के रहने के लिए अलग-अलग जगहें थीं।

22 बर्मा: आज, म्यांमार।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय दो

एक खुशहाल घर
करतारपुर (1917)

(पृष्ठ 26)
हमारा तबादला नवांशहर से करतारपुर हो गया। ग्रैंड ट्रंक रोड पर स्थित करतारपुर जालंधर से नौ मील दूर है। यह अपने फर्नीचर उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के बढ़ई

शीशम के पेड़ की लकड़ी से मजबूत कुर्सियाँ बनाते हैं, वास्तव में, ये कुर्सियाँ आज भी मध्यमवर्गीय पंजाबी घरों में इस्तेमाल होती हैं। इन बढ़इयों ने ग्रैंड ट्रंक रोड के दोनों ओर अपनी आरा मशीनें लगा रखी हैं, और हर दुकान के सामने शीशम के पेड़ के तने दिखाई देते हैं।

बाज़ार की संकरी गलियों को पार करते हुए हम सोढ़ी किले तक पहुँचे। बुर्ज से गुज़रने के बाद हमने बड़े-बड़े कीलों से जड़े मुख्य द्वार को पार किया। थोड़ा आगे चलने पर दाहिनी ओर रंग महल और बाईं ओर सोढ़ी महल दिखाई देते हैं। इस द्वार के आगे गुरुद्वारा थुमजी साहिब स्थित है, जिसके पार अमरूद का बाग है।

गुरु अर्जन देव जी ने 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में करतारपुर नगर की स्थापना की। धीरमल का निधन 1677 में हुआ। 23 1750 में अहमद शाह अब्दाली ने इसे जला दिया। गुरु गुलाब सिंह ने 1785 में किले और तालाब का निर्माण करवाया। महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में साधु सिंह करतारपुर के गुरु थे।

(पृष्ठ 27)

करतारपुर के राजा फतेह सिंह अहलूवालिया से उनका मतभेद हो गया और महाराजा ने इस विवाद में साधु सिंह का साथ दिया। महाराजा ने गुरु अर्जन देव जी की बावड़ी की देखरेख का जिम्मा साधु सिंह को सौंपा और उन्हें डब्बी बाजार की दुकानें जागीर के रूप में भेंट कीं। साधु सिंह का निधन 1854 में हुआ।

करतारपुर के गुरुओं के पास आदि ग्रंथ साहिब की एक पुरानी प्रति है जिस पर गुरु हरगोबिंद जी का चित्र है—यह चित्र संग्रांद मेले में प्रदर्शित किया जाता है। उनके पास गुरु नानक देव जी की कुछ निजी वस्तुएँ भी हैं जैसे उनका थैला, टोपी आदि। सोढ़ी गुरुओं के अनुयायी दूर-दूर से अपनी भक्ति व्यक्त करने आते हैं।24 मेलों के दौरान इन गुरुओं के चरण धोए जाते हैं और उस जल को अमृत या 'चरण पाहुल' के रूप में ग्रहण किया जाता है।

करतारपुर के सोढ़ी गुरु नौनिहाल सिंह का देहांत हो गया था। उनके दो नाबालिग पुत्र थे, आत्मा सिंह और त्रिलोचन सिंह। उनके पास काफी संपत्ति थी जिसकी देखरेख न्यायालय कर रहा था। सरकार ने हमारे पिता को इस संपत्ति के प्रबंधन के लिए कोर्ट ऑफ वार्ड्स का प्रबंधक नियुक्त किया। इस प्रकार, एक ईमानदार अधिकारी को चार वर्षों के लिए यह पद दिया गया। पिता ने संपत्ति के प्रबंधन के लिए अत्यंत परिश्रम

किया और महाजनों को ऋणमुक्त होने में सहायता की।

23 धीर मल छठे सिख गुरु, गुरु हरगोबिंद साहिब के बड़े पुत्र थे, जिन्हें गुरु पद से वंचित कर दिया गया था और यह पद उनके छोटे भाई को दिया गया था। वे गुरबानी के एकमात्र लिखित संस्करण को संकलित करने और अपने स्वयं के गुरुओं की परंपरा स्थापित करने के लिए जाने जाते हैं। देखें,
इस कहानी के एक संस्करण के लिए https://www.sikhiwiki.org/index.php/Dhir_Mall देखें। धीर मल की वंश परंपरा से, ये सोढ़ी गुरु सिख समुदाय द्वारा पूजे जाने वाले 10 सिख गुरुओं से भिन्न हैं, जिनमें ग्यारहवें गुरु स्वयं गुरु ग्रंथ साहिब हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

उनमें से एक घर का नाम रंग महल था। पास ही एक कुआँ और सर्दियों में रहने के लिए एक घर था। बाल्टी की मदद से कुएँ से पानी निकाला जाता था, लेकिन हमें उसे देखने की इजाज़त बहुत कम मिलती थी—हमारे माता-पिता को डर रहता था कि कहीं हम उसमें गिर न जाएँ। कुएँ तक जाने वाली सीढ़ियाँ हमेशा बंद रहती थीं। कुआँ बनाने के लिए जिस घर को गिराया गया था, उसके अवशेष आज भी मौजूद हैं।
राजिंदर और मोहिंदर का दाखिला सरकारी हाई स्कूल में हुआ। स्कूल के पहले दिन माँ ने उन्हें उबले हुए चावल और दही खिलाया। जब वे स्कूल जाने लगे तब उनकी उम्र चार साल थी। माँ हमेशा प्यार से उन्हें नहलाती, उनके बाल संवारती और साफ कपड़े पहनाकर स्कूल भेजती थीं। एक चपरासी उन्हें स्कूल ले जाता और वापस लाता था। घर पर पढ़ाने के लिए एक शिक्षक का इंतजाम किया गया था। दोनों लड़के पढ़ाई में बहुत अच्छे थे। हमारे माता-पिता ने उन्हें शिक्षित करने के लिए बहुत मेहनत की। दोपहर के भोजन के समय, लड़कों के लिए तीस भीगे हुए बादाम और एक लीटर दूध स्कूल भेजा जाता था।
सरदार हरनाम सिंह विद्यालय के प्रधानाध्यापक थे। यह प्रथम विश्व युद्ध का समय था; अंग्रेज जर्मनों से लड़ रहे थे। कई अंग्रेज अधिकारी विद्यालय का दौरा करते थे।

हरनाम सिंह ने अपने बेटे को 'ईश्वर राजा की रक्षा करे' सिखाया था ताकि वह इसे सुनाकर अंग्रेज अधिकारियों को प्रसन्न कर सके। मेरे भाई मुझे बताया करते थे कि स्कूल के शिक्षक लड़कों के साथ बहुत क्रूरता से पेश आते थे। एक मौलवी था जो पाठ के दौरान क्रोधित होकर लड़कों को चाकू से धमकाता था और कहता था, 'आओ, मैं तुम्हारा जिगर निकाल लूँगा।' कुछ लड़कों को सबक सिखाने के लिए किक्कर के पेड़ से उल्टा लटका दिया जाता था। उन्हें 'मोर की तरह खड़ा करना' और उनके हाथों को मेज के पैरों के नीचे रखना आम सजाएँ थीं। 25

एक बार दोनों भाई गुरुद्वारा चरण कंवल गए, जहाँ नौनिहाल सिंह की प्रतिमा है और जो एक तालाब से घिरा हुआ है। वे वहाँ स्नान करने गए थे, लेकिन गलती से फिसल गए। तालाब की तलहटी में शैवाल थे, जिससे ज़मीन बहुत फिसलन भरी हो गई थी। मोहिंदर डूबने ही वाला था कि एक तीर्थयात्री ने उसे बचा लिया।

करतारपुर किले में दिवाली बड़े उत्साह से मनाई गई। सोढ़ी परिवार के महल की दीवारों पर मिट्टी के दीयों की कतारें लगाई जाती थीं। कतारें लग जाने पर हम दीये जलाते थे। एक बार दीये जलाते समय राजिंदर की पगड़ी में आग लग गई। मोहिंदर ने तुरंत राजिंदर के सिर से पगड़ी हटाकर उसे बचा लिया।

मोहिंदर को नींद में चलने की भी आदत थी।26 एक रात, वह नींद से उठा और इधर-उधर चलता रहा। हमने ईश्वर का धन्यवाद किया कि छत से गिरने जैसी कोई दुर्घटना नहीं हुई। मोहिंदर को मेहनती होने की भी आदत थी। उसे हमेशा पढ़ाई में रुचि रहती थी। राजिंदर को खेलने में अधिक रुचि थी। वह कुछ समय तक पढ़ता और जल्दी याद कर लेता, लेकिन वह मेहनत नहीं करता था।

मैंने अपनी कक्षाओं में भी पढ़ाई शुरू कर दी। मैंने माता जी से पढ़ने की इच्छा व्यक्त की, जिन्होंने पिताजी से मुझे आर्य समाज प्राथमिक विद्यालय में दाखिला दिलाने के लिए कहा। मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता था, लेकिन मुझे नहीं पता क्यों मेरे पिताजी मुझे पढ़ने नहीं देना चाहते थे। मैंने हिंदी की चार कक्षाएँ भी पूरी कर लीं।

25 'मोर/मुर्गा बनाना' या मुर्गा बनाना दक्षिण एशिया में शारीरिक दंड का एक रूप है, जहां व्यक्ति मुर्गे की तरह बैठता है, और शरीर के चारों ओर बाहों को लपेटकर प्रत्येक कान को पकड़ता है।

मदन मोहन झा की पुस्तक "भारत में विशेष शिक्षा से समावेशी शिक्षा की ओर: तीन केस स्टडी" देखें।
दिल्ली में स्कूल, (पियर्सन एजुकेशन इंडिया, सितंबर 2010)। पृ. 51. 26 पाठ में इसके बाद अंग्रेजी में 'सोम्नैम्बुलिस्ट' छपा है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। दो साल। मैं अपने स्कूल में सभी विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त करती थी। मैं सिलाई की कक्षाओं में प्रथम आती थी, और मैं शाम की प्रार्थना भी मौखिक रूप से करती थी। लेकिन इंसान को वही मिलता है जो उसके भाग्य में लिखा होता है।

हम दो घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी में बैठकर रामलीला देखने जाया करते थे। हमें जेब खर्च के लिए पैसे मिलते थे। सब लोग अपने पैसे खर्च कर देते थे, लेकिन मोहिंदर उन्हें बचाकर रखता था। हम अपने बचे हुए पैसे अपनी भाभी, बसंत कौर के पास रखते थे।

(पृष्ठ 29)
हम सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठकर रामलीला देखते थे। हम अपने दोस्तों को भी अपने साथ पहली पंक्ति में बैठाते थे।
रावण और रामचंद्र की सेनाओं के युद्ध को देखकर हम प्रसन्न होते थे। हम सोचते थे कि यह सब वास्तविक है... हनुमान कागज की बनी लंका को जला देते थे, और हम रोमांचित हो जाते थे... कुम्भरण ढोल की थाप से जाग जाता था।27
जब बलि का पुत्र अंगद राम चंद्र के दूत बनकर रावण के दरबार में जाता, तो वह अपना पैर ज़मीन पर रखकर पूरे दरबार को चुनौती देता कि वे उसका पैर हिला कर दिखाएँ। सब कोशिश करते, लेकिन नाकाम रहते। आख़िरकार रावण आकर उसका पैर हिलाने की कोशिश करता। पर अंगद अपना पैर उठाकर कहता, ‘हे महाराज, मैं राम जी का दीन सेवक हूँ। कृपया मेरे पैर को मत छुइए। यदि आप सुरक्षित रहना चाहते हैं, तो कृपया राम जी के पास जाकर उनकी शरण लें।’28 रावण की इस बेइज्ज़ती पर सब हँसते। उन दिनों हम रामलीला का खूब आनंद लेते थे और इसके प्रदर्शन का बेसब्री से इंतज़ार करते थे।

रामलीला समाप्त होने के बाद हम घर पर उसका मंचन करते थे। हम पात्रों की तरह ही मेकअप करते, राम, लक्ष्मण और सीता बनते और बाण-धनुष धारण करते। हम अपने बाल खोलते, पीली धोती पहनते और बनवासी बन जाते। हम एक महीने तक खेलते और फिर जल्द ही सब कुछ भूल जाते।
करतारपुर किले में एक शीश महल गुरुद्वारा था। आदि ग्रंथ साहिब और वह खंडा जिससे छठे गुरु ने पैंदा खान का वध किया था, इसी गुरुद्वारे में रखे थे। हम शाम को भाई गंगा सिंह जी के पास जाते, एक-एक झांझ लेकर उनके साथ संध्या भजन गाते। 'गगन में थाल रव चंद दीपक, बने तारिका मंडल जनक मोती' 29। हमें धन्ना भगत का भजन, 'हे दयाल तेरा आरती गोपाल, तेरा आरती/ जो जन तुम्हारी भगत करते, तिन के काज स्वार्ता' 30 गाने में बहुत आनंद आता था। यह हमारी दैनिक दिनचर्या थी।

27 इन पात्रों के संदर्भ के लिए रामायण महाकाव्य का संदर्भ लें। सी. राजगोपालाचारी द्वारा रचित रामायण का अनुवाद पाठकों के लिए कहानी को संतोषजनक ढंग से प्रस्तुत करता है, लेकिन सीता के दृष्टिकोण से बुनियादी संदर्भ और कथानक के लिए देवदत्त पट्टानाइक द्वारा रचित संस्करण: सीता: महाभारत का सचित्र पुनर्लेखन, का भी संदर्भ लिया जा सकता है।
28 शरण: इसका अर्थ है आश्रय/शरण। यहाँ इसका अर्थ क्षमा भी है। 29 यह गुरबानी की एक पंक्ति है, यह प्रथम गुरु, गुरु नानक द्वारा पूर्व की अपनी उदासी (या यात्रा) के दौरान रचित एक आरती है। कहा जाता है कि यह ओडिशा के पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर की उनकी यात्रा से प्रभावित थी। सिख इसे शाम को सोहिला प्रार्थना के भाग के रूप में पढ़ते हैं। 30 मोटे तौर पर इसका अर्थ है कि प्रार्थना (आरती) ईश्वर को संबोधित है, जिसमें कहा गया है कि जो कोई भी ईश्वर से प्रार्थना करता है, वह उनका भक्त बन जाता है; ईश्वर उनके कार्यों को पूरा करने में सहायता करके और उनके प्रयासों को बेहतर बनाकर उत्तर देते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। हम 31वीं आरती में भाग लेते थे। अरदास के बाद हमें पताशा प्रसाद मिलता था। फिर हम घर लौट आते थे, जो किले के अंदर ही था। छोटे

बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव स्थायी छाप छोड़ते हैं, भले ही वे धार्मिक प्रकृति के हों। पुराने समय में, प्रत्येक सिख परिवार में सुबह और शाम की नमाज अनिवार्य थी।

(पृष्ठ 30)

गुरु ग्रंथ साहिब हर घर में रखा जाता था।32 घर की महिलाएं प्रार्थना करती थीं और अपने बच्चों को सिख इतिहास पढ़कर सुनाती थीं। बच्चे दयालु हुआ करते थे; अब इन धार्मिक जीवनशैली की जगह सिनेमाघरों ने ले ली है...

33 नरसिंह उदासी नामक साधुओं का एक समूह करतारपुर आया करता था। पिताजी को साधुओं और संतों के लिए अच्छा भोजन कराने का बहुत शौक था, इसलिए वे उन्हें भोजन कराते थे। भोजन बड़े प्रेम से तैयार किया जाता था। संत भजन गाते हुए आते थे, हम उन्हें बड़े स्नेह से देखते थे। भोजन के बाद उन्हें पैसे दिए जाते थे। इस तरह, रोचक घटनाओं से भरपूर, हमारे जीवन का यह सुंदर समय करतारपुर में बीता, लेकिन प्रेम और स्नेह का हमारा यह अनुभव यहीं जल्द ही समाप्त हो गया।

मुझे लगता है कि हमें रंग महल के भूतल को अपना खेल का मैदान कहना चाहिए। एक दिन, मुझे लगा कि मैं पहली मंजिल से मेहंदी का पाउडर ले आई हूँ, लेकिन वह तो बालों का रंग था जो पिताजी लगाया करते थे। मैं नीचे आई और राजिंदर, मोहिंदर और दूसरे दोस्तों के हाथों और पैरों पर लगा दिया। कुछ देर बाद जब हमने रंग हटाने के लिए हाथ-पैर धोए, तो वे काले हो गए थे। मैं डर गई क्योंकि मुझे पता था कि मुझे सज़ा मिलेगी। मैं नीचे ही रुकी रही। दोनों भाई ऊपर गए और जब माँ ने उनके हाथ देखे, तो उन्होंने पूछा, “बेटा, तुमने अपने हाथों पर क्या लगाया है?” उन्होंने जवाब दिया, “माँ, बहन ने हमारे हाथों पर मेहंदी लगाई थी, लेकिन वे काले हो गए।”

मैं तभी ऊपर जाती थी जब पिताजी घर लौट आते थे। मुझे पता था कि मुझे सजा मिलेगी, लेकिन पिताजी मुझे माँ के गुस्से से बचाते थे, इसलिए मुझे पता था कि वे माँ को मुझ पर गुस्सा नहीं करने देंगे। पिताजी मेरी शरारतों के परिणाम से मुझे यह कहकर बचाते थे, 'मेरी एक ही बेटी है, कृपया उसे मत मारो।' मुझे उनके प्यार पर गर्व था। इस तरह हमारा समय बहुत सुखद बीता।

हमारे भाइयों को एक गृह शिक्षक पढ़ाया करते थे। मुझे विश्वास था कि गुरुजी मुझे भी साथ-साथ पढ़ा सकते हैं। एक दिन, मैंने उर्दू की एक प्रारंभिक पुस्तक खरीदी, शिक्षक के पास बैठ गया और उनसे मुझे पढ़ाने के लिए कहा। वे हँसे और बोले, "तुम्हें

पढ़ाने के लिए मुझे कोई वेतन नहीं मिलेगा।" मैंने उनसे कहा कि मैं हर पाठ के लिए उन्हें एक गिलास दूध ला कर दूंगा। एक महीने में ही मैंने किताबें पढ़ना सीख लिया और उर्दू लिखना भी सीख लिया। मैंने गाँव के संत से पंजाबी भी सीखी - मैंने उनसे पंज ग्रंथी, दस ग्रंथी 34, भगत बानी और बाई वारां पढ़ीं। मैंने यह सब एक साल में सीखा।

31 अरदास: शाब्दिक अर्थ, प्रार्थना, हालांकि यह धार्मिक प्रकृति की है, औपचारिक रूप से गुरबानी का हिस्सा नहीं है। इसमें ईश्वर और गुरुओं का आशीर्वाद मांगा जाता है, सिख समुदाय द्वारा अपने विश्वास को बनाए रखने के लिए किए गए बलिदानों की याद दिलाई जाती है और कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।
32 प्रकाश करना वह वाक्यांश है जिसका उपयोग यह समझाने के लिए किया जाता है कि आदि ग्रंथ को घरों और गुरुद्वारों में औपचारिक रूप से कैसे पेश किया जाता है, रखा जाता है और उसका रखरखाव किया जाता है।
33 इन्हें नरसिंघा इसलिए कहा जाता था क्योंकि ये तुरही जैसे वाद्य यंत्र नरसिंघा बजाते थे। 34 ये सभी पंजाबी भाषा में लिखे धार्मिक और साहित्यिक ग्रंथ हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
हम सब दोपहर में बगीचे में खेलते थे। बगीचा किले के अंदर ही था। कुछ तीर्थयात्री मेरे भाइयों को गुरु समझकर उनके चरणों में कुछ पैसे रख देते थे।

(पृष्ठ 31)
मैं मोतिया के फूल तोड़ती, उनमें चमकदार कागज लगाती और सुंदर मालाएँ बनाती। मैं ये मालाएँ अपने पिता और भाइयों के गले में पहनाती थी।
बगीचे में लोहे का एक पिंजरा था। उसमें एक बंदर रहता था। उसका नाम सुंदर था। हम उसे खाने की चीज़ें दिया करते थे। हमारी एक सहेली माया एक डॉक्टर की बेटी थी। वह सुंदर के लिए मूली लाई, जिसे मैंने उससे कहा कि वह ध्यान से और दूर से पिंजरे में रख दे। माया ने कहा कि वह दे देगी, लेकिन सुंदर उसके हाथ पर कूद पड़ा, एक हाथ से मूली पकड़ी और दूसरे हाथ से उसकी बांह जकड़ ली। हम ज़ोर से

चिल्लाए और एक माली ने हमारी आवाज़ सुनी – वह आया और माया को बंदर के चंगुल से छुड़ाने में हमारी मदद की। बेचारी कई दिनों तक स्कूल नहीं जा सकी। उसके पिता, डॉक्टर गुरजीत सिंह ने अपनी बेटी की बांह ठीक करने के लिए बहुत मेहनत की। उसके बाद, हम कभी सुंदर के पिंजरे के पास नहीं गए।
हमारे पिता ने हम सबको लाहौर ले जाने की तैयारी की। हमारे बड़े भाई हरचरण सिंह लाहौर पुलिस में सब-इंस्पेक्टर थे। हमारी भाभी भी लाहौर में थीं। हम लाहौर गए और डब्बी बाज़ार, बावली साहिब, चिड़ियाघर, संग्रहालय, महाराजा रणजीत सिंह का मकबरा और शालीमार बाग जैसी कई जगहें घूमीं। चिड़ियाघर में जानवरों को देखकर हम बहुत उत्साहित थे। हमने एक शेर, शेरनी और उनके बच्चे को देखा। शेर बहुत ऊँचा कूदता था, लेकिन उन्हें रोकने वाली लोहे की सलाखें नुकीली थीं। इसलिए जब वह उन पर कूदता, तो उसे चोट लगती और वह वापस मुड़ जाता। पानी में एक दरियाई घोड़ा था। हमने उस पर पैसे फेंके। वह पानी से पैसे निकाल कर बाहर रख देता था। हम काफी देर तक जानवरों के साथ खेलते रहे, फिर हमने सुंदर पंखों और पूंछ पर बनी डिज़ाइनों वाले मोर देखे। हमने उछलते-कूदते कबूतरों को भी देखा। खेलते-खेलते हमने गलती से मधुमक्खियों के छत्ते को छेड़ दिया। हममें से किसी को कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन भाई मोहिंदर सिंह की आंख में मधुमक्खी ने काट लिया। उनकी आंख सूज गई। हमारे पिताजी ने हम सबकी एक तस्वीर खिंचवाई। हमारी तस्वीर मशहूर फोटोग्राफर लाहोरा सिंह ने खींची थी। मैंने अपने भतीजे दविंदर को अपनी गोद में लिया हुआ था। वह मुझसे बहुत प्यार करता था। लाहोरा सिंह एक कलाकार भी थे - उन्होंने गुरु नानक देव जी के कई चित्र बनाए थे। वे अपनी पेंटिंग की फोटोकॉपी बेचा करते थे।

(पृष्ठ 32)
लाहौर घूमने के बाद हम करतारपुर लौट आए। कपूरथला के राजा के हाथी बैसाखी मेले के लिए करतारपुर लाए जाते थे। आत्मा सिंह, जो टीका साहब थे, हाथी पर बैठते थे।36 हाथियों की पीठ को सोने या चांदी के धागे से कढ़ाई किए हुए मखमली कपड़े से खूबसूरती से सजाया जाता था और जुलूस के लिए उस पर चांदी की सीट रखी जाती थी। करतारपुर की बैसाखी प्रसिद्ध थी। जाट लोग गांवों से निकलते थे,

35 पाठ में 'फोटोकॉपीएन' या फोटोकॉपियाँ लिखा है, जो एक अंग्रेजी शब्द है और गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है। यह कालक्रमानुसार गलत है क्योंकि आज के फोटोकॉपी यंत्र का आविष्कार तब तक नहीं हुआ था। 36 टिक्का साहिब का अर्थ है सोढ़ी वंश का उत्तराधिकारी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। वे झांझ बजाते और ढोल पीटते हुए गीत गाते थे। वे गाते थे, 'गुरु नौनिहाल सिंह ने स्वर्ग की सीढ़ियाँ बनाई हैं।' गुरु की पत्नी एक सेविका को उत्तम वस्त्रों और आभूषणों से सजाकर ऊपरी गैलरी में खड़ा कर देती थीं। जाट उसे देखकर बहुत प्रसन्न होते थे और नीचे से उसे पुकारते थे।

शाम को जुलूस निकलने के बाद हमें हाथी की सवारी करने का मौका मिलता था। हम तीनों भाई-बहन और छोटे साहब हाथी पर बैठकर सैर करते थे। हम हाथी पर चढ़ते तो थे, लेकिन थोड़ी दूरी तय करते ही हमें नींद आने लगती थी। हम दो-तीन मील तक हाथी की सवारी करते और फिर लौट आते। इस तरह हमने अपने बचपन के दिन बिताए। अब मेरे भाई तीसरी कक्षा में दाखिला ले चुके थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 3

मुसीबतों का पहाड़

Phillaur (1917-1920)

(पृष्ठ 33)

हमारा तबादला फिल्लौर शहर में हो गया। मुसीबतों का पहाड़ हम पर टूट पड़ा और हमारी खुशहाल जिंदगी बदल गई... फिल्लौर पहुँचने के कुछ महीनों बाद हमारी अंतिम परीक्षाएँ हुईं। दोनों भाई चौथी कक्षा में प्रमोट हो गए। मुझे याद है कि मेरी माँ एक बेंच पर बैठी थीं, तभी दोनों बेटे उन्हें गले लगाने आए और बताया कि वे पास हो गए हैं। माँ ने प्यार से उनकी तरफ देखा, मुस्कुराईं और उन्हें कसकर गले लगाते हुए कहा,

"अच्छी पढ़ाई करो, तो कभी फेल मत होना।"
हां, मुझे एक घटना याद है जब मां घर के पुराने हिस्से में गई थीं और गुरु ग्रंथ साहिब के 37 सुख आसन कर रही थीं, तभी अचानक लौटकर उन्होंने पूछा, "क्या आपने मुझे बुलाया था?" उनकी आवाज में हैरानी थी और उन्होंने कहा कि उन्होंने किसी को उनका नाम पुकारते हुए और उन्हें अपने साथ चलने के लिए कहते हुए सुना। हमने उन्हें बताया कि हमने उन्हें नहीं बुलाया था, और इस घटना को नजरअंदाज कर दिया गया।
वैशाख के मध्य में कुछ स्थानों पर महामारी फैल गई; लोग अपने घर छोड़कर अन्य स्थानों पर रहने चले गए। पिताजी ने भी हमें मुख्य घर खाली करके बाहरी कमरे में रहने को कहा। भाभी बसंत कौर ने तीन दिन के बेटे को जन्म दिया था। माँ को बुखार था। पिताजी यात्रा पर गए हुए थे... बुखार के तीसरे दिन से ही माँ का गला दुखने लगा था।

(पृष्ठ 34)
पिताजी वापस आए और डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने उसकी जांच करने के बाद हमें बताया कि उसके गले में प्लेग का ट्यूमर है; इसलिए हम सभी को ज़ैल हाउस में रहने के लिए भेज दिया गया।
एक दिन मैं माँ के साथ बैठी थी, तभी अचानक वो हँसने लगीं और भजन गाने लगीं, और बोलीं, "तुम्हारा दिन निकट आ गया है।"38 मैं चौंक गई। उन्होंने मुझे भजन गाने को कहा और बार-बार कहती रहीं, "देखो, वहाँ कलगीधर का दीवान है,39 गुरुजी सिंहासन पर बैठे हैं और भजन गाए जा रहे हैं।" डरकर मैं वहाँ से चली गई। मैंने पिताजी से संपर्क किया और माँ के बारे में अपनी चिंताएँ उनसे साझा कीं। पिताजी ने उनसे पूछा, "तुम्हारी क्या इच्छा है?" जिस पर उन्होंने उत्तर दिया, "कृपया 40 अखंड पाठ का आयोजन कीजिए, लेकिन यह मेरे पास ही होना चाहिए ताकि मैं शास्त्रों को सुन सकूँ।"
इसके तुरंत बाद अखंड पाठ शुरू हो गया, साथ ही लंगर की व्यवस्था भी की गई - कोई भी गरीब व्यक्ति आकर लंगर में भाग ले सकता था।
तीसरे दिन अखंड पाठ और लंगर का समापन हुआ। माताजी कुछ भी निगल नहीं पा रही थीं, लेकिन गुरुजी का आशीर्वाद उन पर भरपूर था। उन्होंने कराह प्रसाद और कुंभ

से एक गिलास अमृत ग्रहण किया। डॉक्टर बहुत मेहनत कर रहे थे। वे शायद ही कभी आराम कर पाते थे।

37 संतोख: शाम की प्रार्थना पूरी होने के बाद गुरु ग्रंथ साहिब को बंद करने की रस्म।
38 मृत्यु से संबंधित एक आम कहावत, 'दिन' का अर्थ है 'अंतिम दिन'। 39 दसवें सिख गुरु, गुरु गोविंद सिंह का जिक्र करते हुए, कलगीधर का अनुवाद 'कलगी या मोर पंख धारण करने वाला' के रूप में किया जाता है।
40 अखंड पाठ से तात्पर्य गुरु ग्रंथ साहिब के संपूर्ण पाठ से है, जो अक्सर तीन दिनों के भीतर पूरा किया जाता है। सिखों की यह परंपरा युद्ध की व्यावहारिकता से विकसित हुई, जहाँ सिख गुरिल्ला लड़ाके घोड़े पर सवार रहते हुए गुरबानी (गुरु का वचन) को शीघ्रता से पढ़ते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। घर के लिए प्रस्थान। उन्होंने उसका ऑपरेशन किया और ट्यूमर निकाल दिया। माँ बहुत बहादुर थीं, उन्होंने बिना एनेस्थीसिया के ऑपरेशन करवाने के लिए सहमति दी...

हम दिन में दो बार उनसे मिलने जाते थे। उनके निधन से चार दिन पहले, उन्होंने पिताजी से कहा, “कृपया मेरे अंतिम दिनों को खराब न करें, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक निवेदन करती हूँ कि मेरे बच्चों को मेरे सामने न लाएँ”— उन्होंने हम सभी को अंतिम बार देखा और अपना चेहरा फेर लिया। उन्होंने पिताजी से कहा, “अब आप ही उनका पालन-पोषण करें, मेरा उनसे रिश्ता अब खत्म हो गया है।” अगले दिन, जो उनके बीमार पड़ने का आठवाँ दिन था, डॉक्टर ने हमें बताया कि उनकी मृत्यु सुबह 2 बजे तक हो जाएगी। शाम को, पिताजी ने उनसे पूछा, “अब आपकी क्या इच्छा है?” उन्होंने उत्तर दिया, “श्री सुखमनी साहिब के 41वें श्लोक का ज़ोर से पाठ।” उन्होंने उसी क्षण पुजारी को बुलाया... पुजारी ने जोर-जोर से प्रार्थनाएं पढ़ना शुरू किया और पूछा, "क्या आप सुन पा रही हैं?" वह हंस पड़ी और उनके पाठ के साथ-साथ कुछ पंक्तियाँ दोहराने लगी... उन्होंने भाई हरबंस सिंह और हरचरण सिंह, और चाचा चरणजीत सिंह को फोन किया और कहा कि वह उनसे मिलना चाहती हैं, अपनी मृत्यु से तीन दिन पहले - उनकी मृत्यु प्रार्थनाएं सुनते हुए और वाहेगुरु, वाहेगुरु का

जाप करते हुए हुई...
हम सब ज़ैल हाउस में सो रहे थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि उसके बाद मेरे साथ क्या हुआ। मैं उठा और भागा। किसी ने मुझे पकड़ लिया और बिठा दिया, लेकिन मैंने कहा, "मुझे जाने दो, मेरी माँ अब इस दुनिया में नहीं हैं।"

(पृष्ठ 35)
मुझे दिलासा दिया गया और बिठाए रखा गया, मैं सो नहीं सका। सुबह हमें मुख्य घर लाया गया। हम पाँचों ने माँ के पार्थिव शरीर को गले लगाया। हमारी सबसे छोटी बहन, बेचारी मोहिंदर कौर, जब अपनी माँ को खो बैठी तब वह केवल ढाई साल की थी। उसे कुछ समझ नहीं आया। हरकिशन केवल छह साल का था।
हमें अपनी माँ से अलग होने में बहुत कठिनाई हुई। पिताजी भी बहुत रो रहे थे। माँ को नहलाया गया। उन्होंने सफेद कमीज़, सफेद सलवार और बैंगनी दुपट्टा पहनाया। वे बहुत सुंदर लग रही थीं। हमें लगा कि वे कुछ बोलेंगी, पर कौन बोलता? भजनों के बीच उन्हें श्मशान घाट ले जाया गया; उनके शरीर को फूलों से ढका गया था। हम बहुत रोए, हमारी हालत बहुत खराब थी, लेकिन हमारा ख्याल रखा गया। रोते-रोते हम थक गए... माँ का अंतिम संस्कार सतलुज नदी के किनारे किया गया। माँ के चले जाने से हमारे सारे सुखमय पल छिन गए। कुछ लोगों ने पिताजी को पुनर्विवाह करने के लिए प्रेरित किया। पूरन कौर नाम की एक शिक्षिका का नाम उनके लिए उपयुक्त बताया गया।
एक दिन मैंने कहा, “पिताजी, मुझे पता चला है कि आप पूर्णी से शादी करने वाले हैं।”
मैंने उत्तर दिया, “हाँ, मुझे लगता है मुझे शादी कर लेनी चाहिए। पूर्णी एक अच्छी स्त्री है।”42 मैंने कहा, “नहीं, वह चरित्रहीन स्त्री है, इसीलिए मुझे आगे की पढ़ाई के लिए उसके पास नहीं भेजा गया।” उन्होंने कहा, “तुम्हारी देखभाल कौन करेगा?” मैंने कहा, “मैं अपने भाई-बहन की देखभाल करूँगी। मैं आपकी भी देखभाल करूँगी। कृपया पंजाबी को फोन कीजिए और दोबारा शादी मत कीजिए।”43 पिता चुप रहे और यह देखकर हैरान थे कि बारह साल की बच्ची ने इतनी निडरता से ये सब कह दिया।
लेकिन अंततः पिता ने बलवंत कौर नाम की एक स्त्री से दोबारा शादी कर ली, जिसका विवाह के बाद नाम बदलकर गुरबख्श कौर रख दिया गया। पिता ने हमसे प्रेम

करना भी छोड़ दिया। हम साथ भी नहीं रह सकते थे।

41 पाँचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव जी द्वारा रचित एक बानी। 42 पूर्णी, पूरन कौर के नाम का संक्षिप्त रूप है। 43 पंजाबी उनके नौकर का नाम था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मेरी सौतेली माँ ने अपना साम्राज्य चलाना शुरू कर दिया। गुरबख्श कौर एक गरीब परिवार से थीं और उनके पिता कंजूस थे। बच्चों का व्यक्तित्व उनके पिता के गुणों से निर्धारित होता है। उन्होंने सबसे पहले बच्चों के दूध की खपत कम कर दी। इस तरह हरकिशन और मिंडो को दूध मिलना बंद हो गया।44 हमारी सबसे छोटी बहन मिंडो केवल ढाई साल की थी, बेचारी बच्ची दूध माँगती थी - मैं उसके लिए रोती थी। मैं उसे छाछ देती और उसे पीने के लिए कहती, लेकिन मिंडो छाछ पीने से इनकार कर देती थी।

(पृष्ठ 36)

मैं दिनभर अपनी माँ को याद करती रहती और रोती रहती। मेरी सौतेली माँ भी मुझे नापसंद करती थी। माँ के निधन के बाद मुझे स्कूल नहीं भेजा गया। भाई हरचरण सिंह ने पिताजी को पुनर्विवाह न करने के लिए समझाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं मानी। इसलिए भाई ने उनसे बात करना बंद कर दिया। भाभी बसंत भी पिताजी के विवाह के एक सप्ताह बाद घर छोड़कर चली गईं।

मेरी दादी (45 वर्ष) ने दोनों बड़े बेटों को बोर्डिंग स्कूल भेजने की योजना बनाई थी, इसलिए पिताजी ने उन्हें भेज दिया। वे केवल रविवार को घर आते और सोमवार को वापस स्कूल चले जाते। मैं बहुत अकेलापन और उदासी महसूस कर रही थी। कुछ महीने इसी तरह बीत गए।

मेरी उंगली में फोड़ा हो गया। इतना दर्द था कि मैं सो नहीं पाई। रविवार को जब मेरे भाई मुझसे मिलने आए तो मैंने उन्हें गले लगाकर रोया। मैंने उनसे कहा, “भाइयों, अब मत जाओ। अगर तुम चले गए तो मैं रोते-रोते मर जाऊंगी। मैं रात भर रोती रहूंगी, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी।” मैंने चपरासी बचन सिंह से कहा, “घोड़ागाड़ी ले जाओ

और लड़कों का सामान छात्रावास से वापस ले आओ। वे अब वापस नहीं जाएंगे।” सामान वापस लाया गया और हम पांचों फिर से एक साथ हो गए। भाइयों के लौटने पर हम बहुत खुश हुए। वे मेरे दर्द भरे हाथ को सहलाते रहे। अगले दिन कंपाउंडर अब्दुल्ला को बुलाया गया। उन्होंने मेरे फोड़े का इलाज किया। मैंने उन्हें एक काली मुर्गी दी ताकि वे मेरी उंगली का ऑपरेशन करते समय मुझे चोट न पहुंचाएं। हम फिर से साथ खेलने लगे, लेकिन हमें कई दिन लड़कों के जूँ से भरे बालों को साफ करने में बिताने पड़े। अब पिताजी ने शहर में एक घर किराए पर लिया - हम सब वहां रहने चले गए। वह एक सुंदर बड़ा घर था। घर के पास एक लंबा पीपल का पेड़ था, जहां गिद्धों का एक परिवार रहता था।

(पृष्ठ 37)
हम गिद्धों के बच्चों पर पत्थर फेंकते थे, जिसे देखकर वे खुशी से रोते थे। एक बार जब हम पत्थर फेंक रहे थे, तो गिद्धों के माता-पिता ने हम पर हमला कर दिया और हम इतने डर गए कि भागकर ऊपर एक कमरे में छिप गए। उसके बाद हमने कभी भी बच्चों को परेशान नहीं किया।
हमारी दादी जी ने एक मृत बच्ची को जन्म दिया। उन्हें सर्जरी के लिए लुधियाना के ब्राउन अस्पताल ले जाया गया। मुझे और मेरी छोटी बहन को भी साथ ले जाया गया। दादी जी की माताजी भी उनके साथ थीं। वहां मेरे लिए करने को कुछ खास नहीं था। बगल वाले कमरे में पटियाला की एक मरीज़ लेटी थीं, जो मेरी मां जैसी दिखती थीं। मैं उन्हें बड़ी ध्यान से देखती रहती थी। एक दिन उनकी मां ने मुझसे पूछा, "तुम हर समय उन्हें क्यों देखती रहती हो?" मैं रोने लगी और बोली, "मेरी मां बिल्कुल उनके जैसी दिखती थीं। जब मैं उन्हें देखती हूं, तो मुझे भावनात्मक रूप से मजबूती मिलती है।" वे दोनों भी रोने लगीं।

44 मिंडो उनकी बहन मोहिंदर कौर का प्यारा नाम है। 45 उनकी सौतेली माँ का जिक्र करते हुए।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

एक महीने बाद हम फिल्लौर लौट आए। मेरे चाचा चरणजीत सिंह आए और उन्होंने पिताजी को उनके बच्चों के साथ हुए भयानक दुर्व्यवहार के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अगर पिताजी अपने बच्चों की ठीक से देखभाल नहीं कर सकते, तो वे उन्हें अपने साथ ले जाएंगे और उनका पालन-पोषण करेंगे। पिताजी हैरान रह गए क्योंकि उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई उनकी गलतियों को उजागर करेगा। अब वे हम पर स्नेह करने लगे और उन्हें एहसास हुआ कि उनकी शादी एक गलती थी। भाई को रोज़ मांस मिलने लगा। वे पूछते, “क्या तुम्हें दूध मिला? क्या तुम्हें मांस मिला?” अब हमारा जीवन पहले से बेहतर हो गया था और मैंने पिताजी से बात करना शुरू कर दिया। मैंने उनसे छह महीने से बात नहीं की थी। मैं उनकी मौजूदगी में छिप जाती थी। मैं उनसे नफरत करने लगी थी, जिसे उन्होंने मेरा स्नेह जीतने के निरंतर प्रयासों से प्यार में बदल दिया।

बर्क गांव के नंद सिंह नाम के एक युवा पटवारी को मेरे भाइयों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया था। उन्होंने बड़े प्यार और धैर्य से पढ़ाया। मेरे भाइयों के एक मित्र, सरन सिंह, जो एक तरखान परिवार से थे, भी उनके साथ पढ़ते थे, लेकिन उन्हें हमेशा नींद आती रहती थी, जिसके कारण एक बार वे अपनी बेंच से गिर भी गए थे। उन्हें जगाए रखने के लिए, नंद सिंह ने उनकी चोटी को ऊपर की लकड़ी की बीम से बांध दिया। जब उन्होंने तब भी सोना बंद नहीं किया, तो नंद सिंह ने टिप्पणी की,

(पृष्ठ 38)

“विधवा का बेटा और व्यापारी का घोड़ा खूब खाते हैं, पर चलते कम।” जान मुहम्मद सरकारी हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। वे चौथी और पाँचवीं कक्षा के छात्रों को इतिहास पढ़ाते थे। मोहिंदर को उर्दू, फारसी, भूगोल और इतिहास में महारत हासिल थी, लेकिन गणित में वह कमजोर था। जान मुहम्मद के पढ़ाते समय मोहिंदर की आदत थी कि वह जानकारी देते हुए, उनके कहे गए तथ्यों का ज़िक्र कर देता था। एक होशियार छात्र को प्रोत्साहित करने के बजाय, जान मुहम्मद उसे सज़ा देते थे। राजिंदर को पतंग उड़ाना और क्रिकेट खेलना बहुत पसंद था। जगदीश, रोशन लाल और मेहर चंद उनके साथी खिलाड़ी थे। मोहिंदर को खेलने में कोई खास रुचि नहीं थी, लेकिन दूसरों को खेलते देखना उसे अच्छा लगता था। उसे उर्दू की किताबें पढ़ना ज्यादा पसंद था।

पिताजी ने कस्बे के बाहरी इलाके में एक घर किराए पर लिया था। सरदार शिव नारायण सिंह 'मोरनवाले' हमारे पड़ोसियों में से एक थे। वे अपनी दुकान के पीछे टोकरियों में भरकर आम रखते थे। हम दूसरे बच्चों के साथ मिलकर उनके आम चुरा लेते थे।

मेरे भाइयों को घुड़सवारी बहुत पसंद थी। जब भी गांव के नंबरदार तहसील आते थे, वे अपने घोड़ों को जैल हाउस के पास शीशम के पेड़ों से बांध देते थे। राजिंदर और मोहिंदर

वे घोड़ों को खोलकर उन पर सवार हो जाते थे। उनके दोस्त राशिद और हामिद, जो सैलॉटरी के बेटे थे, भी उनके साथ शामिल हो जाते थे।46 लड़कों को इस शरारत में बहुत मज़ा आता था।

गेहूं की कटाई के बाद फिल्लौर के गांवों में मेले लगते थे। इन मेलों में गांव की दलित महिलाएं मुख्य आकर्षण हुआ करती थीं। 47 वे बालकनियों पर बैठतीं या छतों पर खड़ी हो जातीं, और जाट लोग गाते-नाचते, शोर मचाकर उनका ध्यान आकर्षित करते और उन पर फल फेंकते। उनमें से कुछ नशे में धुत होकर हंगामा करतीं। वे इस तरह अपनी छिपी इच्छाओं को व्यक्त करतीं और बाद में खेती के कठिन परिश्रम में लौट जातीं।

46. वेतन: जाति का नाम।

47 चमार: आज यह जातिगत अपशब्द दलितों को संदर्भित करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

फिल्लौर के गांवों के कई जाट मजदूरी करने के लिए अमेरिका और कनाडा जाते थे। वे पैसे कमाते और अपने पासपोर्ट सत्यापित करवाने के लिए तहसील और पुलिस स्टेशन जाते थे। वे कोट पहनते थे और लोग उन्हें 'मिल्कानी' कहकर पुकारते थे। 48

(पृष्ठ 39)

मेरे भाई हरबंस सिंह की शादी तय हो गई थी। हमें शादी के लिए बोडलान जाना था।

हम बहुत उत्साहित थे। हम तैयार हुए और फिल्लौर स्टेशन से ट्रेन में सवार हुए। हमारे पास कई संदूक थे, लेकिन दुल्हन के गहने और कपड़ों वाला संदूक प्लेटफार्म पर ही छूट गया। हमें जालंधर पहुँचने पर ही इसका एहसास हुआ। पिताजी के एक चपरासी ने उसका ध्यान रखा। वह उन पर बैठा रहा। पिताजी ने हमें प्रतीक्षा कक्ष में बैठाया और संदूक लाने के लिए अगली ट्रेन से वापस गए।
पिताजी के लौटने के बाद हम गाँव गए। कपूरथला के महाराजा द्वारा शादी की बारात के लिए एक हाथी लाया गया था; सौ घोड़ियाँ, घोड़ागाड़ियाँ, कलाकार और संगीतकारों के बैंड भी बारात का हिस्सा थे। हम चौथे दिन दुल्हन के घर पहुँचे। जानवरों को अच्छे से चारा खिलाया गया, जिसके बाद पैसे की ताकत दिखाने का समय आ गया। मेरे चाचा ने शादी की रस्मों के तहत पैसे उड़ाना शुरू कर दिया। उन्हें रोका नहीं गया क्योंकि वे देखना चाहते थे कि उनके पास कितना पैसा है। इसलिए, कई दलितों ने फेंके गए पैसे उठाना शुरू कर दिया, जिससे अफरा-तफरी मच गई। 49 तभी लड़की के रिश्तेदारों ने हमारे चाचा से पैसे उड़ाना बंद करने का अनुरोध किया। पिताजी ने कहा कि वे अपने बेटे का विवाह आनंद कारज से कराना चाहते हैं, लेकिन लड़की के मामा 50 वेदी फेरे लेना चाहते थे। पिताजी ने सगाई तोड़ने की धमकी दी, लेकिन लड़की के भाई आनंद कारज से विवाह के लिए राजी हो गए। लेकिन, जब हम सुबह वहाँ पहुँचे, तो वेदी तैयार की जा रही थी। सभी बारातियों ने वेदी में अपने जूते उतार दिए, जिससे पंडित जी बहुत नाराज हुए और वे चले गए। पिताजी रागियों को साथ ले गए थे। गुरु ग्रंथ साहिब को पूरे रीति-रिवाज के साथ वहाँ स्थापित किया गया और आनंद कारज की रस्म अदा की गई। बारात चौथे दिन लौटी। हमारी भाभी सुनहरे बॉर्डर से सजी डोली में आईं। उनके साथ आठ पालकी उठाने वाले और एक सहेली भी थीं। हम अपनी भाभी को देखकर बहुत खुश हुए; मैं तो विशेष रूप से खुश थी। मैंने सोचा, "अब मेरी एक दोस्त बन जाएगी।"
शादी के बाद हम फिल्लौर लौट आए, लेकिन भाभी हमारे साथ नहीं आईं। मुझे अकेलापन महसूस हुआ, लेकिन उम्मीद थी कि वह जल्द ही आ जाएंगी। मुझे जल्द ही गुरु ग्रंथ साहिब का अध्ययन कराया जाने लगा।

(पृष्ठ 40)
उत्तम कौर नामधारी नाम की एक विधवा महिला थीं, जिन्होंने मुझे बड़े प्यार से शास्त्र

पढ़ना सिखाया। 51 52 वे ऊनी मोतियों की मालाएँ बनाकर सिंह परिवार को उपहार में देती थीं। भेड़ों का एक झुंड हमारे घर के पीछे से होकर गुजरता था। एक बार हमने एक भेड़ को उठाकर एक कमरे में रख दिया।

48 बाहरी लोगों के लिए चिढ़ाने वाला संदर्भ।
49. चूरा: (मूल पाठ में) आज दलितों के लिए प्रयुक्त जातिगत अपशब्द। 50. आनंद कारज: सिख विवाह समारोह, वेदी फेरे: हिंदू विवाह समारोह। 51. नामधारी सिख धर्म का एक संप्रदाय है।
भगवान के नाम का जाप करने के लिए 52 मालाएं, और यहां 'सिंह' शब्द धार्मिक सरदारों को संदर्भित करता है, न कि सामान्य उपयोग में आने वाले 'सिंह' या सिख पुरुष को।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
अगले दिन हमने कैंची से भेड़ की ऊन काटी और उसे छोड़ दिया। हमने वह ऊन उत्तम कौर को मोतियों की माला बनाने के लिए दे दी। हमें यह नहीं पता था कि चोरी की ऊन से ये पवित्र मालाएँ नहीं बनाई जा सकतीं, और न ही हमने यह सोचा कि हम कुछ चुरा रहे हैं। हम एक नेक काम कर रहे थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 4

ए
(1920-1921)

(पृष्ठ 41)
हमारा तबादला फिल्लौर से ऊना हो गया था। मुझे आज भी ऊना की खूबसूरत घाटी की याद आती है। फिल्लौर से ऊना का सफर बेहद रोमांचक था। उन दिनों न तो कारें

थीं और न ही बसें। हमने जालंधर से होशियारपुर तक तांगे में सफर किया। हमने बड़ी मुश्किल से मसराला नाला पार किया। उस समय होशियारपुर एक अव्यवस्थित शहर था। शहर से जिला अदालतों तक एक सड़क जाती थी, जिसके दोनों ओर यूकेलिप्टस के पेड़ लगे थे। ये पेड़ एक अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने लगवाए थे। इन पेड़ों ने शहर में रौनक ला दी थी। सड़क के दोनों ओर वकीलों और अधिकारियों के बंगले बने हुए थे। हमने रात बैरिस्टर सरदार हरबख्श सिंह के घर में बिताई। वे हमारे पिताजी के मित्र थे। अगले दिन हमने तांगा से होते हुए ऊना के लिए अपनी यात्रा फिर से शुरू की। शिवालिक की तलहटी तक पहुँचने के लिए हमने एक छोटी नदी पार की। पहाड़ियों पर केवल अलियार के पौधे उगते थे, जिन्हें जानवर नहीं खाते। रास्ते में हम बंखंडी के बंगले में रुके। इस बंगले से पहाड़ियों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। धौलाधार बर्फ की दीवार जैसा दिखता है। अंत में हम पहाड़ों की सुंदरता से घिरे एक नाले पर पहुँचे। यह नाला कई छोटी नदियों के पानी से भर जाता है और मानसून के मौसम में खतरनाक हो जाता है।

(पृष्ठ 42)
ऊना जाने वाली सड़क के किनारे यूकेलिप्टस के पेड़ों की एक कतार थी। इन्हें उसी अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने लगाया था, जो वृक्ष प्रेमी थे और जिन्होंने होशियारपुर शहर को इन ऊंचे-ऊंचे पेड़ों को लगाकर सुंदर बनाया था।
तहसीलदार का घर कस्बे के प्रवेश द्वार पर स्थित था। इसमें दो आंगन थे। एक आंगन भीतर था, जो तीन तरफ से चार पक्के कमरों से घिरा हुआ था, जबकि दूसरा आंगन, जिसका उपयोग पिता आगंतुकों से मिलने के लिए करते थे, बाहर स्थित था। सड़क के ठीक सामने 53 बहाती रहते थे।
वहां एक युवा बहाती लड़की रहती थी, शाम को उसके प्रशंसक वहां जमा हो जाते थे। तहसील एक किले जैसी इमारत में स्थित थी। सिख शासन के दौरान यह बेदी साहिब सिंह का किला हुआ करता था। पास में बेदियों के घर हैं और उनके पूर्वज कालाधारी की समाधि भी वहीं स्थित है। इसकी दीवारों पर 54 जन्म साखियों के चित्र बने हुए हैं। बाबा कालाधारी डेरा बाबा नानक के निवासी थे, वे अपने परिवार के साथ सालारू गांव में आकर बस गए। उन्होंने एक जंगल में ध्यान करना शुरू किया। जल्द ही, स्थानीय लोग उन्हें आध्यात्मिक गुरु मानकर उनका अनुसरण करने लगे। अंब के राजा

राम सिंह और संतोखगढ़ के सरदार अपने-अपने क्षेत्रों को लेकर आपस में लड़ते रहते थे। बाबा कालाधारी ने उनके बीच मध्यस्थता की और उनका विवाद सुलझाया। उनके निर्णय से संतुष्ट होकर, उन्होंने अपनी सीमा से लगी पहाड़ी बाबा जी को भेंट कर दी, जहाँ उन्होंने ऊना शहर की स्थापना की।
बेदी परिवार के पास गुरु ग्रंथ साहिब की एक प्रति है, जिसे कश्मीर के चित्रकारों ने सजाया है। यह प्रति महाराजा रणजीत सिंह ने बेदी साहिब सिंह को उपहार में दी थी। महाराजा साहिब सिंह का बहुत आदर करते थे, जिसकी सिखों ने बहुत सराहना की। 1850 में, साहिब सिंह की

53. बहाती: इन्हें गिर्थ भी कहा जाता है, ये भारत के हिमाचल प्रदेश की एक हिंदू कृषि जाति है। 54. जनम साखी: सिख गुरुओं की जीवन कथाएँ।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। बिक्रम सिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। जब ब्रिटिश सेना ऊना की ओर बढ़ रही थी, तब बिक्रम सिंह ने ऊना की सभी सीमाओं पर कांटों की ऊंची-ऊंची बाड़ें खड़ी कर दीं। ब्रिटिश सेना ने आसानी से इन बाड़ों को उखाड़कर नष्ट कर दिया और ऊना में प्रवेश कर गई। यह कहानी आज भी ऊना में प्रचलित है - निवासी आज भी उनकी इस मूर्खता का मजाक उड़ाते हैं।
पिता ने दोनों भाइयों का दाखिला तहसील के पास स्थित सनातन धर्म हाई स्कूल में करवा दिया।55 वहाँ सामान्य पाठ्यक्रम के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती थी। विष्णु नामक एक पंडित ने उन्हें 'सहंसर' पढ़ाया। मोहिंदर को समझ में तो नहीं आता था, लेकिन उसने पूरा शास्त्र याद कर लिया। राजिंदर और एक मुस्लिम लड़के मुबारक ने इसे सीखने से इनकार कर दिया - परिणामस्वरूप उन्हें दंडित किया गया।

(पृष्ठ 43)
उन्हें मास्टर चाग्गु राम द्वारा अंग्रेजी पढ़ाई जाती थी। एक देशभक्त होने के नाते, वे लड़कों से पूछते थे कि स्वराज जीतने पर वे क्या करेंगे। लड़के इसका जवाब नहीं दे पाते थे। मैंने बोडलान के जाटों से भी यही सवाल पूछा। उन्होंने जवाब दिया, "हम सड़क के किनारे के सभी पुराने शीशम के पेड़ काट देंगे।" ऊना 84 सीढ़ियों के लिए

भी प्रसिद्ध था। ये सीढ़ियाँ उत्तर की ओर जाती हैं और इनके किनारों पर मंदिर बने हुए हैं। कुछ तीर्थयात्री हर सीढ़ी पर सुखमनी साहिब का पाठ करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि ऐसा करने से वे 84 लाख जन्मों के चक्र से मुक्त हो जाएँगे।
हम उना से सुआ तक पैदल जाया करते थे। कभी-कभी तिब्बती लामा हमें रास्ते में मिलते थे। लामा और उनके समूह की महिलाएं डरावने चित्रों वाले झंडे लिए रहती थीं, और हम उनके गुजरते समय एक छोटे पुल के नीचे छिप जाते थे। कहा जाता था कि लामा छोटे बच्चों का अपहरण कर लेते हैं।
उन दिनों एडगर अब्राहम होशियारपुर के उपायुक्त थे। वे एक नेक इंसान थे और उनकी पत्नी को चित्रकला का बहुत शौक था। वे खूबसूरत भूदृश्य और महिलाओं व बच्चों के चित्र बनाती थीं। मोहिंदर उनके साथ ऊना जाया करते थे और उनके रंगों का डिब्बा भी ले जाते थे।
डाक बंगले के सामने बने छोटे से घर में एक युवक रहता था। उसने ऊना में काफी हलचल मचा दी थी। वह एक हिंदू पुरुष था जिसकी शादी एक दलित महिला से हुई थी।58 उसने अपनी शादी के कारण होने वाले उत्पीड़न से बचने के लिए ईसाई धर्म अपना लिया था। स्कूली लड़के उसे परेशान करते और पूछते, "यीशु के पिता का नाम क्या है?" वह जवाब नहीं दे पाता था।
हम ऊना में डॉ. हरभजन सिंह से मिले। वे हमारी सौतेली माँ के भाई डॉ. रघुबीर सिंह के मित्र थे। हम उन्हें मामा जी कहकर बुलाते थे। बेबे जी और डॉ. हरभजन सिंह ग्रेवाल उपजाति से थे। हम एक-दूसरे के घर जाया करते थे। दोनों परिवार साथ में सैर पर जाते थे। डॉक्टर साहब हमसे रोज़ मिलते और पूछते, "सब ठीक है?" हम उनके आने का बेसब्री से इंतज़ार करते थे।

55. जैसा कि शब्दावली में दर्शाया गया है, तहसील के दोहरे अर्थ हैं: यह प्रशासनिक क्षेत्र और तहसील कार्यालय दोनों को संदर्भित करता है। यहाँ, तहसील का तात्पर्य कार्यालय से है। 56. स्वशासन, गांधीवादी राजनीति और कांग्रेस की मांगों के संदर्भ में स्वराज देखें। 57. सुखमनी साहिब: गुरु ग्रंथ साहिब का एक भाग, जिसकी रचना पाँचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव ने की थी। 84 लाख जन्म या जूनियान जन्म और मृत्यु के उस अपरिहार्य चक्र को संदर्भित करता है जिससे सभी जीवित प्राणियों को मोक्ष प्राप्त करने से पहले गुजरना पड़ता है। हिंदू धर्मग्रंथों और व्याख्याओं में आमतौर

पर उद्धृत, यह विचार कुछ सिखों द्वारा भी व्यक्त किया जाता है। 58. मूल में प्रयुक्त शब्द 'चूरी' आज एक जातिगत अपशब्द है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 44)

हम भुट्टे भूनकर उन्हें खिलाते थे। वे भुट्टे को उंगलियों के बीच दबाकर तीन हिस्सों में तोड़ देते थे, जिससे हम सब अचंभित रह जाते थे। जब मैं चरखे पर सूत कात रही होती थी, तो वे कहते थे, “बीबी, मैं तुम्हारे चरखे की गति बढ़ा दूंगा ताकि तुम जल्दी काम कर सको।” उन्होंने इस पर प्रयोग भी किए, लेकिन सफल नहीं हुए।

डॉक्टर साहब की दो बेटियाँ थीं। बड़ी बेटी का नाम इकबाल था, जबकि छोटी का नाम किरपाल था। वे अपनी बेटियों से बहुत प्यार करते थे। इकबाल एक भोली-भाली बच्ची थी; वह सारा दिन हमारे घर में खेलती रहती थी। वह पिताजी को ‘बड़े बापू जी’ कहकर पुकारती थी। हम सब उसे बहुत प्यार करते थे। राजिंदर और मोहिंदर स्कूल से लौटने के बाद हमेशा अस्पताल जाते और इकबाल को घर ले आते। हमारे घर में एक बड़ा सा शीशा था। वह उसके सामने बैठती और हम उससे पूछते, “देखो, वहाँ कौन बैठा है?” वह शीशे को देखकर हँसती और हम कहते, “देखो, यह तो बंदर है!” उसे यकीन हो जाता था कि हम सच कह रहे हैं। मैं भी कभी-कभी उनसे मिलने जाता था। इकबाल एक छोटी, भोली बच्ची थी। कुछ मरीज़ उसके लिए मिठाई लाते थे, जिससे उसके पिताजी चिंतित हो जाते थे। उन्होंने उसे अजनबियों से मिठाई न लेने की सीख दी थी, लेकिन वह अक्सर यह बात भूल जाती थी।

पंजाबी हमें सूर्य ग्रहण के दौरान सुआ ले गई। उसने हमें पानी में खड़ा करके ग्रहण समाप्त होने तक शास्त्रों का पाठ करवाया। ग्रहण समाप्त होने के बाद वह हमें घर वापस ले आई।

पंजाबी ने हमारी जिंदगी को बेहद आरामदायक बना दिया था—वह हमसे बहुत प्यार करती थी और बहुत ही नेक दिल इंसान थी। एक शाम हम सब साथ बैठे थे। पिताजी भी वहीं बैठे अपना सरकारी काम निपटा रहे थे। दोनों भाई पढ़ाई कर रहे थे। पंजाबी रसोई में हमारे लिए दूध गर्म कर रही थी। पिताजी को गैस निकली और पंजाबी हंसने लगी। हम भी एक-एक करके कमरे से बाहर निकलकर उसके साथ हंसने लगे। हमारी

हंसी बेकाबू हो गई थी। दो घंटे बाद हम वापस लौटे तो दूध भी नहीं पी पाए। इस तरह हमने पंजाबी के साथ समय बिताया।

(पृष्ठ 45)
One of our peons was named Hamir Singh. He loved singing hymns to the rhythm of the drum. We would accompany him by singing Bhagat Namdev's hymn 'Parh Padosan Poochhe Nama Ke/ Pehe Chand Chawai Ho/ Tu Pai Dugani Deho Majoori/ Mai Ko Bedhi Keh Badhai Ho.'60 This is how we spent a few months — singing hymns, playing, and taking long walks.
श्री आनंदपुर साहिब और भाबोर साहिब भी तहसील ऊना में स्थित हैं। जब भी हमारे पिता इन पवित्र स्थानों पर जाते थे, हम उनके साथ जाते थे। भाबोर सतलुज नदी के किनारे स्थित है और नांगल नदी इसके पार है। यहां गुरु गोविंद सिंह जी का गुरुद्वारा है और नदी गुरुद्वारे के ठीक नीचे से बहती है। गुरु जी प्रकृति प्रेमी थे और उनके गुरुद्वारे पांवटा और गोदावरी जैसे सुंदर स्थानों में स्थित हैं। भाबोर हिंदुओं के लिए एक पवित्र स्थान है, नदी के किनारे पांच बड़े-बड़े पत्थर हैं। लोग कहते हैं कि ये वही पत्थर थे जिनका उपयोग पांडवों ने 61 चौपठों का खेल खेलने के लिए किया था। पहाड़ियों के पुरुष और महिलाएं यहां आकर उत्सव मनाते हैं।

59 शाब्दिक अर्थ: 'बड़े पिता', सम्मान और रिश्ते का शब्द। 60 संक्षिप्त अनुवाद: पड़ोसी महिला नामदेव से पूछती है, यह सुंदर घर किसने बनवाया है? मैं वास्तुकार को आपसे ज़्यादा पैसे दूंगी, बस मुझे बता दीजिए कि वह कौन है। इस पर नामदेव जवाब देता है कि जिसने इसे बनाया है उसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती।
61 महाकाव्य महाभारत से।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। बैसाखी का मेला नदी के किनारे लगा है। महिलाएं रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर नदी के किनारे पत्थरों पर बैठी हैं, पुरुष नाच-गाकर उन्हें लुभाने

की कोशिश कर रहे हैं।
जब भी पिताजी किसी गुरुद्वारे से लौटकर आते, तो हम सबको भी वहाँ ले जाते। उन्होंने बेदी परिवार से एक तांगा माँगा। हम भाई हरबंस सिंह के साथ भाबोर साहिब के लिए रवाना हुए। हम वहाँ रात भर रुके और भजन सुने। मैं उससे इतना मंत्रमुग्ध हो गया था कि आज भी उसका असर मेरी आत्मा पर महसूस होता है, हालाँकि मुझे उस भजन के बोल याद नहीं हैं।

(पृष्ठ 46)
बाद में हमने सतलुज नदी में स्नान किया। वहाँ बहुत सारे बंदर थे, वे हमारी आपस में बातचीत की नकल कर रहे थे। हम अगले दिन ऊना लौट आए।
गुरु तेग बहादुर जी ने आनंदपुर साहिब की स्थापना की थी। पहले इसे मखोवाल कहा जाता था। नैना देवी की मनमोहक पहाड़ियाँ इसकी पृष्ठभूमि बनाती हैं। आनंदपुर साहिब में कई गुरुद्वारे हैं। गुरु तेग बहादुर जी गुरु के महल में निवास करते थे। वे तहखाने के एक कमरे में ध्यान करते थे। जब औरंगजेब ने दिल्ली में उन्हें शहीद कर दिया, तो एक लोबाना सिख द्वारा उनका सिर आनंदपुर साहिब लाया गया। जिस स्थान पर उनके सिर का अंतिम संस्कार किया गया था, वहाँ एक ऊँचा चबूतरा बनाया गया है, जिसे 'अकाल बंगा' कहा जाता है। केशगढ़ साहिब सबसे प्रसिद्ध गुरुद्वारा है। यहीं पर गुरु गोविंद सिंह ने पाँचों प्यारे देवताओं को 'अमृत पान' कराया था। गुरु साहब का राज्याभिषेक गुरुद्वारा दमदमा साहिब में हुआ था।
ऊना तहसील में बाबा वद्धाग सिंह का एक डेरा है। वैवाहिक जीवन से नाखुश महिलाएं यहां आती हैं और काला जादू करवाती हैं। वे खुले बालों के साथ सिर हिलाती हैं। कुछ महिलाओं को महंत चिमटे से पीटते हैं। वे यहां दो-तीन दिन रुकती हैं, अपने मन की सारी बातें खुलकर कहती हैं, हल्का महसूस करती हैं और वापस लौट जाती हैं। इस डेरे में बहुत दान आता है। महंत प्रसाद में 25 पैसे और 50 पैसे छिपाकर अपने रिश्तेदारों को देते हैं। जब पिता जी को इस बात का पता चला, तो उन्होंने बहुत सारा प्रसाद इकट्ठा किया और छुट्टे जमा किए।
कुछ दिनों बाद हमारी बेबे जी के घर एक बेटे का जन्म हुआ। उनकी माँ उनकी देखभाल के लिए आईं, पंजाबी को भी इसी काम के लिए बुलाया गया। लेकिन आठ दिन बाद बच्चा बीमार पड़ गया—उसका रंग नीला या पीला पड़ने लगा। अठारह दिन

की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई। शहर से एक महिला बच्चे के शव की देखभाल के लिए आई। कुछ दिनों बाद हमारी बेबे जी को नहलाया गया, उनके कपड़े बदले गए। उस दिन पंजाबी ने मुझे डॉक्टर साहब के घर पर छोड़ दिया और कहा कि मैं तभी जाऊँ जब वह मुझे लेने आएगी।

(पृष्ठ 47)
उस बेचारी महिला ने मेरी बहुत देखभाल की।
कुछ दिनों बाद पंजाबी भी अपने घर चली गई। बेबे जी उसे अपने पास नहीं रखना चाहती थीं क्योंकि उन्हें हम पर दया आती थी। वह कई सालों से हमारे साथ रह रही थी।
पंजाबी के जाने के कुछ दिनों बाद, पिताजी को लगातार हिचकी आने लगी—एक दिन बीतता, फिर दूसरा, लेकिन हिचकी रुकती नहीं थी। डॉक्टर साहब ने कई तरह के इलाज आजमाए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें इलाज के लिए होशियारपुर जाना चाहिए। हमने अपनी बुनियादी ज़रूरत का सामान इकट्ठा किया और चल पड़े। पिताजी बहुत कमज़ोर थे। हम एक तांगे पर सवार हुए। भाई अमरिक सिंह

62 मूल रूप में उठा हुआ चबूतरा या थाडा।
63 अधिक जानकारी के लिए सिख परंपरा में बैसाखी और 'पंज प्यारे' की कहानी देखें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। डॉक्टर साहब घोड़ों पर हमारे साथ आए। पिताजी को बारह लोग स्ट्रेचर पर उठाकर ले गए। मानसून के कारण नदी पानी से लबालब भरी थी। हमने बड़ी मुश्किल से उसे पार किया और रात बंखंडी के बंगले में बिताई। हमने मोहिंदर और राजिंदर के नाम स्कूल की सूची से हटवा दिए और उनके स्थानांतरण प्रमाण पत्र ले लिए। अगले दिन हम होशियारपुर पहुँच गए। डॉक्टर हरभजन सिंह ने सिविल सर्जन से मेरे पिताजी की जाँच करने को कहा। उन्हें वहाँ एक सप्ताह रखा गया और फिर लाहौर भेज दिया गया। हमारे चाचा हमें बोडलान ले गए। बेबे जी हमारे

साथ थीं। डॉक्टर साहब पिताजी को लेकर लाहौर गए और उन्हें भर्ती कराया। भाई अमरिक सिंह और चचेरे भाई गुरदित सिंह पिताजी के साथ रहे। कहा जाता है कि उनके मुँह में एक नली डाली गई और घाव का इलाज किया गया। उसके बाद पिताजी चैन से सो गए, जिसके बाद डॉक्टर ने उन्हें एक कप दूध दिया। पिताजी बारह घंटे लगातार सोते रहे - उनके जागने तक सभी चिंतित थे। फिर उन्होंने कहा, "मुझे बेहतर महसूस हो रहा है।"

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 5

बोडलान

1921

(पृष्ठ 48)

हम बोडलान आ गए। मुझे लगता है पिताजी लाहौर में एक महीने रुके। फिर वे गाँव लौट आए। वे लगभग एक साल तक गाँव में रहे - वे इतने कमज़ोर थे कि खुद बिस्तर से उठ भी नहीं पाते थे। उन्हें स्वास्थ्यवर्धक दवाइयाँ और तेल की मालिश दी जाती थी। हमारे भाई अमरिक सिंह और गुरदित सिंह ने उनकी बहुत देखभाल की। उन्हें चलने में दो लोगों की मदद लेनी पड़ती थी, शुरू में उन्हें बिना सहारे के चलने में एक महीना लग गया। लेकिन वे पूरी तरह से चल नहीं पाए।

उन्होंने अपना पहले जैसा स्वास्थ्य वापस पा लिया। वे कहा करते थे, 'भगवान ने इन बच्चों की खातिर मेरी जान बचाई है। मेरे बिना इनका कोई भविष्य नहीं होता।'

हम सर्दियों भर गाँव में ही रहे। मोहिंदर, राजिंदर और हरकिशन बालगड़ी आर्य स्कूल जाने लगे। हमारी छोटी बहन मिंडो घर पर ही रहती थी—उसे कुछ भी पढ़ाने की परवाह कोई नहीं करता था। मैं उसे घर पर गुरमुखी पढ़ाती थी। मैं सारा दिन घर के कामों में लगी रहती थी। हमारी दादी जी कुछ नहीं करती थीं। वह पिताजी की देखभाल करती थीं, हालाँकि पिताजी उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं करते थे। वह बहुत बातूनी थीं, जो पिताजी को पसंद नहीं था। उन्हें साफ-सफाई की परवाह नहीं थी, जबकि

पिताजी साफ-सफाई का बहुत ध्यान रखते थे। लेकिन इंसान अपने कर्मों का फल भोगता है।

(पृष्ठ 49)
क्योंकि मैं गाँव में रहती थी, इसलिए मैं अपनी सहेलियों को बुलाती और साथ में चरखा चलाती थी। हम पूरी रात चरखा चलाते थे और हर सुबह 4 बजे घर के कुएँ में स्नान करते थे, जिसके बाद सब लोग चले जाते थे। मैं सभी लड़कियों में सबसे तेज़ चरखा चलाती थी।
मैंने पिताजी से मेरे लिए प्राथमिक पुस्तकें खरीदने को कहा।64 मैं दिन के समय इन प्राथमिक पुस्तकों से इन लड़कियों को पढ़ाती थी—इसी तरह हम कई महीनों तक गाँव में गुज़ारा करते रहे। उस साल गेहूँ महँगा था, जबकि चावल और चीनी काफ़ी सस्ते थे। हम 1 रुपये में 5 किलो चीनी खरीद सकते थे। ज़्यादातर लोग चावल और चीनी खाते थे।
मेरे भाई सुबह तड़के ही स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाते थे। वे अपने साथ एक कपड़े में लिपटी हुई चपाती और आम का अचार ले जाते थे और स्कूल जाने से पहले नाश्ते में गुड़ और मक्खन लगी बासी चपाती खाते थे। स्कूल हमारे गाँव से तीन मील दूर था। वे खेड़ा कोटली गाँव के पास वाले नाले से होकर होशियारपुर दसुआ रोड पहुँचते, फिर कच्ची सड़क पर चलकर बालाग्गन गाँव पहुँचते और वहाँ से स्कूल जाते। फारसी के शिक्षक लाला श्याम लाल उनकी लंबी यात्राओं पर सहानुभूति जताते थे। लाला शादी लाल प्रधानाध्यापक थे - वे एक कुशल प्रशासक थे। दोपहर में लड़के शीशम के पेड़ों की छाँव में बैठकर दोपहर का भोजन करते थे।
वे एक-दूसरे को चिढ़ाते, हँसते और स्कूल से घर तक के अपने सफर को रोचक बनाते थे। कुछ लड़कों के पास चप्पलें भी नहीं होती थीं, इसलिए गर्म, रेतीली ज़मीन से अपने पैरों को बचाने के लिए वे पुराने कपड़ों के टुकड़ों से अक्क के पत्ते अपने पैरों पर बाँध लेते थे।

मूल रूप में 64 क़ायदा। क़ायदा एक प्राथमिक पुस्तक होती है जिसमें छोटे बच्चों को भाषा सीखने के लिए अक्षर दिए जाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

राजिंदर सिंह मेरे भाई का दोस्त था। वह सोढ़ी परिवार से था—वह लापरवाह और खोया-खोया सा लड़का था। वह अक्सर अपनी कोट की जेबों में मूंग दाल की पिन्नी रखता था, लेकिन कोट के बटन लगाना भूल जाता था। उसकी पिन्नी दूसरे लड़के बड़ी आसानी से चुरा लेते थे, जिसका उसे कभी एहसास भी नहीं होता था। स्कूल जाते समय रास्ते में एक मुस्लिम पीर का डेरा पड़ता था। सोढ़ी राजिंदर सिंह पूरा दिन वहीं बिताता और शाम को घर लौटता। उसका परिवार यही मानता रहता था कि वह मन लगाकर पढ़ाई कर रहा है।

जाट परिवारों के कई लड़के घर लौटकर खेतों में काम करते थे। मेरे भाई का सहपाठी करम सिंह सिर पर गायों के चारे का बोझ ढोता था। मेरे भाइयों ने भी यह काम करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें यह सबसे कठिन काम लगा।

(पृष्ठ 50)

सिर पर इतना भारी बोझ ढोने से बुद्धि क्षीण हो जाती है। जमींदारों के ये पुत्र सिर पर गायों का चारा ढोने में जितनी ऊर्जा खर्च करते हैं, वह व्यर्थ ही जाती है। मेरा मानना है कि यह अत्यधिक परिश्रम उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने से रोकता है। दिन भर कुर्सी पर बैठे रहने वालों के लिए सैर करना फायदेमंद होता है, लेकिन खेतों में काम करने वालों के पास फुर्सत में सैर करने की ऊर्जा नहीं होती।

उन दिनों कुश्ती एक लोकप्रिय खेल था। पहलवानों को गाँव में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। हमारे गाँव में तीन पहलवान थे। राजू सबसे बड़ा था—वह गोरा, गठीला और विशालकाय था, लेकिन भावनात्मक रूप से कमज़ोर था। वह मुकाबलों में कभी भी बहादुरी से नहीं लड़ता था। अखाड़े में प्रवेश करते ही वह बेहोश हो जाता था। वह बहुत कम ही जीतता था। आमतौर पर वह लेटा रहता था, जिससे दूसरे प्रतिद्वंद्वी को उसे जगाने की कोशिश करनी पड़ती थी—ये मुकाबले घंटों तक चलते थे और फिर टाई घोषित कर दिए जाते थे। अर्जन एक और पहलवान था। वह सेना से हवलदार के पद से सेवानिवृत्त हुआ था। हम उसे बहुत पसंद करते थे। वह जोश से अखाड़े में उतरता था और आमतौर पर मैच जीत जाता था। वह एक दलित महिला के साथ रहने लगा। 65 हालाँकि दलितों के लिए उनका रिश्ता अपमानजनक था, फिर भी वे उसे बेनकाब

करने से डरते थे। मिल्खी गाँव के पहलवानों में सबसे मज़ेदार था। वह बैसाखी के त्योहार के दौरान 5 मन का पत्थर उठाता था। यह एक लंबा पत्थर होता था जिससे लोहे की छड़ें बंधी होती थीं। लाल लंगोट पहने मिल्खी पत्थर उठाता और वापस फेंक देता था। दर्शक आश्चर्य से उस पर पैसों की बौछार कर देते थे। हमारे चाचा मेहर सिंह उसे बादामों की एक बोरी उपहार में देते थे।
मिल्खी मेरे भाइयों को व्यायाम सिखाया करते थे। वे उनकी मालिश करते और उनके साथ कुश्ती करते थे। वे बहुत बातूनी थे—उनके सभी दोस्त उनकी संगति का आनंद लेते थे। उन्हें मोहिंदर से विशेष लगाव था। वे दोनों राजिंदर सोढ़ी के साथ बत्तखों का शिकार किया करते थे। 66 वे 'भाड़ा' में कुश्ती के मैच और गाँव के मेले देखने जाते थे।
मुकेरियान में धान के खेतों को 'भड़ा' कहा जाता है। इस क्षेत्र में सर्दियाँ बहुत कठोर होती थीं। लोग ठंडी रातें पुआल की झोपड़ियों में बिताते थे, कंबल ओढ़कर पुआल पर लेटते थे। अपनी दयनीय आर्थिक स्थिति के बावजूद किसान मेहमानों का यथासंभव गर्मजोशी से स्वागत करते थे। अगर कुछ और उपलब्ध न होता तो वे आगंतुकों को उबले हुए चावल, दाल, घी और गुड़ परोसते थे। यह क्षेत्र मच्छरों से भरा हुआ था। गाँव के लोग गोबर के उपले जलाते थे ताकि उनका धुआँ मच्छरों को भगा सके।

65 मूल में चमारी, जो आज एक जातिगत अपमान है। 66 ड्रेक्स: मूल में मुर्गाबी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

एक बार मोहिंदर और मिल्खी गांवों का दौरा करते हुए 'गगन जी 67 दा टिल्ला' पहुंचे। यह 'शिवालिक की धार' का एक विशेष चिन्ह है। इस पहाड़ी पर स्थित एक पुराना बरगद का पेड़ मीलों दूर से दिखाई देता था। अब वह गायब हो चुका है - शायद किसी तूफान ने उसे उखाड़ दिया हो। इस पहाड़ी के नीचे एक बड़ा आश्रम है जहां मेला लगता है। दूर-दूर से पहाड़ी महिलाएं इस आश्रम को सजाने आती थीं। मैदानी इलाकों के गांवों से जाटों के समूह यहां दर्शन करने और बोलियां लगाने आते थे।

कुछ दिनों हमारे पहलवान मिल्खी, बिश्ना और अर्जन अपने चेहरे कपड़े से ढककर दसूया सड़क पर महिलाओं के सजने-संवरने के सामान - क्लिप, मेकअप आदि - लूटने के लिए जाते थे। वे अपनी प्रेमिकाओं और पहाड़ी और डोगरी महिलाओं में परंदी, मोतियों की माला और चूड़ियाँ बाँट देते थे। ये पहलवान खरबूजे के मौसम में रात के समय खरबूजों का अपना हिस्सा भी ले लेते थे। गाँव के लोग इन हरकतों को 'साहसिक कार्य' या 'मज़ेदार' मानते थे।68 गाँव की एकता इतनी मज़बूत थी कि पुलिस कभी भी इसमें दखल देने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थी।

67 या गगन जी की पहाड़ी।
68 ये उद्धृत शब्द अंग्रेजी शब्द हैं जो पाठ में पंजाबी में लिखे गए हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 6

Muktsar
(1922-1925)

(पृष्ठ 52)
पिताजी की तबीयत में सुधार हुआ। वे जालंधर के कमिश्नर से मिलने गए। साहब ने उन्हें 1922 में मुक्तसर में नियुक्त कर दिया। पिताजी बहुत खुश थे क्योंकि मुक्तसर का पद उन तहसीलदारों को दिया जाता था जिनसे सरकार संतुष्ट होती थी। पिताजी बहुत ईमानदार और मेहनती थे। कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर उनसे प्रसन्न थे। पिताजी मुक्तसर जाने की तैयारी करने लगे। मुक्तसर की कहानी कुछ इस प्रकार है: माझा के चालीस सिख, जिन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी का साथ छोड़ दिया था, मुक्तसर की धरती पर लौट आए और उनसे क्षमा मांगी। उन्होंने मुगलों के विरुद्ध गुरु गोविंद सिंह जी के लिए लड़ाई लड़ी और अपने प्राणों का बलिदान दिया। इस स्थान का नाम मुक्तसर इसलिए पड़ा क्योंकि उन्होंने यहाँ 'मुक्ति' प्राप्त की थी, भय से मुक्ति पाई थी। मुझे अपनी चचेरी बहन धंती से बहुत लगाव था। मैं चाहती थी कि वह हमारे साथ

चले; मैंने पिताजी से अनुमति मांगी और वे मान गए। उसकी माँ ने भी मेरी बात मान ली और उसे अनुमति दे दी। हम तैयार हो गए, अपना सामान पैक किया। हम अपने साथ एक मुर्गा, एक घोड़ा, भैंस और एक गाय ले गए। हम यात्री ट्रेन में सवार हो गए जबकि सामान और पशुधन मालगाड़ी में रखे गए। रास्ते में हम कपूरथला और फरीदकोट स्टेशनों से गुजरे। पिताजी ने हमें बताया कि स्टेशन से फरीदकोट महल दिखाई देता है।

(पृष्ठ 53)
हम कोटकपुरा स्टेशन पर उतरे, खाना खाया और अगली ट्रेन का इंतजार किया जो हमें मुक्तसर ले जाएगी।
स्टेशन पर कई लोगों ने हमारा स्वागत किया। हम एक तांगे में बैठकर तहसीलदार के आवास पर पहुँचे। घर आधा कच्चा और आधा पक्का बना हुआ था। यह बहुत विशाल था, पास में एक तालाब भी था। यह घर सिख साम्राज्य के समय का एक पुराना किला था। पास में एक बुर्ज भी था। घर में दो भाग रहने के लिए और एक भाग पशुओं के लिए था, इसके अलावा एक बैठक कक्ष भी था।
हम उत्साह से गुरुद्वारे गए। हमें यह एहसास नहीं था कि वही स्थान जल्द ही विडंबना का स्रोत बन जाएगा - सुख का स्थान, और हमारे अनाथ होने पर दुःख का स्थान। तब हमें यह नहीं पता था कि हमें अपने प्रिय पिता को हमेशा के लिए मुक्तसर में छोड़ना पड़ेगा। हम उनकी श्मशान भूमि भी नहीं देख पाएंगे। शांतिपूर्ण जीवन पर दुःख कब आ पड़ेगा, इसका कोई अनुमान नहीं लगा सकता।
राजिंदर, मोहिंदर और हरकिशन का दाखिला खालसा स्कूल में हुआ। मोहिंदर कौर, देबो, बचनो और दयाल का दाखिला प्राथमिक विद्यालय में हुआ। हम बहुत खुशी से रहने लगे। खालसा स्कूल के प्रभाव से हमने पंजाबी भाषा अच्छी तरह सीख ली। खालसा स्कूल के प्रधानाध्यापक सरदार हरभगत सिंह एक मेहनती और अनुशासित व्यक्ति थे। वे अपने छात्रों को सादगी सिखाते थे—अगर कोई छात्र फैशनेबल बनने की कोशिश करता, तो वे अपने जूतों से उसकी सलवार को गंदा कर देते थे। स्कूल की इमारत अभी पूरी नहीं हुई थी; प्रधानाध्यापक ने सभी छात्रों को इसके लिए धन इकट्ठा करने का काम सौंपा। मोहिंदर ने इस काम में रुचि दिखाई। वह हमेशा अपने साथ रसीद पुस्तिका रखता था, और जब भी वह देखता,

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। वह बाज़ार में सजे-धजे लोगों से चंदा मांगता था। इस तरह उसने 300 रुपये एकत्र किए और भवन निर्माण निधि में योगदान दिया।
एक बार स्कूल में शेक्सपियर का अंग्रेजी नाटक 'जूलियस सीज़र' मंचित किया गया था। मोहिंदर ने मार्क एंटनी की भूमिका निभाई थी। यह एक कठिन भूमिका थी, लेकिन मोहिंदर ने पंद्रह पृष्ठों के लंबे भाषण याद कर लिए और सफलतापूर्वक अभिनय किया।

(पृष्ठ 54)
विद्यालय में धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था; कक्षाएं शुरू होने से पहले धार्मिक भजन गाए जाते थे। एक दुबला-पतला, कमजोर और लंबा व्यक्ति मुख्य गायक के रूप में गाता था। वह अपनी आँखें बंद करके भजन गाता था; उसकी गर्दन की हड्डी ऊपर-नीचे होती रहती थी। लड़के उसे चिढ़ाते थे।
'किरला जियानी'.69
विज्ञान प्रयोगशाला में पर्याप्त उपकरण नहीं थे। जब लड़के विज्ञान प्रयोगों के दौरान गलती से टेस्ट ट्यूब तोड़ देते थे, तो टूटे हुए उपकरण अलमारी के पीछे छिपा दिए जाते थे और नए उपकरण आगे रख दिए जाते थे—इसलिए अलमारी हमेशा भरी हुई दिखाई देती थी। स्कूल निरीक्षक को प्रयोगशाला अच्छी तरह से सुसज्जित और पर्याप्त उपकरणों से भरी हुई दिखाई जाती थी। एक बार, जब मोहिंदर ऑक्सीजन और लोहे के पाउडर के साथ एक प्रयोग कर रहा था, तो उससे गलती से सिलेंडर टूट गया। इस छोटी सी दुर्घटना के कारण प्रयोग रुक गया, क्योंकि उसे नए उपकरण नहीं दिए गए थे।
अगर मुक्तसर के खालसा स्कूल की तुलना आज के अच्छे स्कूलों से की जाए, तो यह सूची में सबसे नीचे आएगा। इसमें न तो अच्छी लाइब्रेरी थी और न ही बढ़िया फर्नीचर। शिक्षक भी बहुत साधारण थे। इस स्कूल के जिन छात्रों ने आगे चलकर असाधारण उपलब्धियां हासिल कीं, उन्हें ही उनकी इस उपलब्धि का श्रेय मिलना चाहिए। जब मोहिंदर कक्षा 10 में था, तब उसने 'खालसा हाई स्कूल टाइम्स' नाम से एक हस्तलिखित अखबार शुरू किया— इसमें स्कूल की खबरें और संपादकीय होते थे।

उसने इस अखबार के तीन संस्करण खुद लिखे।
मुक्तसर में तालाब के चारों ओर बने पैदल मार्ग के आसपास पीपल के पेड़ थे, और संत, फकीर और निहंग उन पेड़ों की छाया में बैठते थे। उनमें से एक संत बहुत लोकप्रिय थे। उनकी लंबी दाढ़ी, गुंथे हुए बाल और बाएं हाथ के लंबे नाखून थे। लोग उन्हें 'धत्ता साध' कहकर पुकारते थे। वे एक रजिस्टर रखते थे जिसे वे 'सचखंड रजिस्टर' कहते थे। स्कूली बच्चे अपना नाम रजिस्टर में दर्ज कराते थे और संत को एक आना देते थे।
हम शाम को 70 शबद कीर्तन किया करते थे। अमर कौर और भाभी हरनाम कौर भी हमारे साथ कीर्तन करती थीं। राजिंदर बहुत अच्छा गाता था। पिताजी उसे शाम को अपने पास बिठाकर उर्दू ग़ज़लें सुनाते थे।

‘Aata hai yaad mujhko, guzra hua zamaana, Wo jharian chaman ki, who mera ashiana.’71

69 किरला: छिपकली, ज्ञानी: पुजारी, उसे चिढ़ाते थे। 70 जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पहले कुछ अध्यायों में मोहिंदर सिंह और उसकी बहन की आवाज़ें इस हद तक आपस में मिल जाती हैं कि पाठक को यह स्पष्ट करने के लिए उन्हें अलग करना पड़ता है कि विवरण कौन दे रहा है। उदाहरण के लिए, स्कूली जीवन के विवरण मोहिंदर सिंह द्वारा जोड़े और संपादित किए गए हैं, क्योंकि उसकी बहन को स्कूल नहीं भेजा गया था।
71 ‘मुझे बीते हुए समय याद हैं, फूलों की वो झाड़ियाँ, मेरा वो घर।’

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 55)
दोनों भाई बुर्ज में पढ़ते थे। पिताजी उनकी घड़ी को एक घंटा पीछे कर देते थे। जब मैं उन्हें देखने जाती, तो वे पूछते, “बीबी, तहसील की घड़ी में 10 बज गए हैं, लेकिन हमारी घड़ी में अभी भी 9 बज रहे हैं।” मुझे पता था कि घड़ी खराब है, लेकिन मैं कहती, “चिंता मत करो, तुम्हारी घड़ी सही है।” वे मेरी बात मान लेते थे क्योंकि वे भोले थे। उन्होंने कभी घड़ी ठीक करवाने या बदलने की कोशिश नहीं की। मोहिंदर

इतना मेहनती था कि वह खाना खाते समय भी पढ़ता था। वह दाल, सब्ज़ी और दही मिलाकर जल्दी से खा लेता था, लेकिन साथ में हमेशा कोई किताब पढ़ता रहता था। मैं चिढ़कर कहती, “तुम्हें ठीक से खाना चाहिए। तुम किताबें हर समय अपने साथ रख सकते हो।” लेकिन वह बहुत मेहनती था, वह नेपोलियन की किताब पढ़ता था और कहता था, एक दिन मैं भी कुछ बनूंगा।

मेरे पिता नगर समिति के अध्यक्ष थे। समिति के पास एक पुस्तकालय था जिसमें अंग्रेजी किताबों से भरी दो अलमारियां थीं। कोई उन्हें पढ़ता नहीं था। मोहिंदर चपरासी से अलमारी की चाबियां लेकर एक-एक करके उन किताबों को पढ़ता था। इससे उसकी अंग्रेजी में बहुत सुधार हुआ। उसने डिकेंस के उपन्यास और एबॉट की 'नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन' पढ़ी। उसे अमेरिकी लेखक हॉथोर्न की 'द स्कारलेट लेटर' बहुत पसंद थी। संभवतः इसी अनुभव ने उसके मन में पुस्तकालय खोलने की इच्छा जगाई।

राजिंदर और मोहिंदर आपस में खूब लड़ते थे, लेकिन ज्यादा देर तक एक-दूसरे से अलग नहीं रह पाते थे। राजिंदर ताकतवर था और मोहिंदर कमजोर। राजिंदर चंचल स्वभाव का था और मोहिंदर को पढ़ने का शौक था। जब दोनों लड़के क्रिकेट खेलते थे, मोहिंदर अपनी डायरी में लिखता था और राजिंदर के कपड़ों पर नजर रखता था। वह पैसे बर्बाद नहीं करता था और पिताजी से बहुत प्यार करता था। वह खूब सोता था, खासकर रविवार को। कभी-कभी पिताजी कहते थे, "उठो 72वीं पोस्टी जी!" वह अपनी चीज़ें, जैसे कलम, पेंसिल, होल्डर वगैरह, बहुत सावधानी से रखता था। राजिंदर अपनी कलम खो देता और मोहिंदर की दराज से कलम निकाल लेता। मोहिंदर गुस्सा हो जाता और कहता, "यह अपनी चीज़ों का ध्यान नहीं रखता, और मेरी चीज़ें भी ले लेता है।" मोहिंदर मार्च के महीने में पके बेर तोड़कर धूप में सुखाता था। वह सूखे बेरों को अपने पुराने मोजों में रखता था, जिन्हें हम मौका मिलते ही चुराकर खा लेते थे, जिससे मोहिंदर को बहुत गुस्सा आता था।

(पृष्ठ 56)

एक बार हमने शर्त लगाई कि दिन में कोई नहीं सोएगा, जो भी सोएगा हम उसे चिढ़ाएंगे।73 राजिंदर और मोहिंदर दोनों सो गए। मैं और अमर कौर ने उनके बाल गूंथे और उनके गालों पर लाली लगाई, जब वे गहरी नींद में सो रहे थे। वे जागे तो उन्होंने

आईने में अपने सजे-धजे चेहरे देखे और हम सब खूब हंसे। उन्होंने साबुन से चेहरा धोया और अपनी चोटियाँ खोल दीं। कुछ दिनों बाद, मैं भी दिन में सो गई। उन्होंने मेरे पैरों को घोड़े की जंजीर से बांध दिया, उसे रस्सी से जोड़ा और मुझे खींचने लगे। मैं जाग गई। मैंने रस्सी पकड़ ली और उन्हें धमकी दी, "मैं पिताजी को इसके बारे में बता दूंगी।" उन्होंने जंजीर खोलने की कोशिश की, लेकिन मैंने उन्हें रोक दिया क्योंकि मैं चाहती थी कि पिताजी को इसके बारे में पता चले। उन्होंने मुझसे विनती की कि मैं उन्हें इसमें शामिल न करूं, और मैं मान गई।
हम खूब खेलते थे। एक दिन हमारी दादी जी वहाँ बैठी थीं। बैठते-बैठते वो अपनी सलवार की डोरी ढीली कर देती थीं। हम उनकी सलवार में नींबू रख देते थे। जब वो डोरी कसती थीं, तब हम उसे कस देते थे।

72 पोस्टी: अफीम का आदी व्यक्ति, यहाँ उसकी नींद की लत को चिढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। 73 भाभी (मूल में): इसका तात्पर्य है कि अगर लड़के सोते हैं, तो हम उन्हें लड़कियों की तरह चिढ़ाते हैं। अन्य संदर्भों में, भाभी का अर्थ भाभी होता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। वह उठी। चलते ही उसकी सलवार से नींबू गिरने लगे। हम हंसने लगे। बेबे जी को कोई आपत्ति नहीं थी, और अगर होती भी तो उन्होंने अपना गुस्सा नहीं दिखाया। हम रोज़ चाबियां छिपा देते थे। हम उन्हें चाबियां तभी लौटाते थे जब वह हमें पताशे देती थीं।
सुनियारा (सुनार) जाति की राज कौर नाम की एक धार्मिक महिला हमारे यहाँ अक्सर आती थीं। वे हमें भजन सिखाती थीं। वे कहती थीं कि उन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी का नीला घोड़ा देखा था, घोड़े ने अपना बायाँ खुर ऊपर उठा रखा था। उनके पति का नाम 'चिर्रा' था। वे हमसे कहते थे कि हम अपने सारे खेस उन पर रख दें। एक बार जब वे सो रहे थे, हमने उनकी चारपाई छाया में रख दी, तो वे शाम चार बजे उठे और पूछा, "क्या सुबह हो गई है?" हम हँसे और उन्हें बताया कि शाम हो गई है।
पिता जी धर्म के प्रति अत्यंत भावुक थे।74 जब अकाली दल ने महंतों से मुक्तसर के गुरुद्वारे का कार्यभार संभाला,75 तो यह कार्यभार पिता जी के माध्यम से सौंपा गया।

मुक्तसर के पुजारी जाट सिख थे और संपन्न परिवारों से थे। खुंडियां के सरदार सरमुख सिंह पिता जी के मित्र थे। वे तंबू साहिब के पुजारी भी थे। उन्होंने गुरुद्वारे के विवाद के बारे में पिता जी से सलाह मांगी। पिता जी ने उन्हें गुरुद्वारे का कार्यभार स्वयं एसजीपीसी को सौंपने की सलाह दी। उन्होंने सहर्ष एसजीपीसी को चाबियां सौंप दीं, लेकिन दरबार साहिब के पुजारी सहमत नहीं हुए।76 अकाली दल ने गुरुद्वारे के प्रांगण में अखंड पाठ शुरू कर दिया। उन्होंने दरबार साहिब को ताला लगा दिया, लेकिन सरकारी अधिकारियों ने उनसे ताले खुलवा दिए ताकि उन्हें दोबारा बंद न किया जा सके।

(पृष्ठ 57)
अब सरकार ने ग्रामीणों को अकाली दल को राशन न देने का आदेश दिया। इस आदेश का पालन सुनिश्चित करना पिता जी का कर्तव्य था। पिता जी आधी रात को जत्थेदारों को फोन करते, उन्हें अगले दिन के अपने कार्यक्रम के बारे में बताते और कहते, “मैं गाँव ‘x’ जा रहा हूँ”, ताकि वे किसी दूसरे गाँव जाकर अपना राशन ले आएँ।77 वे ग्रामीणों से बस इतना कहते कि वे अकाली दल को राशन न दें, इस आदेश को लागू नहीं करते और अगले गाँव की ओर चल देते। वे प्रतिदिन प्रार्थना करते और कहते, “हे सत्यवादी ईश्वर, कृपया मुझे मेरे धर्म के विरुद्ध कार्य न करने दें। मैं सरकारी कर्मचारी हूँ, इसलिए मुझे आदेशों का पालन भी करना होगा।” वे आधिकारिक दौरों पर जाने से पहले हमेशा प्रार्थना करते। वे घर पर रहते हुए प्रतिदिन शास्त्र पढ़ते—सुबह जल्दी उठते, टहलते हुए पाँच बार जप जी साहिब का पाठ करते।78
उन्हें पैदल घूमना बहुत पसंद था।
वह आधिकारिक दौरों के दौरान अपना राशन साथ ले जाता था; एक नौकर हमेशा उसके साथ रहता था।
उनके लिए खाना बनाना। वे कभी किसी के घर खाना नहीं खाते थे, चाहे वे पंद्रह दिन के दौरे पर ही क्यों न हों—वे अपने पैसों से खाना खाते थे। वे यात्रा के दौरान भी गुरु ग्रंथ साहिब को अपने साथ रखते थे। उन्होंने जीवन भर शराब नहीं पी। वे अच्छे चरित्र के व्यक्ति थे। मुक्तसर स्कूल के प्रधानाध्यापक अच्छे चरित्र के नहीं थे। पिताजी स्कूल के अध्यक्ष थे। एक बार वे स्कूल का निरीक्षण करने गए। प्रधानाध्यापक सो रहे थे—जूनियर शिक्षक और कुछ लड़कियां छात्रों को पढ़ा रही थीं। पिताजी ने

प्रधानाध्यापक को डांटा। तीन मिनट बाद

74 पंथ: मूल रूप में सिख धार्मिक संप्रदाय। उनके पिता सिख धर्म के प्रति अत्यंत आस्थावान थे। 75 इस संघर्ष के संदर्भ के लिए 1920 के दशक के सिख गुरुद्वारा सुधार आंदोलन को देखें। 76 दरबार साहिब: यहाँ, मुक्तसर का ऐतिहासिक गुरुद्वारा। 77 इस प्रकार, उन्होंने अकाली दल की सहायता की, जबकि सरकारी आदेश इसके विपरीत था। 78 जप जी साहिब गुरु ग्रंथ साहिब की पहली बानी है, जिसकी रचना प्रथम सिख गुरु, गुरु नानक ने की थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। कुछ दिनों बाद, वह आधी रात को हमारे घर में दाखिल हुई। हमारे चपरासी उमर दीन ने उसे अंदर आने दिया। पिताजी आंगन में सो रहे थे। उन्होंने बताया कि वह उनकी चारपाई पर बैठ गई और वे जाग गए। उन्होंने उससे पूछा, “तुम इस समय यहाँ क्यों आई हो?” वह डर गई और उठ खड़ी हुई। उसने कहना शुरू किया, “मुझे कुछ निवेदन करना है।” पिताजी ने कहा, “आधी रात को निवेदन क्यों कर रही हो? तुम जो कहना चाहती हो, उसे लिखकर आवेदन दे सकती थी।” उसने कहा, “मैं पिछले तहसीलदार 79 और आपके प्रति अपने कर्तव्यों को लेकर असमंजस में थी।” पिताजी ने कहा, “अपना सामान पैक कर लो, तुम यहाँ ज्यादा दिन नहीं रहोगी। मेरा मन करता है कि तुम्हें निलंबित कर दूं, लेकिन मैं तुम्हारी रोजी-रोटी छीनना नहीं चाहता। अब, बेहतर होगा कि तुम ठीक से जीवन यापन करो। जिन लड़कियों को तुम पढ़ा रही हो, वे तुमसे क्या सीखेंगी?” शर्मिंदा होकर वह चली गई। फिर, पिता ने उमर दीन को बुलाया—रात में पिता की अनुमति के बिना दरवाजा खोलने के लिए उसे डांट पड़ी। उमर दीन ने कहा, “सरदारजी, वह पहले तहसीलदार के यहाँ आती थीं, इसलिए मैं भ्रमित हो गया। मुझे पता नहीं था कि आप अलग हैं। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा।”
पिताजी एक परोपकारी व्यक्ति भी थे। वे अपने धर्म से प्रेम करते थे और हर संक्रांति पर गुरुद्वारे जाते थे।

वे बारामाह की नमाज़ पढ़ते थे। लोग हैरान रह जाते थे—क्या वे अधिकारी हैं या गुरसिख? वे इतनी शांति से नमाज़ पढ़ते हैं, वे कहते थे। मैंने भी अपने धार्मिक अनुष्ठानों का बहुत ध्यान से पालन करना शुरू कर दिया। आइए, हम अपने पिता की दयालुता और न्याय के कुछ किस्से साझा करें। वे विधवाओं के प्रति बहुत सहानुभूति रखते थे। उन्होंने चपरासी को निर्देश दिया था कि विधवाओं के विवाद के मामले दूसरों के मामलों से पहले देखे ताकि वे समय पर घर पहुँच सकें। कुछ गुंडों ने एक गरीब आदमी की बेटी का अपहरण कर लिया था। पिता ने लगातार पंद्रह दिनों के प्रयास के बाद उसे वापस लाया। मुक्तसर में माघी का मेला बहुत लोकप्रिय है। पिता ने मुक्तसर में अपनी तैनाती के कारण त्योहार के दौरान हमारे सभी रिश्तेदारों को हमारे यहाँ आने और सरोवर में स्नान करने के लिए आमंत्रित किया। हमारे घर के बाहरी आँगन में एक तंबू लगाया गया था। हमारे सभी कमरे रिश्तेदारों से भरे हुए थे। हम रात 2 बजे सरोवर में स्नान करने गए। उसके बाद, पूरा दिन मेहमानों के लिए खाना बनाने में बीत गया। इसके लिए एक रसोइया भी रखा गया था, लेकिन इसके बावजूद इतना काम था कि मुझे अपने लिए समय ही नहीं मिला। हमने तीन दिन लंगर के लिए खाना पकाया। दो डिब्बे घी इस्तेमाल हो गया। दिन के समय हम बुर्ज की बालकनियों से मालवाइयों को देखते थे। वे चमकीली पगड़ी और ज़मीन को छूते लंबे कुर्ते पहनते थे। वे अपने हाथों में बड़े-बड़े डंग भी लिए रहते थे।
जैतो का 80वां मोर्चा शुरू हुआ। मुक्तसर से पच्चीस सिंहों का एक जत्था प्रतिदिन जैतो जाने लगा। हमारी इस जत्थे को लंगर खिलाने की प्रबल इच्छा थी। हमने तंदूर में नमक और बेसन के पराठे पकाए और सुबह 4 बजे दरबार साहिब पहुँचे, साथ में पराठों की एक टोकरी, मक्खन से भरा एक बड़ा बर्तन और लस्सी से भरा एक मिट्टी का पात्र भी ले गए। हमने गुरुद्वारे में जत्थे और अन्य सिंहों को भोजन कराया और भोर होने से पहले घर लौट आए। हम जब भी जत्थे के पास जाते, खादी का दुपट्टा ओढ़ लेते, क्योंकि पिताजी ने हमें कपड़े न पहनने का निर्देश दिया था।

79. यहां कर्तव्यों का तात्पर्य यौन अनुग्रह से है - इसका मतलब है कि उसने पिछले तहसीलदार को यौन अनुग्रह दिया था और नए तहसीलदार को भी वही देने की उम्मीद की थी।
80 बुनियादी संदर्भ के लिए https://www.sikhiwiki.org/index.php/

Jaito_Morcha देखें। 81 यहां सिंह शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से सिख पुरुषों के लिए किया गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। गुरुद्वारे जाते समय उत्तम वस्त्र पहनना। फिर भी, किसी ने लाहौर के 'लात साहब' से शिकायत की कि यह तहसीलदार 82 एक पूर्ण सिख है और वह अकाली दल की मदद करता है।

पिताजी लाहौर गए और फिर अमृतसर। अमृतसर में सरोवर की सफाई का काम चल रहा था। वे गर्मियों में सफेद रेशमी कोट पहनते थे और सफाई में मदद करने के लिए उन्हीं कपड़ों में सरोवर में दाखिल हुए। बाद में उन्होंने अपने कपड़े उतारकर एक संदूक में रख दिए।

(पृष्ठ 59)

जब वे लौटे, तो उन्होंने कहा, “यह गंदगी नहीं है, यह अमृतसर के सरोवर का केसर है, इसे धोना मत — इसे संभाल कर रखना। यह एक यादगार वस्तु होगी।” लेकिन तब हमें नहीं पता था कि उन यादगार वस्तुओं का क्या अर्थ है। 84 उन्होंने हम सभी को भाई हरबंस सिंह और भाई सरमुख सिंह की पत्नी के साथ अमृतसर भेजा। बेबे जी भी हमारे साथ गईं। हमने बड़े प्रेम से अपनी सेवा की। मैं बीमार थी, फिर भी मैंने झूठ बोला कि मैं ठीक हूँ, ताकि मैं वहाँ जा सकूँ। मैं सेवा के प्रति बहुत उत्साहित थी। एक दिन, मैं बेहोश हो गई और मेरा सिर दीवार से टकरा गया। एक सेवादार ने मुझे मिश्री और गुलाब के रस से बनी लस्सी का एक गिलास दिया। 85 इसे पीने के बाद मुझे अच्छा लगा। कुछ देर आराम करने के बाद मैंने फिर से सेवा शुरू कर दी। हमें तीसरे दिन वापस लौटना था। भाई हरबंस सिंह ने मुझसे अपने लिए अरदास करने को कहा। मैं अपनी बीमारी से परेशान था, इसलिए पवित्र ग्रंथ के चारों ओर बने रास्ते के एक कोने में खड़े होकर मैंने प्रार्थना की, “हे गुरु रामदास जी, यदि आप चाहें तो मुझे मृत्यु दे दीजिए। यदि आप मुझे जीवित रखना चाहते हैं, तो कृपया मुझे स्वस्थ कर दीजिए।” जब मैं मुक्तसर लौटा, तो मैंने उसी डॉक्टर से वही दवा ली और उस समय वह मुझ पर असर कर गई। मुझे बेहतर महसूस हुआ। हम मुक्तसर में तीन साल नौ महीने रहे। राजिंदर और मोहिंदर ने खालसा हाई स्कूल से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की।

स्कूल की स्थापना के बाद से इतने अच्छे अंक लाने वाले वे पहले छात्र थे; उन्होंने स्कूल का नाम रोशन किया। उनके शिक्षक फरीदकोट से पिताजी को पत्र लिखा करते थे। एक बार पिताजी एक पोस्टकार्ड लेकर घर आए। उन्होंने मुझे उसे ज़ोर से पढ़ने को कहा। उन्हें पंजाबी पढ़ना आता था, लेकिन भाई ने कुछ अजीब लिखा था। मैंने पढ़ा, "आपका पुत्र, मोहिंदर सिंह रंधावा, पंजाब का राज्यपाल।" पिताजी यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि उनका पुत्र इतना महत्वाकांक्षी है। उन्होंने उस कार्ड को संभाल कर रख लिया। जब लड़के फरीदकोट की यात्रा से लौटे, तो पिताजी ने मोहिंदर से उसका पत्र पढ़ने को कहा। जब मोहिंदर ने इसे पढ़कर सुनाया, तो हम सब हंस पड़े। पिताजी ने उससे कहा, "बेटा, तुम तो बड़े महत्वाकांक्षी हो।" उसने जवाब दिया, "पिताजी, अगर मैं राज्यपाल बनने की ख्वाहिश रखूंगा, तभी मैं जिला आयुक्त या आयुक्त बनूंगा।" लेकिन ईश्वर की यही योजना होती है – उसने ये सभी लक्ष्य हासिल कर लिए। उसकी इच्छाएं पूरी हुईं, लेकिन पिताजी अपने बेटे की सफलता का आनंद नहीं ले सके। माता-पिता ने बच्चों को लाड़-प्यार भी नहीं किया, इसीलिए वे स्वभाव से गंभीर हो गए।
पिता ने दोनों भाइयों का दाखिला लाहौर मिशन कॉलेज में करा दिया। अभी दो महीने ही बीते थे कि त्रासदी घट गई।

82 पूरण: संपूर्ण सिख। लत साहिब: लॉर्ड साहिब का गलत उच्चारण, या मूल में ब्रिटिश अधिकारी प्रभारी। 83 कारसेवा।
84. अपने पिता के निधन को याद करते हुए उनके स्वर में शोक का भाव था। 85. सेवादार: वह व्यक्ति जो सेवा करता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

हमारे पिता का दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे तीन दिनों से बीमार थे। चाचा रघुबीर सिंह, हमारे भाई हरभजन और अमरिक सिंह, और दादाजी आए। पिताजी बेहोश हो जाते थे। जब उन्हें होश आता, तो वे मुझसे कलम और स्याही लाने को कहते, ताकि वे हमारे भविष्य को सुरक्षित करने के लिए कुछ लिख सकें। जब भी मैं

उनके लिए कागज, कलम और स्याही लाता, भाई अमरिक उसे एक तरफ रख देते। ऐसा तीन-चार बार हुआ। मैं भी चुप रहा। मैं उनसे पूछ नहीं सका कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं; उन्हें पिताजी को लिखने देना चाहिए था। अब, सभी ने हमें पिताजी को लाहौर ले जाने की सलाह दी। मैंने खाना बनाया और टिफिन में पैक कर दिया। मैंने बर्तन और किराने का सामान भी तैयार कर लिया। पिताजी कहने लगे, मेरा पलंग बदल दो और मुझे नए कपड़े और पगड़ी दे दो। उन्होंने कपड़े बदले, बैंगनी रंग की पगड़ी और हल्के सफेद रंग की पगड़ी बांधी, फिर पगड़ियों को उतारकर एक तरफ रख दिया। उन्होंने कहा, "जाते समय मैं इसे पैक कर लूंगा।" उन्होंने मुझसे अपने बाल संवारने को कहा। मैंने उनके बाल संवारे और उन्हें जूड़े में बांध दिया। अचानक, वे बिस्तर पर गिर पड़े। मैंने जल्दी से बुर्ज से अपने चाचा और भाई को बुलाया। मेरे चाचा ने उन्हें दवा पिलाने की कोशिश की, लेकिन वे उसे पचा नहीं पाए। पिताजी का देहांत हो गया था। हमने उन्हें बिस्तर पर लिटाया। जब वे बीमार होते थे, तो वे कहते थे, “चलो चलते हैं, मैं चलता हूँ, लेकिन मैंने पहले कभी घोड़ागाड़ी में सफर नहीं किया है, इसलिए मैं घोड़े पर बैठूंगा।” वे पूरी रात यही कहते रहते थे।86 वे सुबह होते ही ढोल बजने पर ही चुप होते थे। जब हम उनसे पूछते, पिताजी, आप इन सब बातों के बारे में क्यों बात करते हैं, तो वे कहते, “मुझे कभी पता ही नहीं चलता कि मैं क्या कह रहा हूँ।” भाई सरमुख सिंह हर रात उनके पास बैठते थे। दोपहर 12 बजे मरने से कुछ घंटे पहले, पिताजी ने उन लंबित कानूनी मामलों के कागजात मांगे जिनकी सुनवाई उन्हें करनी थी और एक मामले में अपना फैसला सुनाया। उन्होंने कहा, “उन्हें यहाँ बुलाओ, मैं उन्हें अपना फैसला सुना दूंगा।” ईश्वर की इच्छा को बदला नहीं जा सकता। राये वधे, ना तिल घाटे, जो लिख्या करतार। 87 उन्होंने अपने जीवन का सफर पूरा किया और इस दुनिया को छोड़कर चले गए, लेकिन हम पाँच भाई-बहन अनाथ हो गए। फिर हमने उनकी तस्वीर खिंचवाई, उसके बाद हमने शव को नहलाया और तैयार किया, और अर्थी को दरबार साहिब के सामने से ले गए। 88

हम सभी जुलूस में शामिल हुए। 89 परिक्रमाओं के दौरान मैं इतना व्याकुल था कि बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में भी मैं लगातार रोता रहा। फिर हमने सभी दुकानदारों को बुलाया और उनसे बकाया राशि मांगी ताकि हम हिसाब-किताब कर सकें। लेकिन सभी का हिसाब-किताब पहले ही हो चुका था। एक कपड़े बेचने वाले ने हमसे पैसे मांगे जबकि उसका कोई बकाया नहीं था। कोषाध्यक्ष ने उसे रसीद दिखाई

और फटकार लगाई।

(पृष्ठ 61)
कुछ लोग ईमानदार भी होते हैं। एक लाला था जिसका नाम ईश्वर दास था। कुछ दिन पहले पिताजी ने उसे 9000 रुपये और हमारे सारे गहने सौंप दिए थे। वह हमारे पास आया, सब कुछ लौटाया और बोला, “सरदार सिंह की एक बिना लाइन वाली प्रति है, उसे ढूंढो और जांच लो। उसमें सारे हिसाब-किताब हैं।” पिताजी का संदूक खोलने पर हमें वह प्रति मिल गई। उसमें पैसों और सारे गहनों का हिसाब-किताब था। सबने उसका शुक्रिया अदा किया।

86 पिता को अपनी आसन्न मृत्यु का पूर्वाभास। 87 गुरबानी की यह पंक्ति बताती है कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा से ही होता है। 88 चूंकि मृतक रीति-रिवाजों के अनुसार ईश्वर को प्रणाम नहीं कर सकते, इसलिए आरती को प्रतीकात्मक प्रणाम के रूप में गुरुद्वारे के द्वार के सामने रखा जाता है।
89 गुरुद्वारे के सरोवर (पानी की टंकी/तालाब) के चारों ओर पैदल मार्ग।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 7

बोडलान गांव लौटें
(1925)

(पृष्ठ 62)
भाई अमरिक सिंह हम सबको साथ लेकर बोडलान के लिए रवाना हुए। उन्होंने पिताजी की अस्थियां एक डिब्बे में रख दीं। मैंने यात्रा के दौरान उस डिब्बे को अपनी जांघों पर रखा; हम कुछ देर बाद गांव पहुंचे। हम अपने प्रिय पिताजी को मुक्तसर में हमेशा के लिए छोड़कर आए थे। गांव पहुंचने पर हमें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे बहुत कठिन दिन थे, उन दिनों को याद करके मन उदास हो

जाता है। हरबंस सिंह ने दसूया में वकालत शुरू की। हम सब साथ रहते थे।
अब उन्होंने राजिंदर सिंह की शादी करवा दी। बेचारी हरपाल कौर, फराला के ठेकेदार सरदार शेर सिंह संधू की बेटी थी। तेरह साल की उम्र में उसकी शादी हो गई। हरचरण सिंह ने शादी की सारी व्यवस्था की और शादी बड़े धूमधाम से संपन्न हुई। उसके पिता ने उसे 150 ग्राम सोना उपहार में दिया, लेकिन उस बेचारी को हमारे घर से कोई उपहार नहीं मिला, अंगूठी या कपड़े तक नहीं। शादी में नाचने-गाने और हाव-भाव दिखाने का सारा इंतजाम हमने ही किया था। कुछ समय बाद, हम हरपाल कौर को भी बोडलान ले गए। कुछ और समय बाद, मेरी भी शादी हो गई और मुझे दुमवली में मेरे ससुराल भेज दिया गया। यह गाँव डबवली के पास है।
Harpal Kaur, Harkishan Singh, sister Mohinder Kaur and Bebe lived together in Bodlan. Bebe ji would occasionally go to visit her brother Dr. Raghbir Singh.

(पृष्ठ 63)
बड़े भाई हरबंस सिंह और उनकी पत्नी अमर कौर हमें बहुत परेशान करते थे—हमें तो उनसे बिना घी की रोटी भी मिलने लगी थी। एक दिन उन्होंने चने की सब्ज़ी बनाई और उसमें घी नहीं डाला—हम उसे निगल नहीं पाए और बड़ी मुश्किल से खाना खाया। उन्होंने अपने लिए अलग से घी मंगवाया और बाकी अपने परिवार के लिए रख लिया। राजिंदर और मोहिंदर अपनी लंबी छुट्टियों में वापस आए। वे हमारे लिए एक भैंस लाए। उन्होंने हमारे लिए एक अलग घर बनवाया और उसके बाद से हम ज़्यादा आराम से रहने लगे। हमें जो भी ज़रूरत होती, हमारे भाई बिश्ना और मिल्खी लाकर देते थे। वे हमारे दरवाज़े पर लकड़ियाँ छोड़ जाते थे। मेरे चाचा बहुत मेहनती थे। हर साल मानसून के महीने में वे लकड़ियाँ इकट्ठा करने के लिए पेड़ों से डालियाँ काटते थे और हज़ारों डालियों के ढेर लगा देते थे। वे अपनी मेहनत का आधा हिस्सा मेरे पिताजी को दे देते थे। मेरे पिताजी अपने भाई से बहुत प्यार करते थे, वे जो भी देते, उसे कृतज्ञता से स्वीकार करते थे; उनके बीच कभी लेन-देन की बात नहीं होती थी। मेरे भाई करतार सिंह मेरे चाचा के इकलौते बेटे थे। पिताजी अपने भतीजे से बहुत प्यार करते थे। जब भी वह हमसे मिलने आता, तो उसके लिए नए जूते खरीदने के अलावा, उसकी पसंद के सूट सिलवाकर एक नए बक्से में भरवाते थे। जूते खरीदना मुश्किल

हो जाता था क्योंकि भाई करतार सिंह के पैर बड़े साइज 11 के थे। इसीलिए उनके जूते उनके विशेष नाप के अनुसार सिलवाए जाते थे। करतार सिंह लंबा-चौड़ा युवक था, उसे खाने का बहुत शौक था - वह जब भी बाजार जाता, आइसक्रीम (मलाई दी बर्फ) खाता और आइसक्रीमवाले का सारा स्टॉक खत्म कर देता। वह नौ से दस अंडे और तीन मुर्गियां खा जाता था। भाई हरबंस सिंह भक्त था, वह अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करता था। अमर कौर मेरी भाभी हरपाल कौर के साथ बुरा बर्ताव करती थी - जब मैं गांव लौटी, तो मैंने देखा कि

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। घर की हालत बहुत खराब थी। मैंने हरपाल कौर से भी बात की। जब मैंने उसे समझाया, तो उन्होंने लड़ना बंद कर दिया। मैं अपने गाँव में काफी समय तक रही—जब हमारे भाइयों का किसी ज़रूरत की चीज़ माँगने वाला पत्र हम तक पहुँचता, तो मैं अपने चाचा के पास जाती। वे अपने और पिताजी के साझा कोष से उन लोगों से पैसे वसूलते जिन पर उनका कर्ज़ था और लड़कों को ज़रूरी रकम भेज देते। हमारी चाची का नाम राम कौर था, उनका स्वभाव बहुत मधुर था। वे हमसे बहुत प्यार करती थीं और हमारी परेशानियाँ देखकर रोने लगती थीं।
जब राजिंदर और मोहिंदर छुट्टियों में घर आते, तो आंटी दूध का एक घड़ा, दही और मक्खन का एक बड़ा गिलास लेकर हमारे बरामदे में खड़ी हो जातीं और मुझे पुकारतीं, “बेटी आओ, बच्चों के लिए ये दही-मक्खन ले आओ। मैं सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकती।” मैं सीढ़ियाँ उतरकर उनके उपहार ले आती। कभी-कभी मैं ये उपहार लेने उनके घर भी जाती, लेकिन ऐसा बहुत कम होता था। उनके घर जाकर उनसे कुछ लेने में मुझे बहुत शर्म आती थी, पिताजी के समय में तो हम राजाओं की तरह रहते थे।

(पृष्ठ 64)
गाँव में हमारा यही हाल था। हमारे पास अनाज थोड़ा-थोड़ा होता था; हम अनाज के बदले सब्ज़ियाँ भी खरीदते थे। सुबह झंडी अराइन आवाज़ लगाती, “बीबी जी, सब्ज़ी ले लीजिए।” वो सिर पर सब्ज़ियों की टोकरी लेकर आती। उन दिनों सब्ज़ियाँ सस्ती हुआ करती थीं, हम अपनी ज़रूरत के हिसाब से सब्ज़ियाँ ले लेते थे। पशुओं का चारा शहर से आता था। गुड़ घर पर ही बनाया जाता था – चीनी और बाकी ज़रूरी सामान

हम दसुआ शहर से लाते थे।
सर्दी का मौसम आ गया। लाहौर से राजिंदर का पत्र आया जिसमें उसने रजाईयों की मांग की थी। मैंने घर की रुई से बीज निकाले और उसे कंघी किया, हरपाल कौर ने भी मदद की। अब समस्या अच्छे कपड़े की थी। मैं आंटी के पास गई, और जब चाचा जी घर लौटे, तो उन्होंने बताया, “90 काको आई थीं, उन्होंने कहा कि उन्हें राजिंदर-मोहिंदर के लिए रजाईयां बनानी हैं।” उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यापारी, जिसने हमसे पैसे उधार लिए हों, मान जाए, तो वे हमारे संयुक्त कोष से पैसे दे सकते हैं। हमारे कुछ उधार लेने वालों ने मेरे पिता और चाचा जी से संयुक्त रूप से पैसे उधार लिए थे। चाचा जी ने हमें 4-5 दिनों में पैसे दे दिए। हमने वाइन रंग का चिंट्ज़ कपड़ा मंगवाया, जिस पर बड़े-बड़े फूलों की डिज़ाइन बनी थी। हमने अंदर पहनने वाला कपड़ा रंगवाकर चिंट्ज़ के नीचे सिल दिया। इस तरह हमने रजाईयां तैयार कीं। दशहरा की छुट्टियों में हमारे भाई आए और रजाईयां ले गए।
जब भाई छुट्टियों में घर आते थे, तो घर में रौनक आ जाती थी। हम भाई-बहन मिलकर बहुत खुश होते थे—मिल्खी और बाकी लोग सुबह ही आ जाते थे और हमारे भाई उनके साथ निकल जाते थे। थोड़ी देर कुश्ती करने के बाद वे कुएँ के पानी में नहाते और घर लौट आते। कुछ खाते और फिर पेड़ों से घिरे इलाके में पढ़ने चले जाते। जब वे गर्मियों की छुट्टियों में आते, तो मोहिंदर उनका सामान लेकर सीधे गाँव चला जाता, जबकि राजिंदर मुझे मेरे ससुराल से लेने आता, मैं भी घर आ जाती और हम सब साथ रहते। बेचारी मिंडो चुपचाप बैठी रहती, मुक्तसर में स्कूल की पढ़ाई के बाद उसकी पढ़ाई छूट गई थी। वह दिन भर घर में काम करती रहती थी। अगर हमारी बड़ी भाभी चाहतीं, तो वह मिंडो को अपने पास रख सकती थीं और उसकी पढ़ाई में मदद कर सकती थीं, लेकिन हमारे भाई का मन नहीं था।

90 काको: महिला बच्चों के लिए स्नेह का एक शब्द, जहाँ 'काका' का अर्थ शिशु-लड़का/बच्चा होता है, और 'काको' या 'काकी' का अर्थ लड़की-बच्ची होता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। भाभी हमेशा घर के झगड़ों और अराजकता में उलझी रहती थीं, इसीलिए उन्हें मिंडो की शिक्षा में कभी रुचि नहीं रही।

हरकिशन सिंह बालागड़ी में पढ़ता था, पर बेचारा पढ़ता क्या था? अगर उसे कोई किताब भी चाहिए होती, तो उसे हरबंस से कई दिनों तक मिन्नतें करनी पड़तीं; कॉलेज की फीस के लिए उनसे पैसे लेने पर भी ताने और आपत्तियां ही सुनने को मिलतीं। इसी वजह से वह उदास हो गया। पढ़ाई में वह बहुत अच्छा था। जब उसकी दसवीं की परीक्षाएं थीं, तब मैं भी गांव में ही थी। मैं उसे सुबह 3 बजे पढ़ाई के लिए जगाती और अपनी प्रार्थनाएं शुरू कर देती।

(पृष्ठ 65)
उसने अपनी मेहनत से परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। लेकिन परीक्षा के बाद, आगे की पढ़ाई के लिए किसी ने उसकी मदद नहीं की। पिता ने उसके लिए 10,000 रुपये छोड़े थे। अमरिक सिंह के परिवार ने दावा किया कि उन्हें बीकानेर की संपत्ति के लिए लिए गए ऋण को चुकाने के लिए उस पैसे की ज़रूरत है, और उन्होंने राजिंदर से न जाने कितने पैसे निकलवाए। अमरिक सिंह मुझे मोंटगोमरी के एक चक में ले गया, उसे पूरा यकीन था कि अगर वह मुझे बोडलान में रहने देगा, तो मैं उसे पिता का पैसा नहीं लेने दूंगी। उसका शक सही निकला। मैं राजिंदर को समझाती रही कि उन्हें वह पैसा नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे हरकिशन की आगे की पढ़ाई रुक जाएगी, कोई भी उसकी शिक्षा का खर्च नहीं उठाएगा। लेकिन उन्होंने राजिंदर को मना लिया और उससे पैसा ले लिया। उन्होंने मुझे चक से ही सीधे मेरे ससुराल भेज दिया। मुझे चक में कभी घर जैसा महसूस नहीं हुआ। अमरिक सिंह का घर झगड़ों से भरा था। उसकी दो पत्नियां थीं, बलवंत कौर और हरनाम कौर। बलवंत कौर हमेशा हरनाम कौर को उससे पिटवाने की कोशिश करती थी। जब भी मैं किसी महिला को पिटते हुए देखती हूँ तो मुझे गुस्सा आता है—मैं उनके घर में खुश नहीं थी, लेकिन मैं क्या कर सकती थी? भाई मुझे दूर भेजना नहीं चाहता था।92 मैं अपने भाई-बहनों से मिले बिना दिसंबर में अपने ससुराल के लिए निकल गई।
मोहिंदर मुझे गर्मी की छुट्टियों में लेने आया था। मोहिंदर को नंगे पैर चलना पसंद था। मैं उससे कहता, "नंगे पैर मत चलो।" वह जवाब देता, "इसके बाद मुझे नंगे पैर कौन चलने देगा? जब मैं उपायुक्त बनूंगा, तो मेरे लिए हर जगह कालीन बिछाए जाएंगे।" हम उसकी इस बात पर हैरान थे, लेकिन उसने जो कहा, वह कर दिखाया।
मोहिंदर की पहली सगाई उग्गी चिट्टी गांव में सरदार बेअंत सिंह के घर पर हुई थी।

मोहिंदर ने उनसे अपनी बेटी को स्कूल भेजने का अनुरोध किया।93 उन्होंने यह अनुरोध ठुकरा दिया, इसलिए मोहिंदर ने भी रिश्ता तोड़ दिया और सगाई टूट गई। इसके बाद मोहिंदर की दोबारा सगाई हुई। लाहौर के पुलिस उप अधीक्षक सरदार गुप्ता सिंह ने हमें शगुन भेजा। इसमें 31 सोने के सिक्के, मिठाई और सूखे मेवों की कई टोकरियाँ शामिल थीं। हमने एक सोने का सिक्का रख लिया और बाकी लौटा दिया। छह महीने बाद, भाई [मोहिंदर] ने यह सगाई भी तोड़ दी।
गर्मी की छुट्टियाँ फिर आ गईं। डॉ. रघुबीर सिंह हमारे मामा थे। उन्होंने हमें एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने हमें पत्र पढ़ते ही पटियाला आने के लिए कहा, क्योंकि ठेकेदार गज्जन सिंह अपनी बेटी के लिए वर ढूंढ रहे थे। हम भाई-बहन पटियाला के लिए निकल पड़े। जब शादी की बात शुरू हुई, तो नानी जी ने गज्जन सिंह से कहा, “देखो भाई, हम तो बस

91. चक: ब्रिटिश भारत में एक क्षेत्रीय विभाजन।
92 यहां ‘भाई’ से तात्पर्य अमरिक सिंह से है, जो उसका सौतेला भाई था। 93 यहां बेटी से तात्पर्य उस लड़की से है जिससे उसकी सगाई हुई थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। "लड़के को दूल्हे के रूप में पेश करो, हमारे पास तुम्हारी तरह इतनी संपत्ति नहीं है।" हम दोनों भाई-बहन क्रोधित हो गए। हम उठे और बाहर चले गए।

(पृष्ठ 66)
हमने तय किया कि हम अपनी प्रतिष्ठा को उनकी नज़रों में गिरने देकर इस शादी को पक्का नहीं करेंगे। चाचाजी कहने लगे, "आओ बहन, गाड़ी नीचे खड़ी है, जाकर लड़की को देख लो।" मैंने कहा, "चाचाजी, हम इस बारे में घर पर बात करेंगे, फिर लड़की को देखेंगे।" हम पटियाला लौट आए। कई लोग हमारे पास रिश्ते तय करने और शादी का प्रस्ताव लेकर आते थे, लेकिन हम सबको बताते थे कि लड़का अभी शादी नहीं करना चाहता। गांव के जाट मोहिंदर की शादी को लेकर मोहिंदर से ज़्यादा चिंतित थे। जब मोहिंदर किताबें लेकर भीखे खान के इलाके में पढ़ने जाता था, तो

चरण सिंह मसांद पूछते थे, "सरदार जी, क्या आप अभी भी पढ़ते रहेंगे और शादी नहीं करेंगे?"
11 जून 1932 को मोहिंदर ने आईसीएस परीक्षा उत्तीर्ण की। हम बहुत खुश थे; स्वाभाविक रूप से खुश होते ही; लेकिन हमारे गाँव और आसपास के इलाकों के लोगों ने भी उनकी इस उपलब्धि का बड़े हर्षोल्लास से जश्न मनाया। आजकल तो हर कोई आसानी से डी.सी. बन जाता है, उन दिनों डी.सी. बनना एक बड़ी उपलब्धि हुआ करती थी। गाँव के लोगों ने मोहिंदर का गर्ना साहिब रेलवे स्टेशन पर स्वागत किया; उन्होंने तुरही बजाकर उनकी उपलब्धि का जश्न मनाया और उनके गले में माला पहनाकर उनका अभिनंदन किया। हरपाल ने एक बेटे को जन्म दिया, जिसका नाम राजिंदर ने बीरिंदर रखा। राजिंदर जब लंबी छुट्टियों में घर आता था, तो उपहार के रूप में एक गर्म टोपी और स्वेटर लाता था। हरपाल कौर के पिता का देहांत हो गया था, अब बेचारी कहाँ जाती, वह तो हमारे ही गाँव में रहती थी। वह घर पर ही व्यापार करती और अच्छे से जीवन यापन करती थी। बेबे जी गाँव में हमारे घर के पास रहती थीं और परिवार से संपर्क में रहती थीं। यह सच है कि तीस साल की उम्र में विधवा होने पर और कोई सहारा न रहने पर एक स्त्री का दिल ही उसके दर्द को समझ सकता है। किशन सिंह बेबे जी के पिता थे। उन्होंने फैसला किया कि वे अपनी बेटी को घर लाएंगे, अदालत में मुकदमा दायर करेंगे और सारी संपत्ति पर अपना दावा करेंगे। वे चुपचाप आए और बेबे को अपने साथ ले गए। उन्होंने चाचा से सलाह लिए बिना ही एक वकील नियुक्त करने का फैसला किया। वकील ने चाचा को बताया कि उनके पिता अदालत में मुकदमा दायर करने वाले हैं। चाचा बहुत परेशान हुए और बोले, “काको, मैं सिर्फ तुम्हारे साथ परिवार के रूप में नहीं रहना चाहता, मैं बाकी छह लोगों के साथ भी परिवार की तरह रहना चाहता हूं। मैं उन्हें अपने भतीजे-भतीजियों की तरह मानता हूं। उनके खिलाफ मुकदमा मत करो, वे बिना मुकदमे के ही तुम्हें सब कुछ दे देंगे। वे हमेशा तुम्हारा सम्मान करेंगे।” उन्होंने बेबे को यह बात समझाई और उन्हें वकीलों के पास जाने से मना किया। वे अपने पिता से भी नाराज थे। सबकी सहमति से, उन्होंने अपने फैसले के अनुसार, सारे गहने, बैंक में जमा 5000 रुपये, उसकी एक प्रति और बीकानेर में हमारी 25 एकड़ (1 मुरब्बा) जमीन बेबे जी को दे दी।

(पृष्ठ 67)
चाचा रघुबीर सिंह एक बुद्धिमान चिकित्सक थे - वे अपने रिश्तेदारों से संबंध बनाए रखते थे और सब कुछ अपने पास रखते थे।
हम ईश्वर के आभारी हैं कि हमारी दादी एक उच्च नैतिक मूल्यों वाली महिला थीं। पिताजी के देहांत के बाद, उन्होंने कभी रंगीन दुपट्टा नहीं पहना, यहाँ तक कि हाथ में अंगूठी भी नहीं पहनी। धोबी द्वारा धुले हुए कपड़े लेते समय भी वे कहती थीं, कृपया इस कपड़े को थोड़ा गंदा और निचोड़ दें। वे बहुत धैर्यवान महिला थीं, उन्होंने कभी इस बात की शिकायत नहीं की कि उनका कोई पुत्र नहीं है। हर साल, पिताजी की पुण्यतिथि पर, उन्हें गुरु ग्रंथ की प्रार्थनाएँ अर्पित की जाती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। साहब अपने नाम से वस्त्र दान करते हैं। पिता की अस्थियां लंबे समय तक प्रार्थना कक्ष में एक छोटी सी अलमारी में रखी रहीं, किसी ने भी उन्हें तुरंत हटाने की जहमत नहीं उठाई। अंत में, बेबे जी अस्थियां लेकर अपने पिता के साथ पातालपुरी गईं और अपने पति की अस्थियां बिखेरीं।
मोहिंदर सिंह ने शादी करके विदेश जाने का फैसला किया। हम भी इस फैसले से सहमत थे, क्योंकि हमारा मानना था कि विदेश से शादी करने से बेहतर यही होगा। काफी विचार-विमर्श के बाद हमें डॉ. हरभजन सिंह की बेटी का रिश्ता हमारे लिए बहुत उपयुक्त लगा। हम डॉक्टर साहब और उनके परिवार को अच्छी तरह जानते थे; वे सचमुच बहुत अच्छे लोग थे। काफी सोच-विचार के बाद हमने भाई निरंजन सिंह के हाथों से यह रिश्ता स्वीकार कर लिया। शादी की तारीख 15 अगस्त 1932 तय हुई। उन दिनों मोहिंदर अमृतसर गए और बलबीर सिंह रंधावा के घर पर रहने लगे। उनके वहां रहते हुए रंधावा की पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। जब वे घर लौटे, तो मैंने एक बेटी को जन्म दिया। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें इस शुभ अवसर की जानकारी होती, तो वे उनके घर नहीं जाते और बोडलान में ही रहते ताकि उनकी बहन को भी बेटा हो सके।
विवाह समारोह शुरू हुआ। हमने खूब गाने गाए। गांव की सभी महिलाएं इकट्ठा हुईं और उन्होंने शादी के गीत गाए।

"धीरे - धीरे,
मेरे बेटे के सिर पर पगड़ी बांध दो।
कपड़े को बांधें, पगड़ी को सुंदर कलगी से सजाएं।
मेरे बेटे का ध्यान किसने आकर्षित किया है?
रानी के बेटे को किसने बंदी बना लिया है?
उसे किसने पकड़ा है?

हमने इस तरह के पारंपरिक गीत गाए। दूल्हे पर वटना पत्थर रगड़ने का दिन आ गया, दोआबा में इस अवसर को 'मायियां' कहते हैं। देवरानी-जेठानी ने वटना रगड़ना शुरू कर दिया। वे फुलकारी पहने खड़ी थीं। मेरा भाई उत्साह से चबूतरे पर बैठा था।

(पृष्ठ 68)
दोनों देवरानी-जेठानी वटना लगातीं और गीत गातीं।

"Wahva ki vatna katore da,
"तुम्हें क्या हुआ है?"94

भाभी ने भाई के मुंह पर मरहम लगाया। उन्होंने उसकी दाढ़ी पर भी मरहम छिड़क दिया। भाई उठा, भाभी राव को ज़मीन पर धकेल दिया और उसके चेहरे और बालों पर मरहम लगा दिया। सब लोग हंसने लगे। भाभी बहुत छोटी थी, पर मर्द तो मर्द होते हैं। रस्म पूरी हुई। भाई शादी के लिए चला गया। बारात एक ट्रक में बैठकर नारंगवाल गई। बारात में गांव के किसान थे, मिल्खी और ताया भीखे खान भी आए थे। वे शादी के तीसरे दिन पहुंचे। इकबाल बहुत खूबसूरत लग रही थी; वह जवान थी - सिर्फ 15 साल की। उसका चेहरा सुंदर था, गोरी त्वचा थी, गले में सोने का हार, कलाई में चूड़ियां और दोनों हाथों की उंगलियों में अंगूठियां थीं। हरपाल कौर भी खुश थी। दुल्हन...

94 "कटोरा में वटना है, दो स्त्रियाँ इसे अच्छी तरह मलती हैं"

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना

अनुमति के प्रसारित न करें। एक नाई के साथ। 95 हमने उसे दूध दिया; उसने थोड़ा सा पिया। काफी समय बीतने के बाद, नाई कहने लगा, “कृपया लड़की को चाय दीजिए।” मैंने चाय बनाई और इकबाल को दी। इकबाल के आने के साथ ही हमारे घर में चाय पीने की प्रथा शुरू हुई।

मोहिंदर सिंह इकबाल से बात करना चाहते थे। करीब सात बजे, मैं इकबाल को अपने साथ छत पर ले गया। उसके साथ आई नाई को शादी के घर में अकेले रहने में थोड़ी झिझक हो रही थी। लेकिन हमने उसे इस मुलाकात के बारे में नहीं बताया। मेरे भाई ने भी मुझे उनके पास बिठा दिया, लेकिन मैंने कोई बहाना बनाकर इकबाल को अपने साथ ले आया। उन दिनों लोगों में बहुत सब्र होता था, और खासकर मोहिंदर सिंह में, उनमें तो बहुत ही आत्म-नियंत्रण था।

मेरे भाई में बहुत आत्मविश्वास है। वह खुद को भाग्यशाली समझता है और वास्तव में भाग्यशाली है भी। जिस पुरुष की पत्नी आज्ञाकारी होती है, वह सचमुच भाग्यशाली होता है। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि जिस घर में आज्ञाकारी पत्नी होती है, वह स्वर्गिक होता है। मोहिंदर की हर खुशी इकबाल की खुशी भी है, वह उसकी हर बात मान लेती है। पति की इच्छा ही पत्नी की इच्छा होती है। यह सत्य है कि:

“ईश्वर को पाने के लिए, स्वयं का नाश करना पड़ता है।”

हम उसके सामने कितने चतुर हो सकते हैं?”96 गुरु ग्रंथ साहिब के इस कथन के अनुसार, इकबाल ने स्वयं को अपने पति की सभी इच्छाओं के अनुरूप विकसित किया है। यदि हर घर में उनके जैसी महिलाएं हों तो हर घर स्वर्गिक हो सकता है।

(पृष्ठ 69)

मोहिंदर अपनी पत्नी से हर परिस्थिति में खुश है, और क्यों न हो, वह हर तरह से उसकी इच्छाओं को पूरा करती है।

अब मेरे भाई को विदेश जाना पड़ा। हम सब बैठकर सोचने लगे कि मोहिंदर कौर का क्या करें। मोहिंदर सिंह ने कहा, “मेरा दोस्त शाम सिंह गाँव आज़मवाला, तहसील फ़ाज़िल्का में रहता है। वह हमारे साथ पढ़ता था। दिल्ली में उसकी नौकरी है, हम अपनी बहन की शादी उससे करवा सकते हैं। मैं उसकी शादी करवाकर विदेश चला जाऊँगा।” हमने शाम सिंह से उसकी सगाई करवा दी और फिर उनकी शादी हो गई। लेकिन बाद में हमें पता चला कि उसके परिवार की सोच अनपढ़ किसानों जैसी थी,

शादी से पहले हम लड़के से मिले ही नहीं थे। किसी बड़े भाई ने इस फैसले की ज़िम्मेदारी नहीं ली। यह एक गलती थी – अगर हमने उसकी शादी न करवाई होती, तो हरकिशन सिंह, बेबे जी, हरपाल कौर, सब लोग साथ रह सकते थे, मोहिंदर के विदेश से लौटने के बाद हम उसकी शादी करवा सकते थे। पर भाग्य के नियम तो चलते ही हैं। शाम सिंह जी दयालु और मिलनसार स्वभाव के थे। लेकिन मेरी बहन उस घर में खुश नहीं थी। उसके दुखी होने के कई कारण थे—उनमें से एक यह था कि शादी के बाद उसका कोई बड़ा भाई उससे मिलने नहीं आया और न ही किसी ने उसकी किसी भी परिस्थिति में मदद की। बेचारी चुपचाप अपने दिन गिन रही थी। मोहिंदर सिंह विदेश चला गया। हरकिशन सिंह और हरपाल कौर बेबे के साथ चक नंबर एफ.एफ.बी. गजसिंहपुर, बीकानेर चले गए। हरकिशन सिंह ने खेती शुरू कर दी और सब बीकानेर में ही रहने लगे। मोहिंदर कौर बीकानेर से ही दिल्ली चली गई। बरजिंदर का जन्म बीकानेर में हुआ। मैं अब पथराला जाकर वहीं रहने लगी। राजिंदर और मोहिंदर के पत्र विदेश से हमारे पास आते रहते थे।

95 नैन: महिला नाई, नाई मध्यस्थ होते थे और इसलिए उन्हें विशेष रूप से शादियों में आमंत्रित किया जाता था।
गुरबानी के 96 श्लोक, जिनका संक्षिप्त अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। ये पत्र मेरे जीवन की खुशियाँ थे, मैं उनके पाठ्यक्रम समाप्त होने का इंतज़ार करती थी ताकि वे लौट सकें। राजिंदर को अपने पाठ्यक्रम में बहुत समय लगता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 8

गांव की चहल-पहल

(पृष्ठ 70)97
होशियारपुर के गांव बहुत खूबसूरत हैं!
यह पूरे भारत में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ से हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ इतनी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। शिवालिक की ऊँची नीली पहाड़ियों ने सीरोवाल की उपजाऊ भूमि की सुंदरता को और भी बढ़ा दिया है। चारों ओर आम के बाग और पेड़ों के समूह फैले हुए हैं। सीरोवाल के गाँवों में बोडलान सबसे प्रसिद्ध गाँव है। इन बागों के पास स्थित गर्ना साहिब गुरुद्वारा एक ऐतिहासिक गुरुद्वारा है, जहाँ हर महीने काफी चहल-पहल रहती है।
इस गाँव के बदलते दृश्य, जो हर महीने और हर मौसम की शुरुआत में दिखाई देते हैं, मन को आनंदित कर देते हैं। मानसून के मौसम में जब गरजते काले बादल छा जाते और मूसलाधार बारिश करते, तो गरज की आवाज़ से मोर 'केओन-केओन' की आवाज़ निकालते। रात में मेंढकों की टर्राहट हवा में गूंज उठती। जब मेंढकों की टर्राहट बंद हो जाती, तो बिंदे चिड़ियों की चहचाहट शुरू हो जाती। रात में पीपल के पेड़ के नीचे तालाब पर जुगनुओं का नृत्य शुरू हो जाता और ऐसा लगता मानो धरती पर तारे बरस रहे हों।
दिन के समय, गायें और भैंसें बिना खेती वाली ज़मीन पर चरती थीं, और उनके पीछे सफेद सारस कीड़े-मकोड़े चुगते थे। बछड़े खुशी से अपनी पूंछ ऊपर उठाते और इधर-उधर दौड़ते थे। मानसून का मौसम न केवल मनुष्यों को आनंद देता है, बल्कि जानवर और पक्षी भी इस आनंद में शामिल होते हैं और बादलों का स्वागत करते हैं।

(पृष्ठ 71)
काले आकाश में उड़ते हुए सफेद सारसों के झुंड बेहद सुंदर लग रहे थे; वे मानो भगवान के गले में सजी सफेद फूलों की मालाओं की तरह प्रतीत होते थे।
मानसून के मौसम में आम के बागों में रौनक और चहल-पहल रहती है। दिन में कोयल की कुहू-कुहू की आवाज़ और रात में पापीहा की पी-कहां-पी-कहां की आवाज़ हवा में गूंजती रहती है। हम सुबह बागों के लिए निकल पड़ते, बर्तन में पानी भरते, पेड़ों के नीचे गिरे हुए पके आमों को धोते और खाते।
जब हम 15-12 पेड़ों के आम खा लेते थे, तब हमें पता चलता था कि किस पेड़ पर सबसे स्वादिष्ट आम लगते हैं। फिर हम उस पेड़ से टोकरी भर आम मंगवाते, उन्हें ठंडे

पानी में धोकर अपनी बाल्टी भर लेते थे। होशियारपुर के इन गांवों का ठंडा पानी भी एक वरदान है। गर्मियों में भी यह इतना ठंडा होता है कि इसमें नहाने से कंपकंपी छूट सकती है। हम आमों को इसी तरह ठंडा करते और जी भर कर खाते थे। कुछ खट्टे-मीठे, कुछ खट्टे, कुछ हल्के हरे। इस्लाम के स्वर्ग का वर्णन सुंदर स्त्रियों की धाराओं और झरनों से किया गया है। हम होशियारपुरियों का स्वर्ग मीठे आमों से भरा है। भला इनसे मिलने वाले आनंद की बराबरी कौन कर सकता है? हम यह तो नहीं कह सकते कि मुसलमानों के स्वर्ग में सुंदर स्त्रियां होंगी या नहीं, लेकिन हमारा स्वर्ग हमारे साथ है, और हम हर तीसरे साल सावन-भदों के महीनों में इसका आनंद ले सकते हैं। काम और तनाव से परेशान और शहरों से ऊबे हुए कई लोग मुझसे पूछते हैं,

97 यह अध्याय मोहिंदर सिंह रंधावा के लेखन की शुरुआत को चिह्नित करता है; इससे पहले के अध्यायों में उनकी बहन के शब्दों के माध्यम से उनके बचपन की जानकारी दी गई थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। हमारी बीमारी का इलाज क्या है, हम अपनी आत्मा को कैसे तृप्त करें? मैं उन्हें हमेशा यही सलाह देता हूँ, “पंद्रह दिन होशियारपुर के बागों में जाकर आम खाओ और यह भूल जाओ कि तुम शिक्षित हो।”

आम का मौसम खत्म होते ही भुट्टे पकने लगते थे। हम गोबर के उपलों में आग जलाकर भुट्टे भूनते थे। भुने हुए भुट्टे का स्वाद लेकर हम घर लौटते थे और नमक-मिर्च से सजी खट्टी छाछ पीते थे। भुट्टे पक जाने पर हम झियोरी परिवार के चूल्हे पर मुरमुरे भूनते थे और उससे पॉपकॉर्न बनाते थे। सर्दियों में, वेलना में गर्म गुड़ और गन्ने के रस की मीठी खुशबू हवा में घुल जाती थी। गर्म गुड़ और गन्ने के रस की खुशबू इतनी मनमोहक होती है कि आज भी उसे याद करके मुंह में पानी आ जाता है। रात में हम कंबल ओढ़कर चूल्हे के पास खड़े होकर किसानों की कहानियां सुनते थे। कहानियां सुनाने और बातें करने में बोडलान के लोगों का कोई मुकाबला नहीं। गांव के आधे लोगों के पास करने को कुछ नहीं होता, वे सीमेंट के चबूतरे और पेड़ों के ठूंठों पर बैठकर बातें करते हैं।

जब ठंड ज्यादा होती थी, तो हम एक बड़े हॉल के बरामदे में रखी लकड़ियों से गर्मी

पाने की कोशिश करते थे। किसान जूट के छिलके लेकर उन्हें लकड़ियों में ईंधन के रूप में इस्तेमाल करते थे। हम गोपी चंद, बिक्रमजीत, राजा भोज और पूरन भगत की कहानियां बड़े चाव से सुनते थे। मैं कभी-कभी किसानों को वैज्ञानिक अवधारणाएं समझाने की कोशिश भी करता था और बताता था कि पृथ्वी गोल है और सूर्य के चारों ओर घूमती है। राजा सिंह नाम का एक व्यक्ति भैंसों का व्यापारी था।

(पृष्ठ 72)
वह काफी अमीर थे, लेकिन एक बेहद गंदे और बदहाल घर में रहते थे। मैं उनसे पूछता था, "चाचा जी, आप इस नरक में क्यों रहते हैं? क्या मरने के बाद आप अपना सारा पैसा अपने साथ ले जाएंगे? अपने लिए एक हवादार बंगला बनवा लीजिए।" वे जवाब देते थे, "मैं इसे तब बनवाऊंगा जब पृथ्वी घूमना बंद कर देगी, ताकि घर का मुख उल्टा न हो जाए।"
पौह के महीने में और भी ठंड पड़ती थी। पहाड़ों से ठंडी हवा चलती, रात में ओस जम जाती और तालाबों पर बर्फ की मोटी परत बन जाती। दिन में सूरज चाँद जैसा दिखता। भैंसें तालाब में पानी पीने दौड़तीं; वे पानी में मुँह डालतीं, लेकिन ठंड के कारण तुरंत बाहर निकाल लेतीं। किसान खेस में लिपटे रहते, बाँहें क्रॉस की तरह मोड़े रहते; वे काँपते रहते, लेकिन काम और घर के कामों से पीछे नहीं हटते। मुझे बहुत ठंड लगती थी। जब मैं सुबह गर्म मफलर (गुलुबंद) ओढ़कर खेतों में स्नान के लिए घर से निकलता, तो चरण सिंह मसांद कहते, "सरदार जी, पूनी की तरह कहाँ जा रहे हो?" पौह में छत पर धूप सेंकना मुझे बहुत अच्छा लगता था, और साग और मक्की की रोटी तो और भी स्वादिष्ट लगती थी।
फागुन और चैत के महीनों में सुहावनी बसंत ऋतु देखने को मिली। पीले सरसों के फूलों से सजे गेहूँ के खेत ऐसे लग रहे थे मानो पीले फ्रेम में जड़ी हरी तस्वीर हो। सरसों तोड़ने वाली लड़कियों के लाल, पीले और नीले दुपट्टे हरी फसलों के बीच बेहद खूबसूरत लगते थे। लड़के चने के छिलकों को दबाकर चटकने की आवाज़ निकालते थे और जई के अंकुरों में ऐसे फूँकते थे जैसे वे पाइप हों। ठंडी रेत पर नंगे पैर चलना और भी आनंददायक होता था। यह महीना किसानों और जमींदारों के लिए आराम का महीना होता है। बैसाखी के मेलों में कुश्ती के मुकाबले आयोजित किए जाते थे और लड़के लड्डू और जलेबी खाकर पेट भर लेते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
जब गेहूँ की कटाई पूरी हो जाती थी, तो किसान अनाज फटकने में जुट जाते थे। वे जल्दी से गेहूँ के छिलकों को धूप में उछालकर अनाज अलग कर लेते थे। जब जेठ-हार के महीनों में अनाज घर आता था, तब दावतों का सिलसिला शुरू होता था। इन दावतों के अनुसार, गाँव के लोग एक-दूसरे को दावतों में आमंत्रित करते थे - मान्ह दी दाल, मिर्च से लाल रंग की खट्टी छाछ, पकौड़ी-रायता और बड़े तवों पर पकी हुई बड़ी-बड़ी चपातियाँ। मैं 1925 की बात कर रहा हूँ, जब चुनाव का बुखार अभी गाँवों में नहीं चढ़ा था, और लोग सदस्यता और मंत्रालयों के सपने भी नहीं देखते थे; सभी लोग बड़े प्यार से रहते थे और एक-दूसरे के सुख-दुख बाँटते थे।
कई लोगों को गर्मी का मौसम पसंद नहीं होता, लेकिन मुझे गर्मी के महीने बहुत अच्छे लगते हैं। दिन में ठंडे पानी में नहाने का आनंद और रात में छत पर सोने का सुख अतुलनीय है।

(पृष्ठ 73)
खुले आसमान के नीचे सोने से मनुष्य और प्रकृति के बीच सीधा संबंध स्थापित हो जाता है। मुझे याद है, पलंग पर लेटकर चाँद और तारों को निहारना और रात के आकाश से नज़रें हटाना नामुमकिन सा लगता था। आकाश में चाँद की नियमित यात्रा कितनी अद्भुत होती है! हम पहाड़ों की चोटियों के पीछे से चाँद की हल्की रोशनी देख सकते थे; यह धीरे-धीरे तेज होती जाती और पूरे आकाश में फैल जाती। चाँद और बादलों का लुका-छिपी का खेल हमें और भी आनंद देता था। हम उत्तरी आकाश में ध्रुव तारा और सप्तऋषि नक्षत्रों को स्पष्ट रूप से देख सकते थे और संत ध्रुव की कथा याद कर लेते थे। आकाशगंगा अँधेरे रात के आकाश में और भी चमक उठती थी, और हम सोचते थे कि अंतरिक्ष के इस धुंधले क्षेत्र में लाखों सूर्य और आकाशगंगाएँ घूम रही हैं, तो शायद उनमें जीवन कहीं अधिक विकसित हो? तारों के समूह को तंगली कहते हैं। हम इसे देखकर समय का अनुमान लगाते और सोने की तैयारी करते थे। कुत्तों के भौंकने से रात की खामोशी और भी गहरी हो जाती थी। रात की खामोशी में इतना सुकून होता है कि हमें शक्ति और जीवन मिलता है। कभी-कभी मैं भोर होते ही

जाग जाती और सुबह का तारा देखती। उसकी चमक इतनी कोमल होती है कि मानो आकाश में मिट्टी का दीपक हो। उस समय पूरा गाँव सो रहा होता और मुझे लगता कि इस प्राकृतिक सौंदर्य की एकमात्र मालकिन मैं ही हूँ और इसके रहस्य सिर्फ मुझे ही पता हैं। इसकी सुंदरता में डूबकर, स्वयं को भूलकर, मैं इसके जादू में खो जाती। होशियारपुर के निवासियों की शारीरिक ज़रूरतों को पूरा करने के साथ-साथ आम के बाग उन्हें आध्यात्मिक संतुष्टि भी प्रदान करते हैं। हर बाग में एक साधु विराजमान होते थे और लोग अपने खाली समय में वहाँ गुरबानी सुनने जाते थे। एक बार जब मैं गर्मियों की छुट्टियों में कॉलेज से घर आया था, तो मैं हरियाणा टाउनशिप के पास स्थित कोटला नौध सिंह गाँव गया। रास्ते में मुझे एक आम के बाग में एक साधु की कुटिया दिखाई दी। मुझे अपने वैज्ञानिक ज्ञान पर गर्व था और मैं सोचता था कि मुझे सब कुछ पता है। कुटिया में संत प्रार्थना कर रहे थे और मैंने सुना: ऐ मन चंचला चतुरै किन्ने न पाया 98। यह सुनकर मेरा अहंकार टूट गया और मैं मनन करने लगा। संत नारायण सिंह और संत हरनाम सिंह ने हमारे गाँव के बाग में काफी चहल-पहल मचा रखी थी। हम भी गर्मियों की छुट्टियों में उनके भजन-गायन में शामिल होते थे। संत नारायण सिंह एक दयालु व्यक्ति थे।

98 “हे चतुर बुद्धि, तुम चाहे जितनी चालाकी कर लो, लेकिन धूर्तता तुम्हें ईश्वर के निकट नहीं ले जाएगी।” गुरबानी की इस पंक्ति का अंग्रेजी में अर्थों में भिन्नता के कारण अनुवाद नहीं किया गया है। यहाँ इसका एक मोटा-मोटा अर्थ दिया गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

उनकी घनी सफेद दाढ़ी थी, चेहरे पर एक अलग ही आभा थी और वे बहुत मधुर स्वर में बोलते थे। जब भी वे बोलते, सुनने वाले को शांति और आनंद मिलता था। संत हरनाम सिंह योग वशिष्ठ 99 और सूरज प्रकाश की बहुत अच्छी व्याख्या करते थे और हम ध्यान से सुनते थे।
बाग-बगीचे हमेशा साफ-सुथरे रहते थे और उनकी सफाई करने के लिए स्वयंसेवकों

की कभी कमी नहीं होती थी। कहते हैं कि जुलाई-अगस्त की चिलचिलाती गर्मी किसान को संत बना देती है। इन संतों की सेवा गंगू नाम का एक किसान करता था। खेत जोतते-जोतते थककर वह बाग में आया। मैंने उससे पूछा, “गंगू, क्या तुम कभी प्रार्थना करते हो?” उसने कहा, “ये लोग मुझे ध्यान करने ही नहीं देते; ये मुझसे हमेशा पानी भरने या जगह की सफाई करने को कहते रहते हैं।”

सभा में उपस्थित लोगों में बरछा गांव के एक राजपूत चौधरी भीखे खान भी थे, जो संतों और गुरबानी के भक्त थे। आम के पेड़ों के नीचे चारपाइयां कतार में लगी रहती थीं और चौधरी साहब सबसे बड़ी चारपाई पर बैठते थे। वे सुक्खा पीते और गुरबानी पर चर्चा करते। चौधरी साहब का हृदय विशाल था। उन्होंने अपनी आधी जमीन मेरे चाचा सरदार मेहर सिंह के पास गिरवी रखी थी। मेहर सिंह कंजूस थे और संतों को दान बहुत कम देते थे। आखिर कंजूस क्यों न होते? उन्होंने तो बड़ी मेहनत से धन कमाया था। जब बारिश होती, तो वे पेड़ लगाते और मानसून में अगर उनके पास कोई और काम न होता, तो वे जूट साफ करते या जानवरों के लिए चारा काटते। संत हरनाम सिंह हमेशा कहते थे, “धन के जाल में मत फँसो। जो कुछ भी कमाओ, संतों की सेवा में खर्च करो।” मेहर सिंह की कंजूसी को ध्यान में रखते हुए वे कबीर की बानी की यह प्रार्थना पढ़ते थे:

“Soome Dhan Raakhan Ko Diya
Mugadh Kahe Dhan Mera.
Jam Ka Dand Moond Mein Laage
Khin Mein Kare Nabera.”100

जब वे आखिरी दो पंक्तियाँ बोलते थे, तब चौधरी भीखे खान उनके साथ-साथ पढ़ते थे और सब लोग हंसने लगते थे।

संत लोग भोर में कुएँ पर स्नान करते थे, और मैं बाल्टी से पानी भरता था। पानी ठंडा होता था, उसमें से भाप निकलती थी, और संत लोग अपने अंतर्वस्त्र धोते हुए कहते थे,

“101 राम दास सरोवर न्हाते, सब उतरे पाप कमाते।” संतों का जल भरकर उनकी सेवा करना मुझे प्रसन्नता प्रदान करता है। ये परंपराएँ विनम्रता और सेवा भाव को

जन्म देती हैं, जो आज लुप्त होते जा रहे मूल्य हैं।
यौन संबंध का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव होता है। जिस व्यक्ति की यौन ग्रंथियां मजबूत होती हैं, वह बहुत प्रभावशाली होता है; जब वह अपनी यौन इच्छाओं को अन्य गतिविधियों में परिवर्तित करता है, तो वे विज्ञान, साहित्य और कला में व्यक्त होती हैं।

99 योग वशिष्ठ और सूरज प्रकाश दो ग्रंथ हैं। 100 कबीर द्वारा रचित इन दोहों का अर्थ है: ईश्वर ने तुम्हें धन केवल संजोने के लिए दिया है, परन्तु तुम कहते हो "यह मेरा है"; जब यमराज की छड़ी तुम्हारे सिर पर पड़ेगी, तो तुम पल भर में मर जाओगे। यमराज मृत्यु के देवता हैं।
101 गुरु राम दास कहते हैं कि जब आप गुरबानी की झील में स्नान करते हैं, तो आपके सभी पाप धुल जाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

कोई भी नपुंसक व्यक्ति महान पुरुष नहीं हो सकता, और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ने वाले सभी लोग पुरुष ही थे।
जब मैं अपने जीवन पर पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे याद आता है कि जब मैं 12 साल का था, तब मैं ट्रेन से लाहौर जा रहा था। ट्रेन में पुरुष, महिलाएं, लड़कियां और लड़के सभी थे। अमृतसर स्टेशन से एक 12 साल की लड़की हमारे डिब्बे में आई। वह गोरी थी, उसकी विशेषताएं तीखी थीं और उसकी आंखें बादाम जैसी थीं। लाहौर पहुँचने तक मैं उसके खूबसूरत चेहरे को निहारता रहा। कई सालों तक, जब भी मैं अकेला होता, उसका चेहरा अनायास ही मेरी आँखों के सामने आ जाता था।
मुझे आज भी भाभोर मेले की एक घटना याद है। एक युवक नदी तैरकर पार आया, दौड़ा और एक पहाड़ी महिला को गले लगा लिया। लोगों ने दंपति पर एक चादर डाल दी। कुछ मिनट बाद, उसने चादर फेंक दी और नदी की ओर भागा। वह बेकाबू हो गया था। वह नदी में कूद गया। लोगों के देखते ही देखते उसने नदी पार कर ली।

मुझे बदसूरत औरतें बिल्कुल पसंद नहीं, चाहे वे कितनी भी गुणी या बुद्धिमान क्यों न हों। मेरा मानना है कि स्त्री में सुंदरता और बुद्धि दोनों का होना आवश्यक है। इन दोनों गुणों का संगम रखने वाली स्त्री ही सच्ची देवी होती है; वह पुरुष को शक्ति प्रदान करती है और उसकी क्षमता को जागृत करती है।
गाँव की शान जवान लड़कियाँ होती हैं। बोडलान में भी खूबसूरत लड़कियों की कोई कमी नहीं थी। बेला सिंह खुनखुन की बेटी जस्सो उनमें सबसे खूबसूरत थी। गोरी त्वचा, पतले होंठ, तीखी नाक और हल्के भूरे रंग की आँखें। जब वह अपने काँटे के बर्तन लेकर खेतों में काम करने वाले मजदूरों के लिए दोपहर का खाना लेकर आती थी, तो मेरे शरीर में एक अलग ही रोमांच दौड़ जाता था। जब मैं पढ़ने के लिए अपनी किताबें लेकर खेतों में जाता था, तो अक्सर जस्सो से मिलता था। वह अपनी पलकों के नीचे से मुझे देखती थी और मैं भी उसे देखता था। लेकिन हम कभी एक-दूसरे से बात नहीं करते थे।
गाँव के लोगों का नैतिक स्तर शहरों के लोगों से कहीं अधिक ऊँचा होता है। यदि कोई लड़का अपने बालों की चोटी में हाथीदांत की कंघी लगाकर तीन बार एक ही गली से गुज़रे, तो बड़े-बुजुर्ग उसे डांटते हुए कहते, “अरे, ये क्या बात है? तुम बार-बार यहाँ क्यों आते हो?”

(पृष्ठ 76)
गुरुद्वारों में पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान लड़कियां और लड़के एक-दूसरे से मिलते थे। गरना साहिब में धार्मिक सभा होती थी, जिसमें लड़कियां और महिलाएं एक तरफ बैठती थीं, और पुरुष और लड़के दूसरी तरफ बैठते थे। बुजुर्ग लोग भले ही प्रार्थना में लीन होते थे, लेकिन लड़कियां और लड़के सिर्फ एक-दूसरे को देखने आते थे। जिसे भी वे देखना चाहते, उसे लगातार निहारते रहते थे।
मिलने-जुलने की दूसरी जगह झियोरी की भट्टी होती थी। लड़के-लड़कियाँ जूट के कटोरे में मक्का रखकर भट्टी के चारों ओर बैठते थे। झियोरी मक्का भूनने में व्यस्त रहती थी, जबकि लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे को निहारते रहते थे।
जब किसी के घर में शादी होती थी, तो पूरा गाँव मदद करता था। वे हर घर से पलंगें इकट्ठा करते थे और जिनके पास दूध देने वाली भैंस या गाय होती थी, वे अपना सारा दूध शादी वाले घर को दे देते थे। सभी बुजुर्ग दूल्हे के परिवार का स्वागत करने के

लिए इकट्ठा होते थे और युवा लोग लोगों को भोजन परोसते थे।
शादी समारोह में मनोरंजन करने वालों और नकल करने वालों को भी बुलाया जाता था। नकल करने वाले पेड़ों की डालियों के बीच अलग-अलग लोगों और चीजों की नकल करने की पूरी कोशिश करते थे। कई बार लोग उन्हें लंबे समय तक पैसे नहीं देते थे, और वे आपस में बातें करते हुए कहते थे, “भाई! यह देखने में तो मौज-मस्ती करने वाले लोगों का गाँव लगता है, लेकिन लगता है कि यह

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। लोग ठंडे हैं। ऐसा लगता है जैसे सबने धनिया पी लिया हो।”102 यह सुनकर लोग ठहाकों से लोटपोट हो जाते और नकलची फिर से अपनी बातचीत शुरू कर देते:

“एक ऐसी चीज है जो भगवान के पास भी नहीं है।”
"क्या?"
ईश्वर को क्रोध नहीं आता!
"आकाश में कोई ऐसी चीज है जो मौजूद नहीं है।"
"वह क्या है?"
“पेड़!”
"एक ऐसी चीज है जो पृथ्वी पर मौजूद नहीं है।"
"वह क्या है?"
“सितारे।”
“कुछ ऐसा भी है जो इन चौधरी परिवार के पास भी नहीं है।”
"वह क्या है?"
नहीं, उनके पास 'नहीं' जैसा कोई विकल्प नहीं है।

(पृष्ठ 77)
और शादी के लिए आए जमींदार चौधरी चुपचाप सुनते रहते थे, और यह सुनकर नकल करने वालों पर पैसों की बारिश कर देते थे।
इस तरह लोग अपनी खुशियों का जश्न मनाते और एक साथ नाचते थे।

रात में रस नाटकों का आयोजन किया जाता था। रामधारी आमतौर पर कृष्ण-लीला का प्रदर्शन करते थे, और 12 साल के लड़के अपने चेहरे पर आटा मलकर गोपियों का अभिनय करते थे। किसान गोपियों के इस प्रदर्शन का खूब आनंद लेते थे और उन्हें 2 आने के सिक्के भेंट करते थे।
कभी-कभी संगीतकारों के समूह भी गाँव में आते थे। इनमें सबसे प्रसिद्ध नाबिया, कालू और सौले भराई के नेतृत्व वाला समूह था, जो धड़ और सारंगी बजाते थे। आगे वाले समूह में तीन नाचने वाले लड़के होते थे जो लंबी स्कर्ट पहने मोर की तरह नाचते थे। उनके पीछे ढोल बजाने वाला आता और तालबद्ध तरीके से ढोल बजाता, जबकि सारंगी वादक बड़े ही जोश से सारंगी बजाता। अफीम के नशे में चूर, खड़ताल वादक गाना शुरू कर देता था।

हे ब्रह्मचारी देवी,
कृपया मुझे आशीर्वाद दें।
आप पहाड़ों में रहते हैं,
कृपया मुझे अपना काम सफलतापूर्वक पूरा करने में मदद करें।

प्रारंभिक प्रार्थना के बाद, समूह का नेता ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू कर देता और नाचने वाले लड़के मुर्गे की तरह जोश से मैदान में दौड़ पड़ते। कभी-कभी पहाड़ों के झियूर लोग रात भर प्रार्थना सभाएँ (जागृति) करते थे, और वे

102 धनिया की प्रकृति शीतल होती है, इसलिए यह शब्द-क्रीड़ा है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। पूरन भगत की कथा गाओ।103 इस तरह, गांव के लोग आनंदित होंगे और खुशी से जीवन व्यतीत करेंगे।

103 झिओर लोग इस प्रकार रसोइया और गायक हैं, वे विभिन्न जातिगत भूमिकाएँ निभाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 9

मिशन कॉलेज लाहौर
(1924-1926)

(पृष्ठ 81)
हम दोनों भाई 1924 में मैट्रिक पास हुए। हम दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। मेरे 520 अंक थे और राजिंदर के 519। अब हमें यह तय करना था कि लाहौर के किस कॉलेज में पढ़ना है। पिताजी पहले ही लाहौर के कॉलेजों का जायजा ले चुके थे। गवर्नमेंट कॉलेज सबसे अच्छा कॉलेज था, और उसके बाद फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज और मिशन कॉलेज का नंबर आता था। पिताजी कहने लगे कि हमें गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला नहीं लेना चाहिए क्योंकि वहाँ अमीरों के बेटे पढ़ते हैं, वे तो रेशमी रुमाल से अपनी नाक भी पोंछते हैं।
इसलिए हम दोनों ने मिशन कॉलेज में दाखिला लिया। इस कॉलेज की स्थापना अमेरिकी मिशनरियों ने की थी, और डॉ. ई.डी. लुकास इसके प्रिंसिपल थे जबकि डॉ. जी.एच. राइस वाइस प्रिंसिपल थे। मैंने मेडिकल स्ट्रीम चुनी। अंग्रेजी, भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान मेरे विषय थे। मैं गणित में कमजोर था, और गणित से बचने के लिए मैंने जीव विज्ञान चुना था।
हमारे रहने का इंतज़ाम न्यूटन हॉल में किया गया था। इस छात्रावास में दो मंजिलें थीं और हर कमरे में चार लड़के रहते थे। इस वजह से जीवन मुश्किल हो गया था। जब एक लड़का पढ़ना चाहता था, तो दूसरा सोना चाहता था और कहता था, लाइट बंद कर दो। शौचालय भूतल पर थे, इसलिए लड़के रात में खिड़कियों से पेशाब करते थे।

कॉलेज में दाखिला लेने के 3-4 महीने बाद पिताजी का निधन हो गया।

(पृष्ठ 82)
हमारे बड़े भाई चाहते थे कि हम नौकरी करें। वे जालंधर गए और कमिश्नरी में नायब 106 तहसीलदार पद के लिए आवेदकों की सूची में हम दोनों के नाम लिखवा दिए। कॉलेज आने के बाद मैंने अपने ट्यूटर प्रोफेसर सैमुअल्स लाल की सलाह मानी। उन्होंने कहा कि हम दोनों पढ़ाई में अच्छे हैं, इसलिए हमें नायब तहसीलदार बनने का विचार छोड़ देना चाहिए। हमें यह सलाह बहुत पसंद आई; इसने हमारी जिंदगी बदल दी।
मुझे लाहौर शहर पसंद नहीं था। जब हम घर से घी के डिब्बे लेकर लाहौर रेलवे स्टेशन पहुंचते, तो उदास हो जाते। लाल कमीज पहने कुली लोगों का सामान ढोने के लिए एक-दूसरे को धक्का-मुक्की करते रहते थे। उस स्टेशन की वास्तुकला किसी किले जैसी थी। शायद किसी इंजीनियर ने सोचा होगा कि इस युद्धग्रस्त सीमावर्ती प्रांत के लिए केवल इसी प्रकार की वास्तुकला उपयुक्त है।
हम तांगे में बैठकर अपने छात्रावास पहुँचते और अगले ही दिन पढ़ाई पर लौट आते। हम गाँव वालों को सभी अमेरिकी प्रोफ़ेसर एक जैसे लगते थे, और कुछ महीनों तक हम उनमें फ़र्क नहीं कर पाते थे। डॉ. लुकास हमें बाइबल पढ़ाते थे, और मुझे 'पहाड़ी उपदेश' बहुत पसंद आया। तब तक मैं सिख, आर्य समाज और ईसाई स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ चुका था। इसी तरह मैं सभी धर्मों के सिद्धांतों से परिचित हुआ।

104 प्रथम श्रेणी का अर्थ 60% या उससे अधिक अंक होता है। ब्रिटिश भारत की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में इसे प्राप्त करना बहुत कठिन था।
105 क्योंकि रात में कोई भी नीचे जाना नहीं चाहेगा। 106 'कमिश्नर' शब्द का अर्थ वही है जो पाठ में अंग्रेजी में लिखा है। यानी, उप-कमिश्नर का कार्यालय।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
मुझे यह अहसास हुआ कि सभी धर्म ईश्वर की खोज करते हैं और उन्होंने उनके लिए अलग-अलग नाम रखे हैं। यह धर्मों का मूल सिद्धांत है, लेकिन हर धर्म ने भाई, पंडित,

मुल्ला और पादरी की फौज खड़ी कर ली है और उन्होंने कर्मकांडों को बढ़ावा दिया है। अंततः, बहुत से लोग धर्म को भूल जाते हैं और केवल कर्मकांडों में ही मानसिक संतुष्टि पाते हैं।
जीव विज्ञान ने भी मेरी आँखें खोल दीं। इसके अध्ययन से मुझे जीवन के विकास और प्रगति के बारे में पता चला। यह विकास पौधों और जानवरों दोनों में हुआ। जब हम जीवन की उत्पत्ति की ओर देखते हैं, तो पाते हैं कि जानवर और पौधे दोनों एक ही स्रोत से उत्पन्न हुए हैं। पौधों में पाया जाने वाला हरा रंग, जिसे क्लोरोफिल कहते हैं, उन्हें शक्ति प्रदान करता है। सूर्य की किरणों की ऊर्जा, जल और कार्बन डाइऑक्साइड के संयोजन से कार्बोहाइड्रेट का निर्माण होता है। जानवरों में यह शक्ति नहीं होती, इसलिए वे पौधों पर निर्भर रहते हैं। धीरे-धीरे, लगभग 200 करोड़ वर्षों में, जीवन का विकास होता रहा और मनुष्य अस्तित्व में आया। सबसे पहले, जीवन समुद्रों और महासागरों में उत्पन्न हुआ, और वहाँ कीड़े, केंचुए और मछलियाँ विकसित हुईं।

(पृष्ठ 83)
फिर मेंढकों का विकास हुआ और जीवन धरती पर आ गया। फिर छिपकलियों जैसी प्रजातियों से विकसित होकर स्तनधारियों और पक्षियों का विकास हुआ। फिर चूहे, टार्सियस बंदर और उसके बाद चलने वाले बंदर आए, और धीरे-धीरे दो करोड़ वर्षों में मनुष्य की प्रजाति का विकास हुआ।
इस ज्ञान ने मेरे मन के द्वार खोल दिए और मैंने धर्म के अंधविश्वासों और चमत्कारों पर विश्वास करना छोड़ दिया। मुझे एहसास हुआ कि सच्चा धर्म दिखावा नहीं, बल्कि हृदय की अवस्था है। प्रार्थना की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि सच्ची प्रार्थना हृदय से सहज रूप से निकलती है, ठीक वैसे ही जैसे बच्चे की हंसी और आंसू। साथ ही, यह भी सच है कि एक विशाल शक्ति, जिसे हम देख नहीं सकते, पूरे ब्रह्मांड में विद्यमान है। जब हम सत्य बोलते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, तो यह शक्ति हमारी सहायता करती है।
हम दशहरा की छुट्टियों में लाहौर के अलग-अलग इलाकों में घूमने जाते थे। अनारकली बाजार बहुत दिलचस्प था। डब्बी बाजार और पुराने शहर में मुझे घुटन महसूस होती थी। मैं सोचती थी कि लोग इतनी तंग गलियों में कैसे रहते होंगे। उन गलियों में अपना सामान बेचने वाले दुकानदारों और उनकी पत्नियों के पीले, कमजोर शरीर और

मुरझाए, पतले चेहरों पर मुझे तरस आता था। किसी के चेहरे पर सेहत की चमक नहीं दिखती थी।

मैं सिविल लाइंस के बंगलों को देखता और सोचता कि उनमें रहने वाले कितने खुशनसीब हैं। इन बंगलों से मध्यम वर्ग की खूबसूरती की झलक मिलती थी। लाहौर के शेख और खत्री परिवारों की स्त्रियाँ और बेटियाँ अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर थीं। बर्नियर भी उनकी खूबसूरती की तारीफ करते थे। इन स्त्रियों को देखने के लिए उन्होंने एक तरकीब सोची थी - वे एक हाथी पर चढ़ जाते थे जिसके गले में एक बड़ी घंटी बंधी होती थी। घंटी की आवाज सुनकर वे सुंदरियाँ अपने बंगलों की खिड़कियों पर आ जाती थीं।

मिशन कॉलेज में मेरे चार दोस्त थे: अमर चंद जोशी, परवेज़ मुहम्मद इस्माइल, धर्म पाल भंडारी और नियाज़ मुहम्मद खान। इनमें से जोशी पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति बने, और बाकी तीनों आईसीएस अधिकारी बने। नियाज़ मुहम्मद को हुक्का पीने की लत थी। वह बुद्धिमान और मेहनती थे। उन्होंने मुझे एच.जी. वेल्स की 'आउटलाइंस ऑफ हिस्ट्री' पढ़ने को दी। इस किताब ने मेरे दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित किया। परवेज़, प्रोफेसर इस्माइल के बेटे थे। वह कभी-कभी हमें मोज़ांग स्थित अपने बंगले पर भोजन के लिए आमंत्रित करते थे। धर्म पाल ने एक बार मेरे साथ छात्रावास में भोजन किया था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 84)

इसके बाद, जब भी वह मुझसे मिलते, कहते, ‘मित्र मोहिंदर, मुझे तुम्हारा खाना याद है। मैं तुम्हें बदले में ज़रूर खाना खिलाऊँगा।’ मैं मन ही मन हँस पड़ा, यह सोचकर कि मुझे तो यह बात भी याद नहीं थी, लेकिन इन शहरवासियों का दिल कितना छोटा होता है। धरम पाल को तो पीपल, बेर, नीम जैसे साधारण पेड़ों के नाम भी नहीं पता थे।

कभी-कभी न्यूटन हॉल की सीढ़ियाँ चढ़ते समय, हम हिंदू लड़कों को सिखों और जाटों के बारे में बातें करते हुए सुन लेते थे। वे कहते थे, ये लोग बहुत मूर्ख हैं, और इनमें बुद्धिमान लोग बहुत कम होते हैं। वे मुसलमानों के बारे में भी इसी तरह की

अपमानजनक बातें कहते थे। इससे यह विचार आता है कि पाकिस्तान की नींव जिन्ना ने नहीं रखी थी, बल्कि इस विभाजन के बीज 1925 में ही बो दिए गए थे।
मुझे अपने शिक्षकों में से चार-पाँच नाम आज भी याद हैं। जगन्नाथ स्वामी मेरे सबसे प्रिय शिक्षक थे। वे प्राणी विज्ञान को बहुत ही रोचक तरीके से पढ़ाते थे और कभी-कभी हमारे लिए हीर गीत भी गाते थे। वी.पी. पुरी हमें भौतिक विज्ञान पढ़ाते थे, और मेहर चंद सेठी वनस्पति विज्ञान। सेठी वनस्पति विज्ञान को बहुत ही उबाऊ तरीके से पढ़ाते थे, और कई लड़कों ने यह विषय छोड़ दिया था। सिनक्लेयर अंग्रेजी बहुत अच्छी तरह पढ़ाते थे। मैं अंग्रेजी में बहुत कुशल था, और जब भी मैं निबंध लिखता था, वे इतने अच्छे होते थे कि उन्हें पूरी कक्षा के सामने पढ़कर सुनाया जाता था।
दूसरे वर्ष में, हमने एक निजी छात्रावास में अलग कमरा लेने का फैसला किया ताकि हम बिना किसी रुकावट के पढ़ाई कर सकें। काफी समय तक ऐसे कमरे की तलाश करने के बाद, आखिरकार हमें अग्निहोत्री छात्रावास में एक कमरा मिल गया। यह इमारत खस्ताहाल थी, लेकिन कोई दूसरा विकल्प नहीं था। रात में, तिल की मिठाई बेचने वाले एसिटिलीन गैस के दीपक जलाते थे। उनकी तेज़ आवाज़ में बुलावा और मिठाइयों की चटकने की आवाज़ रात में शांति को और भी भंग कर देती थी। 108
लाहौर के हॉस्टलों में कई गुंडे रहते थे। मुंशा नाम का एक गुंडा हमारा दुश्मन बन गया और उसने हमें धमकी दी कि वह हमें परीक्षा नहीं देने देगा। हमने उसकी शिकायत उप अधीक्षक कार्यालय में सरदार संत सिंह से की और उन्होंने मुंशा को चेतावनी देकर छोड़ दिया।
हम छुट्टियों में पढ़ाई करने के लिए निजी संतरे के बागों में जाया करते थे। मैं इस तरह पढ़ता था: पहले मैं अपने प्रोफेसरों के व्याख्यान ध्यान से सुनता और नोट्स बनाता, फिर घर लौटकर किताबें पढ़ता और महत्वपूर्ण पंक्तियों को लाल पेंसिल से रेखांकित करता। उसके बाद, मैं किताबों से नोट्स बनाता और हर विषय पर नोट्स तैयार करता। मैं उन नोटबुक्स को बड़े ध्यान से रखता और बार-बार पढ़ता रहता। मैं लड़कों को किसी विषय पर व्याख्यान देते हुए प्रोफेसर की तरह व्यवहार करता था।

(पृष्ठ 85)
मैं नोटबुक बंद करके जो कुछ भी पढ़ता था उसे ज़ोर से बोलता था। फिर मैं नोटबुक पढ़ता और देखता कि मैं कुछ बातें भूल गया हूँ। मैं उन्हें और ध्यान से दोबारा पढ़ता

और फिर कभी नहीं भूलता था।
मार्च में परीक्षा देने के बाद, मैं चक 51/12, तहसील चिचावतनी गया, जहाँ मेरा भाई अमरिक सिंह रहता था। वहाँ प्लेग की महामारी फैली हुई थी और हम कच्ची झोपड़ियों में रहते थे। वहाँ बहुत सारे साँप थे, हमने उनमें से कई को मार डाला। जुलाई-अगस्त की भीषण गर्मी में झोपड़ियों में रहना मुश्किल हो जाता था। गर्म हवा चलती थी, और कभी-कभी

107 हीर, वारिस शाह द्वारा रचित दो प्रेमियों की प्रेम गाथा जो त्रासदी में बिछड़ गए।
108 ऐसी मिठाइयाँ जो भूनने पर चटकने की आवाज़ करती हैं। रंधावा द्वारा प्रयुक्त विशेषण।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। काली धूल भरी आंधी चली, हवा के साथ छोटे-छोटे पत्थर भी उड़ने लगे। हरह में मुझे टाइफाइड हो गया। बुखार और तेज हवा के बीच ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरी सांस रोक रहा हो। बुखार होने के बावजूद, मैंने ट्रेन पकड़ी और अपने गांव बोडलान पहुंचा। मैंने फैसला किया कि मैं अपनी दवाइयां लेने के लिए घोड़े पर सवार होकर दासुया के अस्पताल जाऊंगा।
हमें जून में परिणाम मिले। मैंने अपने कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया और पूरे पंजाब में तीसरा स्थान प्राप्त किया। टाइफाइड ने मुझे बहुत कमजोर कर दिया था। परीक्षा परिणामों ने मेरी मुरझाई हुई आत्मा को नई ऊर्जा दी और मुझे प्रोत्साहित किया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 10

सरकारी कॉलेज लाहौर
(1926-1930)

(पृष्ठ 86)
इंटरमीडिएट साइंस की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, मैंने वनस्पति विज्ञान में विशेषज्ञता हासिल करने का निर्णय लिया। इसीलिए मैंने गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में दाखिला लिया। उस कॉलेज के वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान विभागों की विज्ञान जगत में अच्छी प्रतिष्ठा थी। प्रोफेसर शिव राम कश्यप ने लिवरवर्ट्स पर महत्वपूर्ण कार्य किया था और कई नए पौधों की खोज भी की थी। एस.एल. घोष शैवाल के विशेषज्ञ थे और डॉ. चौधरी शरीर क्रिया विज्ञान में असाधारण कार्य कर रहे थे।
हमारी कक्षा के अधिकांश छात्रों ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी, और हमारे बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा थी। यही कारण था कि पढ़ाई के अलावा हमारी किसी और चीज़ में रुचि नहीं थी। प्रयोगशालाओं में काम करते-करते रात हो जाती थी। हम किसी भी खेल में भाग नहीं ले पाते थे; शायद मैं दो साल में चार-पाँच बार ही सिनेमा गया था। स्वस्थ और चुस्त रहने के लिए हम सुबह सिट-अप्स करते थे और शाम को चेस्ट-एक्सपेंडर से व्यायाम करते थे।
हमारे कॉलेज में एक सफल जीव विज्ञान समिति थी; मुझे उसका सचिव चुना गया। दूसरे वर्ष में जब चुनाव हुए, तो मैंने देखा कि कई लड़कों ने, जिन्होंने मुझे वोट देने का वादा किया था, मतदान के दौरान मुझे धोखा दिया, और एक बेहद खराब उम्मीदवार को मुझसे अधिक वोट मिले।

(पृष्ठ 87)
इस अनुभव के बाद, मुझे चुनावों से नफरत होने लगी।
प्रोफेसर कश्यप को हिमालय से विशेष लगाव था और वे हर गर्मी की छुट्टियों में लड़कों के एक समूह को हिमालय ले जाते थे। वे तिब्बत और कैलाश-मानसरोवर भी जा चुके थे। हमारी कक्षा 1927 में उनके साथ मसूरी और 1928 में चंबा और पांगी गई थी। चंबा पहुँचने पर प्रोफेसर कश्यप ने सभी लड़कों को बुलाया और बताया कि वहाँ कई जादूगरनियाँ रहती हैं। उन्होंने कहा, "सावधान रहना।" 'जादूगरनी' से उनका तात्पर्य गड्डुन जनजाति से था, जो अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थी।109 हम चंबा में एक गंदी धर्मशाला में रुके। हर लड़का घर से कुछ खाने का सामान लाया था, और मेरे पास मूंगी की पिन्नी थी। मैं बाजार में टहलने गया और जब लौटा तो देखा कि पिन्नी गायब हो गई थी। शाम को मैंने देखा कि सभी चोर बार-बार शौचालय जा रहे

थे। मूंगी का आटा थोड़ा कच्चा था और उन्होंने उसका बहुत अधिक सेवन भी किया था, इसलिए उन सभी को पेचिश हो गई।
इन यात्राओं के दौरान प्रोफेसर कश्यप ने हमें पहाड़ों की वनस्पतियों से अच्छी तरह परिचित कराया। ऐसी कोई जड़ी-बूटी नहीं थी जिसका नाम हम न जानते हों। अमर चंद जोशी पौधों की पहचान करने में माहिर थे। जब कोई किसी पौधे की पहचान नहीं कर पाता था, तो वे उसका सही नाम बता देते थे। इस ज्ञान ने हिमालय के प्रति हमारे प्रेम को और भी बढ़ा दिया। और परिणामस्वरूप, मैंने हिमालय की अपनी सभी बाद की यात्राओं का भरपूर आनंद लिया।
मिशन कॉलेज के न्यूटन हॉल और अग्निहोत्री हॉस्टल के धूल भरे कमरों का अनुभव करने के बाद, न्यू हॉस्टल स्वर्ग जैसा लगा। साफ़-सुथरे कमरे और शौचालयों में सैनिटरी फिटिंग्स। हम दोनों भाई दो मीटर के कमरे में रहते थे।

109 गड्डुन (महिला), गद्दी (पुरुष), हिमालयी श्रृंखला में रहने वाली एक चरवाहा पहाड़ी जनजाति के सदस्य।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
हम शाम को मॉल रोड पर टहलने जाते थे, और तभी मैं डी.ए.वी. कॉलेज के लड़कों को यह कहते हुए सुनता था, "चलो, जल्दी चलते हैं, वरना नया हॉस्टल बंद हो जाएगा।"
हमारे अलावा, न्यू हॉस्टल में कई और जुड़वां भाई थे। दो भांबा भाई और उनके पास रहने वाला एक लड़का गड़ी उपजाति से थे। राधे श्याम सहारनपुर के एक बनिया सेठ का बेटा था, वह छुआछीद के प्रति बहुत सख़्त था। मुस्लिम लड़के उसके मिट्टी के घड़े से पानी पीने आते और 'राधे श्याम, राधे श्याम' के नारे लगाते।
हॉस्टलों में गुटबाजी बहुत आम थी। हमारे समूह का नेता कंवर रणजीत सिंह था।

(पृष्ठ 88)
वह बिलासपुर के राजपूत थे और बिलासपुर के राजा के चाचा थे। वे सुंदर और हट्टे-कट्टे थे और कॉलेज की फुटबॉल टीम के कप्तान थे। हम अपने कमरे में खाना मंगवाते

थे और उसे खाने के लिए चूल्हे पर भूरी चीनी और घी गरम करते थे। रणजीत सिंह सूअर के मांस का अचार लाते थे और हम उसे भी अपने साथ खाने में मिला लेते थे। हमारे दूसरे दोस्त बछित्तर सिंह रंधावा थे। वे रात को पढ़ाई करते समय अपने पास दूध का जग रखते थे, जिसे हम धीरे-धीरे पीते थे। जब उन्हें पढ़ते-पढ़ते नींद आने लगती थी, तो वे आसन करने लगते थे। नारायण सिंह पहलवान थे; जब वे सिनेमा जाते थे, तो सो जाते थे। हम उनसे पूछते थे, "फिल्म कैसी थी?" वे जवाब देते थे, "दोस्त, फिल्म की कहानी तो ज़बरदस्त थी।"

लाहौर आने के बाद हमें पहली बार कोट और पैंट पहनने का मौका मिला। कई लड़के अपने नाइटसूट को दिन के कपड़ों की तरह इस्तेमाल करते थे और उन्हें पहनकर अनारकली बाजार जाते थे।

मैं आमतौर पर प्रयोगशाला में व्यस्त रहता था, और अगर मुझे कुछ खाली समय मिलता तो मैं लाहौर के संग्रहालय जाता था। वहाँ मुझे कला, विशेषकर कांगड़ा कला से परिचय हुआ। वे चित्र काँच के बक्सों में रखे थे, और उनमें पहाड़ी गाँवों के जीवन का चित्रण था। चित्रों में महिलाएं बावड़ी से पानी भरती दिखाई देती थीं, और अन्य चित्रों में राजा-रानियाँ सारसों के झुंड और बादलों को निहारते नज़र आते थे। नीले-भूरे बादल सफेद सारसों की सुंदरता को और भी बढ़ा देते थे। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, उन चित्रों में मानवीय प्रेम की झलक भी मिलती थी। उन चित्रों को देखकर मेरा मन कभी नहीं भरता था, और मैं उन्हें बार-बार देखने जाता था।

उन दिनों मेरी मुलाकात कलाकार शोभा सिंह से भी हुई। वे अनारकली बाजार के चौराहे के पास एक घर की पहली मंजिल पर रहते थे और उनके नीचे फलों की दुकान थी। मैं उनसे शैवाल के रेखाचित्र बनवाया करता था। मैं उनके पंजाबी सुंदरियों के रेखाचित्रों से भी प्रेरित था।110 वे पहले कलाकार थे जिन्होंने पंजाबी महिलाओं के चित्र बनाए और पंजाबी जीवन के दृश्यों को चित्रित किया। एक कलाकार जिनका काम मुझे बहुत पसंद आया, वे थे अल्लाह बख्श। उन्हें राधा-कृष्ण के चित्रों, और विशेष रूप से राम-लीला के चित्रों में महारत हासिल थी, और कुछ धनी हिंदू उनके संरक्षक थे। वे दशहरा के मेलों में अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाते थे।

1927 में, मुझे पूरन सिंह की अंग्रेजी पुस्तक 'सिस्टर्स ऑफ द स्पिनिंग व्हील' मिली।

110 या सुंदरी (बहुवचन: सुंदरियां), सुंदर स्त्री।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 89)

मैंने उस किताब को कई बार बड़े चाव से पढ़ा। उन दिनों पूरन सिंह पहले पंजाबी कवि थे जिनकी किताब एक प्रतिष्ठित ब्रिटिश प्रकाशक ने प्रकाशित की थी। उसे पढ़ने के बाद मुझे समझ आया कि पूरन सिंह एक उच्च कोटि के कवि थे, जिन पर सभी पंजाबियों को गर्व होना चाहिए।

हमें तीन महीने की गर्मियों की छुट्टियाँ मिलती थीं। हम वो छुट्टियाँ अपने गाँव में बिताते थे। मैंने गौर किया कि गाँव में पहले 15 दिन मुझे अंग्रेज़ी में सपने आते थे, और अगले 15 दिनों में मेरे सपनों में अंग्रेज़ी और पंजाबी का मिला-जुला मधुर उच्चारण उभरने लगता था। तीसरे महीने से अंग्रेज़ी का उच्चारण पूरी तरह से गायब हो जाता था, और मेरे सपनों में शुद्ध पंजाबी सुनाई देती थी। उन छुट्टियों में मैं गड्ढों, तालाबों और नदियों से शैवाल इकट्ठा करता था। मैं अपनी जेब में छोटी-छोटी नलियाँ रखता था और उनमें शैवाल डालता था। शैवाल को सुरक्षित रखने के लिए मैं नलियों में फॉर्मेलिन की कुछ बूँदें डालता था। घर लौटने पर मैं उन्हें सूक्ष्मदर्शी से देखता था और नए शैवालों को प्रयोगशाला में ले जाता था।

जब बीएससी के अंतिम वर्ष की परीक्षाएँ नज़दीक आईं, तो मैंने पूरी लगन से पढ़ाई शुरू कर दी। एक शाम, मेरा सहपाठी धर्म पाल भंडारी आया और कहने लगा कि उसे रात को नींद नहीं आ रही है। उसकी बात सुनकर मुझे भी नींद नहीं आई। मैं नए हॉस्टल की छत पर लेटकर घंटाघर की आवाज़ें सुनता रहता था। सुबह करीब 4 या 5 बजे मुझे एहसास होता कि मैं पूरी रात सोया ही नहीं। इसी चिंता और घबराहट की स्थिति में मैंने परीक्षा दी। सौभाग्य से मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गया। आज भी जब मुझे वह परीक्षा याद आती है, तो डर लगता है। हज़रत मूसा ने ठीक ही कहा था, “हे खुदा, मेरी परीक्षा मत लो।”

111 ‘ Ya Khuda’: ‘Oh Lord’

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 11

तख्त या तख्ता

(1930-32)

(पृष्ठ 90)

मैंने जून 1930 में प्रथम श्रेणी में एमएससी ऑनर्स उत्तीर्ण किया। मैंने पंजाब के शैवाल पर अपना शोध प्रबंध लिखा था। इस शोध प्रबंध को लिखते समय, मैंने दसूया तहसील के तालाबों, क्षेत्र की काली और सफेद नदियों, और सड़कों के आसपास के खेतों में बने गड्ढों से शैवाल की कई नई प्रजातियों की खोज की। मैंने यह कार्य प्रोफेसर एस.एल. घोष के मार्गदर्शन में किया। वे मुझे इतना पसंद करते थे कि उन्होंने मुझे अपने कमरे में काम करने की अनुमति दी। वे रंग-अंधे थे और रंगों की पहचान नहीं कर पाते थे, इसलिए मैं उन्हें नीले-हरे शैवाल के विभिन्न रंगों के बारे में बताता था जिन पर हम काम कर रहे थे।

ट्रिब्यून में अपना परिणाम पढ़ने के बाद, मैं लाहौर गया और अपने प्रोफेसरों से मिला। मैंने शिव राम कश्यप, जे. बी. सेन, एस.एल. घोष और जॉर्ज मथाई से प्रमाण पत्र लिए। उन्होंने बड़ी सावधानी से मेरे लिए एक-एक पृष्ठ के प्रमाण पत्र तैयार किए थे। मैंने वे प्रमाण पत्र प्रिंसिपल डनिकलिफ को दिखाए और उन्होंने भी मुझे एक अच्छा प्रमाण पत्र दिया। मैं 21 जनवरी 1931 को लाहौर आया और कॉलेज के सम्मान सूची में अपना नाम दर्ज कराया।

गाँव लौटने के बाद, मुझे यह तय नहीं था कि मैं अपनी आजीविका चलाने के लिए क्या करूँ। उस समय कृषि क्षेत्र आर्थिक रूप से मंदी में था और गेहूँ 1.5 रुपये प्रति मन बिक रहा था। शहर के लोग गेहूँ के सस्ते होने से खुश थे, लेकिन इससे किसानों और जमींदारों का जीवन कठिन हो गया था।

(पृष्ठ 91)

पूरी फसल का आधा हिस्सा भी बेचकर खेती का खर्च नहीं निकल पाता था। किसानों को बहुत कठिनाई हो रही थी। मेहनत का फल न मिलने के कारण वे खेती छोड़ रहे

थे। लोग बचा हुआ अनाज कुत्तों और अन्य जानवरों को खिला रहे थे। गांव के कुत्ते चपातियां खाकर तगड़े हो गए और अजनबियों पर हमला करने लगे। इस मंदी का असर संतों को दिए जाने वाले दान पर भी पड़ा। नौकरी का कोई आसार नहीं था। मुझे लगता था कि मैं किसी कॉलेज में लेक्चरर बन सकता हूँ, क्योंकि मुझे पढ़ना और पढ़ाना बहुत पसंद था। मैं कॉलेज के कमजोर छात्रों, खासकर खिलाड़ियों को वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान की मुफ्त ट्यूशन देता था। मुझे आज भी उन लड़कों में से हामिद और बृज लाल सेठी के नाम याद हैं। हामिद एथलेटिक्स में बहुत अच्छा था और सेठी हॉकी खेलता था।

नौकरी की तलाश में, मैंने द ट्रिब्यून में विज्ञापन पढ़ना शुरू किया। मुझे पता चला कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान के व्याख्याता का पद खाली है। मैंने अपने प्रमाण पत्रों की प्रतियां संलग्न करके आवेदन भेजा। लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला। फिर, अमृतसर के खालसा कॉलेज में एक रिक्ति निकली। सरदार चरण सिंह वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर थे, और मैं उनसे मिलने अमृतसर गया। उन्होंने मुझे बताया कि उस कॉलेज के प्रभारी सर सुंदर सिंह मजीठिया हैं, और सुझाव दिया कि मुझे उनसे मिलना चाहिए। मैंने अपना सबसे अच्छा सूट, नई टाई और पॉलिश किए हुए जूते पहने और उनसे मिलने गया। उनकी लंबाई औसत थी। उन्होंने मुझे ध्यान से देखा, और मैंने भी उन्हें ध्यान से देखा। मेरी दाढ़ी कम थी और मैंने कड़ा नहीं पहना था। “क्या आप जप जी साहिब की प्रार्थना पढ़ते हैं?” सरदार जी ने पूछा। “मैं जानता तो हूँ, लेकिन पढ़ता नहीं हूँ।”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। “इसे सुनाइए,” मैंने उत्तर दिया। और फिर मैंने कहा, “मुझे लगा था कि यह वनस्पति विज्ञान पढ़ाने की रिक्ति है, धार्मिक शिक्षा की नहीं।” ऐसे प्रश्न सुनकर मुझे घृणा हुई कि इन धार्मिक संगठनों में ज्ञान या बुद्धि का कोई महत्व नहीं है। मैंने महसूस किया कि सरदार जी मुझे पसंद नहीं करते थे, और यह भावना पारस्परिक थी।

दिल टूट जाने पर मैं गाँव लौट आया। मुझे 1925 की एक घटना याद आई। मैं लाहौर के सार्वजनिक पुस्तकालय गया था और वहाँ कुछ पर्चों पर प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न देखे, विशेषकर आईसीएस के सामान्य ज्ञान के प्रश्न। उन्हें पढ़ने के बाद मुझे

एहसास हुआ कि मैं उन सभी का उत्तर दे सकता हूँ। इसी तरह मुझे आईसीएस परीक्षा के बारे में पता चला।112 पहले 9-10 रैंक प्राप्त करने वालों को प्रशिक्षण के लिए विदेश भेजा जाता था और भारत लौटने पर उन्हें उपायुक्त के पद पर नियुक्त किया जाता था।

(पृष्ठ 92)
हमारे देश में कई पेशे वंशानुगत हो गए हैं। प्रधानाचार्यों के बेटे प्रोफेसर बनते हैं, और सूबेदारों के बेटे लेफ्टिनेंट बनते हैं। मुझे लगता था कि तहसीलदार का बेटा तो निश्चित रूप से उपायुक्त बनेगा। मेरे पिता एक सफल अधिकारी थे, और मुझे उनकी सूझबूझ, बुद्धिमत्ता, सूझबूझ और व्यावहारिक ज्ञान विरासत में मिला था। प्रशासन हमारे परिवार का पेशा था। आर्थिक मंदी के कारण, केवल आईसीएस परीक्षा के लिए ही आवेदन खुले थे और बाकी सभी प्रतियोगी परीक्षाएं रद्द कर दी गई थीं।
मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी गहरे गड्ढे के मुहाने पर खड़ा हूँ। या तो मैं हिम्मत जुटाकर उसे पार कर लूँ, या... इस चुनौती ने मेरे अंदर अदम्य परिश्रम का जुनून जगा दिया। आई.सी.एस. परीक्षा के लिए जानकारी जुटाने के बाद, मैंने दिल्ली स्थित लोक सेवा आयोग को पत्र लिखकर फॉर्म डाक से मंगवाने का अनुरोध किया। मुझे वह फॉर्म भरकर ज़िले के उपायुक्त को देना था। मैंने फॉर्म भरा और होशियारपुर चला गया। वहाँ मुझे पता चला कि जिला उपायुक्त एन.सी. ठकले भरवाई गए हैं। मैंने बस पकड़ी और भरवाई पहुँच गया। यह स्थान शिवालिक पहाड़ियों में स्थित चिंतपूर्णी मंदिर के पास है। यहाँ एक सुंदर बंगला है जिसका उपयोग होशियारपुर के जिला उपायुक्त गर्मियों के महीनों में किया करते थे। मैं ठकले से मिला और उन्हें अपना फॉर्म सौंप दिया। वे एक विनम्र व्यक्ति थे और उन्होंने मेरे प्रति दयालुता दिखाई।
शाम के सात बज रहे थे जब मैंने वह काम पूरा किया। मुझे रात बिताने के लिए कोई जगह नहीं मिली, और अंत में लोक निर्माण विभाग के एक सिख ओवरसियर से मुलाकात हुई जिन्होंने मेरी मदद की। उस दयालु व्यक्ति ने मुझे रात का खाना खिलाया और अपने घर में सोने के लिए एक पलंग दी। मैं उस दयालु व्यक्ति को आज तक नहीं भूला हूँ। कई बार मेरा मन करता है कि काश मैं उनसे फिर मिल पाता और उनका एहसान चुका पाता।
उसके बाद मुझे आवेदन शुल्क के रूप में 50 रुपये भेजने पड़े। मेरे पास एक भी पैसा

नहीं था। रिश्तेदारों से पैसे मांगने में मुझे शर्म आ रही थी। आखिरकार, मैंने अपने मित्र निरंजन सिंह को पत्र लिखा, जो भारत सरकार के वित्त मंत्रालय में क्लर्क थे, और उनसे आवेदन शुल्क का भुगतान करने का अनुरोध किया। उन्होंने पैसे भेज दिए और मेरी यह समस्या हल हो गई।
पिछली असफलताओं के बाद मेरा मन बहुत व्याकुल था। मुझे चारों ओर केवल अंधेरा ही दिखाई दे रहा था और मुझे अपने भविष्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था।

112 इसी तरह रंधावा को पता चला कि आई.सी.एस. परीक्षा विभिन्न सरकारी पदों के लिए आयोजित की जाती है। उन्हें इससे पहले परीक्षा के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, और यह उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 93)
मैं 2 फरवरी को बीकानेर के गजसिंहपुर में हरकिशन सिंह के घर गया था। वहाँ हमारे पिता ने मोंटगोमरी स्थित हमारी संपत्ति के किराए से किश्तों में भुगतान करके हम छह भाइयों के लिए 30 मुरब्बे खरीदे थे। वहाँ एक मुरब्बा 16 एकड़ के बराबर था और उसका मूल्य 2500 रुपये था। आर्थिक मंदी के कारण वहाँ के किसान इतनी रकम भी नहीं दे पा रहे थे; उनमें बहुत बेचैनी थी।
हमने अपने और अपने कामगारों के लिए कच्चे कमरे बना रखे थे। हमारे खाते मुंशी राम सिंह संभालते थे। वे अधिकतर मामलों में बहुत चतुर थे, लेकिन हिसाब-किताब में कमज़ोर थे। क्योंकि वह एक नई बस्ती थी, इसलिए कामगारों के लिए राशन खरीदने के लिए गजसिंहपुर के मारवाड़ी बनियों से ऋण लिया जाता था, और वे अपनी किताबों में मनचाही ऋण राशि लिख देते थे। हमारे कामगार दलित थे जिन्हें भाई अमरिक सिंह ने चक 51/12 एल, तहसील चिचावतनी, जिला मोंटगोमरी से भेजा था।
मैं एक कच्चे कमरे में रहता था और उसके सामने एक पानी की टंकी थी। वहाँ कोई पेड़ नहीं थे, और हमने सिंचाई नहरों के किनारों पर छाल के पौधे लगाए थे, क्योंकि ये पौधे उस क्षेत्र की मुख्य वनस्पति थे। मैंने नहर के पास एक फूस की झोपड़ी बनवाई

और उसके नीचे एक ढीली बुनी हुई चारपाई लगाई। बैठने के लिए मैंने चारपाई पर खादी के कपड़े से ढका एक मोटा गोल तकिया रखा। मैंने इसी चारपाई पर अपनी तपस्या शुरू की। मैं सुबह 7 बजे दूध पीने के बाद पढ़ाई शुरू करता और दोपहर 1 बजे चारपाई से उठकर काली दाल और दही के साथ दो चपाती खाता। मैं एक घंटे आराम करता और फिर दोपहर 2 बजे पढ़ाई शुरू करता। मैं शाम 6 बजे तक पढ़ता रहता। फिर मैं एक घंटे नहर के किनारे टहलने जाता। जब बड़ी नहर अवरुद्ध हो जाती थी, तो कई मछलियाँ छोटी नहरों में रह जाती थीं और कौवों और चीलों का भोजन बन जाती थीं।

जब मैं आईसीएस परीक्षा की तैयारी कर रहा था, तब मुझे पता चला कि बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह किसानों की शिकायतें सुनने के लिए गजसिंहपुर आएंगे। मैंने भी अपनी पढ़ाई छोड़ दी और स्टेशन पहुंच गया। रियासत के कई अधिकारी दौरे पर वहां पहुंचे हुए थे। उनके चपरासी टिड्डियों के झुंड की तरह गांवों में फैल गए। उन्होंने अधिकारियों की सेवा के लिए कई घरों से चारपाई और बड़ी मात्रा में दूध इकट्ठा किया। वे सारा दूध पी नहीं सके, इसलिए उन्होंने बचे हुए दूध को उबालकर खोया बना लिया। तब मैंने स्वयं देखा कि अधिकारियों के दौरे पर आने पर सत्ता का कितना दुरुपयोग होता है।

गंगा सिंह की विशेष गाड़ी गजसिंहपुर पहुंची। उस इलाके के बागड़ी लोगों ने लाल पगड़ी बांध रखी थी और राजा के लिए 'प्रदाता' और 'स्वागत है' के नारे लगाने लगे। दूसरी ओर, पंजाब के स्वतंत्र और साहसी जाटों ने धूल उड़ाना शुरू कर दिया और नारे लगाने लगे।

"हमारे पैसे वापस कर दीजिए, हमें ये मुरब्बे नहीं चाहिए।"

(पृष्ठ 94)

जय गोपाल सेठी उस नहर बस्ती के वरिष्ठ अधिकारी थे। वे कठोर हृदय के व्यक्ति थे और किसानों को किसी प्रकार की रियायत देने को तैयार नहीं थे। मैंने किसानों से कहा कि नारे लगाने से कोई लाभ नहीं होता, हमें समझदारी से बात करनी चाहिए। मैं आगे बढ़ा और राजा को अंग्रेजी में किसानों की समस्याएँ समझाईं। मैंने उन्हें सलाह दी कि ऋण भुगतान को आसान और उदार बनाया जाए; इससे क्षेत्र में शांति स्थापित होगी। उन्होंने मेरी बात को अहंकार से सुना, लेकिन मुझे लगा कि मेरी बातों का उन

पर कुछ प्रभाव पड़ा है।
उस अनुभव के बाद, मैंने अपनी पढ़ाई फिर से शुरू कर दी और हम खुश थे कि अधिकारियों और उनके कर्मचारियों का टिड्डियों का झुंड आगे बढ़ गया था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

आई.सी.एस. की प्रतियोगी परीक्षा 11 से 26 जनवरी तक दिल्ली के मेटकाफ हाउस में आयोजित होने वाली थी। कुछ साल पहले, पुरानी दिल्ली में यमुना नदी के किनारे स्थित यह घर मेटकाफ का निजी निवास हुआ करता था, और सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने इसे सरकार को दे दिया था।
खैबर दर्रे के बाज़ार के पास एक पीला बंगला था, जो आज भी वहीं है। भारत सरकार के कई क्लर्क उसमें रहते थे। मेरा दोस्त निरंजन सिंह बैंस भी वहीं रहता था। उसमें एक बड़ा कमरा था जिसमें 12 पलंग लगे हुए थे। उन्होंने मेरे लिए भी एक पलंग लगा दी थी। उन क्लर्कों में हर जाति के हिंदू और सिख शामिल थे। जब हम सुबह उठते थे, तो गंगा सिंह अपने दोस्त पंडित दौलत राम शर्मा को पुकारते और कहते, “पंडित जी।” वे जवाब देते, “जी जी।” गंगा सिंह कहते, “अपना चेहरा ढक लो, मुझे उठना है।” यह सुनकर हम सब हंस पड़ते थे।
जनवरी 1931 में आयोजित उस प्रतियोगी परीक्षा में मुझे 173 उम्मीदवारों में से 19वीं रैंक मिली। वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान में मुझे कम अंक मिले, जिनमें मुझे अच्छे अंक मिलने की उम्मीद थी। मैंने देखा कि इन प्रतियोगी परीक्षाओं में विषय भी आपस में प्रतिस्पर्धा करते हैं। जिन छात्रों के पास अंग्रेजी साहित्य, राजनीति विज्ञान, इतिहास और उर्दू साहित्य था, वे विज्ञान के छात्रों की तुलना में कम मेहनत करके अधिक अंक प्राप्त कर सकते थे। मुझे यह भी एहसास हुआ कि मेरी तैयारी रणनीतिक नहीं थी। मैं 1 जनवरी 1932 को गजसिंहपुर से रवाना हुआ। जब मैं राम सिंह के साथ रेलवे स्टेशन की ओर चल रहा था, और मेरा सामान उनके कंधों पर था, तभी मैंने देखा कि हिरणों का एक झुंड हमारे सामने से सड़क पार कर रहा था।

(पृष्ठ 95)
राम सिंह ने कहा, “यह अपशगुन था।” मैंने पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया और सेवाओं में

नौ रिक्तियाँ थीं।113 इसी तरह मुझे सफलता मिली। लेकिन परिणाम आने तक, राम सिंह का हिरणों को लेकर अंधविश्वास मेरे दिल में काँटे की तरह चुभता रहा। कितना अच्छा होता अगर वह मूर्ख चुप रहता।

जब मैं 1932 में आईसीएस की परीक्षा देने दिल्ली गया, तो मुझे खैबर दर्रे के पास वाला बंगला अशुभ लगा, इसलिए मैंने परीक्षा स्थल मेटकाफ हाउस के पास ही रहने का फैसला किया। वहाँ मुझे गली में एक नया बंगला दिखा, जिस पर गुलाबी पर्दे लगे थे। मैं अंदर गया और वहाँ मेरी मुलाकात गोरे, युवा लाला जी से हुई। उन्होंने मुझे एक छोटा सा कमरा दिखाया और मुझसे 50 रुपये प्रति माह किराया माँगा। मैंने उनका किराया मान लिया और उन्हें 10 रुपये अग्रिम दे दिए। अगले दिन जब मैं अपने बिस्तर और किताबों के साथ बंगले पर पहुँचा, तो लाला जी ने हमारा समझौता मानने से इनकार कर दिया और मेरा अग्रिम भुगतान भी वापस नहीं किया। मैं बहुत निराश हुआ, क्योंकि मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और उस समय के 10 रुपये आज के 200 रुपये के बराबर होते। मैं उस लाला जी के धोखे को कभी नहीं भूल पाया।

जब मैं 1946 में दिल्ली का उपायुक्त बना, तो मैंने उस लाला जी को ढूंढने का फैसला किया। मुझे 1932 की अपनी गरीबी और बेबसी याद आती थी। मुझे ऐसा लगता था जैसे डिक व्हिटिंगटन अपने सामान से भरे एक छोटे से थैले के साथ लंदन पहुंचे और फिर शहर के लॉर्ड मेयर बन गए। मैंने वह बंगला ढूंढ लिया और मेरे सहायक ने भी लाला जी को ढूंढ लिया। मैं राजपुर रोड स्थित उपायुक्त आवास के 17 नंबर के कार्यालय में बैठा था और लाला जी अंदर आए। मैंने उनसे पूछा, “लाला जी, क्या आपको याद है कि जनवरी 1932 में एक सिख युवक आपका बंगला देखने आया था?” “हां।” “उसने आपको 10

113 उन्होंने पहले प्रयास में परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की। इसलिए, 1931 में 19वीं रैंक और 1932 में 5वीं रैंक प्राप्त की।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। “मैंने आपको अग्रिम के रूप में रुपये दिए थे, जिन्हें आपने लौटाने से इनकार कर दिया था।” लाला जी स्तब्ध रह गए और उनका चेहरा पीला पड़ गया। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैंने कहा, “मैं वही सिख युवक हूँ।” लाला

जी घबरा गए और भयभीत हो गए। मैंने कहा, “आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, आप मेहरौली स्थित पुस्तकालय को 500 रुपये दान में दे सकते हैं, और मैं 1932 का अपना ऋण माफ कर दूंगा।”

(पृष्ठ 96)
लाला जी ने तुरंत दान कर दिया और अपनी जान बचा ली।
अब मैं एक बार फिर आईसीएस की प्रतियोगी परीक्षा के बारे में बात करना चाहता हूँ। यह शायद सबसे कठिन परीक्षा है। हमारी परीक्षाएँ लगभग एक महीने तक चलती रहीं, और फिर हमने मौखिक परीक्षा दी। मैं उस परीक्षा की कठिनाई को कई वर्षों तक नहीं भूल पाया। कई बार, मैं सपने में देखता था कि मैं मेटकाफ हाउस के हॉल में परीक्षा दे रहा हूँ और मैं सब कुछ भूल चुका हूँ। हज़रत मूसा ने सही कहा है, "हे खुदा, मेरी परीक्षा मत लो।"

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 12

विदेश यात्रा
(1932-1934)

(पृष्ठ 97)
आई.सी.एस. प्रतियोगी परीक्षा के परिणाम 11 जून 1932 को द ट्रिब्यून अखबार में प्रकाशित हुए। वर्षों के संघर्ष और कड़ी मेहनत के बाद, यह पहली खबर थी जिसने लंबे समय बाद मेरे उदास मन को खुशी दी। दस दिनों तक मित्रों और रिश्तेदारों के बधाई पत्र आते रहे। सच्ची खुशी तो वही होती है जिसमें मित्र भी शामिल हों। मेरे गांव और आसपास के लोग सबसे ज्यादा खुश थे। वे अपना काम छोड़कर स्टेशन पर मुझे लेने आए; उनके साथ दसूया स्थित इस्लामिया हाई स्कूल का बैंड भी था।
उसके बाद मैं कुछ दिन गाँव में रुका और फिर शिमला में अपने मित्र निरंजन सिंह बैंस के पास चला गया। वह भराड़ी में 10-12 अन्य क्लर्कों के साथ रहता था। नाश्ता

करने के बाद मैं चीड़ के जंगलों में जाता और उनकी छाँव में आराम करता। हवा चीड़ के राल की सुगंध से भरी होती और पत्तों की हल्की सरसराहट मन को शांति देती। लाल रोडोडेंड्रोन के गुच्छे पहाड़ों की शोभा और भी बढ़ा देते थे। मेरे सामने पहाड़ों पर मोती और पत्थरों के हार पहने पहाड़ी औरतें दरांती से घास काटती थीं। पहाड़ों की शांति और सुकून ने मुझे फिर से तरोताज़ा कर दिया और परीक्षा का बहुत सारा तनाव आखिरकार मेरे मन से दूर हो गया।
मेरा विवाह 15 अगस्त 1932 को डॉ. हरभजन सिंह के गांव नारंगवाल में हुआ था।

(पृष्ठ 98)
मैं और इकबाल 16 अगस्त को डॉक्टर साहब की फोर्ड मोटरगाड़ी से जालंधर पहुँचे। इकबाल ने सलवार-सूट के ऊपर हल्के नीले रंग का दुपट्टा ओढ़ा हुआ था। मैं उसके मासूम, सुंदर चेहरे को निहारती रही, लेकिन शर्म के मारे उससे बात नहीं कर पाई। हम जालंधर में पंडित सीता राम के घर पर रुके। हमने दोपहर वहीं बिताई और शाम को बोडलान पहुँचे। गाँव का रास्ता कच्चा होने के कारण हमने मोटरगाड़ी को गर्ना साहिब स्टेशन पर ही छोड़ दिया। इकबाल पालकी में बैठ गई और मैं घोड़े पर सवार हो गई। उस समय पंजाब के मुख्य सचिव का एक पत्र घर आया, जिसमें लिखा था कि हमारी विदेश यात्रा के लिए पी एंड ओ लाइनर एसएस कोमोरिन की व्यवस्था की गई है और यह जहाज 3 सितंबर 1932 को बॉम्बे से रवाना होगा। मैं 2 सितंबर को बॉम्बे पहुंचा। उस यात्रा के लिए पहली बार ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठा। रास्ते में पड़ने वाले स्टेशनों पर मुझे कई सिख मिले और सभी ने मेरा अभिवादन किया। कम जनसंख्या के बावजूद सिखों में बहुत भाईचारा है और वे दूसरे देशों में एक-दूसरे की मदद करते हैं।
हमारा जहाज 3 सितंबर को बॉम्बे बंदरगाह से रवाना हुआ। यह मेरी पहली समुद्री यात्रा थी। डेक से उड़ने वाली मछलियाँ बहुत खूबसूरत दिखती थीं। वे नीले पानी में तलवार की तरह तैरती, आसमान में छलांग लगाती और फिर पानी में गायब हो जातीं। रात में पानी में रोशनी दिखाई देती थी, ऐसा लगता था जैसे हजारों जुगनू चमक रहे हों। इसे फॉस्फोरेसेंस कहते हैं। समुद्री हवा ओजोन से भरपूर होती है, और समुद्री यात्रा के दौरान बहुत भूख लगती है। डाइनिंग हॉल में कांटे और चाकू से अंग्रेजी खाना खाने का यह मेरा पहला अनुभव था। मैं अपने आसपास के अंग्रेज यात्रियों को देखता

और उनकी नकल करता। दो-तीन अंग्रेजी शब्द, 'थैंक यू', 'प्लीज'।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। 'सॉरी' और 'सॉरी' अंग्रेजी सभ्यता के प्रतीक हैं। इन्हें सीखना महत्वपूर्ण है, और उचित समय पर इनका उच्चारण करने पर ही व्यक्ति सभ्य माना जाता है।

तीन दिन तक हमारी यात्रा सुहावनी रही, उसके बाद हमारा जहाज मानसूनी हवाओं के प्रभाव में आ गया। जहाज बुरी तरह हिलने लगा, इसलिए यात्री लेट गए। यह समुद्री बीमारी का मेरा पहला अनुभव था। अब हम भोजन करने के लिए भोजनालय तक नहीं जा सकते थे, और अंग्रेज़ स्टीवर्ड हमारे केबिन में खाना लाता था। जब तक हमारा जहाज अरब सागर में चलता रहा, मैं लेटा रहा। मैं खुद से पूछता था, मैंने ये कैसी मुसीबत मोल ले ली है, काश मैं पी.सी.एस. के लिए योग्य होता, तो मैं इस समुद्री यात्रा की तकलीफ से बच जाता।

(पृष्ठ 99)

इसके अलावा, जहाज से सड़ी हुई मछली की बदबू भी आ रही थी। यह बात सभी जहाजों पर लागू होती है, चाहे वे कितने भी साफ-सुथरे क्यों न हों। यह बदबू भी बीमार कर देती है।

आखिरकार, जहाज पोर्ट सईद पहुँच गया और हमने सुरक्षित पहुँचने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। वहाँ हमने मिस्रियों को लाल टोपी पहने देखा। वे लबादे ओढ़े हुए थे और यात्रियों को नग्न महिलाओं की तस्वीरों वाले ताश के पत्तों के सेट बेच रहे थे। उनमें से कई के पास घोड़ागाड़ियाँ थीं। उनके साथ यात्रा करना डरावना था क्योंकि वे गुंडों जैसे दिख रहे थे। मेरे पास ऊनी ड्रेसिंग गाउन नहीं था, और वहाँ एक बड़े स्टोर से वह सस्ते में मिल सकता था। इसलिए, शहर जाना मेरे लिए ज़रूरी था। हम चार-पाँच प्रशिक्षु एक साथ शहर गए। रास्ते में गाड़ी वाले ने हमसे पूछा कि क्या हमें "लाल महिलाओं" की ज़रूरत है। जब हम सभी ने सिर हिलाकर मना कर दिया, तो वह हैरान रह गया। मैं पोर्ट सईद में एक बड़े स्टोर के सामने खड़ा था। एक लड़का आया और मुझसे पूछा कि क्या मैं अपने जूते पॉलिश करवाना चाहता हूँ। मैंने मना कर दिया। उसने मेरे भूरे जूतों पर काली पॉलिश लगाई और भाग गया। हमने जल्दी से एक

ड्रेसिंग गाउन खरीदा, जहाज पर वापस आए और ईश्वर का धन्यवाद किया। मुझे ऐसा लगा कि मिस्रियों का निम्न वर्ग नैतिक रूप से कमज़ोर है, और मध्यम वर्ग आलसी और भोगी है। पुरुष दुकानों के सामने बैठकर कॉफी पीते या हुक्का पीते रहते हैं, और महिलाएं काले बुर्के से अपना चेहरा ढके हुए समूहों में बाजारों में घूमती हैं। ऐसा लगता है मानो पूरा समुदाय निष्क्रिय है।

लाल सागर में हमारी यात्रा समाप्त होने के बाद, हमने राहत की सांस ली। फिर हमने स्वेज़ नहर पार की। नहर के दोनों ओर रेत के टीले थे और जहाज धीरे-धीरे चल रहा था। भूमध्य सागर का पानी गहरा नीला था और जहाज से देखने पर बहुत सुंदर लग रहा था। कुछ दिनों बाद, हम माल्टा बंदरगाह पहुंचे। वहां युद्धपोतों का एक समूह था। वहां की ज़मीन पथरीली थी और मिट्टी की परत पतली थी। हम पंजाबी मिट्टी को महत्व नहीं देते क्योंकि हमारी मिट्टी की परतें बहुत गहरी होती हैं। उन पथरीले द्वीपों को देखने के बाद ही मिट्टी का महत्व समझ में आता है और हमें एहसास होता है कि हम पंजाबी कितने भाग्यशाली हैं।

बंबई से रवाना होने के दो दिन बाद जहाज मार्सिले पहुँच गया। समुद्री यात्रा से छुटकारा पाकर हम बहुत खुश थे। मार्सिले एक खूबसूरत शहर है, और फ्रांसीसी लोग, विशेषकर फ्रांसीसी महिलाएं, बेहद सुंदर हैं।

(पृष्ठ 100)

जहाज से बाहर निकलते ही एक आदमी हमसे मिला और उसने पूछा कि क्या हम अश्लील फिल्में देखना चाहते हैं। हममें से किसी को भी उस तरह की फिल्मों में दिलचस्पी नहीं थी और हमने मना कर दिया। एक दस साल का लड़का था...

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। वह मुझ पर हंस रहा था। मैंने प्यार से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा, लेकिन वह मेरी पगड़ी और दाढ़ी से बहुत डर गया।

हम शाम को ट्रेन में सवार हुए। ट्रेन की बड़ी खिड़कियों से फ्रांस का खूबसूरत नज़ारा दिखाई दे रहा था। रेलवे ट्रैक के दोनों ओर सेब और अंगूर के बाग थे। सड़कों के दोनों ओर चिनार के पेड़ों की कतारें थीं। नीले कपड़े पहने पुरुष और महिलाएं खेतों में काम कर रहे थे। घरों की छतें ढलानदार थीं और उन पर लाल-नारंगी रंग चढ़ा हुआ था।

कुछ जगहों पर छोटी-छोटी नदियाँ और जलधाराएँ दिखाई दे रही थीं, जिनमें बत्तखें तैर रही थीं। शायद ईश्वर ने पृथ्वी के किसी अन्य भाग को इतनी सुंदरता नहीं दी है जितनी फ्रांस को दी है।

हम मार्सिले से पेरिस पहुंचे और लूव्र संग्रहालय देखा, जो लियोनार्डो की मोना लिसा पेंटिंग को प्रदर्शित करता है। चित्रकला के क्षेत्र में फ्रांस का विश्व में एक विशेष स्थान है। इस देश में कला की सबसे पुरानी परंपरा है। 20,000 साल पहले, फ्रांसीसी लोगों ने डोर्डोग्ने की गुफाओं में घोड़ों, हाथियों और जंगली बाइसन के चित्र बनाए थे। उसके बाद, 15वीं शताब्दी से ही, फ्रांस ने सैकड़ों महान कलाकारों को जन्म दिया, जिनमें गोया, बूशे, इंग्रेस, रेनॉयर, सेरात, मोनेट, डेगास, डेलाक्रॉइक्स और गौगुइन विश्व प्रसिद्ध हैं।

हम कैलिस पहुँचे और वहाँ से एक छोटे जहाज पर सवार हुए; उसके डेक पर बैठने के लिए बस थोड़ी सी जगह थी। हमने इंग्लिश चैनल पार किया और डोवर पहुँचे। जहाज से नीले समुद्र के किनारे डोवर की चूना पत्थर की सफेद चट्टानें बेहद खूबसूरत लग रही थीं।

फिर हमारे पैर इंग्लैंड की धरती पर पड़े, वह देश जिसने उन प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और लेखकों को जन्म दिया था जिनकी पुस्तकों और आविष्कारों ने कृषि और उद्योग जगत में क्रांति ला दी थी। यह वही 'विदेश' (विलायत) था जहाँ साम्राज्य पर सूरज कभी नहीं डूबता था।

हम लंदन जाने के लिए ट्रेन में सवार हुए। पटरी के दोनों ओर हरियाली दिखाई देती थी, या फिर बड़े-बड़े विज्ञापन दिखाई देते थे जो पाठकों को उस कंपनी की व्हिस्की, बीयर, सिगरेट, ब्रेड, टमाटर सॉस आदि खरीदने के लिए प्रेरित करते थे।

(पृष्ठ 101)

उन्होंने पटरी के दोनों ओर उन्हें लगाने का खर्च उठाने वाली कंपनियों के विज्ञापन दिए। खेतों में भूरी-मोटी गायें चर रही थीं। घरों में आमतौर पर दो मंजिलें होती थीं और पीछे कपड़े सुखाने के लिए रस्सियाँ लगी होती थीं; उनके रंग-बिरंगे कपड़े हवा में लहराते दिखाई देते थे। कभी-कभी हमें सेब के बाग भी दिखाई देते थे जिन पर हरे और गुलाबी सेब लगे होते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 13

लंदन

(1932-1934)

(पृष्ठ 102)

मेरे जुड़वां भाई राजिंदर सिंह और हमारे अच्छे दोस्त बर्मा नंद भनोट लंदन में पढ़ाई कर रहे थे। वे मुझे विक्टोरिया स्टेशन पर मिले और मुझे शेफर्ड्स बुश स्थित 79, सिनक्लेयर रोड पर ले गए। यह लंदन में एक सिख गुरुद्वारा था, और अगर किसी छात्र को आर्थिक परेशानी होती, तो वह वहां कम किराए पर रह सकता था।

राजिंदर और भनोट ने मुझे सलाह दी कि अब जब मैं किराए का भुगतान कर सकता हूँ, तो हमें एक अच्छा अपार्टमेंट ढूंढना चाहिए। उन्हें गोल्डर्स ग्रीन में एक अपार्टमेंट मिला; उसका नाम नंबर 5, ग्रीनफील्ड गार्डन्स था। उस मकान मालकिन, श्रीमती हेज़, एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी की पत्नी थीं। वहाँ हम प्रति सप्ताह 30 शिलिंग किराया देते थे; इसमें कमरे का किराया, नाश्ता और रात का खाना शामिल था। बस और मेट्रो का किराया जोड़ने के बाद, एक व्यक्ति शहर में 10 पाउंड प्रति माह में रह सकता था।

मुझे अपनी पढ़ाई के लिए तीन कॉलेजों में जाना पड़ा — स्कूल ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, किंग्स कॉलेज और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स। हम घर से पैदल चलकर वेले पहुंचते, फिर रोडबोरो रोड होते और उसके बाद गोल्डर्स ग्रीन जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचते। लंदन अंडरग्राउंड शहर में परिवहन का सबसे अच्छा साधन है। प्रतिदिन लाखों लोग इससे यात्रा करते हैं।

(पृष्ठ 103)

यह बिजली से चलती है और जल्दी ही रफ्तार पकड़ लेती है। स्टेशन पर रुकने पर दरवाजे तेजी से खुल जाते हैं और यात्री अंदर चले जाते हैं। जो पहले पहुंचते हैं वे बेंचों पर बैठ जाते हैं और बाकी लोग ऊपर लगी पट्टियों को पकड़कर खड़े रहते हैं। हमारी

ज्यादातर पढ़ाई फिन्सबरी सर्कस स्थित प्राच्य अध्ययन विद्यालय में हुई। श्री [एस. जी.] वेसी-फिट्ज़गेराल्ड ने हमें कानून पढ़ाया और प्रोफेसर सी.सी. डेविस ने हमें हिंदी और यूरोपीय इतिहास पढ़ाया। मैं इतिहास का इकलौता छात्र था और डेविस और मैं साथ बैठकर इतिहास पर चर्चा करते थे। कई लोग मुझे प्रोफेसर समझते थे। डेविस वेल्श थे और खुलकर बोलते थे। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने भारत को नींबू की तरह निचोड़ लिया है और आने वाले वर्षों में उन्हें देश छोड़ना पड़ेगा। अब उनकी निगाहें अफ्रीका की ओर थीं।

फिट्ज़गेराल्ड एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश थे। उनके बाल सफेद थे और वे एक विनम्र व्यक्ति थे। वे हमसे बहुत विनम्रता से बात करते थे और हमें अपनी पढ़ाई में कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करते थे। सर डेनिसन रॉस वहाँ प्रोफेसर थे और फारसी भाषा के एक महान विद्वान थे।

आई.सी.एस. के अधिकांश प्रोबेशनर लंदन के अलावा ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में दाखिला लेते थे। मुझे अपने भाई की वजह से लंदन में दाखिला लेना पड़ा। हम लंदन के प्रोबेशनरों ने एक एसोसिएशन बनाया था, जिसमें मैं सचिव और अध्यक्ष था। जब क्वेटा में भूकंप आया, तो मैंने तबाही से प्रभावित लोगों के लिए 200 पाउंड की सहायता राशि इकट्ठा की।

शिष्टता और शिष्टाचार के मामले में कोई भी देश इंग्लैंड से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता। यदि कोई अजनबी रास्ता भटक जाए, तो अंग्रेज लोग अपना काम छोड़कर उसे सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। शराब का सेवन संयमित रूप से किया जाता है, और कहीं भी दंगे, संघर्ष या अपशब्द नहीं होते। यदि वे अपने घर में रेडियो या वाद्य यंत्र बजाते हैं, तो वे उन्हें धीमी आवाज़ में बजाते हैं ताकि किसी और को परेशानी न हो। यदि कोई महिला या वृद्ध व्यक्ति बस या ट्रेन में खड़ा होता है, तो युवक उनके लिए अपनी सीट खाली कर देते हैं। यहां तक कि अगर कोई भिखारी भी है, तो वह माचिस की तीलियां बेचेगा या मुख अंग बजाएगा। इस प्रकार के अधिकांश भिखारी सेवानिवृत्त

सैनिक होते हैं जिनके पैर या हाथ नहीं होते।
इसका मतलब यह नहीं है कि वहाँ गुंडे, जेबकतरे और ठग नहीं हैं। पार्लियामेंट स्ट्रीट पर एक दुकान पर बड़े अक्षरों में लिखा था: "यह दुकान बंद हो रही है, इसलिए सभी सामान पर 40% की छूट है।" मैं अंदर गया और घड़ियों और चाकुओं की कीमतें देखीं। कीमतें दूसरी दुकानों से कहीं ज़्यादा थीं।

(पृष्ठ 104)
मैं दो साल तक लंदन में रहा, लेकिन वह दुकान चलती रही और बंद नहीं हुई।
मैंने गर्मियों की छुट्टियों में ऑस्ट्रिया की यात्रा की और कैरिंथिया का खूबसूरत इलाका देखा। वहाँ बहुत सारी झीलें हैं। जब मैं लंदन लौटा, तो देखा कि मेरे बैंक खाते में एक भी पैसा नहीं था। जाने से पहले मैंने अपनी चेकबुक ड्रेसिंग टेबल के दराज में छोड़ दी थी। श्रीमती हेज़ ने मेरी चेकबुक से दो जाली चेक लिखे, एक 5 पाउंड का और दूसरा 8 पाउंड का। उन्होंने 5 पाउंड का चेक भुना लिया, लेकिन मैंने दूसरा चेक पकड़ लिया। मैं ग्रिंडलेज़ बैंक गया और उन्हें अपनी समस्या बताई। उन्होंने मुझे 5 पाउंड दिए, लेकिन उस महिला के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने से इनकार कर दिया। मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि उस ईमानदार देश में भी ऐसे बेईमान लोग हैं।
हमने अपना आवास बदलने का फैसला किया। हमने बगल वाली गली, पार्ले एवेन्यू के नंबर 2 में 2 पाउंड प्रति सप्ताह के किराए पर एक कमरा लिया। कुछ दिनों बाद, हमने देखा कि ग्रीनफील्ड गार्डन्स के नंबर 5 पर एक ट्रक आया और सारा फर्नीचर ले गया। फिर एक और ट्रक आया और सिलाई मशीन ले गया। तीसरे ट्रक ने फ्रिज ले लिया। असल बात यह थी कि श्रीमती हेज़ की कोई भी संपत्ति उनकी नहीं थी, उन्होंने ये सभी चीजें किश्तों पर ली थीं।
श्रीमती थॉम्पसन पार्ले एवेन्यू स्थित नंबर 2 की मकान मालकिन थीं। वे खुद को मैडम सिल्विया स्कॉट भी कहती थीं और राशिफल तैयार करती थीं। उन्हें ग्राहकों से राशिफल के बारे में कई पत्र मिलते थे और वे उनके राशिफल से संबंधित कैलेंडर पढ़कर उनके प्रश्नों का उत्तर देती थीं।
श्रीमती थॉम्पसन की बेटी मार्गरेट मेरा बहुत ख्याल रखती थी; वह बड़े प्यार से मेरे लिए शाम की चाय बनाती थी। वह मेरे साथ सैर पर भी जाती थी, और मुझे उससे प्यार हो गया। हालांकि, मुझे घर की भी चिंता थी। मैंने इकबाल से शादी का प्रस्ताव

रखा था, और उसका मासूम चेहरा बार-बार मेरे मन में आता रहता था। मैंने मार्गरेट को बताया कि मैं शादीशुदा हूँ, और मैं उसे सिर्फ दोस्ती दे सकती हूँ। इसलिए, उसे मुझसे शादी करने का सपना नहीं देखना चाहिए। मेरी ईमानदारी पर उसे हैरानी हुई, लेकिन वह समझ गई।

लंदन एक बड़ा शहर है, लेकिन अगर आपका वहां कोई दोस्त नहीं है, तो आप अकेलापन और उदासी महसूस कर सकते हैं। अंग्रेज़ लोग स्वभाव से ठंडे होते हैं और मिलनसार नहीं होते। पड़ोसी एक-दूसरे को नहीं जानते और बिना बुलाए कोई किसी के घर नहीं जाता।

किसी ने मुझसे भारत के ग्रामीण लोगों और पश्चिमी देशों के लोगों के बीच मुख्य अंतर के बारे में पूछा था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैंने जवाब दिया कि हमारे पास दिल और प्यार है, हम एक-दूसरे के सुख-दुख बाँटते हैं, लेकिन चाहे वे लोग कितने भी चतुर और मेहनती क्यों न हों, वे ठंडे दिल के हैं। वे अपने से आगे कुछ नहीं देखते। उनके फूलों में रंग तो होता है, पर खुशबू नहीं। अगर कुछ फूलों में खुशबू होती भी है, तो वह नाममात्र की होती है। हमारे फूलों में चटख रंग भले ही न हों, पर वे हमेशा खुशबूदार होते हैं। पूरन सिंह ने पश्चिमी लोगों के बारे में यह बात बिल्कुल सही समझी थी - वहाँ बड़े दिल वाले लोग मिलना मुश्किल है, पति-पत्नी और माँ-बेटे के बीच बहुत बड़ा फासला है। पड़ोसी को पड़ोसी की परवाह नहीं। हर अंग्रेज का घर उसका किला होता है, उसकी चारदीवारी मजबूत होती है और मुख्य द्वार पर मजबूत ताला लगा होता है। सबसे पहले तो, कोई भी बिना बुलाए किसी के घर नहीं जाता, और अगर कोई भटका हुआ व्यक्ति गलती से किसी के दरवाजे पर पहुँच भी जाए, तो उसे पानी तक नहीं दिया जाता। वे एक-दूसरे के प्रति इतने ठंडे हैं कि यह बात मुझे हैरान कर देती है। अगर आप उन्हें ट्रेनों में बैठे हुए देखें, तो और भी चौंक जाएंगे। हर आदमी अखबार से अपना चेहरा छुपाए बैठा रहता है। इस ठंडे और उदासीन राष्ट्र की प्रकृति को मैं एक साल बाद ही समझ पाया। ठीक है, भले ही लंदन लाखों पुरुषों और महिलाओं से भरा हुआ है, लेकिन यहाँ बिना दोस्तों वाले किसी

बाहरी व्यक्ति के लिए यह अरब के रेगिस्तान से भी अधिक वीरान है।
मुझे पैदल चलने की आदत है। खराब मौसम में मैं ब्रिटिश संग्रहालय जाया करती थी। इस इमारत में मीलों लंबी गैलरी हैं, और मैं दो-तीन घंटे तक चित्रों और मूर्तियों को देखती रहती थी। इस तरह मैं पैदल भी चल पाती थी और उन ज्ञान प्रणालियों से परिचित भी हो जाती थी। मैंने उस संग्रहालय में कांगड़ा के चित्र देखे। उनमें से एक चित्र देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। वह वासकसज्जा नायिका का चित्र था, और संग्रहालय ने इस चित्र के कार्ड भी प्रकाशित किए हैं। लाल घाघरा और नीले दुपट्टे में एक सुंदरी नदी के किनारे पत्तों के बिस्तर पर बैठी है। वह अपने प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही है। उसके पीछे फूलों से लदी झाड़ियाँ हैं, और आकाश में चंद्रमा चमक रहा है। यह चित्र भारतीय नारी की सुंदरता और कोमलता को बड़ी कुशलता से दर्शाता है। जब मैं अकेले बैठकर उस चित्र के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे आज भी उस प्रेम में डूबी लड़की की याद आती है जो अपने प्रेमी का इंतजार कर रही थी, और मुझे लाहौर में देखे कांगड़ा के चित्रों की याद आती है।
अप्रैल-मई के महीनों में लंदन के पार्क असाधारण रूप से सुंदर हो जाते हैं।

(पृष्ठ 106)
घरों की लकड़ी की बाड़ें गुलाबों से लद जाती हैं। सर्दियों में पत्तों से रहित रहे ओक और सिकोमोर के पेड़ों पर हरी कोंपलें उग आती हैं। घास और भी हरी हो जाती है। महिलाएं और बच्चे रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर पार्कों में आते हैं। अंग्रेज महिलाएं खूबसूरत होती हैं, ठंडी और नम हवा के कारण उनके चेहरे गुलाबों की तरह खिल उठते हैं। प्राकृतिक सुंदरता मानवीय सुंदरता के साथ मिलकर इस देश को सचमुच परीलोक बना देती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
भाग III: कार्य

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 14

सहारनपुर — बागों का घर
(1934-1936)

(पृष्ठ 109)
मेरा प्रशिक्षण 6 अक्टूबर 1934 को पूरा हुआ, जिसके बाद मेरी तैनाती उत्तर प्रदेश प्रांत में हुई। कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि मेरी तैनाती सहारनपुर में हुई है। यह जिला पंजाब की सीमा के निकट है।
मैंने तय किया कि मेरी वापसी की यात्रा फ्रांस, स्विट्जरलैंड और इटली होते हुए होगी। मैंने अपना भारी सामान जहाज में बुक करवा दिया और ट्रेन यात्रा के लिए एक हल्का हैंडबैग अपने पास रखा। जब मैं रवाना होने ही वाला था, तब मुझे पता चला कि मेरा पासपोर्ट भी भारी सामान के साथ कहीं खो गया है। मैं तुरंत भारत कार्यालय गया और श्री नेस्टर से मिलकर अपनी इस गलती के बारे में बताया। उन्होंने दो घंटे के भीतर मेरा नया पासपोर्ट बनवा दिया।
लंदन छोड़ते समय मेरा दिल खुशी से भरा हुआ था। वहां दो साल रहने के बाद, शहर से मेरा एक गहरा रिश्ता बन गया था, और बाद में भी, जब भी मुझे दोबारा लंदन जाने का मौका मिलता, मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं अपने दूसरे घर पहुंच गई हूँ।
मैं डोवर से पेरिस पहुँचा और नोट्रे डेम चर्च और लूव्र संग्रहालय का दौरा किया। पेरिस के बाज़ारों के दोनों ओर हज़ारों लोग बड़ी-बड़ी छतरियों की छाँव में बैठकर धीरे-धीरे कॉफ़ी या वाइन पी रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो यह आलसी लोगों का देश हो, लेकिन जीवन में आराम भी ज़रूरी है।

(पृष्ठ 110)
विज्ञान, कला और साहित्य में रुचि रखने वाले वही लोग हो सकते हैं जिन्हें भोजन की चिंता न हो। यही कारण है कि कला और साहित्य यहाँ अपने चरम पर पहुँचे हैं और संस्कृति के क्षेत्र में फ्रांस का नाम इतना प्रतिष्ठित है।
मैं पेरिस से ज्यूरिख गया और आल्प्स के बर्फ से ढके पहाड़ों को पार करने के बाद इटली में प्रवेश किया। मैंने फ्लोरेंस में एक दिन बिताया और वहां के प्रसिद्ध गिरजाघरों

का दौरा किया।
अंततः मैं रोम पहुँचा और सेंट पीटर का भव्य गिरजाघर देखा। वहाँ मैंने पोप के बेहद खूबसूरत वेटिकन संग्रहालय का भी दौरा किया। यहाँ लियोनार्डो और माइकल एंजेलो की महान चित्रकलाएँ हैं। मैंने पैसे बचाने के लिए एक छोटे से सराय में ठहरा; सराय में सादा खाना मिलता था और रहने के लिए एक छोटा, साफ कमरा था। वह मुसोलिनी का दौर था, और काले रंग की वर्दी पहने फासीवादी सैनिक बाजारों और सड़कों पर घूमते रहते थे। वे गुंडों जैसे दिखते थे।
मैं रोम से नेपल्स गया और पोम्पेई के खंडहर देखे। इस शहर के पीछे वेसुवियस ज्वालामुखी है; पहाड़ से काला धुआँ उठता हुआ दिखाई दे रहा था। नेपल्स में मुझे ऐसा लगा जैसे मैं भारत में हूँ। लोग ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे, और मैंने बाज़ारों में दंगे और झगड़े भी देखे। हर घर की खिड़कियों में कपड़े सुखाने की रस्सियों पर धुले हुए कपड़े सूख रहे थे।
मैंने नेपल्स से लॉयड ट्रिस्टिनो के विक्टोरिया जहाज पर सवार होकर बॉम्बे की यात्रा की। यूरोप के शहरों की तुलना में बॉम्बे बहुत गंदा लग रहा था। लोग भी आलसी थे, और

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। गहरे रंग के। लंदन में दो साल रहने के बाद मेरी आँखें गोरे पुरुषों और महिलाओं को देखने की आदी हो गई थीं, इसलिए भारतीय मुझे सामान्य से अधिक गहरे रंग के दिखाई दिए।115
मैंने रेलवे स्टेशन पर गोजरा के लिए दो बड़े ट्रंक बुक करवाए। क्लर्क ने उस छोटे से काम के लिए दो घंटे लगा दिए। अगर मैंने उसे एक रुपया भी दे दिया होता, तो मेरा काम जल्दी हो जाता, लेकिन यह मेरी अंतरात्मा के खिलाफ था। इससे साफ पता चलता है कि हमारा देश कितना गिर चुका है।
ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में मेरे साथ दो और साथी थे—एक मुस्लिम व्यापारी और एक हिंदू। मैं अपनी दाढ़ी और बाल बढ़ा रहा था, और जब मैंने अपनी पगड़ी उतारी, तो मैं एक मौलवी जैसा लग रहा था। मुस्लिम ने मेरा बड़े गर्मजोशी से स्वागत किया, अस्सलाम वालेकुम कहा और हिंदुओं की बुराई करने लगा। मैंने सुबह ही अपनी पगड़ी बाँध ली थी, और वह अपनी इस गलती पर शर्मिंदा हो गया।

मैं राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति अत्यंत भावुक था, और जब मैंने हिंदू यात्री को अपने विचार बताए कि हमारा देश अंग्रेजों से मुक्त होना चाहिए, तो वह बहुत प्रभावित हुआ। उसने खुशी-खुशी चाय और भोजन मंगवाया, और जब मैं वेटर को बिल देने लगा, तो उसने मुझे रोककर कहा, "आज आप मेरे अतिथि हैं।" राष्ट्र के प्रति यह स्नेह और प्रेम यूरोप में कहीं और नहीं मिलता था।

मैंने गोजरा में दो दिन बिताए और इकबाल के साथ सहारनपुर जाने वाली ट्रेन में सवार हो गया। ट्रेन अमृतसर स्टेशन पर रुकी और एक हट्टा-कट्टा, तगड़ा और गुंडे जैसा दिखने वाला मुस्लिम फकीर मेरे सामने भीख मांगने के लिए खड़ा हो गया। मैं भिखारियों को पैसे नहीं देता, खासकर तब जब वे विकलांग न हों। जब उसे मुझसे कुछ नहीं मिला, तो वह बदमाश मुझे गालियां देने लगा। मैं चुप रहा, लेकिन इकबाल ने उसे डांट दिया।

ट्रेन शाम को सहारनपुर पहुँची और हम ज़िला कलेक्टर श्री बेट्स से मिलने गए। उन्होंने हमारे लिए लोक निर्माण विभाग (पीडब्लूडी) बंगले में रहने का इंतज़ाम किया था। हमने अपना सामान तांगे में रखा और बंगले पर पहुँचे। वहाँ हम लगभग एक सप्ताह तक रहे और इस बीच रहने के लिए घर ढूँढ़ते रहे। आख़िरकार हमें अदालतों के पास एक बंगला मिल गया। यह दो मंज़िला था और ऊपरी मंज़िल पर मनोहरदास चतुर्वेदी नाम के एक वन अधिकारी रहते थे। उन्हें शिकार और गपशप का बहुत शौक था। जब वे अपने शिकार के किस्से सुनाना शुरू करते, तो हम समय की पाबंदी भूल जाते। वे बूढ़े थे, लेकिन उनकी पत्नी जवान, सुंदर और फैशनेबल थीं। वे सारा दिन सजने-संवरने में बिताती थीं और हम उनसे दोस्ती नहीं कर पाए।

सहारनपुर जिला अपने आम, लीची, लोकाट और गन्ने के लिए प्रसिद्ध था; गन्ना इतना नरम होता था कि उसका छिलका एक ही बार में उतर जाता था। आम के मौसम में पूरा शहर मक्खियों से भर जाता था।

उस इलाके के गाँव बदहाल थे। सहारनपुर के जैन बनिया ज़मींदार थे। हर ज़मींदार के पास कई गाँव थे। उन्हें खेती-बाड़ी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, न ही अपने किरायेदारों की हालत सुधारने में; उन्हें सिर्फ़ भू-राजस्व की चिंता थी। वेश्याओं के नृत्य देखना और अधिकारियों को उपहार भेजना उनका खास शौक था। वेश्याएँ भी चालाकी से

उन्हें ठगती थीं और उपहार के तौर पर सोने के गहने ले जाती थीं। उनमें शम्मो सबसे मशहूर थी; उसने एक अमीर आदमी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था।

115 रंधावा ने 'काला' शब्द का प्रयोग किया है जिसका शाब्दिक अनुवाद काला होता है। सांवला का अर्थ गहरे रंग का होगा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। यह कहानी कंवर किशोरी सरन नामक एक व्यवसायी की है। वह उसे अंग्रेजी पतलून और कमीज पहनाना और उससे गाना गवाना बहुत पसंद करता था।
गांवों और ग्रामीणों की दयनीय स्थिति को देखकर, मुझे उनके सुधार के लिए काम करने की प्रेरणा मिली।

(पृष्ठ 112)
मैं जिला 116 ग्राम सुधार समिति का सचिव था, और मैं ब्राणे 117 साहिब के कार्यों से भी प्रभावित था। मंगल किरण जैन ने 'पीपुल्स जर्नल' नाम का एक अखबार शुरू किया था। मैं अक्सर इस अखबार में ग्राम सुधार पर लेख लिखता था। उस समय स्वच्छता और सफाई की योजनाओं पर अधिक ध्यान दिया जा रहा था। मैंने बहुत सारे रोशनदान 118 बनवाकर गांव के घरों में लगवाए। एक बार जब मैं गांव का दौरा कर रहा था, तो मैंने देखा कि रोशनदानों में चटाइयां ठूंसी हुई थीं। जब मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने बताया कि उन्हें डर था कि उनके विषैले रिश्तेदार या दुश्मन उन छेदों से उनके घरों में अफीम फेंक देंगे और उन्हें झूठे आरोपों में फंसा देंगे।
लंदन में रहने के बाद सहारनपुर जैसे शहर में बसना मुश्किल था। मुझे सबसे ज़्यादा तकलीफ़ पाँच-छह घंटे कुर्सी पर बैठे रहने से होती थी। मुझे चलने की आदत थी, और घंटों कुर्सी पर बैठकर गवाहों के बयान लिखना मेरे लिए मुश्किल था। धीरे-धीरे मुझे कुर्सी पर बैठने की आदत पड़ गई, लेकिन यात्रा के दौरान मुझे बहुत खुशी होती थी - मैं घोड़े पर सवार होकर जंगल में काफ़ी देर तक घूमता था। शिवालिक के जंगलों में जंगली मुर्गे, मोर, बारहसिंगा हिरण और शेर पाए जाते थे।
मैं कभी-कभार सिनेमाघर जाता था। फिल्म खत्म होने के बाद इंग्लैंड का राष्ट्रगान

बजता था और कई लोग हॉल से बाहर निकलने लगते थे। अंग्रेज सावधान मुद्रा में खड़े हो जाते थे। एक बार मैं अपनी जेब में चश्मा रख रहा था और राष्ट्रगान बज रहा था। एक अंग्रेज सिविल सर्जन मुझे देख रहे थे और फिल्म खत्म होने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं सावधान मुद्रा में क्यों नहीं खड़ा हूँ। उस घटना के बाद मैंने सिनेमाघर जाना छोड़ दिया।

हमारे बंगले के चारों ओर काफी खुली जगह थी, लेकिन वह घास और खरपतवार से भरी हुई थी। मैं चपरासियों से कहता, "कृपया इसे साफ कर दीजिए," लेकिन वे काम टाल देते थे। मैंने दो फावड़े खरीदे और ज़मीन से खरपतवार हटाने का काम शुरू किया। शर्म के मारे चपरासियों को भी मेरे साथ शामिल होना पड़ा और आखिरकार ज़मीन साफ हो गई।

विदेश में दो साल बिताने के बाद, मैं अपने देश में भी छुआछीपी की समस्या देख रहा था। मैंने सोचा कि इस बीमारी को व्यवहारिक प्रयासों से जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए। मैंने अपने गाँव के भजना नाम के एक दलित व्यक्ति को नौकर के रूप में रखा। उसका काम भोजन परोसना था, और अगर रिश्तेदार या मेहमान घर आते थे, तो वे भजना द्वारा परोसा गया भोजन खाते थे। 119 एक दिन, एक जाट सिख अधिकारी हमारे घर भोजन के लिए आए। मांस एक बड़े कटोरे में परोसा गया और सभी ने उसे खाया।

116 लिट., जिला ग्राम सुधार समिति 117 जैसा लिप्यंतरित।

118 रोशनदान के लिए वेंटिलेटर, शब्दावली देखें।

119 जाति नियमों के अनुसार, अछूत व्यक्ति की परछाई भी अपवित्र होती है और उसे बार-बार धोना आवश्यक होता है। दलित पुरुष के हाथों से भोजन लेना तो और भी अधिक अपवित्र माना जाता है। अतः रंधावा का कार्य एक महत्वपूर्ण विद्रोह था। उच्च जाति के अधिकारी को भजना की व्यंग्यात्मक टिप्पणी को इसी संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। उनका हिस्सा। जब उस अधिकारी को स्वयं भोजन परोसना पड़ा, तो उसने कटोरा अपने सामने रखा और अपनी चपाती सीधे कटोरे में

डुबोने लगा। भजना ने यह देखा और कहा,

(पृष्ठ 113)

“सरदार जी, आपने तो जाटों जैसी हरकत की।”

इकबाल 17 साल की थी और उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। मैंने उसे अंग्रेजी पढ़ाने का फैसला किया। मैंने उसे नेहरू की किताब 'लेटर्स टू हिज डॉटर' खरीदकर दी। मैं उसे हर दिन एक अध्याय पढ़कर सुनाता था। बेचारी बच्ची सीखती तो रही, लेकिन मुझसे डरने लगी। आप एक ही समय में पति और शिक्षक नहीं बन सकते। स्त्री प्रेम के लिए पैदा होती है, पढ़ाने के लिए नहीं। अगर आपको पढ़ना या पढ़ाना ही है, तो किसी और को पढ़ाना चाहिए।

इकबाल को बहस करने की आदत भी थी। मैं उससे जो भी कहती, वो उसका उल्टा कहती। मैं सोचने लगी कि उसके व्यक्तित्व को किस सांचे में ढालूँ। मैंने उससे कहा कि उसे खाना बनाना सीखना चाहिए, घर सजाना सीखना चाहिए, लेकिन 'मेम' बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। 120 भारतीय मेमें दिन भर सजी-धजी कुर्सियों पर बैठी रहती हैं, जबकि नौकर-चाकर उनका सारा काम करते हैं। शाम को वे क्लबों में जाती हैं, व्हिस्की पीती हैं और पुरुषों के साथ ब्रिज खेलती हैं। मुझे ऐसी जिंदगी में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैं एक-दो बार सहारनपुर क्लब गई, लेकिन मैंने पाया कि मैं किसी से दोस्ती नहीं कर सकती। अंग्रेज अलग बैठकर आपस में बातें करते थे, जबकि भारतीय उन्हें व्हिस्की पिलाते और उनकी चापलूसी करते थे। मुझे यह भी एहसास हुआ कि इकबाल उस तरह की जिंदगी में ढल नहीं सकती, क्योंकि वह अंग्रेजी समझती तो थी, लेकिन ठीक से बोल नहीं पाती थी। महिलाओं को तब तक सामाजिक रूप से समझदार नहीं माना जाता था जब तक वे अंग्रेजी में दिलचस्प बातें न कह सकें। उन दिनों अंग्रेजी न जानना एक कमी मानी जाती थी, और इसका असर मेरी जीवनशैली पर भी पड़ा। मैंने अपना खाली समय घरेलू कामों और पढ़ाई में लगाना शुरू कर दिया; मैंने क्लब से दूरी बना ली।

एक दिन जब मैं अदालत में बैठकर चोरी के एक मामले की सुनवाई कर रहा था, तभी मुझे पता चला कि घर में एक दुर्घटना हो गई है। मैं साइकिल से घर गया और देखा कि इकबाल के दाहिने हाथ की उंगलियां एक कुर्सी के तह वाले हिस्से में फंस गई थीं। जब मैंने उससे पूछा, तो मुझे पता चला कि दर्द से तड़पते हुए भी, कुर्सी उठाकर वह

ऊपर वाले पड़ोसी के पास चली गई थी। पड़ोसी के नौकर ने जवाब दिया, "मेमसाहिब सो रही हैं।" उन्हें जगाने के बजाय, बेचारी लड़की नीचे लौट आई थी। मैंने देखा कि इतना दर्द होने के बावजूद भी वह शांत थी और उसकी आंखों में आंसू नहीं थे।

(पृष्ठ 114)
मैंने एक बढ़ई को घर बुलाया। उसने कुर्सी का बटुआ काटकर उसकी उंगलियां निकालीं। उसकी उंगलियां नीली पड़ गई थीं, और हमें यह भी नहीं पता था कि उसकी हड्डियां टूटी हैं या नहीं। मैं इकबाल को तांगे में बिठाकर अस्पताल ले गया और उसके हाथ का इलाज करवाया।
इस दुर्घटना ने मेरे जीवन में एक बड़ा बदलाव ला दिया। मुझे इकबाल से सच्चा प्यार हो गया। मैं दिल से उनका सम्मान करने लगी। मुझे एहसास हुआ कि वह एक साहसी, शक्तिशाली महिला हैं जो जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम हैं। दूसरी बात, वह बड़े दिल की हैं और उदारता से अपना सब कुछ दान कर देती हैं। वह सभी के प्रति सहानुभूति रखती हैं। उन्होंने अपनी सिंगर सिलाई मशीन भी दान कर दी।

120 'मेम', 'मैडम' 'मेम साहिब' या अंग्रेज महिला से लिया गया है। बाद में इसका प्रयोग मध्य वर्ग की या उच्च सामाजिक स्थिति वाली भारतीय महिलाओं के लिए भी किया जाने लगा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। मैंने अपनी मशीन अपनी बहन मिंडो को दे दी और अपने सारे बर्तन अपने भाई राजिंदर को दे दिए। इकबाल के पास आठ सोने की चूड़ियाँ, दो क्लिप और एक सोने का हार था। उन दिनों मेरा मानना था कि महिलाओं को गहने नहीं पहनने चाहिए। स्त्री की सुंदरता उसके अच्छे स्वास्थ्य में होती है, और अच्छा स्वास्थ्य व्यायाम और संतुलित आहार से प्राप्त होता है। मैंने इकबाल को अपने गहने बेचने की सलाह दी। वह मेरी सलाह मानकर अपने गहने बेच बैठी। इस तरह हमें चोरी की चिंता नहीं रही।
चरित्र, फैशन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। चरित्र से मेरा तात्पर्य केवल यौन चरित्र से

नहीं है;121 इसका अर्थ है ईमानदार, धैर्यवान, कठिनाइयों से लड़ने का साहस रखने वाला, सहानुभूतिशील, स्वार्थ को भुलाकर दूसरों का बोझ उठाने वाला। इकबाल में ये सभी गुण थे। यदि परिवार का कोई सदस्य बीमार पड़ जाता, तो वह उनकी सभी जरूरतों का ध्यान रखती और रातों-रात उनकी देखभाल करती। वह दूसरों के दर्द को समझती थी। वह काम करने की इतनी आदी थी कि कभी खाली नहीं बैठती थी। वह खाना बनाती, सिलाई करती, घर सजाती और मेहमानों की सेवा करती। चूंकि हमारा सामाजिक जीवन बहुत सक्रिय नहीं था, इसलिए मैं अपना अधिकांश खाली समय पढ़ने और लिखने में बिताता था।

बेट्स का तबादला हो गया और उनकी जगह जे.एफ. सेल को कलेक्टर नियुक्त किया गया। सेल भारी-भरकम व्यक्ति थे और उनके हस्ताक्षर किसी कुर्सी के स्प्रिंग की तरह मुड़े हुए होते थे। जो व्यक्ति इस तरह से टेढ़े-मेढ़े हस्ताक्षर करता है, वह निर्णय लेने वाला नहीं हो सकता। सेल में यही खामी थी और इसी वजह से कानपुर में एक बड़ा दंगा भड़क उठा, जिसकी जिम्मेदारी उन्हें ही लेनी पड़ी।

सर्दी का मौसम आ गया था; अधिकारी इस मौसम में अपने-अपने क्षेत्रों का दौरा करते थे। सेल मुझे अपने साथ ले गया। हम दोनों हर दिन दस मील का सफर तय करते और रात तंबुओं में बिताते। वे तंबू आम के बागों में लगाए जाते थे। सेल की पत्नी और बहन भी उसके साथ दौरे पर थीं।

(पृष्ठ 115)

सेल रात के खाने के लिए काला सूट पहनता था। मैं भी उनके साथ खाना खाता था। हम सुबह घोड़ों पर सवार होते थे। सेल चिड़ियों का शिकार करता था जबकि मैं पटवारियों से पूछताछ करता था। सेल का निशाना खराब था; उसने कई बार गोली चलाई लेकिन केवल दो चिड़ियों को ही मार सका।

मैंने एक कनुंगो (गैर-धार्मिक व्यक्ति) को अपने साथ लिया, ग्यारह मील घोड़े पर सवार होकर रूड़की पहुँच गया। कनुंगो ने अगली सुबह छुट्टी माँगी, उसने कहा कि उसे पेचिश हो गई है।

रुड़की एक बेहद खूबसूरत शहर है। यह गंगा नदी के किनारे बसा है और यहाँ एक इंजीनियरिंग कॉलेज भी है। इसके पीछे शिवालिक पर्वतमाला दिखाई देती है। वहीं मेरी मुलाकात सर विलियम स्टैम्प से हुई। वे एक प्रसिद्ध इंजीनियर थे जिन्होंने उत्तर प्रदेश

में ट्यूबवेल के उपयोग की परंपरा स्थापित की थी। उन्हें घुड़सवारी का बहुत शौक था। वे अपनी कार में एक ट्रेलर जोड़ते थे, जिसमें उनका घोड़ा रहता था। वे कार को सड़क के किनारे रोकते, घोड़े को बाहर निकालते और गांवों में जाकर काम का जायजा लेते थे।

मुझे घुड़सवारी भी बहुत पसंद थी। मेरे पास एक तेज़ दौड़ने वाली घोड़ी थी। उसका रंग काला-भूरा था और माथे पर एक सफेद निशान था। जब वह सरपट दौड़ती थी, तो अपनी गर्दन झुकाकर अपने ताकतवर पैरों से ज़ोरदार लात मारती थी, जिससे बेचारे सवार गिर जाते थे। मुझे उसकी इस आदत का पता था, इसलिए जब भी वह अपना सिर झुकाती, मैं लगाम कस देती थी।

एक बार मैं देवबंद पुलिस स्टेशन का निरीक्षण करने गया था। थानेदार ने रेलवे स्टेशन पर मुझे बुलाने के लिए अपनी घोड़ी भेजी। जैसे ही मैं उस पर बैठा, घोड़ी तेज़ी से दौड़ने लगी और देखते ही देखते वह मेरे नियंत्रण से बाहर हो गई। सड़क के किनारे लगे पेड़ों की डालियाँ नीचे झुकी हुई थीं। मैंने अपना सिर आगे बढ़ाया।

121 जैसा मुद्रित है। यहाँ संभवतः नैतिक चरित्र का अर्थ है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। मैंने अपने पैर घोड़ी के शरीर से सटा दिए। घोड़ी सरपट दौड़ती रही और अंत में सीधे पुलिस स्टेशन के सामने रुक गई। इस अनुभव के बाद, मैंने फैसला किया कि मैं कभी भी थानेदार के घोड़े की सवारी नहीं करूँगा। थानेदार आमतौर पर घोड़ों को केवल दिखावे के लिए रखते थे, और क्योंकि वे हमेशा बंधे रहते थे, इसलिए उन्हें खुला छोड़ने पर सवारी करना खतरनाक हो जाता था।

फिर मुझे द्वितीय श्रेणी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। मैं संयुक्त मजिस्ट्रेट काशीनाथ रघुनाथ दामले के साथ सहारनपुर के पहाड़ी क्षेत्र के दौरे पर गया। दामले बहुत ही मिलनसार व्यक्ति थे और मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। दौरे के दौरान हम साथ में भोजन करते थे। दामले मराठा थे और उनका खाना नारियल से पकाया जाता था।

एक दिन हम दोनों बेहट जा रहे थे और रास्ते में एक सूखा मैदान मिला। खुला मैदान देखकर दामले ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया और मैंने भी अपनी घोड़ी को तेज़ दौड़ाया; मेरी घोड़ी आगे निकल गई जबकि दामले पीछे रह गए। वे घोड़े से गिर गए

और अपने शरीर से धूल झाड़ रहे थे।

(पृष्ठ 116)
हमने अपना बंगला बदल लिया और एक बड़े घर में रहने लगे। घर का आधा हिस्सा हमारे पास था जबकि उप कलेक्टर परदुमन सिंह के पास पीछे वाला आधा हिस्सा था। हमारे घर में एक बच्ची का जन्म हुआ; वह बहुत कमजोर थी और अक्सर रात में जाग जाती थी। एक बार हम बरामदे में सो रहे थे, तभी बच्ची के रोने से हम जाग गए।122 हमने देखा कि परदुमन सिंह के घर के सभी दरवाजे खुले थे और उनके आदमी बरामदे में गहरी नींद में सो रहे थे। इकबाल ने चुपके से मुझे जगाया। उसने टॉर्च जलाई, जबकि मैंने रिवाल्वर में गोलियां भरकर झाड़ियों में दो गोलियां चलाईं। जब हम सुबह उठे तो देखा कि परदुमन सिंह के चार-पांच संदूक झाड़ियों में खुले पड़े थे और उनका सामान बिखरा हुआ था। हमें पता चला कि चोर गोलीबारी से डर गए थे और इसलिए वे कीमती सामान छोड़कर भाग गए। परदुमन सिंह मुझे धन्यवाद देने लगे। हमने उनसे कहा कि वे उस कमजोर बच्ची को धन्यवाद दें जिसने हमें सही समय पर जगाया था। मैं 1935 में नुक्कड़ तहसील का एस.डी.ओ. बना। मैंने उस तहसील में भी ग्राम सुधार के लिए काम किया। अक्टूबर 1936 में मेरा तबादला फैजाबाद हो गया और हमने सहारनपुर, उसके बागों और लोगों को अलविदा कहा।

122 वह अपनी बेटी को संदर्भित करने के लिए 'लड़की' लिखता है, जबकि 'बेटी' या 'धी' का सीधा अनुवाद बेटी होगा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 15

फैजाबाद
ग्राम सुधार का अनुभव
(1936-1938)

(पृष्ठ 117)
नवाब शुजा उद-दौला के शासनकाल में फैजाबाद अवध की राजधानी थी। अब यह एक उपेक्षित शहर है। अवध के जिले पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिलों की तुलना में हीन माने जाते थे और यदि किसी अधिकारी का तबादला पश्चिम से पूर्व में होता था, तो वह अधिकारियों से तबादला रद्द करने का अनुरोध करता था। तालुकदारी व्यवस्था के कारण गांवों में अत्यधिक गरीबी थी। एक तालुकदार सौ गांवों का स्वामी होता था और गांवों के असली मजदूर उनके किरायेदार हुआ करते थे। उनसे भू-राजस्व वसूलने के लिए तालुकदारों ने जिलादार नियुक्त कर रखे थे, जबकि वे स्वयं फैजाबाद और लखनऊ में आलीशान बंगलों में आराम से रहते थे।
अक्टूबर 1936 में हमारा तबादला फैजाबाद हो गया। हमने फैजाबाद छावनी में एक मकान किराए पर लिया। यह मकान हमें 40 रुपये प्रति माह पर मिला। इसमें चार छोटे और दो बड़े कमरे थे और छत टाइलों की बनी थी। गुप्तार घाट, जहाँ श्री राम चंद्र जी का निधन हुआ था, पास ही था। गुप्तार घाट सरयू नदी के किनारे स्थित है और शाम को यहाँ सूर्यास्त देखना अद्भुत होता है। आसमान लाल हो जाता है और डूबते सूरज का प्रतिबिंब नदी के पानी में बेहद खूबसूरत लगता है। इन्हीं दृश्यों के कारण ‘शाम-ए-अवध’ 123 प्रसिद्ध है। मैं अक्सर सूर्यास्त के समय गुप्तार घाट पर टहलने जाता था, नदी के किनारे बैठता था और इस दृश्य का आनंद लेता था।

(पृष्ठ 118)
गुप्तार घाट में लाल मुंह वाले बंदरों की भरमार थी। कई पर्यटक उन्हें हनुमान जी की सेना मानते थे और उन्हें भुने हुए चने चढ़ाते थे। वे बंदर इतने निडर थे कि अगर कोई महिला सिर पर थैला लेकर उनके पास से गुजरती, तो वे उस पर हमला कर देते और थैला खोलकर सारा खाना लूट लेते।
वे बंदर घरों में भी घुस आते थे। इसीलिए हमारे घरों में फूल या सब्जियां उगाना नामुमकिन था। एक बार मैंने इमली के पेड़ पर बैठे एक बंदर को गोली मार दी; वह नीचे गिर गया। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं कोई घायल व्यक्ति हूँ। मैंने भी उसे देखा और मुझे लगा जैसे मैंने किसी इंसान को मार डाला हो। इसके बाद मैं फिर कभी किसी बंदर को नहीं मार सका। मादा बंदर एक-दूसरे के सिर खुजलाकर जूँ निकालती थीं। अगर आस-पास कोई खतरा होता, तो वे अपने बच्चों को लेकर पेड़ों पर चढ़

जाती थीं। एक बूढ़ा बंदर पूरे बंदरों के समूह का मुखिया था; वह हर किसी पर हमला करने के लिए तैयार रहता था।
श्री निकोलसन फैजाबाद के उपायुक्त थे। वे एक अनुभवी अधिकारी थे, इसलिए मेरे अलावा चार अन्य आई.सी.एस. अधिकारी उनके अधीन प्रशिक्षण ले रहे थे। उनमें से एक, आदित नाथ झा, मेरे बंगले में रहते थे। आदित, सर गंगा नाथ झा के पुत्र थे और उनके बड़े भाई अमर नाथ झा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति थे। वे काफी मोटे थे, इसलिए हम उन्हें 'गणेश' कहकर बुलाते थे। वे हंसमुख स्वभाव के थे और उन्हें अंग्रेजी में बात करना बहुत पसंद था।

123 शाम-ए-अवध, शाब्दिक अर्थ: अवध की शामें। इसे एक मुहावरे के रूप में उल्लेख किया गया है क्योंकि इन शामों को अपने आप में एक घटना माना जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। वह अंग्रेजों की तरह हँसता भी था। बाद में, उसने स्वयं को एक कुशल अधिकारी साबित किया और जनता की बहुत अच्छी सेवा की।
उस समय मेरी मासिक आय 600 रुपये थी; मेरे पास चार नौकर थे, एक माली जो 10 रुपये प्रति माह पर काम करता था, एक रसोइया जो 15 रुपये प्रति माह पर काम करता था, एक घोड़ों की देखभाल करने वाला जो 15 रुपये प्रति माह पर काम करता था और एक ड्राइवर जो 20 रुपये प्रति माह पर काम करता था। मैं और झा मिलकर सफाईकर्मी को 5 रुपये देते थे। मेरे पास एक घोड़ी और एक मोटरगाड़ी थी। वो किफायती समय था, और उस समय के 600 रुपये आज के 6000 रुपये के बराबर होंगे।
फैजाबाद में नवाब शुजा उद-दौला और उनकी बेगम का मकबरा स्थित है। शुजा उद-दौला के मकबरे के चारों ओर एक गुलाब का बगीचा है, इसलिए इसे 'गुलाबबाड़ी' के नाम से जाना जाता है। इसका प्रवेश मार्ग बहुत सुंदर है।

(पृष्ठ 119)
इसके दरवाजे पर दो मछलियों की नक्काशी है, किनारों पर झरोखेनुमा खिड़कियां और अलंकृत शेल्फ हैं। मकबरे का गुंबद प्याज के आकार का है और चारों ओर मीनारें

बनी हुई हैं। दूर से देखने पर यह मकबरा बेहद खूबसूरत लगता है।
गुलाबबाड़ी में सरकारी समारोहों का आयोजन होता था। एक बार कमिश्नर का दरबार वहीं लगा था। श्री ए.जी. शेरिफ कमिश्नर थे और मैं उनके साथ चार घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली बग्गी में बैठा था। हमारी बग्गी बाज़ार पार करके गुलाबबाड़ी पहुँची। रास्ते में कई लोगों ने हमें अभिवादन किया, लेकिन शेरिफ ने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। मैंने यह देखा और उनके अभिवादनों का जवाब देना शुरू कर दिया। जब शेरिफ ने मेरा जवाब देखा, तो उन्होंने मुझे डाँटा और कहा कि जब दो अधिकारी, एक वरिष्ठ और दूसरा कनिष्ठ, किसी सरकारी समारोह में साथ जाते हैं, तो केवल वरिष्ठ अधिकारी ही अभिवादनों का जवाब देता है। शेरिफ ने अपना भाषण कागज़ पर टाइप किया था, जिसे उन्होंने अपनी कमीज़ की कफ़ में रखा था। वह कागज़ रास्ते में कहीं गिर गया। जब उन्हें भाषण देने के लिए बुलाया गया, तो वे उसे अपने पास ढूँढ़ते रहे।
अयोध्या फैजाबाद से तीन से चार मील दूर है और यह तीर्थस्थल बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। जन्माष्टमी के पर्व पर यहां एक भव्य उत्सव का आयोजन किया जाता है। अयोध्या के राजा ने अपने महल में बाघ पाल रखे थे, जिन्हें देखने के लिए लोग आते थे। वे दशहरा पर अपने अधिकारियों के लिए एक भव्य भोज का आयोजन करते थे। उनके महल के कमरों में बड़े-बड़े दर्पण लगे थे और छत से झूमर लटक रहे थे। भारतीय अधिकारी काले अचकन पहनते थे, जबकि अंग्रेज वर्दी पहनते थे। एक तरफ अंग्रेज महिलाओं का समूह था, जबकि दूसरी तरफ भारतीय अधिकारियों की पत्नियों का समूह था; दोनों समूह आपस में बातचीत कर रहे थे। राजा की रानियां और दासियां पर्दों के पीछे से मेहमानों को देख रही थीं, लेकिन मेहमानों को उन्हें देखने की अनुमति नहीं थी। दो घंटे तक शराब परोसी जाती रही और पूरा कमरा सिगरेट के धुएं और मेहमानों के शोर से भर गया। इसके बाद रात 10 बजे भोजन का आयोजन किया गया। पुलाव, कोफ्ते, कोरमा, भुना हुआ चिकन और फ्रूट जेली से मेज सजी हुई थी। बाहर संगीतकारों का एक बैंड संगीत बजा रहा था। बातचीत का अधिकांश हिस्सा शिकार, गोल्फ, फिल्मों और नौकरों के इर्द-गिर्द घूमता रहा।
खाना खत्म होने के बाद अख्तरी बेगम ने अपना गीत गाया। अख्तरी फैजाबाद की निवासी थीं; वह काले कपड़े पहनकर इलाके में मुहर्रम के जुलूस का नेतृत्व करती थीं। फिर महिलाएं रानी से मिलने गईं। अंग्रेज महिलाओं ने रानी की साड़ी और गहनों की

सराहना की।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 120)

रानी ने सभी महिला मेहमानों को रेशमी दुपट्टे भेंट किए, जिन्होंने उनके उपहार के लिए आभार व्यक्त किया।

तालुकदारों द्वारा आयोजित ऐसे भोजों से फैजाबाद के नीरस जीवन में रौनक आ जाती थी। कई बार हम अपने घरों से खाना लाते और चांदनी रातों में सरयू नदी के किनारे मिलकर खाते थे। कोई मांस लाता, कोई उड़द दाल, भल्ले, पकौड़े लाता।

इसके अलावा, हमें सर्दियों में टील बत्तखों का शिकार करने का मौका मिलता था। फैजाबाद में बहुत सारी झीलें थीं। जब हम घूमने जाते थे, तो सूर्योदय से पहले नावों में बैठकर झीलों में शिकार करते थे। टील बत्तखें अपने पंख फड़फड़ाकर उड़ती थीं, और हम उड़ते ही उन पर निशाना साधते थे। छावनी के सैनिक भी इन शिकारों में हमारे साथ होते थे। मैंने देखा कि उनमें से बहुत कम लोगों का निशाना अच्छा था।

उन झीलों, नदियों और छोटी धाराओं को देखकर शैवाल इकट्ठा करने में मेरी पुरानी रुचि फिर से जागृत हो गई। जब दूसरे लोग टील पक्षियों का शिकार करते थे, मैं बोतलों में शैवाल इकट्ठा करता था। इस रुचि को पूरा करने के लिए मैंने फैजाबाद की सभी झीलों और नदियों की छानबीन की और शैवाल की कई नई प्रजातियाँ पाईं। मैं रविवार की सुबह अपने बंगले के बरामदे में बैठकर सूक्ष्मदर्शी से शैवाल का अध्ययन करता था। मैं उनमें इतना मग्न हो जाता था कि समय का मुझे कोई आभास नहीं होता था। दोपहर 1 बजे, इकबाल मुझे बताता कि मेरा खाना ठंडा हो रहा है, और मैं उठ जाता। भोजन के बाद मैं फिर से उनका निरीक्षण करता और रात में उनकी तस्वीरें लेता। सोते समय मुझे शैवाल के सपने भी आते थे। इसी कार्य के आधार पर मैंने बाद में विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

शैवाल के अलावा, मुझे ग्राम सुधार में भी रुचि थी। मैंने उस जिले में पंचायत भवन योजना लागू की। मैंने लोगों को अपने गांवों में पंचायत कार्यालय बनवाने के लिए प्रेरित किया। मैंने उन कार्यालयों में रेडियो, किताबें, विकसित बीज और कृषि उपकरण उपलब्ध करवाए और गांवों में उनके उपयोग को लोकप्रिय बनाया। विकास मंत्री डॉ.

कैलाश नाथ काटजू ने इस कार्य में मेरा प्रोत्साहन किया।
एक गाँव में पंचायत कार्यालय बनाने के लिए ज़मीन की ज़रूरत थी। सड़क के किनारे एक बूढ़े और बीमार आदमी के पास एक बीघा ज़मीन थी। मेरी उनसे मुलाकात हुई और उन्होंने खुशी-खुशी अपनी ज़मीन दान कर दी। उस समय स्टीफेंसन उपायुक्त थे। वे छुट्टी पर थे, इसलिए मैं उनके काम संभाल रहा था।

(पृष्ठ 121)
दोपहर में जब प्रश्नकाल चल रहा था, तब मेरे सामने एक आवेदन आया। उसमें लिखा था, "रंधावा साहब हमारे गाँव आए थे और उन्होंने ज़बरदस्ती हमारे पिता का अंगूठे का निशान कागज़ पर ले लिया।" मैंने उस व्यक्ति को अपने विश्राम कक्ष में बुलाया और उससे पूछा कि उसने यह झूठी शिकायत क्यों लिखी। मैंने उसके दोनों कान ज़ोर से खींचे, जिससे वह चौंक गया। उसने स्वीकार किया कि किसी व्यक्ति ने उसे गुमराह किया था। मैंने सहायक से उसका विवरण दोबारा लिखने को कहा। उसने पूरी घटना बताई और अपनी गलती स्वीकार की।
तालुकदारी प्रथा के कारण फैजाबाद के ग्रामीणों में ईमानदारी का अभाव था। जब हम दौरे पर गए, तो हमने देखा कि कुछ पुरुष आलस्य से इधर-उधर घूमते रहते थे, और जब वे हमसे लगभग 100 गज की दूरी पर आते, तो अपनी परेशानियों के बारे में रोने लगते थे। उनकी ज़मीनें भी अच्छी हालत में नहीं थीं क्योंकि वे अपनी ज़मीन के मालिक नहीं थे। गांवों में निरक्षरता बहुत अधिक थी। मुझे लगा कि यह ऐसा क्षेत्र है जहां भूमि सुधार योजनाओं से समृद्धि आ सकती है। तालुकदार भी अशिक्षित थे, और वे कला या साहित्य को भी संरक्षण नहीं देते थे। उनका पैसा अधिकारियों की मेहमाननवाज़ी में खर्च हो जाता था, जबकि बाकी पैसा लखनऊ की वेश्याओं के नृत्य और नृत्य पर खर्च हो जाता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
फैजाबाद के गांवों में दूध की कमी थी। जब हम दौरे पर जाते थे, तो हमारा चपरासी दूध लाने के लिए पास के गांवों में जाता था। बड़ी मुश्किल से उसे एक कलश में आधा लीटर दूध भी मिल पाता था। घर कच्चे थे और कहीं भी खुशी का कोई नामोनिशान

नहीं था। हर तरफ मातम छाया हुआ था।
जब गांवों में अदालती मामले शुरू होते हैं, तो सदियों पुरानी दुश्मनी की नींव पड़ जाती है। जब गांवों से जुड़े 107 आपराधिक प्रक्रिया संहिता के मामले मेरे सामने आते, तो मैं मामले को इस तरह सुलझाने की कोशिश करता कि गांव के लोग फिर से सद्भाव में लौट सकें। अन्य मामलों में भी, जहां मुझे समझौते की गुंजाइश दिखती, मैं संबंधित पक्षों से शांत मन से विचार करने और आपसी सहमति से समाधान निकालने का आग्रह करता। मुझसे लगभग बीस साल पहले फैजाबाद में एक अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर तैनात थे। डिप्टी कमिश्नरों को आमतौर पर अपीलें मिलती हैं। वह डिप्टी कमिश्नर गर्मी के मौसम में सभी याचिकाकर्ताओं को अपने बंगले पर बुलाते और उन्हें छत पर जाने को कहते। सुबह 11 बजे चपरासी उन्हें बुलाकर आपसी सहमति बना चुके लोगों को नीचे आने को कहता। इस तरह दोपहर 1 बजे तक कई विवादित पक्ष आपस में समझौता कर लेते, खर्च बचता और उनके बीच सद्भाव बढ़ जाता।
आई.सी.एस. सप्ताह का आयोजन दिसंबर में क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान लखनऊ में किया जाएगा।

(पृष्ठ 122)
सभी ज़िलों के आई.सी.एस. अधिकारी इकट्ठा होते थे। छतर मंज़िल में एक भव्य भोज का आयोजन होता था, जिसमें सभी अधिकारी और उनकी पत्नियाँ शामिल होती थीं। हम दोनों ने दिसंबर 1937 में इस आयोजन में भाग लिया था। सभी ने बड़े उत्साह से व्हिस्की पी और खूब हंगामा किया। उन्होंने एक-दूसरे पर कुर्सियाँ और तकिए फेंके। विश्वनाथन ने बहुत ज़्यादा पी ली थी, वह अंग्रेजों के बीच खड़ा होकर "महात्मा गांधी की जय!" के नारे लगाने लगा। 124 अंग्रेज युवक भी इस खेल में शामिल हुए और उन्होंने भी ये नारे लगाने शुरू कर दिए। बूढ़े और चिड़चिड़े मूडी, क्रिस्टी और डार्लिंग उन्हें घूरते रहे।
दावतों में साथ समय बिताने के अलावा, इस सप्ताह ज़िलों की समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान भी होता था। कनिष्ठ अधिकारियों को वरिष्ठ अधिकारियों से मिलने का अवसर मिलता था और वे उनके अनुभव से सीखते थे। इससे अधिकारियों के बीच भाईचारा और मित्रता का भाव पनपता था।
मेरी मुलाकात डॉ. बीरबल साहनी और उनकी पत्नी से लखनऊ में हुई। बीरबल

जीवाश्म-वनस्पति विज्ञान के एक प्रख्यात वैज्ञानिक थे; लखनऊ में उनके नाम पर एक शोध संस्थान स्थापित किया गया है। उनकी पत्नी उस संस्थान की निदेशक हैं।
अब मैं टांडा के प्रसिद्ध दंगे के बारे में लिखूंगा। टांडा एक औद्योगिक शहर है जहाँ बड़ी संख्या में बुनकर मुस्लिम (जुलाहा) रहते हैं। मुझे टांडा तहसील का सहायक अधिकारी नियुक्त किया गया था। फैजाबाद से टांडा तक का रास्ता कच्चा था। 21 अगस्त 1938 को मैं टांडा से दो मील दूर एक घर में ठहरा हुआ था। शाम करीब 7 बजे मुझे खबर मिली कि मस्जिद के पास चौराहे पर मुसलमानों ने 15-20 हिंदुओं को घेर लिया है। वे हिंदू भक्ति गीत गाते हुए मस्जिद के पास से गुजर रहे थे तभी मुसलमानों ने उन पर हमला कर दिया। वे बेचारे लोग डर के मारे एक दुकान में छिप गए। खबर सुनते ही मैं अपने राजपूत अंगरक्षक के साथ घटनास्थल के लिए रवाना हो गया। मैंने वहाँ करीब 3000 मुसलमानों की भीड़ देखी।

124 की जय: महात्मा गांधी की विजय की जय हो।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। मैंने सोचा कि हम उन हिंदुओं को कैसे बचा सकते हैं। मैंने एक तरफ कम लोगों को देखा, इसलिए मैंने हिंदुओं को उस तरफ की एक गली से निकालने की कोशिश की। उसी समय, टांडा के थानेदार, जो एक शिया मुस्लिम थे, अपने दो पुलिसकर्मियों के साथ मौके पर आ गए। जब वे हिंदू दुकान से निकले, तो भीड़ ने उन पर और हम पर ईंट-पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। उनमें से एक ने मुझे लाठी से मारा, जिससे मेरी बांह में चोट आई। एक ईंट तहसीलदार के पेट में लगी और वह वहीं गिर पड़े। मेरे साथ सरीन नाम का एक युवा डिप्टी कलेक्टर था, जो मेरे अधीन प्रशिक्षण ले रहा था।

(पृष्ठ 123)
उन्हें कंधे पर लाठी से भी चोट लगी। ऐसा लग रहा था मानो वह खतरनाक भीड़ हम सबको मार डालेगी। थानेदार ने स्थिति का जायजा लिया और कहा, "गोलियों के बिना इसे काबू नहीं किया जा सकता।" एक सिपाही ने ट्रिगर दबाया, गोली एक दंगाई की जांघ में लगी और वह गिर पड़ा। लेकिन उसकी मौत नहीं हुई। गोली की आवाज सुनते

ही पूरी भीड़ भागने लगी। इलाके में लाठियों, चाकुओं और पेट्रोल से भरे डिब्बों का ढेर लगा हुआ था। इससे साबित हो गया कि दंगाई पूरी तैयारी के साथ आए थे।
कई दंगाई मस्जिद के अंदर घुस गए। मैंने मुस्लिम थानेदार से अपने जूते उतारकर साथी मुस्लिम पुलिसकर्मियों के साथ मस्जिद के अंदर जाकर दंगाइयों को गिरफ्तार करने को कहा। इस तरह हमने 300-400 दंगाइयों को पकड़ा और उन्हें जेल में डाल दिया।
उस समय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच काफी तनाव था। मुस्लिम लीग के नेताओं ने हम पर मुसलमानों के खिलाफ अत्याचार करने का आरोप लगाना शुरू कर दिया। अगले दिन फैजाबाद से डिप्टी कमिश्नर स्टीफेंसन भी आए। मैंने उन्हें पूरी घटना सुनाई और वे तुरंत समझ गए कि जो कुछ भी हुआ वह उचित था। उसके बाद कमिश्नर आए और उन्होंने जांच की। वे भी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गोलीबारी जायज थी और कोई दूसरा विकल्प नहीं था।
मुस्लिम लीग के नेता इन जांचों से संतुष्ट नहीं थे और उन्होंने इस घटना की न्यायिक जांच कराने की मांग शुरू कर दी। कांग्रेस सरकार ने यह मांग मान ली और मुख्य न्यायालय ने जांच के लिए न्यायाधीश यॉर्क को नियुक्त किया। श्री एच.पी. गुप्ता ने सरकारी वकील के रूप में हमारा प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने हमें और पुलिस अधिकारियों को सलाह दी कि हम बिना किसी अतिशयोक्ति के, केवल सच ही बयान दें। जांच तीन सप्ताह तक चली। जब मुझे अपना बयान देना था, तब मुस्लिम लीग ने लखनऊ से अपने सबसे सक्षम वकीलों को बुलाया था। मेरे बयान देने के बाद, उन्होंने जांच छोड़ दी क्योंकि सच में बहुत ताकत होती है।
पीरपुर के तालुकदार, जो मुस्लिम लीग के एक बड़े नेता थे, ने अधिकारियों के खिलाफ निराधार आरोपों वाली एक झूठी रिपोर्ट प्रकाशित की। यॉर्क की जांच ने मुस्लिम लीग के झूठ का पर्दाफाश किया। टांडा में की गई कार्रवाई का नतीजा यह हुआ कि उत्तर प्रदेश में दंगे रुक गए। इस घटना ने मुझे सिखाया कि चाहे कितना भी खतरा क्यों न हो, यदि आप अपने साहस में दृढ़ रहें और आत्मविश्वास बनाए रखें, तो बड़ी-बड़ी भीड़ भी आपसे डर सकती है।

(पृष्ठ 124)
आम तौर पर, गुंडे डरपोक लोग होते हैं और वे कमजोर लोगों को डराते हैं। अगर

आपमें दृढ़ इच्छाशक्ति है, तो आप इन अपराधियों को काबू में कर सकते हैं। अगर आप कमजोरी दिखाते हैं, तो वे आपका विरोध नहीं करेंगे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। आपको नष्ट कर रहा है। वारिस शाह ने सही कहा है, “दंडा पीर है विगदेयां-तिगदेयां दा।”125 उत्तर प्रदेश के हिंदुओं ने मेरी बहुत सराहना की। मैंने अक्सर देखा कि जब भी मैं किसी स्टेशन के प्लेटफार्म पर खड़ा होता, तो हिंदू महिलाएं मेरे पैर छूती थीं क्योंकि मैंने कई हिंदुओं की जान बचाई थी और टांडा शहर को जलकर राख होने से बचाया था।

125 छड़ी गलत काम करने वालों को सबक सिखाती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 16

अल्मोरा
कुमाऊं पर्वतों की सुंदरता
(1939)

(पृष्ठ 125)
मई 1939 में मेरा तबादला अल्मोड़ा में हो गया। यह एक पहाड़ी इलाका था, और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पंडित गोविंद वल्लभ पंत, जो कुमाऊं के निवासी थे, चाहते थे कि ग्राम सुधार में रुचि रखने वाले किसी अधिकारी को इस क्षेत्र में नियुक्त किया जाए। इसीलिए मेरा तबादला उस जिले में हुआ। मैंने सुना था कि नंदा देवी और त्रिशूल उस क्षेत्र में हिमालय की दो बर्फ से ढकी ऊंची चोटियाँ हैं, और उदय शंकर ने अल्मोड़ा में एक सांस्कृतिक केंद्र स्थापित किया था।126
इन सपनों में खोए हुए हम अपनी शेवरलेट कार में अल्मोड़ा के लिए निकल पड़े। कार के टायर पुराने थे और बरेली पहुँचते-पहुँचते चार जगह पंचर हो गए। एक नुकीले

पत्थर ने एक टायर को पूरी तरह से चीर दिया और बरेली से तीन मील पहले ही हमारी कार रुक गई। मैं एक तांगे पर बैठा बरेली गया और एक नया टायर और एक ट्यूब खरीदा। फिर जब हम दोबारा चलने लगे, तो एक बकरी कार के नीचे आ गई और मर गई। बरेली के पास पहुँचते ही पंखे की बेल्ट टूट गई। गर्मी का मौसम था और हम बुरी हालत में बरेली पहुँचे। फिर हमने तराई के जंगलों को पार किया और हल्द्वानी पहुँचे। सड़क के दोनों ओर छाते जैसे पाकड़ के पेड़ उगे हुए थे, उनकी चमकीली तांबे के रंग की पत्तियाँ डूबते सूरज की रोशनी में जगमगा रही थीं। हल्द्वानी के बाद भाबर का सूखा इलाका दिखाई देने लगा।

(पृष्ठ 126)
वहाँ हमें केवल लैंटाना की झाड़ियाँ ही दिखाई दीं, और कुछ नहीं। लैंटाना को पहले बगीचों की शोभा बढ़ाने के लिए लगाया जाता था, लेकिन यह इतनी तेज़ी से फैलने लगी कि इसे नियंत्रित करना मुश्किल हो गया। रात में वहाँ सड़क के किनारे शेर भी घूमते हुए देखे जा सकते हैं। हम हल्द्वानी से काठगोदाम पहुँचे, जहाँ हल्दू और सागौन की लकड़ियों का बड़ा भंडार पड़ा था; इन्हें ट्रेनों में लादकर खेतों में भेजा जाता है। हमारी यात्रा काठगोदाम से शुरू हुई। एक घंटे बाद हम नैनीताल पहुँच गए। वहाँ एक बड़ी झील है, जिसके किनारे विलो के पेड़ लगे हैं। हम नैनीताल में एक दिन रुके और प्रसिद्ध कलाकार मैडम सैस ब्रूनर से मिले। सैस ब्रूनर और उनकी बेटी एलिजाबेथ हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट से थीं। वे पहले टैगोर के पास शांति निकेतन में रहीं और फिर नैनीताल आ गईं। मैंने सैस ब्रूनर की प्रसिद्ध पेंटिंग 'महात्मा बुद्ध की चेतना' खरीदी थी। हम नैनीताल से रानीखेत पहुँचे। रानीखेत ब्रिटिश सेना का छावनी क्षेत्र था और वहाँ से नंदा देवी पर्वत दिखाई देता था। आकाश से संवाद करती हुई हिमालय की चोटियाँ मन को असीम शांति प्रदान करती हैं। उनकी पवित्रता हमारे पापों को धो देती है। हमने कोसी नदी पार की।

उदय शंकर 1920 और 1930 के दशक में भारत, यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के एक प्रसिद्ध नर्तक और कोरियोग्राफर थे। उन्होंने अपने प्रदर्शनों में यूरोपीय नृत्य शैलियों, भारतीय शास्त्रीय नृत्य, आदिवासी और लोक नृत्य शैलियों और नाट्य तकनीकों का मिश्रण किया और वे प्रसिद्ध बैले डांसर अन्ना पावलोवा के साथ राधा-

कृष्ण बैले के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने 1938 में अल्मोड़ा के पास 'उदय शंकर इंडिया कल्चरल सेंटर' की स्थापना की, जो एक शिक्षण संस्थान और भारत के विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों के सम्मेलन स्थल के रूप में कार्य करता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। रानीखेत से प्रस्थान करने के बाद, हम अल्मोड़ा पहुँचे। अल्मोड़ा शहर की स्थापना राजा कल्याण सिंह ने 1560 में की थी। शिमला, नैनीताल, डलहौजी आदि शहर अंग्रेजों द्वारा स्थापित किए गए हैं, और केवल अल्मोड़ा ही एक अनूठा पहाड़ी क्षेत्र है।

हमने एक मकान किराए पर लिया। यह मकान डी.सी. के बंगले के पास था और डॉ. बीरबल साहनी का था। हमें बताया गया था कि स्वामी विवेकानंद यहाँ रह चुके हैं। इसके कमरे बहुत ठंडे थे और सामने पेड़ों का एक झुंड था। मुझे नहीं पता कि विवेकानंद वहाँ कैसे सहज महसूस करते थे। हम उस मकान में बिल्कुल भी खुश नहीं थे। मुझ जैसे व्यक्ति को ऐसे मकान में कभी सुख नहीं मिल सकता, जो हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों में स्थित होने के बावजूद चोटियों का कोई दृश्य न दिखाए। हमने उस मकान में दो सप्ताह बिताए और एक नए मकान की तलाश शुरू कर दी। आखिरकार, हम समरलीज़ नामक एक बंगले में चले गए। इसके कमरे छोटे और सुंदर थे। वहाँ से पहाड़ साफ़ दिखाई देते थे। अगर कोई व्यक्ति वहाँ अकेले बैठता, तो वह उस दृश्य से मंत्रमुग्ध हो जाता।

अल्मोड़ा का पानी खराब था। उसमें अभ्रक था, जिससे पेट खराब हो जाता है। हमें पेचिश हो गई। इस बीमारी को 'पहाड़ी दस्त' कहते हैं।

(पृष्ठ 127)

हमारी भूख खत्म हो गई और हम काफी कमजोर हो गए। तभी हमें समझ आया कि उस इलाके के लोगों के चेहरे इतने उदास क्यों थे। उनके चेहरे पीले पड़ गए थे, उनकी गर्दन की हड्डियां उभरी हुई थीं, चेहरे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने उन्हें निचोड़कर सुखा दिया हो।

धर्म वीर अल्मोड़ा के उपायुक्त थे। उनके पिता ज्वाला प्रसाद उत्तर प्रदेश के एक प्रसिद्ध अभियंता थे और उनके ससुर सर गंगा राम पंजाब के एक प्रसिद्ध अभियंता थे।

धर्म वीर की पत्नी दया टीबी से पीड़ित थीं। धर्म वीर एक रंगीन व्यक्तित्व के धनी थे, उनकी कई प्रेमिकाएँ थीं। वे हमेशा खुश रहते थे और उनके बंगले में लोग ताश खेलते रहते थे। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। धर्म वीर को पहाड़ों में घूमना बहुत पसंद था, उन्होंने पिंडारी हिमनदी दर्रा पार किया था और तिब्बत में कैलाश-मानसरोवर भी देखा था। धर्म वीर मेरे सच्चे मित्र बन गए, मैं उनकी मित्रता को कभी नहीं भूल सकता।

वहाँ अदालतों का कामकाज मैदानी इलाकों से अलग था। मैदानी इलाकों में कामकाज उर्दू में होता था, लेकिन वहाँ हिंदी में। मेरे सहायक की टूटी-फूटी हिंदी पढ़ना मुश्किल था। मैं उससे हिंदी पढ़कर सुनाने को कहता और उसके चेहरे पर नज़र रखता ताकि वह मुझे धोखा न दे सके। जब मुझे उस पर पूरा भरोसा हो जाता, तभी मैं कागज़ पर हस्ताक्षर करता।

अदालती मामले आम तौर पर जल चक्कियों और 127 नौद से संबंधित होते थे। एक नदी के लिए तीन या चार जल चक्कियां लगी होती थीं, और जब कोई व्यक्ति नई जल चक्की लगवाना चाहता था, तो पुरानी जल चक्की के मालिक उसे ऐसा करने से रोकते थे। अन्य मामले आईपीसी की धारा 498 से संबंधित थे, जब विवाहित महिलाएं कभी-कभी कम उम्र के प्रेमियों के साथ भाग जाती थीं। जब वे अदालत में अपना पक्ष रखती थीं, तो वे आमतौर पर कहती थीं कि उनके पति नपुंसक थे। 6 महीनों में मेरे सामने हत्या के केवल दो मामले आए। मुझे उनमें से एक आज भी याद है। बाचुली नाम की एक खूबसूरत महिला एक गांव में रहती थी। उसका पति मजदूरी के लिए भाबर गया हुआ था। पति की अनुपस्थिति में, गांव के दो युवक उसे परेशान करने लगे। एक दिन, जब वह सिर पर घास का गट्ठा लेकर गांव लौट रही थी, तो युवकों ने उसे घेर लिया और उसे छेड़ने लगे। उसकी विनती के बावजूद वे नहीं रुके और उन्होंने उसके साथ बलात्कार किया।

127 नौतोद: यहाँ, यह उन विवाहित महिलाओं को संदर्भित करता है जो कम उम्र के प्रेमियों के साथ भाग गई थीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। बाचुली रोते हुए बोली कि वह अपने ससुर को अपने साथ

हुए बलात्कार के बारे में बता देगी। जैसे ही उसने यह कहा, लड़कों में से एक ने उसका गला दबाकर उसकी हत्या कर दी। उन्होंने उसकी हत्या कर दी, उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उन्हें जमीन में गाड़ दिया। गांव के कुत्तों ने जमीन खोदकर शव को ढूंढ निकाला। इसके बाद दोनों हत्यारे पकड़े गए।

(पृष्ठ 128)

मैंने इस मामले को सत्र न्यायालय में भेजा, और उन दोनों अपराधियों को फांसी की सजा सुनाई गई।

सरकारी अदालतों से संतुष्ट न होने वाले या मुकदमेबाजी का खर्च वहन न कर पाने वाले लोग गोल देवता की शरण लेते थे। गोल देवता का मंदिर चिताई गांव में स्थित है। जीत राम नाम के एक व्यक्ति ने आन राम से 100 रुपये का ऋण लिया था। जब उसे ऋण लौटाना था, तो जीत राम ने इनकार कर दिया। कोई लिखित प्रमाण नहीं था और कोई अदालती मामला भी दायर नहीं किया जा सकता था। व्याकुल होकर आन राम गोल देवता के मंदिर गए, देवता को 1 रुपया और 25 पैसे चढ़ाए, मुट्ठी भर चावल लिए और पूरी घटना देवता को सुनाई। उन्होंने भगवान से न्याय की प्रार्थना की। एक महीने बाद, जीत राम की भैंस मर गई। अगले महीने, उनका इकलौता बेटा बीमार पड़ गया। जीत राम को लगा कि यह गोल देवता का दंड है। वे आन राम को साथ लेकर गोल देवता के मंदिर गए, 100 रुपये लौटाए और भगवान से क्षमा मांगी। पापी को केवल उसके पाप ही परेशान करते हैं, और यदि वह अपने पापों से मुक्त नहीं हो पाया है, तो देवी-देवताओं का भय ही उसे सामान्यतः धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। गोल देवता के मंदिर में आवेदन पत्रों का ढेर लगा हुआ था।

अल्मोड़ा जिले के गांवों में खासी राजपूत किसान हैं और कामगार वर्ग को 'शिल्पकार' कहा जाता है। राजपूत विवाह समारोहों में शिल्पकारों को पालकी में नहीं बैठने देते थे। बहुत आंदोलन के बाद उन्हें यह अधिकार मिला। गांवों के राजपूत ईमानदार और बहादुर थे, और वे अक्सर लाठियों से ही बाघों को मार डालते थे। एक दिन, 10 लोग एक बाघ का शव बांस के ढांचे से बांधकर मेरे बंगले पर लाए। उन्होंने मुझे बताया कि बाघ एक गुफा में छिपा हुआ था, इसलिए उन्होंने गंधक के धुएं से उसे परेशान किया। बाघ बाहर आया और उन्होंने उसे फावड़े और लाठियों से मार डाला। मैंने उन्हें सरकार की ओर से इनाम के तौर पर 20 रुपये दिए।

अल्मोड़ा शहर में ब्राह्मण और बनिया समुदाय के लोग रहते हैं। ब्राह्मणों में पंत, जोशी, पांडे और भाट उप-जातियाँ शामिल हैं। ये लोग 17वीं शताब्दी में महाराष्ट्र से यहाँ आए थे और राजाओं के यहाँ काम करके अपना जीवन यापन करते थे। उस समय तक वे शिक्षा के क्षेत्र में काफी उन्नत हो चुके थे। बनिया समुदाय शाह गोत्र का है और उनका रंग गोरा होता है। उनके पास अंग्रेजों के कई बंगले हैं। अंग्रेजों ने 19वीं शताब्दी में यहाँ चाय बागान लगाए थे, लेकिन वे सफल नहीं हुए। इन जातियों के अलावा, कई विदेशी, विशेषकर अमेरिकी, भी अल्मोड़ा में रहते थे। कालीमात पहाड़ी पर स्थित सभी घर उन्हीं के स्वामित्व में थे। मैंने कई बार अल्मोड़ा में भगवा वस्त्र पहने और नंगे पैर चलते हुए एक सफेद साधु को देखा है।

(पृष्ठ 129)
जब मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि वे डच थे और उनका नाम सौरानसन था। यह व्यक्ति सबसे पहले टैगोर के पास शांति निकेतन में आया और माली का काम करने लगा; कुछ समय बाद, वह साधु बन गया और अल्मोड़ा की एक गुफा में रहने लगा। वह शांतिप्रिय और अच्छे विचारों वाला व्यक्ति था, और बाद में मेरी उनसे दिल्ली और चंडीगढ़ में भी मुलाकात हुई। वह कभी किसी चीज की भीख नहीं मांगता था। अगर आप उसे खाना देते, तो वह खा लेता, लेकिन कभी मांगता नहीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
कालीमात में दो महिलाएं भी रहती थीं, श्रीमती पेनरोस और श्रीमती स्टेटरहाइम। वे भी यूरोप की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर शांति और सुकून भरी जिंदगी जीने के लिए यहां आई थीं।
इन दो विदेशियों ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। इनमें से एक मेजर अलेक्जेंडर थे, जबकि दूसरे प्रोफेसर निकोलसन थे। उन्होंने वैष्णव धर्म अपना लिया था और हिंदू नाम रख लिए थे। वे मायादेवी आश्रम, पनवा नौला में रहते थे और भगवा धोती-कमछड़ी पहनते थे। निकोलसन का नाम श्री कृष्ण प्रेम था। उन्होंने कठ उपनिषद का अंग्रेजी अनुवाद किया था; यह अनुवाद इलाहाबाद में प्रकाशित हुआ था। साधु बनने से पहले,

अलेक्जेंडर भारतीय चिकित्सा सेवा में डॉक्टर थे और प्रोफेसर निकोलसन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य के प्रोफेसर थे।
कुमाऊं के लोग गीत गाकर और नाचकर अपने कठिन जीवन की कठिनाइयों और मेहनत को भूल जाते हैं। दरमा के भोटियां लोगों के लोकगीत बहुत ही मधुर होते हैं। पुरुष व्यापार के लिए तिब्बत जाते हैं और महिलाओं को घर पर छोड़ देते हैं। इन गांवों में 'रंग-बैंग' नाम के महिला समूह हैं। अविवाहित लड़कियां रंग-बैंग की सदस्य होती हैं। वे किसी ऊँची जगह पर जाकर सफेद चादर के किनारों को पकड़ती हैं और उसे हवा में लहराती हैं। इलाके के अविवाहित पुरुष इस संकेत को देखकर उनके पास आते हैं। रंग-बैंग में वे अलाव के चारों ओर बैठकर लुगदी पीते हैं और गीत गाते हैं। पहले लड़कियों का समूह गाता है, फिर लड़कों का समूह उनके साथ गीत गाता है।
धान के पौधे रोपते समय भी बहुत ही जीवंत माहौल होता है। ढोल बजाने वाला पहली पंक्ति गाता है और फिर ढोल बजाता है; महिलाएं उसकी शुरुआत का जवाब देती हैं और पौधे लगाती हैं।
सितंबर तक हम अल्मोड़ा के अकेलेपन से काफी ऊब चुके थे और हमने पिंडारी ग्लेशियर घूमने का फैसला किया। हमारे साथ 40 कुली थे; वे सरकारी दस्तावेज़, हमारा बिस्तर, बर्तन, कपड़े, आटा और दालें ढो रहे थे। हमने अपने दोनों बच्चों सुरिंदर और अमृत को एक लंबी गाड़ी में बिठा दिया।

(पृष्ठ 130)
हमने दूसरे कैरियर में बैटरी से चलने वाला रेडियो रखा था। रास्ते में हमारी मुलाकात हमारे कलाकार मित्र ब्रूस्टर और उनकी पत्नी अक्षा से हुई। वे अमेरिकी थे जो शांति की तलाश में भारत आए थे और अल्मोड़ा में रहने लगे थे। श्रीमती ब्रूस्टर लकवाग्रस्त थीं और चल नहीं सकती थीं। उनके पति उन्हें नहलाते और कपड़े पहनाते थे। बैठे हुए वे शांति की देवी जैसी लगती थीं। मेरे पास आज भी ब्रूस्टर की महात्मा बुद्ध की पेंटिंग है; यह मेरे बेडरूम की शोभा बढ़ाती है। महात्मा बुद्ध एक पर्वत की चोटी पर पालथी मारकर बैठे हैं, उनके पीछे नीले पहाड़ हैं और सामने एक झील में दो गुलाबी कमल के फूल हैं। यह पेंटिंग मुझे बहुत शांति देती है और उस अनोखे दंपत्ति की याद दिलाती है।
हम कुछ मील पैदल चले और बिनसर पहुँच गए। चीड़ के जंगलों में कोयल की चहचहाहट गूँज रही थी। हमने बिनसर में लाला हरकिशन लाल गंगोला के बंगले में

ठहरे। यह बंगला 19वीं शताब्दी में सर हेनरी रैमसे द्वारा बनवाया गया था। रैमसे कुमाऊं के पहले कमिश्नर थे। वे एक दयालु अधिकारी थे और यहाँ के लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे। कुमाऊं के लोग उन्हें 'हरि राम जी' कहकर पुकारते थे।
अगले दिन हम गणनाथ पहुँचे और वहाँ के मंदिर में दर्शन किए। वहाँ एक झरना है और उसके नीचे एक शिवलिंग है। मुझे एक गुफा से एक शैवाल मिला, जिसका नाम मैंने सिरोक्लेडियम रखा। मुझे अपनी इस खोज पर बहुत गर्व हुआ। मुझे एहसास हुआ कि कम से कम इस खोज से वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में मेरा नाम अमर हो जाएगा। उस खोज से प्रसन्न होकर, हमने देवलधार नदी पार की और बागेश्वर पहुँचे। हम गोमती और सरयू नदियों के संगम पर स्थित एक सरकारी बंगले में ठहरे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। वहाँ पहुँचने पर हमने कुलियों को साबुन दिया ताकि वे यात्रा की धूल साफ कर सकें। उनके नहाने के बाद हमने उन सभी को जलेबी खिलाई।
अगले दिन हम कपकोट पहुँचे। यहाँ का बंगला सरयू नदी के किनारे पर है, और यहाँ एक पीपल का पेड़ है जिसके बारे में कहा जाता है कि वह 300 साल पुराना है। शाम को पहाड़ी लोगों का एक बारात आया और वे उस पेड़ के नीचे आराम करने के लिए रुके। एक लड़का ढोल बजा रहा था जबकि बाकी लोग हाथों में तलवारें लेकर नाच रहे थे।
अगली सुबह हम लोहार खेत पहुँचे। रास्ते में हमने पहाड़ी खीरे खरीदे और उन्हें हरी मिर्च की चटनी के साथ खाया। शाम को हमने चीड़ की लकड़ी की मशालें लिए पहाड़ी लोगों के एक समूह को अपनी ओर आते देखा। पटवारी रतन सिंह ने उन्हें हमारे मनोरंजन के लिए आमंत्रित किया था। वे एक-दूसरे का हाथ पकड़कर घेरा बनाकर खड़े हो गए और हमारे लिए लोकगीत गाने लगे।

(पृष्ठ 131)
ये लोकगीत रसूल और मालूशाही की प्रेम कहानी बयां करते हैं। रसूल संपत भोटियां की एक सुंदर कन्या थी और मालूशाही द्वारहाट के राजा का पुत्र था। दोनों ने एक-दूसरे को सपने में देखा और प्रेम में पड़ गए। अनेक कठिनाइयों के बाद उनका विवाह

हुआ।
अगली सुबह हम 7 बजे रवाना हुए। हमने धकड़ी की 8600 फीट ऊंची ढलान पर चढ़ाई की और बंगले पर पहुंचे। यहां से हिमालय का बेहद खूबसूरत नजारा दिखता है। त्रिशूल से नंदा देवी के बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देते हैं। चढ़ाई के बाद, कुलियों ने नंदा देवी को बलि देने के लिए एक भेड़ मांगी। हमने 7 रुपये में एक भेड़ खरीदी और उन्होंने रात के खाने में उस भेड़ का कोरमा बनाया। उन्होंने लुगड़ी के साथ इसका बड़े चाव से आनंद लिया।
धकड़ी से खाटी तक का रास्ता ढलान वाला था। रास्ते में हमें कई सांप दिखे। मेरे पास एक मुड़ी हुई लाठी थी जिससे मैंने सात-आठ सांप मारे; मैंने उन्हें पिंडारी नदी में फेंक दिया। खाटी आखिरी गांव है, इसके आगे कोई बस्ती नहीं है। अगले दिन हम पिंडारी ग्लेशियर पहुंचे। बर्फ के भार से बंगले की छत गिर गई थी, इसलिए हमने रात एक अस्थायी आश्रय में बिताई। हमने पानी गर्म किया और चाय बनाई, लेकिन उसका स्वाद बैंगनी चाय जैसा था। हम 11,000 फीट की ऊंचाई पर थे, इसलिए पानी धीरे-धीरे उबल रहा था, मैदानी इलाकों की तरह गर्म नहीं हो रहा था। सुबह करीब 10 बजे हमें घंटियों की आवाज सुनाई दी और दो पहाड़ी कुत्ते घूमते हुए दिखे। हमें पता चला कि चरवाहे पास की गुफाओं में आराम कर रहे थे।
पिंडारी हिमनद बर्फ की एक नदी है। हिमनद के पिघलने वाले स्थान को हिमनद का मुहाना कहा जाता है। हिमनद में बर्फ के बड़े-बड़े गड्ढे हैं। उनमें चट्टानें भयानक शोर के साथ गिरती रहती हैं। पहाड़ी लोग कहते हैं कि यह भगवान शिव के दो मुख वाले डमरू (डमरू) की ध्वनि है।
11,000 फीट की ऊंचाई पर पहाड़ों पर कोई पेड़ नहीं हैं। 10,000 फीट की ऊंचाई पर हिमालयी बर्च के पेड़ आखिरी श्रेणी में आते हैं; हमारे पूर्वज इनकी सफेद छाल पर लिखते थे क्योंकि उस समय भारत में कागज नहीं पहुंचा था। यहां अल्पाइन फूल पाए जाते हैं, जैसे जेंटियन, पोटेंटिला और नीले पोपी। नीले पोपी सबसे सुंदर होते हैं। हमने कुछ देर तक बर्फ से ढके पहाड़ों की सुंदरता का आनंद लिया और अल्पाइन फूलों की मनमोहक छटा में खो गए, जिसके बाद हम अल्मोरा लौट आए। पिंडारी ग्लेशियर की यह यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय स्मृति है। अगर मैं इस यात्रा पर न गया होता, तो अल्मोरा मेरे मन में कांटे की तरह चुभता रहता। हमने अल्मोरा में मुश्किल से छह महीने बिताए, लेकिन वे छह महीने छह साल जैसे लगे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 132)

मैंने अल्मोड़ा से तबादला करवाने के लिए बहुत कोशिश की। अक्टूबर में मुझे सूचना मिली कि मेरी नियुक्ति इलाहाबाद के अतिरिक्त कलेक्टर के रूप में हो रही है। हमने राहत की सांस ली और इस तबादले के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया। इकबाल ने जल्दी से हमारा सामान पैक किया ताकि हम उस जगह को जल्द से जल्द छोड़ सकें। कई शहर और इलाके दूर से या कुछ समय के लिए ही अच्छे लगते हैं। हम समझ गए कि पहाड़ यात्रा और पर्यटन के लिए तो अच्छे हैं, लेकिन तबादलों के लिए नहीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 17

इलाहाबाद और आगरा

(1939-1940)

(पृष्ठ 133)

अल्मोड़ा से निकलना ऐसा लगा मानो कोई पक्षी अपने पिंजरे से बाहर निकल रहा हो। अगर आपको वहां लंबे समय तक रहना हो, तो मैदानों की तुलना में पहाड़ किसी जेल जैसे लगते हैं। काठगोदाम पहुँचकर और मैदानों की खुली हवा में सांस लेकर हम बेहद खुश हुए। शायद ही किसी और मोटरकार यात्रा ने हमें अल्मोड़ा से इलाहाबाद तक की यात्रा जितना आनंद दिया हो।

इलाहाबाद में हमारा घर एडवर्ड पार्क के पास था। यह एक बड़ा बंगला था और इसके पीछे एक लॉन और बगीचा था। बरामदे के किनारे दो कमरे थे। मैंने उनमें से एक कमरे को अपनी प्रयोगशाला में बदल दिया। मैंने उसमें सूक्ष्म फोटोग्राफी के लिए एक कैमरा, अन्य आवश्यक वस्तुओं और अल्मोड़ा में मिली शैवाल की बोतलों को सावधानीपूर्वक रखा था।

इलाहाबाद का सिविल लाइंस साफ-सुथरा है। घरों की छतें टाइलों की हैं और सड़कों के किनारे इमली के पेड़ों की कतारें लगी हैं। सिविल लाइंस उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध वकीलों का घर हुआ करता था। सर तेज बहादुर सप्रू, डॉ. कैलाश नाथ काटजू, सर शफात अहमद खान, श्री पाठक, सिविल लाइंस में रहने वाले कुछ ऐसे वकील हैं जिनका जिक्र करना जरूरी है। इलाहाबाद सही मायने में वकीलों का शहर है। यहां मोतीलाल नेहरू का घर 'आनंद भवन' है, जहां जवाहरलाल नेहरू, उनकी बहन विजयलक्ष्मी पंडित और उनके पति रणजीत एस. पंडित रहते हैं।

(पृष्ठ 134)
आनंद भवन में दो बड़ी इमारतें हैं, एक पुरानी और दूसरी नई। मोतीलाल नेहरू द्वारा बनवाई गई पुरानी इमारत उपेक्षित और अव्यवस्थित ढंग से बनी हुई है। नई इमारत दो मंजिला है, जिसके कमरों और बरामदों का फर्श भूरे रंग के मोज़ेक सीमेंट से बना है। जवाहरलाल नेहरू से मिलने के लिए गांवों से आने वाले कई आगंतुक फर्श को हाथों से छूकर सम्मान व्यक्त करते हैं। विजयलक्ष्मी पंडित ने इस इमारत को चित्रों से सजाया है। यदि इसकी तुलना आज बन रही नई इमारतों से की जाए, तो यह भी अव्यवस्थित ही कहलाएगी। यह सौभाग्य की बात है कि जवाहरलाल नेहरू ने इस भवन को समुदाय को दान कर दिया। यदि ये भवन मेरे होते, तो मैं भी ऐसा ही करता। इस जिले में भी मैंने ग्राम सुधार में गहरी रुचि ली। मैं जिला ग्राम सुधार समिति का सचिव था और आर.एस. पंडित इसके अध्यक्ष थे। रणजीत पंडित गुजरात के निवासी थे और वे एक अच्छे विद्वान और लेखक थे। उन्होंने राजतरंगिणी का अंग्रेजी अनुवाद किया। उन्होंने कालिदास के नाटक ऋतुसंहार का भी अंग्रेजी अनुवाद किया; यह अनुवाद बहुत ही उत्कृष्ट है।
द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ और कांग्रेस सरकार ने इस्तीफा दे दिया। जो लोग कांग्रेस मंत्रियों के पीछे गुड़ पर मक्खियों की तरह चिपके रहते थे, वे डर के मारे उनसे मिलने तक नहीं जाते थे। ग्राम सुधार का सारा काम अपनी शुरुआती गति खो बैठा और खोखला हो गया। 128 मुझे याद है कि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल सर मौरिस हाल्ट इलाहाबाद के दौरे पर आए थे और उनके लिए एक गाँव चुना गया था। इस व्यवस्था के लिए जिम्मेदार एक मुस्लिम डिप्टी कलेक्टर,

128 रंधावा ने पंजाबी के साथ-साथ कुछ अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है, जैसे इस मामले में 'बोगस'। अनुवाद में इन शब्दों को बरकरार रखने का पूरा ध्यान रखा गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। उन्होंने गाँव में नीम के पेड़ों पर झूले लगवाए। उन्होंने एक बगीचा खुदवाया; उसमें आम के पेड़ लगाए गए। जब राज्यपाल गाँव आए, तो किसानों ने उन्हें फूलों की मालाओं से सजा दिया। उन्होंने देखा कि नई पोशाक पहने महिलाएं पेड़ों पर झूल रही थीं। गाँव के एक तरफ बोरवेल शौचालय बनवाए गए। जब राज्यपाल ने पूछा कि क्या कोई उनका इस्तेमाल करता है, तो एक ग्रामीण ने कहा कि गार्ड किसी को भी उनके पास नहीं आने देता। इस तरह के दिखावटी ग्राम सुधार आज भी स्वतंत्र भारत में देखे जा सकते हैं। जब कोई मंत्री या बड़ा अधिकारी किसी गाँव में जाता है, तो दिखावे के लिए सड़कें साफ की जाती हैं, अधिकारियों को इतनी मालाएं पहनाई जाती हैं कि वे किसी से ठीक से बात भी नहीं कर पाते।

(पृष्ठ 135)
यमुना नदी इलाहाबाद जिले की दो तहसीलों से होकर बहती है, और गंगा नदी अन्य दो तहसीलों से होकर बहती है। जिन तहसीलों में गंगा बहती है, वहां के लोग स्वस्थ हैं। जिन तहसीलों में यमुना बहती है, वहां के लोग कमजोर और बीमार दिखते हैं। गंगा का पानी सड़ता नहीं है। यही कारण था कि मुगल सम्राट गंगा का पानी पीने के लिए मंगवाते थे। गंगा में जीवाणुभक्षी होते हैं जो हानिकारक जीवाणुओं को खा जाते हैं।
एक बार जब मैं मेझा तहसील के जंगलों में डेरा डाले हुए था, शाम को एक शेर दहाड़ने लगा। पूरे जंगल में अफरा-तफरी मच गई। बंदर सबसे ज्यादा डरे हुए थे, वे पेड़ों पर कूद पड़े और चीखने लगे। पक्षी भी शोर मचाने लगे। मैं चुपचाप अपने चपरासी के साथ खड़ा होकर यह दृश्य देखने लगा। अगर कोई कहे कि उसे जंगल में शेर की दहाड़ से डर नहीं लगता, तो वह झूठ बोल रहा है। पास के गांव के लोग ऐसे अपने काम में लगे हुए थे मानो उन्हें कोई चिंता ही न हो। मैं उनके साहस को देखकर हैरान रह गया।
होली और मुहर्रम के त्योहारों के दौरान इलाहाबाद में हिंदू और मुसलमानों के बीच

सांप्रदायिक दंगे होना आम बात थी। मैं अपने घोड़े पर सवार होकर पुलिस को साथ लेकर इन स्थितियों को संभालने जाता था। मैंने सीखा कि दंगा करने वाली भीड़ को नियंत्रित करने में घोड़े और छोटी लाठियां कारगर होती हैं। जब 20-25 घुड़सवार अपने घोड़ों को भीड़ की ओर दौड़ाते थे, तो भीड़ डर के मारे तितर-बितर हो जाती थी। तुतन खान इलाहाबाद का सबसे खतरनाक गुंडा था। उसका दिमाग टूटे हुए चीनी मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों की तरह था। पुलिस उससे बहुत डरती थी। उसे कई बार गिरफ्तार किया गया, लेकिन जब भी वह जज डी.एन. मुल्ला के सामने पेश होता, जज उसकी जान के डर से उसे छोड़ देते थे। शहर के डिप्टी सुपरिटेंडेंट शाम सुंदर नाथ आगा बहुत होशियार थे, लेकिन वे भी तुतन खान से डरते थे। मैंने यह स्थिति देखी और आगा से कहा कि मैं उसे पकड़ लूंगा।
तुतान खान और उसके साथियों को मैंने अपने साथ लिया। मैं 12 सैनिकों को लेकर तुतान खान के घर गया। मैंने देखा कि तुतान खान और उसके साथी अफीम पीस रहे थे। जैसे ही मैं अंदर गया, मैंने तुतान खान के सिर पर लाठी से वार किया। पुलिस ने बदमाशों पर हमला किया और उन्हें पकड़ लिया। घर की तलाशी लेने पर हमें टाइल वाली छत में छिपी हुई रिवॉल्वर, पिस्तौल, कारतूस और सोने के गहनों से भरी थैलियाँ मिलीं। तुतान खान और उसके बदमाशों को पकड़ने से शहर में काफी शांति आई।

(पृष्ठ 136)
एक बार एक आदमी मेरे पास आया और उसने मुझे बताया कि शहर में एक कोकीन तस्कर है जिसे पकड़ने में वह मेरी मदद कर सकता है। मैंने एक तांगा किराए पर लिया और एक काला अचकन और चूड़ीदार पैंट पहन ली। मुखबिर ने मुझे तस्कर से मिलवाया और तस्कर मेरे साथ तांगे में बैठ गया। मैं

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। उससे काफी देर तक बात करने के बाद उसे लगने लगा कि मैं नेपाल के किसी शाही परिवार से हूँ और उससे कोकीन खरीदना चाहता हूँ। उसी समय, हमारी योजना के अनुसार, पुलिस अधिकारियों का एक दल वहाँ पहुँच गया और तस्कर को कोकीन के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया।
युद्ध का माहौल तनावपूर्ण हो चुका था और अंग्रेजों की हार की खबरें हर तरफ से आ

रही थीं। इलाहाबाद के कमिश्नर डब्ल्यू.सी. डायवेल नाम के एक बूढ़े, कठोर हृदय वाले अंग्रेज थे।129 वे एक जिद्दी अंग्रेज थे और भारतीय अधिकारियों से नफरत करते थे। लोग उन्हें 'शैतान साहब' कहते थे।130 जी.डब्ल्यू.एम. व्हिटल जिले के कलेक्टर थे। वे खुशमिजाज और दयालु स्वभाव के थे। एक 'युद्ध निधि' बैठक आयोजित की गई, जिसमें एक मुस्लिम डिप्टी कलेक्टर ने सुझाव दिया कि पंचायतों का पैसा भी युद्ध निधि में जोड़ा जाए। यह कोई बड़ी रकम नहीं थी और अगर सारा पैसा जोड़ भी दिया जाता, तो उससे एक हवाई जहाज भी नहीं खरीदा जा सकता था। गांवों के छोटे-छोटे टूटे पुलों की मरम्मत इसी धन से की गई। मैंने इस सुझाव का विरोध किया और कहा कि इस पैसे से युद्ध प्रयासों में कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा, लेकिन अगर इस तरह से धन का इस्तेमाल किया गया तो गांव वालों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

इस घटना के बाद, और चूंकि कांग्रेस नेता अक्सर मुझसे मिलते थे, ब्रिटिश सरकार ने मेरा तबादला आगरा कर दिया। इलाहाबाद आए हुए मुझे केवल ग्यारह महीने ही हुए थे, और मैं तबादले का कारण भी समझ गया था। 30 अक्टूबर 1940 को जब हम इलाहाबाद से आगरा के लिए रवाना हुए, तो हमें ऐसा लगा जैसे हमें इलाहाबाद के स्वर्ग से बाहर धकेला जा रहा हो। आगरा संयुक्त प्रांत का सबसे गर्म इलाका है। वहाँ पहुँचते ही हमें रहने के लिए जगह ढूंढने की समस्या का सामना करना पड़ा। हमने ईदगाह नाम की एक नई बस्ती में एक घर लिया। चारों ओर धूल ही धूल थी, और हमें ऐसा लगा जैसे हम नरक में पहुँच गए हों। कुछ समय बाद, हमें हेवेट पार्क के पास एक साफ-सुथरा घर मिला और हमें थोड़ी राहत मिली।

साहिबजादा खुर्शीद अहमद आगरा के कलेक्टर थे। वे सर सैयद अहमद खान के परिवार से थे और उन्हें व्हिस्की पीने का बहुत शौक था।

(पृष्ठ 137)

वह आम तौर पर खुशमिजाज स्वभाव के थे। एल.डी. वुड आगरा के कमिश्नर थे। अन्य अंग्रेजों की तरह वे भी युद्ध को लेकर चिंतित थे। उन्हें योग का भी शौक था। एक सुबह वे वॉशरूम के फर्श पर फिसल गए और उनका पैर टूट गया। इसी वजह से उन्हें छुट्टी लेनी पड़ी और उनकी जगह खुर्शीद अहमद कमिश्नर बन गए, जबकि मुझे कलेक्टर नियुक्त किया गया। इलाहाबाद के अतिरिक्त मजिस्ट्रेट से संयुक्त मजिस्ट्रेट

बनने पर मुझे जो दुख हुआ था, वह इस तरह दूर हो गया।
दो आईसीएस अधिकारी, किशन चंद और जॉनसन, मेरे अधीन प्रशिक्षण ले रहे थे। मुझे किशन चंद ज़्यादा पसंद था और मैं उसे अपने दौरों पर साथ ले जाता था। एक दिन हम हेवेट पार्क गए। दोनों घोड़े तेज़ी से दौड़ने लगे और जल्द ही बेकाबू हो गए। सौभाग्य से, किशन चंद अपने घोड़े से गिर गया और मेरा घोड़ा भी रुक गया। मैंने किशन चंद को उठाया और देखा कि वह ठीक है या नहीं। फिर मैं उसे घर ले गया, उसे ब्रांडी पिलाई और उसे अपने पैरों पर खड़ा किया। किशन चंद और उसकी पत्नी सीता कलेक्टर के बंगले में हमारे साथ रहते थे, वे हमारे साथ भोजन भी करते थे, लेकिन इसके लिए हमने उनसे कोई मुआवज़ा नहीं लिया।

129 लिप्यंतरित रूप में।
130 किंग जॉर्ज VI के 1946 के नव वर्ष सम्मानों की सूची के अनुसार, जॉर्ज विलियम मर्डोक व्हिटल एक भारतीय सिविल सेवा अधिकारी थे जिन्हें आपूर्ति विभाग, शाखा सचिवालय (लौह एवं इस्पात नियंत्रण), कलकत्ता में भारत सरकार के उप सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैंने आगरा में भी ग्राम सुधार के लिए काम करना शुरू किया। राजा कुशलपाल सिंह ने इस काम में मेरा भरपूर सहयोग दिया। राजा कुशलपाल सिंह दुबले-पतले थे, वे केवल एक चपाती और पीली दाल खाते थे। लेकिन जब वे दावतें देते थे, तो हर थाली में पंद्रह कटोरी होती थीं जिनमें दाल, जीरा, आलू, मांस और मौसमी सब्जियां होती थीं। उनकी मीठी टमाटर की चटनी खास तौर पर लाजवाब होती थी।
हम कभी-कभी दयाल बाग़ जाया करते थे।131 इस संप्रदाय के दो समूह थे; मेहता चरण सिंह एक समूह के नेता थे; वे पंजाब से सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता थे। यह समूह छोटे हस्तशिल्पों का समर्थन करता था; इनके अनुयायी उच्च नैतिक स्तर के थे। साहिब जी महाराज दूसरे समूह के गुरु थे। यह समूह ताजमहल से प्रतिस्पर्धा करते हुए एक गुरुद्वारा बनवा रहा था। मेरा मानना है कि दयाल बाग़ के भक्त, राधा स्वामी, दयालु और सिद्धांतवादी लोग हैं।

कमला राठौर आगरा की कांग्रेस नेता थीं। पांच साल पहले उन्होंने विधानसभा चुनाव में लीडर अखबार के संपादक सी.वाई. चिंतामणि को हराया था। चिंतामणि का मानना था कि वे एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, इसलिए उन्हें आगरा के गांवों का दौरा करने की आवश्यकता नहीं है।

(पृष्ठ 138)
कमला राठौर के कार्यकर्ताओं ने यह अफवाह फैलाई कि चिंतामणि बाई आगरा की एक वेश्या है, इसलिए मतदाताओं को यह तय करना चाहिए कि वे एक वेश्या को वोट देना चाहते हैं या श्रीमती कमला राठौर को।
ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था। कई प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओं को आगरा जेल में कैद कर दिया गया था। आम तौर पर, जेल अधिकारी उन्हें रात करीब 8 या 9 बजे उनकी कोठरियों में बंद कर देते थे। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, आगरा बेहद गर्म इलाका है, इसलिए जेल कर्मचारियों द्वारा विकसित की गई यह प्रथा उचित थी। कर्नल भंडारी को आगरा जेल का नया अधीक्षक नियुक्त किया गया। वे नियमों का अक्षरशः पालन करते थे, इसलिए उन्होंने सूर्यास्त होते ही कैदियों को उनकी कोठरियों में वापस भेजना शुरू कर दिया। कैदियों ने विरोध किया। मैंने भंडारी को सलाह दी कि वे वही करें जो पूर्व अधीक्षक करते थे। भंडारी जी ने जवाब दिया कि उन्हें यह आदेश लिखित में दिया जाना चाहिए। मैंने इनकार कर दिया। भंडारी ने कहा कि उन्होंने कैदियों को जबरन उनकी कोठरियों में बंद करने का फैसला किया है और इसलिए उन्होंने इस काम के लिए 100 पुलिसकर्मियों की मांग की। पार्सन आगरा के एसपी थे। मैंने उन्हें 100 कांस्टेबलों के साथ जेल पहुंचने का आदेश दिया। पुलिसकर्मियों ने कैदियों के हाथ-पैर पकड़कर उन्हें उनकी कोठरियों में धकेलना शुरू कर दिया। यह सिलसिला रात करीब 10 बजे तक चलता रहा। मुझे लगा कि कैदियों के साथ अन्याय हुआ है; उन्हें खाना नहीं दिया गया था और वे भूख से बेहाल रहे होंगे। जब मैं कैदियों की बैरक में गया, तो एक कैदी ने अपनी कोठरी के आम बर्तन का इस्तेमाल किया हुआ पानी मुझ पर फेंक दिया। मैंने कहा, “तुम गांधी जी के अनुयायी हो, लेकिन हिंसा ने तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ा है। तुम्हें सज़ा देना मेरे अधिकार में है, लेकिन मैं किसी को सज़ा नहीं देना चाहता। जिसने पानी फेंका है, उसे सामने आकर माफ़ी मांगनी चाहिए।” यह सुनकर कैदियों में सन्नाटा छा गया और वे एक-

दूसरे को देखने लगे। मैं घर लौट आया और अगली सुबह मुझे एक लिफाफा मिला। डाक में एक कागज़ का टुकड़ा था जिस पर लिखा था, 'हम सब आपसे माफ़ी मांगते हैं'। उन्होंने अपराधी का नाम भी लिखा था, लेकिन मैंने किसी को सज़ा नहीं दी। अगले दिन, जब मैं दोबारा जेल का निरीक्षण करने गया, तो कैदियों ने अपराधी को पेश कर दिया।

131 दयाल बाग, राधास्वामी सत्संग सभा का केंद्र था, जो विभिन्न धर्मों के आध्यात्मिक सिद्धांतों से उत्पन्न एक पंथ है। यह आगरा में स्थित है और आज भी एक आध्यात्मिक संप्रदाय के रूप में कार्यरत है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। मेरे सामने। हर किसी ने मुझसे फिर से माफी मांगी। मैं इस नैतिक जीत से खुश था। बाद में उनमें से कई कैदी मुझसे मिले, हमने उस घटना को याद किया और खूब हंसे।

आगरा का नाम सुनते ही ताजमहल और फतेहपुर सिकरी का जिक्र नहीं होता। मुझे ताजमहल से ज्यादा फतेहपुर सिकरी पसंद है। एक दिन हमने पंच महल की छतरियों के नीचे कालीन बिछाकर अकबर के शासनकाल के दौरान के दृश्य को फिर से जीवंत किया।

(पृष्ठ 139)

वहां आयोजित संगीत, नृत्य और भोज का सभी ने खूब आनंद उठाया।

उन दिनों हिटलर ने रूस पर हमला किया। सभी विशेषज्ञों का मानना था कि जर्मन अपना मानसिक संतुलन खो चुके थे और उनकी हार अब बहुत दूर नहीं थी।

युद्ध जारी रहने के बावजूद, ब्रिटिश सरकार की नीति ज़िलों में कड़ी मेहनत कर रहे उच्च-स्तरीय अधिकारियों को आराम और तरोताज़गी प्रदान करने की थी। आज की सरकारों के विपरीत, उनका मानना यह नहीं था कि अधिकारियों से हर संभव कार्य और उत्पादन का निचोड़ निकाला जाना चाहिए। हमने 18 जुलाई 1941 से 1 महीने और 27 दिन की छुट्टी ली। हमने यह छुट्टी कश्मीर में बिताई। हमने अमरनाथ गुफाओं और कोलाहोई हिमनद का भी भ्रमण किया। अमरनाथ की यात्रा रोचक रही। रास्ते में

मैंने शेषनाग झील (132) देखी और उससे शैवाल एकत्र किए।
हमने पंजतरणी में घोड़ों और खच्चरों के कंकाल देखे और पता चला कि वहाँ कुछ जहरीली जड़ी-बूटियाँ थीं जिन्हें खाने से जानवरों की मौत हो गई थी। मैंने अमरनाथ गुफाओं में कुछ जंगली कबूतर भी देखे, ऐसा माना जाता है कि वे भगवान शिव के आशीर्वाद प्राप्त पक्षी हैं।
अमरनाथ से लौटने के बाद हमने पहलगाम में नदी के किनारे एक तंबू लगाया। कभी-कभी प्राकृतिक और मानवीय दृश्य आपस में घुलमिल जाते हैं। मैं नदी के किनारे बैठा देवदार के जंगलों को निहार रहा था। मैंने देखा कि जंगल के सामने एक बड़ी चट्टान पर एक मोटी औरत कपड़े धो रही थी। एक घंटे बाद एक आदमी मेरे पास आया और मुझसे पूछा कि मैं उसकी पत्नी को क्यों देख रहा हूँ। मैंने जवाब दिया कि मेरी पत्नी मेरे साथ है और वह उस मोटी औरत से कहीं ज़्यादा सुंदर है, इसलिए मुझे उसे देखने की ज़रूरत नहीं है। इकबाल पास ही बैठा था। मैंने उससे कहा कि अगर उसे अब भी शक है, तो वह मेरी पत्नी को देख ले और खुद पता कर ले। इतना कहने के बाद भी वह आदमी, जो लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज का प्रोफेसर था, संतुष्ट नहीं हुआ। वह बहस करने लगा। मैंने पहलगाम के पर्यटन अधिकारी से उसकी शिकायत की। उन्होंने उस आदमी को समझाने की कोशिश की कि उसे अपनी पत्नी से कहना चाहिए कि वह कपड़े धोने के लिए कोई और जगह ढूंढ ले। उस सनकी आदमी की ज़िद ने हमारा सारा मज़ा किरकिरा कर दिया।
सितंबर में हमें खबर मिली कि मेरी नियुक्ति रायबरेली के उपायुक्त के पद पर हो गई है। हम 10 सितंबर को गोजरा लौट आए; जल्दबाजी के कारण रास्ते में हमारे सारे बर्तन खो गए। हम 14 सितंबर 1941 को रायबरेली पहुंचे।

132 अमरनाथ के रास्ते में स्थित शेषनाग झील वह स्थान है जहाँ भगवान शिव ने अपने सर्प छोड़े थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 18

(पृष्ठ 140)
रायबरेली लखनऊ से 50 मील दूर स्थित एक छोटा सा शहर है। इसकी आबादी 20,000 है। यहाँ बिजली और नल का पानी नहीं है, और सड़कें कच्ची हैं। रायबरेली का महत्व केवल जिले के मुख्यालय होने तक ही सीमित था।
रायबरेली के गांवों की हालत बेहद दयनीय थी। तालुकदार ही ज़मीन के मालिक थे; कुछ के पास 100 गांव थे, कुछ के पास 200, और कुछ के पास 300 गांव थे। खजूरगांव के तालुकदार राजा उमानथ बख्श सिंह उनमें सबसे उल्लेखनीय थे। वे सरकार को सालाना 1,50,000 रुपये किराया देते थे। तिलोई के तालुकदार राजा बिशन नाथ शरण सिंह सबसे बड़े तालुकदार थे, वे सरकार को सालाना 1,70,000 रुपये राजस्व देते थे। इनके अलावा दो-तीन और तालुकदार थे जिनका यही रुतबा था। कुर्री सधौली के राजा कृष्ण पाल सिंह और शिवगढ़ के राजा बरखंडी महेश प्रताप नारायण सिंह। इनके अलावा भी कई छोटे-बड़े तालुकदार थे।
रायबरेली में दो सिख परिवार भी थे; सरदार अमर सिंह और बीरपाल सिंह उन परिवारों के मुखिया थे। उनके पिता, जिन्हें एक राजकुमार के रूप में याद किया जाता है, महाराजा रणजीत सिंह के पोते थे और पंजाब से निर्वासित किए गए थे। उनका निशाना अचूक था। उनका नौकर 8 आना का सिक्का हवा में उछालता और वे उसे अपनी राइफल की गोली से भेद देते। राजकुमार बहुत मोटे थे। जिले के अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें व्यायाम करने की सलाह दी, लेकिन राजकुमार पर कोई असर नहीं हुआ। उनका वजन दिन-ब-दिन बढ़ता ही गया; वे अपनी पैंट की गांठ भी खुद नहीं बांध पाते थे।

(पृष्ठ 141)
एक बार उपायुक्त ने कहा, "सरदार जी, मैं आपके लिए जो सबसे बड़ी सेवा कर सकता हूं, वह यह है कि मैं आपको छह महीने के लिए जेल भेज दूं ताकि आप वहां अनाज पीस सकें।"
रायबरेली के उपायुक्त का सबसे बड़ा काम तालुकदारों और उनकी रानियों की शिकायतें सुनना था। आलसी होने के कारण उनमें लगभग सभी तरह की कमियां थीं।

कोई भी तालुकदार सुबह 10 बजे से पहले नहीं उठता था। वे खाना खाते और फिर दिन भर बकरियों की तरह पान चबाते रहते थे। वे हमेशा अपने साथ एक नौकर रखते थे; नौकर चांदी की डिब्बी में पान रखता और समय-समय पर राजा साहब को पान भेंट करता था। उन्हें तंबाकू चबाने की भी आदत थी, इसलिए उनके दांत हमेशा गंदे रहते थे।

तालुकदारों के लिए मुकदमेबाजी एक विशेष शौक थी। वे न केवल अपने किरायेदारों के खिलाफ कानूनी मामले दर्ज करते थे, बल्कि जब वे देखते थे कि किसी अन्य व्यक्ति को भी संपत्ति विवाद का सामना करना पड़ रहा है लेकिन उसके पास मुकदमा लड़ने के लिए पैसे नहीं हैं, तो वे उस पक्ष के लिए मुकदमा लड़ते थे। समझौता इस प्रकार होता था: यदि तालुकदार मुकदमा जीत जाते, तो उन्हें उस पक्ष की संपत्ति का आधा हिस्सा मिल जाता।

कई तालुकदार नेपाल में शादी करते थे। तिलोई के तालुकदार ने एक खूबसूरत नेपाली महिला से शादी की थी, जो बहुत फैशनेबल थी। जब भी वह हमसे मिलने आती थी, नीले रंग के चश्मे पहनती थी। तालुकदार निरक्षर थी, लेकिन उसने एक कॉन्वेंट स्कूल में शिक्षा प्राप्त की थी, वह अंग्रेजी भी बोल सकती थी। वह आमतौर पर लखनऊ में रहती थी। तिलोई के तालुकदार ने भी एक निरक्षर महिला से शादी की थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। ठाकुरों की बेटी। शादी के बाद जब वह मुझसे मिला, तो उसने मुझे बताया कि अब वह ज़्यादा खुश है क्योंकि उन दोनों का सांस्कृतिक स्तर एक जैसा है।133

हैवलॉक एलिस ने अपनी किताबों में जिन कमियों का ज़िक्र किया है, वे सभी रायबरेली के तालुकदारों में पाई जाती थीं। उनमें से कुछ युवा लड़कों के प्रति आकर्षित थे, और कुछ वेश्याओं के प्रति। तालुकदारों की अतिरिक्त आय का एक बड़ा हिस्सा लखनऊ की वेश्याओं के हाथों में चला जाता था। तालुकदार युवक कम उम्र से ही नौकरानियों पर प्रयोग करना शुरू कर देते थे। वे शिष्टाचार सीखने के लिए लखनऊ की वेश्याओं से प्रशिक्षण भी लेते थे।

रायबरेली के कुछ गाँव हिंदू तालुकदारों द्वारा अपनी मुस्लिम रखैलियों को उपहार में दिए गए थे। वे अपने बच्चों का पालन-पोषण मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार करती

थीं।

(पृष्ठ 142)
एक दिन मुहम्मद हुसैन खान नाम का एक व्यक्ति मुझसे मिलने आया। उसने हरे रंग की पगड़ी पहन रखी थी, उसकी आँखें हल्के रंग की थीं और उसकी दाढ़ी काली रंगी हुई थी। उसने मुझे बताया कि वह पेहरेमाऊ के तालुकदार राजा रणबहादुर सिंह का भाई है। जैसे ही उसने मुझे यह बताया, मैं तुरंत उनके रिश्ते को समझ गया। मुहम्मद हुसैन खान भी राजा रणबहादुर सिंह का दरबारी था। राजा को उर्दू शायरी बहुत पसंद थी, और जब भी वह कोई शेर सुनाता, मुहम्मद हुसैन खान उसके सामने बैठ जाता और ज़ोर से "वाह, वाह!" कहता। शायरी खत्म होने पर मुहम्मद हुसैन खान उसे पान और सिगरेट भेंट करता।
रायबरेली में कुछ विधवा तालुकदारनियाँ थीं। मैं दलमऊ में गंगा के किनारे डेरा डाले हुए था। निज़ामी नाम के एक अर्दली ने मुझे बताया कि ठाकुरैन बैसन कंवर मुझसे मिलने आई हैं। ठाकुरैन रथ पर बैठी थीं। उनके पीछे एक हाथी था जिस पर उनके प्रबंधक और दत्तक पुत्र सवार थे। सेना की वर्दी पहने एक सिपाही हाथ में भाला लिए रथ के पास खड़ा था। उनके पीछे छह सेवकों का एक दल था जिनके हाथों में कांसे की थालियाँ थीं जिनमें किशमिश, बादाम, पिस्ता, अखरोट, टमाटर और फूलगोभी कपड़े से ढकी हुई थीं। युद्ध का समय होने के कारण ठाकुरैन युद्ध के लिए दान के रूप में एक सैनिक और 100 रुपये लाई थीं।134 उनके दत्तक पुत्र के हाथ में एक चांदी की थाली थी जिसमें पान, सुपारी, इलायची और 5 रुपये उपहार के रूप में थे। मैंने एक इलायची ली, पैसों को छुआ और सब कुछ उसे लौटा दिया। रानी से बात करने के बाद मुझे पता चला कि वह हर सुबह जल्दी उठती हैं और सुबह 9 बजे तक प्रार्थना करती हैं। वह सुबह 10 बजे परदे के पीछे बैठ जाती हैं, उनका प्रबंधक परदे के दूसरी तरफ बैठकर उन्हें आवेदन और पत्र प्रस्तुत करता है। वह उन्हें मुद्दों पर सलाह देता है और उनके आदेश लेता है। वह 11 बजे भोजन करती हैं और फिर 4 घंटे सोती हैं। शाम 6 बजे वह अपने घर के बरामदे में टहलती हैं और तीन-चार विधवाएं, जिन्हें वह आर्थिक सहायता देती हैं, उनके पीछे टहलती हैं। वह रात 11 बजे भोजन करती हैं और आधी रात तक जागती रहती हैं। रानी के जाने के तुरंत बाद एक कांग्रेस कार्यकर्ता मेरे पास उनके खिलाफ एक आवेदन लेकर आया। आवेदन में कहा गया था कि उन्होंने

प्रभु नामक एक किरायेदार की उपज जबरन छीन ली, एक महिला से जबरन लगान वसूला, कालिदामन सिंह नामक एक किरायेदार की गेहूं की फसल में आग लगवा दी और दोपहर में उसे रस्सियों से बांधकर अपनी हवेली में ले आई।

133 जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, 'सांस्कृतिक स्तर' वह शब्द है जिसका प्रयोग रंधावा ने अंग्रेजी में किया है। 134 'भर्ती' से रंधावा का तात्पर्य है कि वह अपने साथ युद्ध प्रयासों के लिए एक सैनिक को भर्ती के रूप में लाई थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 143)

तालुकदारों के महल 19वीं सदी की याद दिलाते थे; उनके ड्राइंग रूम बाघ की खालों से भरे रहते थे। बरामदों में सांभर हिरणों के सिर लटके होते थे, छतों से गंदे झूमर लटकते थे, अलमारियों में तरह-तरह की घड़ियाँ और चीनी मिट्टी के खिलौने रखे होते थे, सोफे विक्टोरियन काल के होते थे, और पूछे जाने पर राजा कहते थे: मैंने इन्हें किसी अंग्रेज कमिश्नर से खरीदा था जब वह सेवानिवृत्त हुए थे।

जब किसी तालुकदार को मोटरगाड़ी खरीदनी होती थी, तो वह अपने किरायेदारों से कर वसूलता था। इस कर को 'मोतोरण' कहा जाता था। जब उन्हें हाथी खरीदना होता था, तो वे 'हथ्यावन' नामक कर लगाते थे। जब अंग्रेज अधिकारी दौरे पर होते थे, तो तालुकदार उनके और उनके अधिकारियों के लिए दावतें आयोजित करते थे, जिसके लिए वे अपने किरायेदारों से धन वसूलते थे। इस कर को 'लत्यावन' कहा जाता था और प्रत्येक किरायेदार को इसके लिए 2 रुपये देने पड़ते थे।135

अवध के तालुकदार सरासर परजीवी थे। वे अपने ग्रामीण समाज में किरायेदारों का खून चूसने के अलावा कोई योगदान नहीं देते थे। उन्हें कृषि, पठन-पाठन, अध्ययन या कला में कोई रुचि नहीं थी। प्रतापगढ़ जिले में केवल एक ही परिवार अन्य तालुकदारों से अलग था - यह काला कंकर परिवार था। उनमें से दिनेश सिंह विदेश मंत्री बने, सुरेश सिंह को पक्षियों के अध्ययन में रुचि थी और उन्होंने इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी, बृजेश कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने। यही बृजेश हैं जिन्होंने स्टालिन की बेटी स्वेतलाना से विवाह किया था।136

135 लात्यावान: जहाँ लात 'भगवान' का एक रूप है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, भगवान के लिए एकत्र किया गया कर। 136 जोसेफ स्टालिन की एक बेटी थी जिसका नाम स्वेतलाना था, लेकिन इंटरनेट पर सामान्य खोज करने पर किसी भारतीय मूल की पत्नी या साथी का पता नहीं चला। हालाँकि, पाठ में यही लिखा है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 19

रायबरेली के उपायुक्त की रुचियां, शौक और यात्राएं

(पृष्ठ 144)

रायबरेली एक नीरस शहर था। सभी अधिकारी एक-दूसरे के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा जानते थे। इस बात के अपने फायदे और नुकसान थे। इस स्थिति का सकारात्मक पहलू यह था कि शहर के भले लोग और हम सब एक परिवार की तरह थे और एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते थे। जब हमारी भैंस, जो हमें 20 लीटर दूध देती थी, मर गई, तो शहर के कई भले लोग संवेदना व्यक्त करने आए। खतरा यह था कि अगर कोई एक भी चालाक व्यक्ति होता, तो वह पूरे माहौल को बिगाड़ सकता था। इसीलिए उपायुक्त को बहुत सोच-समझकर और सावधानी से बोलना पड़ता था, क्योंकि उनकी कही हर बात पूरे शहर में फैल जाती थी।

अधिकारियों को अनुशासित रखने के लिए, मैं उन्हें अलग-अलग कामों में व्यस्त रखता था, क्योंकि निष्क्रिय अधिकारी प्रतिकूल योजनाएँ बनाते हैं। इसी कारण से ग्राम सुधार के हमारे कार्य में अपार सफलता मिली और जनता की भागीदारी से अनेक पंचायत कार्यालय और विद्यालय स्थापित किए गए।

मैं हर रविवार और छुट्टियों में आधिकारिक काम से छुट्टी लेकर अंग्रेजी में कुछ लिखता था। उन दिनों मुझे फूलों वाले पेड़ों को देखने में रुचि पैदा हुई। सिविल लाइंस के हर बंगले में अंग्रेज अधिकारियों द्वारा फूलों वाले पेड़ लगाए गए थे। मैंने इन सभी नोट्स को 'ब्यूटिफाइंग इंडिया' नामक पुस्तक में प्रकाशित करवाया।

हर मानसून में, मैं रायबरेली में वृक्षारोपण सप्ताह मनाता था। मैं अदालतों, तहसील कार्यालयों और स्कूलों में फूल और फलदार पेड़ लगवाता था। अगर कोई आज भी रायबरेली जाए, तो उसे गुलमोहर, जैकारांडा और ऑर्किड के पेड़ दिखाई देंगे जो मैंने 1942 में लगवाए थे। ये पेड़ आज भी रायबरेली शहर और गांवों की शोभा बढ़ा रहे हैं।

पद्मावत के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी, जयस के निवासी थे। हिंदी साहित्य में आज भी उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। मैंने उनके जन्मस्थान पर एक स्मारक बनवाया, जिसकी मुसलमानों ने बहुत सराहना की। महावीर प्रसाद द्विवेदी भी रायबरेली के निवासी थे। द्विवेदी हिंदी साहित्य में सुप्रसिद्ध हैं और उन्हें 'हिंदी गद्य का जनक' माना जाता है। वे अपने गाँव के सरपंच भी थे, लेकिन गाँव के लोग उनका कड़ा विरोध करते थे। उन्हें जो भी कागज मिलता, चाहे वह अखबार हो या स्कूल की कॉपी, उस पर लिखने की आदत थी। मैंने उनकी हस्तलिखित रचनाओं को एकत्रित करके रायबरेली के पुस्तकालय में सुरक्षित रखा है।

वहाँ रहते हुए मैंने विज्ञान में भी बहुत योगदान दिया। बंगले में एक कमरा था जिसे मैंने अपनी प्रयोगशाला में बदल दिया था। मुझसे पहले इस कमरे का इस्तेमाल डॉ. एस.एस. नेहरू करते थे। उन्हें विद्युत कृषि का शौक था। वे कुछ मक्के के पौधों को विद्युतीकृत पानी से सींच रहे थे। उन्हें किसी ज़रूरी काम से छुट्टी पर जाना पड़ा, इसलिए उन्होंने तहसीलदार अफजान उल्लाह को अपनी अनुपस्थिति में मक्के के पौधों की देखभाल करने का जिम्मा सौंपा और उनसे कहा कि वे उन्हें विद्युतीकृत पानी से सींचते रहें। नेहरू के लौटने में दो दिन शेष थे, तब अफजान उल्लाह ने देखा कि रात में आवारा गायों ने मक्के के पौधे खा लिए थे। तहसीलदार चिंतित तो हुए, लेकिन वे समझदार थे। उन्होंने एक किसान के खेत से मक्के के पौधे तुड़वाए, जो नेहरू के पौधों से दो से तीन फीट लंबे थे। जब नेहरू लौटे और उन्होंने देखा कि 14 दिनों में पौधे इतने बढ़ गए हैं, तो वे आश्चर्यचकित रह गए।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। तहसीलदार ने आश्चर्यचकित होकर उत्तर दिया,

"जनाब, आपकी अनुपस्थिति में, मैंने प्रतिदिन उन सभी को नापा और उनकी वृद्धि देखने के लिए प्रत्येक पर एक धागा बांधा। बिजली ने कुछ प्रयास किया, आपके दृढ़ विश्वास ने कुछ बल लगाया, और इसीलिए वे इतनी तेजी से बढ़े।" 137
उपायुक्त सामान्यतः तहसीलदारों और सहायक आयुक्तों की अपीलों और निर्णयों को सुनते हैं। इसके अलावा, प्रश्नकाल के दौरान कार्यालय में कुछ रोचक आवेदन भी आते हैं।

(पृष्ठ 146)
दोपहर करीब 12 बजे चपरासी ने जोर से पुकारा, "यह जनाब उपायुक्त साहब बहादुर का प्रश्नकाल है। जो लोग आवेदन भेजना चाहते हैं, वे अभी भेज सकते हैं।" मुझे याद है कि गांव के हरिजनों ने एक आवेदन प्रस्तुत किया था, जिसमें लिखा था, "उच्च जाति के लोग होली के दिनों में हमारी महिलाओं को रंगों से खेलने के लिए मजबूर करते हैं; इसका मतलब है कि वे हमारी महिलाओं को हमारे घरों से बाहर निकालकर अपने समूहों के बीच खड़ा कर देते हैं। फिर वे उन्हें अश्लील गालियां देते हैं और उनका यौन उत्पीड़न करते हैं। हम अछूत इसे सहन करते आ रहे हैं, लेकिन अब हमारी मानवता हमें अपनी महिलाओं को अश्लील भाषा और यौन उत्पीड़न से अपमानित होते देखने की अनुमति नहीं देती। इसलिए हम हुजूर से निवेदन करते हैं कि वे प्रत्येक क्षेत्र के पुलिस स्टेशन को आदेश दें कि थाना अधिकारी अपने कांस्टेबलों को अपने गांवों में यह घोषणा करने का निर्देश दें कि उच्च जाति के लोग इस तरह के व्यवहार को पूरी तरह से बंद कर दें, क्योंकि हम अछूत अब इन भयानक प्रथाओं को और बर्दाश्त नहीं करेंगे; वे हमारे साथ रंगों से खेलते हैं लेकिन हमें अछूत कहते हैं। हम हुजूर के बहुत आभारी होंगे।" इससे यह साबित हुआ कि हरिजन समुदाय जागरूक हो रहा था, और जो तथ्य वे कुछ साल पहले स्वीकार्य मानते थे, वे अब उन्हें परेशान कर रहे थे।
एक विशेष प्रकार के आवेदन अक्सर प्रस्तुत किए जाते थे, जिन्हें 'आमलाना', 'दादरासी' और 'इतेलाही' कहा जाता था। ये आवेदन आम तौर पर अहीर, तेल निकालने वाली महिलाएं और लोध आदि जैसी निचली जातियों की महिलाओं द्वारा भरे जाते थे। इनका विषय निम्नलिखित होता था:
"जनाब, मैं, सायला, आवेदक, यह निवेदन करती हूँ कि मेरा विवाह बिशन नाथ से

हुआ था। विवाह के समय सायला नाबालिग थी। छह साल बाद, मैं, सायला, दूल्हे के घर आई। मैं, सायला, कई बार अपने पति के घर गई, लेकिन वह दो-तीन दिन बाद मुझे पीटने लगता और घर से निकाल देता। वह सायला को खाना-कपड़ा नहीं देता था। सायला अपने पिता के साथ रहती थी और किसी तरह गुज़ारा करती थी। सायला के पिता बूढ़े हैं और उसकी देखभाल करने में असमर्थ हैं। सायला एक युवती है, उसके सामने लंबा जीवन पड़ा है। बिना पुरुष के जीना बहुत मुश्किल है, ये बुरे दिन हैं। सायला अपने कुल में दूसरी शादी करना चाहती है और वह शादी करेगी। सायला जानती है कि आप, जो सायला की तरह प्रगतिशील सोच रखते हैं, इस बारे में सूचित किए जाने चाहिए। मैं निवेदन करती हूँ कि इस आवेदन को आपके अभिलेखों में दर्ज किया जाए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर मैं इस दस्तावेज़ का उपयोग कर सकूँ।"138

137 शब्दशः।
138 इस संपूर्ण आवेदन को रंधावा ने उत्कृष्ट उर्दू (गुरुमुखी लिपि) में शब्दशः उद्धृत किया है। भाषा कानूनी है, और इसमें आवेदक को तीसरे व्यक्ति के रूप में संदर्भित किया गया है क्योंकि वह स्वयं के बारे में बात कर रही है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

तेल उत्पादक परिवार की आवेदक गंगा दायी ने अपने आवेदन में कहा कि उनके पति बिंदा दीन पिछले 7 वर्षों से लापता हैं और इसलिए वह पुनर्विवाह करना चाहती हैं। आवेदक, लोध समुदाय की राम रजिया ने अपने आवेदन में कहा कि उनकी शादी को 16-17 साल हो चुके हैं; उनकी शादी तब हुई थी जब वे नाबालिग थीं। उनके पति ने अन्यायपूर्वक दूसरी स्त्री से विवाह कर लिया और उन्हें छोड़ दिया। वे मजदूरी करके अपना जीवन यापन करती थीं। चूंकि वे अभी भी युवा थीं और उन्हें डर था कि कोई उनकी इज्जत लूट सकता है, इसलिए उन्होंने पुनर्विवाह की अनुमति मांगी।
ऐसे आवेदनों को केवल प्रस्तुत किया जाएगा। उन पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी, हम केवल 'नोट कर लिया गया। फाइल में दर्ज करें' लिख देंगे।
रायबरेली के उपायुक्त को कोर्ट ऑफ वार्ड्स के कर्मचारियों की निगरानी भी करनी

थी। एक ज़िल्लादार ने शिकायत की कि उसका क्लर्क भ्रष्ट है और वेश्याओं को बुलाता है। मुर्तज़ा मसीह नामक क्लर्क को पूछताछ के लिए बुलाया गया। ज़िलादार के आरोपों का जवाब देते हुए उन्होंने कहा, “27 जून 1942 की शाम को हुज़ूर एक अवकाश यात्रा से छटवा लौट रहे थे। हुज़ूर ने मुझसे पूछा कि क्या वहाँ कोई गायक है। तदनुसार, मैंने एक पुरुष गायक और एक वेश्या को बुलाया। जिस पुरुष गायक के बारे में मैं पहले ही बता चुका हूँ, वह दिन में ही आ गया था। हुज़ूर ने मुझसे यह भी पूछा कि गायक पुरुष है या स्त्री। मैंने उत्तर दिया कि गायक पुरुष है, स्त्री नहीं। आदेशानुसार, उस पुरुष ने गाना शुरू कर दिया। ज़िले में बारिश के कारण, गायक हुज़ूर से डेढ़ गज की दूरी पर गाने लगा, जो एक चारपाई पर लेटे हुए थे। वेश्या के आने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन वह रात 10 बजे आ गई। मैंने उसे भी वहाँ जाकर यह सुनिश्चित करने के लिए कहा कि क्या हुज़ूर उसका गाना सुनना चाहते हैं, और तभी वह गाएगी। अन्यथा, हुज़ूर उसका प्रदर्शन अस्वीकार कर सकते थे। इसलिए वह भी हुज़ूर से पहले आई, वहाँ बैठ गई और गाने लगी। जब वे सुबह अपने भुगतान मांगने आए, तो हम वहाँ से चले गए। यह जानकर मुझे बहुत हैरानी हुई कि संगीत रात के 3 बजे तक चलता रहा। मैंने ये सारे कार्यक्रम तो सिर्फ हुजूर की खुशी के लिए आयोजित किए थे।

(पृष्ठ 148)

इस सौदे में मेरे दो रुपये भी चले गए, लेकिन हुजूर सुबह वेश्या को बुलाए जाने पर भड़क गए। अगर वेश्या सरकारी इमारत में घुस गई और इमारत की इज्जत कम हुई, और हुजूर का अपमान हुआ, तो यही बात उस आदमी के गाने के बारे में भी कही जा सकती है। इस औरत ने भी हुजूर की इच्छा के अनुसार ही गाया। अगर हुजूर ने उसे जाने के लिए कहा होता, तो वह मान जाती, और मना करने पर भी उसे वहाँ एक मिनट भी नहीं रहने दिया जाता। सच्चाई सामने आ गई है, बाकी आपका फैसला है। युद्ध कोष बढ़ाने के लिए कई नीतियां बनाई गईं। खजूर गांव के तालुकदार सी.आई.ई. की उपाधि पाना चाहते थे; उन्होंने इसके लिए 50,000 रुपये दान में दिए। मैंने मन ही मन सोचा कि वह कितने मूर्ख हैं, पर मैं कुछ कह नहीं सका। हमने युद्ध कोष के लिए संगीत, नृत्य और कविता पाठ का आयोजन किया; रायबरेली में रौनक छा गई। अप्रैल-मई 1944 में, राम लखन दास नाम का एक संन्यासी ऋषिकेश से रायबरेली

आया। 13 अप्रैल 1944 को सुबह 7:30 बजे, उसे एक गड्ढे में धकेल दिया गया। वह गड्ढे में पालथी मारकर बैठ गया और उस पर लकड़ी की पट्टियाँ रख दी गईं। पट्टियों के ऊपर रेत डाली गई, फिर उनके ऊपर ईंटें रखी गईं और सीमेंट से जोड़ दी गईं। अगले दिन सुबह 8 बजे गड्ढा खोला गया। राम लखन दास गहरी ध्यान अवस्था में थे और आठ लोगों ने उन्हें उसी अवस्था में गड्ढे से बाहर निकाला। उनके सिर पर बर्फ की एक पटिया रखी गई और वे धीरे-धीरे होश में आ गए। सिविल सर्जन

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उनकी जांच की गई और पाया गया कि उनकी हृदय गति धीमी थी। सैकड़ों लोग स्वामी के दर्शन करने आए।

युद्ध के उन दिनों में हमारे कार्यालय में कई फर्जी पत्र भी आते थे। एक पत्र आया, जिसमें लिखा था, “बाबा अब्दुल सम्मद साहब मोहनगंज के मौजा भीखीपुर पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में रहते हैं। उनका कहना है कि ब्रिटानिया भाग जाएगा। वे बह गए हैं; वे निश्चित रूप से यहाँ नहीं रह सकते।” यह पत्र लखनऊ के कमिश्नर श्री बिशप के लिए आया था; उन्होंने इसे चिह्नित करके मुझे भेज दिया। मैंने इसे पढ़ा और अपने कार्यालय में रख लिया।

मैं दलमऊ में गंगा के किनारे डेरा डाले हुए था। सर्दी का मौसम था और हम ठंड से बचने के लिए धातु के चूल्हे में लकड़ियाँ जला रहे थे। खाना खाने के बाद मैं दो घंटे पढ़ता रहा और सहायक राम आसरे मेरे पैर दबा रहे थे। मैंने उनसे जाने से पहले जलती हुई लकड़ियों पर पानी डालने को कहा। मैं थका हुआ था, इसलिए मुझे नींद आ गई। मैं आधी रात को जागा।

(पृष्ठ 149)

मैंने देखा कि तम्बू की छत में आग लगी हुई थी। मैंने जलती हुई छत को खींचकर दूर फेंक दिया। मैंने देखा कि ड्यूटी पर तैनात संतरी एक तरफ सो रहा था। अगर मैं घबरा जाता, तो अपनी जान नहीं बचा पाता। मैंने राम आसरे को डांटा, लेकिन उसे कोई दंड नहीं दिया।

गांवों का भ्रमण करते समय मैंने कई रोचक दृश्य देखे। किदरवापुर गांव के पास सड़क पर मुझे एक नीम का पेड़ दिखाई दिया; उसके तने से पानी टपक रहा था और बुलबुले

उठ रहे थे। जब मैंने गांव वालों से पूछा, तो उन्होंने बताया कि नीम का पेड़ रो रहा था। वह अंग्रेजों के लिए दुखी था क्योंकि युद्ध चल रहा था। सूअर और गिलहरियां उसका पानी पीते थे, और यह भी कहा जाता है कि उस पानी से मुहांसे और छाले भी ठीक हो जाते थे।

सर्दियों में इस जिले का दौरा करते हुए मुझे बहुत खुशी हुई। एक बार मैं खजूर गांव के एक आम के बाग में डेरा डाले हुए था। गंगा नदी इस गांव के पास से बहती है। रात का समय था और कुछ लोग नाव में बैठे थे। वे मिट्टी के दीये जलाकर पानी में तैरा रहे थे। दीयों की रोशनी से पानी में सुंदर परछाइयाँ और आकृतियाँ बन रही थीं। कई दीयों की लौ तेज थी, जबकि कुछ की रोशनी धीमी थी। लेकिन, अंत में, सभी दीये गंगा की लहरों में विलीन हो गए। मनुष्य का जीवन भी कुछ ऐसा ही है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 20

अंग्रेज़ और भारतीय अधिकारियों के बीच संघर्ष

(पृष्ठ 150)

महात्मा गांधी ने अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने हमें सभी कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। उनके नामों की दो सूचियाँ जिला कार्यालयों को भेजी गईं। 'ए' सूची में उन नेताओं के नाम थे जिन्हें गिरफ्तार करना अनिवार्य था। 'बी' सूची में उन नेताओं के नाम थे जिन्हें उपायुक्त गिरफ्तार कर सकते थे या नहीं, यह उनका विवेकाधिकार था। चूंकि कांग्रेस नेता मेरे साथ सहयोग करते थे, इसलिए सूची में नाम होने के बावजूद मैंने उनमें से कई को गिरफ्तार नहीं किया। गिरफ्तार किए गए लोगों के साथ भी जेल में अच्छा व्यवहार किया जाता था। सेमरी के तालुकदार को शराब का शौक था; उन्हें जेल में भी शराब की आपूर्ति जारी रही।

उन दिनों कई घोटाले भी हुए। अंग्रेजों का मानना था कि 1857 का दौर लौट आया है और प्रदर्शनकारियों के साथ सख्ती से पेश आने पर ही उनकी जान सुरक्षित रहेगी।

भादरी के तहसीलदार बजरंग बहादुर सिंह ट्रेन से यात्रा कर रहे थे और उन्होंने गांधी टोपी पहन रखी थी। एक अंग्रेज सहायक पुलिस अधिकारी (एएसपी) ट्रेन में घुसा और उसने राजा से अपनी टोपी उतारने को कहा। राजा ने इनकार कर दिया और अपने साथ आए पांचों नौकरों को भी गांधी टोपी पहनने को कहा। सहायक पुलिस अधिकारी ने एक नौकर को गिरफ्तार कर लिया; उसे मेरे सामने पेश किया गया। मैंने पाया कि गांधी टोपी पहनने पर रोक लगाने वाला कोई कानून नहीं था, इसलिए मैंने उसे रिहा कर दिया।

(पृष्ठ 151)
अगले दिन, बछरावां के थानेदार ने पंडित शिव शंकर त्रिपाठी को गिरफ्तार कर लिया, जो एक प्रसिद्ध वकील और जिला बोर्ड के अध्यक्ष भी थे, और उन्हें मेरे सामने पेश किया। मुझे पता चला कि त्रिपाठी समेरी की रानी के साथ कार में थे और उनकी कार पर कांग्रेस का झंडा लगा हुआ था। कुछ अंग्रेज सेना अधिकारी वहां से गुजर रहे थे, उन्होंने उनकी कार रोकी और उन्हें थानेदार के हवाले कर दिया। मैंने त्रिपाठी को रिहा कर दिया और उन्हें सलाह दी कि जब माहौल तनावपूर्ण हो तो उन्हें कार पर झंडा लगाने जैसी बहादुरी नहीं दिखानी चाहिए।
जहां बड़े नेता और धनी लोग भयभीत हो गए, वहीं गरीब कांग्रेसी कार्यकर्ता साहसी बने रहे। 24 अगस्त 1942 को दलारो नाम के एक युवक को मेरे सामने पेश किया गया। उसने धोती-कुर्ता पहना हुआ था और उसके चेहरे पर भय का कोई निशान नहीं था। मैंने उससे पूछा कि उसे क्यों गिरफ्तार किया गया है। उसने उत्तर दिया, “मैं गांधीजी के आदेशानुसार सत्याग्रह में भाग लेना चाहता हूँ।” मैंने उससे पूछा, “कैसे?” उसने जवाब दिया कि वह रेल की पटरियाँ तो नहीं काट सकता, लेकिन वह अदालतों के सामने धरना देगा और किसानों से कर न देने का आग्रह करेगा।
मैं 20 अगस्त 1942 को रायबरेली जेल का निरीक्षण करने गया था। कुछ सत्याग्रहियों को महात्मा गांधी के समर्थन में नारे लगाने के कारण जेल की कोठरियों में बंद कर दिया गया था। मैंने देखा कि एक व्यक्ति जेल की कोठरी के फर्श पर लेटा हुआ था और उसने खुद को धोती से ढँका हुआ था। उसकी आँखों में क्रोध झलक रहा था। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने कहा, “तुम हिंदुस्तानी हो, तुम्हें शर्म आनी चाहिए। अगर हम आजादी के लिए लड़ रहे हैं, तो हमारे संघर्ष से तुम्हें भी लाभ होगा। हम

तुम्हारे लिए भी लड़ रहे हैं।" मैंने मन ही मन सोचा कि वह व्यक्ति सही कह रहा था। ऐसे ही लोगों के बलिदानों के कारण ही भारतीय लोग उच्च पदों पर कार्यरत हैं। जेल अधीक्षक ने कहा, "यह व्यक्ति बदमाश है, इसे धारा 52 के तहत कई बार दंडित किया जा चुका है, इसे इसी कारण से इसकी बस्ती से यहाँ भेजा गया है।"

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

उन संघर्ष के दिनों में कई फर्जी लोग भी फायदा उठा रहे थे। उनमें से एक मौलवी अनीस अहमद था; वह खुद को अखिल भारतीय रक्षा लीग का सचिव बताता था। वह रायबरेली आता, कुछ अनुयायियों को इकट्ठा करता और चाय पीता। वह अपनी रिपोर्ट में इसे एक महत्वपूर्ण बैठक के रूप में पेश करता और दावा करता कि इसमें प्रस्ताव पारित किए गए थे। वह भारतीय उपायुक्तों, और विशेष रूप से मेरे खिलाफ झूठी रिपोर्टें लिखता और उन भ्रामक रिपोर्टों को लखनऊ के आयुक्त बिशप को भेजता था।

(पृष्ठ 152)

वह दावा करता था कि इन अधिकारियों की निष्ठा कांग्रेस के प्रति थी। उन दिनों, कांग्रेस के प्रति सहानुभूति रखना या देशभक्त होना अपराध माना जाता था। किसी को बदनाम करने के लिए, उन्हें कांग्रेसी की उपाधि दे दी जाती थी।

भारतीय और अंग्रेज़ आईसीएस अधिकारियों के बीच गहरी दुश्मनी पनप गई। अंग्रेजों का मानना था कि भारतीय अधिकारी उन्हें बाहर निकालने और उनकी नौकरियां छीनने की कोशिश कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के भारतीय आईसीएस अधिकारी स्वाभाविक रूप से देशभक्त थे और उन्होंने अपने लोगों के खिलाफ ऐसा कुछ नहीं किया जिससे उन्हें भारतीय होने पर शर्म महसूस हो; इस नियम के अपवाद पन्ना लाल (एक कमिश्नर) और हीरा शिवदासानी थे। शिवदासानी मेरे बाद आगरा के कलेक्टर बने। उन्होंने गवर्नर हेलिट का वजन सोने की ईंटों में करवाया और वह सोना युद्ध कोष में दान कर दिया। इस घृणित घटना से सभी अधिकारियों ने अपनी नाराजगी व्यक्त की।

उन दिनों एक विचित्र घटना घटी। यह घटना आई.सी.एस. अधिकारी बी.बी. सिंह से संबंधित थी। घटना इस प्रकार थी:

बी.बी. सिंह, उर्फ बृज भूषण सिंह, लखनऊ सचिवालय में सचिव थे। उनका विवाह

आगरा के एक राजसी राजपूत परिवार की एक सुंदर कन्या से हुआ था। कन्या के परिवार में यह प्रथा थी कि विवाह से पहले उसकी देखभाल करने वाली दासी को उसके साथ उसके ससुराल भेजा जाता था। इसी तरह, बलेशिया नाम की एक युवती को उनकी पत्नी के साथ उनके घर भेजा गया। कुछ समय वहाँ रहने के बाद, बलेशिया का उनके ड्राइवर के साथ प्रेम संबंध हो गया और वह गर्भवती हो गई। जब बी.बी. सिंह की पत्नी को इस बात का पता चला, तो वह बहुत दुखी हुईं और उन्होंने अपनी दासी को खूब खरी-खोटी सुनाई। दासी ने अपनी गलती स्वीकार कर ली, लेकिन ड्राइवर ने अपनी गर्भावस्था के लिए साहब को दोषी ठहराना शुरू कर दिया।
कुछ दिन पहले बी.बी. सिंह को एक ज्योतिषी ने बताया था कि यह साल उनके लिए बहुत कष्टदायक रहेगा; ज्योतिषी ने यह भी कहा था कि एक दिन सिंह किसी की हत्या करेंगे। उन्होंने यह बात अपने मित्र शंकर प्रसाद और एक अन्य आई.सी.एस. अधिकारी के साथ क्लब में व्हिस्की पीते हुए साझा की। उन्होंने दावा किया कि ज्योतिषी की भविष्यवाणी गलत साबित हुई और उनका दिन अच्छा बीता, ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार कुछ भी नहीं हुआ। उस बातचीत के बाद वे घर लौटे और उनके आते ही उनकी पत्नी ने गुस्से में उन्हें बलेशिया की घटना के बारे में बताया। क्रोधित होकर वे बलेशिया पर चिल्लाने लगे और उसे जोर से लात मारी। वह गिर पड़ी, बेहोश हो गई और उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई।

(पृष्ठ 153)
यह घटना उनकी चिंताओं का कारण बन गई; इसने उनके शांति और सुख के दिनों को समाप्त कर दिया। पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने के बजाय, उन्होंने घबराकर किसी की सलाह मानी, शव को कार में लादा, रात में कार लेकर कहीं चले गए और शव का अंतिम संस्कार कर दिया। इस कार्रवाई के बाद भी वे चिंतित रहे, और अगले दिन ड्राइवर ने यह बात फैला दी कि बी.बी. सिंह

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उसका उस महिला के साथ विवाहेतर संबंध था। और इसलिए, जब वह गर्भवती हुई तो उन्होंने उसे मार डाला। अफवाहें जंगल की आग की तरह फैल गईं और ज्योतिषी की भविष्यवाणी सच साबित हुई।

सचिवालय में कार्यरत आईसीएस अधिकारी कृपा सिंधु मिश्रा एक घिनौना आदमी था। वह एक गरीब परिवार से था। किसी व्यापारी ने उसकी शिक्षा में मदद की और उसे विदेश भेज दिया। वहाँ उसने आईसीएस परीक्षा उत्तीर्ण की। जब वह लौटा, तो उस व्यापारी ने अपनी बेटी का विवाह उससे कर दिया। वह कुछ समय तक उसके साथ रहा। उनके दो बच्चे हुए। बाद में, उसने उसकी छोटी बहन से भी विवाह कर लिया। उनका एक बच्चा हुआ। उसने अपनी दोनों पत्नियों को सहारनपुर में छोड़ दिया; वे बेचारी पत्नियाँ दुखी होकर रोती रहती थीं। वे उसके बेईमान व्यवहार के बारे में सभी अधिकारियों को बताती थीं। इसी तरह उसने मीरा नाम की एक अभिनेत्री से विवाह कर लिया। अन्य लोगों की तरह, बी.बी. सिंह भी इस दुष्ट के जाल में फंस गया। यह मिश्रा उनके पड़ोस में रहता था और वह उनकी कार से अपने कार्यालय जाता था। उनके बीच अच्छे संबंध थे। जब मिश्रा को बलेसिया कांड के बारे में पता चला, तो उसने मुख्य सचिव मूडी को इसकी सूचना दी। मूडी को भारतीय अधिकारियों से सख्त नफरत थी, इसलिए उसे बी.बी. सिंह से बदला लेने के लिए आवश्यक जानकारी मिल गई। उन्होंने इस मामले की जांच शुरू करवाई। आपने कृपा सिंधु मिश्रा द्वारा बी.बी. सिंह के लिए की गई कृपा के बारे में पढ़ा है, लेकिन आप आगे पढ़ेंगे कि मिश्रा का क्या हाल हुआ। 139

एन.सी. मिश्रा नाम के एक एसपी का तबादला रायबरेली से लखनऊ हो गया था। उन्होंने अपना पूरा जीवन अविवाहित बिताया था और बी.बी. सिंह के साथ उनकी अच्छी दोस्ती थी। वे श्रीमती बी.बी. सिंह को 'भाभी जी' कहकर बुलाते थे और जब भी बी.बी. सिंह रायबरेली जाते, वे उनके घर में ठहरते थे। यह सब दिखावा था, मिश्रा जी बेवफा थे।

(पृष्ठ 154)

उन्हें इस जांच का संचालन करने के लिए नियुक्त किया गया था। वे देखने में बेहद खुशमिजाज लगते थे, लेकिन उन्हें पुलिस द्वारा अपनाई जाने वाली सभी रणनीतियों की जानकारी थी, जिनका उपयोग उन्होंने अंग्रेजों को प्रभावित करने और बी.बी. सिंह के खिलाफ झूठे सबूत गढ़ने के लिए किया।

कैलाश नाथ काटजू, जो विकास मंत्री भी रह चुके थे, एक प्रख्यात वकील और प्रगतिशील एवं देशभक्त व्यक्ति थे। उन्होंने बी.बी. सिंह का प्रतिनिधित्व उनके वकील

के रूप में किया। भारतीय अधिकारियों ने बी.बी. सिंह का समर्थन किया; उनके मित्रों, विशेषकर शंकर प्रसाद ने, उन्हें शारीरिक, भावनात्मक और आर्थिक रूप से सहायता प्रदान की। उन्होंने अपनी मित्रता की ईमानदारी साबित की, जिसका लोगों ने बाद में वास्तव में सम्मान किया। अदालत ने बी.बी. सिंह को रिहा कर दिया, लेकिन दुर्भाग्य ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। उनका सुखमय जीवन दुखों का शिकार हो गया और उनकी पत्नी को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। वह बीमार पड़ने लगीं। उनका एक बच्चा था; उसकी देखभाल नहीं हो पाने के कारण, क्योंकि वह बीमार था, उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। कुछ दिनों बाद, उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया। वे अत्यधिक तनाव में थे।

बी.बी. सिंह इलाहाबाद के आबकारी आयुक्त बने। कुछ समय बाद, वे इलाहाबाद से मिर्जापुर तक ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। तभी उन्होंने दो लोगों को बात करते सुना। वे कह रहे थे कि यह कितना अन्यायपूर्ण है कि एक आई.सी.एस. अधिकारी ने एक गरीब नौकरानी का बलात्कार किया और गर्भवती होने पर उसकी हत्या कर दी। यह सुनकर वे अपमान सहन नहीं कर सके और गहरे अवसाद में डूब गए। वे घर लौटे और विष खाकर अपने कष्टमय जीवन का अंत कर लिया।

मुझे बी.बी. सिंह के प्रति पूरी सहानुभूति थी और मैंने उनकी आर्थिक सहायता की, हर संभव तरीके से उनका समर्थन किया। बी.बी. सिंह एक मिलनसार, दयालु और उदार अधिकारी थे।

139 कृपा का अर्थ है आशीर्वाद या अनुग्रह। यहाँ, रंधावा इस शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप से कर रहे हैं। रंधावा के अनुसार, 'कृपा' नाम होने के बावजूद, प्रश्नगत आई.सी.एस. अधिकारी में शिष्टाचार का कोई नामोनिशान नहीं था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। इससे सभी को मदद मिली। घटनाओं की इस श्रृंखला ने मुझे सिखाया कि कैसे प्रतिकूल परिस्थितियाँ एक दयालु व्यक्ति को भी घेर सकती हैं। इसने यह भी साबित किया कि भाग्य में शक्ति होती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 21

रायबरेली से दिल्ली तक
कृषि परिषद के सचिव बनना
(मार्च 1945 - नवंबर 1946)

(पृष्ठ 155)
रायबरेली में चार साल रहने के बाद हम यहाँ की गर्म जलवायु, नीरसता और तालुकदारों से काफी तंग आ चुके थे। बिजली बीसवीं सदी का सबसे बड़ा वरदान है, लेकिन रायबरेली में बिजली नहीं थी। मई-जून में यहाँ भीषण गर्मी पड़ती थी और रात में लू चलती थी। हम अपने बिस्तरों के पास पानी की बाल्टियाँ रखते थे, दिन में तीन-चार बार पानी छिड़कते थे और चादरों को गीला करके ओढ़ते थे। मानसून के दौरान हम बरामदे में सोते थे और कुली हमें पंखा करता था। रात में हम पेट्रोमैक्स लालटेन की रोशनी में पढ़ाई करते थे।
एक दिन जब मैं बरामदे में बैठा था, तो सहारनपुर के दिनों से परिचित एक ज्योतिषी मुझसे मिलने आया। वह अमृतसर का भाटड़ा था और उसका नाम लखी सिंह था। वह मुझसे फैजाबाद में भी मिल चुका था और उसके पास पत्रों का एक गट्ठा था। मंत्रियों को छोड़कर उत्तर प्रदेश में शायद ही कोई उच्च अधिकारी ऐसा था जिसका पत्र उसके पास न हो। मैं उसे पैसे नहीं देता था, बल्कि वह जो कुछ भी कहता था उसे डायरी में लिख लेता था और देखता था कि उसकी कितनी बातें सच हुईं। मेरे तबादलों, नियुक्तियों और बच्चों के जन्म के बारे में उसकी भविष्यवाणियां सच हुईं।
लखी सिंह ने मुझसे पूछा कि मैं किस नथुने से सांस ले रहा हूँ। मैंने अपने दोनों नथुनों को बार-बार दबाया और जवाब दिया कि मैं अपने दाहिने नथुने से सांस ले रहा हूँ। उन्होंने मुझसे एक फूल का नाम सोचने को कहा। इसके बाद उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और मुझे बताया कि मैंने पैंसी फूल का नाम सोचा था।

(पृष्ठ 156)
यह बात सही थी। फिर उन्होंने मुझसे एक सवाल पूछने को कहा। मैंने उनसे अपने

तबादले के बारे में पूछा, कि यह कब और कहाँ होगा। उन्होंने बताया कि मार्च के महीने में मेरा तबादला पश्चिम के किसी बड़े शहर में होगा। उन्होंने यह भी बताया कि मुझे 1945 में एक लंबी विदेश यात्रा पर जाना होगा और उसी दौरान मुझे एक पुत्र का जन्म होगा।
कुछ दिनों बाद मुझे लखनऊ के मुख्य सचिव का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि इंपीरियल काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च में सचिव का पद रिक्त है और मुझसे पूछा गया कि क्या मैं भारत सरकार को इस पद के लिए अपना नाम प्रस्तावित करवाना चाहता/चाहती हूँ। मुझे ग्राम सुधार और प्रगतिशील कृषि में बहुत रुचि थी, इसलिए मैंने हाँ कह दी। दो सप्ताह बाद मुझे तबादले का आदेश मिला और हमने अपना सामान पैक कर लिया।
मेरे तबादले से रायबरेली के गांवों के लोग बहुत दुखी थे। मार्च में, वन वृक्ष गहरे लाल रंग के फूलों से लदे होते हैं। ग्रामीणों ने हमारी गाड़ी को इन गहरे लाल फूलों से सजाया। रायबरेली से लखनऊ की यात्रा के दौरान, हर स्टेशन पर सैकड़ों लोग हमसे मिलने आए। वे ढोल बजाते और गाते हुए रेलवे स्टेशनों पर आए और मुझे पान, सुपारी और नारियल भेंट किए। उनके इस स्नेह ने मुझे बहुत प्रभावित किया। उत्तर प्रदेश, चाहे कोई भी प्रांत हो, अगर आप कर सकते हैं...

140 पलाश या ढाक के पेड़ों को उनके फूलों के चटख लाल रंग के कारण 'जंगल की ज्वाला' के पौधे भी कहा जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। लोगों के साथ सहानुभूति रखें, तो वे निश्चित रूप से आपको सकारात्मक रूप से याद रखेंगे।141 मुझे 1966 में फिर से रायबरेली जाने का अवसर मिला। मैं दलमाऊ और दो-तीन अन्य स्थानों पर गया। मैं जहाँ भी गया, ग्रामीण मुझसे मिले और हमने पुराने दिनों की बातें कीं। एक ग्रामीण ने बताया कि 1942-44 में, भले ही युद्ध चल रहा था और ग्राम सुधार के लिए कोई सरकारी निधि नहीं थी, फिर भी रंधावा साहब ने कई हाई स्कूल और पंचायत कार्यालयों का निर्माण करवाया। उन्होंने कहा कि आज के लोगों में वह उत्साह नहीं है। जिले के उपायुक्त ने कहा कि उन दिनों, एक जिले में केवल एक ही उपायुक्त होता था, जबकि आज, हर

विधायक उपायुक्त की तरह काम करता है।
दिल्ली में आवास ढूंढने में हमें बहुत परेशानी हुई। दिल्ली में नौकरी मिलना तो आसान है, लेकिन घर मिलना मुश्किल। मैं एस्टेट ऑफिसर मेस राम के पास गया। उन्होंने बताया कि मांग अधिक होने के कारण अगले तीन महीनों में हमें सरकारी घर मिलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। मैं आगरा के विधायक राजा कुशलपाल सिंह के पास गया और उन्हें घर न मिलने की अपनी समस्या बताई। उन्होंने कहा कि हम उनके सरकारी घर में रह सकते हैं, जो 4, फिरोजशाह रोड पर स्थित है।

(पृष्ठ 157)
हमने उस घर में कुछ महीने बिताए।
मेरा दफ्तर नॉर्थ ब्लॉक के एक छोटे से कमरे में था; उसमें लकड़ी की दीवार थी। मुझे अक्सर उपायुक्त का पद छोड़ने का अफसोस होता था। रायबरेली में हमारा घर बहुत बड़ा और हवादार था, और हमने उसे मात्र 40 रुपये प्रति माह पर किराए पर लिया था। पूरे जिले पर मेरा पूरा अधिकार था।
एक दिन जब मैं एस्टेट ऑफिस गया, तो मुझे पता चला कि ठेकेदार सर शोभा सिंह ने गोल्फ कोर्स के पास तीन इमारतें बनवाई थीं। उनका नाम सुजान सिंह पार्क था। इन इमारतों में बहुत सारे फ्लैट थे। मैं उसी समय वहाँ गया और ब्लॉक ए की दूसरी मंजिल पर फ्लैट नंबर 24 चुन लिया; इसमें 2 कमरे, एक रसोईघर और एक शौचालय था। गर्मियों में हम तीसरी मंजिल की छत पर सोते थे। फ्लैट में रहने का यह हमारा पहला और आखिरी अनुभव था।
मुझे अपने काम में बहुत रुचि थी। आई.सी.ए.आर. के उपाध्यक्ष सर हर्बर्ट स्टुअर्ट, जो पहले पंजाब में कृषि निदेशक के रूप में कार्यरत थे, एक मेहनती और अनुभवी अधिकारी थे। लेकिन वे नए विचारों के बारे में नहीं सोच पाते थे, और यदि उन्हें कोई नया विचार सुझाया जाता, तो वे उसे बड़ी मुश्किल से स्वीकार करते थे। सर फ़िरोज़ खारेग़त कृषि मंत्रालय के सचिव थे। उनके विचार गहन थे और उन्हें कृषि संबंधी समस्याओं का व्यापक ज्ञान था। लेकिन समस्या आने पर निर्णय लेने में उन्हें कठिनाई होती थी, क्योंकि वे असमंजस में पड़ जाते थे और परस्पर विरोधी समाधान सुझाते थे। वे इतने दुविधाग्रस्त थे कि जब उनसे 1947 में पूछा गया कि क्या वे पाकिस्तान जाना चाहते हैं या भारत में रहना चाहते हैं, तो उन्होंने पाकिस्तान और भारत दोनों के

लिए हाँ लिखा।
सर जोगिंदर सिंह कृषि मंत्री थे। वे एक सुसंस्कृत और दयालु व्यक्ति थे। उन्होंने अंग्रेजी में कई पुस्तकें भी लिखीं, और उनकी पुस्तक 'नूरजहाँ' आज भी पढ़ी जाती है। जब मैं काम से घर लौटता था, तो मुझे रास्ते में सर जोगिंदर सिंह से मिलने का पूरा भरोसा रहता था। उनके मित्र उन्हें इसी नाम से पुकारते थे।

141 जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, यू.पी. से तात्पर्य संयुक्त प्रांत (आज उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड क्षेत्र) से है। सी.पी. से तात्पर्य मध्य प्रांतों से है, जो मोटे तौर पर आज के मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ क्षेत्रों के अनुरूप है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। जोगी। उनका विवाह एक अंग्रेज महिला से हुआ था। वह बूढ़ी और बदसूरत थी, और मुझे बहुत दुख हुआ कि इतने दयालु व्यक्ति को उस चुड़ैल ने अपने वश में कर लिया। हम सभी गलतियाँ करते हैं, लेकिन जोगी ने बहुत बड़ी गलती की थी। सर जोगिंदर सिंह को कृषि का बहुत अनुभव था, और वे ट्रैक्टर से अपने खेतों की जुताई करने वाले पहले किसान थे।

(पृष्ठ 158)
आई.सी.ए.आर. में मुझे डॉ. पी.वी. सुखात्मे सबसे ज्यादा पसंद थे। उनका मुकाबला प्रोफेसर पी.सी. महालनोबिस नाम के एक बेहद चतुर बंगाली प्रोफेसर से था। खेतों की उत्पादकता का अनुमान लगाने के लिए सुखात्मे ने यादृच्छिक नमूनाकरण की तकनीक विकसित की, जो हमारी राय में महालनोबिस की पद्धति से बेहतर थी। सुखात्मे महालनोबिस की पद्धति से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सके और अंततः उन्होंने आई.सी.ए.आर. में अपनी नौकरी छोड़कर एफ.ए.ओ. में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने काफी नाम कमाया।
मैंने आई.सी.ए.आर. में इंडियन फार्मिंग जर्नल पर ध्यान केंद्रित किया और 'डेवलपिंग विलेज इंडिया' नामक एक विशेष अंक प्रकाशित किया। इस अंक के माध्यम से मैंने भारत में लागू की जा रही ग्राम सुधार योजनाओं को एक नए तरीके से प्रस्तुत किया। बाद में इसे मैकमिलन द्वारा पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

उन दिनों मैं लाहौर गया था। मैं रामा-कृष्णा स्टोर में किताबें देख रहा था और वहीं मेरी मुलाकात देविंदर सत्यार्थी से हुई। लंबी दाढ़ी, गुस्सैल आँखें और कंधे तक पहुँचते बाल। ये वही देविंदर सत्यार्थी थे जिन्होंने पंजाब के लोकगीतों को संकलित करने में महान कार्य किया था। मुझे उनकी किताब 'गिद्दा' बहुत पसंद आई थी। मैंने एक रेस्तरां में सत्यार्थी को चाय पिलाई और फिर अनारकली बाजार से कपड़े खरीदने का फैसला किया। मैंने इकबाल के लिए एक दुपट्टा खरीदा। सत्यार्थी ने मुझसे अपनी पत्नी के लिए भी एक दुपट्टा खरीदने को कहा। मैंने उनसे दुपट्टा चुनने को कहा। उन्होंने अलग-अलग रंगों के दो दुपट्टे चुने। मैंने पैसे दिए और उनसे विदा ली। मैंने उनके भिखारी जैसे जीवन के बारे में सोचा; वे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और अगर उन्हें कोई काम मिल जाता, तो वे खूब लिख सकते थे। सत्यार्थी एक शानदार फोटोग्राफर थे और उन्हें किताबों के लेआउट बनाने का भी अनुभव था। मैं दिल्ली लौट आया, उन्हें आई.सी.ए.आर. में सहायक संपादक की नौकरी दी और उन्हें इंडियन फार्मिंग पत्रिका के विशेष अंक 'डेवलपिंग विलेज इंडिया' का लेआउट तैयार करने का काम सौंपा। उन्होंने यह काम बहुत अच्छे से किया।
1946 में यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज भारत छोड़ देंगे। सर हर्बर्ट स्टुअर्ट सेवानिवृत्त हो रहे थे और भारत छोड़ रहे थे, इसलिए आई.सी.ए.आर. के उपाध्यक्ष का चुनाव करना आवश्यक हो गया। सर जोगिंदर सिंह कृषि और शिक्षा मंत्री थे और उन्हें एक उम्मीदवार ढूंढना था।

(पृष्ठ 159)
सर दातर सिंह मोंटगोमरी के एक प्रसिद्ध जमींदार थे और पशुपालन में उनकी गहरी रुचि थी। दातर सिंह हट्टे-कट्टे थे; वे अपनी दाढ़ी संवारते और रंगते थे। वे सफेद पगड़ी और मोटे चश्मे पहनते थे। उन्हें ताश खेलना बहुत पसंद था; उनके घर पर हर शाम ब्रिज पार्टी होती थी और हर रविवार को विष्णु और भगवान सहाय भी इन पार्टियों में शामिल होते थे। वे उस पद को पाना चाहते थे। सर जोगिंदर सिंह दातर सिंह को पसंद नहीं करते थे। उनका मानना था कि दातर सिंह अच्छे मेजबान थे और लोगों को भोजन कराकर उनका दिल जीत लेते थे, लेकिन उनकी बुद्धि मंद थी। जब अंग्रेजी सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि दी, तब मोंटगोमरी के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर मोइनुद्दीन आई.सी.एस. ने ये पंक्तियाँ लिखीं:

“वे ‘सर’ दातार बन गए।”
भैंसों को चराकर।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

वह पढ़ना-लिखना नहीं जानता;
उसकी आंखें खराब हो गई हैं
महिलाओं को घूरकर।"

मेरी मुलाकात सर जोगिंदर सिंह से तब हुई जब वे अस्पताल में बीमार थे। मैंने उन्हें सर दातर सिंह को आई.सी.ए.आर. का उपाध्यक्ष बनाने के लिए राजी किया। दातर सिंह को अंग्रेजी पढ़ना-लिखना आसान नहीं था। मैंने सर दातर को बताया कि यह काम मुश्किल नहीं है। जब भी कोई जटिल समस्या आती, मैं दो नोट टाइप करवा लेता, एक मेरे लिए और एक उनके लिए। इस तरह वे अच्छे से काम शुरू कर सकते थे। वे बैठकों में जोर से बोलने और दूसरों से बातचीत करने में पहले से ही कुशल थे, और इस पद के अन्य उम्मीदवारों की तुलना में, वे खेती, भूमि स्वामित्व और पशुपालन की समस्याओं से कहीं अधिक परिचित थे। इस मामले में एक प्रसिद्ध कहावत सच साबित होती है: जब अरोरा कमर कस लेते हैं, तो वे लाहौर एक चौथाई मील में पहुँच जाते हैं।142

142 “जब कोई किसी चीज़ को हासिल करने का दृढ़ निश्चय कर लेता है, तो वह उसे पहले से कहीं अधिक तेज़ी से हासिल कर लेता है।” इसका तात्पर्य यह है कि एक बार जब बातूनी दातर सिंह ने अपनी पूरी क्षमता से काम करने का निश्चय कर लिया, तो उसने अपने कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करना शुरू कर दिया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 22

मेरी पहली हवाई यात्रा

(6 अक्टूबर – 20 नवंबर 1945)

(पृष्ठ 160)

सितंबर 1945 में मुझे खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) से निमंत्रण मिला कि क्यूबेक शहर में कृषि संबंधी मुद्दों पर एक विश्व सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। भारतीय प्रतिनिधिमंडल में आठ सदस्य थे और मुझे उस प्रतिनिधिमंडल का सचिव चुना गया था। दीवान सर टी. विजय राघवाचारी प्रतिनिधिमंडल के नेता थे। वे दुबले-पतले, 70 वर्ष के व्यक्ति थे, लेकिन दिल से जवान थे। जब महिलाओं को उनका नाम बोलने में कठिनाई होती थी, तो वे

मुझे 'प्रिय' कहकर बुलाओ। उन्हें यौन कहानियों की अच्छी याददाश्त थी और वे हमारा मनोरंजन करते रहते थे। वे ऊँची गर्दन वाला कोट और सुनहरे बॉर्डर वाली मैसूर पगड़ी पहनते थे। इसी वजह से वे जहाँ भी जाते, लोग उन्हें घूरते रहते थे। हमारे समूह में किसानों और ज़मींदारों के दो प्रतिनिधि थे, सरदार उज्ज्वल सिंह और सरदार हबीबुल्लाह। उज्ज्वल सिंह कद में छोटे थे, लेकिन बुद्धिमान थे। उन्होंने सरगोधा में 200 एकड़ में माल्टा का एक बड़ा बाग लगाया था। हबीबुल्लाह के पूर्वज सिख थे और उनके भाई यू. किरामत लाहौर के सरकारी कॉलेज के प्रिंसिपल थे। हबीबुल्लाह बड़े दिल के इंसान थे और वे मेरे दोस्त बन गए। चौथे सदस्य बॉम्बे से राज वाडे थे; वे एम.आर. भिडे के बहनोई थे और बाद में विदेश सेवा में शामिल हो गए। दिल्ली के प्रोफेसर डॉ. वी.के.आर.वी. राव पाँचवें सदस्य थे। उनके लंबे नाम के कारण अमेरिकी उन्हें वर्णमाला के अनुसार राव कहते थे।

(पृष्ठ 161)

राव बहुत ही सधे हुए वक्ता थे और एक बार बोलना शुरू करने के बाद वे रुकते ही नहीं थे। ऐसा लग रहा था मानो नल खुला ही छोड़ दिया गया हो। समूह में दो और प्रतिनिधि थे; मछली विशेषज्ञ डॉ. बेनी प्रसाद और बिहार के कृषि निदेशक डॉ. आर. सेठी। डॉ. एकरॉयड अंग्रेजी प्रतिनिधि थे, उन्होंने सम्मेलन में हमसे सीधे मुलाकात की। हम 6 अक्टूबर 1945 को सुबह 7:30 बजे पालम हवाई अड्डे से रवाना हुए। हम एक

डकोटा विमान में यात्रा कर रहे थे, जिसमें सात कुर्सियाँ और एक बेंच थी। यह डकोटा विमान 9:30 बजे जोधपुर पहुँचा; हम दूर से जोधपुर के किले को देख सकते थे और रेत के टीलों के बीच बसे शहर के चौकोर घरों को निहार सकते थे।
हम जोधपुर में 30 मिनट रुके और फिर तीन घंटे में कराची पहुँच गए। कराची में हम जस्टिस तैयब के साथ एक दिन रुके। 7 अक्टूबर को, हमने रात 2 बजे मारीपुर हवाई अड्डे से डकोटा विमान में उड़ान भरी। रास्ते में हम जिरासी और शायबा हवाई अड्डों पर रुके और अंत में काहिरा पहुँचे। मुझे विमान में चक्कर आने लगे और उतरते ही उल्टी हो गई; मेरे सारे कपड़े भीग गए। हमने अपने पासपोर्ट चेक करवाए, एक टैक्सी किराए पर ली और हेलियोपोलिस के पैलेस होटल गए। होटल में हमने मिस्र के वेटरों को लंबे लबादे और लाल टोपी पहने देखा; वे गुंडों जैसे लग रहे थे।
काहिरा में घरों में दो या तीन मंजिलें होती हैं, और घरों के पिछवाड़े में आमतौर पर खजूर के पेड़ लगे होते हैं। हम शाम को पिरामिड देखने गए और रात होने से पहले लौट आए।
हमारा यॉर्क विमान 8 अक्टूबर को सुबह 4:30 बजे काहिरा से रवाना हुआ। हमारा विमान 8000 फीट की ऊंचाई पर 240 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ रहा था। उड़ान सुगम थी और मुझे यात्रा का आनंद आने लगा। सूर्य की किरणों ने बादलों को सुनहरा रंग दिया था। भूमध्य सागर का हरा पानी मनमोहक लग रहा था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। नीचे ज़मीन थी, जबकि ऊपर नीला आकाश था। हम सुबह 10 बजे माल्टा द्वीप पर पहुँचे। एक पहाड़ी पर कुछ टूटे हुए हवाई जहाज पड़े थे, और फ़िलेबा बंदरगाह के पास डूबे हुए जहाजों की चिमनियाँ दिखाई दे रही थीं। ये उस युद्ध के निशान थे जो अब समाप्त हो चुका था। माल्टा की धरती बंजर और सूखी है, और जैतून के पेड़ों के अलावा कोई पेड़ दिखाई नहीं दे रहे थे। खेतों के चारों ओर पत्थर की दीवारें थीं।

(पृष्ठ 162)
हम मार्सिले पहुँचने के लिए सार्डिनिया द्वीप के ऊपर से उड़े। लाल छतों वाले घर, नीली नदियाँ, पीले पत्तों वाले चिनार और मेपल के पेड़, सब कुछ हवाई जहाज से

बेहद खूबसूरत लग रहा था। जैसे-जैसे हम उत्तर की ओर बढ़ते गए, खेत और भी हरे-भरे होते गए। जब हम इंग्लिश चैनल के पास पहुँचे, तो हमने खेतों में बमों से बने गड्ढे, जले हुए चीड़ के पेड़ और गिरी हुई इमारतें देखीं। ये युद्ध के निशान थे; ये जर्मनों द्वारा मचाई गई तबाही के सबूत थे।

हम 3:30 बजे बॉर्नमाउथ हवाई अड्डे पर पहुँचे। हमने अपने पासपोर्ट और स्वास्थ्य प्रमाण पत्र दिखाए और सीमा शुल्क से गुज़र गए। हमें कहीं भी नहीं रोका गया, और अंग्रेज़ों ने विनम्रतापूर्वक और तेज़ी से काम किया। हम साउथेम्प्टन पार करके आखिरकार लगभग 6:30 बजे विक्टोरिया स्टेशन पहुँचे। वहाँ महिलाएँ भी कुली का काम कर रही थीं। युद्ध के कारण पुरुषों की कमी थी, और इसीलिए महिलाओं को यह काम करना पड़ रहा था। हमने अपना सामान उठवाया और बाहर गए। हमने एक बूथ से इंडिया हाउस को फ़ोन किया। मैंने सर विजय का मसालों का डिब्बा और अटैची केस उठाया हुआ था। इंडिया हाउस ने हमारे लिए वाल्डोर्फ होटल में तीन कमरे बुक करवा दिए। मैं कमरा नंबर 538 में रुकी। होटल का खाना घटिया था, सूखी रोटी, थोड़ा सा मक्खन, और उबली हुई गाजर और फूलगोभी। वॉशरूम में न साबुन था, न तौलिया और न ही गर्म पानी। हमने अगले दिन सुबह 9 बजे नाश्ता किया। सूखी रोटी का एक टुकड़ा, अंडे के पाउडर का आमलेट, दो चीनी के टुकड़े, तीन चम्मच दूध और एक केतली चाय। यही हमारा नाश्ता था। युद्ध समाप्त हो चुका था, लेकिन इंग्लैंड के लोग बुरी हालत में थे। वे इन परिस्थितियों का बड़े साहस से सामना कर रहे थे, और किसी ने भी इस पर हंगामा नहीं किया।

अगले दिन मैंने खरीदारी करने का फैसला किया। टोपियों को छोड़कर बाकी सब कुछ कूपन से ही खरीदा जा सकता था। दुकानें खुलतीं तो सारा सामान एक घंटे के भीतर बिक जाता था। मैंने कैल्मताल हॉल 143 से अपना पहचान पत्र बनवाया और चॉकलेट का एक पैकेट खरीदा। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं थी, लेकिन मैं यह समझना चाहता था कि वहाँ के लोग कैसे रहते हैं। इस अनुभव से मुझे पता चला कि युद्ध के कारण वहाँ जीवन बहुत कठिन हो गया था।

मैं 12 अक्टूबर को लंदन विश्वविद्यालय की जैविक प्रयोगशाला पहुंचा और वहां मेरी मुलाकात जे.बी.एस. हाल्डेन से हुई।

वह अपने काम में मग्न थे। मैंने उन्हें 'विकास के संग्रहालय' के अपने विचार के बारे में बताया और इस पर उनकी सलाह ली। मैंने 1968 में चंडीगढ़ में यह संग्रहालय बनाया।
हम 14 अक्टूबर को सुबह 11 बजे लंदन एयर ट्रांसपोर्ट सेंटर, सेंट जेम्स हाउस, पिकाडिली पहुंचे। हमने वहीं से ग्रुप एयर टिकट ली। हम रात 8:30 बजे बोस्टन स्टेशन पहुंचे। मैंने बड़ी मुश्किल से खरीदी हुई चॉकलेट टैक्सी ड्राइवर को दे दीं ताकि वह उन्हें अपने बच्चों को दे सके। उसने मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद किया। अगली सुबह हम किल्मरनॉक स्टेशन पहुंचे।

143 लिप्यंतरित रूप में।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
हम स्कॉटलैंड में प्रवेश कर चुके थे। यह एक खूबसूरत देश है, यहाँ साफ-सुथरे गाँव हैं, मोटी-ताज़ी लाल गायें हैं, और खेतों में ओक, सिकोमोर और चेस्टनट के पेड़ों के समूह हैं।
15 अक्टूबर को हमने प्रेस्टविक हवाई अड्डे से उड़ान भरी। अटलांटिक महासागर में हमने कई हिमखंड तैरते देखे। रास्ते में हमें आइसलैंड द्वीप दिखाई दिया, जो बर्फ से ढका हुआ था। हमने बर्फ से ढके पहाड़ों से घिरी नीली झीलें भी देखीं। 15 घंटे की उड़ान के बाद हम सुबह 9 बजे मॉन्ट्रियल पहुंचे। हमने सुबह 9:30 बजे ट्रेन पकड़ी और रात 1:30 बजे क्यूबेक पहुंचे। दो घंटे बाद हमने सम्मेलन में भाग लिया।
क्यूबेक एक फ्रेंच भाषी प्रांत है; ऐसा लगा जैसे हम फ्रांस के किसी प्रांत में आ गए हों। सड़कों के किनारे चिनार के पेड़ भी लगाए गए थे, जो मुझे फ्रांस की याद दिला रहे थे। सम्मेलन शैतो डी फ्रोंटेनाक में आयोजित किया गया था। वाशिंगटन में भारतीय उच्चायुक्त रहे सर गिरिजा शंकर बाजपेयी ने आम सत्र में भाषण दिया। उन्होंने कहा कि किसानों को उनकी फसलों के अनुसार उचित मूल्य मिलना चाहिए। इससे दुनिया दोबारा आर्थिक मंदी के जाल में फंसने से बच सकेगी। बाजपेयी ने बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया और हमें उनका भाषण सुनकर बहुत खुशी हुई।
अन्य प्रतिनिधि तो अच्छे लोग थे, लेकिन सेठी और बेनी प्रसाद का व्यवहार बेहद

खराब था। उन्हें सिर्फ अपने समूह के सदस्यों की बुराई करने में ही रुचि थी। सेठी आई.सी.ए.आर. का उपाध्यक्ष बनने का सपना देख रहा था। मुझे लगा कि अगर ऐसा कंजूस आदमी उस पद पर आसीन हुआ तो संगठन के लिए अच्छा नहीं होगा।
हमारे प्रतिनिधिमंडल में तीन कनाडाई महिलाएं थीं जो टाइपिस्ट के रूप में काम करती थीं। उनमें से एक मेरे साथ काम कर रही थी। जब मैं दोपहर के भोजन के लिए जाती थी, तो वह भी मेरे साथ बैठती थी।

(पृष्ठ 164)
यह देखकर कि वह मेरे साथ बैठी थी, सेठी और बेनी प्रसाद ने हमारे बारे में अफवाहें फैलाना शुरू कर दिया।
सम्मेलन समाप्त होने के बाद, हम सैंट-ऐनी-डी-ब्यूप्रे नामक स्थान पर गए। यहाँ एक गोलाकार इमारत है जिसमें 45x360 फीट आकार की एक विशाल पेंटिंग है। पेंटिंग पर ऊपर से प्रकाश पड़ता है और दर्शक कमरे के बीच में खड़े होकर इसे निहारते हैं। इसमें यरूशलेम शहर, ईसा मसीह का जन्म, चमत्कार, अंतिम भोज, पोंटियस पिलाट के समक्ष मामला और क्रूस पर चढ़ाने के दृश्य दर्शाए गए हैं। लगभग 90 वर्ष पूर्व, यह विशाल पेंटिंग फ्रांस में 3 लाख डॉलर की लागत से तैयार की गई थी। इसके बाद, हमने इस क्षेत्र का कृषि महाविद्यालय देखा। यहाँ गायों का दुहरण मशीनों से किया जा रहा था। हमें पीने के लिए मेपल का रस दिया गया। इस रस को गर्म करके उससे चीनी बनाई जाती है।
सम्मेलन के बाद हम वाशिंगटन गए। वहाँ मैंने गिरिजा शंकर बाजपेयी को अपनी सम्मेलन रिपोर्ट सौंपी। वाशिंगटन एक विशाल शहर है। वाशिंगटन मेमोरियल 555 फुट ऊँची इमारत है; इसके अंदर एक लिफ्ट लगी हुई है। इस इमारत से शहर का शानदार नज़ारा दिखता है। हमने फ्रीर आर्ट गैलरी और नेशनल आर्ट गैलरी में यूरोपीय कलाकारों की बेहतरीन पेंटिंग्स देखीं। स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट में अमेरिकी वैज्ञानिकों द्वारा विश्व को दिए गए सभी आविष्कार प्रदर्शित हैं।
हमने टेनेसी वैली अथॉरिटी के बारे में बहुत कुछ सुना था। वाशिंगटन से नॉक्सविले जाने का खर्च मात्र 26 डॉलर था। हमने भारत सरकार से इस 'योजना' को देखने के लिए अनुमति मांगी।144 हम शाम 7:30 बजे पहुंचे और वहीं रुके।

144 ‘योजना’ से रंधावा का तात्पर्य टेनेसी घाटी के खेतों में उच्च उपज वाली खेती की प्रथा से है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। होटल एंड्रयू जैक्सन। इस होटल के वेटर नीग्रो थे।
145 सर विजय उनसे बेहद नफरत करते थे। अगली सुबह हम बाजार से गुजर रहे थे, तभी हमने एक कार के चारों ओर बड़ी भीड़ देखी। यह कार जर्मन नेता गोरिंग की थी। वे श्वेत अमेरिकी उज्ज्वल सिंह को घूरने लगे और कार के बारे में सब कुछ भूल गए। मैंने टेनेसी के खेतों का अवलोकन किया ताकि उन विशेषताओं को नोट कर सकूँ जिन्हें हम भारतीय संदर्भ में अपना सकते हैं। वहाँ संकर मक्का उगाना एक परंपरा बन चुकी थी, जिससे मक्का की उत्पादकता तीन गुना बढ़ गई थी। मैंने सोचा कि आई.सी.ए.आर. को भी मक्का की उत्पादकता बढ़ाने के लिए ऐसी ही एक शोध योजना लागू करनी चाहिए।

(पृष्ठ 165)
दूसरे, मैंने देखा कि वहाँ के किसान बिजली से चलने वाली मोटरों का इस्तेमाल करते थे। वे इन मशीनों से पानी निकालते थे, चारा काटते थे और अपने औजारों को धार देते थे। इसलिए, मैंने सोचा कि भारत में बिजली से चलने वाली मोटरों के इस्तेमाल की परंपरा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे कुओं के पानी पर हमारी निर्भरता खत्म हो जाएगी और हम ट्यूबवेल से सिंचाई कर सकेंगे। इस मोटर का इस्तेमाल गन्ने का रस निकालने के लिए भी किया जा सकता है। समय के साथ ये दोनों विचार बहुत उपयोगी साबित हुए। इनसे पंजाब की कृषि में बदलाव आया। इसी नजरिए से मुझे समझ आता है कि यह यात्रा हमारे देश के लिए कितनी उपयोगी रही।
हमने कई खेत देखे। किसान अपने खेतों में ही रहते हैं, और उनके मवेशी और मुर्गियाँ भी उन्हीं खेतों में रहती हैं। हर खेत में एल्युमिनियम का एक गोदाम होता है जिसमें मक्का रखा जाता है। एक आदमी और उसका बेटा 200 एकड़ के खेत को बड़ी आसानी से संभाल लेते हैं। अमेरिका के किसान अमीर तो हैं, लेकिन वे पंजाबी किसानों जितने मेहमाननवाज नहीं हैं। हमारे समूह को तो किसी ने चाय तक नहीं पिलाई।

1 नवंबर को हम न्यूयॉर्क पहुँचे और होटल न्यूयॉर्क में ठहरे। हमने देखा कि लॉबी में गहरे लाल रंग की फ्रॉक पहने एक खूबसूरत लड़की खड़ी थी। तीन अमेरिकी युवक उसके चारों ओर नाचने लगे। न्यूयॉर्क एक विशाल शहर है, और दुनिया का कोई भी शहर इसकी तुलना में नहीं है। यहाँ चौड़ी सड़कें और ऊँची-ऊँची इमारतें हैं, जिनमें से कई इमारतों में 50-60 मंजिलें हैं। दोनों ओर गाड़ियों की चार-चार कतारें चलती रहती हैं। ऐसा लगता है मानो हर कोई काम पर जाने की जल्दी में हो। मुझे विज्ञान संग्रहालयों में दिलचस्पी थी, और मेरे साथी उज्ज्वल सिंह और हबीबुल्लाह नाइट क्लबों में गोरी महिलाओं के साथ मौज-मस्ती करते रहे।
एक दिन मैंने सपना देखा कि इकबाल ने एक सुंदर बेटे को जन्म दिया है। घर पहुँचकर मुझे पता चला कि इस बेटे का जन्म 28 अक्टूबर 1945 को हुआ था। यात्रा के दौरान मैं किसी को पत्र नहीं लिखती। मैं अपनी सारी ऊर्जा और ध्यान उस देश को अनुभव करने में लगाती हूँ जहाँ मैं गई होती हूँ। इसीलिए मुझे घर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
मुझे न्यूयॉर्क में हेडेन प्लैनेटेरियम सबसे दिलचस्प जगह लगी। सभी लोग एक गोल इमारत में बैठते हैं और व्याख्याता टॉर्च लेकर चंद्रमा और तारों के बारे में जानकारी देता है।

145 जब रंधावा ने इसे लिखा, तो उन्होंने अश्वेत लोगों को संदर्भित करने के लिए 'नीग्रो' शब्द का प्रयोग किया, एक ऐसा शब्द जो आज राजनीतिक रूप से गलत और अस्वीकार्य है, लेकिन उस समय आम बोलचाल में था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

आकाश में चांद और तारे दिखाई देते हैं और पूरी आकाशगंगा का भ्रमण होता है। पृष्ठभूमि में मधुर संगीत बजता है। यह एक अनोखा वातावरण था, और मैंने उस महान शक्ति को महसूस किया जिसने इस ब्रह्मांड की रचना की है।
15 नवंबर को हम न्यूयॉर्क में कॉलोनियल एयरलाइंस के विमान में सवार हुए। विमान में बैठे-बैठे हमने देखा कि जिन पेड़ों पर पहले लाल और पीले पत्ते थे, वे तब तक पूरी

तरह झड़ चुके थे; घास भी खाकी रंग की हो गई थी। हवा में कई छोटे-छोटे छिद्र थे, इसलिए हमारी उड़ान में बहुत अधिक अशांति थी। हम दोपहर 2 बजे मॉन्ट्रियल पहुंचे। बहुत ठंड थी, और बसों में हीटर लगे हुए थे। जब हमें होटल में उतारा गया, तो ऐसा लगा जैसे हमारी नाक और कान फट जाएंगे। बहुत तेज़, ठंडी हवा चल रही थी।
अगले दिन हम सुबह 10 बजे हवाई अड्डे पहुँचे और चार इंजन वाले लिबरेटर विमान में सवार हुए, जिसका इस्तेमाल पहले बम गिराने के लिए लड़ाकू विमान के रूप में किया जाता था। इसमें केवल चार यात्री थे - मैं, उज्ज्वल सिंह, एक महिला और न्यूज़ीलैंड का एक एयरमैन। विमान में सेंट्रल हीटिंग नहीं थी। हमें फ्लाइंग सूट भी नहीं मिले। तापमान -20 डिग्री सेल्सियस था और हम दोनों ठंड से सुन्न हो गए थे। जब हमारा विमान न्यूफ़ाउंडलैंड के गैंडर पहुँचा, तो मेरे पैर पूरी तरह सुन्न हो चुके थे और मुझे चलने में बहुत कठिनाई हो रही थी। हमने गर्म सूप पिया और ब्रांडी की एक बोतल खोली, जिसमें से कुछ मैंने पी ली और बाकी उज्ज्वल सिंह को दे दी। वहाँ इतनी ठंड थी कि पेशाब भी जम जाता। अगले विमान में गर्म हवा से हीटिंग की व्यवस्था थी और हमें गर्म फ्लाइंग सूट दिए गए। हमने अपने आप को जितने कंबल मिल सके, उनसे ढक लिया।
यहां से उड़ान भरने के बाद हम अज़ोरेस नामक द्वीप पर पहुँचे। यहाँ की आबादी पुर्तगाली है और यह द्वीप सूखा और बंजर है। यहाँ बहुत तेज़ हवा चलती है और पेड़ नहीं उगते। लोग गरीब लग रहे थे, उनमें से कई ने तो जूते भी नहीं पहने थे। हमने एक सेना बैरक में रात 1 बजे तक आराम किया।
अगले दिन, सुबह लगभग 6 बजे हम अज़ोरेस के शहर लागान से रवाना हुए और 6 घंटे में रबात पहुँच गए। रबात मोरक्को का एक प्रसिद्ध शहर है।

(पृष्ठ 167)
इस जगह पर साफ-सुथरे बंगले हैं, जिनके सामने बोगनविलिया की लताएँ लगी हैं। बेगोनिया वेनुस्टा की लताएँ दीवारों पर चढ़ी हुई हैं, जिनके गहरे नारंगी फूल बेहद खूबसूरत लग रहे थे। सड़क के दोनों ओर बड़ी-बड़ी दुकानें थीं और सड़क के बीचोंबीच खजूर के पेड़ों की कतारें थीं। यह यहाँ के जीवन पर फ्रांसीसी लोगों का प्रभाव है। फ्रांसीसी लोग नगर नियोजन में बहुत रुचि रखते हैं और जहाँ भी गए हैं, उन्होंने खूबसूरत शहर बसाए हैं। यहाँ हम होटल बलिमा में ठहरे थे।

अगले दिन सुबह 7 बजे हमारा विमान रवाना हुआ और हमने हवाई मार्ग से त्रिपोली, बेंगाज़ी और तोब्रुक को देखा। यहाँ भारतीय और जर्मन सेनाओं के बीच एक विनाशकारी युद्ध हुआ था। जर्मन सेना ने रोमेल के नेतृत्व में लड़ाई लड़ी थी। इस शहर की आबादी समुद्र के किनारे के क्षेत्र में बसी हुई है, और उनकी बस्ती के पीछे रेत के टीले हैं।

हम 19 नवंबर को फिर से काहिरा पहुँचे। हमें वहाँ इराकी दूतावास से वीज़ा लेना था। बड़ी मुश्किल से हमें यह वीज़ा मिला। 21 नवंबर को हम एक फ्लाइंग बोट में सवार हुए। इसमें 40 लोगों के बैठने की जगह थी और यह केवल पानी में ही उतर सकती थी। इसमें चार इंजन थे और दूर से देखने पर यह व्हेल जैसी दिखती थी। यह 120 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ रही थी और नीचे की दुनिया साफ़ दिखाई दे रही थी। नहरें, नदियाँ, खजूर के बाग और ऊँटों की कतारें नज़र आ रही थीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। खिलौने जितने छोटे। हमारी उड़ने वाली नाव खालिदिया और हब्बानिया झीलों पर उतरी और शाम 5 बजे बसरा पहुँच गई। वहाँ हम होटल शट्ट अल-अरब में ठहरे। होटल बहुत अच्छा था, लेकिन पास में कच्ची इमारतें थीं जो चिचावतनी शहर की याद दिलाती थीं।

अगले दिन, हम दुबई और बहरीन के ऊपर से उड़ान भरते हुए 22 नवंबर को शाम 6:30 बजे कराची पहुंचे और कार्लटन होटल में एक रात बिताई। हम सुबह 5 बजे दिल्ली पहुंचे और यह यात्रा समाप्त हो गई। उज्ज्वल सिंह की पत्नी उन्हें लेने आई थीं। विमान से उतरते ही उज्ज्वल सिंह ने उन्हें कसकर गले लगा लिया, मानो वह वर्षों से उन्हें याद कर रहे हों।

डेढ़ महीने बाद अपने फ्लैट में लौटकर मुझे बहुत खुशी हुई। यहाँ से पुराना किला की प्राचीरों पर बने गुंबदनुमा मंडप दिखाई देते हैं। आसमान साफ, ठंडी हवा और एक ऐतिहासिक दृश्य। हमारा दिल्ली कितना खूबसूरत है, और हमारी सर्दी भी। हमारे लोग कितने मिलनसार हैं। विदेश जाने के बाद ही इन चीजों का महत्व समझ आता है। मैं ईश्वर का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे सुरक्षित वापस लौटने में मदद की।

युद्ध के कारण तबाह हो चुके डकोटा के वे रास्ते, जिन पर हमें यात्रा करनी पड़ी, रास्ते में कहीं भी गिर सकते थे।
मैं अगले दिन गोजरा गई। मैंने देखा कि इकबाल बहुत कमजोर हो गई थी। प्रसव के बाद उसे भयानक दस्त हो गए थे, जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। मुझे लगता है कि वह मेरे बारे में लगातार चिंता करती रही। किसी ने सही ही कहा है, चिंता मृत्यु की ओर ले जाती है। उस खतरनाक यात्रा के बाद मुझे भी ऐसा लगा जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।

146 छतरियां या मंडप राजपूत शैली की वास्तुकला से संबंधित हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 23

मुसीबत को न्योता देना
(1946-1948)

(पृष्ठ 169)
ब्रिटिश भारत छोड़ने की तैयारी कर रहे थे और कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच संघर्ष चल रहा था। पूरे देश में दंगे भड़क उठे, जिनमें दिल्ली हिंसा का केंद्र बन गया था। कृषि मंत्रालय के उप सचिव श्री शर्मा मुझसे नॉर्थ ब्लॉक में मिलने आए। उन्होंने मुझे शहर में फैली अराजकता के बारे में बताया – चाकूबाजी आम बात हो गई थी। ये अफवाहें धीरे-धीरे भारत सरकार के सचिवालय में फैल गईं; अब कोई भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा था। मुस्लिम लीग ने दिल्ली में सुनियोजित तरीके से चाकूबाजी की घटनाएं करवाई थीं, दिल्ली के हिंदू विशेष रूप से भयभीत थे।
यह नवंबर 1946 की बात है। उन दिनों मैं सुजान सिंह पार्क में एक अपार्टमेंट में रहता था, जो दिल्ली के करोड़पति सरदार शोभा सिंह का था। 147 डॉन नामक अखबार के संपादक अल्ताफ हुसैन मेरे पड़ोसी थे। अल्ताफ का व्यवहार भले ही थोड़ा अलग-थलग रहता था, लेकिन उनकी पत्नी बहुत स्नेहशील थीं और अक्सर इकबाल से

मिलने आती थीं।
एक दिन, दिल्ली के जाने-माने ठेकेदार और हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक लाला दुर्गा दास के घनिष्ठ मित्र सरदार रणजीत सिंह, सुजान सिंह पार्क में मुझसे मिलने आए। उन्होंने मुझे बताया कि दिल्ली के अगले उपायुक्त पद के लिए मेरी सिफारिश की गई है। उन दिनों, उपायुक्त बनना स्वेच्छा से जोखिम उठाने और कठिनाइयों का सामना करने जैसा था।

(पृष्ठ 170)
अगले दिन, सरदार वल्लभभाई पटेल ने मुझे दक्षिण ब्लॉक स्थित गृह मंत्रालय के कार्यालय में बुलाया। उन्होंने मुझसे कहा, "हम आपको दिल्ली का अगला उपायुक्त नियुक्त करने पर विचार कर रहे हैं। हमें अंग्रेज उपायुक्त ले बेली पर भरोसा नहीं है। आप 10 से 15 दिनों तक अतिरिक्त उपायुक्त के रूप में ले बेली के साथ काम करके दिल्ली शहर से परिचित हो सकते हैं। उसके बाद आप कार्यभार संभाल सकते हैं।"
[डब्ल्यू. एफ. जी.] ले बैली एक उग्र स्वभाव का अंग्रेज था। लोग उसे 'अल्लाह-बेली' कहते थे। गुस्से में वह अपने मुंह में जो भी होता, पाइप या पेंसिल चबाता रहता था। सभी ब्रिटिश अधिकारी कांग्रेस के विरोधी थे, ले बैली भी यही मानता था। मुझे आभास हो रहा था कि वह मेरे लिए मुश्किलें खड़ी करेगा, इसलिए बेहतर यही होगा कि वह जल्द से जल्द चला जाए।
मैंने पटेल को बताया कि मैं दिल्ली शहर से भलीभांति परिचित हूँ और कई शहरों का प्रशासन संभालने का मुझे अनुभव है। मैं पहले इलाहाबाद में अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट और आगरा में कलेक्टर के पद पर कार्य कर चुका हूँ। मैंने उनसे कहा कि मैं अगले ही दिन कार्यभार संभालने के लिए तैयार हूँ, इसलिए वे ले बैली को अगले दिन जाने के लिए कह सकते हैं।
पटेल मेरी आत्मविश्वास से प्रभावित थे; उन्हें विश्वास था कि मैं आगे आने वाले कठिन कार्य को संभाल लूंगा। मैंने 11 नवंबर 1946 को अपना सामान राजपुर रोड स्थित 17 नंबर के घर में स्थानांतरित कर दिया। यह जांच करना महत्वपूर्ण है।

147 डॉन आज भी पाकिस्तान में प्रकाशित होने वाला एक लोकप्रिय समाचार पत्र है। यह पाकिस्तानी और दक्षिण एशियाई मामलों पर गहन शोध और विचारों के लिए

प्रसिद्ध है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। कार्यभार संभालने से पहले, दिल्ली का खजाना लाखों रुपये के टिकटों और नोटों से भरा हुआ था। जब मैं नोटों के बंडल गिन रहा था, तब एक एंग्लो-इंडियन अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट मेरे बगल में बैठे थे। हमें हर पांच मिनट में चाकूबाजी की सूचना मिलती थी। मैंने अपने गुस्से पर काबू पाया और खजाने के नोटों की गिनती पूरी करने के बाद ही जाने का फैसला किया - मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि कल तक हिंसा पर काबू पा लिया जाए। मैंने दोपहर लगभग 1 बजे तक गिनती पूरी कर ली; तब तक दस लोग चाकूबाजी का शिकार हो चुके थे।
मेरे निजी सहायक सावित्री प्रसाद एक बहुत ही होशियार और कुशल पुलिस कांस्टेबल थे। उन्हें कानूनी मामलों की अच्छी जानकारी थी। हम मिलकर स्थिति का विश्लेषण करते थे, जिसके बाद मैं उन्हें एक विशेष प्रकार का आदेश तैयार करने को कहता था और वे तुरंत उसे टाइप कर देते थे। मुझे अनुभव से पता था कि दंगे केवल गुंडों द्वारा ही किए जाते हैं। मैंने थानेदारों को गुंडों की सूचियाँ लाने का आदेश दिया था। सूचियाँ अब तैयार थीं। उन दिनों, दोनों धर्मों के कई सम्मानित और शांतिप्रिय लोग मुझसे मिलने आते थे या मुझे पत्र लिखते थे। वे मुझे गुंडों के नाम भी देते थे।

(पृष्ठ 171)
इस प्रकार, मैंने दंगों के स्वरूप को समझा और इन दोनों माध्यमों से उनमें शामिल लोगों की पहचान की। मैंने उन सभी गुंडों की गिरफ्तारी का आदेश दिया, जिससे स्थिति में काफी सुधार हुआ।
चौधरी नबी अहमद नगर मजिस्ट्रेट थे। वे शांत और सुव्यवस्थित व्यक्ति थे। उन्होंने चांदनी चौक और खारी बावली में शांति बनाए रखी। कंवर मोहिंदर सिंह बेदी भी सम्मानित मुसलमानों के बीच काफी प्रतिष्ठित थे। इस तरह विभिन्न धर्मों के अधिकारियों ने गुंडों को काबू में किया। जब जनसंघ के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया जाता था, तो वे मुझे धमकी भरे पत्र लिखते थे।
मैंने डीएल-7 नंबर की टैक्सी किराए पर ली थी। मैं अपने दो अंगरक्षकों के साथ तुरंत घटनास्थल के लिए रवाना हो जाऊंगा। अंगरक्षकों के पास स्टेन गन होंगी। मैं लाठी के

अलावा कोई हथियार नहीं रखूंगा। मेरे इतनी जल्दी पहुंचने से पुलिस और भी सतर्क हो जाएगी।
कुछ दिनों बाद हालात और बिगड़ गए। पुल बंगश इलाका कसाईखाना बन चुका था। एक सुबह मैंने कई हिंदुओं के शव बिखरे देखे। वे सभी गरीब मजदूर थे जो राशन खरीदने आए थे। आसपास के मुस्लिम कसाइयों ने उन्हें मार डाला था। हत्यारों और पीड़ितों के बीच कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं थी। मैंने देखा है कि मनुष्य, कुत्ते और मुर्गे सभी ऐसे जानवर हैं जो बिना उकसाए भी हमला करने से नहीं हिचकिचाते। पुल बंगश इलाके में गश्त के दौरान मैंने एक अरोरा सिख बुजुर्ग को अपनी बेटी के साथ तांगे पर बैठे देखा। जब मैंने उनसे पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं, तो उन्होंने बताया, "मैं अपनी बेटी को मैट्रिक की परीक्षा के लिए ले जा रहा हूँ।" कुछ देर बाद मैंने उन्हें सड़क किनारे पड़ा हुआ देखा, वे अपनी आखिरी साँसें ले रहे थे, क्योंकि रास्ते में किसी ने उनके पेट में चाकू घोंप दिया था। चाकूबाजी की ये घटनाएँ बढ़ने पर मैंने पुलिस को हमलावरों को देखते ही गोली मारने का आदेश दिया। एक सिख कांस्टेबल ने इस आदेश का पालन किया और एक मुस्लिम हमलावर को गोली मार दी जो एक हिंदू पर चाकू से हमला कर रहा था। इससे दंगाइयों के दिलों में दहशत फैल गई। कभी-कभी स्थिति इतनी गंभीर हो जाती थी कि मुझे संदेह होने लगता था कि क्या इसमें कभी सुधार होगा, लेकिन मुझे एहसास हुआ है कि स्थिति का लगातार विश्लेषण करते रहना चाहिए और कार्रवाई करनी चाहिए।

मूल में 148 कसीस वतना

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अंततः हमें परिणाम अवश्य मिलना था। कभी-कभी मैं खुद से पूछता था कि मैंने जानबूझकर ये जोखिम क्यों उठाए? इसकी क्या आवश्यकता थी? फिर मैं खुद से कहता था कि मनुष्य समस्याओं को सुलझाने के लिए ही पैदा हुआ है, और किसी को तो जिम्मेदारी लेनी ही होगी, अन्यथा हमारी दुनिया अपराधियों के नियंत्रण में आ जाएगी और हम अच्छा जीवन नहीं जी पाएंगे। अपराधियों को हमारे समाज से उसी

प्रकार निकालना होगा जैसे बगीचों से खरपतवार उखाड़े जाते हैं।
एक शाम करीब 5 बजे, जब मैं राजपुर रोड स्थित नंबर 17 वाले अपने घर पर था, मुझे सूचना मिली कि लगभग 40,000 मुसलमानों का एक जुलूस पहाड़गंज में 149 ताजिया लेकर जा रहा है।
और वे हिंदू मोहल्ले से होकर गुजरने की जिद पर अड़े हुए थे। इन जुलूसों के रास्ते तय थे और आम तौर पर इन्हें बदला नहीं जाता था। दूसरी ओर, यह आशंका थी कि अगर उनके जोशीले प्रदर्शनों को रोका गया तो वे कानून तोड़कर और सार्वजनिक व्यवस्था बिगाड़कर प्रतिक्रिया देंगे। एसएसपी रॉबिन्सन, जो मुझे अपनी जीप में लेकर आए थे, बेहद खुश दिख रहे थे। मौके पर पहुँचकर मैंने उन जोशीले मुसलमानों को धरने पर बैठे देखा। मुझे समझ आ गया कि अगर उन्हें बलपूर्वक रोका गया तो वे दंगा कर देंगे। मैंने मोहिंदर सिंह बेदी से सलाह ली, जिन्होंने मुझे उन्हें उनके मनचाहे रास्ते से जाने देने की सलाह दी। मैंने उनसे मोहल्ले के हिंदू नेताओं को मुसलमानों को रास्ता देने के लिए मनाने को कहा। स्थिति में पनप रहे खतरे को भांपते हुए नेता तुरंत मान गए। मैंने उनसे सभी निवासियों को जुलूस के दौरान अपने घरों से बाहर न निकलने के लिए कहने को कहा। इस प्रकार मुस्लिम जुलूस 'या-अली, या-अली' के नारे लगाते हुए हिंदू मोहल्ले से होकर गुजरा। मुझे लगता है कि अगर मैंने स्थिति की संवेदनशीलता और गंभीरता को नहीं समझा होता, तो पहाड़गंज राख में तब्दील हो जाता। रॉबिन्सन इस संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान से निराश प्रतीत हुए।
दिल्ली में खतरनाक परिस्थितियों में कर्फ्यू लगा दिया जाता था। लोगों को रात में घर के अंदर रहने का आदेश दिया जाता था। मैं पुलिस के साथ अलग-अलग इलाकों में गश्त करता था। हर तरफ सन्नाटा पसरा रहता था; गलियां और मोहल्ले वीरान दिखते थे। कभी-कभार किसी कुत्ते के भौंकने की आवाज ही सन्नाटे को तोड़ती थी। कर्फ्यू तोड़ने और घर से बाहर निकलने वाले किसी भी व्यक्ति को पुलिस स्टेशन ले जाया जाता था। चूंकि अपराधियों द्वारा की जाने वाली हिंसा को रोकने में कर्फ्यू काफी कारगर साबित हुआ, इसलिए मैंने इन उपायों का इस्तेमाल सामाजिक हित के लिए भी करने का फैसला किया।

(पृष्ठ 173)
दिल्ली में बहुत सारे आवारा कुत्ते थे। मैंने स्वास्थ्य अधिकारी से उनकी देखभाल करने

का अनुरोध किया, 151 कुत्ते इसलिए क्योंकि वे रेबीज के प्रति संवेदनशील थे और लोगों को काटकर बीमारी फैलाते थे। उन्होंने जवाब दिया कि उन्हें दलितों की ज़रूरत है जो उन्हें पकड़ें या मार डालें, बनिया लोग तो बस उनके गले में रस्सी बांधकर उन्हें पालतू जानवर होने का नाटक करते थे। रातें शांत रहती थीं; लोगों का कोई नामोनिशान नहीं होता था—सिर्फ़ आवारा कुत्ते ही नज़र आते थे। स्वास्थ्य अधिकारी गुलाब जामुन में स्ट्राइकिन मिलाते थे और ज़हर से भरी मिठाइयों से भरी टोकरियाँ ट्रकों में लाद देते थे। फिर उन्हें कुत्तों को खिलाया जाता था। कुत्तों के शवों से भरे कई ट्रक फिर ले जाए जाते थे।
मौलाना अल्लामा मशरीकी भी दिल्ली में रह रहे थे। वे अपनी बलूची सेना के साथ दिल्ली पहुंचे। दिल्ली पर कब्जा करने के इरादे से उन्होंने फतेहपुरी मस्जिद में अपनी सेना के साथ डेरा डाला।

149 मुहर्रम के शिया मुस्लिम जुलूस के लिए। 150 जुनून के लिए, रंधावा 'जुनून' या 'जुनूनी' शब्द का प्रयोग करते हैं। 151 यहाँ इसका तात्पर्य उन्हें छाँटने से है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
जिन्ना ने इंपीरियल होटल में मुस्लिम लीग की एक बैठक आयोजित की थी। खाकसार 152 की सेना लाठियों से उनकी बैठक पर हमला करने के लिए तैयार थी, और फोटोग्राफर पी.एन. शर्मा उस दृश्य को कैमरे में कैद करने ही वाले थे। बैठक की सूचना मिलते ही मैंने घटनास्थल पर भारी संख्या में पुलिस भेजी। मुस्लिम लीग के सदस्यों ने फोटोग्राफर का पीछा किया और उसने अपनी जान बचाने के लिए एक सिख लड़की के कमरे में छुप गया। अगर मैं समय पर वहां नहीं पहुंचता, तो मुझे पूरा यकीन है कि खाकसार सेना जिन्ना को नुकसान पहुंचा सकती थी। जब मैंने इस मामले में पटेल से मुलाकात की, तो उन्होंने मुझे बताया कि उस स्थिति में इतनी जल्दबाजी में कार्रवाई करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।
खाकसारों के हमलों के तौर-तरीकों का अध्ययन करने के बाद हमने उनकी हिंसा की धमकियों को कम करने का फैसला किया। मुझे सूचना मिली थी कि वे मौलाना आजाद, नेहरू और पटेल को जान से मारना चाहते थे। वे फावड़े लेकर बाज़ारों में

जुलूस निकालते और रात को मस्जिद का मुख्य द्वार बंद करके उसमें शरण लेते थे। मैंने पटेल से मुलाकात की और उनसे अनुरोध किया कि वे मुख्य आयुक्त खुर्शीद अहमद खान को मेरे साथ खाकसारों को गिरफ्तार करने के लिए कहें। मैं जानता था कि अगर मैं अकेले उन्हें गिरफ्तार करने जाता, तो मुसलमान हंगामा करते और दावा करते कि उनकी मस्जिद का अपमान हुआ है।
रात 10:00 बजे, खुर्शीद, मैं और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डी.सी. लाल दो सौ पुलिसकर्मियों के साथ फतेहपुरी गए। खुर्शीद ने लाउडस्पीकर के माध्यम से खाकसार पुलिसकर्मियों से अपील की और उनसे शांतिपूर्वक गिरफ्तारी स्वीकार करने और मस्जिद का अपमान होने से रोकने का अनुरोध किया।

(पृष्ठ 174)
वे ऐसी अपीलों को सुनने को तैयार नहीं थे। उन्होंने कतारें बनाकर पुलिस से लड़ने की तैयारी कर ली। बंदूकधारी दस्ते ने उनके दरवाजे पर गैस के गोले दागे। मैंने देखा कि दरवाजे के बाहर एक बड़ा खंभा रखा हुआ था। लगभग बीस पुलिसकर्मियों ने उसे उठाया और उससे उनके दरवाजे की खिड़कियों पर वार करने लगे। खिड़कियाँ टूट गईं और गैस के गोलों ने खाकसारों के समूह को तितर-बितर कर दिया। इसके बाद पुलिसकर्मियों ने अपने जूते उतार दिए और मस्जिद में प्रवेश कर गए। सभी खाकसारों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।153

152 यह शब्द बैलची है: फावड़ा या कुदाल
153 देखें मलिक, मुहम्मद असलम (2000), अल्लामा इनायतुल्लाह मशराकी: एक राजनीतिक जीवनी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। मशराकी ने विभाजन का विरोध किया और हिंदू-मुस्लिम भाईचारे की वकालत की, मुस्लिम लीग से लड़ने के लिए खाकसारों की एक 'सेना' का इंतजाम किया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 24

दिल्ली
डर, डर और अत्यधिक डर
(1946-47)

(पृष्ठ 175)
जैसे-जैसे आजादी नजदीक आती गई, दिल्ली में तनाव बढ़ता गया। शहर में दहशत का माहौल था; हवा में डर साफ महसूस किया जा सकता था।
मुझे विज्ञान, कला और विकास परियोजनाओं में रुचि थी। मैं ग्राम विकास और प्रगति के प्रति बेहद समर्पित था; वास्तव में, हिंसा के खतरे के बीच समय निकालकर मैं गांवों में जाकर विकास परियोजनाओं का अध्ययन करता था। स्थानीय लोगों के सहयोग से मैंने शाहदरा, नजफगढ़, नरोला और महरौली में पुस्तकालय स्थापित किए।
मैंने प्रसिद्ध कलाकार निकोलस रोएरिच की पेंटिंग्स की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की और दिल्ली के धनी अभिजात वर्ग को अखिल भारतीय ललित कला समिति के लिए उन अद्भुत पेंटिंग्स को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। इनमें से कुछ पेंटिंग्स चंडीगढ़ संग्रहालय में मौजूद हैं। नेहरू ने उस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था।
जुलाई 1947 में वृक्षारोपण सप्ताह मनाया गया, जिसका उद्घाटन नेहरू ने पुराने किले में किया था। इस सप्ताह के दौरान दिल्ली के सभी पार्कों में पुष्पीय वृक्ष लगाए गए।
अगस्त की शुरुआत में दिल्ली पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। सबसे पहले यमुना नदी में बाढ़ आई, जिससे कई गांव डूब गए। बाढ़ के बाद फिर से दंगे शुरू हो गए।

(पृष्ठ 176)
दिल्ली पुलिस के कई सिपाही झेलम और रावलपिंडी से थे—वे ब्रेंन-गन और स्टेन-गन जैसे हथियार रखते थे। हिंदू और सिख अधिकारी उनसे डरते थे। एसएसपी डी.सी. लाल उन्हें उनके हथियार सौंपना नहीं चाहते थे। मैंने उन्हें पटेल से मिलवाया, लेकिन वे उनके सामने भी हिचकिचाए। इसी रवैये के कारण उनका तबादला कर दिया गया।
अगली सुबह संजीवी ने उनके घर फोन किया, उनकी पत्नी ने फोन उठाया और कहा, “साहिब सो रहे हैं।” संजीवी ने जवाब दिया, “अपने साहब से कहिए कि वे अपना सामान पैक कर लें।” सीमा प्रांत से नाज़िर चंद मेहर को उनके स्थान पर नियुक्त किया गया।

ब्रिटिश भारत के विभाजन का निर्णय अंतिम रूप से होते ही, पंजाबी मुसलमान, चाहे वे पुलिसकर्मी हों या मजिस्ट्रेट, पाकिस्तान के लिए रवाना हो गए। इन बदलावों से दिल्ली का प्रशासनिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया। पश्चिमी पंजाब से आए हिंदू और सिख पुलिसकर्मियों ने उस क्षेत्र के मुस्लिम बहुसंख्यकों के खिलाफ संघर्ष किया था, इसलिए वे दिल्ली के मुसलमानों के प्रति सहानुभूति नहीं रखते थे। दिल्ली के मुसलमान खुद को अनाथ जैसा महसूस करने लगे।
जब हिंदू और सिख शरणार्थी दिल्ली आए तो राज्य की व्यवस्थाएं बेकाबू हो गईं। दिल्ली में मार्शल लॉ लागू करने की सलाह दी गई। पटेल इस सुझाव से सहमत नहीं थे; और वे सही साबित हुए।
जब भी आवश्यकता पड़ती, यानी जब पुलिस हिंसा को नियंत्रित करने में असमर्थ होती, मैं सेना को बुला लेता। यह ध्यान देने योग्य है कि उन खतरनाक दिनों में दिल्ली छावनी में सेना की केवल दो कंपनियां ही तैनात थीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
ऐसी अफवाह थी कि रोहिलखंड के रोहिल्ला और गुड़गांव व भरतपुर के मेव दिल्ली पर हमला करेंगे। मुस्लिम लीग के राष्ट्रीय रक्षक, खाकी वर्दी और लोहे के हेलमेट पहने, जीपों और ट्रकों में घूम रहे थे। मैंने आदेश जारी किया कि कोई भी राजनीतिक दल ट्रक या जीप का इस्तेमाल नहीं कर सकता; आदेश का पालन न करने पर उनके वाहन जब्त कर लिए जाएंगे। इस आदेश से उनका जोश कुछ हद तक कम हुआ, वे शांत हो गए।
व्यक्तिगत रूप से, मैं खतरे में था - पुलिस गार्डों और अंगरक्षकों की सुरक्षा के अलावा, मैंने किसी भी निर्धारित कार्यक्रम का पालन न करके अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्णय लिया। मुझे टहलने की आदत थी, लेकिन मैं दिल्ली की किसी भी सड़क पर नहीं टहलने लगा।

(पृष्ठ 177)
मैं बिना किसी को बताए अपनी कार से किसी गांव के लिए निकल जाता, वहां के ग्रामीणों की मदद करता और उनके साथ सैर करता।

मैं कभी-कभी मुस्लिम लीग की टोपी पहनता था। इससे ये अफवाहें फैल गईं कि मैं मस्जिदों से जानकारी लेता हूँ। मेरा एक मुस्लिम मुखबिर मुझे मस्जिदों में चल रही किसी भी साजिश और योजना की जानकारी देता था। यहाँ मैं यह बताना चाहूँगा कि पुलिस की सी.आई.डी. एक बहुत ही कमजोर संगठन थी।

बिरला मिल्स में उस समय भीषण दंगा भड़क उठा जब हिंदू श्रमिकों ने मुस्लिम श्रमिकों पर हमला कर दिया। उस समय कोई भी श्रमिक कम्युनिस्ट नेताओं की बात नहीं मानता था क्योंकि उनका उन पर कोई प्रभाव नहीं था। मिल से दंगा सब्जी मंडी और पहाड़गंज तक फैल गया।

केंद्रीय सचिवालय के सचिवों और संयुक्त सचिवों को शहरों में विशेष मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया था। बी.बी. सिंह मामले के कारण बदनाम हुए के.एस. मिश्रा को महरौली में नियुक्त किया गया। वहां, जब उन्होंने कुछ सेनाकर्मियों को लूटपाट करने से रोकने की कोशिश की, तो एक जवान ने उन्हें गोली मारकर हत्या कर दी। उनकी विधवा मीरा एक फिल्म स्टार थीं - वह हमेशा इत्र में डूबी रहती थीं। उन्होंने खुर्शीद से दोस्ती कर ली, इस बात की परवाह किए बिना कि उनके पति की हाल ही में हत्या कर दी गई थी। हमने उनकी हत्या की जांच करवाई; मैंने बाद में उन्हें जांच रिपोर्ट दिखाई। रिपोर्ट में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं दिखी।

लॉर्ड माउंटबेटन की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय आपातकालीन समिति, जिसके सदस्य नेहरू, पटेल, बलदेव सिंह और मथाई थे, ने दिल्ली को बर्बादी से बचाने के लिए एक विशेष पुलिस बल की भर्ती का निर्णय लिया।156 अपील के बाद इस उद्देश्य के लिए कई योग्य युवाओं की भर्ती की गई। जब हमने इस भर्ती अभियान का निरीक्षण किया, तो हमें पता चला कि इनमें से अधिकांश युवा जनसंघ से संबंधित थे, क्योंकि शिक्षित हिंदू मतदाताओं में कांग्रेस का प्रभाव बहुत कम था।

विशेष पुलिस में नियुक्तियों के आदेश मेरे हस्ताक्षर से जारी किए गए थे। मुझे कुछ ऐसे आदेश मिले जिन पर मेरे जाली हस्ताक्षर थे। जांच शुरू करने पर पता चला कि यह सब एक कांग्रेस नेता द्वारा करवाया गया था। जब यह मामला पटेल के संज्ञान में आया, तो उन्होंने उस नेता को जालसाजी के आरोप में गिरफ्तार करने का आदेश दिया। कांग्रेस के भीतर दो गुट थे - एक पटेल का गुट था, दूसरा नेहरू का।

154 मूल रूप से पश्तून जाति के रोहिल्ला, भारत के उत्तर प्रदेश की एक योद्धा जाति

हैं। 155 मेव उत्तर पश्चिम भारत का एक मुस्लिम राजपूत समुदाय है। 156 जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, बलदेव सिंह और जॉन मथाई।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 178)

इस पर विचार करने के बाद, मुझे उस नेता को गिरफ्तार करना उचित नहीं लगा। गुड़गांव और दिल्ली के गांवों को मुसलमान छोड़कर चले गए थे। इनमें से एक गांव का नाम तिहाड़ था। पाकिस्तान के उच्चायुक्त और कुछ बनिया कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने झूठी शिकायत फैलाई कि प्रशासन मुसलमानों को इन गांवों से निकाल रहा है। तिहाड़ के लेफ्टिनेंट सुल्तान अली आपातकालीन समिति की बैठक में शामिल हुए। उन्होंने कहा, “यह कहना गलत है कि उपायुक्त या उनके अधीनस्थ हमें दिल्ली से निकाल रहे हैं। विभाजन के कारण पैदा हुई कठिन परिस्थितियों के चलते हम यहां नहीं रह सकते।” सुल्तान अली ने पाकिस्तान के उच्चायुक्त से तिहाड़ के मुसलमानों को पाकिस्तान भेजने की व्यवस्था करने का अनुरोध किया। जब आयुक्त ने इनकार कर दिया, तो सुल्तान अली ने कहा, “हम शरणार्थी ट्रेन में सवार होकर पाकिस्तान चले जाएंगे। आपकी पुलिस हमें नुकसान पहुंचाएगी। हमारी आत्माएं पाकिस्तान पहुंच जाएंगी, और हमारे शरीर यहीं रह जाएंगे।” सुल्तान अली की भारत छोड़ने की ज़िद और दृढ़ निश्चय को देखकर पाकिस्तान के उच्चायुक्त मान गए। जब झूठ का बोलबाला हो और कोई सच बोले, तो वह प्रशंसा का पात्र होता है। सुल्तान अली चौधरी छोटू राम की संघवादी पार्टी के सदस्य थे, जो पंजाब के किसानों और जमींदारों का प्रतिनिधित्व करती थी। मैं आज भी सुल्तान अली का सम्मान करता हूं और उन्हें महत्व देता हूं।

दिल्ली में व्याप्त अशांति में हिंसा की वास्तविकता और भयावहता से जूझते हुए विभिन्न प्रकार के लोग संघर्ष कर रहे थे। सलवार पहने और छोटे बालों वाली मृदुला साराभाई नाम की एक महिला भी उनमें से एक थी। उनके पहनावे से यह अंदाजा लगाना मुश्किल था कि वह हिंदू हैं या मुसलमान, पुरुष हैं या महिला। गहन पूछताछ करने पर पता चला कि वह सेठ अंबालाल साराभाई की बेटी थीं, जिनकी पटेल से विशेष शत्रुता थी। मृदुला का नेहरू पर काफी प्रभाव था। सुरक्षा निरीक्षक अमर सिंह ने

मुझे बताया कि वह नेहरू के तकिए के नीचे एक सुरक्षा ताबीज रखती थीं।157 मृदुला की अपनी निजी शांति सेना थी। वे मुसलमानों को गांवों में पुनर्स्थापित करने का काम करते थे। कुछ मुसलमान भयवश हिंदू धर्म में परिवर्तित हो गए थे। जब पटेल को मृदुला की गतिविधियों की भनक लगी, तो उन्होंने कहा, “क्या मुझे पाकिस्तान से आने वालों को अपने सिर पर बिठाना चाहिए? यहाँ हिंदुओं की कोई कमी नहीं है।”158 पटेल प्रबंधन में बहुत कुशल और आत्म-जागरूक थे। उनके पास व्यावहारिक ज्ञान और व्यावहारिक समझ थी।

(पृष्ठ 179)
उन्हें यह एहसास हो गया था कि यह महज दो धार्मिक समूहों के बीच का दंगा नहीं था, बल्कि एक गृहयुद्ध था। उन्हें यह भी पता था कि पाकिस्तान में अपनी संपत्ति, जमीन और घर खो चुके शरणार्थी तब तक संतुष्ट नहीं होंगे जब तक उन्हें यहां भी इसके बराबर कुछ न मिल जाए।
मैं भी यही समझता था। दोनों समुदाय आपस में युद्धरत थे। यह कहना गलत है कि अंग्रेजों ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच नफरत फैलाई। नफरत पहले से ही मौजूद थी। वे बस इसका फायदा उठा रहे थे और इससे लाभ प्राप्त कर रहे थे। इसकी एक समान मिसाल दो बंधे हुए कुत्तों की है; वे एक-दूसरे पर भौंकते रहते हैं, और कभी-कभी एक-दूसरे को काट भी लेते हैं - औपनिवेशिक शासन के दौरान हिंदू-मुस्लिम संबंधों की यही स्थिति थी। ये जंजीरें बाद में टूट गईं।

157 सुरक्षा कवच को पंजाबी में तवीत या उर्दू में तावीज़ कहते हैं। 158 'उन लोगों' से पटेल का तात्पर्य पाकिस्तान से आए हिंदू और सिख शरणार्थियों से है। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि रंधावा पुरुष नेताओं को उनके उपनामों से संबोधित करते हैं, जबकि मृदुला साराभाई को उनके प्रथम नाम से संबोधित किया गया है, जो कथा में लैंगिक समीकरणों का एक रोचक परिणाम है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। स्वतंत्रता, जिसके परिणामस्वरूप अराजकता उत्पन्न होगी। अंत में, कमजोर बलवानों के सामने आत्मसमर्पण कर देंगे, और शांति

बहाल हो जाएगी।

भारत सरकार के महत्वपूर्ण सचिव आपातकालीन समिति की बैठक में उपस्थित हुए। उन सचिवों में एच.एम. पटेल सबसे सक्षम और जागरूक थे—उनका दिमाग तेज था, वे स्थिति को जल्दी समझ लेते थे और सही निर्णय लेते थे। मंत्री भाभा भी एक सक्षम व्यक्ति थे, वे परिस्थिति की जरूरतों को समझते थे और तुरंत उचित निर्णय लेते थे। हमने देखा कि जैसे-जैसे अधिक मुसलमान मोहल्ले छोड़कर जाने लगे, वैसे-वैसे शांति बढ़ती गई। मुसलमान पुराने किले में इकट्ठा हो रहे थे। आपातकालीन समिति ने इन शरणार्थियों को पाकिस्तान ले जाने के लिए विशेष ट्रेनों की सेवा शुरू करने का निर्णय लिया। लेकिन पंजाब में बड़े पैमाने पर दंगे हो रहे थे और सिख समूह पाकिस्तान जाने वाली ट्रेनों पर हमला कर रहे थे। उन मूर्खों को यह एहसास नहीं था कि उनके कार्यों से पाकिस्तान में उनके हिंदू और सिख भाई-बंधु और अधिक खतरे में पड़ रहे हैं; वे पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों के मार्ग में बाधा डालते रहे। पटेल अमृतसर गए और वहां के सिख नेताओं को ट्रेनों को रवाना होने देने की सलाह दी। इसका असर हुआ और ट्रेनें पाकिस्तान के लिए रवाना होने लगीं।

अब, चूंकि अधिकांश मुसलमान पाकिस्तान चले गए थे, हिंदू और सिख शरणार्थियों के बीच नए मतभेद और विभाजन पैदा हो गए। मुझे सूचना मिली कि विशेष मजिस्ट्रेट जी.के. पुरी खाली किए गए मुस्लिम घरों से भापा समुदाय के लोगों को बेदखल कर रहे थे और उन घरों को हिंदुओं को आवंटित कर रहे थे। मैं पहाड़गंज पहुंचा और पाया कि पुरी ने एक भापा सिख के हाथों को उसकी पगड़ी से बांध रखा था और शिकायत कर रहे थे कि उस व्यक्ति ने उनका पैसा चुरा लिया है। मैंने उसकी कलाई खुलवाई और पुरी को आदेश दिया कि उसे पहले आवंटित किया गया घर वापस कर दें। पुरी, बख्शी टेक चंद के दामाद थे; बाद में उन्हें भारतीय उच्चायुक्त बनाकर पाकिस्तान भेजा गया।

(पृष्ठ 180)

अब मैं उन संघर्ष के दौर के राष्ट्रीय नेताओं के बारे में बात करूँगा। पटेल कम बोलने और ध्यान से सुनने का गुण रखते थे। वे देखने में सख्त मिजाज के लगते थे। मुझे आज भी दिल्ली के एक तांगेवाले की कही बात याद है, “भगवान ने उनके चेहरे से नूर छीन लिया है।” लेकिन मैंने देखा कि वे दयालु और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। जब भी मैं

शाम को उनसे मिलता, वे मेरा बहुत गर्मजोशी और सम्मान से स्वागत करते; वे मुझे अपने पास सोफे पर बैठने के लिए कहते। आमतौर पर वे हर दिन शाम 7:30 बजे अपनी थाली में खाना खाते थे। उनके खाने में दाल, सब्जी और चपाती होती थी। वे मेरी बातें सुनते हुए खाना खाते थे। उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था, हम दोनों की सोच अक्सर एक जैसी होती थी। वे कभी उपदेश देने की कोशिश नहीं करते थे, बल्कि सोच-समझकर और संक्षिप्त जवाब देते थे। वे उन कठिन समयों में भी साहसी बने रहे और उनमें कभी डर का कोई निशान नहीं दिखा।

नेहरू पटेल के बिल्कुल विपरीत थे। वे सुसंस्कृत और सुरुचिपूर्ण थे। उन्हें समाजशास्त्र की अच्छी समझ थी, इसलिए वे अपनी राजनीति को विश्व इतिहास के व्यापक संदर्भ में रखते थे। वे कांग्रेस के इकलौते नेता थे जिनमें कला के प्रति गहरी समझ थी। वे सौंदर्य के अगाध प्रशंसक थे - दिल्ली की सभी सुंदर महिलाएं उनके घर पर आयोजित पार्टियों में आती थीं, जिन्हें उनकी प्यारी बेटी इंदिरा गांधी सादगी से सजाती थीं। नेहरू एक ईमानदार और स्पष्ट सोच वाले व्यक्ति थे। अपनी ईमानदारी के कारण वे अक्सर दूसरों को भी ईमानदार मानते थे। वे यह नहीं समझ पाते थे कि स्वार्थी लोग ईमानदारों को कैसे धोखा दे सकते हैं। इसलिए वे लोगों को ठीक से परख या परख नहीं पाते थे, और धोखेबाज लोग अक्सर उनका फायदा उठाते थे। वे भीड़ में डर जाते थे, पीठ पीछे छुरा घोंपने वालों की कहानियों से चिंतित रहते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

दिल्ली दंगों के दौरान हम सभी, और विशेष रूप से मैं और पटेल, अत्यधिक दबाव में थे। लेकिन हमने अपना मन शांत रखा और हार मानने से इनकार कर दिया।

मैं मौलाना अबुल कलाम को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता था, मैंने उन्हें केवल दूर से ही देखा था। वे दुबले-पतले, नुकीली नाक वाले व्यक्ति थे, जिनकी छोटी दाढ़ी और सिर पर कुछ बाल थे। वे उदार स्वभाव के थे और उन्हें व्हिस्की बहुत पसंद थी।

(पृष्ठ 181)

वे 'हिंदुस्तानी' में विश्वास रखते थे, लेकिन विभाजन धर्म के नाम पर हुआ था, इसलिए मुसलमानों पर उनका प्रभाव बहुत कम रह गया था। वे नेहरू से विभाजन के बारे में

बात करते हुए कहते थे, “प्रिय मित्र, हम न तो पाकिस्तान जा सकते हैं और न ही भारत में रह सकते हैं। बताइए, हमें कहाँ जाना चाहिए?” जब पूरा देश धार्मिक उन्माद में डूबा हुआ था, तब मौलाना ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो सत्य के मार्ग पर चल रहे थे। इसलिए, उन्होंने मेरे बारे में जो कुछ भी लिखा हो, मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ।

जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन मुसलमानों में सर्वश्रेष्ठ नेता थे। हमारी अक्सर मुलाकात होती थी; मैं उनका बहुत सम्मान करता था। उनके कलाकार नजफगढ़ हाई स्कूल को चित्रों से सजा रहे थे; उसी समय मैंने जामिया में वृक्षारोपण अभियान की योजना बनाई। दंगों के दौरान मैंने उन्हें हिंदू गुर्जरों के हमलों से बचने में मदद की।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 25

पंजाब विभाजन और पंजाबी नेता

(पृष्ठ 182)

कुछ लोग कहते हैं कि देश का विभाजन नहीं होना चाहिए था। यद्यपि विभाजन सिद्धांततः सही था, लेकिन वास्तविकता में परिस्थितियाँ बिल्कुल भिन्न थीं। कुछ बुद्धिमान और सहिष्णु लोगों को छोड़कर, आम हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे से घोर घृणा करते थे। इस घृणा के आर्थिक कारण भी थे। शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में मुसलमान हिंदुओं की तुलना में पिछड़े हुए थे, और उनमें से बहुत कम लोग सरकारी नौकरियों में कार्यरत थे। उनका मानना था कि यदि उन्हें अपना राष्ट्र नहीं मिला, तो वे हिंदुओं के गुलाम बन जाएंगे।

इसलिए, वे विभाजन के पक्ष में थे। अपने हिस्से के क्षेत्र को 'पाकिस्तान' नाम देने का मतलब था कि उसमें काफिरों के लिए कोई जगह नहीं होगी; वहाँ केवल मुसलमान ही रहेंगे और वहाँ इस्लामी शासन होगा। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, यह निश्चित था कि स्वतंत्रता मिलते ही जनसंख्या का आदान-प्रदान होगा। हालाँकि, कई

कांग्रेसी नेताओं, और विशेष रूप से नेहरू, ने इस विभाजन को एक अस्थायी आदान-प्रदान माना; उनका मानना था कि आर्थिक परिस्थितियाँ जल्द ही दोनों देशों को एकजुट कर देंगी।
सिखों के मन में गहरा असमंजस था; उनके लिए फैसला करना मुश्किल हो गया था। सिखों और हिंदुओं में कई समानताएं हैं, अक्सर एक ही परिवार में हिंदू और सिख सदस्य होते हैं। अगर उन्हें विकल्प दिया जाए, तो एक सिख मुसलमान के बजाय हिंदू का समर्थन करेगा। इसका मतलब यह था कि सिखों के लिए पाकिस्तान में कोई जगह नहीं थी, हिंदुस्तान ही उनका घर होना था।

(पृष्ठ 183)
सिखों के गुरुद्वारे और उनकी ज़मीनें पंजाब के जंगलों में थीं। वे पंजाब के ठीक मध्य में स्थित थीं, और मुसलमान उस हिस्से को पाकिस्तान का हिस्सा होने का दावा करना चाहते थे।
मैंने दिल्ली में रहते हुए इस समस्या पर गहराई से विचार किया और समझा कि देश का विभाजन अपरिहार्य था - सिख नेताओं को यह तय करना होगा कि पंजाब को भारत और पाकिस्तान के बीच कैसे विभाजित किया जाएगा।
मैंने पहले ही देखा था कि अंतरिम सरकार के दौरान, जिसमें कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों के मंत्री शामिल थे, भारत सरकार के सचिवालय में सारा काम ठप्प हो गया था। एक फाइल भी एक मेज से दूसरी मेज तक नहीं पहुंच रही थी। सरकार दो गुटों में बंटी हुई थी - कांग्रेस गुट और मुस्लिम लीग गुट। कांग्रेस गुट में हिंदू और सिख कर्मचारी थे, जबकि मुस्लिम कर्मचारी मुस्लिम लीग गुट का हिस्सा थे। अन्य शहरों में हिंदू-मुस्लिम दंगे भड़क उठे थे और कई कार्यस्थल बंद हो गए थे।160
कुछ सिख नेता अपने लिए एक अलग देश 'सिखिस्तान' बनाना चाहते थे, लेकिन सिख तीन प्रमुख जातियों में विभाजित थे। पहली जाति जाटों की थी, जो कुशल किसान और वीर योद्धा थे। बड़ी संख्या में जाट पुलिस और सेना में कार्यरत थे—वे देश के संरक्षक थे। दूसरी जाति रामगढ़िया थी।

159 इसमें पंजाबी मूल में ‘उद्योग’ शब्द का भी उल्लेख है, जबकि अंग्रेजी शब्द गुरुमुखी लिपि में है। 160 यहाँ उनका तात्पर्य कार्य और कार्यस्थलों के बंद होने से है;

कार्य सामान्य अर्थ में नहीं, बल्कि विशिष्ट व्यवसायों में लगे लोगों द्वारा अपने कार्यों/सेवाओं को बंद करने के संदर्भ में है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। इस पुस्तक में वर्णित तीन जातियाँ थीं: खत्री और अरोरा जातियाँ, जो जन्मजात प्रतिभाशाली इंजीनियर होती हैं और कृषि के लिए मशीनें और औजार बनाने में निपुण होती हैं। तीसरी जातियाँ थीं खत्री और अरोरा जातियाँ, जो व्यापार और उद्योग के प्रबंधन में कुशल होती हैं। ये तीनों जातियाँ पूरे भारत में फैली हुई थीं - इन मेहनती और साहसी लोगों को 'सिखिस्तान' नामक पिंजरे में कैद करना प्रतिकूल होता। सिखों के एक प्रमुख नेता बलदेव सिंह का टाटा नगर में अपना कारखाना था, इसलिए उन्होंने सिखिस्तान को सिखों के हित में नहीं समझा।

अब यह स्पष्ट हो चुका था कि पंजाब का विभाजन होना तय है। जनवरी 1947 में ज्ञानी करतार सिंह मुझसे मिलने आए। ज्ञानी बदसूरत थे। उनका चेहरा चेचक के दागों से भरा था, शराब के नशे में उनकी आँखें लाल थीं—वे एक खोए हुए इंसान की तरह लग रहे थे। उन्होंने एक पुरानी नीली पगड़ी, मोटा खादी का पजामा और पट्टू रेशमी कोट पहना हुआ था। देखने में बदसूरत होने के बावजूद, उनकी बुद्धि तीव्र थी और उनका मन स्पष्ट और सतर्क था। वे दृढ़ विश्वास के साथ बोलते थे और उनकी विचार प्रक्रिया सुव्यवस्थित थी। पंजाब के विभाजन पर मेरे विचार-विमर्श के बाद, मैंने उन्हें रावी नदी तक विभाजन की मांग करने की सलाह दी। यदि इस मांग के विरुद्ध उन पर दबाव डाला गया, तो वे लाहौर मुसलमानों को दे सकते थे। मेरे द्वारा परिकल्पित इस सीमा-विभाजन के अनुसार, मोंटगोमरी का क्षेत्र भारत में आ जाएगा और वहाँ रहने वाले सिख किसान और जमींदार अपनी आजीविका नहीं खोएंगे।

(पृष्ठ 184)

ज्ञानी को यह प्रस्ताव पसंद आया; मैंने उन्हें अंग्रेज़ी में लिखा एक पर्चा और उससे संबंधित नक्शा दिया। उन्होंने इसे अपने नाम से प्रकाशित करवाया और सरदार रणजीत सिंह ने प्रकाशन का खर्च उठाया। यह पर्चा कांग्रेस नेताओं, विशेषकर पार्टी के उच्च पदों पर आसीन लोगों में वितरित किया गया। इससे स्पष्ट संकेत मिला कि सिखों ने अपना निर्णय पक्का कर लिया था, उन्होंने अपना मन बना लिया था। यही एक और

कारण था कि मुझे पंजाबी शरणार्थियों के प्रति इतनी सहानुभूति थी - मैं विभाजन के निर्णय में शामिल था, इसलिए मैंने पाकिस्तान से विस्थापित हुए लोगों को हर संभव सहायता प्रदान करने का नैतिक दायित्व महसूस किया।
दूसरे, मैंने देखा कि कांग्रेस नेता पंजाब की समस्या को समझ नहीं पा रहे थे और पंजाबी शरणार्थियों के प्रति उनमें कोई सहानुभूति नहीं थी। इस उदासीनता का मुख्य कारण यह था कि ये नेता संयुक्त प्रांत, बंबई और दक्षिण भारत से थे - विभाजन से उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ था। कुछ पंजाबी हिंदू नेहरू के पास दिल्ली से लगभग 7 किलोमीटर दूर 500 एकड़ जमीन मांगने आए ताकि वे अपनी बस्ती बसा सकें। नेहरू ने जवाब दिया, "7 किलोमीटर नहीं, बल्कि 700 किलोमीटर दूर।"
पंजाबी नेतृत्व महत्वहीन और कमजोर था। लाला बिहारी लाल चन्ना पंजाबी व्यापार मंडल के अध्यक्ष थे।162 वे नेहरू, पटेल और पंत के पीछे-पीछे चलते थे। पटेल और पंत मुझसे उनके बारे में पूछते थे और उनका मजाक उड़ाते थे। चन्ना दुबले-पतले, कमजोर व्यक्ति थे, जिनका चेहरा पीला पड़ गया था। मुझे लगता है कि एक दुकानदार का नेता बनना असंभव है, क्योंकि नेता लाभ या हानि के बारे में नहीं सोच सकते। मुझे छोटू राम का इस बारे में एक मजाक याद आता है। अपनी मृत्युशय्या पर एक लाला जी से पूछा गया, "आप कहाँ जाना चाहते हैं - स्वर्ग या नरक?" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे वहाँ भेजिए जहाँ अधिक लाभ हो।" यदि कोई लाला जी बीमार पड़ जाते और उनसे पूछा जाता कि वे पहले से कितना बेहतर महसूस कर रहे हैं, तो

161 मोंटगोमरी, पाकिस्तान का नाम बदलकर साहिवाल कर दिया गया है। विभाजन के दौरान वहाँ हुए खूनी दंगों से कई हिंदू और सिख शरणार्थी भाग निकले और उत्तरी भारत में आ बसे। 162 लिट., पंजाबी ट्रेड सोसाइटी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। पहले, वह जवाब देता था: 2 पैसे बेहतर। चाहे स्वस्थ हों या बीमार, वे पैसे के हिसाब से ही सोचते हैं।
मुझे कभी मास्टर तारा सिंह से मिलने का अवसर नहीं मिला, लेकिन उनके भाषणों से यह स्पष्ट था कि वे भावुक व्यक्ति थे।
पंजाब कांग्रेस के नेताओं में स्वर्ण सिंह सबसे बुद्धिमान विचारक थे। वे लाहौर के

सरकारी कॉलेज में मेरे सहपाठी थे।

(पृष्ठ 185)
वे हर समस्या पर बड़ी शांति से विचार करते थे और कभी भी आवेग में आकर निर्णय नहीं लेते थे। यही उनकी सफलता का कारण था। वे एकमात्र ऐसे मंत्री हैं जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद से इतने लंबे समय तक लगातार मंत्री पद संभाला है [पहले पंजाब सरकार में और बाद में भारत सरकार में]। स्वर्ण सिंह भावुक नहीं थे। मैंने उन्हें कभी क्रोधित होते या अत्यधिक स्नेह प्रकट करते नहीं देखा। मुझे लगता है कि यदि तारा सिंह और स्वर्ण सिंह को मिला दिया जाए, तो हमें मानवता का एक आदर्श नमूना मिलेगा।
गांधी जी के कट्टर समर्थक डॉ. गोपी चंद भार्गव एक अत्यंत मिलनसार व्यक्ति थे। वे खादी, घानी तेल और पिसे हुए आटे पर जीवन यापन करने में विश्वास रखते थे। नेहरू उनसे ईर्ष्या करते थे क्योंकि वे पटेल के मित्र थे। वे बहुत मेहनती थे और प्रत्येक बैठक से पहले आवश्यक दस्तावेजों को पढ़कर तैयारी करते थे। लेकिन उन्हें आधुनिक विज्ञान या हमारी बदलती दुनिया का कोई ज्ञान या समझ नहीं थी; उनमें गतिशीलता का अभाव था। स्वर्ण सिंह ने एक बार मुझसे कहा था कि उनके विचार हठी और असत्यापित थे।163
प्रताप सिंह कैरों का नाम तक कोई नहीं जानता था। वे एक अज्ञात नेता थे। जनरल मोहन सिंह अत्यंत साहसी और शायद युवा नेताओं में सबसे उत्साही थे। उनमें उत्कृष्ट संगठनात्मक क्षमता थी और युवाओं में वे काफी लोकप्रिय थे। वे इतने उत्साही थे कि उनसे मिलने आने वाले लोग भी जोश और उत्साह से भर जाते थे।
भीम सेन सचर एक कट्टर आर्य समाजी थे, इसलिए सिख उन पर भरोसा नहीं करते थे। वे साफ-सुथरे कपड़े पहनते थे— इस्त्री किया हुआ अचकन, चूड़ीदार पजामा और गांधी टोपी। वे बहुत अहंकारी थे और अपने सहयोगियों और अधीनस्थों को अपने लिए काम करने के लिए राजी करना नहीं जानते थे। उन्हें हर किसी से दुश्मनी मोल लेने की आदत थी। वे बार-बार अपनी घड़ी देखते रहते थे और अगर कोई उनसे मिलने में सिर्फ दो मिनट भी देर कर दे तो उनसे झगड़ा करने लगते थे। सचर मौलाना और नेहरू के करीबी थे, लेकिन पटेल उन्हें पसंद नहीं करते थे।
पंजाब के विपत्ति के दिनों में, इनमें से कई नेता दिल्ली जाकर राजेंद्र प्रसाद की

अध्यक्षता वाली समिति की बैठकों में भाग लेते थे, जिसका गठन पंजाब के शरणार्थियों के पुनर्वास के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए किया गया था। मैंने देखा कि इन बैठकों में सीमा प्रांत के लाला मेहर चंद खन्ना के अलावा कोई भी ईमानदारी या साहस से बात नहीं करता था। मुझे अक्सर पहल करनी पड़ती थी और पंजाब की वास्तविक स्थिति और पंजाबियों के दुख को सामने रखना पड़ता था। चापलूसों के इस समूह को देखकर मेरा दिल घृणा से भर जाता था।

163 मूल में प्रयुक्त मुहावरा 'मेहन दी धड़' है, जिसका अर्थ है अज्ञानता/मूर्खता।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 26

महान बलिदान
(1948)

(पृष्ठ 186)
महात्मा गांधी जुलाई 1947 में दिल्ली आए। वे भंगी कॉलोनी में रहने लगे क्योंकि वे भारत के सबसे गरीब लोगों के प्रति वास्तव में सहानुभूति रखते थे। मैंने उसी महीने वृक्षारोपण सप्ताह का आयोजन किया था और गांधीजी से दिल्ली जेल आने, कैदियों में मिठाई बांटने और वहां एक आम का पेड़ लगाने का अनुरोध किया था। उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार किया और डॉ. सुशीला नायर और बृज कृष्ण चांदीवाले के साथ जेल आए। उन्होंने कैदियों के साथ मिठाई बांटी और शाम को उनके साथ प्रार्थना सभा का नेतृत्व किया। इसके बाद उन्होंने चंदा मांगा। मेरी जेब में 500 रुपये का चेक था, जो मैंने उन्हें दे दिया। उन्होंने कहा, “भगवान की कृपा देखिए - आप 5 रुपये मांगते हैं और आपको 500 रुपये मिलते हैं!”
जनवरी 1948 में, पंजाब और सीमावर्ती क्षेत्रों से दिल्ली में शरणार्थियों के आने से उत्पन्न अशांति के कारण महात्मा जी ने उपवास किया। उस समय वे भंगी कॉलोनी से निकलकर बिरला हाउस में रह रहे थे। गांधीजी के निरंतर उपवास के कारण भारत

सरकार ने पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये देने पर सहमति जताई। इससे शरणार्थी क्रोधित हो गए। वे बिरला हाउस के सामने जमा हो गए और नारे लगाने लगे, "गांधी जी को मरने दो।" यह देखकर मैं स्तब्ध रह गया कि जिस व्यक्ति ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना प्राणों का बलिदान देने का प्रयास किया, उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा था।

(पृष्ठ 187)
उन दिनों गांधी और पटेल के बीच मतभेद उभर आए। मुस्लिम नेताओं, विशेष रूप से आज़ाद, खलील-उल-रहमान और अहमद सईद का मानना था कि मुस्लिम मोहल्लों में मुसलमानों द्वारा खाली किए गए मकान शरणार्थियों को आवंटित नहीं किए जाने चाहिए। पटेल इससे सहमत नहीं थे। पटेल ने मुझे महात्मा गांधी से मिलने के लिए कहा, क्योंकि मुसलमान गांधीजी से मेरे बारे में यह कहते थे कि दिल्ली प्रशासन मुसलमानों के प्रति भेदभावपूर्ण है। पटेल के कहने पर मैं गांधीजी से बिड़ला हाउस में मिलने गया। महात्मा जी लॉन में एक पलंग पर धूप में लेटे हुए थे; उन्होंने ऊनी टोपी पहन रखी थी। मैंने उन्हें प्रणाम किया और उनके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। महात्मा जी ने बोलना शुरू किया, “मैं जानता हूँ कि श्री रंधावा बहुत मेहनत करते हैं, और मुख्य आयुक्त दिन भर नशे में धुत रहते हैं और सोते रहते हैं। मुसलमान पहले आप पर भरोसा करते थे, लेकिन अब क्यों नहीं?”
मैंने जवाब दिया, “यह आपके राजनीतिक फैसलों का नतीजा है। दंगे भड़कने से पहले, मैंने पंजाबी मुसलमानों को मजिस्ट्रेट और पुलिसकर्मी नियुक्त किया था। जब हिंदू गुंडे हिंदू-बहुल इलाकों में मुसलमानों को परेशान करते थे, तो मैं उन गुंडों को काबू में करने के लिए मुस्लिम पुलिसकर्मियों और अधिकारियों को तैनात करता था और मुस्लिम दंगाइयों को पकड़ने के लिए हिंदू और सिख अधिकारियों को मुस्लिम इलाकों में भेजता था। अब, जब से आपने देश के विभाजन पर सहमति जताई है, मुस्लिम पुलिसकर्मी और अधिकारी पाकिस्तान चले गए हैं और मैंने जो प्रशासनिक संतुलन बनाए रखा था, वह बिगड़ गया है। दूसरे, 7 लाख हिंदू और सिख शरणार्थी दिल्ली आ चुके हैं, उनके पास न घर हैं और न दुकानें। शरणार्थियों के पुनर्वास तक यहां शांति बनाए रखना बहुत मुश्किल होगा।”
मौलाना अहमद सईद और मौलाना खलील-उल-रहमान भी मेरे बगल में बैठे थे। मैंने

उनकी निजी सुरक्षा के लिए गोदाम से उन्हें रिवॉल्वर दी थीं। मैंने आगे कहा, “पूछो।”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। इन मौलाना साहबों, मैंने कब इनकी विनती पर अमल नहीं किया? अगर मुसलमान असुरक्षित हैं, तो यह विभाजन के राजनीतिक फैसले की वजह से है, जिससे आप सहमत थे। पाकिस्तान से आए सभी हिंदू और सिख उत्तरी पंजाब और दिल्ली में आकर बस गए हैं। मेरा मानना है कि उनकी मदद करना भी मेरा कर्तव्य है।

(पृष्ठ 188)

मौलानाओं ने जवाब दिया, “हमें उन मस्जिदों को खाली करवाना होगा जिन पर शरणार्थियों ने कब्जा कर लिया है। मुस्लिम इलाके, खासकर जामा मस्जिद, फतेहपुरी और बल्लीमारान, जहां शरणार्थियों ने घरों पर कब्जा कर लिया है, उन्हें भी खाली करवाना होगा।” मैंने सहमति जताते हुए कहा, “शरणार्थियों को घर आवंटित होने के कुछ महीनों बाद मस्जिदों को खाली करवाया जा सकता है। अगर अभी शरणार्थियों की मुस्लिम संपत्तियों को खाली करवाने की कोई कार्रवाई की गई, तो फिर से दंगे भड़क उठेंगे।”

यह बातचीत समाप्त होने के बाद, मैंने महात्मा जी से पालम के पास दिल्ली-गुड़गांव सड़क के किनारे स्थित दौलतपुर गांव में नए पंचायत-घर का उद्घाटन करने का अनुरोध किया, जिसका निर्माण मैंने ग्रामीणों के सहयोग से करवाया था।

महात्मा जी मान गए और मैं अगले दिन उन्हें गाँव ले गया। उन्होंने वहाँ प्रार्थना सभा की। इससे मुझे प्रसन्नता हुई। उस समय दिल्ली प्रशासन में किसी को भी यह पता नहीं था कि कुछ लोग महात्मा जी की हत्या की साजिश रच रहे हैं। गांधीजी की हत्या के बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं भाग्यशाली था कि पंचायत-घर के उद्घाटन के समय उनकी हत्या नहीं हुई, क्योंकि अगर ऐसा होता तो मेरी निगरानी में उनकी हत्या के लिए मुझे ही जिम्मेदार ठहराया जाता।

20 जनवरी 1948 को गांधीजी की शाम की प्रार्थना सभा के दौरान किसी ने बम फेंक दिया। बम से दीवारें तो उड़ गईं, लेकिन कोई घायल नहीं हुआ। गांधीजी शांत रहे और उन्होंने अपनी प्रार्थना सभा फिर से शुरू कर दी।

पुलिस महानिरीक्षक वज़ीर चंद मेहरा ने सुझाव दिया कि प्रार्थना सभाओं में भाग लेने वाले सभी लोगों की पहले तलाशी ली जाए और उसके बाद ही उन्हें इकट्ठा होने की अनुमति दी जाए। महात्मा जी ने उपस्थित लोगों की तलाशी लेने से इनकार कर दिया। अत्यधिक काम के कारण मैं बीमार पड़ गया। मैं बिस्तर पर आराम कर रहा था कि शाम को किसी ने फोन करके बताया कि गांधीजी को गोली मार दी गई है। यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कोई गांधीजी पर इस तरह हमला कर सकता है। भारतीय उन्हें देवता के समान पूजते थे। दिल्ली में अफरा-तफरी मच गई। मुसलमान और सिख इस बात से भयभीत थे कि अगर हत्यारा उनके धार्मिक समुदाय का हुआ तो उन्हें भी धमकी दी जाएगी। जब पता चला कि हत्यारा एक महाराष्ट्रीयन हिंदू है, तो दोनों समुदायों ने राहत की सांस ली।

(पृष्ठ 189)
बुखार होने के बावजूद मैं जल्दी से बिरला हाउस पहुंचा। नेहरू, पटेल और अन्य नेता मुझसे पहले ही वहां पहुंच चुके थे। महात्मा जी का शव खादी के कपड़े से ढका हुआ था और ज़मीन पर रखा हुआ था। उस कमरे में घोर शोक का माहौल छाया हुआ था। मैं शाम को उसके हत्यारे से मिलने गया। उसका नाम गोडसे था और वह पुणे का रहने वाला एक महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण था। वह दुबला-पतला था और उसकी आँखें चमक रही थीं। उसे अपने किए पर ज़रा भी पछतावा नहीं था और वह लगातार बोलता रहा। वह नशे में लग रहा था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
अगली सुबह, 31 जनवरी को, गांधीजी की अर्थी राजघाट ले जाई गई। अंतिम संस्कार जुलूस के लिए 164 लाख पुरुष और महिलाएं जमा हुए थे। श्मशान घाट दिल्ली के विद्युत केंद्र के पास था; वहां लाखों लोग एकत्रित थे। दिल्ली प्रशासन के कर्मचारी और पटेल इस जन त्रासदी से सबसे अधिक प्रभावित थे। जब चिता प्रज्वलित की गई, तो भीड़ चारों दिशाओं से अंदर घुस आई। उसने वायुसेना द्वारा बनाए गए घेरे को तोड़ दिया, और ऐसा लगा कि चिता के पास मौजूद नेता - नेहरू, पटेल, मौलाना, माउंटबेटन और अन्य - भी आग में बह जाएंगे। मैं और कुछ अन्य

कांस्टेबल घोड़ों पर बैठे थे। हमने बड़ी मुश्किल से भीड़ को पीछे धकेला और नेताओं को बचाया।
बंबई के मुख्यमंत्री बी.जी. खेर ने पटेल को पहले ही सूचित कर दिया था कि कुछ मराठा गांधीजी की हत्या की योजना बना रहे हैं। मुझे नहीं पता कि पटेल ने दिल्ली प्रशासन की बैठक क्यों नहीं बुलाई ताकि हम उनकी सुरक्षा की तैयारी कर सकें। अगर हमें समय रहते इस साजिश की सूचना मिल जाती, तो हम उचित कदम उठाते— गांधीजी की प्रार्थना सभा में किसी को भी तलाशी के बिना प्रवेश नहीं करने देते, चाहे तलाशी को लेकर गांधीजी को कितनी भी आपत्ति क्यों न हो। अगर यह सावधानी समय पर बरती गई होती, तो गांधीजी की हत्या दिल्ली में या कहीं और नहीं होती।
मैं यहाँ यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि दिल्ली के रेजिडेंट मजिस्ट्रेट, आतम प्रकाश बागई ने बिरला हाउस में हुए बम विस्फोट स्थल का निरीक्षण तक नहीं किया, जबकि बिरला हाउस उनके अधिकार क्षेत्र में आता था। उन्होंने अपने काम को केवल मुकदमों की सुनवाई तक सीमित कर लिया और अपने क्षेत्र का उचित प्रशासन नहीं किया।
पटेल ने जनसंघ का दमन शुरू कर दिया। दिल्ली प्रशासन को जनसंघ के सदस्यों को गिरफ्तार करने के आदेश मिले। हमने सैकड़ों जनसंघियों को गिरफ्तार किया (165)। उनमें से कई दफ्तरों में काम करने वाले क्लर्क थे। कुछ स्कूली छात्र और कॉलेज के विद्यार्थी भी गिरफ्तार किए गए। जब जेल पूरी तरह भर गई, तो यह तय किया गया कि हम उन्हीं लोगों को रिहा करेंगे जो माफी मांगेंगे और जनसंघ छोड़ने का वादा करेंगे। मैंने कई माफी पत्रों की साइक्लोस्टाइल प्रिंटिंग करवाई और कागजों का बंडल जेल ले गया।

(पृष्ठ 190)
यह घोषणा की गई कि जो भी माफी मांगेगा उसे रिहा कर दिया जाएगा; कैदियों के बीच फॉर्म बांटे गए। उन्होंने फॉर्म लिए, जवाब के बारे में सोचने के लिए कुछ समय लिया और फिर उन्हें वापस कर दिया - उन्होंने माफी मांगने से इनकार कर दिया। महात्मा गांधी के बलिदान से शरणार्थी स्तब्ध रह गए। अब भारत सरकार का उनके प्रति सहानुभूति का रवैया कम हो गया, विशेषकर शरणार्थियों के एक महत्वपूर्ण वार्ताकार के खो जाने के बाद। महात्मा गांधी की हत्या का जश्न मिठाई बाँटकर मनाने वाले जनसंघी भी शांत हो गए। महात्मा गांधी के बलिदान से घृणा की आग बुझ चुकी

थी।

164 आज महात्मा गांधी को समर्पित एक स्मारक, राज घाट, शाहजहानाबाद (शाहजहाँ द्वारा विकसित दिल्ली का शहरी क्षेत्र) के हिस्से के रूप में यमुना में जाने वाली ऐतिहासिक सीढ़ियों का नया नाम है। इसका मोटे तौर पर अनुवाद 'राजा का किनारा' के रूप में किया जाता है। उनकी स्मृति में एक छोर पर शाश्वत लौ जलती रहती है। 165 लिट., जनसंघ से संबंधित।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 27

स्वतंत्रता और पंजाबियों का विस्थापन

(पृष्ठ 191)

16 अगस्त 1947 की शनिवार की सुबह, नेहरू ने लाल किले की प्राचीर से स्वतंत्र भारत का तिरंगा फहराया। मैं उस विशेष समारोह में उपस्थित था। लाल किले के गैरीसन इंजीनियर, कुलवंत सिंह ने झंडे की व्यवस्था की थी और मैं लाल किला समिति का अध्यक्ष था। अंतिम ध्वजारोहण से पहले, निर्धारित तिथि से दो-तीन दिन पहले कई पूर्वाभ्यास किए गए थे। इन अभ्यास सत्रों के दौरान, हमें अक्सर झंडे को आसानी से खोलने और फहराने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। जब नेहरू ने झंडे की रस्सी पकड़ी, तो कुलवंत सिंह और मैं घबराकर देखते रहे, यह उम्मीद करते हुए कि कोई अपशगुन झंडे को ठीक से फहराने से न रोके। जब झंडा शीर्ष पर पहुंचा, तो आकाश जोरदार तालियों से गूंज उठा। हमारे सामने मैदान में पांच लाख लोग मौजूद थे, उनके चेहरों के समुद्र के पीछे जामा मस्जिद के सफेद गुंबद थे, जो चमकीले नीले आकाश में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे।

अपने देश की आजादी से हम सब बहुत खुश थे। राजेंद्र प्रसाद और पटेल मेरे बगल में खड़े थे। बीबी शानो देवी मेरे पीछे खड़ी थीं। आँखों में आँसू लिए उन्होंने मुझसे कहा, “भाई, तुम जश्न मना रहे हो जबकि पंजाब जल रहा है। हमें पंजाब के इस दुख के बारे

में अब तक पता ही नहीं था।”
मार्च 1947 से पंजाब में हिंसा भड़क उठी थी। बलूचिस्तान और सीमावर्ती क्षेत्रों से हिंदू और सिख मार्च-अप्रैल से दिल्ली आने लगे थे।

(पृष्ठ 192)
मार्च 1947 में रावलपिंडी में दंगे भड़क उठे – 2000 सिख मारे गए, और महिलाओं और लड़कियों ने अपनी इज्जत बचाने के लिए कुओं में छलांग लगा दी। इसी तरह के हमलों के डर से, कई पोठोहारी अप्रैल 1947 में पोठोहार छोड़कर दिल्ली आ गए। उनके खाने-पीने और रहने का इंतजाम गुरुद्वारा बंगला साहिब में किया गया। सरदार मोहन सिंह (ओरिएंटल फर्नीचर कंपनी के मालिक) ने इस व्यवस्था में मेरी मदद की। चूंकि ये शरणार्थी समय रहते पाकिस्तान छोड़ चुके थे, इसलिए वे अपना पैसा, सोना और अन्य कीमती सामान साथ ला सके। हालांकि, बचे हुए पंजाबियों में से बहुत कम लोग समय पर पाकिस्तान छोड़ पाए। 16 अगस्त की दोपहर को रेडक्लिफ पुरस्कार की घोषणा की गई। रेडक्लिफ पहले ही इंग्लैंड के लिए रवाना हो चुके थे क्योंकि वे जानते थे कि उनके पुरस्कार से कोई भी संतुष्ट नहीं होगा। इस पुरस्कार से सिखों को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। उन्होंने लायलपुर, सरगोधा और मोंटगोमरी की बंजर और जंगली जमीनों को जोता था; उन्होंने वहां के जंगलों को साफ किया, ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल किया और सिंचाई व्यवस्था स्थापित की। उन्होंने उन स्थानों पर माल्टा फलों के बाग लगाए थे जो पहले बंजर और रेत के टीलों से भरे हुए थे। अब उनसे उनके पूर्वजों की भूमि छीन ली गई थी, उन जमीनों पर उनकी मेहनत का फल अब नहीं मिलेगा। यहां तक कि उनका सबसे पवित्र स्थल, सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी का जन्मस्थान भी पाकिस्तान में रह गया था।
लाहौर हिंदू मध्यम वर्ग का केंद्र था। उनके महाविद्यालय, विद्यालय और अन्य संस्थान, घर, बंगले और दुकानें वहीं थे। हिंदुओं की संपत्ति मुसलमानों ने उसी प्रकार हड़प ली, जैसे शहद से भरा छत्ता शिकारी द्वारा छीन लिया जाता है।
6 सितंबर तक 5 लाख शरणार्थी दिल्ली पहुँच चुके थे। उनमें से दुकानदारों ने चांदनी में बनियाओं की दुकानों के सामने स्टॉल लगाकर सामान बेचना शुरू कर दिया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना

अनुमति के प्रसारित न करें। चौक, खारी बावली और अन्य बाजार। रावलपिंडी के भापा समुदाय ने चांदनी चौक में खाने-पीने की दुकानें खोलीं और कबाब व कीमा बेचना शुरू किया। दिल्ली के बनिया दुकानदार मांसाहारी भोजन से नफरत करते थे, इसलिए उन्होंने महात्मा गांधी से शरणार्थियों की शिकायत की। वास्तव में, वे मांसाहारी भोजन से ज़्यादा इन छोटे विक्रेताओं से होने वाली प्रतिस्पर्धा से परेशान थे। उनका मानना था कि मैंने ही शरणार्थियों को दिल्ली बुलाया है। इसलिए, जिन बनियों के पहले मेरे साथ अच्छे संबंध थे, वे मेरे खिलाफ हो गए और यह झूठा प्रचार फैलाया कि मैं पंजाबियों के प्रति पक्षपात कर रहा हूँ।

(पृष्ठ 193)

इन शिकायतों से क्रोधित होकर गृह सचिव बनर्जी ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया और पंजाबियों की मदद करने के लिए मुझे ही दोषी ठहराया।166 मैंने उत्तर दिया, “मैं इन पंजाबियों की मदद इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि वे विस्थापित हुए हैं, न कि इसलिए कि वे पंजाबी हैं। शरणार्थियों की मदद करना हर भारतीय का कर्तव्य है।” तब मैंने स्वयं से पूछा— कितने भारतीय राज्य, धर्म और जाति की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर दूसरों की मदद करते हैं? यदि कोई बंगाली या मद्रासी167 अधिकारी भारतीय सरकार के किसी कार्यालय का प्रमुख होता है, तो वह अपने कार्यालय को बंगालियों या मद्रासियों से भरने लगता है। यह प्रवृत्ति शीर्ष स्तर तक सभी स्तरों पर स्पष्ट थी—यहाँ तक कि नेहरू भी कश्मीरी ब्राह्मणों से घिरे हुए थे।

दिल्ली में हालात 7 सितंबर 1947 तक लगातार बिगड़ते रहे। यह स्थानीय प्रशासन के नियंत्रण से बाहर हो गया। सब्जी मंडी में मुस्लिम घरों से गोलीबारी की घटनाएं हुईं। पहाड़गंज, जो कभी भारी बोरियां उठाने वाले मुस्लिम मजदूरों का इलाका हुआ करता था, दंगों का केंद्र बन गया।

मैंने देखा कि जनसंघी और सिख अधिक नुकसान और विनाश कर रहे थे, जबकि मुसलमान अक्सर उस हिंसा का शिकार बन रहे थे। मैंने लंबे खंजर168 और तलवारें रखने वाले सिखों को निहत्थे रहने का आदेश दिया। उस समय तक, हम कृपाण पर प्रतिबंध लगाने के पक्ष में नहीं थे क्योंकि यह सिखों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक प्रतीक था, और क्योंकि सिखों द्वारा बदला लेने से पहले मुसलमान सिखों पर हमला कर रहे थे। वास्तव में, यह मुस्लिम लीग का नारा था: "सिख को मारो और हिंदू को

लूटो।" हालांकि, अब स्थिति बदल गई थी - सिख हमलावर बन गए थे, और मुसलमान पीड़ित।
कृपाण के मुद्दे पर एक बैठक हुई; इसमें नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद और बलदेव सिंह उपस्थित थे। बलदेव सिंह मुझे एक तरफ ले गए और बोले, “कृपाण पर प्रतिबंध नहीं लगना चाहिए; यह सिखों का धार्मिक प्रतीक है।” मैंने जवाब दिया, “फिलहाल इस पर प्रतिबंध लगना चाहिए क्योंकि सिख मुसलमानों पर हमला कर रहे हैं।” बलदेव सिंह ने अपनी बात दोहराई। मैंने उनसे कहा कि मैंने उन्हें अपनी अंतिम सलाह दे दी है और अब यह फैसला उन्हें ही करना है और नेहरू और पटेल को बताना है। हालांकि, बैठक में बलदेव सिंह अपने विचार व्यक्त करने की हिम्मत नहीं कर पाए। उस बैठक के बाद मेरी नजरों में उनका सम्मान कम हो गया।

166 यहाँ उन पर आरोप है कि वे दिल्ली के मूल निवासियों के बजाय पंजाबी शरणार्थियों के प्रति पक्षपाती हैं, हालाँकि दिल्ली का 'मूल निवासी' कौन है, यह एक और जटिल प्रश्न है क्योंकि दिल्ली इतिहास भर में प्रवासी समुदायों का घर रहा है।
167 या तमिल, मद्रास ब्रिटिश शासन के अधीन एक पूर्व प्रांत था, और मद्रास के लोगों को आमतौर पर मद्रासी कहा जाता था (हालांकि यहाँ इसका उपयोग अपमान के रूप में नहीं किया जाता है), भले ही उनकी क्षेत्रीय, भाषाई और सांस्कृतिक निष्ठाएँ अलग-अलग हों।
168 यहाँ, कृपाण, एक दोधारी कटार है जिसका सिखों के लिए धार्मिक महत्व है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 194)
मैंने देखा कि कठिन परिस्थितियों में बलदेव सिंह कायर बन जाता था। वह केवल कागजों पर ही पहलवान था। यदि उसने उस समय कोई साहस या दृढ़ संकल्प दिखाया होता, तो मोंटगोमरी जिला, जहाँ ढाई लाख मुसलमानों के साथ 10 लाख सिख आबादी रहती थी, नानकाना साहिब सहित भारत का हिस्सा होता।169 यहाँ तक कि पंजाब के राज्यपाल जेनकिंस भी इसके पक्ष में थे।
अंततः, कृपाण पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया गया; मैंने पुलिस को आदेश दिया

कि किसी के भी पास से कृपाण ले जाते हुए उसे जब्त कर लिया जाए।
भारत सरकार ने 11 सितंबर 1947 को दिल्ली आपातकालीन समिति की स्थापना की। वाणिज्य मंत्री सी.एच. भाभा इसके अध्यक्ष थे, जबकि मंत्रिमंडल सचिव एच.एम. पटेल इसके सचिव बने। मैं और मुख्य आयुक्त खुर्शीद इस समिति के सदस्य थे। हमारे अलावा, एच.बी. लाल और भारत सरकार के अन्य सचिव भी इसके सदस्य थे। इस समिति को दिल्ली के प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।
जनसंघी रेलवे स्टेशनों पर मुसलमानों पर चाकू से हमला कर रहे थे। मैंने देखा कि पुलिस इस अराजकता के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर रही थी। हमलावर मुसलमानों पर हमला करने के बाद नगर समिति के बगीचे की बाड़ में चाकू छिपा देते थे। मैंने सारी बाड़ हटवा दी। इससे चाकूबाजी की घटनाओं में कमी आई। फिर, मैं दो अंगरक्षकों के साथ रेलवे स्टेशन गया, जहाँ मैंने एक जनसंघी को एक मुसलमान पर चाकू से हमला करते देखा। मेरे अंगरक्षकों और मैंने हमलावर पर गोली चलाई, जिसके परिणामस्वरूप वह मारा गया। हम तुरंत घायल मुसलमान को अपनी जीप में नगर समिति (जो आपातकालीन समिति का मुख्यालय भी था) ले गए और इस तरह हमने उसकी जान बचाई।
दिल्ली के मुसलमान पुराने किले में शरण ले रहे थे। एक दिन मैं करोल बाग में गश्त कर रहा था। उस इलाके के स्टेशन हाउस ऑफिसर, जगन नाथ, जनसंघी थे और वे मुसलमानों को उस इलाके से हटाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे थे। मैं नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. जोशी से मिलने गया और उन्हें सलाह दी कि वे अंधेरे में घर न निकलें क्योंकि यह असुरक्षित था। वे लापरवाह हो गए और डॉ. कुरैशी की गोली से उनकी मृत्यु हो गई। उस गश्त से जुड़ी एक और घटना मुझे याद आती है। मैं एक राष्ट्रवादी मुस्लिम परिवार से मिलने गया था, जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता था। बेगम एक सुसंस्कृत महिला थीं जो मुस्लिम लीग की विचारधारा से सहमत नहीं थीं। मैंने उन्हें सलाह दी कि वे किसी पर भी भरोसा न करें क्योंकि स्थिति बदल चुकी थी।

(पृष्ठ 195)
उसने मेरी सलाह मान ली, अपने पैसे और गहने इकट्ठा किए और अपनी बेटियों के साथ मेरी कार में बैठ गई। मैंने उसे एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।
दिल्ली में अफरा-तफरी मच गई। पश्चिमी पंजाब से लोगों से भरी ट्रेनें दिल्ली आने

लगीं। दिल्ली प्रशासन के पास खाद ढोने के लिए लगभग तीस ट्रक थे। मैंने ट्रक चालकों को रेलवे स्टेशन से शरणार्थियों को लेने और उन्हें किंग्सवे की बैरकों तक पहुंचाने का आदेश दिया। इस तरह हजारों बेघर शरणार्थियों को रहने की जगह मिली। फिर, लाला

169 नानकाना साहिब प्रथम सिख गुरु, गुरु नानक के जन्म का स्थल है। यह ऐतिहासिक गुरुद्वारा हाल ही में करतारपुर कॉरिडोर के माध्यम से भारत के गुरदासपुर स्थित डेरा बाबा नानक से जुड़ गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

राम निवास ने रजाईयां इकट्ठा करके शरणार्थियों में बांटने में सहयोग किया। वे बिरला क्लॉथ मिल के प्रबंधक थे।

दिल्ली के सिविल लाइंस में बड़े-बड़े बंगले थे जिनमें नौकरों के लिए क्वार्टर भी थे। मैंने सभी मकान मालिकों को आदेश दिया कि वे विस्थापित बेघरों को उन क्वार्टरों में शरण दें। इस तरह कई शरणार्थियों को अस्थायी रूप से घर मिल गए।

पुनर्वास मंत्रालय के सचिव कृपलानी ने मुझे फोन किया और बताया कि लगभग 20,000 पंजाबी रावी नदी पार नहीं कर पा रहे हैं। वे कई दिनों से भूखे थे। उनके लिए तुरंत भोजन की व्यवस्था करना आवश्यक था। उसी दौरान, 170 पंजाबियों की एक लहर ने दिल्ली के विभिन्न पंजाबियों को एकजुट कर दिया। मैंने अपनी पत्नी इकबाल कौर से कहा कि वे गुरुद्वारा सिस गंज में गेहूं के आटे की बोरियां ले जाएं। मैंने रेडियो पर दिल्ली की महिलाओं से भी अपील की कि वे रावी नदी के किनारे भूखे शरणार्थियों के लिए गुरुद्वारे में गेहूं का आटा ले जाएं। सैकड़ों महिलाएं शरणार्थियों के लिए आटा दान करने गुरुद्वारे पहुंचीं और बड़ी संख्या में चपातियां बनाने लगीं। रावलपिंडी के भापा कई डिब्बे आम का अचार लाए और अगले दिन, हमने सुबह-सुबह चपातियां और आम का अचार हवाई जहाज में लोड किया, ताकि भोजन भूखे शरणार्थियों तक पहुंचाया जा सके। इस तरह असहाय पंजाबियों को भोजन उपलब्ध कराया गया। मैंने जालंधर में कुछ शरणार्थियों से मुलाकात की, और उन्होंने मुझे बताया कि सरकार की उस कार्रवाई ने अनगिनत लोगों की जान बचाई है और

शरणार्थियों को उम्मीद न छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया है।
एक शाम नेहरू और त्रिलोक सिंह मेरे साथ किंग्सवे बैरक गए। उनसे मिलने पर भापा नाम के एक व्यक्ति ने कहा, “हम इन शिविरों में बेकार नहीं बैठना चाहते। मैं एक स्कूल शिक्षक हूँ, मुझे काम करने दीजिए।” नेहरू ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उनका पक्ष रखते हुए कहा कि इन शरणार्थियों को जो भी काम उपलब्ध हो, वह दिया जाना चाहिए। वे पंजाबी मेहनती लोग थे और वे राज्य की दान-पुण्य पर जीना नहीं चाहते थे।171 इसके बाद नेहरू ने पुनर्वास मंत्रालय की स्थापना की।

(पृष्ठ 196)
मुझे पता था कि सरकार पुनर्वास के लिए अपनी योजनाएँ बनाएगी, लेकिन मुझे शरणार्थियों की हर संभव मदद करना जारी रखना चाहिए। ट्रकों और टैक्सियों के लिए 500 परमिट जारी किए जाने थे। मैंने पाया कि कई क्लर्क इन परमिटों को जारी करने में भ्रष्टाचार और लालफीताशाही में लिप्त थे। मैंने परमिट जारी करने का एक नया तरीका निकाला। परमिट के लिए 2000 उम्मीदवार थे। मैंने उन्हें स्थानीय लोगों और शरणार्थियों की दो अलग-अलग पंक्तियों में खड़े होने को कहा। लगभग 1000 स्थानीय लोग थे, जिन्हें मैंने जाने के लिए कहा क्योंकि परमिट शरणार्थियों के लिए थे। वे असंतोष जताते हुए चले गए। फिर मैं शरणार्थियों के पास गया और उनसे कहा कि जिन्हें वाहन चलाने का पूर्व अनुभव है, वे रुकें, बाकी लोग जा सकते हैं। उनमें से लगभग सौ लोग रुके रहे - उनके कागजात की जाँच की गई और उन्हें परमिट दे दिए गए। मैं यहाँ यह उल्लेख करना चाहूँगा कि एस्कॉर्ट ट्रैक्टर्स के मालिक एच.पी. नंदा को मैंने दो टैक्सियों के परमिट दिए थे और वे इस छोटे से व्यवसाय की मदद से एक बड़ा कारोबार खड़ा करने में सक्षम हुए। मैं उन पंजाबियों को सलाम करता हूँ जिन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी कुशलता और उद्यमशीलता से बड़े-बड़े व्यवसायों को फिर से खड़ा किया। दिल्ली में जीवन आसान होने लगा।

170. यहाँ 'पंजाबीत' शब्द पंजाबी 'हम' की भावना को दर्शाता है। 171. यहाँ प्रयुक्त शब्द 'हरामखोर' है, जो एक अपमान/गाली है और इसका तात्पर्य स्वयं के परिश्रम से अर्जित न किए गए धन या संदिग्ध साधनों से प्राप्त धन पर जीवन यापन करना है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

देश के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण से न केवल पश्चिमी पंजाब के पंजाबी पूर्वी पंजाब और दिल्ली की ओर पलायन कर गए, बल्कि अमृतसर और अन्य गांवों के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अशांति फैलने लगी। सरदार गुरबख्श सिंह और उनके प्रीत-सैनिक प्रीत नगर से दिल्ली आए। मैंने उन्हें महरौली के एक ईमानदार व्यक्ति, लाला गिरधारी लाल से एक बंगला दिलवाने में मदद की, और उन्होंने दिल्ली से 172 प्रीतलारी प्रकाशित करना शुरू किया। उन खतरनाक दिनों में सरदार गुरबख्श सिंह का साथ बहुत अच्छा था। मैं उनसे बहुत स्नेह करता था, और उनके साथ बिताए पल मुझे आज भी याद हैं।

मैंने सरदार प्रीतम सिंह को चांदनी चौक के नए बाजार में एक दुकान दिलाने में मदद की, जिसका नाम बदलकर प्लेजर गार्डन मार्केट कर दिया गया था; उन्होंने वहां एक प्रिंटिंग प्रेस शुरू की। यह एक ऐतिहासिक घटना थी क्योंकि सरदार प्रीतम सिंह द्वारा पंजाबी भाषा में प्रकाशन के क्षेत्र में हासिल किया गया उच्च स्तर पहले कभी नहीं देखा गया था, इसने पंजाबी साहित्य में एक नया मील का पत्थर स्थापित किया। लाहौर के प्रसिद्ध कवि और लेखक दिल्ली आए और इस प्रकार दिल्ली पंजाबी संस्कृति का केंद्र बन गया।

172 गुरबख्श सिंह एक पंजाबी उपन्यासकार और कथाकार थे। लाहौर और अमृतसर से समान दूरी पर स्थित प्रीत नगर उनकी स्थापित बस्ती थी, जिसने उस समय के कलाकारों, लेखकों और कवियों (जैसे बलराज साहनी, साहिर लुधियानवी, अमृता प्रीतम, शोभा सिंह आदि) को आकर्षित किया। प्रीतलारी दर्शन, रचनात्मक लेखन और चर्चा की एक पत्रिका थी जिसे उन्होंने शुरू किया था; यह आज भी उनके वंशजों द्वारा संचालित है। विभाजन के दंगों के दौरान प्रीत नगर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ, जिससे वहां के रचनात्मक समुदाय को विस्थापित होना पड़ा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 28

दिल्ली के नेता और दंगे

(पृष्ठ 197)

राष्ट्रीय स्तर के नेता—नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद और राजेंद्र प्रसाद—ने नेतृत्व के उच्च पायदान पर विराजमान थे। दूसरी ओर, दिल्ली के नेताओं में नेतृत्व के गुण नहीं थे—वे नेतृत्व की इस श्रेणी में उतने ही निचले पायदान पर थे, जितने कि राष्ट्रीय नेता ऊंचे पायदान पर थे। ये दोनों समूह धरती और आकाश की तरह एक दूसरे से भिन्न थे।173

इन कांग्रेसी नेताओं में सबसे धूर्त एक बनिया था जो दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने का सपना देखता था।174 वह एक तरफ जनसंघ के प्रति सहानुभूति रखता था और दूसरी तरफ मौलाना आजाद और नेहरू के साथ मित्रता बनाए रखता था। जनसंघ ने यमुना नदी के किनारे एक शिविर लगाने का फैसला किया। मुझे पूरा विश्वास था कि अगर इस शिविर को लगाने की अनुमति दी गई तो दिल्ली में सांप्रदायिक स्थिति और बिगड़ जाएगी। एक कांग्रेसी लाला जी जनसंघ की पैरवी करने मेरे पास आए।175 मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से कहा कि उस शिविर के लिए कोई अनुमति नहीं दी जाएगी और अगर इस आदेश का उल्लंघन किया गया तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। आयोजनकर्ताओं ने इसे रद्द कर दिया।

एक ओर तो ये लाला जी मेरी चापलूसी करते थे, वहीं दूसरी ओर नेहरू और मौलाना जी से मेरी कमियों की चुगली करते थे। एक बार दिल्ली से एक बनिया मेरे पास रिवॉल्वर का लाइसेंस लेने आया, और उसके पास लाला जी की सिफारिश एक कागज पर लिखी हुई थी। मैंने वह सिफारिश पढ़ी, उसे लौटा दी और लाला जी के पास वापस जाने को कहा। शाम को लाला जी मुझसे मिलने आए। मैंने उनसे कहा, "देखिए लाला जी, आपको स्पष्ट होना होगा कि आप मेरे मित्र हैं या शत्रु – यदि आप शत्रु हैं, तो मुझे ये सिफारिशें भेजना बंद कीजिए। यदि आप स्वयं को मित्र मानते हैं, तो सच्चाई बताइए और मेरे बारे में झूठी शिकायतें करना बंद कीजिए।" मेरी सीधी बात सुनकर लाला जी चौंक गए; उन्होंने मेरे प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए विदा ली।

(पृष्ठ 198)
जब मैं 1948 में दिल्ली से अंबाला स्थानांतरित हुआ, तो मैंने लाला जी के बारे में एक अखबार की हेडलाइन पढ़ी: वह व्यक्ति जो कई वर्षों से दिल्ली के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने के लिए मकड़ी का जाल बुन रहा था, अपनी योजनाओं को पूरा होने से पहले ही चल बसा — कलकत्ता हवाई अड्डे पर एक विमान दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। ईश्वर अपने समय पर कार्य करता है लेकिन सटीक न्याय करता है।176
दिल्ली के मुस्लिम नेताओं में मेरे दो बहुत अच्छे दोस्त थे—सैय्यद अजीज हुसैन बकाई और मीर मुश्ताक अहमद। बकाई हुर्रियत नामक अखबार के संपादक थे; वे जामा मस्जिद के पास रहते थे। वे कट्टर राष्ट्रवादी थे और मुसलमानों से लगातार असहमत रहते थे।

173 मुहावरा: ज़मीन आसमान दा फर्क: बहुत बड़ा अंतर होना। 174 रंधावा में विभिन्न समुदायों के लोगों को उनकी जाति के नामों से संबोधित किया जाता है, यह प्रथा आज बदल रही है।
175 लाला को आज के समय में संबोधन में 'श्रीमान' के समकक्ष माना जा सकता है। मूल रूप से इसका प्रयोग उत्तरी भारत में हिंदू व्यापारियों और दुकानदारों को संबोधित करने के लिए किया जाता था।
176 “Rabb di chakki chaldi der naal hai, par peehndi (grinds) bareek hai”, Idiom, lit., God’s grinding stone turns slowly, but grinds very well.

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। लीग के सदस्य। 177 बकाई को लगा कि मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग भारत में रहने वाले मुसलमानों के लिए प्रतिकूल साबित होगी। उन्होंने हुर्रियत का एक विशेष अंक 'गलीनामा' प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने जिन्ना और मुस्लिम लीग के अन्य नेताओं की आलोचना की। इससे उनके आसपास रहने वाले मुस्लिम लीग के सदस्य भड़क उठे और उन्होंने उनके कार्यालय पर हमला कर दिया। इस संभावित खतरे को भांपते हुए, मैंने उन्हें रिवॉल्वर का लाइसेंस जारी कर दिया था, जिसे वे हमेशा अपने पास रखते थे।

बकाई साहब ने दरगाह 'हजरत बाकी बिल्ला' में पीर के रूप में भी सेवा की। मुगलई व्यंजनों के विशेषज्ञ, उन्होंने उर्दू में इस विषय पर एक पुस्तक लिखी। उन्हें पुलाव, बिरयानी और शाही मीठा टुकड़ा बनाने में विशेष महारत हासिल थी।178 जब मेरा तबादला अंबाला हुआ, तो वे मुझसे मिलने आए, मेरे लिए ये सभी व्यंजन बनाए और मेरी पत्नी इकबाल कौर को भी इनकी विधि सिखाई।

दंगों के दौरान मैंने बकाई और मीर मुश्ताक अहमद को जामा मस्जिद और बल्लीमारान इलाकों में विशेष मजिस्ट्रेट नियुक्त किया था; उन्होंने वहां शांति बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा से काम किया। जब मेरा तबादला दिल्ली से बाहर हुआ, तो उन्होंने मेरी प्रशंसा में उर्दू पोस्टर छपवाए। ये दोनों मित्र हर सुख-दुख में मेरे साथ खड़े रहे, जबकि बनिया कांग्रेस के नेता मेरे विरोधी हो गए क्योंकि उन्हें एहसास हो गया था कि वे मुझे अपने प्रभाव में नहीं रख सकते।

मीर मुश्ताक अहमद एक कश्मीरी थे जिनका चेहरा गोरा और मुस्कुराता हुआ था। राजनीति में आने से पहले वे एक स्कूल शिक्षक और सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य थे। उन्होंने दंगों के दौरान शरणार्थियों की मदद भी की थी।

(पृष्ठ 199)

वह हमेशा तीन-चार सिख शरणार्थी लड़कों के साथ रहते थे। एक बार, उनमें से एक लड़का अपनी भरी हुई पिस्तौल से खेल रहा था - गलती से उसने अपने पेट में गोली मार ली और उसकी मृत्यु हो गई। मीर साहब और उनके अन्य साथी, जो उस घटना के चश्मदीद थे, मेरे पास आए और मुझे इसके बारे में बताया। उन्हें डर था कि पुलिस उनके खिलाफ झूठा मामला दर्ज कर देगी। मैंने तुरंत इलाके के इंस्पेक्टर को फोन किया और उन्हें बताया कि यह एक दुर्घटना थी और इस मामले में किसी की भी गलती दर्ज नहीं की जाएगी। इसलिए, कोई झूठा मामला दर्ज नहीं किया गया और मामला सुलझ गया। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मीर साहब मेरे हस्तक्षेप के लिए आभारी थे। वे 1966 में दिल्ली के कार्यकारी पार्षद बने।

मीर साहब, लछमन सिंह गिल और रियासत के संपादक सरदार दीवान सिंह माफतून मेरे करीबी दोस्तों में से थे। गिल साहब ठेकेदार थे। मैं उनकी ईमानदारी का बहुत सम्मान करता था - वे केंद्रीय निर्माण विभाग के कर्मचारियों को कभी रिश्वत नहीं देते थे, बल्कि बिल पास करवाने के लिए उन पर दबाव बनाते थे।

उर्दू पत्रकारिता के क्षेत्र में माफतून साहब का नाम सुनहरे अक्षरों में हमेशा चमकता रहेगा। उन्होंने रियासतों के राजाओं और नवाबों के अत्याचारों की सच्चाई को साहसपूर्वक उजागर किया। मैं नियमित रूप से उनका साप्ताहिक समाचार पत्र 'रियासत' पढ़ता था। वे बिहारी, पद्माकर, केशव दास और अन्य लेखकों की हिंदी कविताओं के उर्दू अनुवाद भी प्रकाशित करते थे। इसी तरह उन्होंने संबंध स्थापित किए।

177 राष्ट्रवादी से तात्पर्य यहाँ उस व्यक्ति से है जिसे रंधावा 'देशभक्त' मानते हैं - एक अविभाजित भारत का समर्थक।
178 Pulao and Biryani are spiced rice dishes, while Shahi Tukda/Shahi Meetha Tukda is a rich dessert. 179 See https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Socialist_Part_candidate,_Mir_Mushtaq_Ahmed,_canvassing_votes_for_himself_before_a_crowd_near_Jama_Masjid,_Delhi_(1952). अहमद के चुनाव प्रचार करते हुए एक तस्वीर के लिए देखें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। हिंदी और उर्दू साहित्य के बीच। मैंने रियासत के माध्यम से हिंदी कविता की कोमलता और सुंदरता का आनंद लेना शुरू किया। जब उनका अखबार 1960 में बंद हो गया, तो मैंने उन्हें दोहे और उनके अनुवादों की एक पुस्तक प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया।180 उन्होंने इस पुस्तक का नाम 'जज़्बात-ए-मशरिक' रखा। मैंने उनकी पुस्तक बेचने में उनकी मदद की। सेवानिवृत्ति के बाद वे देहरादून के राजपुर में रहने लगे। वे भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली मात्र 200 रुपये की साहित्यिक पेंशन पर गुजारा कर रहे थे। उन्होंने अपना बुढ़ापा गरीबी में बिताया। वे अक्सर दिल्ली में बिताए मेरे दिनों के बारे में लिखते थे और कांग्रेस नेताओं, विशेषकर देश बंधु गुप्ता की 'बनिया-शाही' की आलोचना करते थे।181

180 दोहा (बहुवचन 'दोहे') एक काव्य रचना है जो एक दोहा है, अपने आप में पूर्ण।

दार्शनिक-कवि कबीर और तुलसीदास दोहों के प्रसिद्ध रचनाकार हैं, जो आमतौर पर उत्तर भारतीय काव्य शैली है।
181 अंत में वह गुप्ता को अपना चापलूस/शत्रु बताता है। बनिया-शाही से तात्पर्य दिल्ली कांग्रेस में बनिया जाति के पुरुषों के प्रभुत्व से है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 29

विस्थापित पंजाबियों का पुनर्वास
जालंधर
(1949-1951)

(पृष्ठ 200)
अक्टूबर 1948 में मैं दिल्ली छोड़कर पंजाब लौट आया। उस समय डॉ. गोपी चंद भार्गव पंजाब के मुख्यमंत्री थे। मेरी उनसे मुलाकात शिमला में हुई, जो उस समय पंजाब की राजधानी थी। डॉ. भार्गव एक विनम्र व्यक्ति थे। उन्होंने मेरा बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया और पूछा कि मैं कहाँ तैनात होना चाहूँगा। उन्हें विश्वास था कि मैं पंजाब सरकार में सचिव के रूप में काम करना चाहूँगा। अल्मोड़ा में सेवा के दौरान मुझे पहाड़ों में रहने का कड़वा अनुभव हुआ था। एक पर्यटक के रूप में पहाड़ों का भ्रमण करना अच्छा है, लेकिन वहाँ लंबे समय तक रहना मुश्किल है। वहाँ लगभग दो महीने रहने के बाद ऐसा लगता है जैसे कोई जेल में रह रहा हो। मैंने उनसे कहा, "मुझे मैदानी इलाकों के किसी भी जिले में तैनात कर दीजिए।" उन्होंने मुझे अंबाला का उपायुक्त नियुक्त कर दिया। अंबाला के लोग इस बात से हैरान थे कि मैंने दिल्ली के बजाय अंबाला को चुना। अंबाला के उपायुक्त का आवास विशाल था, लेकिन शहर बेहद नीरस और गंदा था।
वहाँ पहुँचने के बाद मैंने देखा कि शहर के शरणार्थी बहुत बेचैन थे। मुझसे पहले नुकाल सेन उप आयुक्त थे। राज्य ने शरणार्थियों को बड़ी मात्रा में अनुदान और धनराशि दी थी, लेकिन शरणार्थी इन अनुदानों को उसी प्रकार खर्च नहीं कर रहे थे जैसे कोई साँप

अपने रत्नों पर बैठा रहता है।182 मैंने शरणार्थियों के बीच ऋण वितरित किया, और वे विभिन्न व्यवसायों में लग गए।

(पृष्ठ 201)
इसी दौरान मेरी मुलाकात गांधी राष्ट्रीय स्मारक महाविद्यालय के प्रधानाचार्य जसवंत राय से हुई। वे एक नेक इंसान थे और शरणार्थियों की समस्याओं के समाधान सुझाते थे। वधवा राम सनातन धर्म महाविद्यालय के प्रधानाचार्य थे। एक बार उनके महाविद्यालय में एक नाटक का आयोजन हुआ, जिसे मैंने देखा। मैंने उसमें एक बेहद प्रतिभाशाली अभिनेता को अभिनय करते देखा। उनका नाम भाग सिंह था, और बाद में मैंने उन्हें पंजाब सरकार के लोक संपर्क विभाग में भर्ती कर लिया। 183 बाद में वे एक महान अभिनेता साबित हुए और पंजाब के अभिनय जगत में उन्होंने अपना नाम रोशन किया। प्रसिद्ध कलाकार शोभा सिंह मार्च 1949 में मुझसे मिलने आए। विभाजन के कारण लाहौर से विस्थापित होने के बाद वे पहले दिल्ली गए थे। दिल्ली में मैं उनकी ज्यादा मदद नहीं कर पाया था। जब वे अंबाला में मुझसे मिलने आए, तो मैंने उन्हें अपने साथ रहने का निमंत्रण दिया। वे कुछ समय तक हमारे साथ रहे और उन्होंने अंबाला छावनी में अपनी कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की। मैंने उनकी कई पेंटिंग्स बेचने में उनकी मदद की। इस बिक्री से प्राप्त धनराशि से वह कांगरा के एक बेहद खूबसूरत गांव एंड्रेटा में अपना घर और स्टूडियो स्थापित करने में सक्षम हुए।
एक दिन मैंने उन्हें पहले से ही चिकनी मिट्टी को गूंथते हुए देखा। मैंने उनसे पूछा कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं। उन्होंने कहा, “आपने पंजाब और पंजाबियों की दिल से सेवा की है। इसलिए, मैं आपकी एक मूर्ति बनाना चाहता हूँ।” वे कुछ दिनों तक मूर्ति पर काम करते रहे। उन्होंने दस दिनों में इसे पूरा कर लिया – उन्होंने उस चिकनी मिट्टी में मेरे चेहरे की हर बारीकी को हूबहू उतार दिया था! मैं शोभा सिंह को एक चित्रकार के रूप में जानता था।

182 ‘नाग मणि’ की मिथक देखें।
183 लोक संपर्क विभाग, लिट., लोक संचार विभाग

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। और यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह एक प्रतिभाशाली मूर्तिकार भी थे। उन्होंने इस मूर्ति को अपने आंद्रेत्ता स्थित घर ले गए। सरदार गुरचरण सिंह, जिन्होंने नीली मिट्टी के बर्तनों से कला जगत में ख्याति अर्जित की थी, वे भी गर्मियों के महीनों में आंद्रेत्ता में रहते थे।184 उन्होंने मूर्ति को देखने के बाद उसकी नींव को मजबूत करने का फैसला किया। उन्होंने उसकी प्रतियां बनाने के लिए उसे प्लास्टर में ढाला। प्लास्टर की मूर्ति का रंग धूसर था। कई पहाड़ी महिलाएं शोभा सिंह के घर आती थीं और उस मूर्ति को भगवान कृष्ण की प्रतिमा मानती थीं। वे उस पर फूल चढ़ाती थीं।

श्री जोगिंदर सिंह मान, जो सच्चर सरकार में पुनर्वास मंत्री थे, मई 1949 में मुझसे मिलने आए। उन्होंने मुझसे कहा कि उनके पास बहुत काम है जो केवल मैं ही कर सकता हूँ और मुझसे पूछा कि मैं अंबाला में क्या कर रहा हूँ। मैंने उनसे पूछा, "यह काम किस बारे में है?"

(पृष्ठ 202)

उन्होंने उत्तर दिया, “शरणार्थी किसानों के पुनर्वास की योजना अव्यवस्थित है और शरणार्थी बेचैन होते जा रहे हैं।” उस समय प्रेम नाथ थापर उक्त योजना के आयुक्त थे और सरदार त्रिलोक सिंह महानिदेशक थे। थापर साहब एक अत्यंत कुशल, अनुभवी और बुद्धिमान अधिकारी थे और किसानों की समस्याओं को भली-भांति समझते थे। त्रिलोक एक कुशल योजनाकार थे, लेकिन ग्रामीण जीवन से अपरिचित थे। शरणार्थियों के पुनर्वास का क्रियान्वयन इतना अव्यवस्थित था कि उसे सुलझाना बेहद मुश्किल था। इस मुद्दे पर विचार करने के बाद, मैंने निर्णय लिया कि यह कार्य शीघ्र पूरा किया जाना चाहिए क्योंकि पंजाब और पूरे देश का कल्याण इसी पर निर्भर था। मैंने जोगिंदर सिंह मान का सुझाव स्वीकार कर लिया और पंजाब सरकार ने मुझे पुनर्वास विभाग का अतिरिक्त महानिदेशक नियुक्त कर दिया। मैंने अपना सामान पैक किया और जालंधर के लिए रवाना हो गया।

मैंने कांटेदार तारों से घिरी एक जगह देखी, जिसके बाहर हजारों शरणार्थी जमा थे। 7000 पटवारियों और अधिकारियों ने बाड़ के अंदर से ही उन्हें जमीन आवंटित की। माहौल में तनाव व्याप्त था; शरणार्थी किसानों को विश्वास नहीं हो रहा था कि उन्हें

फिलहाल आवंटित जमीनें अस्थायी होंगी और स्थायी आवंटन होने पर उन्हें फिर से वहां से हटना पड़ेगा।
यह सब देखने के बाद, मैंने निश्चय किया कि शरणार्थियों की शिकायतों को दर्ज किया जाना चाहिए और उन पर कार्रवाई की जानी चाहिए। एक सप्ताह तक मैं कार्यालय आता रहा, पुआल की छत के नीचे बैठता रहा और शरणार्थियों की दलीलें दर्ज करता रहा। बाद में मैंने इन आवेदनों का विश्लेषण किया और पाया कि पटवारी और तहसीलदार भ्रष्टाचार में लिप्त थे। विभाग के नियमों में से एक यह था कि जिस आबंटित व्यक्ति को उसकी निर्धारित श्रेणी के अनुसार भूमि आवंटित की गई थी, उसे आगे स्थानांतरित नहीं किया जाना चाहिए और उसका स्थायी आवंटन वहीं तुरंत प्रदान किया जाना चाहिए। इस आवंटन योजना के अनुसार, पश्चिमी पंजाब की भूमि को पूर्वी पंजाब और पीईपीएसयू के विभिन्न जिलों में समतुल्य भूमि से प्रतिस्थापित किया गया। इस तरह, शरणार्थियों को उन जिलों में भेजा जाएगा जहाँ मुसलमानों ने अपनी भूमि छोड़ दी थी। सियालकोटियों को होशियारपुर में, शेखूपुरियों को करनाल में और इसी तरह अन्य जिलों में भूमि आवंटित की गई। 185

184 शोभा सिंह और गुरचरण सिंह भले ही अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन एंड्रेटा आज भी एक रमणीय कलाकारों के गांव के रूप में जीवंत है। शोभा सिंह के घर और स्टूडियो को एक गैलरी में परिवर्तित कर दिया गया है, जहां उनकी पेंटिंग और प्रिंट देखे जा सकते हैं, और एक उपहार की दुकान से उनके प्रिंट की प्रतियां भी खरीदी जा सकती हैं। दिलचस्प बात यह है कि मोहिंदर सिंह रंधावा की प्रतिमा आज भी सिंह के घर-गैलरी की शोभा बढ़ा रही है। गुरचरण सिंह का पूर्व स्टूडियो आज मिट्टी के बर्तनों के शौकीनों के लिए एक पॉटरी क्लास के रूप में भी काम करता है, जबकि उनके नीले रंग के कई बर्तन एक अन्य प्रदर्शनी हॉल में प्रदर्शित हैं।
185 लीटर, क्रमशः सियालकोट और शेखूपुरा के लोग।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। मूल रूप से लुधियाना, जालंधर, होशियारपुर, अमृतसर और गुरदासपुर छोड़कर पश्चिमी पंजाब में बसने वाले लोगों को उनके पैतृक गांवों के पास बसाया जाएगा। इन बसने वालों में से अमृतसर के लोगों के पास सबसे

अधिक भूमि थी; उनमें से अधिकांश मोंटगोमरी और लायलपुर जिलों में बस गए थे और वहां की बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए खेती की थी।186

(पृष्ठ 203)

मैंने थापर साहब को आवंटन प्रक्रिया में हो रही गड़बड़ी के बारे में बताया; मैंने उन्हें शिकायतों को सुनने और उनका शीघ्र समाधान करने की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्हें और त्रिलोक सिंह को डर था कि शिकायतों को सुनने और उनकी समीक्षा करने से आवंटन प्रक्रिया गड़बड़ा जाएगी; उन्हें यह भी डर था कि 7000 पटवारी एक ही स्थान पर मिलकर काम कर रहे हैं, इसलिए अगर हम शिकायतों की समीक्षा करने पर सहमत हो गए तो वे हड़ताल पर जा सकते हैं। एक पटवारी को संभालना भी मुश्किल होता है, और यहाँ तो हजारों पटवारी थे। कुछ विचार-विमर्श के बाद, पंजाब सरकार शिकायत निवारण तंत्र के लिए सहमत हो गई। सभी अतिरिक्त उपायुक्तों को अपने-अपने जिलों की शिकायतें सुनने का आदेश दिया गया। एक महीने के भीतर कई शिकायतों का समाधान किया गया - शरणार्थी संतुष्ट थे, और पटवारियों और अन्य कर्मचारियों को यह एहसास हो गया कि अब किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार छिपा नहीं रह सकता।

उन दिनों, मेरा बंगला, जो कंपनी बाग के पास और प्रताप अखबार के दफ्तर के ठीक सामने था, शरणार्थियों से घिरा रहता था। वे सुबह अपने आवेदन लेकर आते थे। मैंने उन्हें सचिवालय में प्रवेश के लिए कतार में लगने की पर्चियाँ बाँट दी थीं। एक दिन, जब मैं अपने दफ्तर में काम कर रहा था, मुझे जालंधर के एसपी का फोन आया कि लगभग 300 शरणार्थी मेरे बंगले के सामने धरना दे रहे हैं। एसपी ने मुझसे पूछा, "क्या मुझे पुलिस बुलानी चाहिए?" मैंने जवाब दिया, "नहीं, कृपया ऐसा न करें। वे किसी परेशानी में होंगे, इसीलिए वे वहाँ बैठे हैं।" शाम को लौटने पर मैंने उनकी शिकायतें सुनीं। मुझे पता चला कि इन गरीब किसानों को ब्यास नदी के ठीक बगल में ज़मीनें आवंटित की गई थीं, जो अक्सर बाढ़ से भर जाती थी। यह घोर अन्याय था। मैंने उनसे अपने घर के सामने खुली जगह में डेरा डालने को कहा। मैं उन्हें हर दिन अपनी रसोई से लस्सी देता था। जब मैं हर दिन सचिवालय से लौटता था, तो मैं उन्हें भजन गाते हुए सुनता था। मैं उनके साथ कुछ मिनट बैठता था, जिससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता था। मैं प्रतिदिन उस बड़े समूह में से 20 लोगों को पर्ची बाँटता था और उन्हें

पटवारी और तहसीलदार से मिलवाने में मदद करता था, जो उन्हें उपयुक्त स्थान पर भूमि आवंटित करते थे। इस तरह उन्हें पखवाड़े भर के भीतर अच्छे इलाकों में भूमि आवंटित हो गई।
जालंधर एक बेहद नीरस शहर था; कुछ अखबारों के संपादकों के अलावा, वहाँ बात करने के लिए कोई नहीं था। वहीं मेरी मुलाकात उर्दू अखबार अजीत के संपादक सरदार साधु सिंह 'हमदर्द' से हुई।

186 वह अंग्रेजों द्वारा स्थापित नहर उपनिवेशों के बारे में बात कर रहे हैं, जिसने कई किसानों को पश्चिमी पंजाब की विशाल, अछूती भूमि पर खेती करने के लिए प्रेरित किया। इनमें से कई किसान बाद में इन नहर उपनिवेशों में चले गए (इसका मतलब यह नहीं है कि इस प्रवास से पहले नहर उपनिवेश क्षेत्रों में किसान नहीं थे; इस 'मूल' प्रवास का इतिहास विवादित है)।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

बाद में उन्होंने अजित अखबार को पंजाबी में प्रकाशित करना शुरू किया और पंजाबी पत्रकारिता में नाम कमाया। हमदर्द साहब शरणार्थियों के मुद्दे में रुचि रखते थे। वे अपने अखबार में उनके बारे में लिखते थे। मैं उनकी बुद्धिमत्ता से बहुत प्रभावित हुआ। वहाँ मेरी एक और जान-पहचान लाला जगत नारायण से हुई, जो मुझे फोन करके शरणार्थियों की शिकायतों के बारे में बताते थे।
राजनीतिक नेताओं में सरदार प्रताप सिंह कैरों, सरदार दुर्बारा सिंह और ज्ञानी करतार सिंह शरणार्थियों के मामले में विशेष रुचि रखते थे। वे शरणार्थियों के विरुद्ध होने वाले अन्याय की हर घटना को मेरे संज्ञान में लाते थे।
इस योजना के तहत, अमृतसर के कुछ लोगों को होशियारपुर जिले में भूमि आवंटित की गई। मझैलों के आगमन से होशियारपुर के दोबिया समुदाय में बेचैनी फैल गई।
187 कुछ वर्ष पूर्व, दोबिया समुदाय ने मझैल समुदाय के साथ विवाह का बहिष्कार कर दिया था, यह दावा करते हुए कि जब वे अपने चाचाओं से मिलने गए थे, तब मझैलों ने उनकी भैंसें चुरा ली थीं। होशियारपुर जिले में पशुओं की चोरी बढ़ रही थी,

और जिले के लोगों ने प्रशासन से मझैलों को कहीं और बसाने की अपील की। इस अनुरोध को स्वीकार करते हुए, प्रशासन ने मझैलों को कपूरथला और फिरोजपुर में पुनर्स्थापित किया। फिरोजपुर जाने वालों को नहरों के किनारे जमीन मिली, उन्होंने कपास की खेती शुरू की और समृद्ध हुए।
कथाकार कुलवंत सिंह विर्क पुनर्वास विभाग में लोक संपर्क अधिकारी थे। वे एक बुद्धिमान और मेहनती अधिकारी थे। उन्होंने पुनर्वास के मामलों में मेरा सहयोग किया। उन्होंने मुझे बताया कि शेखूपुर जिले (जहाँ से विर्क किसान आए थे) की ज़मीन जलमग्न थी, इसलिए उन्होंने उसमें धान की खेती शुरू की। उन्हें करनाल जिले में ज़मीन आवंटित की गई थी। उन्होंने जंगल साफ़ करके धान की खेती शुरू की। स्थानीय किसानों को इस फसल की खेती के बारे में जानकारी नहीं थी। इस प्रकार, विर्क किसान हरियाणा में हरित क्रांति के अगुआ बने।

(पृष्ठ 205)
मियां फतेह सिंह शहरी शरणार्थियों के पुनर्वास विभाग के निदेशक थे। विभाग ने उनकी सेवानिवृत्ति पर एक भव्य समारोह आयोजित किया। समारोह के दौरान, एक अधीक्षक ने विभाग के सभी अधिकारियों के गुणों का वर्णन करने वाली एक कविता सुनाई। जालंधर सचिवालय में इस 'रामायण' में सरदार त्रिलोक सिंह राम चंद्र और मैं लक्ष्मण बने थे। जहाँ राम चंद्र होते हैं, वहाँ सीता की भी आवश्यकता होती है। त्रिलोक सिंह के साथ काम करने वाले सेठ नामक एक दुबले-पतले, स्त्रीत्वपूर्ण अधिकारी को सीता का किरदार दिया गया। एक सख्त अधिकारी, जिसका नाम मैं नहीं लेना चाहता —उससे बात करना मुश्किल था—को रावण का किरदार दिया गया। एक विभीषण की भी आवश्यकता महसूस हुई, जो हमेशा राम चंद्र के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहे। यह भूमिका गुरबचन सिंह को दी गई, जो हमेशा त्रिलोक सिंह के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते थे। वे काम टालने वाले थे और कभी भी अपना काम समय पर पूरा नहीं करते थे। कवि ने इस प्रकार कविता सुनाई,
'Waheguru-Waheguru Japi Jande,
Te File Te File Dhari Jande' 189

187 शाब्दिक रूप से, दोआबा क्षेत्र के लोग और माझ क्षेत्र के लोग - भाषाई और

सांस्कृतिक रूप से भिन्न, अलग-अलग बोलियों और पंजाबियत के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ। 188 यानी, विभाजन से पहले।
189 लिट., 'भगवान का नाम जपता रहता है और एक के बाद एक फाइल घसीटता रहता है।'

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

पुनर्वास योजना के तहत, कई अंग्रेज़ी शब्द आम बोलचाल में आ गए - आवंटन, आवंटन, मानक, एकड़, अतिरिक्त फसल, कुछ उदाहरण हैं। कई अनपढ़ लोग अतिरिक्त फसल को 'आलो-फालो' बोलते थे। त्रिलोक सिंह ने मानक एकड़ उस भूमि को निर्धारित किया जो प्रति एकड़ 12 मन गेहूँ का उत्पादन कर सके, ताकि अन्य भूमियों की तुलना की जा सके। उस समय, यह मात्रा अधिकतम उत्पादन मानी जाती थी। शरणार्थियों को यह नहीं पता था कि त्रिलोक सिंह खत्री थे, वे उन्हें सुनार जाति का समझते थे। वे इस कहावत में विश्वास करते थे कि सुनार सेठ की तरह भूमि माप सकता है, लेकिन उसका उचित वितरण नहीं कर सकता। इसलिए, वितरण का कार्य मुझ पर आ पड़ा। त्रिलोक सिंह के बारे में एक और आम धारणा यह थी कि वे हिंदुओं और सिखों को समान मानते थे और उनके बीच भेदभाव नहीं करते थे। त्रिलोक सिंह की आधी ही मूंछें थीं, बाकी बाल बीमारी के कारण झड़ गए थे। लोग कहते थे कि वे सिखों से मिलते समय अपनी मूंछों वाला हिस्सा दिखाते थे और हिंदुओं से मिलते समय बिना मूंछों वाला हिस्सा दिखाते थे।
इस पुनर्वास कार्य के दौरान मेरी मुलाकात तीन मंत्रियों से हुई। पहले मंत्री सरदार ईश्वर सिंह मजैल थे। वे बड़े दिल वाले, साहसी और मिलनसार व्यक्ति थे। भार्गव सरकार भंग होने के बाद भीम सेन सच्चर ने नई सरकार बनाई और जोगिंदर सिंह मान पुनर्वास विभाग के मंत्री बने। वे किसानों के प्रति सहानुभूति रखते थे। उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था, लेकिन त्रिलोक सिंह पर उन्हें शक था। जब त्रिलोक सिंह उनसे मिलने गए, तो उन्होंने कहा, "सरदार जी, लोग आपसे नाराज़ हैं। आप चाहें तो अपने ऊपर फूलों की माला चढ़ा लें या अपनी कब्र बनवा लें, लेकिन इस विभाग को छोड़ दें।"

बाद में जब मैंने पीईपीएसयू में अतिरिक्त महानिदेशक के रूप में काम किया, तब भी त्रिलोक सिंह रात 9 बजे तक कार्यालय में बैठकर काम करते थे। उनकी कार्यशैली में कोई बदलाव नहीं आया। उसके बाद मुझे पंजाब का प्रभार भी दिया गया, और अब त्रिलोक सिंह केवल योजना विभाग के प्रभारी थे। तब भी वे रात 8 बजे तक कार्यालय में रहते थे। पूरे विभाग का प्रभार संभालने के बाद मैंने सबसे पहले कर्मचारियों को रविवार की छुट्टी दी, जो पहले नहीं दी जाती थी, और उन्हें शाम 6 बजे तक कार्यालय छोड़ने को कहा। मैंने देखा कि इस निर्णय से कर्मचारियों की कार्यकुशलता में सुधार हुआ। पहले कर्मचारी लगातार काम के बोझ से तनावग्रस्त रहते थे। मुझे देर रात तक कार्यालय में काम करने वाले लोग पसंद नहीं हैं - ध्यान काम करने के घंटों पर नहीं, बल्कि स्मार्ट तरीके से काम करने पर होना चाहिए। समझदार अधिकारी अपना काम समय पर पूरा करता है। देर रात तक कार्यालय में बैठे रहने वाले लोग अक्सर भ्रमित रहते हैं - वे रणनीतिक रूप से नहीं सोच पाते और मामलों को अनावश्यक रूप से जटिल बना देते हैं।

जोगिंदर सिंह मान के बाद, सरदार लेहना सिंह सेठी ने पुनर्वास विभाग का कार्यभार संभाला। वे सरगोधा के निवासी थे, इसलिए शरणार्थियों की समस्याओं के प्रति वास्तव में चिंतित थे। वे अक्सर शहरी शरणार्थियों की समस्याओं में विशेष रुचि लेते थे। एक दिन, फरीदाबाद में उनकी मुलाकात सीमावर्ती इलाकों से आए शरणार्थियों से हुई; वे बहुत परेशान थे। लेहना सिंह सेठी का पेट निकला हुआ था। उन्होंने उनसे कहा, “आप हमारी समस्याओं को कैसे समझेंगे? आप तो हर दिन अकेले ही एक पूरी मुर्गी खा जाते होंगे।” सेठी ने इस टिप्पणी पर ध्यान नहीं दिया और उनके प्रति सहानुभूति बनाए रखी।

जब भूमि आवंटन का काम लगभग पूरा होने वाला था, तब मैंने जालंधर में कृषि उपकरणों और औजारों का एक बड़ा मेला आयोजित किया। मैंने ट्रैक्टर कंपनियों, इलेक्ट्रिक मोटर कंपनियों और वाटर पंप कंपनियों से अनुरोध किया कि वे अपने उत्पाद मेले में लाएँ और शरणार्थियों के सामने प्रदर्शित करें। ट्रैक्टर कंपनी ने अपने ट्रक दिखाए, और इलेक्ट्रिक मोटर और वाटर पंप कंपनियों ने भी अपने उत्पादों का शानदार प्रदर्शन किया। यही वह समय था जब हम...

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना

अनुमति के प्रसारित न करें। किसानों को 1000 करोड़ रुपये के ऋण वितरित करने की एक बड़ी योजना तैयार की जा रही है। किसानों ने इस मेले में औजार खरीदे और अपनी फसल की खेती में अभूतपूर्व समृद्धि प्राप्त करने लगे। श्री सेठी को इस मेले के दौरान राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए कहा गया था।

(पृष्ठ 207)
झंडा बीच में ही रुक गया। उसके बाद वह लुधियाना चले गए और वहां दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गई।
हमने जो पुनर्वास कार्य किया, उसका मानव इतिहास में कोई सानी नहीं है। दो वर्षों में 40 लाख लोगों को पुनर्स्थापित करना एक बहुत बड़ा काम था। मुझे लगातार ऐसा लगता था जैसे मेरे सिर और कंधों पर हजारों भारी बोझ लादे गए हों, और अगर ये बोझ हट जाएं तो मुझे आराम मिलेगा। काम पूरा होने पर मुझे ठीक वैसा ही महसूस हुआ। मुझे खुशी थी कि कई शरणार्थी परिवारों को पुनर्स्थापित किया गया। बाद में, इन्हीं शरणार्थियों ने पंजाब में हरित क्रांति की सफलता की नींव रखी। जब मैं इस कार्य की तुलना फिलिस्तीनियों की समस्या से करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि अरब देशों की आर्थिक स्थिति मजबूत होने के बावजूद 15 लाख फिलिस्तीनियों को पुनर्स्थापित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। वे शरणार्थी फिलिस्तीनी अब अराजकता के केंद्र में हैं। अगर यह पुनर्वास तेजी से और समझदारी से नहीं किया गया होता, तो पंजाब की भी यही हालत होती।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 30

पंजाब में पुस्तकालयों के नेटवर्क का विस्तार करना
अंबाला
(1951-52)

(पृष्ठ 208)

मार्च 1951 तक पुनर्वास का काम लगभग पूरा हो चुका था। बस कुछ छोटे-मोटे काम ही बाकी थे। उन्हें पूरा करने के लिए मुझे जालंधर में रहने की ज़रूरत नहीं थी। उस समय जालंधर और अंबाला के कमिश्नरों का तबादला होना था। जालंधर कमिश्नर का घर जॉन लॉरेंस के समय में बना था। उसमें लंबे, अंधेरे और कम रोशनी वाले कमरे थे। जालंधर में तैनाती के दौरान मैं इसी घर में रहता था। वह घर भूतिया लगता था और अक्सर मन में जॉन लॉरेंस के भूत से मुलाक़ात होने का ख्याल आता था। दूसरी बात, मेरा पैतृक गाँव बोडलान होशियारपुर ज़िले में है, और अगर मेरी तैनाती जालंधर में ज़्यादा समय तक रहती, तो कई रिश्तेदार और पारिवारिक मित्र मुझसे निजी मदद मांगते और मेरी शांति भंग कर देते। इसलिए, जब पंजाब सरकार ने कमिश्नर की तैनाती के बारे में मेरी राय पूछी, तो मैंने उनसे मुझे अंबाला में तैनात करने का अनुरोध किया।

अंबाला छावनी में अंबाला कमिश्नर का घर एक बेहद खास जगह पर स्थित था। समय बदल गया है। ब्रिटिश कमिश्नरों के पास नौकरों की फौज हुआ करती थी - दो बटलर, दो रसोइये, दो या तीन माली, एक मालिश करने वाला, एक अस्तबल का कर्मचारी और एक ड्राइवर।

(पृष्ठ 209)

उनकी पत्नियाँ बच्चों की देखभाल के लिए दाइयाँ भी रखती थीं। गरीब मजदूरों और नौकरों को मामूली तनख्वाह मिलती थी। मुझे याद है उन दिनों, लगभग 1946 में जब मेरी फैजाबाद में सहायक आयुक्त के पद पर तैनाती थी, मेरा वेतन 650 रुपये था और मेरे पास एक रसोइया, एक अस्तबल का कर्मचारी, एक माली, एक दाई और एक ड्राइवर था। रसोइया को 30 रुपये प्रति माह मिलते थे, और बाकी कर्मचारियों को केवल 10 रुपये प्रति माह मिलते थे। आज मैं देखता हूँ कि अगर आपका वेतन 3000 रुपये प्रति माह भी हो, तो भी आप इतने नौकरों को नहीं रख सकते। मेरा कार्यालय आयुक्त के बंगले में एक तरफ के नए कमरों में था। एक ही परिसर में कार्यालय और निवास होना सुविधाजनक भी है और समस्याग्रस्त भी। यह सुविधाजनक इसलिए है क्योंकि आपको काम के लिए यात्रा नहीं करनी पड़ती, और समस्याग्रस्त इसलिए है क्योंकि आप कभी भी काम से मुक्त नहीं होते। जब भी मुझे खाली समय मिलता, मैं कार्यालय में बैठ जाता था। इसलिए, कार्यालय का काम

हमेशा मन पर बोझ बना रहता है, और आप कभी भी मानसिक रूप से शांत नहीं रह पाते।
उन दिनों, द ट्रिब्यून अखबार का प्रकाशन गृह भी लाहौर से स्थानांतरित हो चुका था और अब यह अंबाला छावनी से छपता था। द ट्रिब्यून के संपादक श्री नटराजन और प्रबंधक प्रेम नाथ वर्मा से मेरे अच्छे संबंध थे। मैंने ट्रिब्यून ट्रस्ट की मदद से 'एवरीडे साइंस' नाम की एक विज्ञान पत्रिका शुरू की। यह पत्रिका बहुत सफल रही और वैज्ञानिकों के बीच लोकप्रिय हुई। मैंने रोहतक, गुड़गांव और हिसार जिलों में कई स्कूल भवनों के निर्माण में भी मदद की। ग्रामीण जाट विकास के प्रति बहुत उत्साही थे। मैंने पुस्तकालय स्थापित करने की एक योजना बनाई और इसके लिए पंजाब सरकार से मदद मांगी। उन्होंने मुझे बताया कि इसके लिए सालाना केवल 50,000 रुपये ही दिए जा सकते हैं। मैं निराश हो गया। मैंने सभी नगर समितियों से अपने पुराने भवनों का जीर्णोद्धार करने और उन्हें जोड़ने का अनुरोध किया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। मैंने उन्हें पुस्तकालयों के वाचनालयों में पहुँचाया। अंबाला कैंट में एक बहुत अच्छी इमारत थी, जिसका उपयोग सिविल सप्लाई अधिकारियों द्वारा गोदाम के रूप में किया जा रहा था। मैंने उसे खाली करवाया, उसे एक सुंदर पुस्तकालय में परिवर्तित किया और उसका नाम 'गुरु गोविंद सिंह पुस्तकालय' रखा। इस प्रकार रोहतक, गुड़गांव, बल्लभगढ़ और जगाधरी शहरों में पुस्तकालय स्थापित हुए। फिर हमने इन पुस्तकालयों को अच्छे फर्नीचर से सुसज्जित करने का निर्णय लिया। मेरे पास एक मजबूत सागौन की कुर्सी का नमूना था, जिसकी आरामदायक लकड़ी की सीट थी। मैं ऐसी कई कुर्सियाँ बनवाना चाहता था, इसलिए मैंने सभी पुस्तकालयों के सुचारू संचालन के लिए धन इकट्ठा करना शुरू कर दिया।

(पृष्ठ 210)
मैंने कैंटोनमेंट क्लब में एक सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया, जिसमें एक चित्रकला प्रदर्शनी भी शामिल थी। अंबाला डिवीजन के सभी जिलों से आमंत्रित लोक गायकों ने इसमें प्रस्तुति दी। हमने एक पंजाबी सेमिनार भी आयोजित किया, जिसमें सरदार गुरबख्श सिंह 'प्रीतलारी' ने भाग लिया। इसके अलावा, हमने एक विज्ञान मेला

भी आयोजित किया, जिसमें डॉ. एस.एस. भटनागर दिल्ली से आए थे। इस प्रकार मैंने विज्ञान, कला और साहित्य के बीच सामंजस्य स्थापित किया। इस उत्सव से लगभग 3 लाख रुपये एकत्रित हुए, जिनका उपयोग पुस्तकालयों की स्थापना के लिए किया गया। नकद भेजने के बजाय, हमने कुर्सियाँ बनवाईं और उन विभिन्न पुस्तकालयों को भेजीं जिनमें फर्नीचर की कमी थी। मैंने स्वयं इन सभी पुस्तकालयों को चित्रों और पेंटिंग से सजाया।

जिन दो अन्य परियोजनाओं में मैंने रुचि दिखाई, वे थीं शौचालयों का निर्माण और बच्चों के पार्क। सभी नगर समितियों के बजट आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत किए जाते थे। इसलिए, बजटों को पुनर्गठित किया गया और इन परियोजनाओं के लिए कुछ धनराशि आवंटित की गई। ये परियोजनाएं सभी कस्बों और शहरों में सफलतापूर्वक शुरू की गईं।

यह परियोजना किसी सरकारी योजना का परिणाम नहीं थी। यह मेरी अपनी योजना थी। आयुक्त का काम उपायुक्त की अपीलों को सुनना और तहसीलों की निगरानी करना होता है। मेरे पास एक अधिकारी था जो हर तहसील में जाता, वहाँ की हर छोटी से छोटी जानकारी दर्ज करता और मेरे पढ़ने और अपने विचार जोड़ने के लिए एक रिपोर्ट तैयार करता। जब पुस्तकालय परियोजना पूरी हो गई, तो मुझे लगा कि अब मेरे ध्यान देने लायक कुछ और नहीं बचा है। तभी मैंने सोचा कि जालंधर में मैंने जो पुनर्वास कार्य किया था, उसके बारे में लिखा जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण था क्योंकि लोग अक्सर अतीत को आसानी से भूल जाते हैं। मैंने 'आउट ऑफ द एशेज' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसे पंजाब सरकार ने प्रकाशित किया। अब शरणार्थी पुनर्वास पर शोध करने वाले विद्वान इस पुस्तक का उपयोग करते हैं।

मार्च 1953 में पंजाब सरकार ने कमिश्नर का पद समाप्त करने का फैसला किया। अब मुझे क्या करना चाहिए, मैंने खुद से पूछा?

(पृष्ठ 211)

उन दिनों डॉ. एस.एस. भटनागर सीएसआईआर के महानिदेशक थे और मैं उनसे परिचित था। कहा जाता था कि वे पंडित नेहरू से कोई भी योजना स्वीकृत करवा सकते थे। उनके विरोधियों ने नेहरू के लिए एक झूठी कहानी गढ़ी और उन्हें बताया कि भटनागर ने कहा था, "नेहरू मेरी मुट्ठी में हैं।" जब भटनागर नेहरू से मिलने गए, तो

नेहरू ने कहा, "मैंने सुना है कि मैं तुम्हारी मुट्ठी में हूँ।" भटनागर ने जवाब दिया, "महोदय, आप मेरी मुट्ठी में हैं और मैं आपकी मुट्ठी में हूँ।" भटनागर ने देश में प्राकृतिक विज्ञान प्रयोगशालाओं का एक नेटवर्क स्थापित किया, जिसने वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

भटनागर ने मुझे दिल्ली बुलाया और संयुक्त सचिव के रूप में उनसे जुड़ने और उनकी मदद करने के लिए कहा। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने पंजाब के मुख्यमंत्री भीम सेन सच्चर को पत्र लिखकर कहा कि विज्ञान विभाग में मेरी सेवाओं की आवश्यकता है। मैं दिल्ली गया और नॉर्थ ब्लॉक में उस कमरे का दौरा किया जहाँ से मुझे जल्द ही काम शुरू करना था। जब मैंने वह कमरा देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह एक चिड़िया को पिंजरे में बंद करने की चाल थी। मुझे शहरों और गांवों में घूमकर उनके विकास के लिए योजनाएँ बनाने की आदत थी। मैं अपने मित्र सरदार विशाखा सिंह के साथ रह रहा था और मैं इस बात को लेकर दुविधा में था कि नौकरी स्वीकार करूँ या नहीं। मैंने कागज की छह पर्चियाँ फाड़ीं और उनमें से तीन पर 'दिल्ली आओ' और बाकी तीन पर 'दिल्ली मत आओ' लिखा। जब मैंने एक पर्ची उठाई, तो उस पर लिखा था, 'दिल्ली मत आओ'। मैं इस परिणाम से संतुष्ट था क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मैं भी यही चाहता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 31

पंजाब के गांवों का विकास
शिमला और चंडीगढ़
(1953-1955)

भारत सरकार ने गांवों के विकास के लिए 'सामुदायिक विकास योजना' नामक एक योजना शुरू की थी। पंजाब सरकार द्वारा इस योजना के लिए नियुक्त किए गए श्री टंडन एक प्रतिभाशाली और गंभीर अधिकारी थे। हालांकि, शहरी क्षेत्रों में रहने के कारण वे गांवों की समस्याओं को नहीं समझते थे। एक वर्ष बीत जाने के बाद भी इस योजना का कोई प्रभाव दिखाई नहीं दिया। उस समय सरदार प्रताप सिंह कैरों पंजाब के विकास मंत्री थे। उन्होंने श्री टंडन का तबादला करके मुझे विकास आयुक्त नियुक्त किया।

मैंने अपना सारा सामान अंबाला कैंट के एक गोदाम में रखा और शिमला पहुँच गया। वहाँ मैंने पंजाब सचिवालय के पास एक छोटे से घर में रहना शुरू किया। घर दफ्तर से सुविधाजनक दूरी पर था, इसलिए मैं दोपहर के भोजन के लिए घर आ सकता था, लेकिन वहाँ से आसपास के नज़ारों का अच्छा दृश्य नहीं दिखता था। चारों ओर देवदार के जंगल थे। यह इलाका बंदरों से भी भरा हुआ था; वे मौका मिलते ही मेरे घर में घुसकर खाना खराब कर देते थे।

एक दिन, कैरन ने मुझे अपने घर पर रात के खाने पर आमंत्रित किया। उन्होंने नौकर को भेजने के बजाय स्वयं मेरे लिए दाल और सब्ज़ियों की थाली लाई। उनकी विनम्रता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह उस आम धारणा के विपरीत था कि कैरन एक अहंकारी व्यक्ति थे जो अधिकारियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे।

(पृष्ठ 213)

ग्रामीण विकास के अलावा, मैं भूमि समेकन का भी प्रभारी था - इसी भूमि समेकन ने पंजाब के गांवों का नक्शा बदल दिया। किसानों की बिखरी और खंडित जमीनों को एक साथ मिलाकर समेकित किया गया और कच्ची सड़कें बनाई गईं। मेरा मानना था कि पंजाब की पूरी भूमि को एक इकाई के रूप में देखा जा सकता है, ताकि ये सड़कें कई गांवों को जोड़ सकें और आगे चलकर पक्की सड़कों से जुड़ सकें।

मैंने पंजाब के लोक निर्माण विभाग के सभी इंजीनियरों से मुलाकात की और उन्हें सलाह दी कि वे नई ग्रामीण सड़कों का निर्माण करके पंजाब के ग्रामीण जीवन में बदलाव लाएं। यदि यह अनूठा अवसर चूक गया, तो भविष्य में इन सड़कों का निर्माण संभव नहीं होगा क्योंकि जुड़ी हुई जमीनों का अधिग्रहण करना मुश्किल हो जाएगा। सभी इंजीनियर इस बात को समझ गए। वे तहसीलों के नक्शे लाए और उनके लिए

नई सड़कों का डिज़ाइन तैयार किया। चूंकि सभी अधिकारी अपने-अपने नियमित कार्यों में व्यस्त थे, इसलिए सड़क संपर्क का विचार उनके मन में नहीं आया, जिसके कारण वे इतनी बड़ी योजनाओं की कल्पना भी नहीं कर सके।
इस योजना का मूल सिद्धांत यह था कि किसान की सारी ज़मीनें उस हिस्से में समेकित की जाएँगी जहाँ उसका सबसे बड़ा हिस्सा है—इस सिद्धांत ने समेकन के काम को सुगम बनाया। इस सिद्धांत के बावजूद, पटवारियों को भूमि सीमांकन में काफी शक्ति प्राप्त थी, जिससे वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर अशिक्षित किसानों से रिश्वत ले सकते थे। कैरों के पास एक गुप्त एजेंसी थी जिसका नेतृत्व कांग्रेस के एक सामाजिक कार्यकर्ता कर रहे थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। मास्टर चरणजीत सिंह। किसी भी शिकायत की स्थिति में, चरणजीत सिंह और उनके साथी साधुओं का वेश धारण करके उस गाँव में जाकर मामले की जानकारी प्राप्त करते थे। इसका अच्छा प्रभाव पड़ा। इसके अलावा, दो-तीन कारों की सुविधा वाले ईमानदार अधिकारियों का एक दल बनाया गया था, ताकि वे शिकायत स्थल पर जाकर पूछताछ कर सकें।
सड़क संपर्क योजना को लेकर ग्रामीण बेहद उत्साहित थे। पंजाब भर में हजारों ग्रामीणों ने कच्ची सड़कों को ढीली मिट्टी से भरकर बनाने में मदद की। उन दिनों मैं फरीदाबाद और गुड़गांव के दौरे पर था। वहां जिन ग्रामीणों से मैं मिला, वे भी इस योजना को लेकर बेहद उत्साहित थे। मैं जहां भी जाता, वे मुझे माला पहनाते और हाथियों के जुलूस निकालकर मेरा स्वागत करते। इस स्वागत की तुलना में, गांवों का दौरा करने वाले किसी भी मंत्री का इतना गर्मजोशी से स्वागत नहीं हुआ था।

(पृष्ठ 214)
मुख्यमंत्री भीम सेन सच्चर मुझसे ईर्ष्या करने लगे थे।
मैंने और कैरन ने उपायुक्तों का एक सम्मेलन आयोजित किया जिसमें विकास योजनाओं पर चर्चा हुई। हमारे प्रयासों की सराहना करने के बजाय, भीम सेन सच्चर ने हमारा विरोध करना शुरू कर दिया। उस समय प्रताप सिंह कैरन और भीम सेन सच्चर के बीच बड़ा विवाद चल रहा था।

इस योजना के तहत पंजाब में स्कूल भवनों और पंचायत घरों का एक जाल बिछाया गया। इसी दौरान मैंने पुस्तकालयों का जाल बिछाने की योजना भी विकसित की, जिसके फलस्वरूप राज्य के प्रमुख गांवों में कई पुस्तकालय स्थापित हुए। इस योजना से पंजाबी प्रकाशकों को भी लाभ हुआ, क्योंकि अब वे अधिक पुस्तकें बेच सकते थे। यदि हमने इस तरह से उनका समर्थन न किया होता, तो पंजाबी साहित्य को बहुत बड़ा नुकसान होता। इस विकास योजना का कांगड़ा और कुल्लू के पहाड़ी क्षेत्रों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। मैंने कुल्लू में सेब के बागान शुरू किए। किसानों को प्रशिक्षण दिया गया और उन्हें मुफ्त औजार, उर्वरक और कीटनाशक उपलब्ध कराए गए। इस योजना ने पहाड़ी क्षेत्रों में सेब की खेती को बढ़ावा दिया।
पंडित जवाहरलाल नेहरू पंजाब के दौरे पर थे। कैरन और मैंने उन्हें नवांशहर के गांवों में ले जाने का फैसला किया। इस जिले की मिट्टी बहुत उपजाऊ है और परियोजना अधिकारी अजैब सिंह ने भी वहां कृषि को बढ़ावा देने के लिए बहुत मेहनत की थी। जब नेहरू के आने की खबर अखबार में छपी, तो जालंधर से प्रकाशित होने वाले प्रताप नामक अखबार ने 'नवांशहर सामुदायिक परियोजना का धोखा' शीर्षक से लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित की।
मुझे अब भी समझ नहीं आता कि अखबार प्रगतिशील कार्यों का विरोध क्यों करते हैं। नेहरू के आगमन से दस दिन पहले मैंने सभी गांवों का दौरा किया। अंततः यह तय हुआ कि समारोह नौरा गांव में आयोजित किया जाएगा और पंडित नेहरू का स्वागत वहीं किया जाएगा। प्रताप अखबार के संपादक ने लिखा कि पंडित जी को नवांशहर के आर्य विद्यालय जाना चाहिए। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं थी। जब हम आर्य विद्यालय गए, तो संपादक अन्य प्रमुख लोगों के साथ वहां मौजूद थे। उन्होंने नेहरू से हाथ मिलाया और मैंने नेहरू को बताया कि वे वही व्यक्ति हैं जिन्होंने हमारी विकास योजनाओं के खिलाफ लेखों की एक श्रृंखला लिखी थी। संपादक शर्मिंदा हो गए। नौरा गांव में एक ऊंचा मंच बनाया गया था।

(पृष्ठ 215)
मैंने गांव के सरपंच से नेहरू के भाषण से पहले एक भाषण पढ़ने को कहा था। उनके भाषण में उल्लेख किया गया था कि कुछ सांप्रदायिक लोग विकास योजनाओं का विरोध कर रहे हैं और यह कि...

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। सरकार को ऐसी ताकतों का कड़ा विरोध करना चाहिए। उनके भाषण पर श्रोताओं ने तालियाँ बजाईं। नेहरू के भाषण से पहले किसी मंत्री का कुछ शब्द बोलना प्रोटोकॉल था। कैरन और साचार दोनों घबराए हुए थे, इसलिए मुझे मंच पर जाकर श्रोताओं को संबोधित करना पड़ा।

अपना भाषण देने के बाद, नेहरू ने कृषि मेले का निरीक्षण किया, जहाँ ट्रैक्टर, पानी के पंप और अन्य कई मशीनों की प्रदर्शनी लगी हुई थी। इस मेले का अच्छा प्रभाव पड़ा और इससे किसानों को प्रगति करने में मदद मिली।

उन दिनों मैंने तय किया कि पंजाब, हरियाणा, कांगड़ा और कुल्लू के लोकगीतों का संकलन किया जाए। मैंने नीलोखेड़ी में विकास अधिकारियों की एक बैठक बुलाई और उनसे इस योजना पर चर्चा की। कई महिला विकास अधिकारियों ने इस योजना में रुचि दिखाई और मुझे कई गीत भेजे। मैंने सरदार शोभा सिंह के निवास स्थान, आंद्रेत्ता गाँव में इस सामग्री का संपादन किया। पंजाब के लोकगीतों को चित्रों से सजाया गया और नवयुग पब्लिशर्स के सरदार प्रीतम सिंह ने इस खूबसूरत पुस्तक का प्रकाशन किया। पाठकों को यह पुस्तक बहुत पसंद आई।

मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि उन वर्षों के दौरान, पंजाब का सांस्कृतिक विकास उत्साहपूर्वक शुरू हुआ। भांगड़ा पश्चिमी पंजाब से इस तरफ आया। सामुदायिक विकास योजना के अंतर्गत कई भांगड़ा विशेषज्ञों को सामाजिक शिक्षा और जागरूकता अधिकारी नियुक्त किया गया। स्कूली लड़कों में से भांगड़ा टीमें बनाई गईं; इस प्रकार भांगड़ा लोक नृत्य की परंपरा स्थापित हुई। लड़कियों के विद्यालयों में गिद्दा को भी मान्यता दी गई।190

किसी भी योजना के लिए अच्छे अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को नियुक्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब मैंने 191 ग्राम सेवकों की भर्ती की, तो मैंने उनका चयन गाँव की समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता और इस योजना के प्रति उनके उत्साह के आधार पर किया। पहले परीक्षण के रूप में उन्हें तीन मील दौड़ाया गया। इस प्रकार कई कमजोर उम्मीदवार बाहर हो गए। इसके बाद, उन्हें खेत जोतने के लिए कहा गया। इन दोनों परीक्षणों में उत्तीर्ण होने वालों को लिखित परीक्षा दी गई। परिणामस्वरूप, इस योजना के लिए भर्ती किए गए अधिकांश उम्मीदवार गाँवों से थे।

इस योजना में प्रधान अधिकारी की विशेष भूमिका रही। यदि प्रमुख अधिकारी अक्षम है, तो अधीनस्थ भी बेकार हो जाते हैं।

(पृष्ठ 216)
आम तौर पर इन अधिकारियों की भर्ती पंजाब लोक सेवा आयोग के माध्यम से होती थी। हालांकि, कैरन ने इस प्रथा को बंद कर दिया और कहा कि केवल उन्हीं लोगों की भर्ती की जाएगी जिन्होंने देश की सेवा की हो। कांग्रेस और अकाली नेता सरदार मंगल सिंह को फरीदाबाद में परियोजना अधिकारी नियुक्त किया गया। उन्होंने अच्छा काम किया। इसके बाद कैरन ने मुझसे अपने करीबी बलदेव कपूर को परियोजना अधिकारी नियुक्त करने को कहा। मैंने मना कर दिया क्योंकि बलदेव कपूर शहरी पृष्ठभूमि से थे। कैरन ने कहा, “बस उसे नियुक्त कर दो और फिर उसकी क्षमताओं का मूल्यांकन करो।” मैंने जवाब दिया, “वह शहर से है, वह ग्रामीण जीवन की समस्याओं को कैसे समझेगा?” “ग्रामीण सुधार के लिए गाँव से संबंध रखने या कृषि में स्नातक होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जुनून और कर्तव्यनिष्ठा।” कैरन के आग्रह पर मैंने बलदेव कपूर को ब्लॉक विकास अधिकारी नियुक्त किया और उन्हें खरार ब्लॉक में तैनात किया। उन्होंने तीन महीनों में उतना काम किया जितना उनके पूर्ववर्ती एक साल में भी नहीं कर पाए थे। बलदेव ने ग्रामीणों, स्कूल और कॉलेज के छात्रों के शिविर आयोजित किए और गांवों में सड़कों का जाल विकसित किया। कई पक्की सड़कें बन गईं।

190 भांगड़ा और गिद्धा लोकप्रिय पंजाबी लोक नृत्य हैं। 191 ग्राम सेवक या ग्राम स्वयंसेवक।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। विभिन्न गांवों में निर्माण कार्य हुए और कई नए आदर्श विद्यालय भी स्थापित किए गए। खरार विकास की लहर में डूब गया था और इसकी प्रगति हर जगह स्पष्ट थी। कुछ किसानों ने मुर्गी पालन शुरू कर दिया था, कुछ सूअर पालते थे, जबकि अन्य मक्का और आलू की खेती में निपुण हो गए थे। मुझे खुशी थी कि मेरे संदेह गलत साबित हुए। मैं बलदेव कपूर को इतना पसंद करता था कि मैं उन्हें अधीनस्थ नहीं मानता था, मैं उनके साथ एक मित्र की तरह व्यवहार करता

था। जब भी हम मिलते, मैं उन्हें गले लगाता था।
बलदेव कैरन को लाहौर के दिनों से जानते थे, क्योंकि दोनों ने कुछ समय साथ-साथ जेल में बिताया था। बलदेव एक छात्र नेता और देशभक्त थे। वे अपने देश की सेवा के लिए बेहद उत्साही थे। भारत में गाँव बसे हैं, तो देश की सेवा के लिए तत्पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए ग्रामीण विकास से बेहतर और क्या हो सकता है?
कुछ महीनों बाद, पंजाब में एक राजनीतिक भूचाल आया और मुख्यमंत्री पद भंग हो गया। कैरों मुख्यमंत्री बने।

(पृष्ठ 217)
कैरन को बलदेव कपूर पर पूरा भरोसा था और वह कई मामलों में उनसे सलाह लेता था। बलदेव ने स्थानीय कुटीर उद्योग में गहरी रुचि दिखाई और कांगड़ा जिले में कई केंद्र खोले। वह अमेरिका और जापान भी गए और वहां से उन्होंने कई नई चीजें सीखीं।
अब मैं एक अन्य बीडीओ (कृषि अधिकारी) के बारे में बात करूंगा जो ग्रामीण इलाके का रहने वाला था। उसके पास कृषि में बीएससी की डिग्री थी और वह जाति से जाट था। मैं उसके काम का निरीक्षण करने गया और पाया कि उसने लाखों रुपये बिना खर्च किए छोड़ दिए थे। इस पैसे का उपयोग गांवों में सड़कों और नालियों के विकास के लिए किया जा सकता था, और इससे किसानों के लिए महंगे कृषि उपकरण और औजार खरीदे जा सकते थे। जब मैंने उससे पूछा कि वह क्या कर रहा है, तो उसने जवाब दिया, "मैं सरकार का पैसा बचा रहा हूं।" यह सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया और मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई।
1962 में कैरन की कुर्सी खतरे में थी। वे चाहते थे कि पंजाब सरकार के अधिकारी राज्य की प्रगति के लिए तेजी से काम करें। वे सार्वजनिक रूप से अक्षम और बेईमान अधिकारियों पर चिल्लाते थे। कैरन इतने व्यस्त हो गए थे कि उनके पास अपने परिवार के लिए समय ही नहीं था। जून 1962 में वे मुझसे दिल्ली में मिले और बोले, "तुम पंजाब वापस जाओ और मुख्य सचिव का पदभार संभालो।" उस समय मैं योजना आयोग में सलाहकार के रूप में कार्यरत था और देश के प्राकृतिक संसाधनों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, इसलिए मैं उस काम को अधूरा नहीं छोड़ना चाहता था।

कैरन ने जून 1964 में इस्तीफा दे दिया। उनके चारों ओर पहले से मौजूद चापलूसों के समूह ने उन्हें अकेला छोड़ दिया। बलदेव उन गिने-चुने ईमानदार लोगों में से थे जो उनके साथ बने रहे। उनके प्रति मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया।
अक्टूबर 1964 में मैं खरार गार्डन कॉलोनी स्थित अपने बाग में रह रहा था। राजनीतिक स्थिति निराशाजनक होने के बावजूद बलदेव आशावादी बने रहे। मैंने बलदेव से कहा कि वे कैरन को बता दें कि वे पंजाब के 'सम्राट' हैं, इसलिए उन्हें अपने परिवार को कई सिनेमाघर बनाने से रोकना चाहिए।192 मैंने सुझाव दिया कि एक ट्रस्ट संपत्ति की देखभाल करे और परिवार को उनकी दैनिक जरूरतों के लिए एक मामूली राशि दे। ट्रस्ट की शेष आय का उपयोग योग्य लड़कों को तकनीकी शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने में किया जा सकता है।

192 कैरन का परिवार उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा का उपयोग करके अपनी निजी जरूरतों के लिए पैसा कमा रहा था और संपत्ति विकसित कर रहा था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

यह 'महान बलिदान' कैरन की प्रतिष्ठा के खिलाफ लगे कलंक को मिटाने में मदद करेगा।
कुछ दिनों बाद बलदेव मुझसे दोबारा मिलने आया। उसने बताया कि कैरन को मेरा सुझाव पसंद आया, लेकिन उसके परिवार वाले उससे सहमत नहीं थे। यह आखिरी बार था जब मैं बलदेव से मिला था।
फरवरी 1965 की एक सुबह, मैंने पढ़ा कि बलदेव और कैरन मारे गए थे।193 बलदेव के प्रति मेरा सम्मान और भी बढ़ गया - वे मित्रता और वफादारी के प्रतीक थे। उन्होंने अपने मित्र कैरन का अंतिम सांस तक साथ दिया और इस तरह मेरी नजरों में अमर हो गए।
जुलाई 1965 में चंडीगढ़ में मेरी मुलाकात बलदेव की विधवा से हुई। उन्होंने बताया कि वे आर्थिक तंगी से जूझ रही थीं। राष्ट्रीय वायु सेना (एन.ई.एफ.ए.) में चीन के साथ चल रहे युद्ध के दौरान बलदेव ने अपनी आधी तनख्वाह और बचत देश के लिए

दान कर दी थी। वह बेचारी महिला घर चलाने के लिए एक स्कूल में पढ़ाती थीं। उन्होंने बताया कि बलदेव हमेशा कैरों से कहा करते थे, “सरदारजी, मुझे लगता है कि अगर
अगर कोई तुम पर गोली चलाए, तो मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा और तुम्हारे लिए गोली खुद पर ले लूंगा।"
यह कितनी अजीब बात है कि यह पूर्वाभास सच हो गया — हम सब जानते हैं कि कैसे बलदेव ने अपने प्रिय मित्र को हत्यारों से बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। उन हत्यारों ने उस लौ को बुझा दिया जिसने भारत में पंजाब को गौरव दिलाया था।

193 यहाँ उनका इशारा इस बात की ओर है कि जब पूर्व मुख्यमंत्री कैरों की हत्या का षड्यंत्र रचा गया, तो उनके साथ यात्रा कर रहे बलदेव ने अपने मित्र के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। दुर्भाग्यवश, दोनों को अज्ञात हमलावरों ने गोली मार दी, जिनका कभी पता नहीं चल सका। यह स्पष्ट नहीं है कि यह पारिवारिक षड्यंत्र था या राजनीतिक।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
भाग IV: कांगड़ा चित्रकला और लोकगीतों की खोज

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 32

Damthal Ashram

(पृष्ठ 221)

बर्फ़ की टोपी पहने खड़ा है

Khadi hai Dhaulidhar ve Kangre da tilla Dhauladhar, the hill of Kangra,
Khadi hai Dhaulidhar ve adhiya Stands Dhauladhar, oh Lover
Sab nu dasdi pyaar ve Kangre da tilla (यह पहाड़ी सभी के लिए प्यार की बात करती है)

कांगड़ा।

जनवरी में, नीले शिवालिक पर्वतमाला के पीछे बर्फ से ढकी हुई पर्वत श्रृंखला दिखाई देती है। धौलाधार नाम का यह पर्वत पौष माह में उत्तर दिशा में दिखाई देता है। वैशाख माह में यह धूल और कोहरे में ओझल हो जाता है। पंजाब के मैदानों का मुकुट माने जाने वाला यह पर्वत शिवालिक पर्वतमाला की सुंदरता को और भी बढ़ा देता है। होशियारपुर जिले में अपने घर की छत से बर्फ की इन लहरों को निहारते हुए मैं अक्सर विचारों और सवालों में खो जाता था। इसका मुझ पर हमेशा एक जादुई असर होता था, मैं हमेशा इसे उत्साह और श्रद्धा से देखता था। होशियारपुर-ऊना के पहाड़ी मार्ग पर स्थित बंखंडी गांव के बंगले से भी मैं अक्सर इस दृश्य में खो जाता था। यह बंगला शिवालिक पहाड़ियों में छिपे बाज के घोंसले जैसा दिखता था - धौलाधार के इस दुर्लभ नजारे को निहारते-निहारते मैं कभी नहीं थकता था। मैंने इस पर्वत को एक अलग, नज़दीकी कोण से भी देखा, चिंतपूर्णी मंदिर से - मुझे ऐसा लगता था जैसे कोई चुंबक मुझे अपनी ओर खींच रहा हो। यह सूर्य के प्रकाश में चांदी के टुकड़े की तरह चमकता था, जैसे हिमालय की कोई नवविवाहित रानी अपने दूल्हे की प्रतीक्षा में खोई हो।

(पृष्ठ 222)
कांगड़ा घाटी अपनी नाजुक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी खूबसूरती मध्यम आकार की पहाड़ियों, छोटे घरों, हवेलियों, कोठों, मंदिरों और फैले हुए सीढ़ीदार खेतों से बहते ठंडे, चमकीले और साफ पानी के असंख्य झरनों से उत्पन्न होती है। इस घाटी की स्त्रीत्वपूर्ण सुंदरता बर्फ से ढके धौलाधार पर्वत के बिल्कुल विपरीत है, जहाँ से बर्फीली नदियाँ गाती-नाचती बहती हैं। चीड़ के जंगलों में एकांत और शांति का माहौल रहता है। यह क्षेत्र न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण सुंदर है, बल्कि यहाँ के

निवासियों के कारण भी। कांगड़ा घाटी की प्राकृतिक सुंदरता यहाँ के लोगों द्वारा और भी निखरती है। गद्दी लड़के और सुंदर गद्दी लड़कियाँ घने देवदार के जंगलों में घूमते हैं। उनका जीवन सरल ग्रामीण है। ये सुंदर राजपूत और ब्राह्मण लड़कियाँ शर्मीली हैं; वे अपनी सुंदरता दिखाने में संकोच करती हैं। सुंदर घाघरे उनकी कमर की शोभा बढ़ाते हैं, साथ ही नाक में नई नथें और सिर पर चमकदार आभूषण होते हैं। हमें इस घाटी से कला के सुंदर नमूने मिले हैं जिनमें रेखाओं और रंगों के सामंजस्य ने प्रेम की भावना को अमर कर दिया है। दो शताब्दियों के बाद भी

194 कोठा, यहाँ, एक ऊपरी मंजिल या कक्ष।
195 गद्दी (मूल रूप से राजपूत/ब्राह्मण/खत्री/राणा/ठाकुर) एक अर्ध-खानाबदोश हिंदू पहाड़ी जनजाति है जो पशुपालन करते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। इन चित्रों के पात्र जीवंत, हंसमुख और चंचल प्रतीत होते हैं। इसलिए, मैंने इस असाधारण घाटी का बारीकी से अवलोकन करने और इसका आनंद लेने का निर्णय लिया।

हवा में कबूतरों की घूंघट गूंज रही थी, और छतों पर मोर नाच रहे थे। वे मोरनियों को लुभाने के लिए अपने रंग-बिरंगे पंख फैला रहे थे। बसंत आ चुका था। शहतूत की कोमल पंखुड़ियाँ धीरे-धीरे खिल उठीं, और शीशम के पेड़, जो एक सप्ताह पहले सूखी शाखाओं के गुच्छे जैसे दिख रहे थे, अब ताज़े हरे रंग से रंग गए थे। लाखों पत्ते खिलने के लिए तैयार थे। आम के बागों से सर्दी का दुख दूर हो रहा था - सभी पेड़ों पर अब हल्के पीले रंग की कलियाँ थीं। बाज-कोयल अपनी 'पी-कहा, पी-कहा' की आवाज़ से रातों को दिलचस्प बना रहे थे, जबकि कोयल दिन के समय बगीचों में 'कु-हु, कु-हु' की मधुर ध्वनि भर रही थीं। मुझे ठीक सामने धौलाधार की सफेद, बर्फीली दीवार दिखाई दे रही थी; उनके नीचे नीली शिवालिक पहाड़ियाँ विस्मयकारी लग रही थीं।

(पृष्ठ 223)
मैंने मार्च 1951 में कांगड़ा की पहाड़ियों, उसकी नदियों, लोगों और उसकी कला की सुंदरता पर शोध करना शुरू किया। कांगड़ा ब्यास नदी की घाटी है। इस घाटी में कई

अन्य नदियाँ ब्यास नदी में मिलती हैं। हमने मिर्थल के नए पुल से ब्यास नदी पार की। मुकेरियान-पठानकोट सड़क पंजाब की सबसे खूबसूरत सड़क है। पहाड़ियों की तलहटी में स्थित यह सड़क आम के बागों और नालों से होकर गुजरती है; कई जगहों पर नालों पर पुल बनाए गए हैं। मिर्थल का पुल इंजीनियरिंग विज्ञान का एक उत्कृष्ट नमूना है। जब हम इस क्षेत्र से गुजरे, तो हमने हल्के पीले फूलों से लदे आम के पेड़ देखे, हवा उनकी सुगंध से सराबोर थी। खेत हरे-भरे दिखाई दे रहे थे और गेहूं की बालियाँ सुबह की ठंडी हवा में लहरा रही थीं। आठ मील की दूरी तय करने के बाद हम दमथल आश्रम पहुँचे। यह आश्रम शिवालिक पर्वतमाला की गोद में स्थित है। आश्रम पहुँचने से पहले हमने बरगद के पेड़ों के घने जंगल को पार किया। ये बरगद के पेड़ हरे-भरे मंदिरों के समूह की तरह लग रहे थे। तीर्थयात्री इन पेड़ों की ठंडी, मीठी छाया में सो रहे थे; सूर्य की किरणें ज़मीन तक बहुत कम पहुँचती हैं, इसलिए हवा ठंडी रहती है। वहाँ हमेशा अँधेरा रहता है। बरगद के पेड़ों की हवाई जड़ें हिमालय के किसी साधु के जटाओं जैसी दिखती हैं। हमने पुराने, पवित्र और असाधारण आश्रम में प्रवेश किया। इस आश्रम में प्रवेश करने के लिए राजपूताना वास्तुकला शैली में बने एक सुंदर लंबे गलियारे (देओढ़ी) से होकर गुजरना पड़ता है। प्रवेश द्वार पर एक बड़ा मधुमक्खी का छत्ता लटका हुआ था। इसके बाद महंतों को समर्पित समाधियाँ थीं। इस आश्रम का निर्माण नारायण ने करवाया था, जो गांव के ब्राह्मण तोता राम के पुत्र थे।

गुरदासपुर जिले का कहनुवान। नारायण के चमत्कारों की कई कहानियां प्रचलित हैं। कहा जाता है कि चीनी की बोरियों से लदे गधों के साथ एक व्यापारी दमथल से गुजर रहा था। पास में खेल रहे कुछ लड़कों ने उससे पूछा, "बोरियों में क्या है?" व्यापारी ने उत्तर दिया, "चीनी।" नारायण नाम के एक लड़के ने कहा, "आपकी बोरियों में रेत है।" व्यापारी ने लड़के की बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब वह अपने गंतव्य पर पहुंचा, तो उसने देखा कि उसकी बोरियों में वास्तव में रेत थी।

(पृष्ठ 224)

लौटते समय व्यापारी की मुलाकात नारायण से दोबारा हुई। इस बार नारायण ने कहा, “तुम्हारे थैलों में चीनी है”, और व्यापारी को जब सचमुच उनमें चीनी मिली तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। इस घटना के बाद यह बात फैल गई कि उस ब्राह्मण

लड़के के पास कुछ विशेष शक्तियां थीं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। शेख फरीद के बारे में भी ऐसी ही एक कहानी प्रसिद्ध है, और इसीलिए उन्हें लोकप्रिय रूप से फरीद शकर्गंज कहा जाता है।

कुछ समय बाद, नारायण को मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार में अपने चमत्कार दिखाने के लिए बुलाया गया। उन्हें विष के छह कटोरे दिए गए, और उन्होंने आराम से सभी छह कटोरे पी लिए। यह जांचने के लिए कि क्या उन्हें दिया गया विष वास्तव में असरदार था, सातवां कटोरा एक हाथी को पीने के लिए दिया गया। हाथी कुछ ही सेकंड में मर गया। इस घटना को दमथल आश्रम की दीवारों पर बनी एक पेंटिंग में दर्शाया गया है, जिसमें उन्हें विष पीते हुए दिखाया गया है, जबकि भगवान के दो हाथ उनकी पीठ को सहारा दे रहे हैं, जिससे उन्हें उस खतरनाक स्थिति से उबरने में मदद मिल रही है।

कहा जाता है कि दमथल में पानी की कमी थी, जिससे गांव वालों को बहुत परेशानी होती थी। एक बार मंदिर के पीछे जंगल में ध्यान करते समय नारायण जी ने अचानक अपनी लंबी चिमटी जमीन पर मारी - और जहां उन्होंने मारा था, वहां से एक झरना फूट पड़ा। उस झरने पर बांध बनाकर एक स्थायी झील विकसित की गई है। जिस गुफा में नारायण जी ध्यान करते थे, वह एक तरफ स्थित है।

नूरपुर के राजा जगत सिंह ने सन् 1646 में इस आश्रम के मंदिर का निर्माण करवाया था। उस समय शाहजहाँ का शासन था। मंदिर के कथा-शाला की दीवारों पर कांगड़ा शैली की चित्रकारी की गई है। जब हमने इस मंदिर का दौरा किया, तो इसकी हालत बहुत खराब थी – हमने देखा कि इसकी छत गिरने ही वाली थी और सभी कमरों में ततैया भिनभिना रही थीं। नारायण से संबंधित चित्रों के अलावा, कई चित्रों में महाभारत और रामायण के दृश्य चित्रित हैं। कुछ चित्रों में कृष्ण को गोपियों के साथ खेलते हुए दिखाया गया है, जबकि अन्य में श्री राम चंद्र का विवाह दर्शाया गया है। पहाड़ी राजा संकट के समय इस मंदिर में शरण लेते थे। कहा जाता है कि जब नूरपुर के राजा बीर सिंह महाराजा रणजीत सिंह से पराजित होने से भयभीत हुए, तो वे भागकर इसी मंदिर में छिपे थे।

(पृष्ठ 225)
मंदिर के एक कोने में एक चित्र में एक महिला को हिरण के पास खड़े होकर पेड़ के नीचे तूंबा बजाते हुए दिखाया गया है। यह दृश्य कांगड़ा की कई पेंटिंग्स में दोहराया गया है। इस दृश्य का विषय है: वीराहिनी नायिका (196) - एक महिला अपने पति की यादों में डूबी हुई है और एक काले हिरण के प्रति स्नेह व्यक्त कर रही है। इस भावना को निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया गया है:

"Pe Milan Ki Chah Chit,
Khari Bhagwat Tar."197

यह दो मंजिला आश्रम है, जिसकी ऊपरी मंजिल पर रंग महल (रंगों का हॉल) नामक एक कमरा है। इसका निर्माण 1850 में हुआ था। इस कमरे की दीवारों पर सिख कला से प्रेरित चित्रकारी की गई है। आम तौर पर, चित्रों में पात्रों की लंबी दाढ़ी और मोतियों और हीरों से सजी खूबसूरत पगड़ी दिखाई गई है। कुछ चित्रों में रामायण के दृश्य भी हैं। एक चित्र में एक अंग्रेज व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ बग्गी में बैठा है। बग्गी को चार घोड़े खींच रहे हैं।

196 बिरहानी नायका (पंजाबी में)। बिरहा (हिंदी में विरह) का अर्थ है जुदाई, जबकि नायका का अर्थ है महिला नायिका। यह विषय जुदाई के दर्द को दर्शाता है। 197 इसका मोटे तौर पर अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है कि प्रेमी से मिलने की प्रबल इच्छा आत्मा को व्याकुल कर देती है, लेकिन वह प्रतीक्षा करती रहती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। इससे पता चलता है कि ये चित्र सिख शासन के बाद, यानी ब्रिटिश शासन के दौरान बनाए गए थे। इस आश्रम में महंतों के कई चित्र गेरुआ और अन्य गहरे रंगों से चित्रित हैं।
सन् 1934-35 में इस आश्रम के महंत हरि दास, कांगड़ा कला के इसके प्रसिद्ध संग्रह को अपने साथ ले गए थे। वर्तमान महंत के पास केवल दुर्गा चित्रों का एक संग्रह है, जिसे 1947 में एक जाट सेना अधिकारी पेशावर के एक मंदिर से लेकर आए थे। वह अधिकारी गांधार मूर्तिकला के कुछ नमूने भी लाए थे, जिनमें मुख्य रूप से महात्मा बुद्ध

के सिर की मूर्तियां शामिल हैं। इनमें से एक मूर्ति ऋषि मार्कंड की है। लक्ष्मण दास ने मार्कंड की मूर्ति अपने कमरे में रखी हुई है और दिलचस्प बात यह है कि यह मूर्ति लक्ष्मण दास से मिलती-जुलती है।
महंत जी ने हमारा बहुत गर्मजोशी से स्वागत किया। उसके बाद वे आश्रम के पीछे वाले जंगल में चले गए। जंगल में शहतूत और आम के कई पेड़ थे। हवा कामनी और बासुहती के फूलों की सुगंध से महक रही थी और धरती नीले फूलों से ढकी हुई थी। पास ही में एक गद्दी अपनी भेड़ों के झुंड को चरा रहा था। आश्रम की शांति और एकांत का पूरा आनंद लेने के बाद हमने महंत जी से विदा ली। हमने उनसे दीवारों पर बने चित्रों का ध्यान रखने का अनुरोध किया। ऐसा लगा मानो उन्हें उन चित्रों के महत्व का कोई अंदाजा ही न हो।

(पृष्ठ 226)
दमथल आश्रम से लौटते समय हमने चाकी नाम की नदी पार की। सड़क के दोनों ओर कंकड़-पत्थर से ढकी रेत और मिट्टी की कई परतें बिछी हुई थीं। ये रेत, गाद, मिट्टी, कंकड़ और पत्थर शिवालिक नदी के निक्षेप हैं, जिसे भारत-ब्रह्म की महान नदी भी कहा जाता है। ब्रह्मपुत्र, गंगा और सिंधु नामक तीन नदियाँ इसी नदी में मिलती हैं; शिवालिक नदी कभी पंजाब के मियोसीन काल के सिंध सागर में बहती थी, जो उस समय टाइबस सागर का हिस्सा था। लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व, जब पृथ्वी की पपड़ी खिसक रही थी, पंजाब के पोठोहार पठार की पथरीली सतह उभर आई और तभी शिवालिक नदी का प्रवाह रुक गया। शिमला के पश्चिम में स्थित हिमालयी नदियों ने अपनी दिशा बदलकर चेनाब, रावी, ब्यास और सतलुज का रूप धारण कर लिया, जबकि शिमला के पूर्व में स्थित नदियाँ गंगा, यमुना आदि के रूप में बहने लगीं और बंगाल की खाड़ी में गिर गईं। दिशा परिवर्तन का प्रमाण इस बात से मिलता है कि ये सभी नदियाँ अंग्रेजी अक्षर 'V' का आकार लेती हैं और इनके अंतिम बिंदु उत्तर-पश्चिम की ओर हैं। शिवालिक नदी की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, रेत, मिट्टी और कंकड़ फिर से उठकर शिवालिक पहाड़ियों का रूप ले लेते हैं। इस प्रकार, शिवालिक पर्वत प्राचीन शिवालिक नदी के अवशेष हैं।
इस घटना का एक और पहलू जलीय जीवों के वितरण में स्पष्ट होता है। जो जीव-जंतु सिंधु नदी में पाए जाते हैं, वे गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों में भी पाए जाते हैं, लेकिन

दक्षिण भारत की महानदी नदी में नहीं पाए जाते। गंगा और सिंधु नदियों के जलमार्ग और जलीय जीव एक ही हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि बहुत समय पहले सिंधु और गंगा एक साथ बहती थीं। उनके जलीय जीव हजारों मील की दूरी तय करके एक नदी से दूसरी नदी में नहीं जा सकते थे। अतः यह सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में ये नदियाँ एक ही नदी के रूप में एक साथ बहती थीं।
भारतीय नदियों का घुमावदार बहाव प्रसिद्ध है। गंगा और सिंध नदियों के पास कोई ऊँचा पर्वत नहीं है और पृथ्वी के तल में थोड़ा सा भी बदलाव एक नदी से दूसरी नदी के जल प्रवाह को बदल सकता है। पहले, इंडो-ब्रह्म नामक एक नदी अरब सागर में गिरती थी, लेकिन भू-गतिकीय बदलावों के कारण पृथ्वी का तल ऊपर उठने से यह नदी दो नदियों में विभाजित हो गई। इनमें से एक नदी अरब सागर में गिरती है।

(पृष्ठ 227)

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। जो नदी सिंध कहलाती है, और जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उसे गंगा और ब्रह्मपुत्र कहा जाता है। भौगोलिक कालक्रम के अनुसार, यह विभाजन बहुत पुराना नहीं है। अरब सागर में गिरने वाली नदियों ने धीरे-धीरे अपना प्रवाह बंगाल की खाड़ी की ओर मोड़ लिया और इस विभाजन का अंतिम चरण गंगा और यमुना का अलग होना था, जो हाल ही में हुआ होगा। इस परिवर्तन से पहले, संभव है कि यमुना पश्चिम की ओर बह रही थी, और फिर किसी बिंदु पर गंगा में, फिर सिंध नदी में, और फिर उस नदी में मिल गई जो अब सूख चुकी है और जिसके अवशेष राजपूताना में पाए गए हैं। नदी ने कई बार अपना मार्ग बदला है। दिल्ली के उत्तर में, यमुना नदी करनाल के पास बहती है, और आज की घग्गर नदी उत्तरी बीकानेर और सूरतगढ़ के पास यमुना के साथ बहती थी। बहावलपुर से गुजरते हुए, यह सिंध में मिल जाती थी और हाकरा नाम धारण कर लेती थी। हाकरा या छोटी घग्गर नदी के सूखे नदी तल अभी भी कुछ स्थानों पर दिखाई देते हैं और उत्तरी राजपुताना और दक्षिणी पंजाब के मानचित्रों में दर्शाए गए हैं। यमुना अब मैदानों में काफी गहराई तक समा चुकी है, जिससे अब यह अपना मार्ग नहीं बदल सकती, परिणामस्वरूप, यह अब गंगा की सहायक नदी बनी रहेगी।

शिवालिक पहाड़ियों में प्राचीन जानवरों के जीवाश्म पाए जाते हैं। लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व शिवालिक के जंगलों और दलदलों में अनेक प्रकार के जानवर रहते थे। लगभग तीस प्रकार के हाथी, घोड़े, ऊंट, बारहसिंगा, जिराफ, गैंडे और अन्य जानवरों की हड्डियों के जीवाश्म शिवालिक में मिले हैं। जिराफ और दरियाई घोड़े अफ्रीका के जंगलों से भारत तक मिट्टी के पुल से होकर आते थे, जो बाद में टूट गया। शिवालिक के जंगलों में शिवाथेरियम नामक एक विचित्र जानवर रहता था, जो गैंडे से भी बड़ा था और जिसके चार सींग और एक सूंड थी। यह जानवर अब विलुप्त हो चुका है। इन जंगलों में बंदर रहते थे जो मनुष्यों की तरह चल सकते थे और यहाँ के लोगों से उनका गहरा लगाव था। शिवालिक की रेतीली मिट्टी, जो होशियारपुर के किसानों के लिए परेशानी का सबब है, कभी नदी का तल हुआ करती थी और आज हिमालय की सबसे छोटी पर्वत श्रृंखला है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 33

नूरपुर

(पृष्ठ 228)
खारियां कुवालियां बस मेरे पौंडियां "इंतजार में काफी देर तक खड़े रहे,
खाना ढूंढने के लिए जाल फेंकने से मेरी कमर में दर्द होता है।
Ho paani kiya kari bharna, nurpure diyan how do I fill water from the valleys of Nurpur?"
ghatiyaan

सुंदर शिवालिक पर्वतमाला के बीच चाकी नदी पार करने के बाद हम पठानकोट-कांगड़ा सड़क पर पहुँचे। इस सड़क के दोनों ओर शीशम के पेड़ हैं और चारों ओर संतरे और आम के बाग फैले हुए हैं। यहाँ से नूरपुर किला दिखाई देता था। झब्बर खुद एक तरफ किले की सीमा बनाती है।198 इस घाटी से बहने वाली धारा चाकी नदी

की सहायक नदी है। नूरपुर वन विभाग का डाक बंगला कस्बे से एक मील दूर स्थित है। इस क्षेत्र से धौलाधार की बर्फीली चोटियाँ दिखाई देती हैं। पेड़ों के पीछे बर्फीली चोटियों का एक अर्धवृत्त है, धौलाधार इसकी दाहिनी भुजा है, जबकि जम्मू की पीर पंजाल पर्वतमाला इसकी बाईं भुजा है। पहाड़ी पर बिखरी हुई नूरपुर की बस्तियाँ किले के क्षेत्र तक फैली हुई हैं।
नूरपुर का डाक बंगला बेहद खूबसूरत है। यहाँ से पहाड़ों की बर्फ से ढकी चोटियाँ दिखाई देती हैं। हालांकि, किला मुख्य कस्बे से दूर स्थित होने के कारण यहाँ खाने-पीने की कोई सुविधा नहीं है। आस-पास कोई घर या दुकान भी नहीं है। अगर मेरे दोस्त और पूर्व सहपाठी पंजाब सिंह पठानिया मुझसे यहाँ न मिले होते, तो हमारे लिए अपनी ज़रूरतें पूरी करना बहुत मुश्किल हो जाता। हम बंगले के बरामदे में बैठे पहाड़ों को निहार रहे थे और बहुत भूख लगी थी, तभी हमने साइकिल पर खाने-पीने का सामान लादे एक युवक को देखा।

(पृष्ठ 229)
जब वह करीब आया, तो मैंने उसे पंजाब सिंह के रूप में पहचान लिया। ऐसे समय में ही सच्ची दोस्ती की परीक्षा होती है। मुझे लगता है कि ग्रामीण पंजाब के लोग शायद पूरी दुनिया में सबसे अधिक स्नेही और दयालु लोग हैं। वे अपनी समस्याओं को दरकिनार रखते हैं और दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।
वे दूसरों की ज़रूरतों के लिए खुद को कुर्बान कर देते हैं। पंजाब सिंह की चिंता और प्रयासों को देखकर मैं इतना भावुक हो गया कि मैंने उन्हें कसकर गले लगा लिया।
नूरपुर का इतिहास रोचक है। यह एक प्राचीन राजपूत राज्य की राजधानी थी। यह राज्य नूरपुर, पठानकोट और गुरदासपुर के शाहपुरकंडी क्षेत्रों से लेकर रावी नदी के पश्चिमी तट तक, लखनपुर तक फैला हुआ था। नूरपुर का पुराना नाम धर्मेरी था, जो कि गुलेर के पेड़ से लिया गया नाम है। नूरपुर में गुलेर का पेड़ व्यापक रूप से उगता है। इस पेड़ को पहले दुबेर कहा जाता था और बाद में इसका नाम धर्मेरी पड़ गया। इस पेड़ का इतिहास प्राचीन काल में हिंदुओं के वृक्षों के प्रति प्रेम को दर्शाता है।
नूरपुर किले का निर्माण राजा बसु ने 1580 से 1613 के बीच एक चट्टानी पर्वत पर करवाया था। राजा बसु ने यहाँ एक कुषाण मंदिर का निर्माण करवाया था। आज इस मंदिर की केवल नींव ही बची है।

198 Jhabbar Khud, or Jhabbar gorge.

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। कृष्ण और उनकी गोपियों के चित्र इन नींवों पर चित्रित हैं। वृक्ष प्रेमी राजा बसु ने माओकोट में किले के पास एक आम का बाग विकसित किया। यह आम का बाग नूरपुर से चार मील दूर है। आज इसे राजा का बाग के नाम से जाना जाता है।

राजा बसु देव के बाद, 1619 में राजा जगत सिंह नूरपुर के राजा बने। वे नूरपुर के सबसे लोकप्रिय राजा थे। उन्होंने चंबा के राजा से बारह वर्षों तक युद्ध किया और 1633 में चंबा पर कब्जा कर लिया। उन्होंने अगले बीस वर्षों तक इस पर शासन किया। 1614 में, राजा जगत सिंह ने भूपत पाल को हराकर बसोहली पर कब्जा कर लिया। 1634 में, सम्राट शाहजहाँ ने उन्हें मनसबदार नियुक्त किया - उन्हें तीन हजार सिपाही और दो हजार घोड़े रखने की अनुमति दी गई। उन्होंने 1640 में शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह किया, और सम्राट ने प्रतिशोध में 1641 में माओकोट, जरागढ़ और नूरपुर के किलों पर कब्जा कर लिया। जगत सिंह और उनके पुत्रों ने जरागढ़ के किले में शरण ली।

(पृष्ठ 230)

नूरपुर से जरागढ़ बारह मील दूर है। जरागढ़ का किला एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है और चारों ओर से गहरी खाइयों से घिरा हुआ है। मुगल सेनाएं जगत सिंह का पीछा करते हुए वहां भी पहुंच गईं। वहां भयंकर युद्ध हुआ जिसमें कई लोग मारे गए; मुगलों ने नूरपुर और जरागढ़ के किलों को नष्ट कर दिया। अंत में, जगत सिंह और उनके बेटों ने शाहजहाँ से क्षमा मांगी और सम्राट ने अपनी उदारता दिखाते हुए उन्हें फिर से मनसब के पद पर नियुक्त कर दिया।

1645 में जगत सिंह को उज़बेकों के विरुद्ध बदख्शान भेजा गया। उनके साथ चौदह हज़ार राजपूत सैनिक थे, जिन्होंने युद्ध में अपनी वीरता सिद्ध की। नूरपुर के एक कवि गंभीर राय ने अपनी एक कविता में इस युद्ध का वर्णन किया है, जो आज भी मेलों में लोकप्रिय रूप से गाई जाती है।

‘Jagta Raja Bhagta Raja, Vasudev ka Jaiya;
Sindhu Mare Sagar Mare, Himachal Dere Layiya;
Akaash ko Arba Keeta tan Jagta Khaiya’200

बदख्शान की विजय के बाद, राजपूत योद्धाओं के रूप में प्रसिद्ध हुए। एल्फिंस्टन इस अभियान का वर्णन इस प्रकार करते हैं, “राजपूतों द्वारा दिखाई गई वीरता पहले कभी नहीं देखी गई थी। उन्होंने पहाड़ी नदियों को पार किया, बर्फीले रास्तों को रौंदा, अपनी खाइयाँ खोदीं और उज़बेकों को परास्त किया। लोगों ने युद्ध के दौरान राजा जगत सिंह को अपने भाले से बर्फ हटाते देखा। उनकी सेनाओं का आक्रमण
उस बर्फीले क्षेत्र में दुश्मन पर किए गए हमले ने वहां मौजूद सभी लोगों को चकित कर दिया।
जगत सिंह के शासनकाल में सम्राट जहांगीर ने कांगड़ा घाटी का दौरा किया था। उनकी बेगम नूर जहाँ भी उनके साथ थीं। कहा जाता है कि रानी को घाटी इतनी पसंद आई कि उन्होंने सम्राट से वहाँ अपने लिए एक महल बनवाने का अनुरोध किया। पहाड़ी पर स्थित किले के सामने की ज़मीन को निर्माण के लिए चुना गया और सम्राट को आमंत्रित करने वाले राजा जगत सिंह ने निर्माण कार्य शुरू किया। हालाँकि, उन्हें यह योजना पसंद नहीं आई। उन्हें डर लगने लगा कि अब वे हमेशा सम्राट की छत्रछाया में ही रहेंगे। एक बार जब रानी नूर जहाँ महल के निर्माण का निरीक्षण करने गईं, तो उन्होंने देखा कि सभी मज़दूरों और महिला कामगारों को घेंघा रोग था।

199 मूल पाठ में एक त्रुटि है जिसमें यह तिथि 1934 लिखी गई है। 200 इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है: जगत सिंह, वासुदेव के पुत्र/ जब सिंधु घाटी में पराजित हुए, तो वे हिमाचल आए/ आकाश और संसार पर विजय प्राप्त करने पर उनका नाम 'जगत' पड़ा। तभी उन्होंने अपना नाम कमाया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उनकी गर्दन पर उभरे हुए हिस्से। जब उसने इसके बारे में पूछताछ की, तो उसे बताया गया कि नूरपुर का मौसम वहां के निवासियों को इस बीमारी के प्रति संवेदनशील बनाता है।

राजा जगत सिंह की यह चतुर योजना कारगर साबित हुई — रानी ने अपना मन बदल लिया, निर्माण कार्य रोक दिया और सम्राट जहांगीर के साथ कश्मीर चली गईं। आज भी, नूरपुर के निवासी खाई के उस पार स्थित उनके अधूरे महल की नींव की ओर इशारा करते हुए यह कहानी सुनाते हैं। हालांकि महल कभी बना ही नहीं, लेकिन धर्मेरी के खंडहर जहांगीर और नूरजहाँ की यादों को संजोए हुए हैं। इसी कारण इसका नाम धर्मेरी से बदलकर 'नूरपुर' हो गया।

नूरपुर के अंतिम राजा बीर सिंह (1789-1846) दुर्भाग्य से बर्बाद हो गए। उन दिनों महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित कर लिया था और पहाड़ी राज्यों पर अपना प्रभाव बढ़ा रहे थे। विभिन्न बहाने और तर्क देकर उन्होंने एक के बाद एक पहाड़ी राजाओं को पराजित किया; बीर सिंह उन्हें हरा नहीं सके। 1815 में महाराजा रणजीत सिंह ने सियालकोट में दरबार बुलाया। बीर सिंह इस दरबार में नहीं आए। महाराजा ने उन पर 40,000 रुपये का जुर्माना लगाया। बीर सिंह ने अपनी बचत, सोने के आभूषण और अन्य कीमती वस्तुएं जमा कीं, लेकिन फिर भी जुर्माना कम पड़ गया। इसलिए, रणजीत सिंह ने उनका राज्य अपने कब्जे में ले लिया, उन्हें एक जागीर दी और चेतावनी दी कि वे वहीं रहें। स्वाभिमानी होने के कारण, बीर सिंह ने जागीर लेने से इनकार कर दिया और चंबा चले गए। कई लोग उनके साथ एकत्र हुए, लेकिन वे सिखों की संगठित सेना के सामने टिक नहीं सके। बीर सिंह भेष बदलकर शिमला के पास अर्की पहुंचे और वहां दस साल तक रहे।

1826 में, बीर सिंह ने एक और वेश धारण किया, नूरपुर लौट आए और किले को घेर लिया। महाराजा रणजीत सिंह ने देसा सिंह मजीठिया के नेतृत्व में अपनी सेना भेजी, जिससे बीर सिंह चंबा भाग गए। चंबा के राजा, जो उनके बहनोई थे, ने उन्हें पकड़ लिया और महाराजा रणजीत सिंह के सामने पेश किया। महाराजा ने उन्हें अमृतसर के गोविंदगढ़ किले में सात साल के लिए कैद कर लिया। बीर सिंह की पत्नी, जो राजा चरत सिंह की बहन थीं, भी वहीं रह रही थीं। राजा चरत सिंह ने महाराजा को 85,000 रुपये की फिरौती दी और अपनी बहन के अनुरोध पर बीर सिंह को घर वापस ले आए। बार्न्स ने राजा बीर सिंह के संदर्भ में 25,000 रुपये की एक और संपत्ति का उल्लेख किया है। यह जागीर राजा ध्यान सिंह के माध्यम से दी गई थी। जम्मू के राजा ध्यान सिंह सिख राज्य के प्रधानमंत्री थे। वे चाहते थे कि बीर सिंह उन्हें

सम्मान दें, और तभी वे उन्हें जागीर का प्रभार सौंपेंगे।202

(पृष्ठ 232)
हालांकि, बीर सिंह ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। वे राजाओं के एक लंबे वंश से थे। जबकि ध्यान सिंह केवल एक स्थानीय नेता थे जिन्हें महाराजा ने राजा बनाया था। एक आम आदमी भला उनके जैसे प्रतिष्ठित राजा का अपमान कैसे कर सकता था? यह राजपूतों के अहंकार का प्रमाण है। भले ही उन्हें अपनी संपत्ति खोनी पड़ी, लेकिन इस निर्णय से उनका अहंकार संतुष्ट हो गया। उन्हें जंगलों में रहना पड़ा और दमथल आश्रम में छिपना पड़ा। इस आश्रम ने कई जरूरतमंद लोगों को आश्रय दिया। बीर सिंह की रानी और बच्चा उनके साथ रहे।

201 नूरपुर, मुगल सम्राट जहांगीर की प्रिय रानी नूरजहाँ के नाम पर रखा गया। 202 भूमि स्वामित्व का एक विलेख, मूलतः एक सामंती भूमि अनुदान जो किसी उच्च अधिकारी जैसे राजा या अन्य अधिकारी द्वारा उपहार स्वरूप दिया जाता था। जागीरदारी व्यवस्था इस सिद्धांत पर आधारित थी कि जागीर इकाई से कराधान किया जाता था और उसे समग्र अधिकारी को भुगतान किया जाता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। चंबा में रहने वाले इन लोगों को राजा द्वारा हर महीने 500 रुपये दिए जाते थे। 1845 में, जब अंग्रेजों ने सिखों को पहली बार हराया, तो बीर सिंह ने अपने राज्य को पुनः जीतने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी सेना के साथ नूरपुर किले को घेर लिया, लेकिन जीवन भर की कठिनाइयों ने उन्हें कमजोर कर दिया था। उनकी मृत्यु किले की दीवारों के बाहर हुई।
बीर सिंह के बाद उनका नाबालिग पुत्र जसवंत सिंह जीवित था। यह बालक राम सिंह पठानिया की देखरेख में पला-बढ़ा। राम सिंह एक वीर राजपूत थे, जो नूरपुर की पुरानी व्यवस्था को पुनर्जीवित करने की इच्छा रखते थे। राम सिंह ने 1844 में जम्मू के पास अपनी सेना एकत्रित की। रावी नदी पार करने के बाद उन्होंने शाहपुर किले पर कब्जा कर लिया। उन्होंने जसवंत सिंह को नूरपुर का राजा और स्वयं को राजा का मंत्री घोषित किया। शाहपुरकंडी नामक छोटा सा कस्बा, जो अब खंडहर हो चुका है, 18वीं

शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी के आरंभ तक एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र था। यहाँ से विशाल कारवां गुजरते थे। शाहपुरकंडी से लगभग पाँच मील दूर मुक्तेश्वर नामक एक स्थान है, जहाँ चट्टानों पर बने कई मंदिर हैं, जो पांडवों को समर्पित हैं। दीवारों और स्तंभों पर बने चित्र अत्यंत प्राचीन प्रतीत होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि श्री अर्जुन ने इस स्थान का भ्रमण किया था।
नदी के पास की पहाड़ी पर 'अर्जुन-चूल्हा' नामक एक दर्रा है। डलहौजी रोड से एक हजार फीट की ऊंचाई पर पहुंचने पर यह दर्रा दिखाई देता है। शाहपुर का किला, जो आज एक खूबसूरत खंडहर है, रावी नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। इसके अधिकांश बुर्ज गिर चुके हैं, केवल एक बुर्ज ही बचा है जो नदी की ओर खुलता है।

(पृष्ठ 233)
इस टावर में एक डाक बंगला बनाया गया है। इस डाक बंगले की लकड़ी की बालकनी से पहाड़ियों का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। बालकनी से नदी के घुमावदार रास्ते बेहद आकर्षक लगते हैं। सर्दियों में यहां का मौसम सुहावना रहता है, जब ठंडी हवा चलती है।
जब अंग्रेजों को राम सिंह के विद्रोह की भनक लगी, तो उन्होंने होशियारपुर से अपनी सेना शाहपुर किले पर कब्जा करने के लिए भेजी। राम सिंह और उनके साथी किले से भाग निकले, नूरपुर पहाड़ी के नीचे जंगल में चले गए और प्रतिरोध किया। लेकिन अंत में वे हार गए और गुजरात भाग गए। शेष सिख सेनाओं ने उन्हें शरण दी। राम सिंह 1849 में दो सिख रेजिमेंटों के साथ लौटे और शिवालिक पर्वतमाला की एक पहाड़ी, जिसे 'दल्ले की धार' कहा जाता है, पर मोर्चा संभाला। यह पहाड़ी शाहपुरकंडी के उत्तर-पूर्व में स्थित है। जनरल व्हीलर के नेतृत्व में अंग्रेजों ने लड़ाई लड़ी और कई सैनिक खो दिए, लेकिन राम सिंह को कांगड़ा भागना पड़ा, जहाँ एक ब्राह्मण ने उन्हें शरण दी। हालांकि, ब्राह्मण ने अंग्रेजों का इनाम स्वीकार कर लिया और उन्हें राम सिंह के ठिकाने की जानकारी दे दी। अंग्रेजों ने राम सिंह को सिंगापुर निर्वासित कर दिया, जहाँ अंततः उनकी मृत्यु हो गई। आज भी पहाड़ी-भट्ट गायक राम सिंह की वीरता के गीत गाते हैं, जिसमें वे बताते हैं कि कैसे उन्होंने डल्ल की चोटियों पर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, कैसे ढोल बजाए गए, तोपें गरजीं और पहाड़ खून से लथपथ हो गए।

राम सिंह के परपोते मियां करतार सिंह नूरपुर के बसावज़ीरान नामक गांव में रहते हैं। उनके पास वह ज़ारबख्तर है जिसे राम सिंह पहना करते थे। उनके पास राम सिंह की पेंटिंग्स का संग्रह भी है। जब अंग्रेजों ने राम सिंह का घर जला दिया था, तब कुछ महिलाओं ने जलते हुए भवन से ये पेंटिंग्स बचा ली थीं। कहा जाता है कि जब राम सिंह को अपनी जली हुई पेंटिंग्स के बारे में पता चला, तो वे बहुत दुखी हुए और रोने लगे।

203 महाकाव्य महाभारत से।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

ये चित्र तीन प्रमुख शैलियों - बसोहली, राजस्थानी और कांगड़ा - में बनाए गए हैं। सबसे पुराने चित्र बसोहली कला शैली के हैं। इन चित्रों में गहरे लाल रंग की किनारी और गहरे रंग हैं; हालांकि, एक ही शैली के होने के बावजूद, ये बसोहली शैली के भद्दे चित्रों से भिन्न हैं। इन्हें बड़ी बारीकी से उकेरा गया है, विशेष रूप से इन चित्रों में महिलाओं की विशेषताएं बहुत स्पष्ट हैं। इस चित्रकला शैली में राजस्थानी और मुगल शैलियों का प्रभाव विशेष रूप से देखा जा सकता है।

(पृष्ठ 234)

चित्रों में पात्रों के चेहरे की बनावट आमतौर पर अंडाकार होती है। इस संग्रह में कई चित्र हैं। एक चित्र में राजा बीर सिंह को काले घोड़े पर सवार दिखाया गया है। उनके दाहिने हाथ पर एक बाज़ बैठा है। इस संग्रह में वज़ीर राम सिंह और वज़ीर शाम सिंह के चित्र भी शामिल हैं।

एक चित्र में राम सिंह के वफादार सेवक सोढ़ा को उनके पीछे चलते हुए दिखाया गया है। सोढ़ा लाहौर से नूरपुर एक ही दिन में पहुँच जाते थे। कांगड़ा चित्रों के संग्रह में कुछ चित्र धार्मिक प्रकृति के हैं, जबकि अन्य श्रृंगार रस में चित्रित किए गए हैं। ये चित्र संग्रह के अन्य चित्रों से बिल्कुल भिन्न हैं। इनमें गहरे रंगों का प्रयोग किया गया है और कलाकारों ने लाल, नीले और पीले रंगों का भरपूर उपयोग किया है। जीवन के अंधकारमय क्षणों को दर्शाने वाले कुछ चित्र, रंगों के चयन के कारण श्रृंगार रस का

विशेष रूप से सुंदर चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में महिलाओं के लाल या पीले वस्त्र उनके गुलाबी चेहरों और चमेली के समान कोमल शरीर को और भी आकर्षक बनाते हैं। इन चित्रों में पुरुषों को अक्सर सुंदर युवकों के रूप में चित्रित किया गया है, जबकि महिलाओं को मोहक रूप में दर्शाया गया है।
धार्मिक चित्रों में कबीर, रविदास, धन्ना और गुरु नानक के जीवन को दर्शाया गया है। कबीर साहब को उनकी पत्नी लोई के साथ बैठे हुए दिखाया गया है। वे करघे पर कपड़ा बुन रहे हैं, जबकि उनकी पत्नी सूत कात रही हैं। आदिधर्मी गुरु रविदास को जूते बनाते हुए दिखाया गया है, जबकि उनकी पत्नी उनके बगल में चरखे पर काम कर रही हैं। धन्ना राजस्थान के नटों के एक प्रसिद्ध संत थे। एक चित्र में, उन्हें एक झील के किनारे बैठे हुए दिखाया गया है। उनके सिर और शरीर पर एक काला रजाई है, एक हाथ में मक्की रोटी और साग है, और दूसरे हाथ में छाछ का गिलास है। उनकी प्रिय गाय उनके पीछे खड़ी दिखाई गई है। गुरु नानक के चित्र में, मरदाना को उनके बगल में सितार बजाते हुए दिखाया गया है। गुरु नानक को पीले रंग का लबादा पहने हुए दिखाया गया है और उनके कंधे पर फकीरों द्वारा अक्सर पहनी जाने वाली बहुरंगी शॉल है। मरदाना आध्यात्मिक परमानंद में लीन प्रतीत होते हैं, उनके चेहरे पर एक अलग ही आभा है। बाबा नानक बड़े प्रेम से मर्दाना का संगीत सुन रहे हैं। कहा जाता है कि संगीत का आनंद लेते हुए बाबा नानक अक्सर ईश्वर के प्रकाश में लीन हो जाते थे। इस चित्र की पृष्ठभूमि में लताओं से लिपटा एक आम का पेड़ दिखाई दे रहा है। इस प्रकार के अलंकरण कांगड़ा चित्रों में, विशेषकर कृष्ण महाराज के चित्रों में, काफी आम हैं।
मियां करतार सिंह के इस संग्रह को देखने के बाद, हम नूरपुर किले का दौरा करने गए।

(पृष्ठ 235)
इस किले के खंडहरों में एक स्कूल है जहाँ पेड़ों के नीचे कक्षाएँ लगती हैं। ऐसा लग रहा था कि उस स्कूल में जगह की कमी है। हम स्कूल के सामने एक बाड़े में दाखिल हुए जो...

204 जबकि रंधावा के मूल पाठ में 'सितार' लिखा है, यह ज्ञात है कि गुरु नानक के

साथी मरदाना 'रबाब' बजाते थे। ये अलग-अलग वाद्य यंत्र हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। यह स्थान चारों ओर से छतरीनुमा मौलसरी वृक्षों से घिरा हुआ था। यहाँ की दीवारों पर कृष्ण महाराज के जीवन की कथाएँ चित्रित हैं। दरवाजों पर गोपियों के अत्यंत सुंदर चित्र लगे हुए हैं। कहा जाता है कि कृष्ण महाराज की प्रतिमा काले संगमरमर से बनी थी और इसे विशेष रूप से चित्तौड़ से लाया गया था। यह वही प्रसिद्ध प्रतिमा है जिसकी मीराबाई पूजा करती थीं।

नूरपुर की पहाड़ियाँ शुष्क और बंजर हैं, और अचानक बारिश के कारण मिट्टी का कटाव हो जाता है, जिससे नीचे की चट्टानें दिखने लगती हैं। इन चट्टानों पर केवल झाड़ियाँ और चीड़ के पेड़ ही उग सकते हैं। इस जगह पर कोई असाधारण स्थल नहीं हैं, यहाँ केवल चीड़, कनेर और शीशम के पेड़ ही पाए जाते हैं।

इस क्षेत्र का एक और सुंदर स्थल एक झरना है। यह कटरा से एक मील दूर है। यहाँ ट्रक और लॉरी चालक अपने वाहनों के इंजन को ठंडा करने के लिए पानी भरने के लिए रुकते हैं और यात्री अपनी प्यास बुझाने के लिए ठहरते हैं। इस झरने के पास एक आकर्षक मंदिर है। इस चूना पत्थर की गुफा में लोग शिवलिंग के रूप में स्तंभों की पूजा करते हैं। गुफा की छत से चूना पत्थर का पानी टपकता है, जिससे चूना पत्थर मोमबत्ती का आकार ले लेता है। मंदिर के बाहर विशाल चट्टानें हैं जिन पर हाथियों की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। हालांकि, कुछ शरारती तत्वों ने इन हाथियों की सूंड तोड़ दी हैं। जब हम गुफा में प्रवेश किया, तो हमने गुंथे हुए बालों वाले एक तपस्वी को पालथी मारकर बैठे हुए और भांग के नशे में चूर देखा। पुल से घाटी का मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। शीशम के पेड़ के ताजे हरे पत्ते बेहद खूबसूरत लगते हैं।

205 भांग से तैयार किया गया एक पेय, जिसे अक्सर त्योहारों के दौरान पिया जाता है या मिठाइयों में मिलाया जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 34

नंगा

पहाड़ियों की शांति और चाय का स्वाद

(पृष्ठ 236)

भोर हो चुकी थी। धौलाधार की चोटियों से सूरज की किरणें चमक रही थीं। धीरे-धीरे सूरज पहाड़ियों के ऊपर चढ़ रहा था और बर्फीली चोटियों को धूसर रंगत दे रहा था। कोहरे से घिरे चीड़ के पेड़ बेहद खूबसूरत लग रहे थे। खच्चरों के गले में बंधी घंटियों की झंकार से पहाड़ियों की शांति और सुकून और भी बढ़ गया था। मैंने अपने साथियों को नींद से जगाया। आर्चर और मुल्क राज आंखें मलते हुए उठे और कपड़े पहने। फिर हमने कोटला की यात्रा शुरू की।

शाहपुर से आगे बढ़ते ही इलाके की प्राकृतिक सुंदरता ने हम सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। हम कांगड़ा तहसील में दाखिल हुए। शाहपुर सड़क के किनारे बसा एक विशाल गाँव है। विशाल डाक बंगला ऊँचे-ऊँचे पीपल के पेड़ों से घिरा हुआ है। उत्तर दिशा में धौलाधार पर्वतमाला पर बर्फ की एक अद्भुत चमकदार दीवार दिखाई देती है। सीढ़ीदार खेत लहरों की तरह दिखते हैं, जिससे आसपास का नजारा बेहद मनमोहक हो जाता है।

धौलाधार पर्वतमाला से कई झरने निकलते हैं और इन खेतों की सिंचाई करते हैं। सीढ़ीदार खेतों की सीढ़ियाँ धीरे-धीरे चौड़ी होती जाती हैं और खुले मैदानों जैसी दिखने लगती हैं। खेत हल्के ढलान वाले हैं और किसानों की झोपड़ियाँ चारों ओर फैली हुई हैं। उत्तरी ढलान पर कई छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं।

(पृष्ठ 237)

पहाड़ियों का धूसर रंग कभी-कभी लाल दिखाई देता है, और कभी-कभी उन पर लाइकेन का पीला रंग भी नज़र आता है। कांगड़ा में ज़मीन में आधे धंसे हुए और घास से घिरे पत्थर एक विशेष दृश्य प्रस्तुत करते हैं। पास ही में गग्गर नाम का एक और सुरम्य गाँव है, जिसके किनारे एक टेढ़ी-मेढ़ी नदी बहती है। शायद गग्गर से ही धौलाधार का सबसे बेहतरीन नज़ारा दिखाई देता है। घाटी की तलहटी में विशाल पहाड़ियाँ और चट्टानें हैं और किनारों की ढलानें आम के पेड़ों से ढकी हुई हैं। पृष्ठभूमि

में धौलाधार की भव्य चोटियाँ दिखाई देती हैं।
नागरोटा के पास की पहाड़ियाँ विशाल छतरियों की तरह फैले पीपल के पेड़ों से भरी हुई हैं। कई साल पहले, इन पेड़ों को बकरी चराने वालों ने छाया के लिए लगाया था। यहाँ सड़क लगभग सीधी है और मोड़ बहुत कम हैं। इस क्षेत्र से आगे पहाड़ियाँ चीड़ के जंगलों और चाय के बागानों से भरी हुई हैं। चाय की झाड़ियों को चौकोर आकार में छाँटा गया है। कुछ जगहों पर शांत ओई के पेड़ भी दिखाई देते हैं।
हमारे मित्र बिसंभर दास नागरोटा में रहते थे। कांगड़ा कला की खोज में उन्होंने मेरी बहुत मदद की। उन्होंने हमें अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। हम पालमपुर जाना चाहते थे, इसलिए हमने उनसे चाय के बाद जाने की अनुमति मांगी, लेकिन वे सहमत नहीं हुए। शाम ढलने लगी; डूबते सूरज की आखिरी किरणें धौलाधार पर्वतमाला को सुनहरा रंग दे रही थीं। नागरोटा की महाखंड (बड़ी घाटी) कायस्थ बारी के पास स्थित है। बड़े-बड़े पत्थरों से भरी इस घाटी के चारों ओर हरे-भरे खेत हैं। मैं धान के खेत के पास एक बड़े पत्थर पर बैठ गया और पहाड़ों की सुंदरता का आनंद लेने लगा।
प्रकृति की सुंदरता और पहाड़ियों की शांति आपको जीवन के संघर्षों को भुला देती है; ऐसा लगता है मानो इस ब्रह्मांड को रचने वाली महान शक्ति इन्हीं पहाड़ियों और जंगलों की शांति में निवास करती है। हम गुरुद्वारों और मंदिरों में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल इस नाजुक भावना को डराने के लिए करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे लोग अपने घरों की दीवारों पर बैठे कौवों को भगाने के लिए ताली बजाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। कट्टरपंथी इस पवित्र सौंदर्य को गिरजाघरों, मंदिरों और मस्जिदों में कैद करना चाहते हैं, लेकिन ऐसा करने में असमर्थ हैं।
मैं शांत पहाड़ियों की गोद में बैठा अपने विचारों में इतना मग्न था कि मुझे पता ही नहीं चला कि रात हो चुकी है।

(पृष्ठ 238)
आकाश में पूर्णिमा का चाँद चमक रहा था और चाँदनी में बर्फ़ की सफ़ेद चादर दमक रही थी। बिसंभर दास मेरे लिए खेतों में चाय लेकर आए। मैं धीरे-धीरे चाय की चुस्की

लेते हुए अपने आस-पास की सुंदरता को निहार रहा था। जैसे बर्फीली चोटियों का आनंद अकेले में लिया जा सकता है, वैसे ही चाय का आनंद भी शांत और सुकून भरे माहौल में ही सबसे अच्छा लगता है। जब मैं लोगों को कौवों और गौरैयों की तरह बातें करते देखता हूँ, तो मुझे अजीब लगता है। हमारे पूर्वजों ने सही कहा है कि खाना खाते समय बातें करना मूर्खता है। दो काम एक साथ ठीक से नहीं किए जा सकते - न तो खाने का आनंद लिया जा सकता है, न ही बातों का। खाने पर ध्यान दें और उसका स्वाद लें, खाना खत्म होने के बाद बात कर सकते हैं।

चाय और शांति का एक विशेष संबंध है। हम पंजाबियों को यह बात समझ में नहीं आती क्योंकि हम दूध और लस्सी पीने के आदी हैं, चाय पीने की उतनी आदत नहीं है। आज भी हममें से कई लोगों को लगता है कि चाय पीने से शरीर में अनावश्यक गर्मी और सूखापन आ जाता है। लगभग तीस साल पहले मैं भी ऐसा ही सोचता था और चाय पीने को शराब और सिगरेट की तरह एक हानिकारक लत मानता था।

1932-34 में जब मैं इंग्लैंड में था, तो पार्टियों में भी दूध मांगता था और अपने अंग्रेज दोस्तों को परेशान करता था। वे सोचते थे, ऐसा कौन आदमी है जो चाय तक नहीं पीता? 1935 में मेरी पत्नी ने मुझे चाय पीने की आदत डाली और अब मुझे इसे धीरे-धीरे पीना बहुत अच्छा लगता है। काम के बाद थके-हारे घर आने पर एक कप चाय पीने से सारी थकान गायब हो जाती है।

जब भी मैं यात्रा करता हूँ, खासकर भारत के उत्तरी या दक्षिणी हिस्सों में, मैं केवल चाय या नारियल पानी ही पीता हूँ। गर्मियों में कच्चा नारियल स्वादिष्ट होता है और इससे संक्रमण का कोई खतरा नहीं होता। सूरज की गर्मी से यह पानी गाढ़ा हो जाता है, नारियल में भरकर सील कर दिया जाता है। मैं यात्रा के दौरान ही चाय पीता हूँ। पानी उबालने से कीटाणु मर जाते हैं और चाय पीने से गले में जमी धूल भी साफ हो जाती है।

चाय का पौधा मूल रूप से दक्षिणी चीन में उत्पन्न हुआ था। इसका उपयोग औषधि के रूप में किया जाता था और ऐसा माना जाता था कि यह बुखार को ठीक करने, थकान दूर करने, मन को तृप्त करने और आंखों को ठंडक पहुंचाने में सहायक होती है। चौथी शताब्दी में यांग्त्ज़ी-कियांग घाटी में चाय पीना एक लोकप्रिय चलन बन गया। आठवीं शताब्दी के मध्य में सम्राट तांग के शासनकाल के दौरान, लुवु नामक एक संत-कवि ने चाय पीने का एक नया तरीका शुरू किया और इस पर एक ग्रंथ लिखा।

(पृष्ठ 239)
इस ग्रंथ में चाय पीने की विधि, बर्तनों का उपयोग और मन को शांत करने के तरीके का विस्तृत वर्णन है। छह से सात कप चाय पीना असामान्य नहीं माना जाता था। लोटेग नामक एक चीनी कवि लिखते हैं, “चाय अमृत है। पहला कप मेरे होंठों और गले को शांत करता है, दूसरा मुझे अकेलेपन से मुक्ति दिलाता है, तीसरा मेरे पेट में उतरता है, चौथा मेरे सभी पापों को पसीने के रूप में धो देता है, पाँचवाँ मुझे पवित्र बनाता है और छठा मुझे स्वर्ग के देवी-देवताओं के पास ले जाता है।”
चाय पीने की रस्म ज़ेन बौद्ध धर्म में शुरू हुई। सभी पुजारी बुद्ध की मूर्ति के सामने बैठते थे और एक ही प्याले से पूरी श्रद्धा से चाय पीते थे। ज़ेन बौद्ध धर्म जापान में पहुँचा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। ज़ेन परंपरा 15वीं शताब्दी में शोगुन आशिकागा योशिमासा के नेतृत्व में प्रसिद्ध हुई और इसने चाय को दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बना दिया। चाय पीने का कमरा एक शांत मंदिर बन गया और इस कमरे में प्रवेश करने वाला हर व्यक्ति अपनी सारी चिंताओं और संघर्षों को भूल जाता था। इस कमरे का दरवाजा केवल तीन फीट ऊंचा था, इसलिए इसमें प्रवेश करने वाला हर व्यक्ति पहले प्रणाम करता था। इससे लोग विनम्र और शिष्ट बने। कमरे में फूलों और पत्तियों की चित्रकारी होती थी और सजावट काफी सरल होती थी। ज़ेन परंपरा की उत्पत्ति एकाग्रता से हुई, क्योंकि बुद्ध ने शांति प्राप्त करने के साधन के रूप में ध्यान पर जोर दिया था। यह संदेश भारत के बौद्धों द्वारा चीन और फिर 6वीं शताब्दी में जापान तक पहुँचा। 16वीं शताब्दी में, रिकाओ ने चाय पीने की प्रथा को शांति और पवित्रता के प्रतीक के रूप में विकसित किया। मेहमान चुपचाप चाय के कमरे में आते थे और उबलते पानी की आवाज के अलावा कोई अन्य आवाज नहीं होती थी। हर कोई आत्मनिरीक्षण करता था और चुपचाप कमरे की सरल सजावट की प्रशंसा करता था। चायघर पहले बहुत साफ-सुथरा रहता था। इतना साफ कि धूल का एक कण भी दिखाई नहीं देता था। चायघर को घर के बाकी हिस्सों से जोड़ने वाला कंकड़ वाला रास्ता विशेष रूप से साफ किया जाता था। हालांकि, जापानी पुजारियों की

कलात्मकता उनकी सफाई के तरीके में भी झलकती थी। चाय पीने की रस्म का नेतृत्व करने वाले पुजारी को 'चाय शिक्षक' कहा जाता था।

(पृष्ठ 240)
रिकाओ एक प्रसिद्ध चाय शिक्षक थे। चाय समारोह शुरू होने वाला था और कुछ जाने-माने लोगों के इसमें शामिल होने की उम्मीद थी। रिकाओ का बेटा शोआन बगीचे में पगडंडी धो रहा था। उसने एक घंटे तक पगडंडी साफ की और अपने पिता के पास आकर बोला, “पिताजी, सब कुछ तैयार है। मैंने पगडंडी को तीन बार धोया है। मैंने पत्थर के लालटेन और पत्तियां भी धो दी हैं और पगडंडी पर एक भी पत्ती या घास नहीं है।” “अरे मूर्ख लड़के!”, चाय शिक्षक चिल्लाए, “बगीचे की पगडंडी को ऐसे साफ नहीं किया जाता।” यह कहकर रिकाओ बगीचे में गए और चेरी के पेड़ की एक शाखा को हिलाया। पेड़ की पीली-हरी पत्तियां पगडंडी पर गिर गईं, जो शरद ऋतु के किसी काल्पनिक दृश्य जैसी लग रही थी। रिकाओ स्वच्छता के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता को भी महत्व देते थे।
चाय पीने से व्यक्ति सतर्क हो जाता है और ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। यही कारण है कि बौद्ध भिक्षु ध्यान करते समय चाय का सेवन करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हमारे बौद्ध भिक्षु सुक्खा करते हैं। चाय पीने की इस प्रथा ने अनेक लोगों की जीवनशैली और संस्कृति को प्रभावित किया है, साथ ही इसने चित्रकला और बागवानी को भी प्रेरित किया है।
1610 में ईस्ट इंडिया कंपनी यूरोप में चाय लेकर आई। यह 1638 में फ्रांस, 1639 में रूस और 1640 में इंग्लैंड पहुंची। जब विदेशों से कोई नई चीज़ आती है, तो वह चर्चा का विषय बन जाती है। 1756 में एक अंग्रेज़ लेखक ने लिखा कि ज़्यादा चाय पीने से पुरुषों की लंबाई कम हो जाती है और महिलाओं की सुंदरता फीकी पड़ जाती है। इन दावों के बावजूद, चाय लोकप्रिय हुई और 18वीं सदी तक यह एक आम पेय बन गई। एडिसन, स्टील, सैमुअल जॉनसन और चार्ल्स लैम्ब जैसे प्रसिद्ध लेखक चाय के शौकीन थे। लैम्ब ने एक बार लिखा था कि किसी की छुपकर मदद करना सबसे दिलचस्प काम है। जापानी कलाकार ओकाकुरा ने चाय पीने के इन विचारों को 'चायवाद' नाम दिया। उनका कहना है कि 'चायवाद' सुंदरता को छिपाने की कला है ताकि कुछ ही लोग उसे पा सकें। छुपकर मदद करने का लैम्ब का सिद्धांत भी

'चायवाद' का ही एक हिस्सा है।

206 यहाँ, रंधावा चेरी ब्लॉसम को 'चिनार' कहते हैं, जो कश्मीर और अन्य पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक वृक्ष है। हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य है कि जापान के संदर्भ में, यह कहानी 'साकुरा' को संदर्भित करती है। 'चिनार' सिकोमोर वृक्ष का दूसरा नाम भी है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैं इन्हीं विचारों में डूबा हुआ था कि तभी मुझे कायस्थ-बारी का एक पहाड़ी गीत सुनाई दिया:

(पृष्ठ 241)

“Kuthon te ugmi kaali badli, Where has this dark cloud come from,
हे संसार, पृथी सिंह, हे पृथी सिंह,
Kuthon to ugmia thanda neer o!” यह ठंडा पानी कहाँ से आया है?
Chhati te ugmi kaali badli This dark cloud has settle on my chest,
हे इंद्र की पुत्री,
Naina ton barsiya tatta neer o! And the hot water from my eyes!

गायक इतनी भावुकता से गा रहा था कि ऐसा लग रहा था मानो उसका दिल टूट गया हो।

इसी बीच हमें रात के खाने पर आमंत्रित किया गया। हमारे मेज़बान ने गद्दी समुदाय के कुछ लड़के-लड़कियों को इकट्ठा किया था। उन्होंने हमारे मनोरंजन के लिए कई गीत गाए; हमें उनका प्रदर्शन बेहद पसंद आया। हमारे मेज़बान के पूरे परिवार ने हमें खाना परोसा, जिसे देखकर शहरी पृष्ठभूमि से आए मेरे साथी बेहद आश्चर्यचकित रह गए। मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम पश्चिमी देशों के लोगों से काफी अलग हैं। हमारे लोग

स्वभाव से प्रेममय हैं, वे अद्भुत मेज़बान हैं। चाहे वे गरीब ही क्यों न हों, वे किसी अजनबी को अपने गाँव से भूखा नहीं जाने देंगे।
उनकी तुलना में, पश्चिम के श्वेत लोग स्वार्थी और भौतिकवादी होते हैं। वे आपसे तभी बात करेंगे जब उन्हें किसी काम में आपकी मदद की ज़रूरत होगी, चाहे वे कितने भी अमीर क्यों न हों। वे गोरे रंग के और कठोर हृदय वाले लोग होते हैं।
हमारे गरीब किसान इतने मिलनसार हैं कि भले ही उनके कपड़े फटे-पुराने हों, वे अपने काम को छोड़कर अपने मेहमानों की सेवा करने चले जाते हैं।
हमने अपने दोस्तों को धन्यवाद दिया और पालमपुर की यात्रा शुरू की। चाय बागानों के बीच काले ओई के पेड़ ऊँचे और शांत खड़े थे। सड़क धीरे-धीरे साँप की तरह ऊपर की ओर चढ़ती गई और आधे घंटे के भीतर हमें पालमपुर की रोशनी दिखाई देने लगी। हमने बाज़ार पार किया और 'सेशन हाउस' बंगले पर पहुँच गए।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 35

‘Palma Da Chilke Paani’

(पृष्ठ 242)
O Dhara Chilke Pathar Gatiyan That stream cutting through stone valleys,
O Palma Da Chilke Paani that cold water of Palam

पालमपुर हिमालय की गोद में बसे एक अनमोल मोती की तरह दिखता है। इसके खूबसूरत चीड़ और देवदार के पेड़ धौलाधार की छाया में पहरेदारों की तरह खड़े हैं। ऊंचे चीड़ के पेड़ों से घिरी शांत सड़कें, पास में बर्फीले झरनों वाले चाय के बागान और ऊंचे पेड़ों से घिरे बंगले किसी चित्र की तरह सुंदर लगते हैं। पालमपुर सुंदरता और शांति का एक अनूठा नमूना है। 'सेशन हाउस' नाम का बंगला इसके सभी तत्वों में सबसे खूबसूरत है। यह एक मनमोहक दृश्य है - प्रकृति प्रेमी ने इसके निर्माण के लिए

भूखंड का चुनाव बहुत सोच-समझकर किया होगा। इसके बरामदे से धौलाधार की पूरी श्रृंखला दिखाई देती है। धौलाधार की तीनों चोटियाँ रोएरिच की पेंटिंग जैसी लगती हैं, जबकि चीड़ के पेड़ उसके फ्रेम की तरह। दोपहर में बादल इसकी बर्फीली चोटियों को ढक लेते हैं। मानसून के दौरान बिजली कड़कती है और गरजती है। गरज बांडला की घाटी में गूंजती है; ऐसा लगता है मानो सर्वोच्च शक्ति अपनी शक्ति और महिमा का प्रदर्शन कर रही हो। यहाँ बहुत भारी बारिश होती है; बादल बरसते-बरसते नहीं थकते।

(पृष्ठ 243)
बांडला खुद में यह बहुत ही सुखद समय है, यहाँ घंटों नीले और काले बादलों और बर्फ से ढकी चोटियों को निहारते हुए बिताए जा सकते हैं। सेशन हाउस का बगीचा रंग-बिरंगे फूलों से भरा रहता है और पृष्ठभूमि में देवदार के पेड़ दिखाई देते हैं। बैसाख के महीने में, यह क्षेत्र तग्गर फल की सुगंध से सराबोर हो जाता है।
बांडला घाटी और नेउगल घाटी के गांवों में घूमना एक बेहद सुखद अनुभव है। बांडला की ओर जाने वाला रास्ता दोनों ओर चीड़ के पेड़ों से घिरा हुआ है। हमने बांडला घाटी में दाहिनी ओर से प्रवेश किया। रास्ते में हमें एक घर मिला, संभवतः किसी किसान का, जिसमें एक अकेला चीड़ का पेड़ था। इस घाटी के दोनों ओर मक्खन के पेड़ हैं, बैसाख के महीने में इनके पत्ते तांबे के रंग के हो जाते हैं। ऊपर चढ़ती सीढ़ियों जैसे दिखने वाले खेतों में गेहूं और जौ की फसलें खूब फल-फूल रही थीं, जिनकी कटाई जेठ के महीने में होती है। इस महीने के मध्य में खेतों की फिर से जुताई की जाती है। जुताई के बाद, किसान परिवार के सभी सदस्य, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं, मिट्टी के बड़े-बड़े ढेलों को छोटे-छोटे दानों में तोड़ते हैं। इस काम के लिए सभी के हाथों में बड़े-बड़े लकड़ी के हथौड़े होते हैं। जेठ-हारह के महीने में खेत पानी से भर जाते हैं, तब किसान पानी निकालते हैं। हजारों झरने चमकते सूरज की रोशनी में दमकते हैं। जलमग्न खेत प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हुए कांच की तरह दिखते हैं, और पालम की यह घाटी किसी सपने जैसी लगती है। फिर, किसान खेतों में धान उगाना शुरू करते हैं, जो अस्सू के दिन तक कटाई के लिए तैयार हो जाता है।

207 जेठ, हरह, अस्सू, पोह सभी पारंपरिक महीने हैं, कृपया शब्दावली देखें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
दलितों के घर गाँव के बाहरी इलाके में स्थित हैं, जबकि गाँव के मध्य में सूद समुदाय के घर हैं। ये लोग इस क्षेत्र के दुकानदार और साहूकार हैं। गाँव के दाहिनी ओर एक मंदिर है, जिसकी दीवारों पर शिव और पार्वती के चित्र बने हुए हैं। यह कलाकृति कांगड़ा शैली के कलाकार गुलाबू राम ने बनाई है। गाँव की मुख्य सड़क पत्थर की बनी है; इसके बगल में एक झरना है। यह निर्मल झरना गाँव को एक अनोखी सुंदरता प्रदान करता है। गाँव के उत्तरी छोर पर जलविद्युत से चलने वाली आटा मिलें हैं, और पास में ही गद्दी समुदाय के लोग रहते हैं। खेतों की सीमा पर लगे पेड़ों को अक्सर पशुओं के लिए चारागाह बढ़ाने के लिए बेरहमी से काट दिया जाता है। इनमें से कुछ पेड़ों की सूखी शाखाएँ गद्दी समुदाय के लोगों के घरों की छतों पर डरावनी छाया डालती हैं। गद्दी किसानों के घर साफ-सुथरे होते हैं, उनकी दीवारें बाहर की मिट्टी से लाई गई हल्के नीले गोलू और पीले मुल्तानी मिट्टी से रंगी होती हैं। यह मिट्टी धौलाधार से लाई जाती है। कुछ दूरी आगे 'निग्गल' नाम की एक घाटी है।

(पृष्ठ 244)
यह घाटी बहुत गहरी है, और इसमें पहाड़ की कुछ गिरी हुई चट्टानें पड़ी हैं। इस घाटी से एक स्वच्छ नदी बहती है, जो धौलाधार पर्वतमाला से निकलती है। बाईं ओर स्थित एक झरना बांडला के चाय बागानों की सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। दूर से देखने पर झरने को देखकर ऐसा लगता है मानो वह गुरुत्वाकर्षण के विपरीत, नीचे से ऊपर की ओर बह रहा हो। निगल घाटी के पास एक आटा चक्की और शराब बनाने की भट्टी है। गद्दी समुदाय के लोग अक्सर यहाँ लुगड़ी पीने आते हैं। घाटी के दूसरी ओर गद्दी समुदाय का एक और गाँव है। उनके पीले रंग के डिब्बेनुमा घर बेहद खूबसूरत लगते हैं।
पालमपुर तहसील के गांवों को दो भागों में बांटा जा सकता है: एक भाग धौलाधार पर्वतमाला की तलहटी में पालमपुर-बैजनाथ सड़क के उत्तर में स्थित है, जबकि दूसरा भाग सड़क के दक्षिणी भाग में स्थित है। देओल, लुन्नाद, कदंबरी, बंदला, पकांडी और राचिया नाम के गांव धौलाधार पर्वतमाला की तलहटी में स्थित हैं। ये सभी गांव पहाड़ियों पर बसे हैं। देओल के पास 'आवा' नामक एक घाटी है, जबकि बंदला के

पास निगल घाटी स्थित है। इन गांवों के खेतों की सिंचाई बर्फीले ठंडे पानी से होती है। ये ग्रामीण या तो किसान हैं, पशुपालक हैं या शिकारी-संग्रहकर्ता हैं। ये लोग बाज और शिकरा का शिकार करके उन्हें पश्चिमी पंजाब भेजते थे। पंजाब के विभाजन के कारण बाज और शिकरा का व्यापार बंद हो गया है। बाज और शिकरा के शौकीन बड़े जमींदारों की संख्या भी अब कम हो गई है। इसलिए, ग्रामीण अब इन शिकारी पक्षियों का शिकार नहीं करते। यही कारण है कि धौलाधार की तलहटी में शिकार करना एक पेशे के रूप में धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है। मुनाल और बर्फानी कुक्कड़ जैसे पहाड़ी मुर्गों की संख्या भी कम हो गई है, जबकि बाज़ और शिकरा की आबादी बढ़ गई है। पालमपुर में बनूरी, सालियाना, पट्टी, देवग्राम, मनियारा, टिक्कर, द्रौह आदि गाँव चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र में चाय बागान की शुरुआत सबसे पहले डॉक्टर जेम्सन ने 1849 में की थी। इसके लिए वे अल्मोड़ा और देहरादून से चाय के पौधे लाए थे। आजकल, इस क्षेत्र के कई हिस्सों में चाय के बागान हैं; किसान अपने खेतों में चाय उगाते हैं। वे चाय की पत्तियों को छोटी भट्टियों में सुखाते हैं, और इन पत्तियों से बनी चाय स्थानीय सांस्कृतिक और शिल्प परंपराओं को सराहने वाले लोगों को बहुत पसंद आती है। इन गाँवों के घर आमतौर पर दो मंजिला होते हैं और स्लेट से बने होते हैं। कई घरों के दरवाजों पर खिड़कियाँ चित्रित होती हैं।

208 वह गांव के दलित समुदाय को संदर्भित करने के लिए जिस शब्द का प्रयोग करता है वह चमार/चमियार है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 245)

पिछले बीस वर्षों में, इन लोगों में स्वस्थ जीवन शैली के प्रति जागरूकता बढ़ी है, इसलिए अब कई घरों में खिड़कियाँ और रोशनदान हैं। इन घरों के पास चारागाह हैं, और इनमें छोटी काली गायें चरती हुई देखी जा सकती हैं। सालियाना गाँव बहुत सुंदर है। यहाँ डोगरा ब्राह्मण रहते हैं। खेतों की सीमाओं पर जंगली गुलाब की झाड़ियाँ लगाई गई हैं, और बैसाख के महीने में, उनके सफेद और गुलाबी रंग पालम घाटी को एक विशेष सुंदरता प्रदान करते हैं। जंगली नाशपाती के पेड़ बहुतायत में हैं, जो चैत

(मार्च-अप्रैल) के दौरान सफेद फूलों से ढक जाते हैं। पालम घाटी सफेद वस्त्र पहने एक सुंदर लड़की की तरह दिखती है।

जंगली गुलाब की झाड़ियों के गुलाबी और सफेद फूलों को निहारना मुझे असीम आनंद देता है। खेतों के किनारे लगी कई झाड़ियाँ इन गुलाबों से सुशोभित हैं। सफेद कैंथा के फूल तो और भी अधिक प्रसन्न करते हैं। सफेद रंग शांति का प्रतीक है, ठीक वैसे ही जैसे गुलाबी रंग मनुष्यों के बीच प्रेम का प्रतीक है। यह आनंद की भावना सभी जीवित प्राणियों को आशीर्वाद देती है, जिनमें जानवर, पक्षी, पेड़, फूल, मछलियाँ और मनुष्य सभी शामिल हैं। यह आनंद की भावना बहती नदी के समान है - जैसे हमारे शरीर को पोषण की आवश्यकता होती है, वैसे ही यह आनंद की भावना प्रकृति की सुंदरता से पोषित होती है।

कुछ चरवाहों को गुलाब तोड़ते देख मुझे बहुत दुख हुआ। जापानी लोग हमसे कहीं अधिक समझदार हैं, वे अपने देश में उगने वाले फूलों और अन्य वनस्पतियों से प्रेम करते हैं। कहा जाता है कि एक जापानी लड़की अपने घर के पास के कुएँ से पानी लेने गई। उसने देखा कि कुएँ पर चमेली (अश्क पेचा) की एक लता लिपटी हुई थी और उस पर आसमानी नीले रंग का फूल खिला हुआ था। उसे लता की लता और उस पर खिला फूल इतना भा गया कि वह कुएँ से पानी नहीं ले सकी; उसने अपनी पड़ोसी से पानी माँगा।

कोमियो नाम की एक जापानी रानी के बारे में भी इसी तरह की एक कहानी प्रसिद्ध है। प्रार्थना के समय, कोमियो प्रार्थना के लिए कुछ फूल तोड़ने के लिए फूलों के बगीचे में गईं। फूल इतने सुंदर थे कि वे उन्हें तोड़ नहीं सकीं और इसके बजाय उन्होंने कहा, "यदि मैं इन फूलों को तोड़ूँगी, तो ये मेरे हाथों से अपवित्र हो जाएँगे। मैं इन फूलों को महात्मा बुद्ध की सेवा में समर्पित करती हूँ।"

(पृष्ठ 246)

बाशो एक जापानी संत-कवि और प्रकृति प्रेमी थे। जब चेरी के पेड़ों पर हल्के गुलाबी फूल खिलते हैं, तो जापानी लोग इन फूलों से लदे पेड़ों के नीचे बैठकर इस सुंदरता का आनंद मनाते हैं। ये चेरी के फूल इतने नाजुक होते हैं कि हल्की हवा या तेज आवाज़ से भी झड़ जाते हैं। भिक्षु बाशो टहलते हुए घंटी बजा रहे थे। चेरी के पेड़ों के पास से गुजरते हुए उन्होंने घंटी बजाना बंद कर दिया ताकि फूल न गिरें।

फागुन (फरवरी-मार्च) के महीने में, मैंने कैंथा के पेड़ से कबूतरों की घूंघट की आवाज़ सुनी; मुझे लगा कि ये पक्षी फूलों के बारे में चहचहा रहे होंगे। ओस से भीगे कैंथा के सफेद फूल, आँसुओं की बूँदों से जगमगाते तारों जैसे लग रहे थे। बहुत से लोग पूछते हैं, फूलों का क्या उपयोग है? फूल न केवल फल और भोजन में बदलते हैं, बल्कि फूलों के कारण ही हम वनवासियों से सभ्य मनुष्य बने हैं।
लगभग पाँच-छह लाख वर्ष पूर्व, जब वनमानुष की सहेली ने फूलों से लदे चंबा वृक्ष को देखा, तो उसे लगा कि वह भी इस वृक्ष की सुंदरता का आनंद ले सकती है। इसलिए उसने कुछ फूल तोड़कर अपने बालों में लगा लिए। उसकी सहेली ने उसकी प्रशंसा की और उसी दिन से वे सभ्यता के पथ पर चल पड़े। आज भी जब हम अपनी कोमल भावनाओं को व्यक्त करना चाहते हैं, तो फूलों के माध्यम से करते हैं। यदि हम ईश्वर के प्रति अपना प्रेम प्रकट करना चाहते हैं, तो उन्हें फूल अर्पित करते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
गाँव के बाहरी इलाकों में बिखरे हुए घर दिखाई देते हैं। अधिकांश किसान अपने खेतों के पास रहना चाहते हैं और अपनी झोपड़ियों के लिए ऐसी जगह चुनते हैं जहाँ उन्हें पर्याप्त धूप और बारिश से बचाव मिल सके। राजपूतों के घर दूसरों के घरों से आसानी से अलग पहचाने जा सकते हैं। राजपूत विशेष स्थान चुनते हैं ताकि उनकी महिलाएं पर्दा प्रथा में रह सकें। पुराने समय में, राजपूत पहाड़ियों की चोटियों पर बने घरों में खुद को सुरक्षित मानते थे; इन घरों तक पहुँचने के लिए लंबी, घुमावदार और संकरी पत्थर की सीढ़ियाँ ही एकमात्र रास्ता थीं। कुछ बहुत संकरे स्थानों पर तो घोड़े भी वहाँ से नहीं गुजर सकते थे।

(पृष्ठ 247)
गांव के बीचोंबीच पत्थरों से बनी एक बावड़ी है। इस बावड़ी के पत्थरों पर पुरुषों, महिलाओं और बैलों के चित्र बने हुए हैं। जब किसी विवाहित पुरुष की मृत्यु होती है, तो उसकी स्मृति में इस बावड़ी में एक पत्थर लगाया जाता है, जिस पर उसका चित्र होता है। यदि किसी अविवाहित पुरुष की मृत्यु होती है, तो पत्थर पर बैल का चित्र बनाया जाता है।

घिर्त (एक पहाड़ी जाति) के घर आमतौर पर बांस, कचनार और तून के पेड़ों के बीच छिपे रहते हैं। कभी-कभी इन घरों के पास पद्म और केले के पेड़ भी उगते हैं। ये घर पूरी घाटी में फैले हुए हैं। नागरोटा घाटी में थोड़ा नीचे जाने पर केले और आम के पेड़ भी दिखाई देते हैं। घाटी के उस पार, विशाल सेमल के पेड़ शान से खड़े हैं, जो गहरे लाल फूलों से लदे हुए हैं। इन पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं और शाखाओं पर केवल फूल ही रह जाते हैं।

मेरे मित्र परमेशी दास सालियाना गाँव में मेरा इंतज़ार कर रहे थे। गाँव से लगभग आधा मील दूर, हमने गद्दी समुदाय के लोगों को ढोल बजाते हुए हमारी ओर आते देखा। उस समूह में कई बच्चे थे। ऐसा लग रहा था मानो उनका पूरा गाँव ही आ गया हो। उन्होंने हमारे गले में गेंदे के फूलों की मालाएँ पहनाईं। नरसिंघा और टूटनी वाद्य बजाते हुए वे हमें उस विद्यालय की ओर ले गए जहाँ पालम के विद्वान और सज्जन लोग एकत्रित थे। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कांगड़ा कला को संरक्षित करने की हमारी इच्छा के लिए मेरी और आर्चर की प्रशंसा की। इन सरल, ईमानदार लोगों द्वारा हम पर बरसाए गए इस प्रेम और प्रशंसा से हमें बहुत प्रसन्नता हुई। जब हमें पता चला कि ये सज्जन लोग जानते हैं कि कांगड़ा कला में मेरी रुचि केवल औपचारिक उद्देश्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लोकगीतों और पहाड़ी संस्कृतियों पर शोध तक भी फैली हुई है, तो हमें सुखद आश्चर्य हुआ। एक शोधकर्ता और लेखक के लिए इससे अधिक आनंद और क्या हो सकता है?

सालियाना, एंड्रेटा, अजोगर, परिहाल, जंदपुरी और पापरोला जैसे ये सभी गाँव प्राकृतिक सौंदर्य के उदाहरण हैं। सालियाना के पास एक बगीचा है जिसके चारों ओर कई दुकानें और घर स्थित हैं।

(पृष्ठ 248)

इस उद्यान में हर साल बैसाख के महीने में एक मेला लगता है; दुकानदार मिठाई, चूड़ियाँ, तांबे के बर्तन, मिट्टी के बर्तन और अन्य सामान बेचने के लिए इस मेले में भाग लेते हैं। पालम घाटी के ब्राह्मणों, राजपूतों और ग़र्टों के अलावा, गद्दी समुदाय के पुरुष और महिलाएं भी इस मेले में शामिल होते हैं। ये लोग धौलाधार के गढ़ेरण मैदानों से आते हैं। वे मेले में रौनक और रंग भर देते हैं; वे नगाड़े की थाप पर नाचते-गाते हैं। चांदी के आभूषणों से लदे गद्दी लोग अपने पुरुषों को नाचते हुए देखते हैं। मेला समाप्त

होने पर यह स्थान सुनसान हो जाता है, तब यहाँ केवल कुछ काली गायें ही चरती हुई दिखाई देती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 36

एंड्रेटा

नोराह और शोभा सिंह

(पृष्ठ 249)

‘Bhinni Rainiyen Chamkan Taare’209

सालियाना से आंद्रेटा जाते समय हमें एक शादी का जुलूस मिला। आगे नरसिंघा वादक, उनके पीछे ढोल वादक और उनके पीछे सजे-धजे दूल्हे-बहू के जोड़े खुशी से चल रहे थे। मैंने दूल्हे और उसके साथियों को एक चिकने पत्थर पर बिठाकर उनकी तस्वीर खींची। बातचीत के दौरान जब उन्हें पता चला कि हम कौन हैं, तो उन्होंने हमें भी जुलूस के साथ दोपहर का भोजन करने का निमंत्रण दिया। हमने बहाने बनाकर इस निमंत्रण को ठुकराने की कोशिश की, लेकिन तभी दुल्हन का जुलूस भी आ गया। पता चला कि वे मेरे परिचित थे और उन्होंने भी हमें अपने विवाह भोज में शामिल होने का न्योता दिया। हमें पहले से ही काफी भूख लगी थी, इसलिए हमने शादी के भोज का भरपूर आनंद लिया। छतों पर बैठकर महिलाओं के विवाह गीत सुनना भी बहुत सुखद था। पंजाब के ग्रामीण किसानों के स्नेह और आतिथ्य को देखकर मुझे यूरोप का अपना अनुभव याद आ जाता है। हम पश्चिमी देशों के लोगों से कितने अलग हैं! मुझे याद है कि इंग्लैंड में कोई मुफ्त में एक गिलास पानी भी नहीं देता, और हमारे पंजाबी किसान कितने उदार हृदय के हैं। यदि किसी के पास दूसरों से थोड़ा अधिक धन होता है, तो उसकी एकमात्र इच्छा होती है कि वह मेहमानों की और भी अधिक स्नेहपूर्वक सेवा करे। मैंने देखा कि हमारे और पश्चिमी लोगों के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि हम उदार हृदय वाले लोग हैं और हम एक-दूसरे के साथ अपने संसाधनों को

साझा करना पसंद करते हैं। लेकिन ये पश्चिमी लोग पूरी तरह से व्यक्तिवादी हैं; वे पिता और पुत्र, तथा माता और पुत्री के लिए अलग-अलग और प्रतिस्पर्धी खाते रखते हैं। जहाँ भी आप देखें, केवल 'मैं, मुझे, मेरा' की ही आवाज़ सुनाई देती है।

(पृष्ठ 250)
यह पश्चिम की सबसे बड़ी बीमारी है, और यही उन्हें विनाश की ओर धकेल रही है। विज्ञान ने कई सुख-सुविधाएँ तो दी हैं, लेकिन इसने मानव हृदय का आकार और भी कम कर दिया है। यही कारण है कि पश्चिमी देशों में इतनी बेचैनी है; उनकी संस्कृतियों में खुश और संतुष्ट लोग बहुत कम देखने को मिलते हैं।
मैं अक्सर सोचता हूँ कि स्वार्थ की यह बीमारी केवल पश्चिमी संस्कृतियों को ही प्रभावित नहीं करती, बल्कि हमारे बड़े शहरों में रहने वाले लोगों में भी देखी जा सकती है। मुझे याद है जब मैं 1925 में लाहौर के मिशन कॉलेज में पढ़ रहा था और उसके न्यूटन हॉस्टल में रह रहा था, तब मैंने अपने एक लाहौरी सहपाठी को भोजन कराया था। मैंने उसे मटन और घी से लथपथ प्रसाद, यानी मांह दी दाल खिलाई थी। उसने भोजन का आनंद लिया। कुछ दिनों बाद वह मुझसे मिला और बोला, “प्रिय मोहिंदर, चिंता मत करो। मैंने तुम्हारा खाना खा लिया है; मैं तुम्हें भी अपने घर भोजन पर आमंत्रित करूँगा।” मुझे याद भी नहीं था कि मैंने किसी को एहसान के तौर पर भोजन कराया था। बदले में मुझे भोजन कराने की क्या ज़रूरत थी? मुझे उसकी बात बहुत अजीब लगी। सच्चाई यह है कि हमारे गाँवों के लोग, हमारे किसान, मिट्टी के पुत्र हैं, वे प्रकृति से गहराई से जुड़े हुए हैं, और धरती की उदारता उनके भीतर समाई हुई है।

209 ‘अंधेरी रातों में तारे टिमटिमाते हैं’।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। रक्त। इसीलिए वे मेहमानों और दोस्तों का स्वागत प्रसन्न चेहरों से करते हैं और यदि कोई मित्र उनके साथ भोजन साझा करता है तो उन्हें खुशी होती है।
एक छोटी पहाड़ी चढ़ने के बाद, हम फिर से एक और पहाड़ी पर चढ़ने लगे। कुछ चाय बागानों को पार करने के बाद, अंद्रेत्ता नाम का एक गाँव दिखाई देने लगा, जो कैंथा के

पेड़ों के कई खेतों से सजा हुआ था। सफेद और गुलाबी फूलों से लदे कैंथा और पद्म के पेड़ चेत-बैसाख के महीनों में वसंत ऋतु में खिल उठते हैं।
एंड्रेटा गाँव एक नया बसा हुआ गाँव है, और इसके झरनों का पानी बहुत ठंडा है। यही कारण है कि एकांत पसंद करने वाले और कलाकार यहाँ आकर बस गए हैं। नोरा रिचर्ड्स पिछले बीस वर्षों से यहीं रह रही हैं। यहाँ नोरा का एक आश्रम है जिसका नाम 'वुडलैंड एस्टेट' है; यह एस्टेट 15 एकड़ में फैला हुआ है। अब यह आश्रम गाँव का एक अभिन्न अंग बन गया है। नोरा, प्रोफेसर रिचर्ड्स की विधवा हैं, जो लाहौर के दयाल सिंह कॉलेज में पढ़ाते थे। सड़क के किनारे बसे बानूरी गाँव में कुछ समय रहने के बाद, नोरा ने रचनात्मक अध्ययन, शोध और जीवन के अनूठे अनुभव प्राप्त करने के लिए एंड्रेटा गाँव को चुना। वह अमेरिकी कवि वॉल्ट व्हिटमैन की प्रशंसक हैं। वह उनकी कविता संग्रह 'लीव्स ऑफ ग्रास' को अपना धर्मग्रंथ मानती हैं। शुरुआत में, नोरा ग्रामीण जीवन के कार्यों में लगी रहीं। हालांकि, कुछ समय बाद, उन्होंने नाटकीय प्रस्तुतियों के माध्यम से गाँव के लोगों को शिक्षा देना शुरू कर दिया।

(पृष्ठ 251)
उन्होंने हमारे ग्रामीण जीवन पर कई नाटक लिखे हैं; इन्हें गाँव के विद्यालयों के नाटक शिक्षकों द्वारा नियमित रूप से मंचित किया जाता था। बैनी प्रसाद नोरा के बहुत बड़े प्रशंसक हैं और उनके साथ रहते हैं। नोरा ने एक छोटा सा खुला रंगमंच भी बनवाया है, जिसके मंचन का काम पास की ही एक साधारण झोपड़ी में होता है।
धौलाधार की अनूठी सुंदरता का पूरा आनंद एंड्रेटा से लिया जा सकता है। पहाड़ एक दीवार की तरह खड़े हैं। बर्फीली चोटियाँ प्रकाश की ऐसी किरणें प्रतिबिंबित करती हैं जो आँखों को चकाचौंध कर देती हैं। बर्फीली नदियाँ इन बर्फीली चोटियों से निकलती हैं और पारे की तरह पहाड़ों से नीचे बहती हैं। दोपहर में बादल छा जाते हैं और सुंदरता के इन सभी तत्वों को सामंजस्य बिठा देते हैं। सूर्य और बादलों का लुका-छिपी का खेल एक अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत करता है। प्रकृति का यह नाट्य-नाट्य धौलाधार पर दिन भर चलता रहता है और सूर्यास्त के बाद ही समाप्त होता है। जब सूर्य इनके पीछे अस्त होता है, तो पर्वत चोटियाँ पिघले हुए सोने की तरह दिखती हैं। फिर आकाश का रंग हल्का गुलाबी या भूरा हो जाता है। रात में, ऊबड़-खाबड़ पर्वत चोटियाँ चाँदनी में कोमलता का आभास देती हैं और धौलाधार की तलहटी में सोई हुई पालम घाटी

किसी स्वप्नलोक की सुंदर स्त्री की तरह प्रतीत होती है।
नोरा के नाटकों में धौलाधार का ज़िक्र आता है। एक किसान ने घाटी के उस पार वुडलैंड एस्टेट के सामने अपनी झोपड़ी बना रखी है, जिससे घाटी का नज़ारा बिगड़ जाता है। नोरा ने यूकेलिप्टस के पेड़ों की एक कतार लगाई है जो किसान की झोपड़ी को पूरी तरह ढक लेती है। आजकल नोरा अस्सी वर्ष की हैं और उन्हें उम्मीद है कि वे यूकेलिप्टस के इन पौधों को बढ़ते हुए और घनी पत्तियों से किसान की झोपड़ी को पूरी तरह ढकते हुए देख सकेंगी।
नोराह दो मंजिला मकान में रहती है जिसकी छत स्लेट की बनी है। उसने यह मकान वास्तुकला के अपने विशिष्ट मानदंडों के अनुसार बनवाया है। अंदर और बाहर दोनों तरफ की दीवारें ठंडी मिट्टी से ढकी हैं, जिससे वे साफ और चिकनी दिखती हैं। उसने बाहर पेड़ों के नीचे बैठने की व्यवस्था की है, जहां आश्रम के लोग शाम की चाय के लिए इकट्ठा होते हैं। निचली मंजिल पर एक कमरा है जिसमें कई मिट्टी के बर्तन और घड़े रखे हैं जिनमें गेहूं और चावल रखे हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। संरक्षित। दीवारों पर पत्तों से बनी छतरियां लटकी हुई हैं। वह गर्मियों में निचली मंजिल के कमरों में रहती है, ये कमरे एक दरवाजे से बाहर बगीचे में खुलते हैं।

(पृष्ठ 252)
इस कमरे का दरवाज़ा और बाहर बाँस की झोपड़ी विस्टेरिया की लताओं से ढकी हुई है। गर्मियों में इन लताओं पर हेज़ल के फूलों के गुच्छे खिलते हैं। बगीचे में अमरूद और शहतूत के पौधे हैं। इस बगीचे में गुलाब की झाड़ियाँ और अन्य जंगली पौधे भी हैं। इन फूलों का मनमोहक और शांत प्रभाव होता है। सर्दियों में नोरा ऊपरी मंज़िल के कमरे में रहती है। उसने इस कमरे में अपने उपयोग के लिए कुछ चीज़ें रखी हैं। आमतौर पर वह बिस्तर पर लेटी रहती है। कमज़ोर और बूढ़ी नोरा - ऐसा लगता है मानो वह पहाड़ों की कोई आत्मा हो। लेकिन जब वह उठती है और बात करना शुरू करती है, तो उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक आ जाती है, और उसके चेहरे पर बिखरे रेशमी सफेद बाल बहुत प्यारे लगते हैं। वह अक्सर संस्कृति की शक्ति के सिद्धांतों पर बहस

करती है, और सत्ता के लालच में हत्या करने वाली दुनिया में संस्कृति की प्रशंसा करती है। वह जहाँ भी बैठती है, उसके पीछे हमेशा पीले सूरजमुखी से भरा एक नीला फूलदान रखा रहता है। यहाँ उसके एक साथी जय दयाल भी उसके साथ रहते हैं। जय दयाल कॉलेज में पढ़ाते थे और उन्हें नाटक करने का भी बहुत शौक है। जब नोरा को कुछ देर आराम करने के बाद जय दयाल की मदद की ज़रूरत होती है, तो वह एक सींग बजाकर उसे पुकारती है और कहती है, "जय दयाल, जय दयाल!"
नोरा का पढ़ने का कमरा बालकनी के एक तरफ है। इस कमरे में बोरियों के पर्दे लगे हैं। फर्श पर चटाइयाँ बिछी हैं और कमरे में सिर्फ एक कुर्सी और एक मेज है।
रोशनदान में कांच की जगह खादी का कपड़ा लगा है। बोरियों के पर्दे मिट्टी की दीवारों से खूबसूरती से मेल खाते हैं। बहुत से लोगों को कच्चे मिट्टी के घर पसंद नहीं आते। अगर कोई कच्चे घरों की खूबसूरती देखना चाहता है, तो उसे एंड्रेटा में नोरा का घर देखना चाहिए। मिट्टी से सँवारे और चिकने किए गए साफ-सुथरे घर धरती की संतान जैसे लगते हैं। यहाँ पकी हुई ईंटों की कुरूपता कहीं नहीं दिखती।
नोरा ने अपने घर के चारों ओर कई अन्य इमारतें बनवाई हैं। एक तरफ बादामी निवास है। इस घर का नाम एक वफादार घोड़े के नाम पर रखा गया है। इस घर में वे शिक्षक रहते हैं जो यहां थोड़े समय के लिए नाटक और संस्कृति पाठ्यक्रम पढ़ाने आते हैं। दूसरी तरफ एक और झोपड़ी है, जिसमें हाल ही में एक आयरिश लेखक और उनकी पत्नी कुछ समय के लिए रहे थे। पहाड़ी के नीचे बेदी परिवार की एक झोपड़ी है। इसे बी.पी.एल. बेदी और फरीदा बेदी ने बनवाया था।

(पृष्ठ 253)
लेकिन अब यह ढह चुका है। बेदी परिवार के चले जाने के बाद, यह झोपड़ी नोरा के लिए परेशानी का बड़ा कारण बन गई। छत को सहारा देने वाले खंभे को गिरने से बचाने के लिए नोरा ने एक और कमरा बनवाया, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हुआ। ठीक इसके बगल में आश्रम की चार दीवारों में एक छेद है, जिससे गांव के जानवर अक्सर अंदर घुस जाते हैं।
पंजाब के प्रसिद्ध कलाकार शोभा सिंह ने भी एंड्रेटा को अपना घर बना लिया और वहीं अपनी कुटिया बसाई। पंजाब में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो शोभा सिंह को न जानता हो। गुरु नानक की उनकी पेंटिंग, जिसके नीचे 'नाम खुमारी नानक' लिखा है,

हर सिख घर में मौजूद है। उनकी प्रसिद्ध सोहनी-महिवाल पेंटिंग की प्रतियां हर कला प्रेमी के पास मिल सकती हैं।

210 सोहनी-महिवाल एक प्रसिद्ध पंजाबी प्रेम कथा है, जिसमें प्रेमी एक त्रासदी से घिर जाते हैं और सामाजिक दबाव उन्हें पहले अलग कर देते हैं। जब सोहनी चुपके से अपने प्रेमी से मिलने के लिए चिनाब नदी पार करने लगती है, तो उसकी भाभी को पता चल जाता है। वह उफनती नदी पर तैरने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मिट्टी के बर्तन को बदल देती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। शोभा सिंह पहाड़ों के प्रति अपने प्रेम और कांगड़ा के एकांत और शांति के कारण एंड्रेटा की ओर आकर्षित हुए। वे दिन भर अपने काम में लीन रहते हैं। वे पहाड़ी महिलाओं को उनकी विशिष्ट सुंदरता, लज्जा और मासूमियत के साथ चित्रित करते हैं। वहाँ उन्होंने मेरी एक प्रतिमा भी बनाई है, जिसे उन्होंने एक कांच के बक्से में रखा है। चूंकि यह प्रतिमा भूरे सीमेंट से बनी है, इसलिए कई भोले-भाले पहाड़ी लोग इसे भगवान कृष्ण की प्रतिमा समझकर फूल चढ़ाते हैं। शोभा सिंह ने अपनी दुकान के सामने एक गोलाकार तालाब बनवाया है और उसमें एक लंबा बांस का डंडा लगाया है। वे स्वतंत्रता दिवस पर इस डंडे पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। शोभा सिंह ने एंड्रेटा में बहुत आनंद और उत्सव का माहौल भर दिया है; उनका घर कला प्रेमियों के लिए एक क्लब की तरह काम करता है। न केवल शिक्षित लोग, बल्कि साधारण किसान भी बड़ी संख्या में उनके चित्र देखने आते हैं।
शोभा सिंह ने कांगड़ा की सुंदर महिलाओं के बेहद खूबसूरत दृश्य चित्रित किए हैं। एक नवविवाहित महिला कलीरा पहने हुए अपनी सजी हुई पालकी का पर्दा उठाकर बाहर देख रही है। उसके सामने एक पालकी रखी है; उस पर पंख फैलाए एक पक्षी नाच रहा है, मानो वह उससे प्रेम कर बैठा हो और उसे रिझाने की कोशिश कर रहा हो। यह चित्र कांगड़ा के लोकगीत "भाभी कुकू किहन बोलदा" की याद दिलाता है।211 शोभा सिंह द्वारा चित्रित कांगड़ा की सुंदर महिलाओं के ये चित्र भारतीय कला में विशेष स्थान रखते हैं।
हमने एंड्रेटा की सुंदरता और शांति का आनंद लिया। वहाँ, मैं अपने मित्र बसंत सिंह के

घर के ऊपरी बरामदे में बैठ गया और धौलाधार पर्वतमाला को निहारता रहा। चोटियों के ऊपर बादलों का लुका-छिपी खेलना और प्रकाश व छाया का अद्भुत मेल मनमोहक था।

(पृष्ठ 254)
आस-पास के चारागाहों में चरती हुई काली गायों के झुंड और भेड़ों के समूह का रमणीय दृश्य भी आंखों को बहुत भाता था।
बैनी प्रसाद ने हमें अपने घर पर रात के खाने पर आमंत्रित किया। घरों के सामने बांस के झुंड और पीछे केले के पेड़ लगाना पहाड़ी घरों में एक आम रिवाज है। मैंने उनसे पूछा कि पिछवाड़े में केले के पेड़ क्यों लगाए जाते हैं। उन्होंने बताया कि जब हवा चलती है, तो केले के पेड़ों के पत्ते बाहर की ओर झुक जाते हैं और हवा से कहते हैं, "कृपया चले जाओ।" लेकिन, कांगड़ा के निवासी अपने मेहमानों का बहुत स्वागत करते हैं, इसलिए वे आगे बांस और पीछे केले के पेड़ लगाते हैं। बांस की शाखाएँ अंदर की ओर झुक जाती हैं और हवा को आमंत्रित करती हैं, "कृपया अंदर आओ।" बांस की बाड़ पार करके हम मुख्य कमरे में दाखिल हुए और हाथ धोने के बाद हमने खाना शुरू किया। भटूरे, मांह दी दाल, चावल और मिश्रित ढो का अचार स्वादिष्ट थे, साथ में आम की सब्जी (मानी) भी थी। विज्ञान के नियमों के अनुसार, खट्टी चटनी पहले खाना उचित है, क्योंकि खट्टा स्वाद स्वाद कलियों को साफ करता है जिससे अन्य स्वादों को बेहतर ढंग से ग्रहण किया जा सकता है।
इससे मुझे राजा प्रकाश चंद और संसार चंद की कहानी याद आती है। एक बार, राजा संसार चंद ने गुलेर के राजा प्रकाश चंद को नादौन में आमंत्रित किया और उनके भोजन का प्रबंध किया। राजा प्रकाश चंद के रसोइये उनके साथ थे, और वे नहीं चाहते थे कि राजा संसार चंद के रसोइयों को उनसे अधिक प्रशंसा मिले। उन्होंने प्रकाश चंद को भोजन कराया...

एक कच्चा बर्तन। सोहनी डूब जाती है। माहीवाल उसे बचाने के लिए उसके पीछे कूदता है और वह भी डूब जाता है। सिंह की पेंटिंग में दोनों प्रेमी, जिनके कपड़े चिनाब नदी के पानी में भीगे हुए हैं, अपनी दुखद मृत्यु से पहले एक-दूसरे को गले लगाते हुए दिखाए गए हैं। मूल पेंटिंग अमर महल संग्रहालय और पुस्तकालय, जम्मू में प्रदर्शित

है। साथ में दिए गए कैप्शन के अनुसार, कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने सोभा सिंह को चित्र के अधिकार लौटा दिए थे, ताकि वे उनकी प्रतियां बनाकर बेच सकें। 211 “भाभी, कोयल क्या चहचहा रही है?”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। महल पूडे212 ने भोजन शुरू करने से पहले कहा था कि राजा को बाकी सभी व्यंजन बेस्वाद लगे। जब संसार चंद के रसोइयों को इस बात का पता चला, तो उन्होंने राजा को मानी खिलाई, और इस तरह राजा का स्वाद साफ होने के बाद उन्होंने सभी व्यंजनों का स्वाद ठीक से चखा।

जब प्रकाश चंद को संसार चंद के रसोइयों की इस चाल का पता चला, तो उन्होंने उन्हें पुरस्कृत किया।

कांगड़ा के राजाओं के बारे में बात करते-करते हमारी चर्चा जंगली जानवरों की ओर मुड़ गई। बैनी प्रसाद ने बताया कि ये जानवर अक्सर रात में घरों में घुस जाते हैं। पिछले साल एक बाघ रात के अंधेरे में उनके पड़ोसी के घर में घुस गया था। लेकिन उनका पड़ोसी बड़ा बहादुर था। उसने दरवाजा बंद कर लिया और अपने भाई के साथ मिलकर लाठियों और कुल्हाड़ियों से बाघ को सबक सिखाया।

वहां कुछ दिन रहने के बाद, हमने कुछ अन्य गांवों का भी दौरा करने का फैसला किया, और इसलिए हम वहां से चले गए।

बाजार पार करने के बाद हम एंड्रेटा गांव से निकल गए।

(पृष्ठ 255)

एंड्रेटा के पास बांस के जंगल से होकर एक नदी बहती है; इसके किनारे एक शिव मंदिर है। इसके बाद ट्रेहल गांव आता है। इस गांव की खासियत यह है कि यहां धान की भूसी पानी से चलने वाली चक्कियों से निकाली जाती है। इस क्षेत्र के गांवों में घने जंगल हैं जिनके पत्ते तांबे जैसे हैं, जो इस क्षेत्र को भव्यता प्रदान करते हैं। यहां अनगिनत बांस के झुंड भी देखे जा सकते हैं। आवा और पुन्न घाटियों के किनारों पर सेमल के पेड़ हैं, जिन पर लाल फूल खिलते हैं। इन सेमल के पेड़ों के नीचे अक्सर पत्थर की शिलाएं रखी जाती हैं, जिन पर लोग सिंदूर मलकर उनकी पूजा करते हैं।

212 या मालपुआ, एक मीठा पैनकेक जो चीनी की चाशनी में डूबा होता है, और कभी-कभी इलायची से सुगंधित होता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 37

Baijnath

(पृष्ठ 256)
Shiva mere Mahadeva ji naache mukut Shiva, my great God dances with scattered

खिलाए लटें

रानी गोरी गोरी गंगा रानी मुकुट छुपाये मेरी गोरी रानी गंगा उसकी जटाओं से छलकती है

सूद की दुकानों से भरे बाज़ार से गुज़रने के बाद, हम बलूत के पेड़ों के जंगल से होते हुए एंड्रेटा से बाहर निकले। फिर हमें एक तेज़ बहती नदी दिखाई दी।
इस नदी के किनारे एक शिव मंदिर है। इसे पार करने के बाद त्रेहाल गांव आता है। इस गांव में धान की भूसी को अलग करने के लिए जलविद्युत से चलने वाली मिलें हैं। तांबे की तरह चमकते पत्तों वाले तून के पेड़, कोमल बांस के पेड़ और केले के पेड़ों के समूह इस गांव को एक विशेष सुंदरता प्रदान करते हैं।
कांगड़ा कला की तरह ही, इस क्षेत्र के पेड़-पौधे और झाड़ियाँ विरोधाभासों का अद्भुत संगम हैं, और यही संतुलन इस घाटी की सुंदरता का कारण है। कांगड़ा कला में हिंदू और मुगल शैलियों का मिश्रण है, ठीक उसी प्रकार, कांगड़ा की वनस्पति गर्म और ठंडे देशों की वनस्पति का प्रतिनिधित्व करती है, जो यूरोप और एशिया का संगम है। यहाँ दोनों प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं, यानी ठंडे देशों में पाए जाने वाले पेड़ और गर्म जलवायु में पाए जाने वाले पेड़। बांस, पीपल, आम और ओक के पेड़ चेरी के पेड़ों और जंगली गुलाबों के साथ उगते हैं। आवा और पुन्न की घाटियों के किनारों पर लाल

फूलों वाले सेमल के पेड़ उगते हैं। इन सेमल के पेड़ों के तने खुरदुरे सीढ़ियों जैसे बड़े चबूतरे बनाते हैं। इनमें से कुछ चबूतरों को सिंदूर से रंगा गया है और उन्हें देवी-देवताओं की तरह पूजा जाता है।

(पृष्ठ 257)
एक गहरी खाई पार करने के बाद हम पापरोला गाँव पहुँचे। यह गाँव मुख्य सड़क के ठीक बगल में स्थित है; इसके बाज़ार में काफी चहल-पहल रहती है। इस बाज़ार में कांगड़ा घाटी की संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। अब यहाँ बिजली भी आ गई है।
पापरोला से बैजनाथ तक चढ़ाई है। इसके ठीक बगल में स्थित बिन्नू नामक घाटी से होकर गुजरना पड़ता है।
रास्ते पर चलते हुए, प्राचीन आर्य इसे 'बिंदुका' कहते थे। बिन्नू और बैजनाथ के मंदिरों को पहचानते ही हमें एहसास हुआ कि हम पुराने शहर में प्रवेश कर रहे हैं। बाईं ओर एक डाक बंगला है, जहाँ से बिन्नू घाटी दिखाई देती है। यहाँ साल भर तेज़, ठंडी और ठंडी हवा चलती रहती है। वर्तमान डाक बंगले की जगह पर कभी बैजनाथ के राणा का किला हुआ करता था। उन्होंने त्रिगर्त (कांगड़ा) के राजा से पराजय स्वीकार की थी। लगभग सौ साल पहले, इस क्षेत्र में उनका महल, मंदिर और तालाब स्थित थे, लेकिन आज केवल उनके अवशेष ही मिलते हैं। मिट्टी में छोटे-छोटे तांबे के सिक्के भी मिल सकते हैं।
बैजनाथ का पानी पाचन तंत्र के लिए अच्छा माना जाता है, और ऐसा कहा जाता है कि राजा संसार चंद यहीं से पीने का पानी लेते थे।
हमने बैजनाथ के बाहरी इलाके में एक विशाल मैदान में कुछ विचित्र देखा। कुछ युवतियाँ रोती हुई नदी की ओर जा रही थीं, जबकि कुछ लड़के नदी के किनारे खड़े थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। नदी उन्हें देख रही थी। अंततः, लड़कियों ने बड़ी मुश्किल से कुछ मूर्तियाँ नदी में फेंक दीं और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं। लड़के उनकी हरकतों पर हँस रहे थे। जब हमने इस विचित्र अनुष्ठान की उत्पत्ति के बारे में पूछा, तो हमें बताया

गया कि यह महिलाओं की अच्छे पति पाने की इच्छा से उत्पन्न हुआ है। पूरी दुनिया में महिलाएं अच्छे पति के लिए प्रार्थना करती हैं, और कांगड़ा घाटी की लड़कियां रल्ली की पूजा करके ऐसा करती हैं।

फागुन के आखिरी दिन, लड़कियाँ अपने घर में एक मूर्ति स्थापित करती हैं और उसकी पूजा शुरू करती हैं। लड़कियाँ पंद्रह दिनों तक एकत्रित होकर मूर्ति की पूजा करती हैं, और फिर बैसाख के पहले दिन रल्ली और शंकर का विवाह समारोह मनाती हैं। आधी लड़कियाँ रल्ली के परिवार का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि बाकी आधी शंकर का।

(पृष्ठ 258)

रल्ली और शंकर की मूर्तियों को विवाह की सभी रस्मों से गुज़ारा जाता है, जैसे कि लाली लगाना। एक ब्राह्मण पुजारी हवन करता है, और लड़कियाँ शंकर और रल्ली के सिर पर सरसों का तेल लगाती हैं। शंकर को दूल्हे के वस्त्र पहनाए जाते हैं, और फिर दोनों मूर्तियों को पालकी में रखकर नदी में ले जाया जाता है और फिर उसमें विसर्जित कर दिया जाता है।

यह अनोखी लेकिन रोचक प्रथा इस क्षेत्र के इतिहास से जुड़ी है। कहा जाता है कि एक बार एक ब्राह्मण ने अपनी बेटी रल्ली का विवाह शंकर नाम के एक युवक से किया। विवाह समारोह के बाद जब दुल्हन अपने बाल-पति और भाई बस्तु के साथ अपने नए घर जाने के लिए निकली, तो उसने नदी के किनारे पालकी रोक दी। फिर उसने अपने भाई बस्तु से कहा, “मेरी नियति में एक बालक से विवाह करना लिखा था, लेकिन मैं अब यह जीवन नहीं जीना चाहती। हालांकि, मैं चाहती हूं कि लड़कियां मेरी याद में तीन मूर्तियां बनाएं, एक मेरे लिए, एक शंकर के लिए और एक मेरे भाई बस्तु के लिए। लड़कियों को चेतर माह में इन मूर्तियों की पूजा करनी चाहिए; दोनों मूर्तियों का विवाह बैसाख माह के पहले दिन उसी तरह करना चाहिए जैसे मेरा विवाह हुआ था। विवाह के दो-तीन दिन बाद, इन मूर्तियों को पालकी में नदी में ले जाकर विसर्जित कर देना चाहिए। यह सब मेरी, मेरे भाई की याद में किया जाना चाहिए, और जो लड़कियां ऐसा करेंगी उन्हें बेमेल दूल्हे नहीं मिलेंगे।” यह कहकर रल्ली नदी में कूद गया और डूब गया। उस दिन से कांगड़ा जिले में हर कोई रल्ली, शंकर और वास्तु की पूजा करता है।

रल्ली अनुष्ठान देखने के बाद, हम बैजनाथ मंदिर गए। ब्यास घाटी का शायद सबसे

बेहतरीन ऐतिहासिक स्मारक बैजनाथ मंदिर है। यहाँ का सबसे बड़ा मंदिर होने के नाते, बैजनाथ मंदिर शिव से संबंधित आध्यात्मिक ज्ञान के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा लगता है कि इस कस्बे का नाम इसी मंदिर के नाम पर रखा गया था। इस कस्बे को पहले कीर ग्राम कहा जाता था। यहाँ शारदा लिपि में दो शिलालेख मिले हैं, जिन पर कीर ग्राम नाम अंकित है। ये लेख सुंदर काव्यात्मक संस्कृत में लिखे गए हैं। ये कविताएँ मंदिर के इतिहास का वर्णन करती हैं। दो स्थानीय व्यापारियों ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। ये हस्तलिखित कविताएँ हमें बताती हैं:

(पृष्ठ 259)
त्रिगार्ता में कीर ग्राम नाम का एक सुंदर गाँव है। इस गाँव की कई विशेषताएँ हैं। बिंदुका नदी पर्वत की गोद से निकलती है और चंचलता से गाँव से होकर बहती है, मानो कोई युवती अपनी यौवन अवस्था में सुंदर दिख रही हो। इस गाँव पर राजा लक्ष्मण का शासन था। यहाँ मनुका और अहुका नाम के दो भाई रहते थे। उनके पिता का नाम सिद्धा था। इन भाइयों ने अभी तक अपनी संपत्ति का बंटवारा नहीं किया था। दोनों भाई दयालु स्वभाव के थे। उन्होंने इस मंदिर का निर्माण करवाया। इसमें गंगा, यमुना और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। इस मंदिर का द्वार। इस मंदिर पर काम करने वाले राजमिस्त्रियों के प्रमुख, आशिका, सुशर्मन के निवासी थे। समना बोएका के पुत्र ने भी उनके साथ काम किया। इस शिव मंदिर का निर्माण इन कुशल राजमिस्त्रियों के नेतृत्व में हुआ था। यह मंदिर शामू के स्थापत्य सिद्धांतों के अनुसार बनाया गया था, और इसके द्वारों में स्थित मूर्तियाँ आज भी चमकती हैं। यह तथ्य रोचक है कि इस मंदिर का निर्माण करने वाले दोनों राजमिस्त्री कांगड़ा के निवासी थे।
बैजनाथ मंदिर की संरचना कुछ इस प्रकार है: 8 वर्ग फुट से अधिक क्षेत्रफल में एक पूजा-अर्चना का चबूतरा बना हुआ है, इसके पीछे का रहस्य किसी से साझा नहीं किया जाता। यह चबूतरा एक मंडप से घिरा हुआ है। इस मंडप की छत ढलानदार है। इस विशेष पूजा स्थल में 'वेदीयम' नामक एक लिंग स्थापित है। दोनों ओर खंभों से घिरे एक संकरे द्वार से इस स्थान में प्रवेश किया जा सकता है। मंडप की छत इन चार

खंभों पर टिकी हुई है। इन खंभों की बीम छत को नौ भागों में विभाजित करती हैं। छत पत्थर की बनी है। मंडप के सामने एक भव्य प्रवेश द्वार है। यह भी चार खंभों पर टिका हुआ है। ये साधारण ढंग से बने खंभे हैं, जो प्राचीन काल की स्थापत्य शैली की याद दिलाते हैं। इनका आधार वर्गाकार है, ऊपर दो बड़े वृत्त हैं जिनके बीच कुछ स्थान है - ये सभी प्राचीन वास्तुकला के उदाहरण हैं, लेकिन बाद में इन पर हिंदू शैली की सजावट की गई। मंडप की उत्तरी और दक्षिणी दीवारों पर बालकनियाँ हैं जिनमें खिड़कियाँ बनी हुई हैं। मंदिर के दोनों ओर रक्षा के लिए दो किलेबंदी की गई हैं। आजकल इन दीवारों में बने आले में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रखी जाती हैं। मंदिर की बाहरी दीवारें खूबसूरती से निर्मित हैं। इन्हें स्तंभों से सजाया गया है और स्तंभों के बीच की जगह को सूर्य देव जैसे देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुशोभित किया गया है।

(पृष्ठ 260)
सन् 1240 के नागरी लेखों में से एक में कहा गया है कि सूर्य देव की मूर्तियों में से एक वास्तव में भगवान महावीर की मूर्ति है। 213 इस मंदिर की छत नवनिर्मित प्रतीत होती है, और इस मंदिर के पुजारियों के अनुसार, इसकी मरम्मत राजा संसार चंद द्वितीय ने करवाई थी। सौभाग्य से यह मंदिर सन् 1905 के भूकंप में क्षतिग्रस्त होने से बच गया। उस भूकंप ने पास के सिद्धनाथ मंदिर को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया था।
बैजनाथ-जोगिंदर नगर क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता असाधारण है। बैजनाथ से थोड़ा ऊपर चढ़ने पर पालम घाटी की सुंदरता का सही मायने में आनंद लिया जा सकता है। धान के लहराते खेत, जिनमें किसानों की झोपड़ियाँ बिखरी हैं, असंख्य तूं और बाँस के पेड़, उत्तर में धौलाधार पर्वत, दक्षिण की ओर एंड्रेटा की ढलान और उत्तर-पश्चिम में कई पहाड़ियाँ मिलकर एक अविस्मरणीय दृश्य प्रस्तुत करते हैं।
यहां से आशापुरी मंदिर दिखाई देता है। यह मंदिर पहाड़ी लोगों के लिए मुश्किल समय में आशा की किरण का काम करता है। चीड़ के पेड़ों के जंगल से गुजरने के बाद हम एक खूबसूरत घाटी में पहुंचे। यह घाटी चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी हुई है। इसमें कोई गहरी खाई या गड्ढा नहीं है। पहाड़ियाँ धीरे-धीरे सड़क की ओर उतरती हैं; दक्षिण की ओर जंगल है और उत्तर की ओर धान के खेत; किसानों के घर ऐसे लगते हैं मानो सीढ़ियाँ चढ़ रहे हों।
उल्ल नदी के ऊपर फैले बिजली के तार इस रमणीय दृश्य को बिगाड़ रहे हैं। ऐसा

लगता है मानो आधुनिक जीवन की ये अनिवार्य बुराइयाँ इस घाटी की प्राकृतिक सुंदरता को नष्ट कर देंगी।
सड़क किनारे की दुकानें सजी-धजी हैं। दुकानदारों ने अपनी दुकानों के सामने सफेद गुलाब की लताएँ उगा रखी हैं; चाँदनी रात में फूल चमक रहे हैं।

213वें भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
दो मील आगे जाकर हमने एक गद्दी को अपनी भेड़ें चराते देखा। पास ही में भेड़ें चर रही थीं और वह चुंबक और पत्थर से आग जलाने की कोशिश कर रहा था। उसने पत्थर के चूल्हे में पानी गर्म किया और मोटे तांबे के गिलास में चाय डाली। हमें देखकर उसने कहा, "आइए, मेरे साथ चाय पीजिए।" मैंने उसके आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया और कहा, "आपका जीवन कितना सुखमय है, कोई चिंता नहीं। आप पशु चराते हैं, उनका दूध पीते हैं और शांति से रहते हैं।"

(पृष्ठ 261)
चाय की चुस्की लेते हुए उन्होंने जवाब दिया, “आपकी ज़िंदगी बेहतर है। आप गाड़ियों में घूमते हैं। आप हर दिन एक नई जगह जाते हैं। मेरी ज़िंदगी क्या है? मैं भालू की तरह पेड़ों के खोखले तनों में सोता हूँ। कभी-कभी मेरी भेड़ें खो जाती हैं, और कभी-कभी मुझे पहाड़ी शेरों का सामना करना पड़ता है।” मैंने उनसे पूछा, “आप रात में कहाँ सोते हैं?” उन्होंने एक पेड़ के खोखले तने की ओर इशारा करते हुए कहा, “वहाँ।”
बैजनाथ के ऊपर और धौलाधार पर्वतमाला की तलहटी में बीरह नाम का एक गाँव है। यह गाँव पाल राजपूतों की राजधानी हुआ करता था। इस गाँव के बाहर बलूत के पेड़ों का घना जंगल है और जंगल से होकर एक नदी बहती है। इस क्षेत्र के धनी चाय बागान मालिक पृथ्वीपाल यहीं रहते हैं। वे बहुत ही मेहमाननवाज हैं।
होली के दौरान बीरह के इस जंगल में एक मेला लगता है। धौलाधार से गद्दी और कनोट जनजाति के लोग आते हैं। वे दिन भर लुगड़ी पीते हैं और गाते-नाचते हैं। कुल्लू

के त्योहार की तरह ही, इस क्षेत्र के लोग भी अपने स्थानीय देवी-देवताओं की मूर्तियों को पालकियों में लेकर आते हैं। बीरह का त्योहार कुल्लू दशहरा जैसा लगता है। मेले में लोग जिस तरह के रंग-बिरंगे परिधान पहनते हैं, उसे देखकर मन मोह जाता है। स्थानीय महिलाओं के भारी आभूषण कांगड़ा के उन कलाकारों की याद दिलाते हैं जिन्होंने अपनी अनेकों चित्रों में इन महिलाओं की सुंदरता को चित्रित किया है। इस कला शैली को विकसित करके उन्होंने न केवल अपनी कला को निखारा, बल्कि अपनी कला के माध्यम से पहाड़ी सौंदर्य, कोमलता और प्रेम को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजो कर रखा। सजे-धजे पुरुष अपनी हंसी से हमारा मन मोह लेते हैं और हमें इस घाटी में बसने के लिए प्रेरित करते हैं।

कांगड़ा घाटी की मनमोहक सुंदरता का आनंद लेने और वहां के लोगों की खूबसूरती से रूबरू होने के बाद हमने अंबाला के लिए अपनी वापसी यात्रा शुरू की। मैंने अपने दरबारी क्लर्क, हरियाणा के एक सीधे-सादे जाट से, जो हमारे साथ इस यात्रा पर आए थे, पूछा, “चौधरी साहब, आपको पहाड़ और जंगल कैसे लगे?” उन्होंने बस औपचारिक जवाब दिया, “बहुत सुंदर, जनाब।” लेकिन, जब हम शाम को पालमपुर पहुंचे, तो मैंने अपने मित्र और सहायक परमेशी दास से चौधरी साहब के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि चौधरी साहब ने कहा था, “भगवान का शुक्र है कि मैं जीवित हूँ!” जब हम बर्फ से ढकी चोटियों और घने जंगलों को देख रहे थे, तब चौधरी का ध्यान गहरी घाटियों और खतरनाक मोड़ों पर केंद्रित था।

(पृष्ठ 262)

दुनिया में प्रकृति प्रेमी बहुत कम हैं। कांगड़ा घाटी की सुंदरता का आनंद केवल प्रकृति का सच्चा प्रेमी ही ले सकता है।

मेरे गांव के एक बुजुर्ग व्यक्ति कहा करते थे कि गिद्धों का एक समूह एक शहर के ऊपर से उड़ा और उन्हें केवल लाशें ही दिखाई दीं, जलपक्षियों का एक झुंड पार हुआ और उन्हें केवल जल निकाय ही दिखाई दिए, और तितलियों और मधुमक्खियों को केवल सुंदर फूल ही दिखाई दिए।

इंसान को वही चीजें दिखाई देती हैं जो उसके स्वभाव में होती हैं। मेरे दोस्त चौधरी को गहरी घाटियों से डर लग गया, लेकिन मैंने इस यात्रा का भरपूर आनंद लिया। कांगड़ा में मुझे सिर्फ मानवीय सुंदरता, कला की कोमलता और प्रकृति की मनमोहकता ही

देखने को मिली।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 38

Maharaj Nagar
कांगड़ा चित्रों का विशाल संग्रह

(पृष्ठ 263)
आंद्रेत्ता में हमारे दोस्तों ने हमें बताया कि महाराजा संसार चंद के चित्रों का एक बड़ा संग्रह लांबागाँव के राजा के पास है। राजा ध्रुव देव चंद, आशापुरी की पहाड़ियों के नीचे महाराज नगर में रहते हैं। हम इन चित्रों को देखना चाहते थे, इसलिए भोर होते ही हम अपने घोड़ों पर सवार होकर परमेशी दास के साथ आंद्रेत्ता से निकल पड़े। इस रास्ते में दत्ताल नाम का एक छोटा सा गाँव है। सड़क के दोनों ओर की झाड़ियाँ जंगली गुलाब और चमेली के फूलों की खुशबू से महक रही थीं। नारंगी और पीले फूल मानो नाच रहे हों। इन गुलाब और चमेली के फूलों से गुजरते हुए हम परहा नाम के गाँव पहुँचे। परहा झरनों वाला एक सुंदर गाँव है। इसके पुराने बरगद के पेड़ न केवल यात्रियों को आराम देते हैं, बल्कि गाय, बछड़े, भेड़ और बकरियों जैसे मवेशी भी यहाँ आश्रय लेते हैं। परहा के पास भाओरा नाम का एक गाँव है। इस गाँव की भौगोलिक स्थिति बहुत ही अनोखी है – यहाँ न तो झरने हैं और न ही हरियाली। चारों ओर केवल रेगिस्तान जैसे पहाड़ ही दिखाई देते हैं। इस क्षेत्र को चांगर कहते हैं। हम धीरे-धीरे अगले गाँव दरमन की ओर बढ़े और दूर से आशापुरी मंदिर देखा। यहाँ एक छोटा सा बाज़ार है जिसमें छह-सात दुकानें हैं। हमने वहाँ थोड़ी देर आराम करने का फैसला किया। एक दुकानदार ने हमें अपनी चारपाइयाँ दीं, जिन्हें हमने एक बरगद के पेड़ के नीचे रखकर आराम किया।

(पृष्ठ 264)
बरगद के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर कुछ महिलाएं भी बैठी थीं। वे आम के अचार के

साथ चपाती खा रही थीं और बार-बार उनके पास आ रहे कुत्ते को भगा रही थीं। दुकानदार ने मुझे काली मिर्च से बनी लस्सी का एक गिलास दिया, जिसे मैंने पानी मिलाकर बड़े चाव से पिया।

दुकानदार को धन्यवाद कहकर हम आगे बढ़े और आधे घंटे में नागबन पहुँच गए। हमें यहाँ कोई नाग तो नहीं दिखा, लेकिन कहा जाता है कि मानसून के दौरान इस जगह पर बड़ी संख्या में साँप निकलते हैं। यह घना जंगल है और लताएँ पेड़ों पर रस्सियों की तरह चढ़ती हुई दिखाई देती हैं। पेड़ पीले फूलों से लदे हैं जबकि लताएँ सफेद फूलों से भरी हैं - ये काँटेदार किक्कर और फलाही को और भी आकर्षक बना देती हैं। पेड़ों को गले लगाती लताएँ कांगड़ा चित्रों में आम दृश्य हैं। लता स्त्री का प्रतीक है जबकि वृक्ष पुरुष का। पुराने समय में माधवी लता को आम के पेड़ पर चढ़ाया जाता था और उनका विवाह कराया जाता था। हिंदी और संस्कृत कविता में स्त्री को लता के रूप में दर्शाया गया है। कलाकारों ने इस मिलन को अपने चित्रों में व्यक्त किया है।

हम जल्द ही महाराज नगर पहुँच गए। हमने सोचा था कि महाराज नगर एक बड़ा गाँव होगा, लेकिन वहाँ केवल राजा का निवास, उनके नौकरों के घर और एक बाँस का जंगल था। घरों की छतों पर लोकाट और नाशपाती के बाग लगे हुए थे। जब हम इस दृश्य को निहार रहे थे, तभी राजा ध्रुव देव चंद और उनके डोगरा प्रबंधक हमसे मिलने आए। वे हमें एक घर में ले गए जहाँ हमारे लिए पलंग और तकिए रखे हुए थे। तकियों पर 'स्वागत है' लिखा हुआ था। हमने भोजन किया और लगभग एक घंटे आराम किया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

राजा के प्रबंधक दोपहर 3 बजे हमसे दोबारा मिलने आए। उन्होंने बताया कि राजा के पिता श्री जय चंद ने नौ विवाह किए थे और उनके अठारह बच्चे थे, लेकिन उनमें से कोई भी जीवित नहीं रहा। एक भिक्षु ने राजा को सलाह दी कि उन्हें लांबागाँव का महल छोड़कर जंगल में रहना चाहिए, तभी उनका बच्चा सुरक्षित रहेगा। इसीलिए राजा जय चंद ने आशापुरी मंदिर के नीचे ये घर बनवाए और इस संपत्ति का नाम महाराज नगर रखा। इस प्रकार उनके दो पुत्र जीवित रहे, जिनमें ध्रुव देव चंद सबसे बड़े थे।

(पृष्ठ 265)
हमने डोगरा से उनकी पुरानी पेंटिंग्स दिखाने को कहा। सबसे पहले, वे कांच के फ्रेम में जड़ी दो नायिका पेंटिंग्स लाए। दोनों पेंटिंग्स बेहद खूबसूरत थीं और इतनी अच्छी थीं कि उन्हें किसी किताब में छपने लायक समझा जा सकता था। राजा भी आ गए और हमारी बातचीत शुरू हो गई। मैंने उन्हें बताया कि हम सिर्फ पेंटिंग्स की तस्वीरें लेना चाहते हैं, उन्हें अपने साथ नहीं ले जाना चाहते। मेरी इस बात से उन्हें तसल्ली मिली। कुछ साल पहले हिमाचल प्रदेश में एक अधिकारी तैनात थे जो कला प्रेमी थे। जब भी उन्हें कोई पुरानी पेंटिंग मिलती, वे राजा से उसे मांग लेते और लौटाना भूल जाते। राजा भी उनसे पेंटिंग्स मांगने की हिम्मत नहीं करते थे क्योंकि वे उनके क्षेत्र के प्रभारी अधिकारी थे। नतीजतन, सभी राजाओं ने इस अधिकारी के डर से अपनी पेंटिंग्स छुपा ली थीं। मैंने राजा से थोड़ी और बातचीत की और उन्हें भरोसा दिलाया कि मैं कांगड़ा की कला और इतिहास पर शोध कर रहा हूं और मेरे शोध से राजा का भी नाम रोशन होगा। राजा को मुझ पर भरोसा होने लगा और उन्होंने हमें अपनी कई पेंटिंग्स दिखाईं। इनमें से कुछ चित्रों में महाराजा संसार चंद और अन्य पर्वतीय राजाओं को दर्शाया गया था, जबकि अन्य में 'बारा मास' और 'नायिका भेद' का चित्रण था। इनमें से लगभग बीस चित्र असाधारण रूप से सुंदर थे।

ये चित्र लाल कपड़े के थैलों में छिपाकर रखे जाते थे, और हमसे पहले केवल राजाओं, उनकी पत्नियों और बच्चों को ही इन्हें देखने की अनुमति थी। इन राजाओं को कला के प्रति बहुत सम्मान था, इसलिए वे इन चित्रों की प्रशंसा करते थे। देखने के बाद वे इन्हें सावधानीपूर्वक कपड़े के थैलों में लपेटकर नीम के पत्तों से भरे लकड़ी के बक्सों में रख देते थे। भारत में इन चित्रों को फ्रेम में लगाकर दीवारों पर टांगने की प्रथा अभी शुरू नहीं हुई थी। यह प्रथा 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड से भारत आई। इन चित्रों के रंग चमकीले थे और ताजे दिख रहे थे क्योंकि इन्हें कपड़े के थैलों में बक्सों में रखा जाता था और प्रकाश के संपर्क में नहीं लाया जाता था।

जब मैंने उन्हें नूरपुर के बारे में बताया, तो मैंने यह भी बताया कि राम सिंह को जब पता चला कि उनकी पेंटिंग जल गई हैं, तो वे कितना रोए थे। जापानी समुराई की तरह, ये प्राचीन राजपूत भी अपनी पेंटिंग से बेहद प्यार करते हैं। ओकाकुरा नाम के एक जापानी कलाकार और लेखक ने कला के प्रति जापानियों के प्रेम का वर्णन किया

है। सेशुन द्वारा बनाई गई बुद्ध की प्रसिद्ध पेंटिंग को राजा हासोकावा के महल में बड़ी सावधानी से संरक्षित किया गया था।

(पृष्ठ 266)
लकड़ी के महल में आग लग गई। ड्यूटी पर तैनात समुराई तुरंत जलते हुए महल के अंदर गए और पेंटिंग को बचाया। उन्होंने अपनी कमीज़ को तलवार से फाड़कर पेंटिंग को ढक दिया। जब उन्हें लगा कि बाहर निकलना नामुमकिन है, तो उन्होंने अपना पेट फाड़ दिया, पेंटिंग को कपड़े में लपेटकर अपने पेट के अंदर रखा और पेट के बल लेट गए। आग बुझने पर समुराई का जला हुआ शव मिला। प्रसिद्ध पेंटिंग उनके पेट में सुरक्षित पाई गई। हालांकि इस पेंटिंग का इतिहास बहुत दर्दनाक है, लेकिन यह दर्शाता है कि जापानी लोग अपनी कला से कितना प्यार करते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
हमारे राजपूत राजा और जापानी लोग अपनी कला और कलाकारों की इस तरह सराहना करते हैं, और इसकी तुलना में, आज के धनी लोग, जैसे कि पंजाबी जो पूरी-कचौरी, कोरमा, कीमा, कोफ्ता और पुलाव का आनंद लेते हैं, उन्होंने अपनी कला को बुरी हालत में छोड़ दिया है।214 मैं उन लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ जो सड़क किनारे की दुकानों में मक्खियों के बीच भल्ला-पकौड़ा, आलू-कचालू और गोल-गप्पे खाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।215 मैं उस धनी वर्ग की बात कर रहा हूँ जिनके पास शाम को व्हिस्की की बोतल खोलने के लिए पैसे हैं, जो रात में क्लबों में रमी और ब्रिज खेलते हैं और पश्चिमी नृत्य में लिप्त होते हैं। यदि वे अपनी पत्नियों के कपड़ों और आभूषणों पर खर्च करने के बजाय अपने धन का एक चौथाई हिस्सा भी चित्रों, कला और पुस्तकों पर खर्च करें, तो न केवल उनकी कला और संस्कृति का विकास होगा, बल्कि उनकी आत्मा भी आत्मनिरीक्षण करने और उच्च कोटि के विषयों पर विचार करने के लिए पर्याप्त संवेदनशील हो जाएगी।
रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी, तो 'नायिका भेद' की पेंटिंग्स के बारे में सोचती रही और काफी देर तक सो नहीं पाई। नींद में मुझे उन्हीं पेंटिंग्स के सपने आए।
अगले दिन राजा हमें अपनी जीप में बिठाकर जयसिंहपुर और लंबगाँव ले गए। उन्होंने

हमें जयसिंहपुर की पहाड़ियों में स्थित एक बड़ी गुफा के बारे में बताया, जहाँ सिख लोग नरसंहार (ग़ल्लुघरा) के दौरान छिपते थे। पंजाब में सिख शासन के दौरान, उन्होंने इन पहाड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया और स्थानीय लोगों को परेशान करना शुरू कर दिया। तब पहाड़ियों ने अपने परिवारों के साथ उस गुफा में शरण ली। आज वह गुफा चमगादड़ों से भरी हुई है।

(पृष्ठ 267)
महाराजा संसार चंद का जन्म जयसिंहपुर में हुआ था और यह स्थान बीजापुर से दिखाई देता है। बीजापुर में जानकीनाथ के पत्थर मंदिर के पास एक बड़ा बाज़ार है। मंदिर के पास एक विशाल कुआँ है, जिसका आकार देखकर डर लगता है। कुएँ के पास एक बड़ा खुला मैदान है जहाँ राजा अपने घोड़ों की परेड कराया करते थे। कहा जाता है कि राजा कीरत चंद का घोड़ा बेकाबू होकर कुएँ की ओर भागा और एक ही छलांग में उसे पार कर गया।

214 ये सभी व्यंजन धनवानों द्वारा आमतौर पर खाए जाने वाले लज़ीज़ पकवान हैं।
215 ये स्ट्रीट फ़ूड हैं, जो मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए किफायती और सुलभ हैं। रंधावा खान-पान की आदतों के आधार पर वर्ग भेदों को उजागर करते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 39

ग्वाल टिल्ला

(पृष्ठ 268)
Khadda je teriyan pathar suneendai The rocks of ravines listen
जबर सुनींदा पानी, पानी के लिए जो अपना रास्ता बना रहा है,
Marne te ni darna bhala preet keehan laani how will we love if we are afraid of death?

महाराजा संसार चंद की महान चित्रकला देखने के बाद, हम तिरा सुजानपुर की ओर चल पड़े, जो कभी कटोच राजाओं की राजधानी हुआ करती थी। हरिपुर गुलेर में जन्मी कांगड़ा कला यहीं फली-फूली और अपने चरम पर पहुंची। सुजानपुर तिरा जाने वाली कच्ची सड़क पठानकोट मंडी सड़क को काटती है, जो पालमपुर घाटी के नीचे स्थित है। यह भावरना नामक कस्बे से होकर गुजरती है; इसका बाज़ार अपनी चहल-पहल के लिए प्रसिद्ध है। इस बाज़ार की अधिकांश दुकानें सूद समुदाय के स्वामित्व में हैं। इन दुकानों में कांच की चूड़ियाँ, दर्पण, साबुन, कंघी और जीवन की नई शुरुआत के लिए आवश्यक कई अन्य छोटी-छोटी वस्तुएँ बिकती हैं। आजकल पहाड़ी लोग इन वस्तुओं की बहुत कद्र करने लगे हैं। सड़क के बाईं ओर भावरना का झरना है, जिसके किनारों पर बैद मजनू के पौधे लगे हैं। पालमपुर के कई क्षेत्रों को इस जलमार्ग से पानी मिलता है। राजा भीम चंद के छोटे भाई किरपाल चंद ने इसे 1690 में खुदवाया था। यह कांगड़ा घाटी का सबसे पुराना जलमार्ग है। धौलाधार का बर्फीला पानी बांदला गांव के ऊपर से इस झरने में गिरता है। यह यहाँ के किसानों के लिए वरदान है और स्थानीय लोग आज भी किरपाल चंद को बहुत स्नेह से याद करते हैं।

(पृष्ठ 269)
लगभग सात मील दूर, त्र्यंबक देवी का एक मंदिर है, जिसके चारों ओर पाँच बरगद के वृक्ष लगाए गए हैं। यहाँ से लगभग एक मील नीचे धौलाधार पर्वतमाला का एक अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई देता है। आगे चिंबलहार घाटी है, जहाँ धान की खेती होती है। धौलाधार पर्वतमाला की पृष्ठभूमि में, बर्फ से ढकी चोटियाँ सूर्य की किरणों में चमकती हैं। सड़क के किनारे आम के पेड़ों के झुंड और किसानों के घरों के पास केले के पेड़ों के समूह आम दृश्य हैं।
धान के खेतों में सारसों के जोड़े बैठे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे पक्की सड़क पर चलती हमारी गाड़ी को बड़ी शंका से देख रहे हों। सड़क मोहल घाटी तक जाती है, जिसके दूसरी ओर रेतीली, बंजर पहाड़ियाँ हैं। ग्वाल टिल्ला इन बंजर पहाड़ियों में सबसे प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि एक बार एक चरवाहा यहाँ अपनी गायें चरा रहा था, तभी लाल दुपट्टा पहने एक सुंदर स्त्री वहाँ से गुजरी। उस लड़की की सुंदरता पर मोहित होकर चरवाहे ने कहा, “जो मेरे पास से गुजर रही है, लाल दुपट्टा पहने, वही

मेरी स्त्री है।”216 यह सुनकर कि एक अजनबी उसे अपनी दुल्हन बना रहा है, लड़की ने उसके प्यार की परीक्षा लेने का फैसला किया और कहा, “हे वीर युवक, यदि तुम मेरे दूल्हा बनना चाहते हो, तो इस पहाड़ी से कूदकर अपना प्यार साबित करो।” युवा प्रेम से व्याकुल होकर चरवाहा उस पहाड़ी की चोटी से कूद गया और कूदते ही उसकी मृत्यु हो गई।

216 घुंड या घूंघट एक सिर ढकने वाला स्कार्फ है जो पूरे चेहरे को ढक लेता है, जिसे आमतौर पर भारत में हिंदू, सिख और जैन महिलाएं पहनती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। लाल वस्त्र वाली वह सुंदरी खाई में गिर पड़ी। प्रेम की इस घोषणा से वह इतनी भावुक हो गई कि उसने भी उसी पहाड़ी से छलांग लगा दी और अपनी जान दे दी। इन प्रेमियों की याद में वहाँ एक समाधि बनाई गई। ग्वाल टिल्ला से गुजरने वालों को हमेशा इस प्रेम कहानी की याद आती है, जिसमें दो अजनबी पहली बार मिले और पहली ही मुलाकात में एक-दूसरे में खो गए। यह पहली नजर के प्यार की एक अनोखी कहानी है और कांगड़ा घाटी के लोग आज भी इस कहानी को याद करते हैं—कभी सहानुभूति से, कभी प्रशंसा से और कभी हँसते हुए।
यहां से कुछ मील दूर बुरल नाम का एक गांव है। इस गांव का बाजार भी काफी चहल-पहल वाला था। बुरल के बाद सड़क की हालत और भी खराब थी, लेकिन हम चलते रहे और आलमपुर पहुंच गए। इस जगह को राजा आलम चंद ने 1697 में बसाया था। यहां लक्ष्मी नारायण का एक पत्थर का मंदिर है, जिसे राजा अभय चंद ने 1747 में बनवाया था।

(पृष्ठ 270)
मंदिर के सामने गरुड़ की एक मूर्ति है, जिसकी नाक तोते जैसी है और वह घुटने टेककर भगवान विष्णु को प्रणाम कर रहा है।217 राजा संसार चंद के महल की ढलान वाली दीवारें ब्यास नदी के दाहिने किनारे की ओर हैं। महल के चारों ओर आम के पेड़ों के झुंड और धान के खेत हैं।
ब्यास नदी और उसका मोती जैसा निर्मल जल अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा।

ब्यास नदी का जल आसपास के पहाड़ों और पहाड़ियों को एक अनूठी चमक प्रदान करता है। पंजाब में ब्यास और चेनाब नदियों से प्रेम की कई कहानियां जुड़ी हुई हैं। हीर-रांझा और सोहनी-महिवाल की कहानियां भी चेनाब के आसपास के गांवों में विकसित हुईं।

ब्यास नदी का कांगड़ा के राजपूतों के इतिहास से विशेष संबंध है। कटोच राजाओं ने इस नदी और इसकी सहायक नदियों व वितरिकाओं के किनारे अपने किले और महल बनवाए थे। ढलानदार दीवारें आज भी देखी जा सकती हैं। ये किले राइन नदी के किनारे बने जर्मनी के रईसों के किलों की याद दिलाते हैं। महाराजा संसार चंद ने अपना जीवन ब्यास नदी के किनारे बसे गांवों में बिताया और इन्हीं गांवों में कांगड़ा के वे प्रसिद्ध चित्र बने जिनमें प्रेम की भावना को कई बार दर्शाया गया है। इनमें से कई चित्रों में चित्रित महलों की खिड़कियों से ब्यास नदी दिखाई देती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कलाकार प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति बेहद आकर्षित थे और इस नदी की अनूठी सुंदरता का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

प्रेम गीतों की यह नदी रोहतांग दर्रे की बर्फ से होकर गुजरती है और दुर्गम घाटियों और दर्रों को पार करते हुए मनाली की कुल्लू घाटी में प्रवेश करती है। मनाली से सुल्तानपुर तक, यह नदी अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है; इसके किनारों पर देवदार और एल्डर (जिसके पत्ते तूर जैसे होते हैं) के वन हैं। मंडी जिले से गुजरने के बाद, यह नदी राजगिरी और कांगड़ा जिले के मोलाग क्षेत्र में प्रवेश करती है। बैजनाथ के ऊपर पहाड़ियों से निकलने वाली बिन्नू नामक नदी यहाँ इसमें मिल जाती है। आवा नामक नदी भी बिन्नू नदी में मिलती है। इस क्षेत्र के दाहिनी ओर बीजापुर नामक एक कस्बा है, यहीं संसार चंद का जन्म हुआ था। इस स्थान से थोड़ा नीचे लंबगाँव नामक एक गाँव है, जहाँ संसार चंद के वंशज सर जय सिंह नामक एक प्रसिद्ध रईस ने आम के बाग में अपनी हवेली बनवाई थी। इस नदी के किनारे आम के कई बाग हैं। यहाँ बंजर भूमि भी है।

217 गरुड़, एक बाज, हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान विष्णु का वाहन या परिवहन का साधन है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें। लाम्बागाँव के सामने महल मोरी नामक पहाड़ियाँ हैं, जिनकी चोटियाँ एक दूसरे के ऊपर भयानक लहरों की तरह चढ़ती हैं।

(पृष्ठ 271)

जब दूर से इन पहाड़ियों की चोटियाँ ही दिखाई देती हैं, तो यह स्थान निर्जीव प्रतीत होता है। इन पहाड़ियों का तल सूखा और बंजर है। इस क्षेत्र में कोई जंगल नहीं है, लेकिन इन पहाड़ियों के बीच-बीच में भूरी ज़मीन के टुकड़े हैं जहाँ लोगों ने अपने घर बनाए हैं। वे अनाज की फसलें भी उगाते हैं। इन पहाड़ियों के तल को बंजर बनाने वाली शुष्क हवाएँ नीचे के इन मैदानी इलाकों तक नहीं पहुँचतीं।

यहां से कुछ मील नीचे आलमपुर नाम का एक गांव है। इसके सामने सुजानपुर शहर स्थित है। सुजानपुर में एक किला, महल और मंदिर हैं। यहीं पर बांदला से निकलने वाली नेउगल नदी ब्यास नदी में मिल जाती है।

सुजानपुर जाने से पहले, नदी के दर्शन के लिए कुछ समय निकालना व्यर्थ नहीं जाएगा। यह नदी दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहना शुरू करती है, ज्वालामुखी पर्वतों को पार करती है और नादौन की घाटी में प्रवेश करती है। यहाँ कुनाह और मान नदियाँ इसमें मिलती हैं। अमतर में राजा संसार चंद के वंशजों के कई महल हैं। नादौन के बाद, जसवान पर्वत श्रृंखला इस नदी का मार्ग फिर से बदल देती है, और नदी उत्तर-दक्षिण दिशा में बहना शुरू कर देती है। ज्वालामुखी शहर कुछ मील नीचे स्थित है; यहाँ अग्नि देवी की पूजा के लिए एक प्रसिद्ध मंदिर है। डेरा गोपीपुर नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह एक तहसील है। यहाँ नदी के किनारे एक बहुत ही सुंदर डाक-बंगला बना हुआ है। हरिपुर गुलेर शहर नदी के दाहिने किनारे पर कुछ मील नीचे स्थित है, यहाँ बंगंगा नदी ब्यास नदी से मिलती है। यहाँ गज नदी भी देहर धारा के जल को ब्यास नदी में लाती है। तलवारा में, पश्चिमी धारा ब्यास नदी में गिरती है, और फिर नदी पहाड़ियों से निकलकर मुक्त हो जाती है। सर्दियों में, यहाँ नदी का पानी सचमुच साफ होता है। पत्थरों और कंकड़ों के बीच से बहते हुए नदी मधुर संगीत की तरह लगती है। ऐसा लगता है मानो पानी बीच-बीच में स्थित झीलों में कुछ देर ठहरता है। इन झीलों में महसीर मछली बहुतायत में पाई जाती हैं। रेह के बाद, यह नदी तीन वितरिकाओं में विभाजित हो जाती है और मिर्थल के पास फिर से एक नदी में मिल जाती है। मिर्थल पहुँचते-पहुँचते, नदी पहाड़ियों से निकलकर मैदानों की आज़ादी का

आनंद ले रही होती है।

(पृष्ठ 272)
मिर्थल पर हाल ही में निर्मित पुल कुशल इंजीनियरिंग का एक अच्छा उदाहरण है। मानसून के दौरान जब नदी में पानी उफान पर होता है, तो नदी के तेज बहाव से किनारे पर मौजूद सभी चट्टानें और पत्थर आगे की ओर धकेल दिए जाते हैं, और नदी अपने किनारों को तोड़कर एक विशाल जलधारा की तरह बहने लगती है। यहाँ नदी का बहाव इतना प्रचंड होता है कि बांध टूटने के खतरे के बिना यहाँ बांध बनाना संभव नहीं है। नदी के तेज बहाव से घिसकर बने पहाड़ अब नदी में डूब चुके हैं। इन दिनों कई निडर पहाड़ी लोग मशक (एक प्रकार का जहाज) पर सवार होकर इस नदी को पार करते हैं।
आलमपुर जाने वाली सड़क बेहद कठिन है और इसमें कई चढ़ाई-उतराई हैं। हमारे जीप चालक रसील सिंह, जो हमीरपुर के एक गांव के निवासी थे, कद में छोटे थे लेकिन निडर और साहसी थे। सड़क जितनी खतरनाक होती जाती, उनका साहस उतना ही बढ़ता जाता। वे गहरी खाइयों को पार करते, नदियों को चीरते हुए आगे बढ़ते; वे शेर की तरह जीप के स्टीयरिंग व्हील से चिपके रहते थे। उन्होंने तभी आराम किया जब हम आलमपुर के समतल मैदान पर पहुंचे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 40

Sujanpur Tira

(पृष्ठ 273)
Nagade chukki raja hede jo chadhiya When the King came with his drums,

गद्दन नज़री की बैंकिंग आई उसने एक खूबसूरत गद्दन देखा;

Char sipahi raje dad-dad bheje He made four soldiers run after

her,
Baahan te chukki doliye paayi Carry her in their arms, put her in a

पालकी।

ब्यास नदी पार करने और कुछ पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद हम सुजानपुर टीरा पहुँचे। इस कस्बे की स्थापना राजा घुमंद चंद ने 1761 में की थी; उन्होंने यहाँ कई सुंदर इमारतें बनवाईं। उनके पोते संसार चंद ने इस कस्बे का और विकास किया। ब्यास नदी के किनारे कस्बे के बाहरी इलाके में नरबदेश्वर नाम का एक शिव-पार्वती मंदिर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण राजा संसार चंद की पत्नी रानी सुकेतन ने करवाया था। कहा जाता है कि इस मंदिर की दीवारों पर बने चित्र संसार चंद के शाही कलाकारों द्वारा बनाए गए थे। कुछ चित्रों में संसार चंद और उनकी रानी सुकेतन को दर्शाया गया है। कुछ चित्रों में रामायण, महाभारत और भगवद् गीता के दृश्य चित्रित हैं। इन दीवारों पर हाथी, बारह सींगों वाला हिरण और घोड़े जैसे कई जानवरों के चित्र बने हुए हैं। छत और दीवारों पर बने ये चित्र, जहाँ मानव हाथ नहीं पहुँच सकते, अपने मूल रंगों में ही हैं। दीवारों के निचले हिस्से पर बने चित्र तीर्थयात्रियों के हाथों से गंदे हो गए हैं। तीर्थयात्री अक्सर चित्रों को अपनी उंगलियों से छूते हैं। मंदिर के पीछे लाल पत्थर की दुर्गा प्रतिमा है।

(पृष्ठ 274)
इस मूर्ति में देवी दुर्गा को महिषासुर का वध करते हुए दिखाया गया है। मंदिर में प्रवेश करते ही हमने एक ब्राह्मण पुजारी को देखा, जिनकी सफेद टोपी मोर के पंखों से सजी हुई थी, वे देवी की पूजा कर रहे थे।
सुजानपुर टीरा की एक और अनूठी विशेषता इसका विशाल खुला मैदान है। इन पहाड़ियों में कहीं और इतने बड़े खुले मैदान नहीं मिलते। राजाओं की सेनाएँ यहाँ परेड करती थीं। मैदान के किनारे पर संसार चंद द्वारा निर्मित एक कृष्ण मंदिर है।
यह एक शानदार इमारत है। बसंती (केसरिया पीले) रंग में बनी कृष्ण और राधा की मूर्तियाँ बहुत ही आकर्षक लगती हैं। इस मंदिर का निर्माण करने वाले राजमिस्त्रियों के नाम एक पत्थर की पट्टिका पर खुदे हुए हैं - उनके नाम मिसरू और बकरू थे और वे

नादौन के रहने वाले थे।
राजा संसार चंद का महल शहर के ऊपरी हिस्से में एक पहाड़ी पर स्थित है। इस महल तक पहुँचने के लिए एक गलियारे से होकर गुजरना पड़ता है, और रास्ता बहुत पथरीला है। प्रवेश द्वार के दोनों ओर हाथी के आकार की खिड़कियाँ बनी हैं। दाहिनी ओर बाईस दरवाजों वाला एक दरबार कक्ष है। यहाँ से ब्यास नदी, सुजानपुर और आसपास का खूबसूरत इलाका दिखाई देता है। इस महल की छत गिर चुकी है, और ऐसा लगता है कि कुछ ही वर्षों में पूरी इमारत ढह जाएगी। कहा जाता है कि प्रत्येक राजा एक दरवाजे पर बैठता था, और इस प्रकार बाईस राजा आपस में विचार-विमर्श करते थे और महाराजा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकत्रित होते थे। इस कक्ष के नीचे एक छोटा सा तालाब है, जो होली के त्योहार के दौरान लाल रंग से रंगा होता था, जब सुजानपुर के लोग राजा के साथ होली खेलते थे। बाईं ओर गौरी-शंकर मंदिर था, जिसका निर्माण 1810 में हुआ था। इसमें शिव और पार्वती की मानव आकार की मूर्तियाँ थीं, जिनकी संसार चंद पूजा करते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
दरबार हॉल के ऊपर स्थित चामुंडा देवी मंदिर को सफेदी से पुता गया है। यह सूर्य की रोशनी में चमकता है। पूर्व में मंडी की पहाड़ियाँ और दक्षिण में हमीरपुर का शुष्क क्षेत्र दिखाई देता है। यह मंदिर राजा घुमन्द चंद द्वारा निर्मित पहला भवन था। इस मंदिर की दीवारों पर बने चित्रों में से एक में ऊँची और नीची चोटियाँ ऊँटों के कूबड़ के कारवां की तरह दिखाई देती हैं। संभव है कि संसार चंद के कलाकारों ने इस दृश्य और कैलाश पर्वत के बीच समानता पाई हो।

(पृष्ठ 275)
इस महल के एक तरफ कभी रानियों के महल हुआ करते थे, लेकिन वे बहुत पहले ढह गए थे, और अब इन खंडहरों में केवल हरी-भरी घास उग रही है।
अन्य राजपूतों की तरह, जो अपनी वंशावली सूर्यवंश या चंद्रवंश से जोड़ते हैं, कटोच राजाओं का इतिहास भी प्राचीन कथाओं में समाहित है। कटोच राजपूत मानते हैं कि वे सुशर्मन के वंशज हैं। सुशर्मन का उल्लेख महाभारत की कथा में मिलता है। यह

परिवार मूलतः मुल्तान में बसा हुआ था। कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद, उन्होंने मुल्तान में अपनी भूमि खो दी और जालंधर क्षेत्र में चले गए; जालंधर में रहते हुए उन्होंने कांगड़ा किले का निर्माण करवाया। कांगड़ा के पश्चिमी भाग को भी कटोच कहा जाता था। उस समय, कांगड़ा घाटी में दो और जिले थे - चांगर और पालम। चांगर और पालम के दक्षिण में कई शुष्क पहाड़ियाँ हैं। पालम के उत्तर में, कांगड़ा और बैजनाथ के बीच, सीढ़ीदार चाय बागानों और धान के खेतों वाला एक उपजाऊ क्षेत्र है।
महाराजा संसार चंद कांगड़ा के सबसे लोकप्रिय राजा थे। उनके पिता तेग चंद ने केवल एक वर्ष तक शासन किया। उनके शासनकाल में कोई विशेष घटना नहीं है, लेकिन उनके परदादा घुमंद चंद एक अत्यंत वीर राजा के रूप में जाने जाते हैं। उस समय मुगल साम्राज्य का पतन हो रहा था। अहमद शाह दुर्रानी पंजाब पर शासन कर रहे थे और उन्होंने घुमंद चंद को जालंधर दोआबा का राज्यपाल नियुक्त किया था। इस प्रकार घुमंद चंद सतलुज और रावी नदियों के बीच स्थित क्षेत्र के राजा बने। उन्होंने चंबा के राजा से पालम का क्षेत्र छीन लिया था। लंबगाँव के राजा के पास मौजूद चित्रों में से एक में ध्रुव देव चंद और घुमंद चंद को ब्यास नदी के किनारे प्रार्थना करते हुए दिखाया गया है। एक कोने में संगीतकार वाद्य यंत्र बजाते हुए दिखाई दे रहे हैं। राजा के परिवार के सदस्य और दरबारी उनके सामने बैठे हैं; दरबारियों की दाढ़ी मुसलमानों की तरह कटी हुई है। उनके पोते संसार चंद भी उनके बीच खड़े दिखाई दे रहे हैं। घुमंद चंद को गंभीर भाव से चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में ब्यास नदी बहती हुई दिखाई दे रही है। यह पेंटिंग सुजानपुर में पाई जाती है और यह कांगड़ा कला का सबसे पुराना उदाहरण है।
संसार चंद दस वर्ष की आयु में नए राजा बने। पंजाब में अशांति फैल गई। दुर्रानी अपना प्रभुत्व कायम नहीं रख सके। सिख मिसलें बाहरी नियंत्रण से मुक्त हो गईं; अब उन्होंने पहाड़ी राज्यों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की महत्वाकांक्षा पाल ली।

(पृष्ठ 276)
संसार चंद ने रोहिल्ला, अफगान और राजपूत योद्धाओं की एक विशाल सेना बुलाई और शत्रु सेनाओं को अपने सामने झुकने पर मजबूर कर दिया। लंबगाँव के राजा के एक चित्र में संसार चंद और उनके भाई घोड़ों पर सवार दिखाए गए हैं - फतेह चंद उनके बाईं ओर हैं, जबकि उनके छोटे भाई मान चंद उनके दाईं ओर हैं। मान चंद एक

टट्टू (टट्टू) पर सवार हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। मोर पंख के पंखे लिए सेवक भाइयों के पीछे खड़े हैं। संसार चंद को उनके भाइयों से आसानी से अलग पहचाना जा सकता है क्योंकि उन्हें एक लंबे और बलवान व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

संसार चंद को कांगड़ा घाटी का सबसे वीर राजा माना जाता है। श्री बार्न्स लिखते हैं कि संसार चंद ने जो नाम कमाया, उसकी बराबरी उनके वंशजों में से कोई नहीं कर पाया। वे अपने निर्णयों के अनुसार कार्य करते थे। मुगल शासन के पतन के दौरान उन्होंने पहाड़ी राज्यों में शांति बनाए रखी। उनके शासनकाल में पहाड़ी राज्यों में शांति और स्थिरता थी, इसलिए कई बुद्धिजीवी यहाँ आकर बस गए और यह क्षेत्र कला का केंद्र बन गया। गुलाम महाउद्दीन ने 'तारीख पंजाब' में लिखा है कि संसार चंद एक भाग्यशाली राजा थे, वे दयालु थे और अपनी प्रजा के प्रिय थे। उनकी प्रजा उन्हें बाघ के समान वीर मानती थी। बुद्धिजीवियों और कलाकारों के प्रति उनका आदर अकबर के समान था। कलाकार, सैनिक और अन्य क्षेत्रों से जुड़े कुशल लोग कांगड़ा घाटी में आकर बस गए क्योंकि यहाँ के लोगों में बहुत सम्मान था।

महाराजा की मेहमाननवाज़ी की नीति। महाराजा द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकारों से संतुष्ट होकर, ये कुशल व्यक्ति अक्सर उनके सम्मान में रचनाएँ करते थे। महाराजा उन्हें भौतिक पुरस्कार भी देते थे। गायकों और भट्टों की बहुत सराहना की जाती थी। कुछ लोग उन्हें एक न्यायप्रिय राजा के रूप में याद करते हैं, जबकि अन्य उन्हें एक योद्धा के रूप में याद करते हैं।

सन् 1805 में गोरखाओं के आक्रमण से कांगड़ा घाटी की शांति भंग हो गई। अमर सिंह थापा चालीस हजार सैनिकों के साथ इस घाटी पर आक्रमण करने आए। उन्होंने महल मोहरियां में संसार चंद को पराजित किया और संसार चंद अपने परिवार को कांगड़ा किले में छिपाकर ले गए। गोरखाओं के आक्रमण से घाटी में इतनी अशांति फैल गई कि किसी ने भी अनाज का एक बीज तक नहीं बोया। कस्बों की गलियों में खरपतवार उगने लगे और नादौन के बाजार में बाघ घूमने लगे।

उन्होंने महाराजा रणजीत सिंह से मदद मांगी। 1809 में सिख सेनाओं ने गोरखाओं को हराया। इसके बाद सिख सेनाएं संसार चंद की सेनाओं के साथ कांगड़ा किले में रहने लगीं और संसार चंद रणजीत सिंह के अधीन हो गए। वे साल में एक बार लाहौर में महाराजा से मिलने जाते थे। किले पर कब्जा करने के बाद, इसकी कई पेंटिंग सिखों के हाथ लग गईं। इनमें से कुछ पेंटिंग आज भी अलावलपुर के एक सिख संत प्रकाश सिंह के पास हैं। एक पेंटिंग में संसार चंद को महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में बैठे हुए दिखाया गया है। उम्र के साथ उनकी दाढ़ी सफेद हो गई है और उनके चेहरे पर पहले जैसी रौनक नहीं दिखती।

19वीं शताब्दी में एक ब्रिटिश पर्यटक, विलियम मूरक्रॉफ्ट ने कांगड़ा घाटी का एक रोचक विवरण लिखा। विलियम मूरक्रॉफ्ट एक पशुचिकित्सक थे। उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा बंगाल में सेना के घोड़ों की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया था। वे 1820 में रणजीत सिंह के दरबार में आए और राजा को एक अंग्रेजी पिस्तौल भेंट की। महाराजा ने हथियारों की सराहना की और उन्हें हिमालय भ्रमण की अनुमति दी। मूरक्रॉफ्ट कुछ समय तक तिरा सुजानपुर में रहे और फिर मंडी और कुल्लू होते हुए लद्दाख की ओर बढ़े। उन्होंने 1820 में सुजानपुर तिरा में महाराजा संसार चंद के साथ काफी समय बिताया। उन्होंने उनके छोटे भाई फतेह चंद की जान एक भयानक बीमारी से बचाई, और दोनों इतने कृतज्ञ हुए कि उन्होंने उन्हें जागीर भेंट करने के साथ-साथ एक सिरोपा भी भेंट किया। इतना ही नहीं, फतेह चंद ने उनसे भाईचारे का बंधन भी बांध लिया। मूरक्रॉफ्ट इस अनुभव के बारे में इस प्रकार बताते हैं: “जब फतेह चंद मान गए, तो उन्होंने अपनी पगड़ी मेरी टोपी से बदल ली। उन्होंने अपनी पगड़ी मेरे सिर पर और मेरी टोपी अपने सिर पर रख ली। फिर हमने हाथ मिलाया। फिर हमने कुछ पैसे लिए और एक-दूसरे के सिर पर आशीर्वाद के रूप में घुमाए, और फिर नौकरों में बाँट दिए। उन्होंने मुझे कुछ सूखी घास भी दी, और कुछ नहीं।”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। जाति, वर्ग और नस्ल की परवाह न करते हुए, उन्होंने मुझे संसार चंद के परिवार का सदस्य बनाया। इसका शायद कोई खास महत्व न हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि उन्होंने अतुलनीय तरीके से अपनी कृतज्ञता साबित की। मूरक्रॉफ्ट ने संसार चंद के परिवार और उनके रोजमर्रा के जीवन के बारे में बहुत कुछ

लिखा है: "मुझे बुलाए जाने पर मैं शाम को उनसे मिलने गया। राजा अपने बेटे और पोते के साथ एक विशाल बगीचे में टहल रहे थे।"

(पृष्ठ 278)
राजा संसार चंद लंबे और स्वस्थ हैं। उनकी आयु लगभग साठ वर्ष होगी। उनका रंग सांवला है, लेकिन चेहरे की बनावट तीक्ष्ण और कोमल है। उनके पुत्र, राय अनिरुद्ध चंद, बहुत सुंदर हैं; उनका चेहरा गोरा है, लेकिन उनका शरीर थोड़ा मोटा है। उनके दोनों बच्चे अपने पिता की तुलना में कम गोरे हैं। कुछ समय पहले, संसार चंद सतलुज और रावी नदियों के बीच के क्षेत्र के सबसे शक्तिशाली राजा थे। सतलुज से कश्मीर तक के राजा उनके अधीन थे। उनके पास अपार धन-संपत्ति थी। उन्हें केवल कर से ही प्रतिवर्ष लगभग पैंतीस लाख रुपये प्राप्त होते थे। अब यह राजा गरीब हो गए हैं और उन्हें डर है कि महाराजा रणजीत सिंह कभी भी उनके राज्य पर कब्जा कर सकते हैं। उनकी सारी परेशानियां उनके अपने ही फैसलों का परिणाम हैं। जैसे-जैसे उनकी शक्ति कम होती जा रही है और वे विपत्तियों में डूबते जा रहे हैं, महाराजा रणजीत सिंह उनके पड़ोस में बढ़ते जा रहे हैं।
राजा के दैनिक जीवन के बारे में लिखते हुए मूरक्रॉफ्ट कहते हैं, “राजा संसार चंद सुबह प्रार्थना में व्यतीत करते हैं। फिर वे सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक अधिकारियों और दरबारियों से मिलते हैं। मेरे आने से पहले, वे यह समय एक छोटे से बंगले में बिताते थे, जिसे उन्होंने बाद में मुझे रहने के लिए खाली करा दिया। यह बंगला बगीचे के बाहरी हिस्से में है। राजा दोपहर में दो से तीन घंटे आराम करते हैं। फिर वे कुछ समय शतरंज खेलते हैं और शाम को गीत-नृत्य का आनंद लेते हैं। गायक अक्सर ब्रज भाषा में भगवान कृष्ण की स्तुति गाते हैं। संसार चंद कला प्रेमी हैं और उन्होंने अपने महल में कई कलाकारों को रखा हुआ है। उनके पास चित्रों का एक विशाल संग्रह है। इनमें से कई चित्रों में कृष्ण और बलराम के शौर्य को दर्शाया गया है। कुछ चित्रों में अर्जुन और महाभारत के अन्य दृश्य भी चित्रित हैं। इस संग्रह में पड़ोसी राजाओं और संसार चंद के पूर्वजों के चित्र भी हैं। इनमें से दो चित्रों में सिकंदर महान को दर्शाया गया है; राय अनिरुद्ध चंद ने उनमें से एक मुझे उपहार में दिया था। चित्र में सिकंदर को एक सेनापति के रूप में अत्यंत सुंदर चेहरे के साथ दर्शाया गया है। उसके लाल-भूरे बाल कंधों तक लटके हुए हैं और उसने सिर पर लोहे का हेलमेट पहना हुआ

है जिसके किनारों पर असली मोती जड़े हुए हैं। सिकंदर के बाकी कपड़े दक्षिण एशियाई लोगों की वेशभूषा से मिलते-जुलते हैं। राजा को नहीं पता कि उसे यह चित्र कहाँ से मिला। ऐसा लगता है कि यह चित्र उनकी पीढ़ियों से चला आ रहा था। परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है।"

(पृष्ठ 279)
एक सवाल जिसका जवाब अभी तक नहीं मिला है, वह यह है: संसार चंद के चित्रों का विशाल संग्रह कहाँ रखा गया था? जब महाराजा रणजीत सिंह ने कांगड़ा घाटी पर विजय प्राप्त की, तो संसार चंद के किले की शान फीकी पड़ गई, लेकिन कला का खजाना बरकरार रहा। चंद की मृत्यु के बाद, उनके कला संग्रह को तीन परिवारों में बाँट दिया गया। कुछ चित्र उनके भाई फतेह चंद के हिस्से में आए; फतेह चंद लांबागाँव में रहने लगे थे। कुछ चित्र उनके पुत्र जोधबीर को मिले। जोधबीर संसार चंद की एक सुंदर गद्दी महिला से उत्पन्न संतान थे। उनके नादौन वंशजों ने अमृतसर और बंबई के व्यापारियों के माध्यम से अपने चित्र बेचे, और इस व्यापार के माध्यम से, ये चित्र भारत से बाहर निकलकर दुनिया के विभिन्न हिस्सों के संग्रहालयों में पहुँच गए। डॉ. कुमारस्वामी

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। अमृतसर स्थित कला व्यापारी राधा किशन भरानी से कुछ उत्कृष्ट चित्र खरीदे गए थे, जो अब बोस्टन के कला संग्रह का हिस्सा हैं। इनमें से कुछ वाराणसी के भारतीय कला भवन में, कुछ इलाहाबाद के नगर संग्रहालय में, कुछ लाहौर संग्रहालय में, कुछ लंदन के विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय में और कुछ पेरिस में पाए गए हैं। कुछ चित्र लोगों के निजी संग्रहों में भी मौजूद हैं। इनमें मुंबई के जे.डी. मोदी, अहमदाबाद के कस्तूरभाई लालभाई, पटना के राधा कृष्ण जालान, कोलकाता के गोपी कृष्ण कनोरिया जैसे कुछ जाने-माने नाम शामिल हैं जिनके पास ये चित्र हैं। कांगड़ा के प्रतिष्ठित वकील श्री मान चंद उप्पल ने अपने नादौन स्थित घर के लिए कुछ चित्र और कच्चे रेखाचित्र लिए थे। श्री उप्पल के संग्रह में फारसी शैली का एक छोटा चित्र है, जो सुंदरता और कोमलता का अनूठा उदाहरण है। यह सिद्ध करता है कि संसार चंद के कलाकार मुगल शैली की चित्रकला से परिचित थे।

मियां राम सिंह के पास कांगड़ा चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह था। वे रणबीर चंद के परपोते थे। कांगड़ा की हार के बाद संसार चंद लंबे समय तक आलमपुर में रहे। कहा जाता है कि उन्होंने पहाड़ी की चोटी पर स्थित सुजानपुर महल को अपने हाथों से ध्वस्त कर दिया था, ताकि रणजीत सिंह उस पर कब्जा न कर सकें। महाराजा रणजीत सिंह ने इस महल के बारे में बहुत प्रशंसा सुनी थी। यह अधिक तर्कसंगत लगता है कि संसार चंद ने टीरा महल इसलिए छोड़ा क्योंकि वह नया बना था और उसमें आना-जाना मुश्किल था। इसी कारण वे ब्यास नदी के किनारे आलमपुर के उपजाऊ क्षेत्र में रहने लगे। उनका निधन दिसंबर 1823 में हुआ और उनके उत्तराधिकारी अनिरुद्ध चंद बने।

(पृष्ठ 280)
महाराजा रणजीत सिंह के प्रधानमंत्री ध्यान सिंह अपने पुत्र हीरा सिंह का विवाह अनिरुद्ध चंद की बहन से कराना चाहते थे। यद्यपि अनिरुद्ध चंद ने अपनी जान बचाने के लिए यह बात मान ली, फिर भी उन्होंने इसे बहुत अपमानजनक समझा। नादौन लौटते ही उन्होंने अपना और अपनी बहन का सामान समेटा और ब्रिटिश शासन के अधीन चले गए। वे अपने साथ कई चित्रकारी भी ले गए। अंततः वे टिहरी-गढ़वाल पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपनी दोनों बहनों का विवाह राजा से करा दिया।
हरिद्वार में चार वर्ष रहने के बाद अनिरुद्ध चंद का निधन टिहरी-गढ़वाल में हो गया। वे अपने पीछे दो पुत्र, रणबीर चंद और प्रमोद चंद छोड़ गए। लुधियाना के ब्रिटिश एजेंट के कहने पर महाराजा रणजीत सिंह ने रणबीर चंद और प्रमोद चंद को पंजाब बुलाया और उन्हें महल मोहरियां में 50,000 रुपये की जागीर दी। ये दोनों भाई अब करूहीन गाँव में रहने लगे। यहाँ उनकी मुलाकात 1835 में विग्ने नामक एक ब्रिटिश यात्री से हुई। प्रमोद चंद की कोई संतान नहीं थी, लेकिन रणबीर चंद का एक पुत्र था। पुत्र वह होता है जो दासी की कोख से जन्मा हो। उसका नाम प्रधान चंद रखा गया। प्रधान चंद के पोते राम सिंह के पास कांगड़ा के सबसे अधिक चित्र हैं। कहा जाता है कि जब बार्न्स को उनकी जागीर के बारे में निर्णय लेना था, तब प्रधान चंद ने कहा, मुझे संसार चंद का हुक्का और पूजा के बर्तन दे दो, फिर तुम जागीर वंशजों के दूसरे समूह को दे सकते हो। राम सिंह के पिता भवानी सिंह आलमपुर स्थित संसार चंद के महल में रहने लगे थे, लेकिन गरीबी के कारण उनके पुत्र राम सिंह और देवी सिंह महल की देखभाल

और मरम्मत करने में असमर्थ होने के कारण भवारना चले गए। राम सिंह एक गंभीर और बुद्धिमान व्यक्ति थे; वे अपने खजाने का सही मूल्य जानते थे। उन्होंने अपने चित्रों को बड़ी सावधानी से संरक्षित किया था। उनके पास शिव और पार्वती के जीवन पर लगभग 110 चित्र, दुर्गा के चमत्कारों पर 174 चित्र और राजा संसार चंद के दरबार के दृश्यों पर 26 चित्र थे। पंजाब के प्रमुख कलाकार सरदार शोभा सिंह ने मुझे उनके संग्रह के बारे में बताया था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

राम सिंह के पास नवाब कलब-ए-अली खान की एक पेंटिंग भी है, जिनके दादा गुलाम मोहम्मद खान ने महाराजा संसार चंद के यहाँ शरण ली थी। नवाब कलब अली खान ने मियां प्रधान चंद को 200 रुपये प्रति माह की जागीर उपहार में दी थी। यह जागीर हाल ही में विभाजित हुई। जागीर विभाजित होने के बाद, मियां राम सिंह को अपने चित्रों का संग्रह बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। शिव, पार्वती और दुर्गा के चित्रों को पंजाब सरकार ने चंडीगढ़ स्थित अपने कला केंद्र के लिए खरीदा है।

(पृष्ठ 281)

इस तरह, कांगड़ा चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह पंजाब में ही रह गया ताकि पंजाबी लोग इससे प्रेरणा ले सकें और इस कला का भरपूर आनंद उठा सकें।

हम सुजानपुर से लौट रहे थे और हमने देखा कि पूरी सड़क विवाह जुलूसों से भरी हुई थी। रास्ते में हमें लगभग पंद्रह जुलूस मिले। पालकी ले जाना यहाँ आज भी एक रिवाज है, और नाक में नथनी लगाए दुल्हनें उत्सुकता से हमारी ओर देख रही थीं, खासकर श्री आर्चर की ओर— मानो उनकी आँखें पूछ रही हों, ये अजनबी कौन है? रंग-बिरंगे कपड़े पहने, चेहरे पर नथनी लगाए महिलाओं ने पूरी सड़क को अपने जुलूसों से भर दिया था। ऐसा लग रहा था जैसे कांगड़ा की महिलाओं की बाढ़ हमारा स्वागत कर रही हो। कई सुंदर चेहरे, नुकीली नाकें, गोल ठुड्डी, शर्मीली आँखें और लंबा कद हमें कांगड़ा की चित्रकला में चित्रित सुंदर महिलाओं की याद दिला रहे थे। कांगड़ा के कलाकारों ने अपने आस-पास की इस सुंदरता से प्रेरणा लेकर ही अपनी आकर्षक चित्रकला में महिलाओं को उकेरा होगा। कांगड़ा की इन महिलाओं ने न केवल घाटी

को सजाया, बल्कि इस कला को भी ऐसी सुंदरता प्रदान की, जो आने वाले समय में भी हमेशा के लिए मनमोहक बनी रहेगी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 41

गुलेर चित्रों की खोज

(पृष्ठ 282)

भोर हो चुकी थी। हमने पठानकोट स्टेशन से एक छोटी मीटर गेज ट्रेन पकड़ी। मैदानों को पीछे छोड़ते हुए ट्रेन धीरे-धीरे कांगड़ा की खूबसूरत घाटी में प्रवेश कर गई। पक्की सड़क पर सफर करना सुखद होता है, लेकिन ट्रेन से सफर करना बिलकुल अलग अनुभव है – दोनों तरह के अनुभव जरूर आजमाने चाहिए। ट्रेन के दोनों ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ और ढलान वाले खेत थे। कुछ खेतों में संतरे और गलगल के बाग थे, तो कुछ में मक्का और चरही के पौधे लगे थे। हमने खेतों में बने ऊंचे चबूतरों पर खड़े लड़कों और लड़कियों को कौवों और तोतों को भगाते देखा, जो मक्के की फसल को बर्बाद करने पर तुले हुए थे। इस जमीन पर, जहाँ अब रेलवे लाइन भी बिछाई गई है, कुछ साल पहले तक कच्ची सड़क हुआ करती थी, जिसका इस्तेमाल मुगल और सिख सेनाओं ने इस इलाके पर हमला करने के लिए किया था।

धौलाधार की बर्फीली चोटियाँ ट्रेन की जालीदार खिड़कियों से कभी-कभार दिखाई देती थीं। अगर यूरोप के किसी देश में ऐसे मनमोहक दृश्य देखने को मिलते, तो रेलवे विभाग यात्रियों को पहाड़ियों का नज़ारा दिखाने के लिए ट्रेन में बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियाँ ज़रूर लगवाता। यहाँ चोरी की कोई घटना नहीं होती, इसलिए मुझे नहीं पता कि किस अधिकारी ने मैदानी इलाकों की ट्रेनों के डिज़ाइन की नकल करके इस ट्रेन की सभी खिड़कियों में जाली लगवा दी।

रेल पटरी धीरे-धीरे ऊपर की ओर चढ़ती गई; ट्रेन गुलेर के छोटे से रेलवे स्टेशन पर आकर रुकी। स्टेशन पर पहुँचते ही मैं अपनी हैरानी छिपा नहीं सका क्योंकि मैं उस जगह पर था जहाँ कांगड़ा कला का जन्म हुआ था!

(पृष्ठ 283)
हम ट्रेन से उतरकर बाणगंगा नदी के किनारे पहाड़ी की चोटी पर स्थित हरिपुर किले को देखने गए। यह किला पूरे परिदृश्य पर भव्यता से खड़ा था। किले को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह कभी प्रभाव का एक मजबूत केंद्र रहा होगा।
बंगंगा एक चौड़ी, मानसूनी नदी है; जब हम पहुँचे तो उसमें पानी नहीं था। हमने लकड़ी के बड़े-बड़े तख्तों पर चलकर नदी पार की और हरिपुर कस्बे में पहुँचे। गुलेर के राजा बलदेव सिंह ने जरी का लबादा और सफेद चूड़ीदार पजामा पहना हुआ था, उनके सिर पर बनारसी शैली की पगड़ी बंधी थी। वे हमारे आने का इंतजार कर रहे थे। उनके पीछे दस-बारह नौकर खड़े थे। बिसंभर दास ने मेरा और आर्चर का उनसे परिचय कराया, और हमने उनसे मिलकर अपनी खुशी जाहिर की। आर्चर ने उनकी नाक की ओर देखकर कहा कि वे उनके पूर्वजों में से एक राजा गोवर्धन चंद जैसे दिखते हैं, जो बिल्कुल सही था। राजा ने भी इस बात की सराहना की।
हम गोल पत्थरों से बने रास्ते पर चलकर कस्बे तक पहुँचे। रास्ता बरगद और पीपल के पेड़ों से छायादार था। हर पेड़ के चारों ओर गोल चबूतरे बने हुए थे। घरों की दीवारें सफेद और भूरे रंग के गोल पत्थरों से बनी थीं। हरिपुर रिप वैन विंकल की शांत घाटियों जैसा एक शांत कस्बा लगता है। यहाँ एक बड़े तालाब के पीछे एक बाज़ार था। रास्ते में हमने कई पुराने मंदिर देखे और बाज़ार से गुज़रने के बाद एक बड़े मैदान में पहुँचे। इस मैदान में राजा लोग पोलो खेला करते थे। इस मैदान के एक कोने में एक डाक-बंगला है, जबकि बाकी कोनों में पुराने मंदिर हैं।
हम किले के पास पहुँच गए। इस किले की दीवारों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई थीं, जिनमें से होकर पीपल के पेड़ उग आए थे। हमें पता चला कि 1905 के भूकंप ने किले को यह क्षति पहुँचाई थी। हालाँकि किले का अधिकांश भाग जर्जर हो चुका है, फिर भी यह आज भी एक प्रमुख धार्मिक स्थल बना हुआ है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। हरिपुर पर शासन करने वाली शक्ति का। हम अपने घोड़ों से नीचे उतरे और इस स्थान से शहर को देखा। हमारे ठीक सामने पहाड़ी की चोटी पर एक दुर्गा मंदिर था। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक शेर की मूर्ति है। मंदिर तक पहुँचने के

लिए एक बहुत ही खड़ी ढलान पर चढ़ना पड़ता है, इसलिए केवल सबसे साहसी तीर्थयात्री ही वहाँ पहुँच पाते हैं। अक्सर नवविवाहित जोड़े या मन्नत मांगने वाले लोग अपनी मनोकामना पूरी होने पर इस मंदिर में चढ़ते हुए देखे जा सकते हैं।

(पृष्ठ 284)

इस किले के बाहर बने चबूतरे से बंगंगा नदी बहती हुई दिखाई देती है। किले के जीर्ण-शीर्ण महलों को देखने के बाद हम राजा बलदेव सिंह के वर्तमान निवास स्थान पर पहुँचे। राजा ने हमारे लिए एक विशाल कमरे का इंतज़ाम किया। फर्श पर कालीन बिछा था और उस पर सफेद तकिए और चादरें रखी थीं। हमने अपने जूते उतारे, कालीन पर बैठे और बिसंभर दास से राजा से उनके कला संग्रह का अनुरोध करने को कहा। राजा ने हमें संदेश भेजा कि हम पहले भोजन कर लें और फिर चित्र देखें।

दोपहर के भोजन के बाद हमने थोड़ी देर आराम किया, लेकिन पुराने चित्रों को देखने की हमारी इच्छा अभी भी प्रबल थी। लगभग 3 बजे, राजा ने चित्रों से भरे चार बड़े कपड़े के थैले हमारे पास भेजे। राजा कला प्रेमी थे और उन चित्रों के इतिहास के बारे में काफी जानकार थे। उन्होंने प्रत्येक चित्र के पीछे उर्दू में चित्र का विषय और निर्माण तिथि अंकित कर रखी थी। अधिकांश चित्र क्षेत्र के राजाओं और रानियों के थे, जिनमें से अधिकतर में राजा गोवर्धन चंद को दर्शाया गया था। इससे पता चलता है कि राजा ने इस कला को इतना प्रोत्साहित किया कि कलाकारों ने उनकी छवि को हूबहू चित्रित करके सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। कुछ चित्रों का विषय राधा-कृष्ण की लीला था। हम उन्हीं चित्रों को देख रहे थे जब बिसंभर दास टिक्का साहब का संदेश लेकर आए कि हमें विशेष रूप से मनुष्यों के बीच प्रेम और जुनून को दर्शाने वाले कुछ चित्र देखने चाहिए। 218 टिक्का साहब नशे में थे और दूसरे कमरे में बंद थे, राजा नहीं चाहते थे कि हम उनसे उस हालत में मिलें।

कुछ समय बाद, राजा ने हमें एक और कपड़े का थैला भेजा जिसमें वे चित्र थे जिनका ज़िक्र टीका साहब ने किया था। वे चित्र देखने में बेहद सुंदर थे; उन्हें विशेष रूप से आर्चर को दिखाने के लिए चुना गया था। हमने उन चित्रों का मूल्यांकन किया और राजा को बताया कि हम उन्हें किस कीमत पर खरीद सकते हैं। उन्होंने हमारा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और हमने उन्हें पंजाब संग्रहालय के लिए खरीद लिया।

ये चित्र बताते हैं कि कलाकार केवल वैष्णव धर्म से ही प्रभावित नहीं थे, बल्कि पंजाब

की प्रेम कथाओं से भी प्रेरित थे। इनमें हीर-रांझा, मिर्ज़ा-साहिबान और सोहनी-महिवाल के चित्र देखे जा सकते हैं। मिर्ज़ा भाला लिए घोड़े पर सवार हैं, जबकि साहिबान अपनी सहेलियों के बीच बैठी चरखे पर सूत कात रही हैं। साहिबान मिर्ज़ा के प्रेम में इतनी मग्न हैं कि चरखा चलाना भूल जाती हैं; वे सपेरे के वश में आए सांप की तरह व्यवहार करती हैं। सोहनी को चेनाब नदी में तैरते हुए दिखाया गया है, जबकि महिवाल नदी के दूसरे किनारे पर भैंसें चरा रहे हैं। महिवाल समय बिताने के लिए अलगोजा खेल रहे हैं।

218 टिक्का साहिब: राजकुमार, राजा का पुत्र और उत्तराधिकारी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

एक सुंदर और पीड़ादायक दृश्य पहाड़ी प्रेम कहानी को दर्शाता है। एक राजकुमारी कपड़े के पर्दे के पीछे स्नान करती हुई दिखाई दे रही है और पृष्ठभूमि में बर्फ से ढकी चोटियाँ नज़र आ रही हैं। परदे का कपड़ा पतला और पारदर्शी है, जिससे राजकुमारी का सुंदर शरीर दिखाई दे रहा है। कोने में खड़ा डूम जाति का एक लड़का स्नान करती राजकुमारी को निहार रहा है। कहा जाता है कि उस लड़के को राजकुमारी से प्रेम हो गया और वे दोनों भाग गए। चित्र के दूसरे भाग में दिखाया गया है कि उस भागने के बाद डूम जाति के लड़के का क्या हुआ। राजा के सैनिकों ने दंपति का पीछा किया और उन्हें तीरों से मार डाला। राजा को एक चबूतरे पर बैठे हुए यह दृश्य देखते हुए दिखाया गया है। वह अपनी बेटी की मृत्यु से दुखी हैं, लेकिन उससे नाराज़ भी हैं। कलाकार ने राजा के चेहरे पर दुख और क्रोध के अंतर्विरोधाभास को खूबसूरती से व्यक्त किया है।

हमने राजा से पूछा कि क्या हमसे पहले किसी और ने यह कला संग्रह देखा था। उन्होंने बताया कि 1929 में श्री फ्रेंच उनसे मिलने आए थे। वे पहले कला विशेषज्ञ थे जिन्होंने अपनी पुस्तक '219 हिमालयन आर्ट' के माध्यम से गुलेर कला के बारे में जागरूकता फैलाई थी। उनके बाद पंजाब के एक वित्त आयुक्त श्री लतीफी उनसे मिलने आए और राजा ने उन्हें अपनी कुछ पेंटिंग भेंट कीं। इसके बाद, पेंटिंग को मोटे

लकड़ी के बक्सों में बंद कर दिया गया और किसी अन्य अधिकारी को नहीं दिखाया गया। यही कारण है कि वे पेंटिंग गुलेर में पाई जा सकीं।
चित्रों को देखने के बाद, हम पहाड़ी के ऊपरी हिस्से में स्थित आवासीय क्षेत्र का दौरा करने गए। घरों में केले के पेड़ लगाना एक आम बात है, गुलेर कला में अक्सर केले के पेड़ चित्रित किए जाते हैं। आगे एक बड़ा तालाब है। यह हर कोने पर मंदिरों से घिरा हुआ है और बरगद और पीपल के पेड़ों से घिरा हुआ है। यहाँ से घाटी का एक बहुत ही जीवंत और स्पष्ट दृश्य दिखाई देता है; नदी के किनारे एक जल चक्की है। सूरज डूब चुका था और पहाड़ अंधेरे में छिप गए थे। हम डाक बंगले में एक रात रुके। हरिपुर में हमारे आने की खबर फैल चुकी थी, जिसके चलते कस्बे के कई पुरुष और स्कूली बच्चे बंगले के बरामदे में बैठकर हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें कला में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन वे कस्बे की ज़रूरतों और समस्याओं के बारे में मुझसे बात करना चाहते थे। उन्होंने मुझसे वहाँ एक कॉलेज स्थापित करने और बाणगंगा नदी पर एक पुल बनवाने का अनुरोध किया, क्योंकि बरसात के मौसम में नदी पार करना मुश्किल हो जाता था। इतनी छोटी जगह में कॉलेज बनाना नामुमकिन था, लेकिन मैंने वहाँ एक पुस्तकालय और एक छोटी कला दीर्घा स्थापित करने का सोचा।

(पृष्ठ 286)
पुस्तकालय में कांगड़ा से संबंधित पुस्तकें रखी जा सकती हैं, और उन पुस्तकों में प्रयुक्त चित्रों को फ्रेम करके कला दीर्घा में प्रदर्शित किया जा सकता है। इससे स्थानीय जनता कांगड़ा कला के महत्व से अवगत होगी।
उनकी ज़रूरतें सुनने के बाद, हमने उनसे हमारे लिए पहाड़ी गीत गाने का अनुरोध किया। एक लड़के ने एक गीत गाया जिसमें एक माँ अपने बेटे को जगाते हुए कहती है कि सूरज निकल आया है, इसलिए उसे उठकर अच्छे से पढ़ाई करनी चाहिए। इस तरह वह मंत्री बनेगा और हवाई जहाज़ उड़ाएगा। भारत की स्वतंत्रता ने लोगों के दिलों को उल्लास और उत्साह से भर दिया है। स्वतंत्रता से पहले, लोग केवल सैनिक बनने के बारे में सोचते थे, और कुछ नहीं। अनपढ़ लड़के या तो बर्तन धोते थे या खाना बनाते थे। स्वतंत्रता के कारण, शिक्षा दूर-दूर तक फैली।

oclc/2344921 पर जाकर एक प्रति देखें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। और इस नवप्राप्त ज्ञान ने कई रोजगारों के मार्ग प्रशस्त किए हैं। प्रगति की इस लहर से कांगड़ा के लोगों को भी लाभ हुआ है। हरिपुर के निवासियों से विदा लेकर हमने खाना खाया और सोने चले गए। मैंने अपने पैरों को गर्म पानी की बाल्टी में भिगोया, जिससे दिन भर की थकान दूर हो गई। मैंने अपने पैरों को पोंछा और रजाई ओढ़ ली। रजाई ने मुझे गर्माहट और आराम दिया। कंबल का इस्तेमाल करने वाले लोग रजाई के आराम को कैसे समझ सकते हैं? मुझे कंबल से नफरत है, रजाई से जो आराम और गर्माहट मिलती है, वह किसी कंबल से नहीं मिल सकती, चाहे वह कहीं भी बना हो। लंदन की ठंड में दो साल रहने के दौरान मुझे अपनी रजाई की बहुत याद आई। मुझे अंग्रेजों पर तरस आता था। मैं उन्हें मूर्ख समझता था कि वे कंबल और चादर का एक लिफाफा बनाकर गद्दे पर बिछाकर उसमें सोते हैं। मुझे यकीन है कि हम ग्रामीण पंजाबियों की खान-पान और सोने की आदतें उनसे कहीं बेहतर हैं। इन्हीं विचारों के साथ मैं बिस्तर पर गया, डूम बॉय और राजकुमारी की पेंटिंग को याद किया और सो गया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 42

गुलेर चित्रों का इतिहास

(पृष्ठ 287)

इन चित्रों को समझने के लिए गुलेर के इतिहास से परिचित होना आवश्यक है। राजा हरि चंद ने 1405 में गुलेर को अपनी राजधानी बनाया। कांगड़ा के राजा हरि चंद ने बहुत ही विचित्र परिस्थितियों में कांगड़ा छोड़ दिया था। कहा जाता है कि राजा अपने साथियों के साथ शिकार कर रहे थे जब उन्होंने एक जंगली सूअर देखा और उसका शिकार करने के लिए उसके पीछे चल पड़े। सूअर उनसे बचता रहा, राजा उसका पीछा

करते रहे। रात हो गई और वे अपने साथियों से अलग हो गए। वे रास्ता भटक गए और अपने घोड़े सहित एक खुले कुएँ में गिर गए। कुछ समय बाद, एक व्यापारी खच्चरों का झुंड बेचने के लिए वहाँ से गुजरा। व्यापारी ने उन्हें कुएँ से बचाया। हालाँकि, राजा की अनुपस्थिति के कारण, उस समय तक उनके छोटे भाई ने राजगद्दी संभाल ली थी और उनकी रानियों ने सती कर ली थी।220
जब हरि चंद को इस बात का पता चला, तो उन्होंने कांगड़ा वापस न लौटने का फैसला किया। वे हरिपुर आए और वहाँ नई राजधानी स्थापित की। कहा जाता है कि जहाँ अब किला है, वहाँ एक ग्वाला अपनी गायें चराया करता था। एक दिन ग्वाले ने एक बाघ और एक बकरी को एक साथ झरने से पानी पीते देखा। जब हरि चंद वहाँ पहुँचे, तो ग्वाले ने उन्हें वह जगह दिखाई। जब भी कोई बड़ी इमारत, विशेषकर किला बनाया जाता था, तो उससे पहले पशु बलि (बलि) दी जाती थी। कहा जाता है कि उसी ग्वाले की बलि दी गई थी और उसका सिर किले की नींव में गाड़ दिया गया था। इसीलिए गुलेर को पहले ग्वालर कहा जाता था।221
हरि चंद के कई वंशज थे जिनके शासनकाल में कोई अनूठी घटना नहीं घटी।

(पृष्ठ 288)
आइए 17वीं शताब्दी से गुलेर और उसके राजाओं के इतिहास को समझते हैं। रूप चंद से लेकर विक्रम सिंह तक, गुलेर के राजाओं के मुगल शासकों के साथ बहुत अच्छे संबंध थे। रूप चंद (1610) ने सम्राट जहांगीर की मुगल सेना को कांगड़ा किले पर आक्रमण करने में सहायता की, और मुगल सम्राट ने उन्हें एक हाथी और एक घोड़ा उपहार में दिया। इसके बाद, यह राजा सम्राट का साझीदार बन गया, और सम्राट ने उसे दक्षिण भारत में एक अभियान पर भेजा। जहांगीर के बाद, शाहजहाँ ने 1634 में रूप चंद को गढ़वाल में एक सैन्य अभियान पर भेजा, और इसी अभियान में रूप चंद शहीद हो गए। रूप चंद के पुत्र मान सिंह (1635) ने भी शाहजहाँ के लिए काम किया और उत्तर-पूर्व में सम्राट के लिए लड़ते रहे। बाद में वे औरंगजेब की सेना में भी शामिल हो गए और 1647 में कंधार के युद्ध में भाग लिया। उनके पुत्र विक्रम सिंह एक बलवान व्यक्ति थे। कहा जाता है कि वे नारियल को उंगलियों से दबाकर तोड़ सकते थे।

220 सती: एक हिंदू प्रथा (अब प्रतिबंधित) जिसमें विधवा महिलाएं स्वयं को अग्नि में समर्पित कर देती थीं। यह आत्मदाह उनकी पवित्रता और पति के प्रति भक्ति की घोषणा मानी जाती थी, ठीक उसी तरह जैसे पौराणिक कथाओं में दक्ष प्रजापति की पुत्री सती, जिनका विवाह भगवान शिव से हुआ था और उन्होंने अपने पिता द्वारा पति का अपमान किए जाने पर स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया था। औपनिवेशिक काल से पहले, समाज सुधारक राजा राममोहन रॉय ने इस प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया था क्योंकि कई विधवाओं को भी उनके पतियों की चिता पर जबरन जला दिया जाता था। इसे औपनिवेशिक सरकार ने 1829 में समाप्त कर दिया था। 221 ग्वालर नाम ग्वाला या चरवाहे से आया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

दलीप सिंह के शासनकाल के दौरान, मुगल दरबार में काम करने वाले कई हिंदू कलाकार नादिर शाह के आक्रमण के कारण विस्थापित हो गए। उनमें से कई पहाड़ी राज्यों में चले गए। उस समय तक मुगल सल्तनत कमजोर हो चुकी थी, इसलिए 1739 में नादिर शाह के आक्रमण ने मुगल साम्राज्य की राजधानी दिल्ली में भारी अराजकता पैदा कर दी। हजारों नगरवासी मारे गए और कई राजस्थान और पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों में भाग गए। इनमें कुछ हिंदू कलाकार भी शामिल थे। इन प्राचीन कलाकारों में पंडित सेउ और उनके पुत्रों नैनसुख और मानकू की रचनाएँ मिलती हैं। यह माना जा सकता है कि कांगड़ा कला की उत्पत्ति हरिपुर-गुलेर में इन कलाकारों के कार्यों से हुई। नैनसुख 1748 में जम्मू चले गए; उन्होंने वहाँ राजा बलवंत देव के लिए काम किया। एक चित्र में, राजा विक्रम सिंह को मुगल शैली में हाथी पर बैठे हुए दिखाया गया है। यह चित्र वर्तमान में चंडीगढ़ के पंजाब संग्रहालय में है। एक अन्य चित्र में राजा दलीप सिंह को पोलो खेलते हुए दिखाया गया है। इस चित्र में राजा और उनके साथी मुगल वेशभूषा में चित्रित हैं; उन्होंने लबादे पहने हैं और उनके सिर पर बंधे दुपट्टे सीधे हैं। इस चित्र में राजा अकबर की तरह दिखते हैं।

पुरुषों और घोड़ों के चित्रों को बड़ी सावधानी से बनाया गया है। यह चित्र पोलो खेलते लोगों का एक अच्छा उदाहरण है। खिलाड़ियों के चेहरे के भाव दर्शाते हैं कि वे खेल में कितने मग्न हैं, और गेंद को हिट करने की उनकी इच्छा को उनके चित्रण से स्पष्ट रूप

से समझा जा सकता है।

(पृष्ठ 289)
घोड़ों की मुद्रा से उनकी तीव्र गति और शक्ति का आभास होता है। इस चित्र में मुगल चित्रकला की सभी अनूठी विशेषताएं मौजूद हैं।
राजा गोवर्धन चंद की एक और पेंटिंग है। इसमें राजा मुगल शैली में हाथी पर विराजमान हैं। हाथी को खूबसूरती से सजाया गया है और महावत की दाढ़ी भी मुगल शैली में संवारी गई है। कला शैली और चित्रित दृश्य के लिहाज से यह पेंटिंग मुगल शैली की चित्रकला का एक अच्छा उदाहरण है।
गोवर्धन चंद (1743-1773) के शासनकाल में गुलेर में निर्मित चित्रकलाएँ कांगड़ा कला के विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। मैदानी इलाकों के निकट गुलेर की स्थिति और गुलेर के राजाओं के मुगल शासकों के साथ संबंधों ने इस विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि गुलेर को कांगड़ा कला का जन्मस्थान माना जाता है और सबसे प्राचीन कांगड़ा चित्रकलाएँ गुलेर में ही बनाई गई थीं। श्री विलियम आर्चर ने बिल्कुल सही कहा है, “गुलेर पहाड़ी कला के अड़तीस केंद्रों में से केवल एक केंद्र नहीं है, बल्कि वास्तव में यह पंजाब की पहाड़ी चित्रकला की एक विशिष्ट श्रेणी का जन्मस्थान है।” गुलेर ने न केवल अपनी स्थानीय कला में सूक्ष्मता को जन्म दिया, बल्कि वास्तव में, जब यह कला 1790 में अपने चरम पर पहुँची, तो इसे ‘कांगड़ा कला’ के नाम से प्रसिद्धि मिली।
अब हम उन चित्रों की बात करेंगे जिन्हें कांगड़ा कला माना जाता है। राजा गोवर्धन चंद का एक चित्र है जिसमें वे भगवा वस्त्र पहने अपने प्रसिद्ध घोड़े पर बैठे हुए दिखाए गए हैं। चित्र की पृष्ठभूमि लाल रंग की है। गोवर्धन चंद का घोड़ा जालंधर के नवाब अदीना बेग को बहुत प्रिय था। बेग ने चंद से उनका घोड़ा मांगा, लेकिन चंद ने मना कर दिया। दोनों के बीच युद्ध हुआ, जिसमें अदीना बेग की हार हुई और यह प्रसिद्ध घोड़ा राजा गोवर्धन चंद के पास ही रह गया। पुराने समय में घोड़ों को बहुत कीमती माना जाता था। महाराजा रणजीत सिंह अपने घोड़े लैली को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय मानते थे और उन्होंने उसकी काठी को 30 लाख रुपये के हीरे और रत्नों से सजाया था।
राजा गोवर्धन चंद की एक और सुंदर पेंटिंग है जिसमें उन्हें दरबारी संगीत समारोह के

बीच बैठे हुए दिखाया गया है - यह पेंटिंग अपनी चयन शैली के कारण अद्वितीय है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। रंगों और मुद्रा की कोमलता का अद्भुत संगम है। इसे एक सरल शैली में चित्रित किया गया है - राजा को बंगंगा के ऊपर बने बरामदे में बैठे हुक्का पीते हुए दिखाया गया है। राजा के साथ बैठे दरबारियों में से एक तिब्बत के भिक्षु जैसा दिखता है।

(पृष्ठ 290)
राजा बलदेव सिंह के अनुसार, यह दरबारी पिंडोरी का महंत था। राजा ने भगवा वस्त्र धारण किया हुआ है और दरबारियों के वस्त्र विभिन्न रंगों और शैलियों में चित्रित किए गए हैं। 222 शहनाई और नगाड़ा वादक भी रंगीन वस्त्रों में दिखाए गए हैं। नगाड़े पीले वस्त्र से ढके हुए हैं। छज्जे के नीचे खड़े हरे वृक्षों का समूह इस दृश्य को असीम सुंदरता प्रदान करता है। इस चित्र में मुगल और कांगड़ा चित्रकला की विशिष्ट विशेषताएं हैं। राजा संगीत सुन रहे हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो वातावरण में एक विचित्र नशा व्याप्त हो। यह चित्र मुगल कला शैली के सर्वश्रेष्ठ चित्रों से तुलना करने योग्य है। इसमें एक कोमल, नाजुक भाव और आध्यात्मिक रंग है, जो मुगल चित्रों में नहीं मिलता। इस युग के कांगड़ा चित्रों में अत्यंत आकर्षक रंग संयोजन हैं। ऐसा लगता है मानो कांगड़ा चित्रकारों के पास भोर के दृश्यों और सात रंगों वाले इंद्रधनुषों का भरपूर संग्रह हो।
एक अन्य चित्र में, राजा गोवर्धन चंद अधिक उम्र के दिखाई देते हैं, उनके पास उनकी तेजस्वी आंखों वाली रानी और बच्चे हैं। राजा अपने पुत्र कुंवर प्रकाश चंद को मिठाई खिलाते हुए दर्शाए गए हैं। चटाई पर दो सिरतोड़ा बैठे हुए हैं। सिरतोड़ा उस बच्चे को दर्शाता है जो एक दासी से जन्मा है। कांगड़ा कला के विकास के परिप्रेक्ष्य से यह जानना अत्यंत रोचक है कि राजा गोवर्धन चंद की रानी बसोहली राज्य से थीं। बसोहली 1678 से राजपूत कला का केंद्र रहा है। वहां, इस कला शैली की शुरुआत राजा किरपाल पाल के शासनकाल (1678) में हुई और मोदनी पाल (1725) के शासनकाल में यह अपने चरम पर पहुंची। बसोहली चित्रों के रंग और शैली गुलेर के प्रारंभिक चित्रों में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

कांगड़ा कला और मुगल कला में अंतर और पहचान के क्या साधन हैं? दोनों शैलियों में विस्तृत और बारीक रेखाचित्रों का चित्रण होता है। हालांकि, कांगड़ा चित्रों में पर्वत, नदियाँ और वन चित्रित होते हैं, जबकि मुगल चित्रों में केवल उत्तरी मैदान ही दिखाई देते हैं। कांगड़ा कला में प्रकृति के प्रति जो प्रेम झलकता है, वह मुगल कला में नहीं है। कांगड़ा चित्रों की मुख्य विशेषता यह है कि यह एक हिंदू कला शैली है, और इसमें वैष्णव संप्रदाय और भगवान कृष्ण की प्रेम लीलाओं के प्रति भक्ति पर बल दिया जाता है। भगवान कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति ने कांगड़ा चित्रकला को असाधारण रूप से सुंदर बना दिया है। मुगल चित्रों में केवल मुगल सम्राट या उनके दरबारी ही दिखाई देते हैं, और कुछ मामलों में शिकार के दृश्य भी; सम्राटों की पत्नियों और हरमों को भी चित्रित किया गया है। दरबारी चित्रकला कभी भी उच्च कोटि की कला नहीं हो सकती क्योंकि उनमें चापलूसी की बू आती है। कलाकार तभी उच्च कोटि की कला का सृजन कर सकता है जब उसका मन स्वतंत्र हो, और कला सृजन का उसका एकमात्र उद्देश्य स्वयं को आनंद देना हो। यह स्वतंत्रता गुलेर की पेंटिंग्स में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, और इन पेंटिंग्स को बनाने वाली बारीक रेखाएं ऐसी प्रतीत होती हैं मानो वे संगीत रच रही हों।

222 संगीत वाद्ययंत्रों में, शहनाई एक पवन वाद्ययंत्र है जबकि नगाड़ा एक बड़ा ढोल है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 291)

सन् 1773 में प्रकाश चंद गुलेर के शासक बने। एक चित्र, जो संभवतः राजा गोवर्धन चंद के शासनकाल से संबंधित है, में प्रकाश चंद को उनके भाई पराक्रम चंद के साथ दर्शाया गया है। प्रकाश चंद के शासनकाल में गुलेर कला का अत्यधिक विकास हुआ और इस काल की कला का स्तर अत्यंत उच्च है। कई चित्रों में राजा के पारिवारिक जीवन को चित्रित किया गया है। एक चित्र राजा प्रकाश चंद की रानी, चंबा की श्रीमती अनंती देवी का है। रानी अपने पुत्र भूप सिंह के साथ बैठी हैं और उनके चारों ओर सेविकाएँ हैं। एक सेविका भूप सिंह को खिलौने देती हुई दिखाई दे रही है। दो

मरासी महिलाएँ तालाब के किनारे सितार और ढोलक बजाती हुई दिखाई दे रही हैं। एक सेविका पिंजरे में बंद तोते को दाना खिला रही है। एक बंदर फव्वारे से पानी पीता हुआ दिखाई दे रहा है। सफेद और पीले फूल और महिलाओं के रंगीन वस्त्र इस चित्र को एक असाधारण आकर्षण प्रदान करते हैं। राजा प्रकाश चंद फिजूलखर्ची के लिए जाने जाते थे। कहा जाता है कि उनकी एक अजीब सनक थी - कपड़े की पट्टियाँ फाड़कर अपनी प्रजा में बाँटना। उन्हें कपड़े फाड़ने में बहुत आनंद आता था। उनका खर्च हमेशा उनकी आमदनी से अधिक होता था और वे अक्सर साहूकारों से कर्ज लेते थे। हरिपुर के अवतारा ब्राह्मण उनके खास साहूकारों में से एक थे। एक चित्र में राजा प्रकाश चंद को साहूकार अवतारा के घर में बैठे दिखाया गया है। सफेद दाढ़ी वाले राजा हुक्का पी रहे हैं और अवतारा का बेटा प्रकाश चंद के बेटे भूप सिंह को लड्डू खिला रहा है। कहा जाता है कि हिसाब-किताब को लेकर राजा और साहूकार के बीच झगड़ा हो गया। राजा ने फैसला किया कि उन्हें और साहूकार को एक पीपल के पेड़ से बांध दिया जाए। दोनों को पीपल के पेड़ से बांध दिया गया और रात में पेड़ की एक शाखा साहूकार के सिर पर गिर गई। साहूकार वहीं गिर पड़ा, जिससे यह साबित हो गया कि राजा सही था और साहूकार झूठ बोल रहा था।
राजा प्रकाश चंद के प्रधान मंत्री ध्यान सिंह अपनी बुद्धिमत्ता और कार्यकुशलता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने राज्य के राजनीतिक मामलों का सुचारू रूप से संचालन किया। राजा प्रकाश चंद के शासनकाल के उत्तरार्ध की कई चित्रों में ध्यान सिंह को प्रधान मंत्री के रूप में चित्रित किया गया है। एक चित्र में, ध्यान सिंह

(पृष्ठ 292)
एक व्यक्ति धनुष लिए हुए कुंवर भूप सिंह के पीछे चल रहा है। भूप सिंह ध्यान सिंह के साथ अपने पिता के राज्य का अवलोकन करने के लिए निकल पड़े हैं। उनके जुलूस में ध्वजवाहक झंडे लिए हुए हैं। राजकुमार एक गाँव के पास पहुँच गए हैं और नगाड़ा वादक सभी को इसके बारे में सूचित कर रहा है।
भूप सिंह ने अपना नगाड़ा पीटकर राजकुमार के आगमन की सूचना दी। उनके पीछे मोर पंख का पंखा लिए एक सेवक खड़ा है। उनके पीछे कई सेवक अपने हाथों में बाज़ लिए चल रहे हैं।
एक अन्य चित्र में, ध्यान सिंह को भूप सिंह के साथ शिकार करते हुए दिखाया गया

है। उन्होंने एक हिरण पर तीर चलाया है। दूसरी ओर, भूप सिंह के बहनोई नौरंग पटियाल अपनी तलवार से एक जंगली सूअर को काट रहे हैं। एक नौकर पर बाघ हमला कर रहा है। पृष्ठभूमि में कई नौकर हाल ही में मारे गए जंगली सूअरों को अपने कंधों पर उठाए हुए हैं। यह चित्र बहुत ही रोचक है।
राजा प्रकाश चंद से कुछ मतभेद होने के कारण, प्रधानमंत्री ध्यान सिंह ने 1785 में गुलेर छोड़ दिया। इस प्रधानमंत्री ने कोटला किले पर कब्जा कर लिया और स्वयं को राजा घोषित कर दिया। ध्यान सिंह इतने शक्तिशाली हो गए कि संसार चंद युवावस्था में भी कोटला किले को पुनः प्राप्त करने में असमर्थ रहे, और ध्यान सिंह ने इस पर अपना शासन जारी रखा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। यह किला कई वर्षों तक गुलेर के कब्जे में रहा। अंततः, सरदार देसा सिंह मजीठिया ने ध्यान सिंह के भतीजे किशन सिंह से यह किला छीन लिया। महाराजा रणजीत सिंह ने किशन सिंह को मिर्थल सहित सत्ताईस गांवों की जागीर उपहार में दी। महाराजा रणजीत सिंह किशन सिंह के सबसे छोटे बेटे अमर सिंह, जिन्हें उनकी लंबी और सुंदर दाढ़ी के कारण 'दाढ़ीवाला' भी कहा जाता था, को प्रतिदिन 8 आना देते थे। इस तरह कटी हुई मुगल दाढ़ी की परंपरा का अंत हुआ और लंबी, लहराती दाढ़ी रखने का चलन शुरू हुआ। राजा गोवर्धन चंद के शासनकाल के गुलेर के पुराने चित्र कैप्टन सुंदर सिंह नामक एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के पास थे, जो प्रधानमंत्री ध्यान सिंह के वंशज थे। अब ये चित्र पंजाब संग्रहालय में रखे गए हैं।
भूप सिंह 1790 में राजा बने। वे गुलेर के अंतिम राजा थे। उनके शासनकाल की कई चित्रकलाओं से स्पष्ट है कि वे अपने पिता की तरह कला के प्रबल प्रेमी थे और कलाकारों की दिल खोलकर मदद करते थे। एक सुंदर चित्र में भूप सिंह अपनी रानी और पुत्र शमशेर सिंह के साथ बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं। राजा और रानी एक मूढ़ी पर बैठे हैं। भूप सिंह का पुत्र उनकी गोद में बैठा है। पृष्ठभूमि में केले के पेड़ हैं, जो अक्सर गुलेर की चित्रकलाओं में दिखाई देते हैं। 1815 के बाद बनी गुलेर की चित्रकलाएँ सिख कला शैली से संबंधित हैं।

इन चित्रों में लोगों की दाढ़ी कटी हुई नहीं है और उनके सिर पर एक विशेष शैली का वस्त्र है। रणजीत सिंह ने 1813 में गुलेर पर विजय प्राप्त की। महाराजा ने भूप सिंह से पठानों के विरुद्ध अपने संघर्ष में सहायता करने का अनुरोध किया और जब गुलेर खाली हो गया, तो उन्होंने भूप सिंह को लाहौर बुलाया। उन्होंने देसा सिंह मजीठिया को दस हजार सिंहों की सेना के साथ गुलेर पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा। उन्होंने विस्थापित राजा को उनके खर्चों के लिए 20,000 रुपये की जागीर दी। भूप सिंह के शासनकाल के अंतिम दिनों के एक चित्र में सिख कला शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भूप सिंह एक बरामदे पर बैठे हैं। नीचे बाणगंगा नदी बह रही है और मंत्री घंटा खत्री उनके सामने खड़े हैं। सभी के वस्त्र सिखों के वस्त्रों के समान हैं।

भूप सिंह के बाद, 1826 में शमशेर सिंह राजा बने। एक चित्र में शमशेर सिंह को अपने चाचा के साथ खेलते हुए दिखाया गया है। चाचा घोड़े की तरह झुके हुए हैं और उनका भतीजा उनकी पीठ पर बैठा है। यह चित्र दर्शाता है कि राजाओं के पुत्रों को कितना लाड़-प्यार मिलता था। जब सिखों को पहले एंग्लो-सिख युद्ध में हार का सामना करना पड़ा, तो शमशेर सिंह ने उन्हें अपने क्षेत्र से खदेड़ दिया। इस राजा का निधन 1873 में हुआ।

शमशेर सिंह की मृत्यु से पहले उनका कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उनके भाई जय सिंह 1877 में राजा बने। राजा शमशेर सिंह के समय से संबंधित एक चित्र में जय सिंह को उनकी माता के साथ दर्शाया गया है। उनकी माता रानी चंबियाल को दरबारी दर्जी द्वारा आयोजित यज्ञ में भाग लेते हुए दिखाया गया है। दर्जी हवन के पास बैठे आहुति दे रहे हैं, उनके बगल में सफेद वस्त्र पहने एक ब्राह्मण पुजारी बैठे हैं। उनके हाथों में एक पुस्तक है जिससे वे प्रार्थनाएँ पढ़ रहे हैं। कुछ मिरासी महिलाएं आगे बैठी गा रही हैं। सभी चित्रों में पुरुषों और महिलाओं को कोमलता और कुशलता से चित्रित किया गया है, और ऐसा प्रतीत होता है कि इस दरबार के चित्रकारों में भी पूर्व के कलाकारों की तरह कलात्मक क्षमताएँ थीं। एक अन्य चित्र में राजा जय सिंह के विवाह जुलूस को दर्शाया गया है। यह चित्र स्पष्ट रूप से सिख कला शैली के प्रभाव को दर्शाता है। एक अन्य चित्र में राजा जय सिंह को मुजरा करते हुए दिखाया गया है, नर्तकियों को उतनी स्वाभाविक रूप से चित्रित नहीं किया गया है जितना कि किया जाना चाहिए

था। एक अन्य चित्र में राजा जय सिंह को उनके पुत्र राजकुमार रघुनाथ सिंह के साथ दर्शाया गया है। यह चित्रकला गुलेर कला का सर्वोत्तम उदाहरण है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 294)

राजा, उनका पुत्र और सेवक, सभी भव्य वस्त्र पहने हुए हैं और उनके सिर के आभूषण मोतियों से जड़े हुए हैं। इस सारी भव्यता और वैभव में इस कला का पतन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि गुलेर कला का पतन इसी क्षण से शुरू हुआ।

1890 के बाद गुलेर में यह कला लुप्त हो गई। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका कारण बदलते समय और लोगों की बदलती रुचियां थीं। हालांकि जागीरदारी व्यवस्था में लाखों समस्याएं थीं, फिर भी यह नकारा नहीं जा सकता कि उस दौरान अद्वितीय और असाधारण रूप से सुंदर कला का विकास होता रहा। जागीरदारी व्यवस्था के अंत के कारण, राजाओं द्वारा कलाकारों को दिया जाने वाला संरक्षण कम होता गया और कांगड़ा कला भी धीरे-धीरे लुप्त होने लगी।

इन खूबसूरत चित्रों को बनाने वाले लोग कौन थे? राजा बलदेव सिंह के अनुसार, ये लोग तरखान और सुनियार जाति के थे और उनके वंशज आज भी हरिपुर में पाए जा सकते हैं।

इन समकालीन कलाकारों के पास कला का कोई पैतृक ज्ञान या अनुभव नहीं है, और वे दरवाजों और खिड़कियों पर चित्रकारी करके अपनी आजीविका कमाते हैं।

जैसे मनुष्य बचपन, युवावस्था, मध्य आयु और वृद्धावस्था से गुजरता है, वैसे ही कांगड़ा कला भी चार अलग-अलग चरणों से गुजरी। पहला चरण अनुभव का था, जब कलाकार कला की एक नई शैली को अपनाने का प्रयास कर रहे थे। गुलेर में यह काल 1661 से 1695 तक (विक्रम सिंह से दलीप सिंह के शासनकाल तक) चला। जब गोवर्धन चंद और प्रकाश चंद ने 1740 से 1790 तक शासन किया, तब गुलेर में कांगड़ा कला अपने चरम पर पहुंची। गोवर्धन चंद के शासनकाल के शुरुआती चित्रों में असाधारण सादगी और सुंदरता झलकती है! भगवान कृष्ण और उनकी गोपियों के कई चित्र गोवर्धन चंद के शासनकाल के अंतिम दिनों में बनाए गए थे। इस चरण को

कांगड़ा कला का वसंत (बसंत) कहा जा सकता है। प्रकाश चंद के शासनकाल में गुलेर कला में और भी निखार आया। 1790 से 1878 तक गुलेर चित्रों पर सिख कला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह चरण भूप सिंह से जय सिंह के शासनकाल को संदर्भित करता है। अब कला की प्रतिभा अलंकरण और सूक्ष्मता की ओर बढ़ने लगी, लेकिन कला का सृजन दिन-प्रतिदिन घटता चला गया। मनुष्य के विकास में भी, अत्यधिक सजावट और अलंकरण कला के पतन का संकेत देते हैं। यह चरण कांगड़ा कला के पतन को दर्शाता है, और इस कला का पतन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

(पृष्ठ 295)
ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य के जीवन में होता है, एक विशेष शिखर पर पहुँचने के बाद कला और साहित्य वृद्धावस्था के लक्षण दिखाने लगते हैं। कला एक समय में इतनी सशक्त रूप से विकसित क्यों होती है और दूसरे समय में क्यों पतन की ओर चली जाती है; यह प्रश्न इतिहास का एक अनसुलझा रहस्य है। इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 43

कांगड़ा

(पृष्ठ 296)
दुघी-दुघी नदियां ते सैली सैली धारा 'गहरी नदियाँ और बहती धाराएँ,
छैले छैले गबरू ते बांकियां नारां सुंदर जवान और सुंदर
Bolan bol pyaara women,
मैं कांगड़ा देश न्यारा की तलाश कर रहा हूँ, प्रिय शब्दों का गायन करें
ओह, मेरा कांगड़ा, मेरी प्यारी धरती!

हम मीटर गेज रेल से कांगड़ा मंदिर रेलवे स्टेशन पहुंचे। लगभग आधे घंटे पैदल चलने के बाद हम कांगड़ा पहुंचे। यह शहर प्राचीन काल में कटोच राजाओं की राजधानी हुआ करता था। 11वीं शताब्दी के आरंभ में, जालंधर के त्रिगर्त या कटोच राजाओं ने रावी और सतलुज नदियों के बीच के क्षेत्र पर शासन किया। आज, इस क्षेत्र में गुरदासपुर, होशियारपुर, जालंधर किला और ब्यास घाटी का निचला भाग शामिल है। पद्म पुराण की एक कथा के अनुसार, दोआबा-जालंधर का क्षेत्र कभी समुद्र हुआ करता था। 'जालंधर' शब्द का अर्थ जलमग्न क्षेत्र भी होता है। संभव है कि यह कथा मायोसीन काल के उस महासागर को संदर्भित करती हो जो एक समय पंजाब तक फैला हुआ था। ब्यास की निचली घाटी को त्रिगर्त कहा जाता था क्योंकि ब्यास की तीन सहायक नदियाँ - बाणगंगा, कुराली और नेउगल नदियाँ हरिपुर-गुलेर में इससे मिलती हैं और सिबा किले के सामने इसमें प्रवेश करती हैं।
सुशर्मा एक प्राचीन कटोच राजा थे जिन्होंने महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से लड़ाई लड़ी थी। एक तनावपूर्ण युद्ध में हार के बाद, उन्हें मुल्तान स्थित अपना राज्य छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा और वे कांगड़ा घाटी चले गए।

(पृष्ठ 297)
उन्होंने कांगड़ा किले का निर्माण करवाया था।
कांगड़ा किला एक बेहद खूबसूरत जगह पर बना है। पहाड़ी के एक तरफ बंगंगा नदी बहती है, जबकि दूसरी तरफ मांझी नदी। किले तक जाने वाले संकरे रास्ते को कई दरवाजों से सुरक्षित किया गया है। इन दरवाजों को उन योद्धाओं के नाम दिए गए हैं जिन्होंने इस किले पर कब्जा किया था - एक का नाम जहांगीर दरवाजा, दूसरे का नाम रणजीत सिंह दरवाजा और तीसरे का नाम अंग्रेजी दरवाजा है। यह किला आज खंडहर हो चुका है। 1840 में एक अंग्रेज कलाकार द्वारा बनाई गई एक पेंटिंग के अनुसार, यह एक भव्य इमारत थी। 1905 के भूकंप में किले के बुर्ज और बाहरी दीवारें ढह गईं।
कई दरवाजों से गुज़रने के बाद हम भीतरी क्षेत्र में पहुँचे जहाँ प्राचीन काल में राजाओं के महल हुआ करते थे। अब ये भीतरी महल भी खंडहर हो चुके हैं। इस क्षेत्र में लक्ष्मी-नारायण और अंबिका देवी के पत्थर के मंदिर हैं। यहाँ आदिनाथ की प्रतिमा वाला एक जैन मंदिर भी है। आज इन खंडहरों पर पुराने बरगद के वृक्षों का राज है।

उत्तर की ओर धौलाधार की बर्फीली चोटियाँ हैं, जबकि दक्षिण की ओर एक ऊँची पहाड़ी पर जैनती देवी का सफेद मंदिर स्थित है। यह किला लंबे समय तक उपेक्षित रहा। कांगड़ा से युवा प्रेमी जोड़े यहाँ लंबी सैर के लिए आते थे। बाद में इस पर कब्ज़ा कर लिया गया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा। अब शाम को दरवाजे बंद हो जाते हैं और युवा प्रेमी अब इसे अपनी मुलाकातों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते। कांगड़ा किले से बहुत सारा इतिहास जुड़ा हुआ है। इस किले को महमूद गजनी ने 1009 में जीता था - यह उसका चौथा आक्रमण था। महमूद गजनी ने जैंती देवी की पहाड़ियों पर स्थित अपने स्थान से इस किले पर तोपों से बमबारी की थी। इतनी खड़ी पहाड़ियों पर भारी तोपों को ले जाना मुश्किल रहा होगा। कहा जाता है कि गजनी की लूट में सात लाख सोने के दीनार, 700 मन सोने और चांदी के बर्तन, 200 क्विंटल शुद्ध सोना, 20 क्विंटल कच्ची चांदी और 20 क्विंटल रत्न शामिल थे जिनमें असली मोती, हीरे, पन्ना आदि शामिल थे। उन दिनों इस क्षेत्र को पांडव भाई भीम के नाम पर भीम नगर कहा जाता था। सन् 1337 में मुहम्मद तुगलक ने इस किले पर कब्जा कर लिया था। बदर-ए-चाच में इस किले का वर्णन इस प्रकार है:
“यह किला दो नदियों के बीच इस प्रकार बनाया गया है, जैसे आंख दो पलकों के बीच सुरक्षित रूप से स्थित होती है।”

(पृष्ठ 298)
इस किले ने हमेशा अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखी है, और न तो सिकंदर और न ही दारा इसे जीत सके। यह किला कई बहादुर पुरुषों और खूबसूरत महिलाओं का घर है। 1662 में, जहांगीर सिबा और गुलेर से होते हुए कांगड़ा घाटी पहुंचे। कहा जाता है कि सम्राट को यह स्थान इतना पसंद आया कि उन्होंने यहां अपने लिए एक ग्रीष्मकालीन महल बनवाने का निर्णय लिया। इस महल की नींव कांगड़ा के पास गगरी नामक गांव में खोदी गई थी, लेकिन बाद में उन्होंने कांगड़ा के बजाय कश्मीर को चुना और इसलिए यह योजना छोड़ दी गई। वर्तमान में, महल के स्थान पर एक विद्युत केंद्र बना हुआ है।

शाहजहाँ के काल के इतिहासकार मसीर-उल उमरा लिखते हैं, “कांगड़ा किला एक पहाड़ी की चोटी पर बना है; यह किला बहुत मजबूत है। इसमें तेईस बुर्ज और सत्तर दरवाजे हैं। इसका आंतरिक भाग एक किलोमीटर से अधिक लंबा है। किले में दो तालाब हैं।”

यह किला 1783 तक मुगलों के नियंत्रण में था। सैफुल्लाह खान, जो एक मुगल गवर्नर थे, इस क्षेत्र पर शासन कर रहे थे जब जय सिंह घनैया ने उनसे यह किला छीन लिया। संसार चंद ने महार सिंह और जस्सा सिंह रामगढ़िया से मदद मांगी, लेकिन फिर उन्होंने जय सिंह के साथ एक समझौता किया। जय सिंह ने संसार चंद को यह किला दे दिया और बदले में उनसे पठानकोट क्षेत्र ले लिया। इस प्रकार संसार चंद कांगड़ा के राजा बने। मियां राम सिंह के कला संग्रह में एक चित्र है जिसमें इस किले पर हमले को दर्शाया गया है।

हालांकि, इस कस्बे को सबसे बड़ा नुकसान 5 अप्रैल 1905 को सुबह 6 बजे आए एक शक्तिशाली भूकंप से हुआ, जिसने इसे पूरी तरह तबाह कर दिया। कस्बा मलबे में तब्दील हो गया। कांगड़ा के एक बुजुर्ग निवासी ने भूकंप का अपना प्रत्यक्ष अनुभव हमारे साथ साझा किया। उन्होंने बताया कि दिन की शुरुआत एक खूबसूरत और शांत सुबह से हुई थी। जल्द ही तेज धमाके सुनाई दिए और इमारतें गिरने लगीं। कई लोगों की जान चली गई क्योंकि भूकंप के समय लोग सो रहे थे। यह अफरा-तफरी का माहौल था - चट्टानें फट गईं और दीवारें और छतें गिर गईं। हर दो-तीन घंटे में एक तेज धमाका सुनाई देता था, ऐसा लगता था जैसे कस्बे पर तोपों से बमबारी हो रही हो।

(पृष्ठ 299)

एक भी घर अछूता नहीं रहा। मंदिर के सुनहरे गुंबद मलबे में तब्दील हो गए। एक छोटे मंदिर को छोड़कर, बाकी सभी धार्मिक इमारतें ढह गईं। भूकंप में कई पशुधन मारे गए क्योंकि उन्हें आमतौर पर रात में घर के अंदर रखा जाता था।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

भूकंप धरती में दरारों या पहाड़ियों के खिसकने के कारण आते हैं। शिमला, कुल्लू और धौलाधार हिमालय की पुरानी पहाड़ियों पर स्थित हैं, जबकि मंडी, धर्मशाला और

कांगड़ा नई पहाड़ियों पर बसे हैं। नई पहाड़ियों के नीचे की धरती अभी भी कमजोर है। जब तक यहां की धरती स्थिर नहीं हो जाती, इस संवेदनशील क्षेत्र में और भूकंप आना कोई असामान्य बात नहीं होगी। भूकंप के प्रति इसकी संवेदनशीलता का एक और कारण यह है कि यहां धौलाधार से बड़े-बड़े पत्थर, रेत और मिट्टी नीचे आते हैं, जिससे इस क्षेत्र पर बहुत दबाव पड़ता है। भार बढ़ने के कारण, नीचे की जमीन धीरे-धीरे दब रही है और इसलिए अस्थिर हो रही है।

किले के अलावा, वज्रेश्वरी देवी का मंदिर नागरकोट के पुराने शहर को प्रसिद्ध बनाता है। लोग वज्रेश्वरी देवी को 'माता' कहकर पुकारते हैं। यह क्षेत्र अपने बासमती चावल के लिए भी जाना जाता है। यहाँ उगाए गए चावल में एक विशेष सुगंध होती है। यहाँ का गुड़ भी स्वादिष्ट होता है। यह स्थान नाक की सर्जरी और आँखों के इलाज के लिए भी प्रसिद्ध है। प्लास्टिक सर्जरी कोई पश्चिमी आविष्कार नहीं है, कांगड़ा का इतिहास बताता है कि यहाँ सदियों से नाक की सर्जरी की जाती रही है। कहा जाता है कि नाक की सर्जरी की शुरुआत इस क्षेत्र में अकबर के शासनकाल में हुई थी। उन दिनों चोरों और डाकुओं को सजा के तौर पर नाक और हाथ काट दिए जाते थे। आज भी, कुछ क्रोधित पति अपनी पत्नियों की नाक काट देते हैं ताकि वे सुंदर न दिखें। ब्रिटिश यात्री विग्ने की मुलाकात कांगड़ा में बुधिया नामक एक सर्जन से हुई, और उन्होंने नाक की सर्जरी के बारे में इस प्रकार बताया:223 “मरीज को बहुत अधिक अफीम, भांग या शराब दी जाती है ताकि वह बेहोश हो जाए। फिर, उसके माथे की त्वचा में एक छेद किया जाता है और उसकी त्वचा को नीचे खींचा जाता है। ऑपरेशन के बाद, त्वचा को वापस सिल दिया जाता है और घाव पर पट्टी बांध दी जाती है। सर्जन अपने अज्ञानी मरीजों को बताते थे कि यह सर्जरी देवी के आशीर्वाद से की जाती है, इसलिए इसे कोट-कांगड़ा के बाहर नहीं किया जा सकता। मैंने नाक की सर्जरी करवा चुके कई लोगों को खुशी-खुशी घर जाते देखा, भले ही उनकी नई नाकें उनकी प्राकृतिक नाक की तुलना में बदसूरत थीं। कांगड़ा के निवासी इस पेशे में माहिर थे। उन्हें खुद पर गर्व था, भले ही इन नई, कृत्रिम रूप से बनाई गई नाकों में उन्हें सूंघने की शक्ति नहीं थी। 224

(पृष्ठ 300)

लोकगीतों में भी इस प्रथा का ज़िक्र मिलता है, “हम उबले हुए चावल में सहजन के

पत्ते डालकर खाते हैं/ छींकने पर हमारी नाक काट दी जाती है/ कांगड़ा में नई नाकें बनाई जा सकती हैं।" नाक के सर्जनों के परिवारों को 'कांगड़ा' कहा जाता है। आजकल ये लोग अपने पूर्वजों के पेशे को नहीं अपनाते हैं।
शक्ति के भक्त वज्रेश्वरी देवी को प्रणाम करते हैं। देश भर से तीर्थयात्री देवी के लिए अनेक भेंट लेकर इस मंदिर में आते थे। इस प्रकार, मंदिर में बहुत सारी बहुमूल्य भेंटें जमा हो गईं। इसी कारण, महमूद गजनी ने 1009 में इस मंदिर को लूटकर यह धन अपने साथ ले गया। महमूद के जाने के बाद, हिंदू राजाओं ने 1043 में इस मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया। 1337 में, मुहम्मद तुगलक ने इस मंदिर को लूटा और ध्वस्त कर दिया। राजा संसार चंद ने 1440 में इसका पुनः पुनर्निर्माण करवाया। शेर शाह सूरी के सेनापतियों में से एक, खुमास खान ने 1540 में इसे फिर से नष्ट कर दिया। इसके बाद अकबर के शासनकाल में इसका पुनर्निर्माण हुआ। कहा जाता है कि अकबर ने देवी को सोने का छाता भेंट किया था।

223 गॉडफ्रे विग्ने एक अंग्रेज यात्री थे जिन्होंने उत्तरी भारत (लद्दाख, कश्मीर, बाल्टिस्तान, उत्तरी पंजाब), अफगानिस्तान और फारस की यात्रा की। उन्होंने 1840 के दशक में अपनी यात्राओं का विस्तृत वर्णन करते हुए कई पुस्तकें लिखीं। 224 पाठ में यह उल्लेख नहीं है कि उद्धरण चिह्न कहाँ समाप्त होते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। (छतरी) देवी को समर्पित। कांगड़ा के सिख गवर्नर सरदार देसा सिंह मजीठिया ने सिख वास्तुकला शैली के अनुसार इस मंदिर का निर्माण करवाया था, और रानी चंद कौर ने मंदिर के विशाल गुंबद पर स्थापित करने के लिए एक स्वर्ण कलश भेंट किया था। महाराजा रणजीत सिंह ने इस मंदिर में दो बार दर्शन किए। पहली बार दर्शन के दौरान, उन्होंने केवल अंतर्वस्त्र पहने हुए देवी की पूजा करते हुए अपनी एक स्वर्ण प्रतिमा दान की थी। यह प्रतिमा आज भी मंदिर के अंदर मौजूद है। यह मंदिर 1905 के भूकंप में ढह गया था और इसका अंतिम पुनर्निर्माण 1920 में हुआ था।
मंदिर तक पहुँचने के लिए एक घुमावदार बाज़ार पार करना पड़ता है। इन दुकानों में पवित्र धागा, मोतियों के हार, विभिन्न प्रकार के इत्र, अगरबत्ती, तांबे के बर्तन और

देवी की मूर्तियाँ बिकती हैं। चौराहे पर गद्दी महिलाएं ऊनी कंबल बेचती हैं, जिन्हें पर्यटक अक्सर खरीदते हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार की दीवारों पर गुलाबू राम द्वारा बनाए गए देवी दुर्गा के चित्र हैं। मंदिर के बाहर एक प्रांगण है, जिसमें नक्काशीदार पत्थरों से बना एक चबूतरा है। इस चबूतरे पर एक संगमरमर का पत्थर है, जहाँ लोग शपथ लेते हैं।

(पृष्ठ 301)
ऐसा कहा जाता है कि कुछ लोग अपनी जीभ काटकर देवी को अर्पित करते थे। अबुल फजल इस विचित्र परंपरा के बारे में लिखते हैं:
“एक पहाड़ी पर नागरकोटा नाम का एक कस्बा है, जिसमें कांगड़ा नाम का एक किला है। इस कस्बे के बाहरी इलाके में एक और ऊँची पहाड़ी है, जहाँ महामाई नाम का एक स्थान है। यहाँ दूर-दूर से तीर्थयात्री अपनी मनोकामना पूरी करने आते हैं। विचित्र बात यह है कि देवी के भक्त अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए अपनी जीभ काट लेते हैं, लेकिन उनकी जीभ एक-दो दिन में, और कभी-कभी तो कुछ ही घंटों में, वापस अपनी मूल लंबाई में बढ़ जाती है।” यह परंपरा आज भी जारी है। पत्नियों की बकबक से तंग आकर पति उन्हें देवी को अपनी जीभ अर्पित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मैं कांगड़ा में था जब रोहतक के एक जाट किसान ने अपनी जीभ काटकर देवी को अर्पित कर दी। उसे बहुत खून बहा और वह लगभग गूंगा हो गया। जीभ मानव शरीर का एकमात्र अंग है जो कटने के बाद और भी लंबी हो जाती है। इसलिए, तीर्थयात्रियों की जीभ पहले से भी लंबी हो जाती है और वे इसे देवी का आशीर्वाद मानते हैं।
किले और मंदिर के बाद, मैंने मिशन अस्पताल से हरे-भरे खेतों का मनमोहक दृश्य देखा। फिर मैं कांगड़ा कला के नमूने देखने गया। मान चंद्र उप्पल इस क्षेत्र के एक प्रख्यात वकील हैं। उन्होंने कांगड़ा की सभी स्थानीय पेंटिंग्स को एक जगह इकट्ठा किया था ताकि मैं उन्हें आराम से देख सकूँ। वज्रेश्वरी देवी मंदिर के महंत दो पेंटिंग्स लाए - उनके फ्रेम भद्दे थे और उन पर धूल की मोटी परत जमी हुई थी। एक पेंटिंग में अभिसारिका नायिका का चित्र था, और दूसरी में गोवर्धन धारा की लोककथा का। ये दोनों पेंटिंग्स 19वीं सदी के उत्तरार्ध की प्रतीत होती थीं। एक वृद्ध विधवा के पास हिंदू देवी-देवताओं की पाँच-छह पेंटिंग्स थीं। ये पेंटिंग्स घटिया गुणवत्ता की थीं। मालिक ने

हमें संदेश भेजा कि इनमें से किसी भी पेंटिंग की कीमत 500 रुपये से कम नहीं है। कांगड़ा में केवल मान चंद्र उप्पल के पास ही अच्छी गुणवत्ता की पेंटिंग्स थीं। उनके पास तांत्रिक देवी की दस पेंटिंग्स थीं, और दुर्गा प्रार्थना की एक पेंटिंग हस्तलिखित शैली में चित्रों के साथ थी। कहा जाता है कि हस्तलिखित पाठ वाली यह प्रार्थना संसार चंद की थी। मान चंद्र उप्पल को ये धनराशि नादौन के राजा राजिंदर चंद के तीसरे पुत्र खरजिंदर चंद से कानूनी फीस के रूप में प्राप्त हुई थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 302)

श्री उप्पल को उनकी फीस के रूप में प्राप्त यह हस्तलिखित दुर्गा पाठ कला का एक सुंदर नमूना है, जो यह साबित करता है कि श्री उप्पल एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं और कला के प्रति गहरी रुचि रखते हैं। इस ग्रंथ का प्रत्येक अध्याय अलग-अलग कागजों पर लिखा गया है और इसके आवरण के लिए पेपर-मैशे का उपयोग किया गया है। सबसे ऊपरी पन्ने पर दुर्गा का चित्र बना हुआ है। दुर्गा को सिंह पर सवार दिखाया गया है। इस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय नीले, पीले, हरे और लाल जैसे विभिन्न रंगों के कागजों पर लिखा गया है। प्रत्येक पृष्ठ के कोने नीले रंग से रंगे हुए हैं। प्रत्येक अध्याय की शुरुआत में दुर्गा का एक सुंदर चित्र है। यह कार्य अत्यंत स्वच्छ और सुव्यवस्थित है, जो कलाकार की कुशलता और आत्मविश्वास को दर्शाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये चित्र किसी प्रसिद्ध शाही कलाकार द्वारा बनाए गए हैं। पुस्तक का आवरण कढ़ाईदार कांगड़ा रुमाल से ढका हुआ है। रुमाल पर दुर्गा सिंहासन पर विराजमान हैं और चार सेविकाएँ उनके चारों ओर खड़ी हैं। रुमाल के किनारों पर केले के पौधे और मोर की कढ़ाई की गई है। समय बीतने के बावजूद, रेशमी लाल, पीले और हरे धागे बिल्कुल नए जैसे दिखते हैं।

कांगड़ा के एक बुजुर्ग कलाकार पूरन चंद ने हमें बताया कि विलियम आर्चर द्वारा प्रकाशित राधा-कृष्ण की पेंटिंग, जो उनके संग्रह में है, उनके चाचा नंद लाल ने बनाई थी, जिनका लगभग दस साल पहले पचासी वर्ष की आयु में निधन हो गया था। उन्होंने बताया कि उनके पास उस पेंटिंग का एक कच्चा खाका है। उन्होंने यह भी बताया कि कांगड़ा में पहले के कई चित्र थे जो 1905 के भूकंप में नष्ट हो गए थे।

हमारे पास इन दोनों कथनों को साबित करने का कोई तरीका नहीं है, इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि वे तथ्यात्मक रूप से सही हैं या नहीं।
कांगड़ा शहर के बारे में शोध करने के बाद, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि कांगड़ा कला का संबंध केवल कांगड़ा शहर से ही नहीं है। इस निष्कर्ष के ऐतिहासिक कारण हैं। कांगड़ा कला का जन्म दलीप सिंह (1661-1695) के शासनकाल में गुलेर में हुआ था और यह कला गोवर्धन चंद और प्रकाश चंद (1730-1760) के शासनकाल में अपने चरम पर पहुँची। इसके बाद, राजा संसार चंद ने सुजानपुर टीरा में इस कला को संरक्षण दिया। इस राजा का शासनकाल अल्प रहा, इसलिए उनके समय में उभरे कलाकार कांगड़ा में स्थानांतरित हो गए होंगे। इस जिले का नाम कांगड़ा है और घाटी का नाम भी यही है, हालाँकि जिला न्यायालय धर्मशाला में हैं और कांगड़ा केवल एक तहसील है।
यह महसूस करने के बाद कि कांगड़ा शैली के सभी कलाकार कांगड़ा के निवासी नहीं थे, बल्कि गुलेर, सुजानपुर, आलमपुर और नादौन जैसे आसपास के क्षेत्रों से आए थे, मैंने इस शैली के समकालीन कलाकारों से मिलने का फैसला किया।

(पृष्ठ 303)
कांगड़ा के तहसीलदार ने सिमलोटी से गुलाबू राम और लक्ष्मण दास को बुलाया। ये दोनों ही इस शैली के सबसे प्रसिद्ध समकालीन कलाकार हैं। सिमलोटी कांगड़ा से लगभग पाँच मील दूर स्थित एक सुंदर गाँव है। लक्ष्मण दास एक साधारण पहाड़ी व्यक्ति हैं। वे अपने परिवार द्वारा बनाए गए कई चित्रों को कपड़े में लपेटकर लाए थे। वे खुद को 'गुलेरिया मचाता' कहते हैं और बताते हैं कि तीन पीढ़ियों पहले उनका परिवार गुलेर से सिमलोटी आ बसा था। उनके परदादा का नाम बासिया था। वे अपने समय के एक प्रख्यात कलाकार थे और उन्होंने राजा संसार चंद के कई चित्र बनाए थे। ये चित्र मानव आकार के और यथार्थवादी हैं। बासिया के पुत्र पद्मु ने महाराजा रणजीत सिंह का चित्र बनाया था। इस चित्र में रणजीत सिंह अपने सरदारों (सेनापतियों/ प्रमुखों) के साथ दिखाए गए हैं। इस चित्र में व्यक्तियों के चेहरे वास्तविकता के काफी करीब हैं, लेकिन इसमें पैरों और शरीर के अनुपात को नजरअंदाज किया गया है। पद्मु के अन्य चित्र उतने अच्छे नहीं हैं। मिस्टर फ्रेंच अपनी यात्रा के दौरान हज़ूरी से मिले, हज़ूरी लछमन दास के थे

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। लछमन दास ने हमें अपने पिता द्वारा बनाई गई कई पेंटिंग दिखाईं। उनमें से एक पेंटिंग में कृष्ण को अपनी गोपियों के साथ होली खेलते हुए दिखाया गया है। यह पेंटिंग पहले के कलाकारों द्वारा बनाई गई पेंटिंग जितनी सुंदर नहीं है। ऐसा लगता है कि हजूरी एक कुशल चित्रकार थे और उन्हें अक्सर पारिवारिक चित्र बनाने के लिए कहा जाता था। एक पेंटिंग में तिरा सुजानपुर के एक डाकिया को दिखाया गया है। उन्हें काले रंग का हिजाब और लाल कोट पहने हुए दिखाया गया है, उनके गले में पत्रों से भरा थैला लटका हुआ है और वे एक महिला को पत्र दे रहे हैं। एक अन्य पेंटिंग में कांगड़ा तहसील के सियाह नफीस को दर्शाया गया है। सियाह नफीस अपने पिता के साथ चारपाई पर बैठे हैं। उनकी पत्नी, पुत्र और पुत्री उनके सामने खड़े हैं। चूंकि डाकिया और तहसील कार्यालय के कर्मचारी ने शुल्क नहीं दिया, इसलिए ये पेंटिंग लछमन दास के पास रह गईं। हजूरी ने लाहौल के एक परिवार का बहुत सुंदर चित्र बनाया। लाहौल के लोग बर्फ से ढकी चोटियों की पृष्ठभूमि में खड़े हैं। चित्र में एक महिला एक पुरुष को चाय का प्याला दे रही है। पुरुष के हाथों में प्रार्थना चक्र है। एक अन्य व्यक्ति चाय पी रहा है, एक लड़का हुक्का पी रहा है और इन सबके सामने घरेलू सामान रखे हैं। मुझे यह चित्र रोचक लगा।

(पृष्ठ 304)

एक अन्य चित्र में राम चंद्र, लक्ष्मण और सीता को वनवास से घर लौटते हुए दिखाया गया है। यह चित्र गुलाबू राम के दादा चंदू ने बनाया था। आज यह चित्र सिमलोटी के लाला दीवान चंद के पास है। श्री राम चंद्र, लक्ष्मण और सीता बादलों के बीच पुष्पक विमान में बैठे हुए दिखाए गए हैं, और अयोध्या के निवासी अपने शहर के बाहरी इलाके में उत्साहपूर्वक उनका इंतजार कर रहे हैं। इस चित्र में आकाश का जो अनूठा सामंजस्य है, वह कांगड़ा के किसी अन्य चित्र में नहीं मिलता।

गुलाबू राम एक कुशल कलाकार हैं। उन्होंने कांगड़ा में बने नए वज्रेश्वरी देवी मंदिर को दुर्गा और राक्षसों के चित्रों से सजाया है। उन्होंने कृष्ण और गोपियों को वृत्त में नृत्य करते हुए दर्शाने वाले रसमंडल चित्र भी बनाए हैं। उन्होंने बांदला और पापरोला के मंदिरों को भी सजाया है; कांगड़ा के धनी लोग उनसे अपने घरों को चित्रों से सजाने

का काम करवाते हैं। गुलाबू राम की कलाकृतियाँ बहुत ही साधारण हैं; प्रसिद्ध कांगड़ा कलाकारों की कृतियों में दिखने वाली स्पष्ट रेखाएँ उनकी कलाकृतियों में नहीं हैं। राजोल के रहने वाले लक्ष्मण दास रैना नाम के एक और पुराने कलाकार से हमारी मुलाकात हुई। उनके परदादा निक्का, राजा शमशेर सिंह के शासनकाल में गुलेर से राजोल आ बसे थे। लक्ष्मण दास प्रसिद्ध कलाकार नैनसुख के परिवार से हैं। पुरानी पौराणिक कथाओं के अलावा, लक्ष्मण दास ने समकालीन जीवनशैली को दर्शाने वाली कुछ पेंटिंग भी बनाई हैं। एक पेंटिंग में एक अंग्रेज को शिकार करते हुए दिखाया गया है। शिकारी का ध्यान शिकार पर केंद्रित है, जिसे बहुत ही सजीवता से चित्रित किया गया है। शिकारी ने अपनी बंदूक पेड़ की दो शाखाओं के बीच रखी है और काले हिरण पर निशाना साध रहा है। उसका एक नौकर उसके पीछे बारूद भरता हुआ दिखाया गया है, जबकि दूसरा अपने कंधे पर बिना म्यान वाली तलवार लिए खड़ा है। एक अन्य पेंटिंग में एक पठान साहूकार को दिखाया गया है; यह काबुल के बेहद खतरनाक लोगों का सुंदर चित्रण करती है। पठान साहूकारों को शिकार के लिए निकलते हुए दो भूखे गिद्धों के रूप में दर्शाया गया है। एक अन्य पेंटिंग में बंगाली सपेरों को नाचते-गाते दिखाया गया है। एक बंगाली सपेरा जोश से बीन बजा रहा है। एक सांप उसकी एक बांह पर लिपटा हुआ है। एक और आदमी खड़ताल बजा रहा है, उसके बगल में लकड़ी की चप्पल पहने एक आदमी खड़ा ताली बजा रहा है। चौथा साथी भी उसी पोशाक में है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। सफेद कपड़े पहने एक व्यक्ति ढोल बजाता है। एक अन्य चित्र में, एक पुरुष और एक महिला को 225 छलेदा द्वारा ठगा जाता हुआ देखा जा सकता है।

(पृष्ठ 305)

पति-पत्नी जैसे दिखने वाले ये पुरुष और महिला एक शाम सड़क पर चल रहे थे। कुछ दूर आगे जाकर उन्हें एक सांप दिखाई दिया, लेकिन थोड़ी दूर जाकर वह सांप लोमड़ी में बदल गया। थोड़ा और आगे जाकर वह लोमड़ी भौंकने वाले कुत्ते में बदल गई। कुछ और आगे जाकर वे और भी हैरान हो गए जब वह भौंकने वाला कुत्ता बड़े-बड़े दांतों

वाली चुड़ैल में बदल गया। पुरुष ने अपना धैर्य बनाए रखा और घबराई हुई महिला को शांत करने की कोशिश की।
लेकिन इस तरह की साधारण पेंटिंग को कांगड़ा कला शैली से संबंधित नहीं माना जा सकता, भले ही कला इतिहास में उनका कुछ स्थान हो।
कांगड़ा के जिन कलाकारों से हम मिले, उन सभी ने संरक्षण की कमी की शिकायत की। उनके उदास चेहरे और भूखी निगाहों से यह बात पुष्ट हो गई कि उनकी बात गलत नहीं थी। इस दावे के बावजूद, उनमें भरपूर आत्मविश्वास है। उनका मानना है कि अगर उन्हें अपने पूर्वजों के समान अवसर मिले, तो वे भी उत्कृष्ट कलाकृतियाँ बना सकते हैं। वे अपनी कला के बारे में चाहे जो भी दावा करें, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समकालीन कलाकारों की कलाकृतियाँ पुराने कलाकारों की कलाकृतियों के मुकाबले कुछ भी नहीं हैं। मेरा मानना है कि इन वर्तमान कलाकारों की कलाकृतियाँ कांगड़ा कला की श्रृंखला की अंतिम कड़ी हैं। उनकी कलाकृतियाँ एक शानदार कला शैली के पतन का प्रतीक हैं, जो संरक्षण की कमी के कारण हुआ प्रतीत होता है।

225 छलेदा एक दुष्ट आत्मा है जो अपना रूप और आकार बदल सकती है। ऐसी आत्माएं मोक्ष के दिन तक पृथ्वी पर भटकती रहती हैं। यह कथा हिमाचल प्रदेश के स्थानीय विश्वासों में प्रचलित है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 44

Jwalamukhi

(पृष्ठ 306)

Paan supari mayiaa dhuja le narela Paan, betel nut, and coconut to the Mother,
Pehladi bhent chadhaya maiyaa are the first gifts we present

to the Mother.

हम कांगड़ा के डाक बंगले से तड़के ही निकल पड़े। बानगंगा नदी पार करने के बाद ही सूर्योदय हुआ। बानगंगा नदी पार करने के बाद कांगड़ा किले का एक अनूठा दृश्य दिखाई देता है। सड़क बहुत संकरी है और पहाड़ी के चारों ओर सांप की तरह घूमती है। यहाँ से रेलवे ट्रैक भी दिखाई देता है और हमने कुछ यात्रियों को रेलवे स्टेशन से ज्वालामुखी की ओर पैदल जाते देखा। अंत में हम रानी ताल पहुँच गए। यहाँ एक पुलिस स्टेशन है और पहाड़ी की चोटी पर एक डाक बंगला बना हुआ है। वहाँ से धौलाधार पर्वतमाला का बेहद खूबसूरत दृश्य दिखाई देता है।
डाक बंगले के पास एक छोटी पहाड़ी पर बाबा फत्तू का मंदिर है। बाबा फत्तू, सोढ़ी गुलाब सिंह के अनुयायी थे। सोढ़ी गुलाब सिंह ने बाबा फत्तू को गुरुत्व का आशीर्वाद दिया था। ऐसा कहा जाता है कि बाबा फत्तू की चमत्कारिक शक्तियों ने संसार चंद के भाई फतेह चंद को मृत्यु से जीवित कर दिया था। पहाड़ी लोग आज भी बाबा फत्तू का सम्मान करते हैं और उनके नाम पर शपथ लेते हैं। उनके मंदिर स्थल पर बैसाखी का मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग अपनी मनोकामनाएं पूरी होने की कामना के लिए आते हैं। कई लोग अपनी मनोकामनाएं लिखकर देते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि मनोकामना पूरी होने पर वे कुछ अनुष्ठान करेंगे। मंदिर के पुजारी समाधि पर प्रार्थना करते हैं। जब किसी की मनोकामना पूरी हो जाती है, तो लोग बाबा को भेंट चढ़ाने के लिए वापस आते हैं। कांगड़ा तहसील के लांज नामक गांव में भी इसी तरह का एक मंदिर है।

(पृष्ठ 307)
यह तीर्थस्थल बाबा भूपत के नाम से जुड़ा हुआ है। लोग अपनी मनोकामनाएं पूरी करने के लिए इस तीर्थस्थल पर आते हैं। कई लोग जो अदालतों में कानूनी मामलों की फीस नहीं चुका पाते, वे बाबा भूपत से मदद मांगते हैं। अन्याय के शिकार और अनाथ लोग भी इस तीर्थस्थल पर आकर अपने उत्पीड़कों की शिकायत करते हैं। जब उनके शत्रु बीमार पड़ जाते हैं या उन पर कोई विपत्ति आ पड़ती है, तो वे मानते हैं कि यह बाबा भूपत के श्राप का परिणाम है। इसी भय के कारण, 'शत्रु' या तो समझौता करने को तैयार हो जाते हैं या पीड़ित को हुए नुकसान की भरपाई करते हैं।

रात रानी झील के बंगले में रात बिताने के बाद, अगली सुबह हमने ज्वालामुखी के लिए अपनी यात्रा शुरू की। रानी ताल से ज्वालामुखी तक का रास्ता यात्रियों की निरंतर आवाजाही के कारण धूल और रेत से भरा रहता है। हमने अनगिनत यात्रियों को पैदल या तांगे पर सवार होकर अग्नि देवी के मंदिर की ओर जाते देखा। पहाड़ी बच्चे सड़क किनारे खड़े होकर यात्रियों से पैसे मांग रहे थे। वे अक्सर यात्रियों से बुरी तरह चिपक जाते थे और कहते थे, "कृपया हमें पैसे दे दीजिए, लाला, कृपया हमें पैसे दे दीजिए, लाला।" वे इन गुहारों के साथ यात्रियों के पीछे तब तक चलते रहते हैं जब तक कि यात्री उन्हें कुछ दे नहीं देते, ताकि वे उनका पीछा करना बंद कर दें।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अंततः, हमें ज्वालामुखी का पवित्र गाँव दिखाई दिया। यह गाँव पहाड़ी के एक तरफ बाज के घोंसले की तरह बसा हुआ है। विशेष रूप से, अग्नि देवी के मंदिर का सुनहरा कलश गाँव के चौकोर सफेद घरों के ऊपर से दिखाई दे रहा था। नादौन जाने से पहले, हमने तय किया था कि हम पहले देवी को प्रणाम करेंगे। 800 साल पहले, इस मंदिर के स्थान की खोज एक ब्राह्मण ने की थी। ऐसा कहा जाता है कि दक्षिण भारत में रहने वाले एक ब्राह्मण को देवी के दर्शन हुए और उन्होंने उसे कांगड़ा की पहाड़ियों पर जाने का आदेश दिया; वहाँ वह जंगलों को आग की लपटों में घिरा हुआ देखेगा। आदेश के अनुसार, ब्राह्मण यहाँ आया और इस पवित्र स्थान को पाया। उसने यहाँ एक मंदिर स्थापित किया; मंदिर तक पहुँचने के लिए कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। सीढ़ियों के दोनों ओर दुकानें हैं, जहाँ नारियल, मिठाई, अगरबत्ती और छोटी चांदी की छतरियाँ बेची जाती हैं। ये वस्तुएँ यात्रियों द्वारा खरीदी जाती हैं और फिर पुजारी इन्हें दुकानदारों को वापस बेच देते हैं। इस प्रकार, ये वस्तुएँ दुकानों से मंदिर तक और मंदिर से दुकानों तक आती-जाती रहती हैं। जब कोई यात्री ज्वालामुखी मंदिर पहुँचता है, तो कई पंडित उसे घेर लेते हैं। ये पंडित अपने उन पूर्वजों के नाम बताते हैं जिन्होंने इस मंदिर में दर्शन किए थे। ये पंडित यात्रियों के ठहरने और यात्रा की व्यवस्था भी करते हैं।

(पृष्ठ 308)

ज्वालामुखी के पुरोहितों को 'भोजकी' कहा जाता है, क्योंकि उनका मुख्य कार्य देवी

को भोजन अर्पित करना है, जिसका अर्थ है कि वे अपना पेट भरते हैं। जिन यात्रियों की मनोकामना पूरी होती है, वे कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में देवी को चांदी की छोटी छतरियां अर्पित करते हैं।

बाज़ार यात्रियों से भरा हुआ था; हमने पंजाब और उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आए कई पुरुषों और महिलाओं को देखा, जिन्होंने बताया कि वे बड़ी मुश्किल से इस मंदिर तक पहुँचे हैं। हमने बाहरी द्वार पर अपने जूते-चप्पल उतार दिए और नंगे पैर मंदिर में प्रवेश किया। यात्री देवी को धन चढ़ाते हैं। कई भक्त पत्थर की मूर्ति के मुख में हलवा डालते हैं। संगमरमर का फर्श बहुत फिसलन भरा हो गया था, और उस पर टपकते हलवे को देखकर मुझे बहुत घृणा हुई।

सबसे बड़े मंदिर में एक स्वर्ण कलश था, जो ढलते सूरज की किरणों में चमक रहा था। मंदिर के छिद्रों से गैस निकलती है, पुजारी माचिस से आग जलाते हैं - इस प्रक्रिया से निकलने वाली नीली लपटें और लाल रंग की चिंगारियां यात्रियों को विस्मित कर देती हैं। थोड़ा आगे कई छोटे मंदिर हैं, इन मंदिरों में भगवा वस्त्र पहने साधुओं को देखा जा सकता है, जिनके बालों में जटाएं बनी होती हैं। ज्वालामुखी के पास छह झरने हैं जहाँ नमक और पोटेशियम आयोडाइड के रूप में आयोडीन पाया जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि ज्वालामुखी, जालंधर नामक राक्षस का मुख है। पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान शिव ने जालंधर नामक राक्षस को पर्वत के नीचे कुचल दिया था। ज्वालामुखी उसी राक्षस का मुख है। दोआबा पर्वत का ऊपरी भाग उसकी पीठ है, जिसे आजकल जालंधर कहा जाता है। इस क्षेत्र में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं। बैजनाथ में स्थित शिव मंदिर और धाड़ के सुंदर बंगले के सामने स्थित जुरांगल में नंदी-केसर मंदिर इसके कुछ उदाहरण हैं। इस राक्षस के पैर मुल्तान तक फैले हुए हैं। जालंधर की कथा में कांगड़ा घाटी और पर्वतों के मायोसीन सागर से उद्भव का वर्णन भी मिलता है। इस सागर की एक भुजा होशियारपुर की शिवालिक पहाड़ियों तक फैली हुई थी। भगवान शिव द्वारा सागर पुत्र जालंधर का वध, सागर के पीछे हटने और उससे पर्वतों के उद्भव का प्रतीक माना जा सकता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

कई प्रसिद्ध हस्तियों ने इस मंदिर का दर्शन किया है। इनमें से एक सम्राट अकबर भी थे। आज भी, पुजारी एक छोटे से झरने से निकलने वाली नदी की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि सम्राट अकबर ने देवी की अग्नि को बुझाने के लिए इस जलमार्ग का निर्माण करवाया था।

(पृष्ठ 309)
लेकिन वह मंदिर का निर्माण करवाने में सफल नहीं हो सका और देवी की ज्वालाएँ लगातार भड़कती रहीं। यह देखकर सम्राट अकबर देवी का भक्त बन गया और उसने उनके मंदिर में सम्मान प्रकट करने के लिए सोने का शस्त्र भेंट किया। कहा जाता है कि जब सम्राट अकबर ने घमंड से देवी को अर्पित किए गए अपने महंगे शस्त्र को देखा, तो सोने का शस्त्र तांबे में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार, प्रत्येक मंदिर से अनेक कथाएँ जुड़ी हुई हैं, और श्रद्धालु इन कथाओं के माध्यम से अपने धर्म को सर्वोच्च सिद्ध करने का दावा करते हैं।
महाराजा रणजीत सिंह सन् 1809 में इस मंदिर में आए थे। संसार चंद के कहने पर महाराजा रणजीत सिंह ने गोरखाओं को परास्त किया और उन्हें सतलुज नदी के पार खदेड़ दिया। संसार चंद की मुलाकात ज्वालामुखी में रणजीत सिंह से हुई और इस पवित्र स्थान पर उनके बीच समझौते पर मुहर लगी। महाराजा रणजीत सिंह ने कांगड़ा किले पर कब्जा कर लिया और संसार चंद को आसपास के गांवों की जागीर दे दी। जब रणजीत सिंह अफ़गानों को परास्त करके लौटे, तो उन्होंने कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में मंदिर के शिखर को सोने की पन्नी से मढ़वाया और गरीबों को अपार धन दान कर दिया। कहा जाता है कि महाराजा रणजीत सिंह ज्वालामुखी की ज्वालाओं से इतने प्रभावित हुए थे कि वे मानो किसी पतंगे की तरह लौ की ओर आकर्षित हो रहे थे। रणजीत सिंह के पुत्र खरक सिंह ने देवी को चांदी के द्वार भेंट किए। इन द्वारों पर उत्कृष्ट नक्काशी की गई है। मंदिर के पुजारी इन द्वारों को बड़े गर्व से प्रदर्शित करते हैं।
इस यात्रा में मेरी पत्नी इकबाल कौर भी हमारे साथ थीं और पूरे समूह के लिए भोजन की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी। इकबाल, आर्चर, मुल्क राज, उनकी पत्नी शिरीन और सचिव डॉली मेरे बिना मंदिर गए। उन्होंने जो कुछ देखा, वह इकबाल के माध्यम से साझा किया जाएगा और आप उसे सुन सकते हैं।
“हमने रानी ताल से ज्वाला जी होते हुए नादौन जाने की योजना बनाई थी। सुबह चाय

और नाश्ते के बाद, हम हमेशा अपने सफर के लिए दोपहर का खाना पैक कर लेते थे। जब भी दोपहर के भोजन का समय होता, हम रुककर खाना खाते थे, और जिस जगह हम रुके होते थे वह भी बहुत सुंदर होती थी। सब मिलकर खाना गर्म करते, खाते और सफर के बारे में बातें करते। फिर, कुछ देर आराम करने के बाद, हम अपना सामान समेटते और अपने सफर के अगले पड़ाव के लिए निकल पड़ते।"
"ज्वाला जी मंदिर जाने को लेकर मैं विशेष रूप से खुश था क्योंकि मैंने इस मंदिर को बचपन में देखा था। उस यात्रा की धुंधली सी याद मेरे मन में बसी हुई थी।"

(पृष्ठ 310)
जब भी हम उस दिशा में जाते, यह याद मुझे उस मंदिर में दोबारा जाने के लिए प्रेरित करती। मुझे जो बात पक्के तौर पर याद है, वह यह है कि उस रास्ते पर केवल खच्चर और घोड़े ही चलते थे। चारों ओर बस एक संकरा, सांप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा पथरीला रास्ता दिखाई देता था। लोग सूर्यास्त से पहले ही अपनी यात्रा पूरी कर लेते थे, क्योंकि जंगली जानवर अक्सर जंगल से निकलकर सड़क पर आ जाते थे और कभी-कभी राहगीरों पर हमला भी कर देते थे।
मुझे आज भी याद है कि उन इलाकों के पुजारियों ने हमें अलग-अलग जगहों पर जलती हुई ज्वालाएँ दिखाईं और कहा कि वहाँ देवी प्रकट हुई हैं। यह देखकर भक्त खोया और आधा प्रसाद चढ़ाते थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। आधा लीटर लड्डू प्रसाद के रूप में चढ़ाएं, उसे ज्वाला की देवी के सामने रखें और उन्हें प्रणाम करें। इसीलिए मैं ज्वाला मंदिर जाने के लिए इतना उत्सुक था।
“ज्वाला जी पहुँचने पर मंदिर पहले जैसे ही दिख रहे थे, लेकिन मंदिर तक पहुँचने के लिए जिस बाज़ार को पार करना पड़ता था, वहाँ की सड़क पहले से चौड़ी हो गई थी। रास्ते में हम सबने बाज़ार से कुछ न कुछ खरीदा। हमारे दोस्त आर्चर को दुकानों में रंग-बिरंगी कांच की चूड़ियाँ बहुत पसंद आईं और उसने अपनी बेटी के लिए चार-पाँच चूड़ियों के सेट खरीद लिए। बाकी लोगों ने आम की लकड़ी के चम्मच, दही के बर्तन और आटा गूंथने के लिए लकड़ी की बड़ी-बड़ी थालियाँ खरीदीं, जिन्हें उस इलाके के

लोगों ने बड़ी कुशलता से बनाया था। हमने ढेर सारी अगरबत्ती और अजवाइन भी खरीदी, जो कड़वे कोलोसिंथ फल में बंधी हुई थी, और मंदिर की ओर चल पड़े। वहाँ पुजारी बड़ी भेंट चढ़ाने वालों का इंतज़ार कर रहे थे, ताकि वे उनकी सेवा कर सकें।"
"उन्हें मंदिर की साफ-सफाई की कोई चिंता नहीं थी और उनके चेहरों पर भक्ति का कोई भाव नहीं दिख रहा था। पास के एक गाँव से कुछ पुरुष और महिलाएं किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए मंदिर आए थे और एक मूर्ति के सामने बैठकर भगवान कृष्ण की स्तुति कर रहे थे। पुरुष ढोल और घंटियाँ बजा रहे थे, महिलाएं नृत्य कर रही थीं और जो पुरुष नृत्य करने में झिझक रहे थे, उनसे ये महिलाएं कह रही थीं, "तुम्हें भी नृत्य करना चाहिए, भगवान के सामने नृत्य करने में शर्म नहीं करनी चाहिए।" हम कुछ देर तक उन्हें देखते रहे। इसके बाद हमने देखा कि जहाँ ज़मीन धंस गई थी, वहाँ से आग की लपटें निकल रही थीं।"

(पृष्ठ 311)
उस स्थान के पुजारी सभी को साथ ले जाते और सबको बताते कि देवी ठीक उन्हीं स्थानों पर प्रकट हुई थीं।
"एक दूसरे से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर एक जैसी ज्वालाएँ उठती हुई दिखाई दे रही थीं। जो लोग इन ज्वालाओं के पीछे का वैज्ञानिक कारण नहीं जानते थे, वे ईश्वर और प्रकृति के चमत्कारों को देखकर चकित रह जाते, लेकिन मन को शुद्ध करने के बारे में कोई नहीं सोचता; देवी को लड्डू, पताशा और कराह हलवा चढ़ाने के बाद, लोगों ने अपने पैर धोकर उस जगह को इतना गंदा कर दिया था कि वहाँ खड़ा होना मुश्किल हो गया था। हमारे मित्र आर्चर को चिंता थी कि कहीं हमें गंदे फर्श से किसी बीमारी के कीटाणु न लग जाएँ। उसने अपनी नाक के सामने एक रुमाल रखा और सब कुछ जल्दी से देखकर सीढ़ियों से नीचे उतर गया। हम भी उसके पीछे-पीछे नीचे चले गए।"226
ज्वालामुखी की यात्रा पर हमारे साथ लोकगीतों का एक संग्रहकर्ता भी था, जिसकी दाढ़ी कटी नहीं थी, बाल लंबे थे और उसे फोटोग्राफी का बहुत शौक था। उसकी फोटोग्राफी इतनी अच्छी थी कि वह तस्वीरों में जान डाल देता था। जब मैं मंदिर से लौटा, तो देखा कि हमारी जीप के चारों ओर भारी भीड़ जमा हो गई थी। मुझे पता चला कि हमारा दोस्त एक पहाड़ी महिला को उसके चेहरे पर लिपटा कपड़ा हटाने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा था, तभी उसका पति वहाँ आ गया। अफवाहें फैल

गईं कि एक पाकिस्तानी फकीर हिंदू महिलाओं की तस्वीरें खींच रहा है। फिर, और क्या हो सकता था कि किसी ने उसका हाथ पकड़ा, दूसरे ने उसका कोट पकड़ा और उसकी जमकर पिटाई कर दी।

226 यहीं पर एम.एस. रंधावा की पत्नी इकबाल कौर लिखना बंद कर देती हैं, और कहानी को रंधावा फिर से आगे बढ़ाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

भारत में, और विशेष रूप से पंजाब में, अपरिचित महिलाओं की तस्वीरें खींचना बेहद मुश्किल है। कम से कम, महिलाएं तो यही कहती हैं, "अगर आपको तस्वीर खींचनी है, तो अपनी माँ या बहन की खींचिए, हमारी क्यों खींचनी है?" हमने बड़ी मुश्किल से अपने दोस्त की जान बचाई। अगर एक कांस्टेबल मौके पर न आता, तो पता नहीं कांगड़ा के अनपढ़ लोग उसके साथ क्या करते। उन्हें बताया गया था कि वह आदमी पंजाब का टैगोर है और उसने लोकगीतों का संग्रह किया है, जिससे पंजाबी साहित्य में उसका बहुत बड़ा योगदान है। वह सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से तस्वीरें खींच रहा था; उसका कोई दुर्भावना नहीं थी। उन सीधे-सादे पहाड़ी लोगों को यह नहीं पता था कि कांगड़ा में ये प्रसिद्ध और उच्च पदस्थ लोग भी आते-जाते रहते हैं। वे केवल उन पंजाबियों के ज़बरदस्ती से परिचित थे जो उनकी सुंदर बेटियों का दिमाग बहला-फुसलाकर उन्हें मैदानों में ले जाते थे।

अगर वे अकेली हैं, तो बहुत सी महिलाएं अपनी तस्वीरें खिंचवाने से इनकार नहीं करती हैं, लेकिन अगर उनके पुरुष आसपास हों, तो उनकी तस्वीरें खींचना खतरनाक हो सकता है।

(पृष्ठ 312)

इस बार हम शिमला से नारकंडा जा रहे थे, और जब हम फागू के पास पहुँचे, तो सोने के गले के गहने, सिर पर गहरे पीले रंग का दुपट्टा और नाक में लौंग पहने एक बेहद खूबसूरत पहाड़ी महिला गुजरी। ढलते सूरज की किरणों में उसकी लौंग चमक रही थी, वह बड़े सलीके से सड़क पार कर रही थी। मेरा दोस्त शौरी, जो फोटोग्राफी के आनंद

में डूबा हुआ था, उसे ऐसा मौका कहीं और नहीं मिलता। उसने तुरंत अपना कैमरा निकाला और तस्वीरें खींचने लगा। दो मिनट में ही उस महिला का पति छाता घुमाते हुए आया और पूछा, “बाबू जी, आप क्या कर रहे हैं?” बाबू जी घबरा गए, उन्होंने कैमरे का लेंस एक पेड़ की ओर घुमाया और कहा, “मैं जंगल की तस्वीरें खींच रहा हूँ।”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 45

‘Aayega Nadaun, Jayega Kaun’227

(पृष्ठ 313)

ज्वालामुखी से नादौन तक का सफर बेहद सुखद है। सड़क के दोनों ओर आम के पेड़ लगे हुए हैं। लगभग पाँच मील बाद ब्यास नदी दिखाई देती है और ठीक सामने एक ऊँची पहाड़ी पर नादौन कस्बा बसा हुआ है। इस कस्बे के बारे में एक मशहूर कहावत है कि "जो नादौन आता है, वो वापस कैसे जाता है?"। यह कहावत इसलिए प्रचलित हुई क्योंकि नादौन एक बहुत ही खुशनुमा कस्बा था और संसार चंद के समय में यहाँ तीन सौ वेश्याएँ अपना धंधा चलाती थीं।

धूल भरी यात्रा के बाद नादौन में प्रवेश करने से पहले हमने थोड़ा तरोताज़ा होने का सोचा। मेरे मित्र, जिन्हें लोकगीतों को संरक्षित करने का बहुत शौक है, उनकी दाढ़ी में धूल जमी हुई थी - वे किसी साधु की तरह लग रहे थे। हमने झंडे वाली नाव में बैठकर नदी पार की। नादौन के कुछ निवासी हमारा स्वागत करने के लिए नदी के दूसरे किनारे पर जमा थे। उनमें एक बौना आदमी भी था। इस सज्जन ने अपनी लंबी मूंछें काली रंगी हुई थीं, रेशमी अचकन और नीली पगड़ी पहनी हुई थी, और उनके हाथ में चांदी की नोक वाली छड़ी थी। उनसे बातचीत करने पर हमें पता चला कि वे नादौन के राजा राजिंदर सिंह थे। वे हमें नदी के किनारे सीढ़ियों तक ले गए। नदी के किनारे एक बारात इंतज़ार कर रही थी। पालकी लाल कपड़े से ढकी हुई थी, और बारात के सदस्य रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए थे। वे देखने में बहुत सुंदर लग रहे थे।

(पृष्ठ 314)
बाज़ार से गुज़रते हुए हम अमंतर पहुँचे। हमने रात राजा के अतिथि कक्ष में बिताई। अतिथि कक्ष से ब्यास नदी दिखाई दे रही थी।
नादौन कभी कांगड़ा के राजाओं का निवास स्थान हुआ करता था। सुजानपुर टीरा और आलमपुर की स्थापना बहुत बाद में हुई। यहाँ पूर्व के राजाओं से जुड़ी कई कहानियाँ प्रचलित हैं।
नादौन के पास कई सियार रहते थे; वे रात में कर्कश आवाज करते थे। पौष माह की रात थी, जब राजा अमंतर स्थित अपने महल में सो रहे थे। सियार जोर-जोर से चिल्लाने लगे। अगली सुबह राजा ने अपने मंत्री से पूछा, “मंत्री जी, सियार रात में क्यों चिल्लाते हैं?” मंत्री ने उत्तर दिया, “महाराज, पौष माह है। उन पर बर्फ की बूंदें गिरती हैं। ये बेचारे अत्यधिक ठंड के कारण चिल्लाते हैं।”
राजा ने अपने अधिकारियों को सियार में कंबल बाँटने का आदेश दिया। उसी रात, सेवकों ने सियार के निवास स्थान के पास के जंगल में कंबल बिछा दिए। बचे हुए कंबल वे अपने घरों में ले गए। उस रात, सियार फिर से रोने लगे। अगली सुबह, राजा ने फिर अपने मंत्री से पूछा, “मंत्री जी, सियार अभी भी रो रहे हैं, क्या उन्हें अभी भी ठंड लग रही है?” मंत्री ने उत्तर दिया, “महाराज, वे आपका धन्यवाद कर रहे हैं क्योंकि आपने उन्हें ठंड से बचाया।”
अमंतर का शाब्दिक अर्थ है 'आम के पेड़ के नीचे का किनारा'। ऐसा लगता है कि यह नाम नदी के किनारे स्थित एक विशाल, भारी आम के पेड़ से उत्पन्न हुआ है। पहाड़ी लोग इस स्थान से मशकों पर बैठकर नदी पार करते थे। अमंतर में संसार चंद के वे महल हैं जिनकी खिड़कियों से वे बहती ब्यास नदी को निहारते थे। ये महल अब खंडहर हो चुके हैं। महलों तक जाने वाला एक पत्थर का रास्ता ही एकमात्र अवशेष बचा है, लेकिन वह भी धीरे-धीरे नष्ट हो रहा है। ऐसा कहा जाता है

227 “जो नादौन आता है, वह वहाँ से कौन जाता है?”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। संसार चंद अपने वृद्धावस्था में अपनी प्रेमिका,

नर्तकी जमालो के साथ इसी महल में रहते थे। जमालो के महल के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं।

संसार चंद के शासनकाल में नादौन में खूब उत्सव का माहौल रहता था। नादौन में लोहार, बढ़ई, सुनार, कालीन बुनने वाले, गायक और लेखक रहते थे, साथ ही लगभग दो सौ वेश्याएँ भी। यदि कोई उनके प्रेम के जाल में फँस जाता, तो उससे निकलना नामुमकिन हो जाता।

सन्सर चंद सन् 1760-1805 के दौरान अपनी शक्ति के चरम पर था। हालांकि, गोरखाओं के साथ युद्ध में उसकी सेनाओं को करारी हार मिली। यदि रणजीत सिंह ने उसका साथ न दिया होता, तो उसकी स्थिति और भी बदतर हो जाती।

(पृष्ठ 315)

गोरखाओं के चले जाने के बाद संसार चंद रणजीत सिंह की दया पर निर्भर हो गया था। अगर ऐसा न होता, तो वह अपना स्वाभिमान बनाए रखता, क्योंकि कहा जाता है कि वह खुद को रणजीत सिंह के अधीन नहीं समझता था। उसकी प्रशंसा करने के लिए उसके दरबारी कहते थे, "लाहोर पर विजय प्राप्त करो।" निराशा और हताशा से टूटकर वह जमालो के साथ अमंतर में एकांतवास में चला गया। उसके दरबारियों को आदेश दिया गया था कि वे उसके विश्राम में दखल न दें। महल के द्वार के सामने एक कमला का वृक्ष था, और संसार चंद के आदेशानुसार उसके सैनिक और दरबारी उस वृक्ष को प्रणाम करके चले जाते थे। "कमले की जय दिया 228" आज भी कांगड़ा में एक लोकप्रिय मुहावरा है।

यहां का सबसे पुराना चार मंजिला मकान राजा के सबसे छोटे बेटे जोधबीर चंद ने महल की दीवारों के भीतर बनवाया था। वह विशाल मैदान जहां राजा की सेना परेड का अभ्यास करती थी, अब छोटा पड़ गया है। स्थानीय हाई स्कूल के छात्र वहां फुटबॉल खेलते हैं। इस कस्बे में अग्नि मंदिर और एक गुरुद्वारा है। नदी के बाईं ओर एक शिव मंदिर है, जिसकी भित्ति चित्रकारी कांगड़ा कला का एक सुंदर उदाहरण है। जब मैंने 1960 में दोबारा नादौन का दौरा किया, तो मैंने देखा कि किसी मूर्ख भक्त ने इन चित्रों पर सफेदी कर दी थी। जब मैंने इस बारे में पूछा, तो मुझे बताया गया कि उस व्यक्ति को चीर-हरण दृश्य में चित्रित गोपियों के नग्न शरीर पसंद नहीं थे।229 मैंने बाल्टी भर पानी मंगवाया और बड़ी मुश्किल से इन दीवारों को धुलवाया, तब

जाकर कम से कम एक चित्र फिर से स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। हमारा देश ऐसे दकियानूसी लोगों से भरा पड़ा है। यदि उनके पास अधिक अधिकार होता, तो साहित्य की कई सुंदर कृतियाँ, भगवद पुराण की रास-लीला, कवि कौशिक की गीता-गोविंदा और रसिका-प्रिया का भी वही हाल होता जो नादौन के मंदिर की दीवारों पर बने चित्रों का हुआ है।

भगवान कृष्ण के मंदिर के पास एक गहरा कुआँ है; आज भी उससे पानी निकाला जाता है। थोड़ी दूर आगे गुरु गोविंद सिंह गुरुद्वारा है। इसका निर्माण सरदार विशाखा सिंह ने पठानकोट-कांगड़ा रेलवे लाइन के पूरा होने पर करवाया था।

चूंकि नादौन अब कांगड़ा घाटी की दूसरी राजधानी नहीं है, इसलिए इसका महत्व कम हो गया है। हालांकि, यह एक खूबसूरत शहर बना हुआ है और ब्यास नदी के बहने तक इसका महत्व बना रहेगा।

228 महल के भीतर राजा के स्थान पर कमाल वृक्ष को प्रणाम करना। 229 महाभारत से, द्रौपदी के चीर-हरण, या अपमान के दृश्य का तात्पर्य कौरवों की सभा द्वारा उसके वस्त्र उतारने से है, जबकि उसके पति, जो जुए के खेल में पराजित हुए थे, यह सब देख रहे थे। वह भगवान कृष्ण से अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करने की प्रार्थना करती है, और कृष्ण के आशीर्वाद से उसके शरीर को ढकने वाला वस्त्र अनंत हो जाता है। यहाँ चीर-हरण का सीधा सा अर्थ है शरीर को ढकने वाले वस्त्रों को जबरदस्ती उतारना।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैदानों में लौटने पर मुझे नदी, उसके किनारों पर चरती गायें और यहाँ के विविध लोगों की बहुत याद आई—मैं इस दृश्य को कभी नहीं भूल सका। जब मैदानों में पहली बारिश होती है, तो मुझे याद आता है कि नादौन के बागों में आम पक चुके होते थे, नदी पूरे उफान पर होती थी और ज्वालामुखी पहाड़ी की चोटी पर काले बादल मंडरा रहे होते थे। नादौन के पास, जब ब्यास नदी पर काले बादल छा जाते हैं, तो उसकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। ज्वालामुखी पहाड़ियों के ऊपर काले बादलों से छनकर

आती बिजली का नजारा बेहद मनमोहक होता है! बिजली की चमक में नदी पिघले हुए सोने की तरह चमकती हुई दिखाई देती है और ज्वालामुखी पहाड़ियाँ और भी गहरी नज़र आती हैं। यह कहावत बिल्कुल सच है, "जो नादौन आता है, वो वापस कैसे जाता है?" एक बार नादौन जाने के बाद, आपका मन उसे छोड़ने का नहीं करता। नादौन की मीठी यादें अविस्मरणीय हैं।

मेरी पत्नी इकबाल ने नादौन के मंदिर, महल और चित्रकारी देखने के बाद, डॉ. आनंद, उनकी पत्नी और सचिव के साथ नादौन से गोपीपुर नाव से जाने का फैसला किया। श्री आर्चर और मुझे नाव की सवारी पसंद नहीं थी, इसलिए हमने उनका फैसला मान लिया और कार से गोपीपुर गए, जबकि वे नाव से वहाँ पहुँचे। हमने रात राजा के अतिथि गृह में बिताई। चाँदनी रात में धीरे-धीरे बहती ब्यास नदी किसी स्वर्गिक झील जैसी लगती है। पूर्णिमा की पूर्णिमा ब्यास घाटी पर चाँदी बिखेर रही थी। चाँद ने हम सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। नदी के किनारे लगे पेड़ के पत्ते सुनहरे दीयों की तरह चमक रहे थे। यह एक पीपल का पेड़ था और उसके तांबे जैसे रंग के पत्ते चाँदनी में जगमगाते कई प्रकाशस्तंभों की तरह लग रहे थे। एक हिंदू कवि ने सही कहा है कि ब्रह्मा इस पेड़ की जड़ों में निवास करते हैं, विष्णु इसके तने में निवास करते हैं और देवता इसके सभी पत्तों पर विराजमान होते हैं। मैं बरामदे में सो गया और कवि के कहे सत्य को महसूस किया।

मैं अभी ठीक से सोया भी नहीं था कि आसमान में बिजली चमक उठी; गरज से पहाड़ कांप उठे, मानो भगवान क्रोधित हो रहे हों। ब्यास नदी की सहायक नदियाँ तेज़ी से उसकी ओर बह रही थीं, मानो कोई दीवानी औरत अपने प्रेमी को ढूंढ रही हो। मैं नादौन के राजा के अतिथिगृह के बरामदे में बैठा था और इस बात को लेकर चिंतित था कि कल आसमान साफ होगा या नहीं।

(पृष्ठ 317)

लेकिन मैं सुबह जल्दी उठा तो देखा कि बादल छंट गए थे और धौलाधार पर्वतमाला दिखाई देने लगी थी। थोड़ी ही देर में, सुबह का चमकता सूरज रात के पीपल के पेड़ के पीछे से निकला और धूप में उसके पत्ते तांबे जैसे रंग से सुनहरे हो गए। मैंने अपने दोस्तों से पहाड़ियों के नज़ारों का आनंद लेने को कहा, लेकिन वे बातचीत में मशगूल थे। मुल्क राज ने जवाब दिया कि उन्हें बाहरी दृश्यों की तस्वीरों से ज़्यादा मन की

तस्वीरें पसंद हैं। मैंने उनसे पूछा कि अगर ऐसा है तो वे इतनी दूर क्यों आए हैं? वे अपने मन के दृश्यों को मुंबई में भी देख सकते हैं।
आर्चर और मैं कार से देहरादून गोपीपुर पहुँचे; हमारे बाकी साथी नाव से आए। नदी पार करने के बाद हमने गुग्गा मंदिर देखा। गुग्गा की मिट्टी की मूर्ति बहुत ही सुंदर ढंग से बनाई गई है, उनके घोड़े की उठी हुई पूंछ देखकर ऐसा लगता है मानो वह तेज़ी से दौड़ रहा हो।
फिर हमने दोनों ओर छोटी-छोटी बंजर पहाड़ियों वाली एक घाटी पार की। यहाँ पानी की कमी है। इसके बाद एक खाली किला दिखाई देता है, जो राजपूतों के गौरव का प्रतीक है। हरिपुर गुलेर की ओर जाने वाली सड़क यहाँ से दो भागों में बँट जाती है। यह सड़क कच्ची है, और हम धूल के गुबार उड़ाते हुए देहरा गोपीपुर पहुँचे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
हमारे साथियों द्वारा की गई नौका यात्रा और नादौन की कुछ अन्य घटनाओं का वर्णन मेरी पत्नी ने इस पुस्तक के अगले पृष्ठों में किया है; इन्हें शब्दशः मुद्रित किया गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 46

ब्यास की यात्रा

(पृष्ठ 318)

यहां नदियां और धाराएं बहती हैं।
Ethe vagdi Beas vo The Beas passes by,
Ethe vagdi Beas vo adhiya The beas flows here, oh lover,
Sab di bujhandi pyaas vo It slakes everyone’s thirst.

श्री रंधावा, डॉ. आनंद और श्री आर्चर से परिचय होने के बाद, नादौन के राजा को

डॉ. आनंद की पत्नी और उनकी सचिव डॉली से परिचय कराया गया।230 अपने साथियों का परिचय कराते हुए डॉ. आनंद ने कहा, “ये मेरी पत्नी शिरीन हैं। ये भारत की एक प्रसिद्ध नृत्यांगना हैं और इन्होंने बच्चों को नृत्य सिखाने के लिए मुंबई में एक नृत्य विद्यालय भी स्थापित किया है।” यह सुनकर राजा साहब का चेहरा चमक उठा। उन्होंने कहा, “बहुत बढ़िया! यह बहुत अच्छा है कि हमें आपकी प्रतिभा को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिलेगा।” फिर उनकी मुलाकात डॉली से हुई, जो हंसमुख स्वभाव की थीं और फोटोग्राफी में माहिर थीं। राजा उन्हें सिर से पैर तक उत्साह से भरपूर देखकर प्रसन्न हुए।
राजा साहब का निवास नदी के किनारे बना हुआ है। एक तरफ तीन-चार कमरे हैं जिन्हें राजा ने हमारे आने की खबर मिलते ही साफ करवाया था। उनके प्रबंधक (मुंशी) ने ये कमरे हमारे लिए खोल दिए। नदी की ओर खुलने वाले कमरे बहुत रोशन थे जबकि दूसरी तरफ वाले कमरे इतने अंधेरे थे कि हमें दिन के समय भी उन कमरों का इस्तेमाल करने के लिए ट्यूबलाइट जलानी पड़ी।

(पृष्ठ 319)
इन कमरों के सामने एक लंबा बरामदा था जहाँ हमने चटाई, कुर्सियाँ और पलंग बिछाईं, जिससे वहाँ बैठकर बहती नदी की सुंदरता का आनंद लेना काफी आरामदायक हो गया। इसके बाद, हमने अपने कमरों में अपना सामान खोला। इसी बीच राजा साहब का बेटा भी वहाँ पहुँच गया। कंवर साहब सात साल का लड़का था; उसका रंग गोरा था और आँखों में काजल लगा हुआ था। उसने जरी की कढ़ाई वाला अचकन और नारंगी रंग का भव्य शाही मुकुट पहना हुआ था, जो उस पर बहुत जँच रहा था।
भोजन का समय हो गया। राजा साहब ने बड़े ही आतिथ्य सत्कार के साथ हमारे लिए कई मांसाहारी व्यंजन तैयार करवाए थे। खाना बड़ी-बड़ी थालियों में सजाकर परोसा गया, लेकिन जब आर्चर ने देखा कि थालियों में बहुत घी है, तो उसने केवल पुलाव और फल खाने का फैसला किया। बाकी सभी ने खाने की बहुत सराहना की। यह राजा के पारिवारिक रसोइए ने बनाया था, जो सभी पुरानी पारिवारिक और शाही व्यंजनों से परिचित थे। फिर हमने थोड़ी देर आराम किया और शाम को राजा के पूर्वजों के महल देखने के लिए निकल पड़े। ये महल विशाल चट्टानों पर बने थे; नदी

का पानी नीचे से बहता था। महलों के अंदर से नदी तक एक प्राकृतिक सुरंग जाती थी, जिसका उपयोग रानियाँ स्नान के लिए करती थीं। नदी का पानी उस सुरंग से होकर बहता था। हालाँकि प्राचीन इमारत के कोई अवशेष नहीं बचे हैं, फिर भी हम देख सकते थे कि राजा के पूर्वजों ने प्राकृतिक रूप से मौजूद चट्टानों और भू-आकृतियों का उपयोग अपने मनोरंजन के लिए अनोखे तरीके से किया था।

230 जैसा कि पिछले अध्याय में उल्लेख किया गया है, यह अध्याय श्री रंधावा की पत्नी इकबाल कौर द्वारा लिखा गया है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। विश्राम। जब हम सुरंग देखने गए, तो हमें केवल रेत के जमाव ही दिखाई दिए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उस समय नदी का पानी इसके बीच से बहता होगा। यह एक सुंदर स्थान रहा होगा। हम कुछ देर उन बड़ी चट्टानों पर बैठे रहे और उस स्थान की सुंदरता का आनंद लिया, जो कुछ दूरी पर बहती नदी से और भी बढ़ गई थी।

हम पुराने समय के राजाओं की जीवनशैली के बारे में सोचते रहे। फिर हम राजा साहब के महल गए, जो अंग्रेज़ी शैली में सजा हुआ था, जिसमें सोफे और दीवारों पर शीशे लगे थे। कुछ दीवारों पर कांगड़ा चित्रकलाएँ थीं - कुछ प्राचीन कलाकारों की रचनाएँ थीं, जबकि कुछ नई शैली में बनाई गई थीं। चित्रों को देखने के बाद, हम अपने महल लौट आए और चाय पी।

चाय के बाद, श्री रंधावा बरामदे में बैठकर अपने चारों ओर की प्राकृतिक सुंदरता को निहार रहे थे, और अपनी उस किताब के बारे में सोच में डूबे हुए थे जिसे वे लिखने वाले थे।

(पृष्ठ 320)

हम सबने नदी की ओर जाने का फैसला किया। डॉ. आनंद और आर्चर ने नदी में तैरने का निर्णय लिया। जब वे नदी में तैर रहे थे, हम उसके किनारे बैठकर रंग-बिरंगे पत्थरों को देखने लगे; उनमें से कुछ के रंग अनोखे थे। यात्रा के दौरान हमने तय किया था कि आगे का सफर नाव से तय करेंगे, इसलिए हमने अगली सुबह 9 बजे के लिए एक

नाविक किराए पर ले लिया।
जब हम लौटे तो अंधेरा हो चुका था। रात के खाने के बाद, रात के 9 बजे पहाड़ियों के पीछे से और पेड़ों के बीच से चाँद निकला। देखते ही देखते नदी और आसपास का इलाका चाँदनी में जगमगा उठा। उस दृश्य को हमेशा के लिए संजोकर रखा जा सकता था; तभी हमने उस शांत और सुंदर जगह पर अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने का फैसला किया।
अगली सुबह, हम तैयार हुए और रानी का अभिवादन करने और राजा साहब के आतिथ्य सत्कार के लिए उनका धन्यवाद करने का निर्णय लिया। संभवतः पर्दा प्रथा के कारण वह हमसे मिलने नहीं आ सकीं। इसलिए, मैं, डॉली और शिरीन महल गए। बाहर खेलते हुए हमें एक छोटा राजकुमार मिला। हमने उससे रानी के बारे में पूछा। उसने ऊपर की ओर इशारा करते हुए कहा, "वहाँ।" हमने उससे हमारे साथ चलने और हमें अपनी माँ के पास ले जाने का अनुरोध किया।
हम उस कमरे में खड़े थे जहाँ वह हमें ले गया था। कमरे के एक तरफ चूल्हा था और दूसरी तरफ रानी की दासियाँ। एक दासी चूल्हे पर कुछ गर्म कर रही थी। दूसरी अपनी सिलाई किट में कुछ ढूंढ रही थी। हमने उनसे कहा कि वे रानी को बता दें कि उनके मेहमानों की पत्नियाँ उनसे मिलने आई हैं। उन्होंने हमें मौखिक रूप से कुछ नहीं कहा, बल्कि सिर घुमाकर 'ना' का इशारा किया और आपस में मुस्कुराने लगीं।
इसी बीच, एक बूढ़ा नौकर बाहर आया और हमें बताया कि रानी हमसे नहीं मिलेंगी और हमें नीचे जाना चाहिए। हमने सोचा कि शायद उसे पता नहीं था कि हम राजा के मेहमान हैं, और इसीलिए वह मिलने से मना कर रहा है। मैंने अपनी बात दोहराई, “जाओ! कृपया रानी के पास जाओ और उन्हें बता दो कि हम उनसे मिलने के लिए बाहर खड़े हैं।” उसी समय, हमने रानी के भागते कदमों की आहट सुनी, और दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया। दरवाजे के पीछे से एक धीमी आवाज़ आई कि वह स्नान कर रही हैं, इसलिए अभी हमसे नहीं मिल सकतीं।

(पृष्ठ 321)
यह सुनकर हमें आश्चर्य हुआ। हम चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतर गए। हमने राजकुमार के जवाब का इंतजार नहीं किया क्योंकि वह रानी के साथ कमरे में थे, दरवाजा बंद था। वापस आकर हमने यह कहानी अपने साथियों को सुनाई, वे खूब हंसे। फिर, हमने

अपना सामान इकट्ठा किया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। यात्रा के अगले पड़ाव पर, लगभग 15-20 मिनट बाद, हमने राजा और राजकुमार को अपनी ओर आते देखा। हम सभी ने उनके आतिथ्य सत्कार के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और उनसे विदा ली।

हमने अपना दोपहर का भोजन पैक किया और जल्दी से देहरादून-गोपीपुर के लिए निकल पड़े। हमने अपना सामान कार में रखा और ड्राइवर से पुल के दूसरी तरफ मिलने को कहा। हममें से आधे लोग नाव से जाना चाहते थे, जबकि बाकी आधे ने कार से जाने का फैसला किया। पुल पर मिलने के बाद ही हम आगे की यात्रा तय करेंगे। पुल वहाँ से दो-तीन मील दूर था। श्री आर्चर को नाव से यात्रा करने में थोड़ी झिझक थी क्योंकि उस दिन बहुत गर्मी थी। इसलिए श्री रंधावा ने भी उनके साथ कार से जाने का फैसला किया। हमने उन्हें आधा खाना दिया और नाव की ओर चल दिए। रास्ते में एक गाँव पहुँचकर हमें बहुत खुशी हुई, जहाँ एक बड़ा मेला लगा हुआ था। गाँव की सभी लड़कियाँ नदी के किनारे इकट्ठा थीं; उन्हें देखकर हम बहुत उत्साहित थे। दिन बहुत गर्म था, लेकिन गाँव के लोगों के बीच गाँव में घूमने का हमें बहुत आनंद आ रहा था। हमने अपनी यात्रा में कई रोचक दृश्य देखे - जंगल, चट्टानें, लहराते हरे खेत, खेतों में काम करते लोग, नदी में जाल बिछाते मछुआरे। कुछ जगहों पर नाव तेज़ धाराओं से गुज़री; तेज़ धारा से हमें डर लग रहा था क्योंकि नाव पलट सकती थी। हमारा नाविक हमें रास्ते में आने वाली धाराओं के बारे में पहले ही बता देता था, ताकि हम मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार होकर शांति से उनका सामना कर सकें। इस तरह नाव संतुलित रहती थी और नाविक धारा के बीच से नाव को कुशलतापूर्वक चलाता था। ऐसा लग रहा था जैसे हम झूले पर बैठे हों और आगे-पीछे झूल रहे हों। हममें से किसी ने भी इससे पहले नदी में नाव से इतनी लंबी यात्रा नहीं की थी। दोपहर 12:30 बजे तक हम एक गांव के पास नदी के किनारे पहुंच गए, जहां एक मेला चल रहा था।

(पृष्ठ 322)

हम नाव से उतरे और धूप में लगभग आधा मील पैदल चले, बड़े-बड़े रेतीले पत्थरों को

पार किया और दूसरी तरफ गाँव के मेले में पहुँचे। हममें से कुछ ने तेज़ धूप से बचने के लिए छाते खोल लिए, बाकी बिना छाते के ही चल रहे थे। रास्ते में हमें गाँव की लड़कियों के समूह मिले - उन्होंने रंग-बिरंगे सलवार-कमीज़ पहनी हुई थी, सिर पर बुनी हुई चोंक-फूल और नाक में नथनी पहनी हुई थी। वे पहाड़ी गीत गा रही थीं। वे हमें घूर रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे हम उन्हें घूर रहे थे; वे इसलिए घूर रही थीं क्योंकि डॉली और शिरीन ने पतलून पहनी हुई थी। एक लड़के ने कहा कि हम फिल्म इंडस्ट्री के लोग हैं; इस टिप्पणी पर हम हँस पड़े। जब हम अपनी यात्रा के दौरान बोडलान गाँव से जालंधर के लिए निकले थे, तब डॉली और शिरीन हमारे साथ थीं।
गांव के जाटों ने उन्हें पतलून पहने देखा तो वे सदमे में "वाहेगुरु, वाहेगुरु" कहने लगे। हमने मेले में आए लोगों से बात करके उनके मन में हमारे फिल्म जगत से जुड़े होने को लेकर जो भी शंकाएं थीं, उन्हें दूर किया। हमने उन्हें आश्वस्त करने के लिए पहाड़ी रीति-रिवाजों के बारे में जानकारी दी। उदाहरण के लिए, हम लड़कियों से पूछते, "क्या तुम रल्ली को डुबाने जा रही हो?" और वे आश्चर्य से हां में जवाब देतीं। हर लड़की के हाथ में एक गुड़िया होती और वे उसे रल्ली कहतीं। वे गुड़िया को शादी के कपड़े और गहने पहनाकर उसकी शादी करवातीं और फिर उसे डुबा देतीं। डुबाने से पहले वे अपनी गुड़िया को गले लगातीं और जोर-जोर से रोतीं।
हम कुछ देर तक इसे देखते रहे। फिर हमने एक पेड़ की छाँव में दोपहर का भोजन किया। थोड़ी देर आराम करने के बाद हम दोपहर लगभग 2:30 बजे नाव की ओर चलने लगे। अभी भी बहुत गर्मी थी। हमने अपने टिफिन बॉक्स पकड़े और यात्रा के अगले चरण के लिए तेज़ी से चलने लगे ताकि हम जल्दी से नाव तक पहुँच सकें और चिलचिलाती गर्मी से कुछ राहत पा सकें। तेज़ चलने के बावजूद, हमें नाव तक पहुँचने में 30-45 मिनट लग गए। सरल पहाड़ी लोगों के साथ हमारी बातचीत ने

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। हमारे साथियों में उत्साह भर गया, क्योंकि वे बंबई में चतुर लोगों से मिलने के आदी थे। इन लोगों की सादगी ने उनके दिलों को छू लिया।

नाव में थोड़ा आगे बढ़ने पर हमें दाहिनी ओर एक मंदिर दिखाई दिया। हमारी जगह से हमें उस पर लाल, पीले और नीले दुपट्टे दिखाई दे रहे थे। जब हमने नाविक से इसके

बारे में पूछा, तो उसने बताया कि यहाँ एक और मेला लगा हुआ है और जब लड़कियाँ रल्ली को डुबाने के बाद लौटती हैं, तो वे सबसे पहले इस मंदिर में जाती हैं और फिर घर जाती हैं। हालाँकि, चिलचिलाती गर्मी और थका देने वाली यात्रा के कारण, हममें से कोई भी मंदिर में होने वाले उत्सव में शामिल होने के लिए आगे नहीं बढ़ा।

(पृष्ठ 323)
इसके बावजूद, हमारी निगाहें बार-बार उन रंगीन वस्त्रों पर टिकी रहीं। हम तब तक उन्हें देखते रहे जब तक मंदिर दिखना बंद नहीं हो गया। हम शाम चार बजे गोपीपुर पहुँचे। वहाँ पास ही एक डाक बंगला है। जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचे, तो हमने देखा कि दोनों साहब बरामदे में चाय पीते हुए बैठे हैं और हमारे अभी तक न पहुँचने के कारणों पर चर्चा कर रहे हैं और हमारी कुशल मंगल की कामना कर रहे हैं। हम डाक बंगले पर पहुँचे, उनकी चिंताओं को दूर किया और लंबी यात्रा के बाद गर्म चाय पीकर तरोताज़ा हुए।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 47

Dehra Gopipur

(पृष्ठ 324)
देहरा गोपीपुर इस क्षेत्र की तहसील है। यहाँ एक बिखरा हुआ अव्यवस्थित बाज़ार है। यहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें, एक तहसील कार्यालय, एक पुलिस थाना और स्कूल हैं। नदी के ढलान पर एक डाक बंगला है। जब हम बंगले पर पहुँचे, तो हमने देखा कि पंजाब सरकार के एक कार्यकारी अभियंता ने बंगले पर कब्ज़ा कर रखा था। जब उन्होंने बंगला खाली करने का कोई इरादा नहीं दिखाया, तो मैंने उन्हें मुख्य अभियंता द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र दिखाकर मनाने की कोशिश की। लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। तभी हमने देखा कि एक अधिकारी का अहंकार कैसा हो सकता है, जैसे फन्ने खान।231 हम इस तरह के अनुचित अहंकार को देखकर चकित रह गए। इसी बीच,

एक नायब-तहसीलदार, जिन्हें मैं जानता था, वहाँ पहुँचे। मैंने उनसे अभियंता से बात करने के लिए कहा कि वे विशिष्ट अतिथियों, विशेष रूप से इंग्लैंड के प्रसिद्ध लेखक श्री डब्ल्यू.जी. आर्चर और प्रसिद्ध भारतीय उपन्यासकार मुल्क राज आनंद, जो मेरे साथ आए थे, का सम्मान करें। उन्हें उनका गर्मजोशी से स्वागत करना चाहिए था। इतनी मशक्कत के बाद इंजीनियर ने बड़ी मुश्किल से बंगला खाली किया। अधिकारी का स्वार्थी व्यवहार दर्शाता है कि अगर उसने हमारे साथ ऐसा बर्ताव किया, तो आम जनता के साथ उसका बर्ताव और भी बुरा रहा होगा।

(पृष्ठ 325)
ये अधिकारी अपनी सजी-धजी पत्नियों के साथ ऐशो-आराम की जिंदगी जीते हैं। उन्हें अपने आसपास की चीजों में जरा भी दिलचस्पी नहीं होती और वे अपने आसपास के लोगों के प्रति पूरी तरह से बेपरवाह होते हैं। इसी तरह के अधिकारी जनता और सरकार के बीच नफरत का कारण हैं।
अपना सामान अंदर रखने और यह सुनिश्चित करने के बाद कि मेरे साथी अपने कमरों में आराम कर रहे हैं, मैं बाहर आया। मैंने एक धूल भरी सड़क देखी। एक स्टेशन वैगन आई थी जिसमें पंजाब सरकार का एक उच्च पदस्थ अधिकारी बैठा था। मैं उसे जानता था। वह अपने शरीर की मोटाई की तुलना में बहुत लंबा था। उसका स्वभाव इतना रूखा था कि उसे देखकर मेरी भूख गायब हो जाती थी। उसे देखकर मेरे मन की खुशी उड़ गई। उसने मुझे बताया कि वह केवल आधे घंटे के लिए चाय पीने के लिए रुक सकता है। वह रात भर नदी के उस पार स्थित भरवैन के बंगले में रुका हुआ था। हम दोनों बरामदे में कुर्सियों पर बैठ गए। उसने मुझसे पूछा, "आप यहाँ किस उद्देश्य से आए हैं?"
मैंने उनसे कहा, “मैंने कांगड़ा चित्रकला पर शोध करने के लिए यहां आने की छुट्टी ली है। अभी हम नादौन से आए हैं, जहां हमने नादौन के राजा और मियां देवी चंद द्वारा संग्रहित चित्रों का संग्रह देखा।”
“ये कांगड़ा की पेंटिंग्स क्या हैं जिनके लिए आप इतनी मेहनत कर रहे हैं? अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं अपनी छुट्टियां मुंबई जैसे शहर में बिताता, जहां बड़े-बड़े होटल, थिएटर और सिनेमा हॉल हैं। इस सुनसान जगह पर आपको क्या मिलेगा?”
मैं अंदर गया और कांगड़ा कला की अपनी किताब ले आया जिसमें मेरे द्वारा चुनी गई

पेंटिंग्स की रंगीन तस्वीरें थीं। इसमें चालीस कांगड़ा पेंटिंग्स के प्रिंट थे और कला प्रेमियों ने इसकी बहुत सराहना की थी। मैंने वह किताब अधिकारी को सौंप दी। उसने जल्दी से पन्ने पलटे जैसे ताश के खेल में पन्ने फेंटे जाते हैं। पाँच मिनट बाद उसने वह किताब मुझे लौटा दी।

231 फैनी खान यहाँ, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए एक अपमानजनक शब्द है जो इतना भ्रमित है कि वह मानता है कि वह बहुत शक्तिशाली है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। यह पुस्तक पाँच वर्षों के शोध और परिश्रम का परिणाम थी, और इसमें बारहमासा और नायिका-भेद के इतने सुंदर चित्र थे कि मुझे इन्हें खोजकर बहुत आनंद आया। उनमें से कुछ इतने विस्मयकारी थे कि उनके बारे में सोचते-सोचते मेरी रातों की नींद उड़ गई। मैं अक्सर इन चित्रों के सपने देखता था, आनंदित होकर - इन कृतियों को चित्रित करने वाले कलाकारों ने अपने हृदय की सच्ची भावनाओं को व्यक्त किया था। टॉल्स्टॉय ने कहा है कि कला लेखक या कलाकार की भावनाओं का मानचित्र है, दर्शक उन्हीं भावनाओं को महसूस करता है।

(पृष्ठ 326)
उन चित्रों में स्त्री के प्रेम से व्याकुल हृदय और आशा से भरे प्रेम को हम सचमुच महसूस करते हैं। कांगड़ा कला वास्तव में एक असाधारण कला शैली है। लेकिन मुझे नहीं पता कि उन चित्रों का मेरे मित्र पर कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ा। उसे चित्र दिखाना व्यर्थ ही सिद्ध हुआ।232 वास्तव में, कला का आनंद केवल एक संवेदनशील व्यक्ति ही ले सकता है। एक महान चित्र राग के समान है, जबकि हमारी आत्मा सारंगी है। जब सौंदर्य आत्मा से मिलता है, तब संगीत उत्पन्न होता है। यही कला की कसौटी है। यह मुझे एक चीनी लोककथा की याद दिलाता है। लुंगमान घाटी में एक विशाल वृक्ष था, जो जंगल के सम्राट जैसा दिखता था। उसका मुकुट तारों से बातें करता था, जबकि उसकी जड़ें पाताल लोक तक फैली हुई थीं। एक जादूगर ने उस वृक्ष को काटकर उससे एक वीणा बनाई और उसे चीन के सम्राट को भेंट कर दिया। जादूगर ने कहा कि केवल सर्वश्रेष्ठ संगीतकार ही वीणा बजा सकता है। कई महान संगीतकारों

और गायकों ने इसे बजाने का प्रयास किया, लेकिन वे केवल बेसुरी धुनें ही निकाल सके। जब सभी असफल हो गए, तो सर्वकालिक महानतम संगीतकार पीवू ने इसे बजाने का प्रयास किया। उसने प्रेम और आदर से वीणा उठाई और उसे इस प्रकार सहलाया जैसे कोई सवार अपने जंगली घोड़े से प्रेम करता है। उसने ऋतुओं, ऊँचे पहाड़ों और बहते जल के गीत गाए, और वृक्ष को वे पुराने समय याद आ गए। वीणा से ऐसी मधुर धुन निकली कि संसार का रंग बदलने लगा। पश्चिमी हवा फिर से वृक्ष की शाखाओं से होकर बहने लगी। फूलों और कलियों पर झरने कलकल करने लगे। बारिश की हल्की फुहार, कीड़ों की चहचाहट और कोयल का मधुर गीत, बारिश का नृत्य। सुनो! शेर की दहाड़ पहाड़ों में गूंजने लगी। पतझड़ में पत्तों से रहित पेड़ों के बीच से चांद झांकने लगा। सर्दियों में पक्षियों के पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी, ओले गरजते हुए डालियों पर बरसने लगे।
पीवू ने धुन फिर बदल दी, उसने एक प्रेम गीत गाया, जिससे वृक्ष आनंद से झूम उठा। एक चमकता हुआ बादल आकाश में ऐसे गुजरा जैसे कोई युवती अपनी सुंदरता पर गर्व से झूम रही हो। बादल ने पहाड़ी पर एक लंबी, गहरी छाया बना दी। पीवू ने धुन फिर बदल दी।

(पृष्ठ 327)
उसने युद्ध के गीत गाना शुरू किया, दुनिया दौड़ते घोड़ों की आवाज़ों, तलवारों और भालों की खड़खड़ाहट से गूंज उठी। बिजली गिरने से बर्फ का पहाड़ हिलने लगा। सम्राट ने पीवू से उसकी सफलता का रहस्य पूछा। पीवू ने उत्तर दिया, “महाराज, दूसरे संगीतकार इसलिए असफल हो गए क्योंकि वे अपनी-अपनी धुनें बजा रहे थे। अपनी समाधि में, मैंने वीणा को अपनी धुन चुनने दी। मैं यह नहीं कह सकता कि पीवू ही वीणा थी या वीणा ही पीवू थी।”

232 भैंस के आगे बीन बजाना: एक लोकप्रिय मुहावरा जिसका अर्थ है कि सांप को वश में करने से पहले बीन बजाना व्यर्थ है, लेकिन भैंस को वश में करने के लिए यही युक्ति अपनाना भी व्यर्थ होगा। अपने मित्र को चित्रों से प्रभावित करने के मामले में भी यही बात लागू होती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

पीवू कला का सर्वोच्च रूप है और हम लुंगमन की वीणा हैं। जब सौंदर्य का जादू हमारे हृदय के छिपे तारों को छूता है, तो हमारी आत्मा सारंगी की तरह संगीत बजाने लगती है और हम अस्तित्व के दसवें द्वार तक पहुँच जाते हैं। आनंद से भरकर, मन मन से और हृदय हृदय से बातें करते हैं। पुरानी, भूली हुई यादें ताज़ा हो जाती हैं और इच्छाएँ और उत्साह जागृत होते हैं। हमारा मन उस कागज़ की तरह हो जाता है जिस पर कलाकार अपने रंग उकेरता है, वह परमानंद में डूब जाता है। एक महान चित्रकला का अनुभव ऐसा ही होता है, मानो वह स्वयं का ही एक हिस्सा हो।

हमें किसी महान चित्रकारी को उसी प्रकार निहारना चाहिए जैसे हम किसी महान व्यक्ति को निहारते हैं। उस क्षण हमारे हृदय में प्रेम और विनम्रता होनी चाहिए। विशेष रूप से कांगड़ा कला में ऐसे चित्र शामिल हैं जो शर्मीली, सुंदर युवतियों के समान हैं और जिन्हें ज्ञान, कोमलता और प्रेम से देखने पर आनंद मिलता है। जैसे हम किसी महान चित्रकारी का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ाते जाते हैं, वैसे ही जैसे हम किसी अच्छी स्त्री के प्रति प्रेम महसूस करते हैं, उसे निहारते-निहारते नहीं थकते। इसी प्रकार, कांगड़ा चित्रों को बार-बार देखने से भी मन नहीं भरता क्योंकि हर बार देखने पर आपको कोई न कोई नया पहलू नजर आता है जो पहले छिपा हुआ था।

मुझे कांगड़ा कला के बारे में अधिकारी की अज्ञानता की कोई परवाह नहीं थी। मैं नदी किनारे गया और घास पर बैठ गया। शाम का समय था; हल्की हवा चल रही थी। घास पर बैठे-बैठे मैंने नन्हे, जलते सूरज के खूबसूरत नज़ारे का आनंद लिया। देखते ही देखते अंधेरा पहाड़ियों पर छा गया और सन्नाटा छा गया। सबसे ऊँची चोटी के पीछे से चाँद की हल्की सी किरणें चमक उठीं और घोर अंधेरा छंट गया। आसमान तारों से जगमगा रहा था और चाँद मानो गोपियों के सागर में भगवान कृष्ण की मूर्ति जैसा लग रहा था।

(पृष्ठ 328)

मुझे वंझली की ध्वनि सुनाई दे रही थी, उसकी मधुरता मेरे हृदय में समा गई। पहाड़ियों की शांति में उसकी धुन कितनी सुंदर लगती है! उसमें कोई जादू जरूर है। वरना, अगर संगीत में जादू न होता तो गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में क्यों लीन हो जातीं?

यह ईश्वर की वाणी है, जब ईश्वर के भक्त इसे सुनते हैं, तो वे सर्वव्यापी ईश्वर की शक्ति का अनुभव करते हैं, जो जल, पृथ्वी, वन, पर्वत और वनस्पतियों में प्रवाहित होती है। वंझली की ध्वनि ने मन को प्रसन्न कर दिया। आज भी, जब मैं देहरा गोपीपुर के बारे में सोचता हूँ, तो चाँदनी में चमकती नदी की लहरें मेरी आँखों के सामने आ जाती हैं और मेरे कानों में वंझली का जादुई संगीत गूंज उठता है। वंझली के इस मधुर संगीत का आनंद लेते हुए, मैंने बंगले में अपना भोजन किया और चारपाई पर लेट गया। संगीत सुनते-सुनते मुझे नींद आ गई।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 48

दादा सिब्बा

(पृष्ठ 329)

‘डेड सिर्फ एक महिला है।’

Tere par jhuli reha mian jasrotiya’233

तान-तान-तान, घंटियों की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी और मैं जाग गया। भोर का समय था जब किसान अपने बैलों को खेतों की ओर ले जा रहे थे। सुबह का तारा पहाड़ की चोटी के ऊपर टिमटिमा रहा था, नीचे की ज़मीन पर उसकी हल्की रोशनी पड़ रही थी, मानो रोशनी का उसका परिवार चोटी को घेरे हुए हो। मैं जागा और नदी किनारे गया। बर्फीली चोटियों से ठंडी हवा चल रही थी, जिससे मुझे कंपकंपी हो रही थी। डेमोइसेल सारस का एक झुंड ज़मीन की ओर उड़ रहा था, उनकी आवाज़ बहुत मधुर थी। खेतों से सारस की आवाज़ सुनाई दे रही थी, उनकी आवाज़ किसी ऑर्गन की तरह लग रही थी। उनकी आवाज़ बहुत पवित्र है। यह सच्चे प्रेमियों की आवाज़ है जो जीवन भर साथ रहते हैं और कभी एक-दूसरे से अलग नहीं होते। यह बसंत का मौसम था, पुंगारा के फूलों का। हवा गार्ना के फूलों की खुशबू से महक रही थी। सूरज धीरे-धीरे निकला; उसकी किरणें पीपल के पेड़ों की छतों पर सुनहरी बौछार की तरह फैल गईं। घास पर

ओस की बूँदें सूरज की किरणों में पिघल गईं। ब्यास पक्षी चुपचाप सफेद चट्टानों के पास इकट्ठा हुए और मैदानों की ओर बढ़ गए, जबकि टाटिरी पक्षी और खरगोश आसपास खेल रहे थे।
सुबह की खूबसूरती का लुत्फ़ उठाने के बाद मैंने अपने साथियों को जगाया। इक़बाल ने जल्दी से हमारा सामान इकट्ठा किया और सबको चाय और उबले अंडे परोसे। रसील सिंह ने हमारा सारा सामान कार में रखा और तैयार होने के बाद हम अपने अगले गंतव्य की ओर नदी की तरफ चल पड़े।

(पृष्ठ 330)
जब हम समतल जमीन पर उतरे, तो हम कार में बैठ गए।
जब हम रस्सी के पुल से नदी पार कर रहे थे, तो हमारी मुलाकात दो मंत्रियों से हुई। एक के माथे पर लाल तिलक लगा था, जिस पर सफेद चावल के दाने चिपके हुए थे। दूसरे के माथे पर लगा तिलक तो और भी सुंदर था। मंत्री पद के पतन के कारण वे ज्वालामुखी के और भी अधिक श्रद्धावान तीर्थयात्री बन गए थे, जो अंततः उनके लिए व्यर्थ साबित हुआ। इन दोनों को ज्योतिषियों के प्रति विशेष श्रद्धा थी और वे ज्योतिषियों से सलाह लिए बिना कोई कार्य नहीं करते थे। इस मामले में इन भोले-भाले लोगों की क्या गलती थी? कोई भी व्यक्ति जो किसी समस्या को लेकर असमंजस में होता है, वह ज्योतिषियों से सलाह लेकर ही सहारा और सांत्वना पाता है। चतुर ज्योतिषी वह होता है जिसकी सलाह व्यक्ति के मन को भा जाती है।
अब हमारी कार सड़क पर बिखरे गोल पत्थरों से टकरा रही थी, जो नदियों और नालों के किनारों पर पड़े थे। दादा सिबा से 12 मील लंबी सड़क घने आम और हरड़ के पेड़ों से घिरी हुई थी। इनके अलावा, बहेड़ा और अर्जुन के पेड़ अपनी ठंडी छाया से यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। अंत में, हम दादा खड्ड नामक एक पहाड़ी घाटी में पहुँचे। यह घाटी बहुत चौड़ी है। इसके किनारे गोल पत्थरों से भरे हुए हैं। हमने एक आम के पेड़ के नीचे थोड़ी देर आराम किया।

233 वह स्त्री दादा नदी में नाव से कहती है, 'तुम मेरी सौंकंद हो, मेरा पति तुममें मदहोशी से झूमता है।' सौंकंद: वह स्त्री जो किसी के पति/प्रेमिका की दूसरी पत्नी होती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। पेड़ के नीचे से, हम आराम से दादा सिबा के पुराने महलों का सुंदर दृश्य देख सकते थे। बारह द्वारों वाला उद्यान, जो कभी राजाओं का निवास स्थान हुआ करता था, दादा गाँव के ऊपर पहाड़ की गोद में बना हुआ था। यह बहुत ही मनोरम लग रहा था। घाटी पार करने के बाद, हम एक बहुत ही सुंदर जंगल से गुजरे, जिसमें अमलता, बहेड़ा और बांस के पेड़ों के झुंड थे। कोमल बांस से ढकी पहाड़ियाँ बहुत सुंदर दिखती हैं। बारह द्वारों वाला उद्यान, जो कभी राजाओं का निवास स्थान था, अब खंडहर में तब्दील हो चुका है। आजकल, इसकी छत नहीं है और इसकी दीवारों पर बने चित्र, जो पुराने समय में सुंदर रहे होंगे, अब लगभग मिट चुके हैं। उद्यान के खंडहर देखने के बाद, हमारी मुलाकात राजा की एक बुजुर्ग रिश्तेदार रानी अब्रोल से हुई। उनके बरामदे की दीवारों पर कई पुराने कांगड़ा चित्र लगे हुए हैं, लेकिन अब उनका रंग फीका पड़ गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि

(पृष्ठ 331)

कांगड़ा चित्रों के रंग तब तक जीवंत बने रह सकते हैं जब तक उन्हें बक्सों में बंद रखा जाता है।

मैंने रानी से पूछा कि क्या मुझसे पहले किसी ने उनकी पेंटिंग्स देखी हैं। रानी ने बताया कि दो साल पहले एक सिख अधिकारी आए थे और उन्हें बिना कटी दाढ़ी और अच्छी तरह बंधी पगड़ी वाली सभी पेंटिंग्स पसंद आई थीं, जो खालसा पहनावे के अनुरूप थीं। चूंकि वह उस क्षेत्र के प्रशासक थे और बड़े जमींदार हमेशा अपने-अपने क्षेत्रों के गवर्नरों को खुश करने की कोशिश करते हैं, इसलिए संभव है कि रानी ने अपनी इच्छा से उन्हें वे पेंटिंग्स भेंट की हों।

भारत अपनी चापलूसी के लिए प्रसिद्ध है और यह चापलूसी मुगल शासन से चली आ रही है। मुगल काल की एक प्रसिद्ध कहावत है कि "जब बादशाह दिन को रात कहता है, तो उनका कर्तव्य होता है कि वे कहें, 'बादशाह, आप महान हैं, तारे बड़ी शान से टिमटिमा रहे हैं।'" इससे मुझे रायबरेली की एक और घटना याद आती है। मैं 1940 में रायबरेली का उपायुक्त था और मुझसे पहले डॉ. एस.एस. नेहरू, जिन्हें पौधों और बिजली पर प्रयोग करने का बहुत शौक था, इस जिले के उपायुक्त थे। जब कोई उनसे

पेट दर्द की शिकायत लेकर आता, तो वे उसे बिजली से गर्म किया हुआ पानी पिलाते थे। जिला अदालत में उनके कई कर्मचारी उनके मरीज थे और वे हमेशा बताते थे कि बिजली से गर्म किए हुए पानी से उन्हें बहुत फायदा हुआ है। एक बार, डॉ. नेहरू बिजली से गर्म किए हुए पानी से मक्के पर प्रयोग कर रहे थे। पौधे छह इंच लंबे हो गए थे और उन्हें चौदह दिनों के लिए कहीं जाना पड़ा। जाने से पहले, उन्होंने तहसीलदार बाबर मिर्ज़ा से मक्के के पौधों की देखभाल करने और उन्हें प्रतिदिन बिजली से सींचने का अनुरोध किया। दसवें दिन, माली की लापरवाही के कारण, एक गाय ने पौधे को खा लिया। जब तहसीलदार ने शाम को यह देखा, तो वे बहुत परेशान हुए। तहसीलदार एक कुशल प्रबंधक थे, उन्होंने अगली ही सुबह आसपास के खेतों से चार फुट ऊंचे मक्के के पौधे लाकर गाय द्वारा खाए गए पौधे की जगह लगा दिए। जब डॉ. नेहरू लौटे, तो उन्होंने देखा कि मक्का बहुत लंबा हो गया था। उन्होंने तहसीलदार से इतनी तेजी से वृद्धि के बारे में पूछा। तहसीलदार ने उत्तर दिया, "बिजली से सींचने से कुछ मदद मिली, बाकी हुज़ूर ने अपना आशीर्वाद दिया, और इसलिए मक्का इतना अच्छा उगा।" यह सिद्ध करता है कि इस देश में हुज़ूर के चमत्कार अद्भुत कार्य कर सकते हैं। स्वतंत्र भारत में भी, हुज़ूर का आशीर्वाद बहुत प्रभावी है। जब राज्यपाल और आयुक्त

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

गांवों का दौरा किया जाता है, फिर स्थानीय अधिकारियों द्वारा इन गांवों की बार-बार सफाई की जाती है, जिससे लोगों के जीवन की झूठी तस्वीर पेश की जाती है।
रानी से विदा लेने के बाद, हमारी मुलाकात दादा सिबा के युवा राजा से हुई; वे आधुनिक शैली में बने एक घर में रहते थे। सिबा का इलाका पहले गुलेर के विशाल राज्य का हिस्सा हुआ करता था। 1460 में, गुलेर के राजा के छोटे भाई सब्रान चंद ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया और अपनी राजधानी बनाई। इसीलिए इस क्षेत्र को उनके नाम पर 'सिबा' कहा जाता है। यह इलाका ब्यास नदी के बाएं किनारे पर स्थित है। 1622 में, जहांगीर कांगड़ा जाते समय इस क्षेत्र से गुजरे थे। 1808 में, गुलेर के राजा भूप सिंह ने इस क्षेत्र को फिर से अपने राज्य में मिला लिया और 1809 में, गुलेर और अन्य पहाड़ी राज्य महाराजा रणजीत सिंह के अधीन आ गए। सिबा विनाश

से इसलिए बच गया क्योंकि महाराजा रणजीत सिंह के प्रधानमंत्री राजा ध्यान सिंह का विवाह सिबा की दो राजकुमारियों से हुआ था। इस क्षेत्र के राजा गोविंद सिंह का 1845 में निधन हो गया। राजा राम सिंह नए राजा बने और उन्होंने सिखों के दूसरे युद्ध में सिखों को अपने क्षेत्र से खदेड़ दिया। उनका 1865 में निधन हो गया। उनके बाद, होशियारपुर क्षेत्र के हरियाणा नामक कस्बे के कलाकारों द्वारा बनाई गई कुछ भित्तिचित्र राजा राम सिंह मंदिर में रखी गईं। इस मंदिर में भगवान कृष्ण, भगवान शिव और देवी दुर्गा की पूजा की जाती है। इन भित्तिचित्रों के रंग आज भी जीवंत हैं। इनमें से कुछ चित्र रोचक भी हैं। एक चित्र में, दो स्त्रियों को जोड़कर हाथी की आकृति बनाई गई है; भगवान कृष्ण और राधा को इस हाथी पर सवार दिखाया गया है। एक अन्य चित्र में, भगवान कृष्ण को नाग कालिया का वध करते हुए दिखाया गया है। एक अन्य चित्र में, भगवान राम को भगवान शिव का धनुष तोड़ते हुए दिखाया गया है। राजा राम सिंह का भी एक भित्तिचित्र है। उनका 1874 में निधन हो गया, लेकिन इस मंदिर के लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। सिबा का किला, जो आजकल खाली है, धीरे-धीरे जीर्ण-शीर्ण हो रहा है।

दादा सिबा की भित्तिचित्रों को देखकर हम मंदिर के चारों ओर बने बरामदे में बैठे ही थे कि दुल्हन की तरह सजी-धजी, नाक में नथनी और चेहरे को लाल दुपट्टे से ढके एक पहाड़ी महिला मंदिर में दाखिल हुई। उसके पीछे उसका पति, लगभग बीस साल का एक युवक, हाथ में काली छतरी लिए, पैस्ले पैटर्न वाले रेशमी कोट में मंदिर की ओर चल पड़ा। हरि कृष्ण गोरखा, जो हमारे साथ इस यात्रा पर आए थे, इस जोड़े की तस्वीर खींचना चाहते थे। अब देखिए गोरखा ने कितनी चतुराई से उनकी तस्वीर खींची। पहले उन्होंने दोनों को एक-दूसरे के बगल में खड़ा किया और एक तस्वीर खींच ली।

(पृष्ठ 333)

दोनों इस बात से खुश थे कि उनकी तस्वीर मुफ्त में खींची गई थी।

फिर उसने महिला का घूंघट हटवाया और उसकी तस्वीर खींची। इसके बाद उसने उसके पति को थोड़ी दूरी पर खड़ा किया और उसकी तस्वीर ली। पति को लग रहा था कि उसकी तस्वीर उसकी पत्नी के साथ खींची जा रही है। जब उसने अलग-अलग कोणों से तीन-चार तस्वीरें खींचीं, तब महिला का संकोच दूर हुआ और उसने अपनी

खूबसूरत और जीवंत तस्वीरें खिंचवाईं।
अगर किसी ने पहाड़ी महिलाओं की बेहतरीन तस्वीरें खींची हैं, तो वो हरि कृष्ण गोरखा हैं। लंबा और आकर्षक व्यक्तित्व वाला ये युवक हंसमुख चेहरे, तीक्ष्ण नैन-नक्श और खुशियां बांटने की प्रवृत्ति वाला है। अपने मिलनसार स्वभाव के कारण वो लोगों से बहुत आसानी से दोस्ती कर लेता है। गोरखा की तस्वीरों में पहाड़ी महिलाओं की मासूमियत और सुंदरता साफ झलकती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

कई लोग फोटोग्राफी को कला नहीं मानते, लेकिन जब गोरखा कैमरा पकड़ते हैं तो ऐसा लगता है मानो किसी प्रसिद्ध कलाकार ने ब्रश उठाया हो। उन्होंने अपनी तस्वीरों में मानवीय भावनाओं को इतनी कुशलता से भरा है कि वे जीवंत व्यक्तियों की तरह लगती हैं जो वास्तविक समय में अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहे हों। इसीलिए वे फोटोग्राफी के सच्चे कलाकार हैं।
शाम ढलने लगी और हमें बहुत भूख लगने लगी। चाय और मिठाई की दुकान से गरमा गरम जलेबियों के अलावा हमें खाने के लिए कुछ नहीं मिला। मैं जलेबी को मिठाइयों की रानी मानती हूँ। चाशनी से भरी यह जलेबी जीभ पर लगते ही स्वर्ग का अनुभव कराती है।
सन् 1930 में, मैं गाँव के पेड़ों के झुरमुट में कुर्सी लगाकर पढ़ाई किया करता था। एक दिन, पास के गाँव बेरछा का एक राओल मुस्लिम चरागाह के पास अपनी भैंसें चरा रहा था। जब उसने मुझे देखा, तो वह मेरे पास आया और बोला, “सरदार जी, आपने सोलह कक्षाएँ पूरी कर ली हैं, और फिर भी आप पढ़ते ही रहते हैं।”
मैंने जवाब दिया, “फज्जू, आजकल नौकरी मिलना बहुत मुश्किल है।” उन्होंने कहा, “अरे सरदार, उस बातूनी परिवार को देखो, उनके पास दो पटवारी और एक कानूनगो है, क्या तुम कानूनगो नहीं बन सकते? अगर कुछ और नहीं तो मुछला के बेटे की तरह बांका का इंस्पेक्टर ही बन जाओ।”
मैंने कहा, "ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगा।"
उन्होंने आगे कहा, “सरदारा, असल बात तो यह है कि तुम्हारे चाचा को किसी बड़े अधिकारी को पैसों से भरी टोकरी देनी चाहिए। आजकल तो रिश्वत लिए बिना कोई

किसी का हालचाल नहीं पूछता।”

(पृष्ठ 334)
मैंने विषय बदलने की कोशिश की और कहा, "फज्जू, इतनी बहादुरी सिर्फ तुम ही कर सकती हो, मेरे चाचा तो बहुत कंजूस हैं।"
“सरदारा, हम गरीब लोग हैं, यह तो अमीरों का खेल है। जलेबी सिर्फ अमीर ही खा सकते हैं।”
बैसाखी मेले के दौरान, दसूया के हलवाई हमारे गुरुद्वारा गर्ना साहिब के सामने अपनी मिठाई की दुकानें लगाते थे; किसान उनके द्वारा प्रदर्शित लड्डू और जलेबी की बड़ी-बड़ी थालियों को देखकर ललचा जाते थे। उन्हें इन दो मिठाइयों के अलावा किसी और मिठाई का नाम भी नहीं पता होता था। फज्जू ने भी इस मेले में जलेबी की थालियाँ देखी थीं, और उनके अनुसार, जलेबी खाना जीवन का सबसे बेहतरीन अनुभव होता है। इस मामले में मैं फज्जू से पूरी तरह सहमत हूँ, हालाँकि वह नौकरी के बारे में कोई अच्छी सलाह नहीं दे सके।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 49

“Loki Kangre Di Pyaari”234

(पृष्ठ 335)
नूरपुर की दुनिया खूबसूरत है।
लोकी कांगरा दी प्यारी, कांगरा के लोग अधिक प्यारे हैं।
Tere bachiyan ju saari bacha bacha Every child knows this.
आदमी

कांगड़ा घाटी में जीवन की गति अक्टूबर में खिलते धान के खेतों की गति के समान है, और

किसानों के आंगनों में लहराते बांस; यह उन असंख्य बर्फ से पोषित नदियों की तरह गति करते हैं जो धीरे-धीरे और शांत रूप से बहती हैं। यहां के लोग प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध में रहते हैं और अपने परिवेश के साथ सामंजस्य में हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि किसी भी देश के नागरिकों का चरित्र उसके परिवेश पर निर्भर करता है। यह परिवेश प्राकृतिक, सामाजिक या धार्मिक हो सकता है। कांगड़ा घाटी के अधिकांश निवासी हिंदू हैं और यहां हिंदू सभ्यता के शुद्ध प्रतीक पाए जा सकते हैं। यहां के लोगों के प्राकृतिक जीवन और व्यवसायों के अलावा, उनकी अनूठी परंपराएं उनके जीवन को और भी बेहतर बनाती हैं। पहाड़ियों की चोटियों पर या तो मंदिर हैं या राजाओं के महल। इस स्थान से कांगड़ा घाटी का सबसे मनमोहक दृश्य दिखाई देता है। इन मंदिरों के झंडे हिमालय की स्वच्छ हवा में लहराते हैं, और कांगड़ा निवासियों की प्रार्थनाओं को आकाश तक पहुंचाते हैं। धौलाधार की छाया में बर्फ से पोषित नदियों द्वारा पुनर्जीवित छोटी पहाड़ियां और उपजाऊ घाटियां ईमानदारी, शालीनता, वीरता और साहसी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध लोगों को जन्म देती रही हैं।

(पृष्ठ 336)
यहां के लोग बेहद खूबसूरत हैं, लेकिन उनका सरल जीवन उन्हें और भी आकर्षक बनाता है। उनसे बातचीत करने पर पता चलता है कि वे सरल और खुशमिजाज लोग हैं। उनके दो और गुण हैं - वफादारी और दूसरों का ख्याल रखना। वे शहरी जीवन की शैली और तौर-तरीकों से परिचित नहीं हैं, इसलिए उनकी स्पष्ट और खुली बातचीत कभी-कभी चुभ सकती है, लेकिन उनका इरादा किसी को ठेस पहुंचाने का नहीं होता। वे हमारे ग्रामीण लोगों की तरह सरल और भोले-भाले हैं। अगर कोई उनका पक्ष लेता है तो वे खुश होते हैं, और अगर उनके साथ अन्याय होता है या उन्हें डांट पड़ती है तो वे दुखी हो जाते हैं। जहां एक मीठा शब्द उनका भरोसा जीत सकता है, वहीं एक कठोर शब्द या तीखी नजर उन्हें मीलों दूर भगा सकती है। अगर कोई मालिक गुस्सैल है, तो भले ही वह अपने काम में कितना भी कुशल क्यों न हो, लोगों की नजरों में उसकी प्रतिष्ठा गिर जाती है। कांगड़ा के निवासी बहुत शर्मीले और विनम्र हैं, और उनसे दूरी बनाए रखने के लिए सिर्फ एक संकेत ही काफी है।
जब मुसलमानों द्वारा छोड़ी गई ज़मीनों का वितरण पाकिस्तान से आए शरणार्थी किसानों और ज़मींदारों के बीच किया जा रहा था, तब मैंने देखा कि कांगड़ा के

निवासी अपने अधिकारों के लिए उतनी दृढ़ता और साहस से नहीं लड़ पा रहे थे, जितना कि मैदानी इलाकों के सिख जाट लड़ रहे थे। अगर कोई बदतमीज़ अधिकारी उन पर चिल्लाता, तो वे निराश होकर अपने घर लौट जाते। इन अधिकारियों में कई मूर्ख अधिकारी भी थे। उनमें से एक को तो ये लोग 'रावण' कहकर पुकारते थे। मेरी राय में, कांगड़ा से केवल दो लोग ही ऐसे हैं जो

234 कांगड़ा के लोग अधिक प्यारे हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उन्होंने अपने प्रतिनिधियों को बुलाया। उनमें से एक परमेशी दास थे, जो अपने और अपने लोगों के लिए बड़ी चतुराई से पैरवी करते थे। दूसरे नूरपुर के किसान वधवा थे। मुझे उनके स्वभाव के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि साझा करनी है।

मैं शाम को जालंधर सचिवालय में भूमि आवंटन को लेकर शरणार्थियों की शिकायतें सुन रहा था। तभी मैंने एक बूढ़े व्यक्ति को बाँस के पर्दे (चिक) से अंदर आते देखा। उनकी छोटी-छोटी दाढ़ी थी और चेहरा झुर्रियों से भरा हुआ था।

मैंने पूछा, “क्या बात है बाबा?”

उन्होंने जवाब दिया, “मुझे मेरे गांव से 30 मील दूर जमीन आवंटित की गई है। मेरा शरीर बूढ़ा हो चुका है, मेरे मरने पर मेरी अर्थी उठाने के लिए वहां चार लोग भी नहीं मिलेंगे।”

(पृष्ठ 337)

मैंने कहा, "बाबा, यह एक मुश्किल काम है, लेकिन हम देखेंगे कि आपके गांव के पास कोई जमीन उपलब्ध है या नहीं।"

उन्होंने कहा, “मुझे नहीं पता कि इस भूमि आवंटन की योजना किसने बनाई। जो लोग अस्पतालों में पैदा होते हैं और होटलों में रहते हैं, वे हमारे गांवों और जातियों के भाईचारे को कैसे समझ सकते हैं? वे कैसे समझ सकते हैं कि हम एक-दूसरे के सुख-दुख में कैसे साथ देते हैं?” मैं हँस पड़ा और बोला, “बाबा, अधिकारियों के बारे में इस तरह बात नहीं करनी चाहिए।” बाबा ने जवाब दिया, “मेरे स्वामी, मेरी बात का बुरा

मत मानिए, आप गाँव से हैं। आप सब कुछ समझते हैं। और अगर आपका नाम रंधावा है, मेरा नाम वधावा है, तो आपको मेरा काम करना होगा।" मैं उस बुजुर्ग की बेबाकी पर दिल खोलकर हँसा, तुरंत पटवारी को बुलाया और उनके लिए वैकल्पिक भूमि आवंटित करवा दी।

कांगड़ा के लोग बिना प्रोत्साहन के किसी भी बात पर खुलकर बोलने से हिचकिचाते हैं। वे अजनबियों पर शक करते हैं। वे अजनबियों के सामने खुल कर बात नहीं करते और किसी नए अधिकारी के पास तब तक नहीं जाते जब तक कि वे उसके स्वभाव को अच्छी तरह से जान न लें। एक बार जब वे आपके सामने खुल कर बात करने लगते हैं, तो उनकी वफादारी की कोई सीमा नहीं रहती। वे शुरू में बहुत झिझकते हैं, लेकिन अंततः बहुत स्नेही और प्यार करने वाले होते हैं। उनका स्वभाव मधुर होता है। हालांकि, उनमें लगातार मुकदमेबाजी करने की बुरी आदत होती है; वे छोटे-मोटे विवादों के लिए भी अदालत चले जाते हैं। वे अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं। वे आम तौर पर झूठे गवाह नहीं बनते और न ही सच्चाई छिपाते हैं। वे आपस में भी ईमानदार रहते हैं। उनके बीच लिखित समझौते बहुत कम होते हैं, क्योंकि मौखिक समझौतों पर आसानी से भरोसा किया जा सकता है।

ये लोग बेहद ईमानदार हैं और अपने वरिष्ठों की जरूरतों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। हालांकि पहाड़ी क्षेत्रों में छोटी-मोटी चोरियां देखने को मिलती हैं, लेकिन ये अपराध केवल श्रमिक वर्ग तक ही सीमित हैं। सिख शासन के दौरान, सिख सरदारों ने पहाड़ी लोगों की ईमानदारी को भली-भांति सराहा था; वे पहाड़ी लोगों को ही महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त करते थे।

(पृष्ठ 338)

वे सतर्क रहेंगे और मुखिया का ख्याल रखेंगे। वे कभी लालच में नहीं पड़ेंगे और केवल अपनी मेहनत से कमाया हुआ पैसा ही घर लाएंगे।

अन्य पहाड़ी निवासियों की तरह, वे भी पहाड़ियों से मोहित होते हैं और मैदानी इलाकों में नौकरी की तलाश कम ही करते हैं। उनमें से बहुत कम लोग ही मैदानी इलाकों की भीषण गर्मी सहन कर पाते हैं।

उन्हें मेलों में जाना बहुत पसंद है और वे वाद्य यंत्र बजाने और गाने का आनंद लेते हैं। चेत और वैशाख के महीनों के दौरान यहां कई मेले और कुश्ती प्रतियोगिताएं

आयोजित होती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। पहाड़ियों की महिलाएं रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर कांगड़ा घाटी में रौनक लाती हैं। कुछ मेलों में महिलाएं पहाड़ियों की चोटियों पर बैठती हैं जबकि पुरुष नीचे बैठकर जोर-जोर से गाते हैं। आज सिक्के और बेर फेंकने की परंपरा बंद हो गई है, लेकिन पहले यह बहुत प्रचलित थी। छोटे बच्चे तुरही बजाते हैं और मिठाई खाते हैं जबकि महिलाएं चूड़ियां, कंघे, दर्पण और अन्य कई चीजें खरीदने के लिए सज-धज कर निकलती हैं। कांगड़ा के मेले चमकीले और खुशनुमा होते हैं। मुस्कुराते हुए लोगों की भीड़ आनंद के सागर जैसी लगती है। कांगड़ा घाटी के लोग बहुत अंधविश्वासी हैं। वे जादू-टोने में विश्वास करते हैं। यहां तक कि जब कोई आम घटना घटती है, किसी की मृत्यु हो जाती है या किसी की भैंस दूध देना बंद कर देती है, तो वे मानते हैं कि किसी शत्रु ने उन पर श्राप दिया है। वे अपने बच्चों के माथे पर काली बिंदी लगाते हैं ताकि उन्हें बुरी नजर से बचाया जा सके। अगर वे नया घर बनाते हैं, तो वे एक काले मिट्टी के बर्तन पर लाल जीभ बनाते हैं, उस पर एक डरावना चेहरा बनाते हैं और उसे घर के सामने लटका देते हैं ताकि घर सुरक्षित रहे। कुछ ग्रामीण लोग चुड़ैलों और काले जादूगरों पर विश्वास करते हैं। निःसंतान विधवाओं को अपशगुन माना जाता है और अगर वे किसी शुभ समारोह के दौरान रास्ते में मिल जाएं, तो माना जाता है कि समारोह बिगड़ गया है। वे छोटे-छोटे कामों के लिए भी पुजारियों से सलाह लेना पसंद करते हैं। वे आज भी ज्योतिषियों पर विश्वास करते हैं। यदि कोई पंजाब में सनातन हिंदू धर्म को देखना चाहता है, तो वह कांगड़ा में मिल सकता है। हिंदू धार्मिक त्योहारों में भरपूर चहल-पहल रहती है और सभी लोग रात में एक साथ विष्णुपाद पढ़ते हैं। कृष्ण जन्माष्टमी के दौरान महिलाएं भजन गाती हैं। रात भर जागरण होते हैं, जिनमें पेशेवर गायक ढोल बजाते हुए गोपी चंद और पुराण भगत की कहानियां गाते हैं।

(पृष्ठ 339)
कई पर्वत चोटियों पर दुर्गा के अनेक मंदिर हैं क्योंकि यहाँ के लोग देवी दुर्गा में गहरी आस्था रखते हैं। ज्वालामुखी भी देवी का ही एक अवतार है। देवी दुर्गा द्वारा राक्षस के

वध की कथाएँ सुनाई जाती हैं और लोगों को वीर बनने की प्रेरणा मिलती है।
पुरानी मान्यताओं और नए वैज्ञानिक विचारों के मिश्रण ने भारतीय कल्पना को मोहित कर लिया है; पहाड़ भी इससे अछूते नहीं हैं। आधुनिक जीवन जीने वाले, रेडियो सुनने वाले और बिजली का उपयोग करने वाले ये लोग भी अपने पुराने विचारों से मुक्त नहीं हुए हैं। मुझे याद है जब हम सुंदरनगर में राजा सुकेत के निवास पर उनसे मिलने गए थे, तो उनके पुत्र, राजकुमार, देवी मंदिर दिखाने के लिए हमारे साथ गए थे।
हमने देखा कि मंदिर के गर्भगृह से लगा हुआ एक शौचालय था जिसमें पश्चिमी शैली का बाथटब लगा हुआ था; कमरे में लकड़ी की चप्पलें, तौलिया और साबुन भी थे। राजकुमार ने हमें बताया कि देवी उसमें स्नान करती थीं और सुबह हमेशा एक गीला तौलिया मिलता था। वृंदावन में भी हमने कुछ ऐसा ही अनुभव किया। वहाँ एक बगीचा है जिसके बारे में कहा जाता है कि भगवान कृष्ण ने गोपियों के साथ लीला के दौरान उसका उपयोग किया था। पुजारी ने हमें बताया कि जब रात में मंदिर और बगीचा बंद कर दिए जाते हैं, तो मंदिर के सामने एक दातुन और लड्डू रखे जाते हैं। भगवान कृष्ण रात में प्रकट होते हैं क्योंकि दातुन हमेशा सुबह इस्तेमाल किया हुआ मिलता है और लड्डू के कुछ टुकड़े बचे रहते हैं। यदि कोई रात में बगीचे में रहता है और भगवान के दर्शन करता है, तो उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। हम एक सिख भिक्षु से मिले जिन्होंने हमें बताया कि वे रात में बगीचे में रहे और जप जी साहिब की प्रार्थना का पाठ करते रहे, लेकिन उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

235 भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

कांगड़ा के राजपूत खुद को शाही वंश का मानते हैं। वे अपने पूर्वजों को ठाकुरों और राणाओं से जोड़ते हैं, जिन्होंने बहुत समय पहले छोटे-छोटे क्षेत्रों पर शासन किया था। मध्यकालीन यूरोप के लोगों की तरह उनके भी दो ही लक्ष्य थे: प्रेम और युद्ध। लेकिन, कांगड़ा के लोग अपने प्रेम को पति-पत्नी के रिश्ते में व्यक्त करते हैं और सेना में भर्ती होकर अपनी युद्ध की इच्छा को पूरा करते हैं। पहले ये लोग राजा की सेना में भर्ती होते थे, लेकिन अब वे भारतीय सेना में शामिल होते हैं। कांगड़ा से परिचित लोग

राजपूत परिवारों को तुरंत पहचान सकते हैं।

(पृष्ठ 340)
उनके घर आम तौर पर पहाड़ियों की चोटियों पर एक अलग शैली में बनाए जाते हैं, चारों ओर से सुरक्षा के उपाय किए जाते हैं। वे अक्सर जंगलों में ऐसी जगहों पर रहते हैं जहाँ प्राकृतिक आश्रय हो। यदि उनके घरों के बाहर कोई प्राकृतिक आवरण नहीं होता, तो वे पेड़ लगाकर ऐसा हरा आवरण बनाते हैं। उनके घरों से लगभग पचास फीट की दूरी पर एक पगडंडी होती है, जिसे पार करके कोई अजनबी उनके घर के पास नहीं जा सकता। केवल उच्च जाति और उच्च वर्ग के पुरुष ही आसानी से इन स्थानों में प्रवेश कर सकते हैं। श्री बार्न्स ने इस अलगाव और इस आवरण के निर्माण के बारे में एक विचित्र कहानी का उल्लेख किया है। एक बार मंडी क्षेत्र में, एक कटोच परिवार के घर में आग लग गई। घर के पास कोई जंगल नहीं था जहाँ महिलाएँ भागकर छिप सकें, इसलिए उन्होंने अपने परिवार के बाहर के किसी भी पुरुष (पर्दा प्रथा) की नज़र से बचने के लिए घर में ही जलकर मर गईं। ये राजपूत लड़कियाँ भी अपने माता-पिता से मिलने पालकी में जाती हैं, जिससे उन्हें कोई देख नहीं सकता। जो गरीब होते हैं वे रात में यात्रा करते हैं, या जंगलों या घाटियों से होकर जाने वाले गुप्त रास्तों का इस्तेमाल करते हैं ताकि कोई उन्हें देख न सके।
राजपूत दो वर्गों में विभाजित हैं। राजपूतों का उच्च वर्ग मियां कहलाता है। इनका वंश बाईस राजाओं से जुड़ा है। इनके पूर्वजों ने किसी समय उत्तरी भारत के किसी भाग पर शासन किया था। राजपूतों का निम्न वर्ग ठाकुर कहलाता है। इनकी पुत्रियों का विवाह मियां राजपूतों से होता है, जबकि पुत्रों का विवाह राठी स्त्रियों से। एक मियां अपने घर और मान-सम्मान की रक्षा के लिए अत्यंत सतर्क रहता है - वह कभी खेत नहीं जोतता, अपनी पुत्री का विवाह कभी निम्न जाति में नहीं करता, और निम्न सामाजिक स्थिति वाले परिवार में विवाह नहीं करता। वह पुत्री का विवाह करने के लिए धन नहीं लेता और उसके घर की स्त्रियां हमेशा सख्त पर्दा प्रथा का पालन करती हैं। शायद उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा यही है कि वे खेत नहीं जोतेंगे, इस प्रकार का श्रम नहीं करेंगे। यदि वे खेत जोतेंगे, तो उनकी सामाजिक स्थिति गिर जाएगी और उन्हें निम्न जाति का राजपूत माना जाएगा। कोई भी मियां अपनी पुत्री का विवाह उनसे नहीं करेगी, और उन्हें निम्न जाति की कन्या से विवाह करना पड़ेगा। जीवन के हर पहलू में

उन्हें अपमान सहना पड़ेगा। पारिवारिक समारोहों और विवाह समारोहों के दौरान, उच्च सामाजिक स्थिति वाले राजपूत ऐसे व्यक्ति के साथ बैठकर भोजन करना पसंद नहीं करते थे। उन्हें तिरस्कारपूर्वक 'हलवाह' या हल खींचने वाला कहा जाता था, और वे अपमान से बचने के लिए ऐसे सामाजिक कार्यक्रमों में न जाने का निर्णय लेते थे।

(पृष्ठ 341)
खेती के प्रति यह रवैया हिंदू धर्म जितना ही पुराना है। कुछ लोग कहते हैं कि हल से प्रकृति की गोद को चोट पहुँचाना अपराध है। कुछ लोग कहते हैं कि गाय के बछड़ों से खेत जोतवाना अपराध है। 19वीं सदी के अंत में भारत आए श्री बार्न्स लिखते हैं, “यह बहुत दुख की बात है कि राजपूत आज भी इन पुरानी परंपराओं से चिपके हुए हैं। उनके मुरझाए चेहरे और साधारण कपड़ों को देखकर समझा जा सकता है कि ये लोग पीछे छूट गए हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। ये लोग अपनी तथाकथित सादगी और स्वच्छता बनाए रखते हैं। पहाड़ियों की बंजर भूमि पर कड़ी मेहनत करके ये लोग अपना जीवन यापन करते हैं, लेकिन अगर कोई राजपूत हल चलाता है, तो उसे उसकी जाति से निकाल दिया जाता है। इसलिए, ये लोग लाखों के अन्य काम करेंगे, लेकिन खेती नहीं करेंगे। कुछ लोग पहाड़ियों पर बैठकर बाज़ों को पकड़ने के लिए जाल बिछाते हैं। वे अक्सर कई दिनों तक बाज़ नहीं पकड़ पाते और बेर खाकर या शिकार किए गए जानवरों को खाकर अपना पेट भरते हैं, और अगर बाज़ पकड़ भी लेते हैं, तो उन्हें नीचे पहाड़ी पर भेज देते हैं, जहाँ उन्हें प्रशिक्षित करके बेच दिया जाता है। राजपूत अक्सर स्वतंत्र रहते हैं, वे बाज़ों की मदद से शिकार करते हैं। वे शिकार पर जाते हैं और अगर वे खर्च कर सकते हैं तो बंदूकें साथ ले जाते हैं। एक राजपूत झाड़ियों को हिलाता है, दूसरा उसमें से उड़ने वाले किसी भी पक्षी पर नज़र रखता है ताकि उसके पीछे अपना बाज़ भेज सके। इस तरह वे शिकार करते हुए समय बिताते हैं। जिनके पास बंदूकें होती हैं वे जंगली सूअरों का शिकार करते हैं और उन्हें बेचकर अपना जीवन यापन करते हैं। लेकिन, श्री बार्न्स ने राजपूतों के बारे में जो कुछ भी लिखा है, वह अब सच नहीं है, और राजपूत भी अन्य लोगों की तरह खेती और अन्य गतिविधियों में रुचि दिखाने लगे

हैं।

राजपूत उदार हृदय वाले और अच्छे मेज़बान होते हैं। उनके पास आमतौर पर कई नौकर होते हैं, इसलिए उन्हें खुद कोई काम नहीं करना पड़ता। कई गरीब रिश्तेदार वर्षों तक उनके साथ रहते हैं और परिवार के मुखिया से पैसे ऐंठकर अपना गुजारा करते हैं। शादियों पर खूब पैसा खर्च होता है। रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए दावतें आयोजित की जाती हैं और सभी के मनोरंजन के लिए आतिशबाजी की जाती है। पुराने समय में मुजरा का आयोजन किया जाता था। आजकल यह परंपरा बहुत कम देखने को मिलती है। इसके दो कारण हैं, एक तो इन लोगों की धार्मिक आस्था और दूसरा उनकी गरीबी। राजपूत मांसाहारी होते हैं और उनकी महिलाएं भी मांसाहारी होती हैं।

(पृष्ठ 342)

वे शादी की रस्मों के लिए कतारों में बैठते हैं और उन्हें उनकी सामाजिक स्थिति के अनुसार कतारों में व्यवस्थित किया जाता है। कभी-कभी, सामाजिक स्थिति के मुद्दे पर झगड़े हो जाते हैं और शादी समारोह बहुत अप्रिय तरीके से समाप्त होते हैं।

राजपूत बहुत सुंदर होते हैं और अक्सर गोरे रंग के होते हैं। उनके चेहरे की बनावट इतनी कोमल होती है मानो उन्हें बड़ी सावधानी से गढ़ा गया हो। वे छोटे-मोटे काम नहीं करते और उनमें से बहुत कम लोग खेती करते हैं। गरीबी के कारण खेती शुरू करने वाले भी आर्थिक रूप से संपन्न नहीं होते।

राजपूत महिलाएं पर्दा प्रथा में रहती हैं, इसलिए वे घर के बाहर के कामों में अपने पतियों की किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकतीं। उनमें से कई तो बावड़ी से पानी भी नहीं लातीं। राजपूत महिलाओं के घरेलू काम अन्य महिलाओं के कामों के समान ही होते हैं। वे अनाज पीसती हैं, खाना पकाती हैं, चरखा चलाती हैं, लकड़ी इकट्ठा करती हैं, लेकिन घूंघट में रहने के कारण वे खेती-बाड़ी में अपने पति की मदद नहीं कर सकतीं और न ही राठी घिरतानी महिलाओं की तरह घर से बाहर नौकरी कर सकती हैं। कृषि के दृष्टिकोण से, राजपूत महिलाएं धरती पर बोझ मात्र हैं। एक प्रबंधन अधिकारी ने सही कहा था, "राजपूतों का छत्ता एक अजीब संगठन है। इसमें काम करने वाले कम हैं और आराम करने वाले लोग ज़्यादा हैं।" मैदानी इलाकों में रहने वाली ब्राह्मण और राजपूत महिलाएं मांसाहारी भोजन का नाम सुनते ही घबरा जाती

हैं, लेकिन पहाड़ों में विधवाओं को छोड़कर सभी महिलाएं मांसाहारी भोजन करती हैं। कांगड़ा की सभी महिलाएं सुख-दुख के समारोहों में भाग लेती हैं और मेलों में जाती हैं, सिवाय उन उच्च सामाजिक परिवारों की महिलाओं के जो पर्दा प्रथा का पालन करती हैं। उनकी पोशाक सरल और सुंदर होती है। वे नाक में बालू पहनती हैं। केवल विवाहित महिलाएं ही नाक में बाली पहनती हैं।
राजपूत अक्सर सेना या सरकारी विभागों में काम करते हैं और घर पैसे भेजते हैं। कृषि के नए नियमों ने राजपूतों को परेशान कर दिया है, क्योंकि अब किसान को खेत जोतने में परेशानी हो रही है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। खेतों का मालिक भी जमीन का मालिक है। इसी वजह से उन्होंने पुरानी परंपराओं को छोड़कर खेती का काम शुरू कर दिया है। एक लाख ब्राह्मण हैं और वे कुल जनसंख्या का 1/7वां हिस्सा हैं। सभी ब्राह्मण स्वयं को सारस्वत ब्राह्मण कहते हैं और उनमें कई जातियाँ और उपजातियाँ हैं। ब्राह्मणों में पहला अंतर यह है कि एक वर्ग खेती करता है जबकि दूसरा वर्ग खेती नहीं करता।

(पृष्ठ 343)
खेतों में हल चलाने वाले ब्राह्मणों को निम्न वर्ग का माना जाता है। पहाड़ी ब्राह्मण मैदानी ब्राह्मणों से मेलजोल नहीं रखते और न ही उनके द्वारा पकाया गया भोजन खाते हैं। पहाड़ी ब्राह्मण और उनकी स्त्रियाँ मांसाहारी भोजन करते हैं, जबकि मैदानी ब्राह्मण मांसाहारी होते हैं।
औरंगजेब के शासनकाल में जब हिंदुओं पर अत्याचार किए जाते थे और गरीब हिंदुओं को मुसलमान बनाया जाता था, तब कई हिंदू अपने धर्म की रक्षा के लिए पहाड़ियों में बसने लगे। उसी दौरान गद्दी लोग लाहौर से पहाड़ियों में आए और कश्मीरी ब्राह्मण औरंगजेब के शासनकाल में कांगड़ा आकर कोट कांगड़ा के आसपास के गांवों में बस गए।
राठी और घिरत कांगड़ा घाटी के किसान हैं। पूरी घाटी की कृषि का भार वे अपने कंधों पर उठाते हैं। राठी मुख्य रूप से पालमपुर और हमीरपुर की पहाड़ियों में बसे हुए हैं। किसानों में राठी और घिरत की स्थिति पश्चिम में कनाईत जाति की स्थिति के समान

है। घिरत मैदानी इलाकों और पहाड़ियों की उपजाऊ भूमि में बसे हुए हैं, जबकि राठी ढलानों पर बसे हुए हैं जहाँ फसल कम होती है और मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है। जिस प्रकार राठी पहाड़ियों के मैदानी इलाकों में नहीं पाए जाते, उसी प्रकार घिरत ढलानों पर नहीं पाए जाते। दोनों जातियाँ अलग-अलग स्थानों में बसी और काम करती हैं, इसलिए उनके रूप-रंग और व्यवहार में अंतर होता है।

राठी लोग अधिकतर स्वस्थ और सुंदर होते हैं। उनका रंग गोरा और शरीर सुगठित होता है। जीवनयापन के लिए उन्हें जो कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, वही उनके अच्छे स्वास्थ्य का रहस्य है। इसके विपरीत, घिरत लोग सांवले, छोटे कद के और कमजोर शरीर वाले होते हैं। उन्हें अक्सर घेंघा रोग हो जाता है, जो यह दर्शाता है कि उनकी भूमि उपजाऊ है और दैवीय आशीर्वाद प्रदान करती है, लेकिन यह वहां के निवासियों के स्वास्थ्य की गारंटी नहीं देता। पहाड़ियों में राठी लोगों को श्रेष्ठ माना जाता है। वे सरल और शांत स्वभाव के होते हैं और अपने खेतों में काम करते रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे हथियारों का भी प्रयोग करते हैं। राठी लोग धर्मपरायण, मेहनती और वफादार होते हैं।

घिरत जनजाति के पुरुष अधिकतर बौने कद के होते हैं और घेंघा रोग से पीड़ित रहते हैं। यहाँ तक कि उनकी महिलाएं भी घेंघा रोग से ग्रस्त रहती हैं। उनके चेहरे की बनावट जटार जनजाति के लोगों से मिलती-जुलती है।

(पृष्ठ 344)

घिरत जनजाति में खूबसूरत महिलाएं कम ही देखने को मिलती हैं, हालांकि कुछ लोग उनकी युवतियों को सुंदर कह सकते हैं। वे मेहनती किसान हैं।

घिरत समुदाय में कई जातियाँ हैं, जैसे दसूया तहसील और होशियारपुर जिले के मुकेरियान के घिरत समुदाय को 'चांग' कहा जाता है। ऊना तहसील के घिरत समुदाय को 'बाहती' कहा जाता है। उनका दावा है कि वे दक्षिण भारत से आए हैं। विवाह समारोहों के दौरान वे जिस देवता की पूजा करते हैं, वह हाथ जोड़कर दक्षिण दिशा की ओर मुख किए हुए हैं। वे नाग देवता के उपासक हैं और उन्होंने हर गली में अपना पूजा स्थल स्थापित किया है। सावन के पाँचवें दिन नाग देवता की विशेष पूजा की जाती है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मुख्यतः, घिरत समुदाय पालम, कांगड़ा और रेहलू की घाटियों में पाया जाता है। वे हलदून और हरिपुर की घाटियों में भी बसे हुए हैं। वे आमतौर पर समतल, उपजाऊ भूमि पर रहते हैं। घिरत महिलाएं बिना पर्दा किए खेतों में काम करती हैं और उनके पुरुष भी मजदूरी करके पैसे कमाते हैं। घिरत समुदाय अत्यंत परिश्रमी होता है, उनकी भूमि पर साल में दो फसलें होती हैं और वे किसी न किसी समय खेती-बाड़ी में व्यस्त रहते हैं। वे बरसात के मौसम में धान बोते हैं। धान बोने के लिए लगभग एक फुट गहरे कीचड़ में काम करना पड़ता है। इस काम में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती है। ये महिलाएं अपने लहंगे बांधकर घुटनों तक पानी में खड़ी होकर धान बोती हैं। धान की खेती में बहुत मेहनत लगती है। फसल तैयार होने के बाद घिरत महिलाएं उसकी देखभाल में भी मदद करती हैं। यह काम मुश्किल से खत्म होता है कि सर्दियों में बुवाई का मौसम शुरू हो जाता है, जिससे वही चक्र फिर से शुरू हो जाता है, हालांकि यह पहले वाले की तुलना में आसान माना जाता है। घिरत महिलाएं खेतों में काम करने के अलावा बाजार में लकड़ी, सब्जियां, आम, दूध आदि भी भेजती हैं। इससे हमें पता चलता है कि घिरत की महिलाओं का जीवन आसान नहीं है। ये महिलाएं बेहद मेहनती हैं और कांगड़ा की कृषि की जिम्मेदारी इन्हीं के कंधों पर है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 50

गद्दी लोग

(पृष्ठ 345)

चंबा की नदियाँ, हवा और बारिश,
उड़नूं ता भीग गया सारा दुपट्टा भीग गया है,
लाड्डो दा चित लगदा चंबे दियां लाड्डो की आत्मा चम्बा से जुड़ी हुई है
धरान की नदियाँ।

गद्दी लोग धौलाधार पर्वतमाला के निवासी हैं। ये लोग मुख्य रूप से पशुपालक हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में कृषि भी करते हैं। धौलाधार के दोनों ओर कांगड़ा और चंबा में इनके गाँव बसे हुए हैं। इनके निवास क्षेत्र को 'गधेरन' कहा जाता है। इनके घर साफ-सुथरे होते हैं और दूर से देखने पर बेहद खूबसूरत लगते हैं। दीवारों पर मिट्टी लगाना इनकी प्रमुख विशेषता है। ये लोग आमतौर पर 4000 फीट से 8000 फीट की ऊँचाई के बीच रहते हैं। इनकी भेड़ें भी पर्वतमाला की ऊँचाई पर चढ़ जाती हैं और जरूरत पड़ने पर ढलान से नीचे उतर भी आती हैं।
धौलाधार पर्वतमाला का दक्षिणी भाग, जो कांगड़ा घाटी में खुलता है, बिल्कुल सीधा खड़ा है। इसकी तलहटी में चीड़ और बांस के जंगल हैं। ऊँची चोटियाँ आमतौर पर बर्फ से ढकी रहती हैं। वास्तव में, ये चोटियाँ इतनी नुकीली हैं कि बर्फ फिसल जाती है। धौलाधार पर्वतमाला का उत्तरी भाग, जो चंबा घाटी में खुलता है, फूलों और घासों के मैदानों से भरा है। पहाड़ धीरे-धीरे रावी नदी के किनारे तक ढलान बनाते हैं। चंबा के गद्दी लोग यहाँ रहते हैं। इन ढलानों पर लाल रोडोडेंड्रोन की झाड़ियों के बीच चांदी के गहने पहने और अपनी भेड़ें चराती खूबसूरत गद्दी महिलाओं को देखा जा सकता है।

(पृष्ठ 346)
जुलाई से सितंबर के महीनों में कई दिनों तक लगातार बारिश होती रहती है और इंद्रधनुष के कारण पहाड़ और आकाश एक-दूसरे से मिलते हुए प्रतीत होते हैं। भला यह खूबसूरत धरती और यहाँ के खूबसूरत लोग किसी का दिल कैसे नहीं जीत सकते? चंबा हो या कांगड़ा, गद्दी किसान और चरवाहे संतुष्ट रहते हैं। इन लोगों के आमतौर पर दो घर होते हैं, एक उत्तरी ढलान पर और दूसरा दक्षिणी ढलान पर। वे अक्सर एक घर से दूसरे घर में आते-जाते रहते हैं। यह आना-जाना तभी रुकता है जब धौलाधार की चोटियाँ बर्फ से ढक जाती हैं। एक तरफ के गद्दी अक्सर दूसरी तरफ के गद्दी से शादी कर लेते हैं। एक गीत में, चंबा में अपने ससुराल में रहते हुए एक गद्दी महिला कांगड़ा में अपने मायके को याद करती है। इस गीत में, अपने प्रिय माता-पिता से बिछड़ी यह लड़की पहाड़ों की बर्फ से ढकी चोटियों से विनती करती है कि वे हट जाएँ ताकि वह अपना मायका देख सके।
ये अनोखे लोग, जो अन्य पहाड़ियों से भिन्न हैं, वास्तव में पंजाबी लोग हैं जो मैदानी

इलाकों से विस्थापित होकर पहाड़ों में चले गए थे; यह जानकारी अधिकांश पंजाबियों को आश्चर्यचकित करती है। 'गद्दी' शब्द का अर्थ है सभी जातियों के लोग। ये लोग वास्तव में ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजपूत और हरिजन हैं। लेकिन, इनमें से अधिकांश क्षत्रिय (खत्री) हैं। इनमें पंजाब की विशिष्ट खत्री उपजातियाँ भी शामिल हैं। धौलाधार ने उन सभी लोगों को शरण दी थी जो उस समय के शासकों के अत्याचार से भाग गए थे। आमतौर पर यही माना जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। औरंगजेब के शासनकाल में गद्दी लोगों को विस्थापित किया गया था। जब औरंगजेब जबरन हिंदुओं को इस्लाम में परिवर्तित कर रहा था, तब वे लाहौर से भाग गए थे। इन लोगों ने जबरन धर्म परिवर्तन कराने की बजाय अपने घर छोड़कर धौलाधार की ऊँची पहाड़ियों में छिपना बेहतर समझा। गद्दी लोगों ने अपनी सभ्यता और संस्कृति को सावधानीपूर्वक संरक्षित रखा है और वे अभी तक आधुनिकीकरण के प्रभाव से अछूते हैं। वे अपनी दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करते हैं। उन्होंने अपनी विशिष्ट वेशभूषा विकसित की है। उन्होंने पंजाब की उन पुरानी परंपराओं को संरक्षित रखा है, जो समय के साथ पंजाब से लुप्त हो गई हैं।

ये लोग आमतौर पर सरल और दयालु होते हैं। उनकी ईमानदारी पर कभी संदेह नहीं किया जा सकता।

(पृष्ठ 347)

वे इतने भोले-भाले थे कि ब्रिटिश शासन के शुरुआती वर्षों में जब उनमें से किसी एक पर कांगड़ा के शाही अधिकारियों द्वारा जुर्माना लगाया जाता था, तो वे जुर्माना भरकर उतनी ही राशि चंबा के खजाने में दोबारा जमा कर देते थे। दो बार जुर्माना इसलिए लगाया जाता था क्योंकि उन्हें लगता था कि वे दोनों घाटियों के निवासी हैं।

पहाड़ी लोग अक्सर वन नियमों का उल्लंघन करते हैं, लेकिन इस अपराध के अलावा इन पर कभी किसी अन्य अपराध का आरोप नहीं लगा है। गद्दी लोग मिलनसार और खुशमिजाज होते हैं; वे मेलों और त्योहारों के दौरान एक साथ आते हैं, लुगड़ी पीते हैं और नाचते हैं।

गद्दी लोगों के कपड़े अन्य पहाड़ी लोगों से बिल्कुल अलग होते हैं। ये लोग ऊन का ढीला-ढाला लबादा पहनते हैं, जिसे वे काले ऊन की रस्सियों से कमर पर बांधते हैं। वे सिर पर एक ऊंची टोपी पहनते हैं, जिसे वे सर्दियों में कानों तक खींच लेते हैं। वे आमतौर पर अपने पैर नंगे रखते हैं। ये लोग अपने लबादों में तरह-तरह की चीजें रखते हैं, कभी-कभी तो नवजात मेमने भी मासूम आंखों से उनके लबादों से झांकते नजर आते हैं। ये लोग अपनी रोटी और आलू जैसी सब्जियां जानवरों की खाल से बने थैलों में लपेटकर अपने लबादों के अंदर रखते हैं। गद्दी महिलाओं के लबादे पुरुषों से अलग होते हैं। वे उन्हें पुरुषों से अलग तरीके से पहनती हैं। उनके लबादों पर आमतौर पर लाल फूलों की कढ़ाई होती है।

गद्दी समुदाय के लोग अपने पारंपरिक पहनावे को बहुत पसंद करते हैं, इसीलिए उन्होंने आज तक अपनी वेशभूषा नहीं बदली है। एक गद्दी लड़की गाती है, “रानियों को भले ही सलवार पसंद हो, लेकिन पहाड़ी महिलाओं की सुंदरता उनके अपने कपड़ों में ही झलकती है।” गद्दी महिलाओं को रंग-बिरंगे रुमाल बहुत पसंद होते हैं और वे बड़े चाव से उन्हें दिखाती हैं। वे अपने पुरुषों को भी चोगे और टोपी में देखना पसंद करती हैं। गीतों में अंतर्निहित प्रेम की दृष्टि से, पहाड़ी गीतों में गद्दी लोगों के गीत सबसे सुंदर हैं। इस क्षेत्र की स्वच्छ वायु और जल, उनके द्वारा उत्पादित दूध और दही, और उनकी कड़ी मेहनत से उनके जीवनशैली के मूल्यों में और भी निखार आता है। उनकी मुक्त जीवनशैली उनके लोकगीतों में झलकती है। युवा लड़के-लड़कियाँ चरागाहों में एक-दूसरे से मिलते हैं, और इस तरह उनका प्रेम हो जाना कोई असामान्य बात नहीं है। गद्दी समुदाय में विवाह के लिए लड़के और लड़की की सहमति ली जाती है। यदि लड़की का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध हो जाता है, तो वह अक्सर विवाह तोड़कर अपने प्रेमी के पास चली जाती है। ऐसे विवाहों को 'झंड फूक' कहा जाता है।

(पृष्ठ 348)

इस तरह के विवाहों के लिए किसी रिश्तेदार या पंडित की आवश्यकता नहीं होती। वे एक झाड़ी में आग लगाते हैं, और लड़का-लड़की आग के चारों ओर आठ बार परिक्रमा करते हैं, जिसके बाद वे पति-पत्नी बन जाते हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

गद्दी समुदाय में ब्राह्मण जाति की महिलाओं को छोड़कर, विधवा पुनर्विवाह आम बात है। विधवा स्त्री को आमतौर पर अपने पति के बड़े या छोटे भाई से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वह पवित्र जीवन जी सके। जब विधवा स्त्री का पुनर्विवाह होता है, तो पति-पत्नी को ऊनी कंबल पर बैठाया जाता है। उनके सामने एक मिट्टी का दीपक जलाया जाता है। पास में पानी का एक कलश रखा जाता है, जिस पर चावल, खुबानी के पत्ते और घास रखी जाती है। आसपास सुगंधित लकड़ियाँ जलाई जाती हैं। इस कलश को कुंभ कहते हैं। वर और वर दोनों प्रार्थना करते हैं। वर विधवा के सिर पर परंदी रखता है। एक स्त्री वर के बालों में कंघी करती है और परंदी को गूंथ देती है। इसके बाद, वर वर के हाथ में नथनी रखता है और वरनी अपनी नाक में नथनी लगाती है। इसके बाद रिश्तेदारों और मित्रों के लिए भोज का आयोजन किया जाता है। इस प्रथा के लिए भी किसी पंडित की आवश्यकता नहीं होती है।

गद्दी समुदाय की शादियों में पारंपरिक विवाह की प्रथा को भव्य पैमाने पर आयोजित किया जाता है।

बालक के शरीर पर वातना से लेप किया जाता है। उसकी दाहिनी कलाई पर तीन काले ऊनी धागे बांधे जाते हैं, ताकि वह अपशकुनों से सुरक्षित रहे। उसकी माँ उसे लाल दुपट्टे से ढककर बरामदे में ले जाती है, जहाँ उसे स्नान कराया जाता है। स्नान के बाद, काले ऊनी धागे हटा दिए जाते हैं और बालक जलते हुए कोयलों से भरे घड़े को लात मारकर उलट देता है, ताकि स्नान करते समय यदि कोई बुरी छाया उस पर पड़ी हो, तो वह उलटे हुए कोयलों से दूर हो जाए। फिर पंडित उसकी कलाई पर एक पवित्र धागा बांधते हैं जिसे 'कंगना' कहते हैं। साथ ही उसे घी और गुड़ खाने को दिया जाता है। इसके बाद, बालक को योगी की तरह वस्त्र पहनाए जाते हैं। उसके कानों में चार बालियाँ, कमर पर धोती और कंधे पर भिक्षु का थैला रखा जाता है। फिर पंडित उसके हाथों और पैरों को पानी से धोते हैं और उसके चेहरे पर कुछ बूँदें पानी छिड़कते हैं। इसे बद्री नारायण, त्रिलोक नाथ और मणि महेश तीर्थ स्थलों के जल में पवित्र स्नान माना जाता है। इसके बाद लड़का अपने रिश्तेदारों से भीख मांगता है। ये लोग उसे रोटी के टुकड़े देते हैं और अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार भेड़-बकरियां देने का वादा करते हैं। फिर लड़के को एक टोकरी में बिठाया जाता है, उसके सिर पर सूखी घास रखी जाती है और उसके ऊपर एक चाकू रख दिया जाता है।

लड़के के मामा सरसों के तेल से भरा एक बर्तन पकड़े हुए हैं और वह तेल लड़के के सिर पर डालते हैं। वे धनुष में एक बाण लगाकर एक मृत बकरी के सिर पर निशाना साधते हैं। इसके बाद उसे फिर से घी और गुड़ दिया जाता है, फिर उसके सिर पर एक सफेद दुपट्टा बांधा जाता है और उसे सफेद कुर्ता पहनाया जाता है। उसके पास अभी भी लाल चादर है। लड़के के परिवार की ओर से लड़की के लिए उपहार भेजे जाते हैं; इनमें कपड़े, कंघी, सूखे खजूर, किशमिश, बाजरा और चावल शामिल हैं, जिन्हें जुलूस के रूप में लड़की के घर ले जाया जाता है। लड़के की भाभी उसकी आंखों में काजल लगाती है और उसके सिर पर सेहरा बांधती है। ब्राह्मण पुजारी ज्योति से भरी एक थाली लेकर लड़के के सिर के चारों ओर तीन बार घुमाते हैं, और लड़के की माँ तीन चपातियाँ लेकर उसके सिर के चारों ओर तीन बार घुमाती है और फिर उन्हें तीन दिशाओं में फेंक देती है।236 फिर लड़का बरामदे में रखी पालकी में बैठ जाता है। यहां लड़के की मां उसे दूध पिलाती है। चार कुली पालकी उठाते हैं और उसे लड़की के लकड़ी के तोते के पास ले जाते हैं। लड़का, उसकी मां और पुजारी पक्षी से प्रार्थना करते हैं। लड़के के सामने एक कलश रखा जाता है, लड़का उसमें पैसे डालता है और फिर बारात लड़की के घर के लिए रवाना होती है। इस बारात में लड़के के दोस्त और परिवार के लोग शामिल होते हैं। बारात के आगे बढ़ने पर टूटाणी और ढोल बजाए जाते हैं।

236 ज्योति, शाब्दिक अर्थ, लौ या प्रकाश। यहाँ, थाली में छोटी कटोरियाँ रखी हैं जिनमें बत्तियाँ जल रही हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
जुलूस लड़की के गाँव के एक घर में ठहरता है और फिर लड़की के घर के लिए निकल पड़ता है। लड़की की माँ घर के प्रवेश द्वार पर लड़के का स्वागत करती है। वह ज्योति से सजी थाली को लड़के के सिर के चारों ओर सात बार घुमाती है और बरामदे में तीन चपातियाँ फेंकती है। फिर सास चली जाती है, और ससुर आकर लड़के के गले में

सफेद कपड़ा डालते हैं, उसके पैर धोते हैं और उसके लिए प्रार्थना करते हैं। उनके साथ चल रहे ब्राह्मण पुजारी पत्तों में चावल, अखरोट, फूल आदि लेकर आते हैं और उन्हें लड़की के परिवार को देते हैं। फिर लड़के को बरामदे में ले जाकर लड़की के सामने बिठाया जाता है। पुजारी फिर लड़के और लड़की की गर्दन पकड़कर उनके कंधों को तीन बार छूते हैं। फिर उन्हें बेसन दिया जाता है; वे एक-दूसरे पर फूंक मारते हैं। लड़के और लड़की के दोनों ओर ज्वालाएँ जलती हैं। फिर लड़की लड़के को चमेली के फूल की सात टहनियाँ देती है। लड़का एक-एक करके इन नरम शाखाओं को अपने पैरों के नीचे दबाता है, इस तरह लड़के और लड़की का एक-दूसरे से परिचय होता है।

(पृष्ठ 350)
इस प्रकार, लड़की के पिता उसे लड़के को सौंप देते हैं, और फिर लड़का दंपति के पैर धोता है। इसके बाद, गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, कुंभ और जलती हुई लौ की पूजा की जाती है। लड़का लड़की की चादर पर लाल रंग लगाता है, पुजारी लड़की की हथेलियों (बुक्क) में चार पैसे, अखरोट, घास, फूल और थोड़े चावल रखता है। लड़का अपनी हथेलियों को लड़की की हथेलियों पर रखता है और पुजारी लड़की के दुपट्टे से उनके हाथों को एक साथ बांध देता है। इसके बाद, लड़के को अंदर ले जाया जाता है, और दंपति को कामदेव की तस्वीर के सामने बैठाया जाता है, जहाँ लड़की की माँ और बहनें उसके बाल संवारती हैं। वे उसके बाल संवारते हुए गीत गाती हैं।
इसके बाद, लड़की के कपड़े का एक किनारा लड़के के दुपट्टे से बांध दिया जाता है और लड़की का मामा उसे उठाकर नीचे छत पर ले जाता है, जहाँ हवन किया जाता है और विवाह की रस्में पूरी की जाती हैं। यहाँ, लड़की का पिता फिर से दंपति के पैर धोता है और गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, कुंभ, चार संतों और चारों वेदों आदि की पूजा की जाती है। फिर भुनी हुई जौ को टोकरी में रखा जाता है। लड़का मुट्ठी भर जौ लेकर उसे तीन ढेरों में बाँट देता है। लड़की का भाई अपने दाहिने हाथ से ढेरों को गिरा देता है। यह रस्म इसलिए निभाई जाती है ताकि अगर लड़के और लड़की के बीच इससे पहले कोई रिश्ता था, तो इसके बाद वह खत्म हो जाए। इसके बाद, लड़का और लड़की पवित्र अग्नि के चारों ओर दाहिनी ओर से बाईं ओर (घड़ी की दिशा में) चार बार परिक्रमा करते हैं। पास खड़े पुरुष और महिलाएं उनके परिक्रमा शुरू करते ही गीत गाने लगते हैं।

इस रस्म के पूरा होने के बाद, लड़का लड़की को पालकी में बिठाकर अपने घर ले जाता है और साथ में दहेज भी ले जाता है। पति के घर पहुँचने पर पत्नी का अनेक रीति-रिवाजों और गीतों के साथ स्वागत किया जाता है।
लड़के की माँ नवविवाहित जोड़े के लिए प्रार्थना करती है। इसके बाद, दंपति कामदेव की तस्वीर के सामने रखे मिट्टी के दीपक के चारों ओर चार बार परिक्रमा करते हैं। मिट्टी के दीपक के पास जल का कलश, एक परंदी और अनार रखे होते हैं। यहाँ, पुजारी लड़की का घूंघट (घुंड) उठाते हैं और दो पुरुष लड़के और लड़की की कलाई पर बंधी डोरियाँ खोलते हैं; वे पुरुष उस क्षण से लड़के और लड़की के आध्यात्मिक भाई बन जाते हैं। फिर, रिश्तेदार और मित्र दंपति को उपहार देते हैं। लड़की को भी अपना घूंघट उठाने के लिए कहा जाता है और उसे उपहार दिया जाता है। इसके बाद भोज और गीत का आयोजन होता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 351)
एक गद्दी गीत में दूल्हे को 'कन्ह' कहा गया है और उसे सलाह दी गई है कि उसे अविवाहित पुरुष की तरह इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए, बल्कि अब विवाह की जिम्मेदारियों को निभाना चाहिए। 237
गद्दी समुदाय के लोग किसान और पशुपालक हैं। भेड़ और बकरियां उनकी मुख्य संपत्ति हैं। वे सर्दियों में अपने पशुओं को कांगड़ा, मंडी और सुकेत घाटियों में चराने के लिए ले जाते हैं और गर्मियों में धौलाधार पर्वतमाला पार करके चंबा और लाहौर चले जाते हैं। उनमें से कई लोगों के पास पर्वत के दोनों ओर जमीन है। वे सर्दियों में कांगड़ा में गेहूं की खेती करते हैं और गर्मियों की फसलें धौलाधार के दूसरी ओर स्थित भरमौर में बोते हैं।
गद्दी समुदाय के लोग भगवान शिव की पूजा करते हैं। उनका मानना है कि भगवान शिव कैलाश पर्वत पर मणि महेश की चोटी पर निवास करते हैं। भरमौर क्षेत्र को शिव की भूमि भी कहा जाता है। गद्दी समुदाय के अनुसार, भगवान शिव छह महीने कैलाश पर निवास करते हैं और आशु महीने में पियालपुर अवतरित होते हैं, फिर चेतर महीने में कैलाश लौट जाते हैं। इन्हीं महीनों में गद्दी समुदाय के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान

की यात्रा भी करते हैं।
गद्दी लोग पहाड़ों, जंगलों और धरती के कई देवताओं की पूजा करते हैं। जब पहाड़ी इलाकों में तूफान आते हैं या बर्फीले ग्लेशियर पथरीले पहाड़ों को तोड़कर हिमस्खलन करते हैं, तो उनका मानना है कि राक्षस आपस में लड़ रहे हैं। जब गद्दी लोग पहाड़ी दर्रों से गुजरते हैं, तो वे उस दर्रे के देवता से प्रार्थना करते हैं कि उनके जानवर शांतिपूर्वक पार हो जाएं। माना जाता है कि दर्रे का देवता एक पत्थर की समाधि में रहता है। इस देवता से डरकर यात्री वहां से गुजरते समय जोर से बात नहीं करते, क्योंकि उनका मानना है कि तेज आवाज से उन पर बर्फ गिर सकती है। कहा जाता है कि मैदानी इलाकों से आए कई यात्री इन दर्रों का इस्तेमाल करते समय अनजाने में बातें करते रहते हैं और उनकी आवाज से खिसकी बर्फ और चट्टानों के नीचे दबकर उनकी मौत हो जाती है।
वन योद्धाओं की आत्माएं वन के वृक्षों में निवास करती हैं। ये आत्माएं लाल देवदार, रेशम-कपास और अखरोट के वृक्षों में रहना पसंद करती हैं। काला-बीर और नरसिंह की आत्माएं पतियों की अनुपस्थिति में स्त्रियों को परेशान करती हैं। जब आत्मा मानव रूप में होती है और पति लौट आता है, तो आत्मा (बीर) का प्रकोप पति को भी मार सकता है, लेकिन वन आत्मा की पूजा करने से ऐसा होने से रोका जा सकता है। कहा जाता है कि केहलू बीर (आत्मा) पर्वत की ढलानों पर निवास करती है।

(पृष्ठ 352)
जब यह क्रोधित होता है, तो यह पर्वत और चट्टानें फेंकता है। पर्वतों की ऊँची चोटियों पर स्त्री आत्माएँ निवास करती हैं। ये स्त्रियों की आत्माएँ हैं, और झुंड की सुरक्षा के लिए इनकी पूजा की जाती है। बताल झरनों, नदियों और जलप्रपातों की आत्मा है। खिचड़ी, उबले हुए अनाज आदि चढ़ाकर उनकी आराधना की जाती है। यदि किसी खेत की पहली जुताई करनी हो, तो चार युवतियों को वहाँ ले जाया जाता है, उनके पैर धोए जाते हैं, उनके माथे पर रंग मला जाता है और उनके मुँह में गुड़ लगाया जाता है। इस नए जोते हुए खेत की पहली फसल देवता की सेवा में अर्पित की जाती है। प्रत्येक गद्दी घर के सामने एक चबूतरे पर गृहस्थ देवता की प्रतिमा स्थापित होती है, और परिवार के सदस्य वहाँ देवता की पूजा करते हैं। इन देवी-देवताओं के अलावा, नागदेव (सांपों के देवता) की भी पूजा की जाती है। कैलांग नाग की पूजा हंसिया के रूप में

की जाती है, प्रत्येक चरवाहा इस हंसिया को अपने पास रखता है, विशेषकर जब वह अपने झुंड को कहीं दूर चरा रहा होता है। अलग-अलग देवी-देवताओं की पूजा के लिए अलग-अलग दिन निर्धारित हैं।

237 Kannh: Kanhaiya, or Krishna

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अगर किसी जनजाति के कृषि जीवन को पूरी तरह से समझना हो, तो गद्दी जनजाति का कृषि जीवन सबसे पहले दिमाग में आता है। जौ उनका मुख्य अनाज है और वे इसे खुद उगाते हैं। वे जौ को भूनकर सत्तू बनाते हैं। यह सत्तू उनके पहाड़ी सफर में बेहद उपयोगी होता है। वे चीनी की जगह शहद का इस्तेमाल करते हैं। वे कभी-कभी बकरियों और भेड़ों का मांस भी खाते हैं, लेकिन आमतौर पर वे अपने पशुओं के दूध पर ही निर्भर रहते हैं। मंडी में गद्दी लोग गुम्मा खानों का नमक खाना पसंद करते हैं। वे अपने कपड़े बनाने के लिए भेड़ों की ऊन का इस्तेमाल करते हैं। गद्दी महिलाएं ऊन को सीधा करके उसे तेरना के घेरे में लपेटती हैं। सफेद लबादे और ऊंची टोपी में ये लोग बेहद खूबसूरत दिखते हैं। काले कुत्ते दिन-रात उनके साथी होते हैं, और इनमें से कई कुत्ते बाघों का शिकार भी करते हैं। बाघों से लड़ाई के दौरान उनके गले में बंधा लोहे का पट्टा उनकी जान बचाता है।

कांगड़ा और चंबा घाटियों के गद्दी लोग लाहौल में छह महीने बिताते हैं। ये लोग बुद्धिमान और मेहनती होते हैं और अपनी यात्रा की कठिनाइयों से नहीं डरते। कांगड़ा से लाहौल पहुँचने में उन्हें एक महीना लगता है। हालाँकि वे अपने झुंड की हर भेड़ और बकरी से अच्छी तरह परिचित होते हैं, फिर भी यात्रा के दौरान कुछ भेड़ और बकरियाँ खो जाती हैं। कई बार पहाड़ी दर्रों को रोशन करने के लिए आग की लपटें दिखाई देती हैं।

(पृष्ठ 353)

गद्दी जनजाति के लोग विश्राम करते समय आग जलाते हैं। वे बाघों और भालुओं जैसे जंगली जानवरों से खुद को बचाने और ठंड से बचने के लिए आग जलाते हैं। ऊनी

लबादे और कंबल ओढ़कर ये लोग अक्सर बर्फ में सोते हैं, लेकिन इससे उन्हें कभी कोई नुकसान नहीं होता। वे अक्सर अपनी भेड़-बकरियों के झुंड में गर्मी पाते हैं। ठंड से बचने के लिए वे अपने ऊपर दो-तीन भेड़ें रख लेते हैं। बारिश के मौसम में वे पहाड़ों के दर्रों में छिप जाते हैं। उनकी भेड़ें अच्छी तरह पाली-पोसी जाती हैं, और कुमाऊं के भोटिया व्यापारी भी कुमाऊं से तिब्बत की यात्रा के लिए माल लादने के लिए उन्हें खरीदते हैं। लाहौर में, जिस जगह पर ये भेड़ें चरती हैं, उसे सार या बन्न कहा जाता है। ये क्षेत्र अलग-अलग चरवाहों के लिए भूखंडों में विभाजित हैं। प्रत्येक भूखंड स्पष्ट रूप से सीमांकित है, और इन पर कब्ज़ा केवल कुल्लू के राजा या लाहौल के ठाकुर से अनुमति लेकर ही किया जा सकता है। आजकल, लोग इन भूखंडों को बेचने भी लगे हैं, इसलिए ये अब अपने मूल मालिकों की संपत्ति नहीं रह गए हैं। यद्यपि इन बेची गई ज़मीनों पर पूर्व मालिकों का कोई अधिकार नहीं है, फिर भी नए मालिक के भेड़-बकरियाँ पुराने मालिक के चरागाह में जाती हैं, वहाँ लगभग एक दिन रहती हैं और अपने गोबर के रूप में खाद छोड़ जाती हैं। हर बार जब वे वहाँ से गुज़रती हैं, तो गद्दी लोग ठाकुर या नेगी को एक भेड़ राजस्व के रूप में देते हैं। गद्दी लोग कभी-कभी गाँव वालों को भी एक या दो भेड़ें देते हैं, जिन्हें मारकर भोज का आयोजन किया जाता है। इसे 'भगती' कहा जाता है।

गद्दी महिलाएं अपनी सुंदरता के लिए जानी जाती हैं। स्वतंत्र और खुले जीवन शैली, दूध आधारित आहार और आर्य वंश उनकी सुंदरता के तीन प्रमुख कारण हैं। उनके चेहरे की बनावट सुस्पष्ट और आकर्षक होती है - नुकीली नाक, चमकीली आंखें और बेहद कोमल और सुंदर चेहरा।

पालम की ब्राह्मण और राजपूत सुंदरियों की तुलना में गद्दी महिलाएं अधिक सौम्य और मनमोहक स्वभाव की होती हैं। उनमें से कई पर्वतीय रानियों जैसी दिखती हैं। उनकी सुंदरता का वर्णन अनेक पहाड़ी गीतों में मिलता है। कांगड़ा के प्रसिद्ध शासक और कांगड़ा चित्रकला के संरक्षक महाराजा संसार चंद भी एक गद्दी महिला के प्रेम में पड़ गए और उन्हें अपनी रानी बना लिया।

संसार चंद बांदला गाँव घूमने आया और एक सुंदर गद्दी स्त्री की सुंदरता में खो गया। इस प्रेम कहानी को निम्नलिखित लोकगीत में व्यक्त किया गया है:

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 354)

राजा ढोल लेकर गांव में आया।
गद्दन मेले के लिए आया था।
ओह, मेरे प्यारे गद्दी।

उसने उसका हाथ पकड़ा, उससे शादी कर ली।
उसने उसे अपने कपड़े से ढक दिया।
ओह, मेरे प्यारे गद्दी।

अब जमीन पर सोना बंद करो।
आपको सोने के लिए बिस्तर मिलेंगे।
ओह, मेरी प्यारी गड्डन।

रानियां बिस्तरों पर सोती हैं।
मुझे फर्श पर सोना अच्छा लगता है।
ओह, मेरे सुंदर राजा।

पत्तों से भरी थाली में भोजन न करें।
सोने की थालियों में भोजन करो।
मेरी प्यारी गड्डन।

रानियां सोने की थालियों में भोजन करती हैं।
मुझे पत्तों से ढकी प्लेटों में खाना पसंद है।
ओह, मेरे सुंदर राजा।

हे गद्दान, अपना ऊनी लबादा छोड़ दो।
रेशमी कपड़े पहनें।
मेरी प्यारी गड्डन।

रेशमी कपड़े रानियों के लिए बने होते हैं।
मुझे मेरा ऊनी लबादा बहुत प्यारा लगता है।
ओह, मेरे सुंदर राजा।

एक दिन, राजा ने चतुराई से गद्दान से पूछा,
गद्दी आपको अधिक प्रिय है या मुझे?
ओह, मेरी प्यारी गड्डन।

(पृष्ठ 355)

मुझे आप थोड़े बहुत पसंद हैं, मेरे राजा।
लेकिन गद्दी का प्यार मुझे चाकू की तरह चुभता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया
अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
ओह, मेरे सुंदर राजा।

मुझे मेमनों की थोड़ी याद आती है।
और इसीलिए उन्हें गद्दी की सबसे ज्यादा याद आती है।
मेरे हरि सिंह गद्दी।

जब गद्दी परिवार महल के नीचे भेड़ें चरा रहा था,
मुझे उनकी बांसुरी की आवाज सुनाई दे रही है।
ओह, मेरे प्यारे गद्दी।

गद्दी लोग मेलों और त्योहारों के दौरान नाचते-गाते हैं। नाचते समय वे बड़े-बड़े ढोल बजाते हैं। केवल पुरुष ही नाचते हैं। महिलाएं पास खड़ी होकर देखती हैं। नाच देखने आने पर महिलाएं गहनों से सजती हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इन खूबसूरत महिलाओं को देखकर पुरुष मदहोश हो जाते हैं और घंटों नाचते रहते हैं। नाच शुरू करने से पहले पुरुष लुगदी पीते हैं और दावत करते हैं।

आज के गद्दी लोग कुंजू और चंचलो के प्रेम प्रसंग को याद करते हैं, जो गद्दी समुदाय के प्रसिद्ध प्रेमी थे। कुंजू तूफानी नदियों और भयानक जंगलों को पार करके चंचलो से मिलने जाया करता था। उसे जंगली जानवरों से उतना डर नहीं लगता था जितना अपने शत्रुओं से। चंचलो अपने प्रेमी को समझाने की कोशिश करती थी, "तूफानी रातों में घर से बाहर मत निकलना, तुम्हारे शत्रुओं ने बंदूकें तैयार रखी हैं।" चंचलो की इच्छा थी कि उसका एक सुंदर घर हो जिसके दरवाजों और खिड़कियों में दर्पण लगे हों। गद्दी समुदाय के कई गीतों में इस इच्छा का वर्णन मिलता है। जब चंचलो को पता चलता है कि कुंजू दूर लाहौल की घाटी जा रहा है, तो वह नदी में कपड़े धोते हुए रोने लगती है। चंचलो अपने प्रिय से प्रेम की निशानी मांगती है और वह उसे अपनी अंगूठी दे देता है। चंचलो बदले में उसे एक नीला रुमाल देती है।

कुंजूआ, चंबा के चारागाह ही तुम्हारा घर हैं।
कुछ बोलो, मैं तुम्हारी आवाज सुनना चाहता हूँ।

(पृष्ठ 356)

मैं कपड़े धोते समय रोती हूँ।
मुझे तुम्हारा बटन मिला, तुम्हारे प्यार का प्रतीक।
ओह कुंजूआ, तुम्हारा बटन मुझे तुम्हारी याद दिलाता है।

हे चंचलो, तुम्हारी चूड़ियाँ तुम्हारी सुंदर भुजाओं पर सजी हैं।
फूलों के कंगन आपकी पहचान हैं।
आपके हाथों से एक चिंट्ज़ रूमाल,
यह रंग मुझे तुम्हारी याद दिलाता है।
ओह, मेरी जिंदगी, यह रंग तो तुम ही हो।

मेरा हाथ थाम लो, ओ कुंजुआ।
मुझे अपने प्यार का संकेत दो,
मैंने तुम्हारे दिल का प्रतीक ले लिया
सचमुच, मेरा जीवन,

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया
अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
यह प्रेम ही इस संसार का उत्सव है, सचमुच मेरे प्रियतम।

मेरे कुंजूआ, कुफरी के चरागाहों में अपना स्थान बना लो।
वहां आपको उत्सव देखने को मिलेगा।
सचमुच मेरा जीवन,
आपसे मिलकर मेरी जिंदगी में खुशियां आ गईं।
ओह, मेरी चंचलो, यह तो जीवन का उत्सव है।

फुलमो और रंझू का प्रेम गीत भी गद्दी समुदाय में कुंजू और चंचलो के गीत की तरह ही प्रसिद्ध है। फुलमो के भावुक स्वर 'बीते शब्द' (गल्लां होइयां बीतियां) को लोग बड़े जोश के साथ गाते हैं।
कई गीतों में भाभी और देवर के प्रेम प्रसंगों का वर्णन मिलता है। हरि सिंह का अपने बड़े भाई की पत्नी के प्रति प्रेम अक्सर गीतों में व्यक्त होता है। हरि सिंह पर्वत की चोटी पर बांसुरी बजाते हैं ताकि उनकी बांसुरी की मधुर ध्वनि उनकी भाभी तक पहुँच सके। हरि सिंह पर्वत की चोटी पर घर बनाने का निश्चय करते हैं। वे उफनती नदी को देखते हैं और पुल पर पुलिस की निगरानी होने के कारण उसे पार कर जाते हैं। भाभी हरि सिंह से कहती हैं, मेरे वैवाहिक जीवन को इस तरह बर्बाद मत करो। लेकिन फिर हरि सिंह के प्रेम में लीन होकर वे सब कुछ भूल जाती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया
अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 51

कांगड़ा के लोकगीत

(पृष्ठ 357)
यदि धार्मिक भजनों को स्वर्ग से उत्पन्न माना जाता है, तो लोकगीतों को धरती से

जन्मा हुआ कहा जाता है। प्रत्येक देश के गीत उसकी मिट्टी की आत्मा होते हैं। लोकगीतों के माध्यम से देशों के नागरिकों के जुनून, विरह की पीड़ा और संवेदनाएं व्यक्त होती हैं। कविता के सबसे पुराने और सबसे नए उदाहरण मातृभूमि के लोकगीतों में मिलते हैं। ये गीत लोगों के हृदय की गहरी, सहज आवाज़ को अपने भीतर समेटे रखते हैं। कभी-कभी यह ध्वनि इतनी सहजता और शक्ति से प्रवाहित होती है कि इसे रोकना असंभव हो जाता है।

कांगड़ा के लोगों का जीवन, दुनिया के अन्य सभी लोगों के लोकगीतों की तरह ही, उनके लोकगीतों में चित्रित है। कांगड़ा के लोकगीत पहाड़ों की सुंदरता का वर्णन करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पंजाबी लोकगीत मैदानों की सुंदरता का बखान करते हैं। साफ पानी से भरी गहरी घाटियाँ, गरजते झरने, धान के सुनहरे खेत, जंगली फूलों के विशाल उद्यान, दादनी के पेड़ की छाँव, अलगोज़े बजाती चरवाहिनी - ये सब गीतों में वर्णित हैं। कांगड़ा के लोग "238 जीना पहाड़ दा जीना" गाकर अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम व्यक्त करते हैं और मैदानों में रहने वाले हम लोगों को पहाड़ों की यात्रा करने के लिए प्रेरित करते हैं। पहाड़ों की युवतियाँ मानती हैं कि शहरी जीवन के चमत्कार खोखले हैं; वे शहरों के झूठ का पर्दाफाश करती हैं और पहाड़ी लोगों की धार्मिकता की प्रशंसा करती हैं।

(पृष्ठ 358)

कांगड़ा के लोगों को यहां रहना पसंद है; उन्हें यहां का ठंडा मौसम, एकांत, पहाड़ियों से निकलती नदियां और पहाड़ियों का वह जीवन पसंद है जो शहर के छल, बेईमानी और अनैतिकता से दूर है।

ज्वालामुखी और अन्य मंदिरों ने पहाड़ियों की सुंदरता और यहाँ के लोगों के जीवन को समृद्ध किया है। अग्नि देवी द्वारा अपना पसंदीदा निवास स्थान चुना गया यह स्थान, जहाँ देवी का प्रकाश दूर-दूर से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है, जहाँ धौलाधार की बर्फ से ढकी चोटियाँ घाटी को सुशोभित करती हैं - इस स्थान के निवासियों द्वारा अपने घर को वैकुंठ कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

कांगड़ा के लोकगीतों में एक विशेष आकर्षण है। इस क्षेत्र का सौम्य प्रेम और धार्मिक धुन मिलकर एक मनमोहक संगीत का निर्माण करते हैं। इन लोकगीतों में भगवान कृष्ण का विशेष स्थान है। एक गीत में, गोपियाँ भगवान को अपनी ओर आकर्षित

करने का प्रयास करती हैं और व्यंग्यात्मक लहजे में गाती हैं, "हे प्रियतम, आप हमसे क्यों शर्माते हैं?" लड़कियाँ घर जाकर अपनी माताओं से एक युवक के बारे में शिकायत करती हैं।

“यमुना नदी के किनारे एक छोटा लड़का है, हे माँ!”
वह हमें पानी नहीं लेने देता।
वह पिल्लों को हमारे पीछे भेजता है।

238 ‘जीने का अर्थ है पहाड़ पर रहना’
239 वैकुंठ हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के दिव्य निवास को संदर्भित करता है; इसे स्वर्ग के रूप में भी समझा जा सकता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
ओह माँ, वह तो हमारी बिल्कुल भी परवाह नहीं करता!
उसकी आंखें हिरण की तरह काली थीं।
ओह माँ, वह तो हमारी बिल्कुल भी परवाह नहीं करता!
यमुना नदी के किनारे एक छोटा लड़का है, हे माँ!
वह हमें पानी नहीं लेने देता।

इस रोमांटिक परिवेश में पले-बढ़े युवा लड़के और सुंदर लड़कियाँ, गद्दी और गद्दान अपने सच्चे प्यार के गीत खुलेआम और निडरता से गाते हैं - वे एक प्रेमी के बारे में गाते हैं जो अपनी प्रेमिका को बरतु वृक्ष की ठंडी छाया में आकर विश्राम करने के लिए बुलाता है और कोई प्रेम में डूबी लड़की अपने प्रेमी को 240 तिल्यार के माध्यम से प्रेम पत्र भेजती है:

"उड़ो, उड़ो मेरे प्यारे तिल्यार"
लंबी उड़ान भरें
मेरे प्रिय प्रेमी से पूछो
तुम अपने प्रियतम को क्यों भूल गए?

(पृष्ठ 359)
रोजगार की तलाश में कांगड़ा के युवाओं के घाटी छोड़ने के परिणामस्वरूप विरह के ये गीत विकसित हुए हैं। पंजाब की तरह, कांगड़ा भी सेना में बड़ी संख्या में सैनिकों का योगदान देने वाला क्षेत्र है; सैन्य सेवा को कर्तव्य माना जाता है, इसलिए घाटी के कई युवा सशस्त्र बलों में सेवा करते हैं। मुगल शासन के दौरान कांगड़ा के युवा राजपूत राजाओं की सेनाओं में शामिल होते थे। इस प्रकार, कांगड़ा की एक महिला का जीवन विरह की प्रेम कहानी बन जाता है। विदा होने से पहले बहाने बनाते हुए, वह अपने दिल की रानी को दिलासा देता है और उससे प्रार्थना करता है कि वह कांगड़ा के फूलों को जीवन देने वाली नदियों और झरनों के ताजे, ठंडे पानी से शरीर और मन को स्वस्थ रखे, और इसके बगीचों और पहाड़ियों में सुकून पाए। ये सभी छवियां कांगड़ा के गीतों को समृद्ध करती हैं।
नवविवाहित युवती, जिसका पति दूर चला गया है, अपनी सास से और भी अधिक परेशान है। सास उसे ताने मारती है और घर के काम करने का कड़ा हुक्म देती है। यह दुखी युवती ससुराल में दर्द पाती है और "ससुराल का देश जलकर राख हो जाए!" गाकर मन को शांति देने की कोशिश करती है।
घर में सभी लोग इस दुखी लड़की के प्रति सहानुभूतिहीन नहीं हैं। अक्सर, पति का छोटा भाई उसके प्रति सहानुभूति दिखाता है, जिसके कारण अंततः वह अपने देवर से प्यार करने लगती है। भाभी-देवर के बीच के इस झिझक भरे प्यार को दर्शाने वाले कई गीत हैं।
कांगड़ा के लोग न केवल सेना में भर्ती होते हैं, बल्कि उनमें से कुछ व्यापार और व्यवसाय भी करते हैं और महीनों तक घर से दूर रहते हैं। एक लोकगीत में एक अकेली महिला की भावनाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

“ओह, मेरा लंबा हरा खजूर का पेड़,
साथ में पीले पत्ते भी,
महिलाओं को क्या करना चाहिए?

240 भारत और पाकिस्तान में पाया जाने वाला एक छोटा, भूरा या काला प्रवासी

पक्षी। 241 शाब्दिक रूप से, विवाहित महिला और देवर।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया
अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
अगर उनके पति हमेशा यात्रा करते रहते हैं तो?

जैसे कोई राज्य राजा के बिना रोता है,
बिना डॉक्टर के मरीज,
पतिविहीन स्त्री की भी यही स्थिति होती है।
उसे सिर्फ अकेलापन महसूस होता है।

एक तोता बगीचे में बोल रहा था।
मुझे लगा कि यह माली है।
मैंने अपना दिल तुम्हें दे दिया,
मेरे शरीर का पिंजरा अब खाली है।"

(पृष्ठ 360)
कांगड़ा की महिलाएं अपने पतियों के साथ-साथ अपनी मां और भाइयों से भी उतना ही प्यार करती हैं। एक महिला अपनी मां और भाइयों को इस तरह याद करती है:

मेरी चूड़ियों में रंग कौन भरेगा?
मेरी बालियां कौन ठीक करेगा?
ये बहुत लंबी दूरियां हैं।
मुझसे मिलो, प्यारी माँ, किसी तरह कोशिश करो।
मुझसे मिलो, प्यारी माँ, किसी तरह कोशिश करो।
मुझे वह जगह मिल गई है जहाँ मैं अपनी माँ को देख सकता हूँ।
जहां मैं अपने भाई से मिल सकूं, बेहद खुश होकर।
"मुझसे मिलो, प्यारी माँ, किसी तरह कोशिश करो।"

वह प्रार्थना करती है, अपने दिन गिनती है, और जल्द ही उसका यात्रारत पति घर लौट

आता है। यद्यपि उसके मन में संदेह और शिकायतें उठती हैं, फिर भी वह अपने पति के प्रति वफादार रहती है और कुएँ के पास बैठे सिपाही के पास पानी नहीं माँगती। वही सिपाही उसका पति निकलता है। यह शायद कांगड़ा के लोकगीतों में सर्वश्रेष्ठ है।

(पृष्ठ 360)

“ओह, कुएँ पर खड़ी स्त्री,
मुझे एक घूंट पानी पिला दो, प्यारी।
ओह सिपाही, मेरे हाथ में एक घड़ा और एक कटोरा है।
खुद ही पी लो, मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ।
मैं हर दिन अकेले ही शराब पीता हूँ।
हे फुर्तीले! मैं आज तुम्हारे हाथों से पीना चाहता हूँ!
ओह सिपाही, मैं घड़ा तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा!
अरे, आओ ना, दुबली-पतली!
हे सिपाही, हे मुसाफिर, तुम जैसे दो लड़के मेरे पिता के नौकर हैं!
ओह, पतली-दुबली, तुम्हारे जैसी दो स्त्रियाँ मेरी माँ की जल-दासी हैं!

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 361)

घर पहुँचकर सास पूछती है,
ओह, प्यारी बेटी, तुम्हें इतनी देर क्यों लग गई?
प्रिय माताजी, कुएँ पर एक लड़का मुझसे झगड़ने लगा।
मैंने उससे कहा कि मैं उसका दोस्त नहीं हूँ।
बहू, उसकी आंखें कैसी थीं?
वह किसकी तरह दिखता था?
उसकी आंखें भाभी जैसी थीं, हे माँ!
और वह बिल्कुल तुम्हारे जैसा दिखता था।
ओह, बहू, एक कटोरे में तेल भर दो।
जाओ, अपने सिपाही की सेवा करो, प्यारे दुबले-पतले!

कांगड़ा में अंतरजातीय विवाहों को व्यक्त करने वाले कुछ गीत हैं। एक राजपूत पुरुष ने एक दलित महिला से विवाह किया; इस पर आधारित गीत कई रूपों में मिलते हैं। इन गीतों में ऐसे प्रेम का वर्णन है जो जातिवाद या सामाजिक स्थिति के आधार पर होने वाले भेदभाव की परवाह नहीं करता।
इन प्रेम कहानियों के साथ-साथ, कुछ गीत कांगड़ा की कहानियों को बयां करते हैं, जो काफी प्रसिद्ध हैं, जैसे कुंगू, गांगी, मोहना, फुलमो-रांझा। इन गीतों की एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, और हम इन कहानियों के पात्रों में इतना डूब जाते हैं कि हम उनकी समस्याओं से खुद को जोड़ पाते हैं और हर शब्द में अपनी ही छवि देखने लगते हैं। रांझू और फुलमो की कहानी इस क्षेत्र की सबसे प्रतिनिधि कहानी है। इसीलिए मैं पहले पूरी कहानी को गद्य रूप में समझाऊंगा और इसके माध्यम से कांगड़ा की जीवनशैली को प्रदर्शित करूंगा।

(पृष्ठ 362)
गीत में रंझू को एक बेवफा प्रेमी के रूप में चित्रित किया गया है। बेवफाई एक अक्षम्य अपराध है जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसीलिए मैंने अंत में [यहाँ अपने पुनर्लेखन में] उसे एक वफादार प्रेमी के रूप में दर्शाया है। पंजाब के मिरासी लोग संदन को लंबी हेक शैली में गाते थे, उसी प्रकार कांगड़ा के ढोलरू भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं और उन्हें ढोल की थाप के साथ सामंजस्य बिठाकर गाया जाता है। 242 कांगड़ा के निवासी भी बहुत बहादुर हैं। उनके पास कई 243 वार कविताएँ हैं, जैसे राम सिंह पठानिया पर लिखी गई वार कविता, जो युद्धों में सैनिकों की बहादुरी के बारे में बताती है और इस प्रकार कांगड़ा के लोगों के साहस को साबित करती है।
कुछ आधुनिक परंपराएं और अभिव्यक्तियाँ भी इन गीतों का हिस्सा बन गई हैं। जैसे एक गीत में, गोरी (महिला) अपने 'सेवारत' की प्रशंसा करती है, और दूसरे गीत में गोरी को मैदानी इलाके में स्थित बंगले में अपने बच्चों को स्कूल में पढ़ाने और अपने बगीचे की देखभाल करने की प्रेरणा मिलती है।
कांगड़ा के लोकगीतों में गद्दी गीतों का एक विशेष स्थान है। हमारी ही तरह, गद्दी लोग भी विवाह, सगाई, जन्म, मुंडन, मेलों और त्योहारों के अवसर पर लोकगीतों का आनंद लेते हैं। वे इन गीतों को गाकर रोजमर्रा की नीरस दिनचर्या से मुक्ति पाते हैं

और उनकी आत्मा झूम उठती है।

242 मिरासी और ढोलरू जाति समूह हैं जो परंपरागत रूप से उत्सवों और सामाजिक अवसरों पर गायक और नर्तक के रूप में काम करते हैं; संदान एक लोक कथा को संदर्भित करता है, और हेक वह शैली है जिसमें इसे गाया जाता है। हेक एक लंबी लयबद्ध गायन शैली है जो आमतौर पर गायन की प्रस्तावना के रूप में कार्य करती है।
243 योद्धाओं के साहस के बारे में लंबी कविताएँ।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उनके गीत शुद्ध, स्पष्ट और भावपूर्ण हैं, ठीक उन्हीं की तरह। चूंकि वे खुले में कड़ी मेहनत करते हैं, इसलिए उनके गीत भी इन अनुभवों को दर्शाते हैं। कांगड़ा के लोगों के जीवन में रोमांस उसी तरह घुलमिल जाता है जैसे मौज-मस्ती। घास के मैदानों और जंगलों में खेलते हुए एक लड़के और लड़की के बीच एक बहुत ही पवित्र प्रेम संबंध विकसित होता है, जैसे जंगल में मासूम पक्षी - गीतों में चित्रित यह संबंध संगीत को एक सुंदर रंग प्रदान करता है।
साधारण भोजन, साधारण वस्त्र और निरंतर परिश्रम के बावजूद, ये लोग अपने जीवन से बेहद संतुष्ट हैं और शीश महलों में रहने वाले राजसी ठाठ-बाठ को नकारते हुए अपने सरल जीवन को विलासिता से अधिक महत्व देते हैं। एक लोकगीत में एक सुंदर गद्दी स्त्री की कहानी है जिसे राजा संसार चंद के महल में लाया जाता है, लेकिन वह युवती अपनी भेड़ों के झुंड को याद करती है और अपनी गद्दी संस्कृति और भाषा को नहीं भूलती। सरल जीवन के अलावा, अगर गद्दी लोग किसी चीज से बेहद प्यार करते हैं, तो वह है चंबा शहर - उनका अपना शहर।

(पृष्ठ 363)
उनके गीत चौगान और रावी नदी में जीवंतता का संचार करते हैं।

चंबा नदी, कितनी सुंदर है!
मैं रावी नदी के किनारे टहलूँगा।
मैं पीपल के पेड़ की ठंडी छांव में बैठूंगा।
दिनभर छाया बनी रहेगी।

ऊँची धाराएँ, घुमावदार नदियाँ,
चंबा का चौगान बहुत सुंदर है।

चंबा के गद्दी लोगों के गीतों में रावी नदी का बार-बार जिक्र होता है। वे इस नदी से डरते भी हैं और इससे प्यार भी करते हैं।

“ओह रवि, इतनी जोर से मत बोलो,
मुझे डर लगता है।
चंबा के गले में सजी हुई माला,
मुझे तुमसे डर लगता है।
तुम्हारी दुनिया बेतरतीब ढंग से भटक रही है, और तुम सैकड़ों तरह के नखरे दिखा रहे हो।
ओह रवि, कृपया नखरे मत दिखाओ।
मैं तुम्हारे किनारों पर बैठना चाहता हूँ।
मैं आपके गाने गाना चाहता हूँ।

कांगड़ा पहाड़ियों की सुंदरता - उनकी बर्फ से ढकी चोटियाँ, ठंडे और साफ पानी की धाराएँ, सफेद फूलों से लदे कैंथा के पेड़, जंगली गुलाबों की झाड़ियाँ, गुलाबी ऑर्किड, नदी के किनारों पर खेलते सारस के जोड़े - न केवल आसपास के वातावरण में बल्कि लोगों के चेहरों और लोकगीतों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
कांगड़ा के लोकगीत वहां के लोगों की जीवनशैली का दर्पण हैं।

244 चौगान, यहाँ, पहाड़ी भाषा का एक शब्द है जो हिमाचल की पहाड़ियों में बड़े हरे मैदानों/मैदानी क्षेत्रों को संदर्भित करता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

संगीत की लय हमें बताती है कि गीतों में वर्णित युवा लड़के-लड़कियों का स्वभाव भी कोमल और कलात्मक है। उनकी बातचीत में संगीत की मधुरता है, उनके चेहरे गीतों

की कोमलता से सराबोर हैं, उनके हृदय जल के समान निर्मल हैं और उनका संपूर्ण जीवन बहते जल के समान पवित्र है। ये गीत पहाड़ी लोगों की जीवनशैली, उनकी भावनाओं, सपनों, आकांक्षाओं और प्रेम को व्यक्त करते हैं। कांगड़ा के लोकगीतों में व्यक्त इस स्पष्ट, सच्ची सादगी और सौंदर्य के सागर पर हमें गर्व होना चाहिए। लोकगीतों की कविता सुंदर है। भावनाओं की प्रचुरता और सत्य इस कविता के प्रमुख गुण हैं।

ये गीत बोलचाल की भाषा में रचे गए हैं। इनमें अनूठी स्पष्टता और मौलिकता है। कांगड़ा के लोकगीतों की पंजाबी, दोआबा क्षेत्र की पंजाबी से मिलती-जुलती है। कुछ शब्द बिल्कुल दोआबी भाषा की तरह ही बोले जाते हैं। शायद एकमात्र अंतर यह है कि ये गीत ऊँची आवाज़ में गाए जाते हैं और सुर में गाने के लिए पहले और आखिरी शब्दों को थोड़ा लंबा खींचा जाता है। इन शब्दों को 'कन्ना' या 'बिहारी' की मदद से लंबा खींचा जाता है, जिससे शब्दों में एक अलग ही स्वाद आ जाता है।245 घाटी के दूरदराज के इलाकों या कोनों में रहने वाले लोगों के लिए इन स्वरों का प्रयोग करना शायद स्वाभाविक या अनिवार्य है। कांगड़ा के लोकगीतों में प्रयुक्त भाषा सच्ची और मधुर पंजाबी है। बिलासपुर, मंडी, सुकेत और चंबा के गीत भी कांगड़ा के लोकगीतों में शामिल हैं। ये सभी पंजाबी में हैं, और कभी-कभी यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि ये गीत कांगड़ा के हैं या शाही क्षेत्रों के।

सामूहिक रूप में मौखिक इतिहास के रूप में लोगों के दिलों के इस खजाने को खोजना मेरे लिए अत्यंत आनंददायक अनुभव रहा। इन लोकगीतों की ताजगी और शाश्वतता हमें इन्हें बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। ये गीत ताज़गी भरे और पवित्र हैं, समय की रेत के झोंकों से भी इनकी चमक फीकी नहीं पड़ेगी।

245 कन्ना पंजाबी में 'आ' स्वर ध्वनि को संदर्भित करता है। यह एक मात्रा (स्वर चिन्ह या चिह्न) है। बिहारी भी एक मात्रा है, और इसे लंबी 'ii' या 'ee' ध्वनि के रूप में पढ़ा जा सकता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 52

गैलन होयान बीटियन246

(पृष्ठ 365)

Badooey sugaadoey tu kajo jhaankdi What do you see here and there,

आप क्या ढूंढ रहे हैं?

दो हाथ बटने दे लायां फुलमो फुलमो, मुझ पर वत्ना लगाओ,

Gallan hoyi beetiyan Let bygones be bygones.

फुल्मो चंबा की एक खूबसूरत गद्दी महिला थी। सोलह वर्ष की आयु, आकर्षक शरीर और जोशीली, चंचल जवानी। जब वह अपनी भेड़ों के झुंड के साथ निकलती, तो हर कोई उसे निहारता, उसकी सुंदरता की प्रशंसा करता। काले बाल, चंद्रमा जैसी आकृति वाला माथा और मेमने जैसी चंचल आँखें। नुकीली नाक, लाल होंठ, गोल ठुड्डी और गुलाबी सेब जैसे गाल। लंबी, सुडौल गर्दन, भरे हुए स्तन, एक लंबी, पतली महिला। उसके गले में काला हार उसकी सुंदरता को और बढ़ा देता था। जब वह चलती, तो ऐसा लगता जैसे कोई हंस चल रहा हो, और उसकी सुंदरता की खुशबू चारों ओर फैल जाती थी।

एक दिन फुलमो पानी भरने के लिए सीढ़ीदार कुएँ पर गई। उसने अपना मिट्टी का घड़ा पानी में डुबोया और कुएँ में पानी की छपछपाहट सुनी। घड़ा उठाने ही वाली थी कि उसने देखा कि एक सुंदर युवक कढ़ाईदार टोपी पहने, हाथ में बांसुरी लिए, उसे घूर रहा है। पहली नज़र में ही दोनों को प्यार हो गया। वे अपने दिल की बात कह नहीं पाए, लेकिन उनकी आँखों ने उनके भावों को बयां कर दिया। ऐसा लगा जैसे चाँद और सूरज मिल गए हों। फुलमो ने घड़ा उठाया, लेकिन उसके पैर भारी हो गए थे और चलने से इनकार कर रहे थे।

(पृष्ठ 366)

उसे ऐसा लगा जैसे उसके शरीर में बिजली दौड़ गई हो। ऐसा महसूस होते ही उसने अपने आस-पास देखना शुरू किया कि कहीं किसी और ने उसे इस हालत में तो नहीं

देख लिया। उसके पैर धीरे-धीरे चल रहे थे, पर उसका मन उसे वापस खींच रहा था। जब वह लड़खड़ाते हुए घर लौट रही थी, तो ऐसा लग रहा था मानो उसके अंदर प्रेम का सागर उग्र रूप से उमड़ रहा हो। उसकी बड़ी-बड़ी मदहोश कर देने वाली आँखें बसंत ऋतु में हिरण की आँखों की तरह चमक रही थीं। उसने पीछे मुड़कर देखा; वह अभी भी वहीं बैठा था। उनकी आँखें फिर मिलीं, और एक दिल से दूसरे दिल को भेजे जाने वाले गुप्त संदेश फिर से भेजे गए।

फुलमो को पता चला कि यह युवक पास के लछमन गाँव के मुखिया (लंबरदार) का इकलौता बेटा था। उसका नाम रंझू था। उसके बाद, रंझू अपनी बांसुरी लेकर वहाँ पहुँच जाता जहाँ फुलमो अपनी भेड़ें चराने ले जाती थी और अपनी बांसुरी की मधुर धुनों से उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट करता। हवा बांसुरी की मधुर ध्वनि से सराबोर हो जाती। काले बादलों के बीच सारस बेहद खूबसूरत लगते, लेकिन जिसने अपनी प्रेमिका की काली आँखों की गहराई देख ली हो, उसे बादलों की परवाह नहीं होती। उन्होंने एक-दूसरे के साथ जीने और मरने का वादा किया।

फुलमो के पड़ोस में एक तेल निकालने वाले का घर था। एक दिन, रंझू सरसों के बीज लेकर तेल निकलवाने के लिए उस तेल निकालने वाले के घर गया। उसने फुलमो को बैठे हुए देखा।

246 लिट., बीते हुए शब्द।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। फुलमो अपनी सहेलियों के साथ सड़क के उस पार सूत कात रही थी। वह लड़कियों के समूह की रानी जैसी लग रही थी। उसके गोरे गले पर काला हार बहुत सुंदर लग रहा था, और जब वह हंसती थी, तो उसके मोती जैसे दांत बगीचे में खिले चमेली के फूलों की तरह लगते थे। जब उसने रंझू को देखा, तो वह सूत कातना भूल गई, और सूत का सिरा उसके हाथों से गिर गया। रंझू ने बहाना बनाया कि वह सरसों से तेल निकालने का काम देख रहा है, लेकिन उसकी निगाहें फुलमो के चेहरे पर टिकी हुई थीं। वे एक-दूसरे को देखते रहे लेकिन कुछ कह नहीं सके, ताकि उनके प्यार का राज़ बना रहे। फुलमो शर्म से लाल हो गई। उसके चेहरे का रंग बदलता रहा।

एक बार दोनों की मुलाकात अनाज भूनने वाले चूल्हे पर हुई। फुलमो की सहेली इंदर देवी भुट्टा भुनवा रही थीं, उन्होंने झियोरी से अपने भुट्टे को और कुरकुरा बनाने को कहा। इसी दौरान रंझू भी भुट्टे की टोकरी लेकर वहाँ पहुँच गया, और कुछ देर बाद... फुलमो भी। हालांकि भुट्टा भुनने की बारी रंझू की थी, लेकिन उसने कहा कि वह और इंतजार कर सकता है, और उसे कोई जल्दी नहीं है।

(पृष्ठ 367)

इस बहाने से उसे फुलमो को निहारने के लिए और अधिक समय मिल गया, और जब सभी लड़के-लड़कियां पॉपकॉर्न लेकर चले गए तो वह भी भट्टी से बाहर निकल गया। फुलमो के गाँव में भगवान कृष्ण का एक ऐतिहासिक मंदिर था। पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रांति पर एक बड़ा मेला लगता था, और आस-पास के गाँवों से पुरुष और महिलाओं के समूह ढोल-नगाड़े बजाते हुए आते थे। रंझू हमेशा इस मेले में जाती थी। गाँव के पुजारी संत राम बहुत बुद्धिमान थे। वे भगवद् पुराण की कथा बड़े आनंद से सुनाते थे। स्त्रियाँ चटाई के एक तरफ बैठती थीं, पंडित पुजारी बीच में और पुरुष और लड़के दूसरी तरफ। बुजुर्ग लोग आँखें बंद करके भगवान के नाम का ध्यान लगाते और कथा का आनंद लेते थे। लेकिन लड़के केवल लड़कियों को ही देखते रहते थे। रंझू की निगाहें फुलमो पर टिकी रहती थीं, और दोनों को पंडित की बातों का कोई अंदाजा नहीं होता था।

प्रेम की खुशबू को छुपाया नहीं जा सकता था, और रंझू और फुलमो की प्रेम कहानी गाँव में खुलकर चर्चा का विषय बन गई। लोग रंझू को फुलमो की गली में आते-जाते देखते थे। वह भेड़ें या दूध खरीदने आता था, जबकि उसके घर में कई मवेशी थे और दूध की कोई कमी नहीं थी। जब रंझू के पिता को पता चला, तो उन्होंने लड़के को समझाने की कोशिश की कि फुलमो एक गरीब चरवाहे की बेटी है, इसलिए वे उसकी शादी नहीं होने दे सकते क्योंकि इससे उनके घर की बदनामी होगी। वह एक लंबरदार थे और उनके पास 20 एकड़ जमीन थी, जबकि फुलमो के पिता केवल एक चरवाहे थे। उनके पिता के पास केवल 50 भेड़ें, एक गाय और एक छोटी सी झोपड़ी थी; उनके पास कोई जमीन नहीं थी। लछमन ने उन्हें डांटते हुए कहा कि अगर रंझू अपना मन नहीं बदलेगा, तो वह अपनी सारी संपत्ति अपने छोटे भाई को दे देंगे। जब उन्होंने देखा कि रंझू पर इसका कोई असर नहीं हुआ, तो उन्होंने तुरंत पास के गाँव से एक

लड़की चुनी और उससे सगाई कर दी। इतना ही नहीं, उन्होंने रंझू की शादी की तारीख भी तय कर दी।
पिता की डांट और चेतावनियाँ सुनकर रंझू दुविधा में पड़ गया। एक ओर वह अपने घर की इज्जत और संपत्ति को लेकर चिंतित था, तो दूसरी ओर अपने सपनों की रानी को लेकर। अगर वह पिता की बात मानता, तो उसे अपनी प्रेमिका को छोड़ना पड़ता, और अगर वह अपने दिल की सुनता, तो वह अपने परिवार से अलग हो जाता और उसे अपना घर छोड़ना पड़ता। वह अपनी बांसुरी भी भूल गया, और चिंताओं के सागर में डूबकर खेतों की ओर चल पड़ा।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
मक्का पक रहा था और उसके छिलके काले पड़ रहे थे। कैना के पौधे के सफेद, मेढ़े जैसे फूल हवा में ऐसे लहरा रहे थे मानो हजारों चौर बह रहे हों।

(पृष्ठ 368)
प्रेम में निराश फुलमो, रंझू की तलाश में नदी के किनारे गई। जंगली चेरी के पेड़ गहरे लाल फूलों से लदे हुए थे। एक फूल पर दो मधुमक्खियाँ बैठी थीं और दोनों मिलकर फूलों का रस पी रही थीं। एक भौंरा फूलों के ऊपर भिनभिना रहा था। एक पेड़ पर कबूतरों का एक जोड़ा बैठा था, वे प्रेम में अपनी चोंचें एक-दूसरे से छू रहे थे। यह देखकर फुलमो को अपने प्रेम की याद आ गई। मोर रो रहा था, लेकिन आसपास कोई मोरनी नहीं थी। मोर की आवाज सुनकर फुलमो का दुख और बढ़ गया। अंत में, उसने रंझू को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा। वह उदास लग रहा था और उसके सिर पर चिंता के बादल छाए हुए थे। जब फुलमो ने बार-बार उससे पूछा कि वह क्यों परेशान है, तो उसने उसे अपने संघर्ष के बारे में बताया।
फुलमो ने कहा, “हे मेरे पति, हे मेरे ईश्वर, मेरे प्रिय मित्र, चलिए इस स्थान को छोड़कर अमृतसर चलते हैं। आप वहाँ नौकरी कर सकते हैं। मैं आपके घर की देखभाल करूँगी और जब आप थके-हारे घर लौटेंगे, तो मैं आपकी सेवा करूँगी।”
“मैं शहर में काम नहीं कर सकता। मुझे शहर की संकरी गलियों और शोरगुल में घुटन महसूस होती है।”

“मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती, तुम्हारे बिना मुझे बहुत अकेलापन महसूस होता है, तुम्हारे बिना मेरी आत्मा बेचैन है।” यह कहते हुए फुलमो फूल की तरह मुरझा गई और गिर पड़ी, जैसे चमेली के फूल बारिश में भीगकर जमीन पर गिर जाते हैं।
फुलमो को लगा जैसे उसके प्रेमी का हृदय बदल गया हो। जब रंझू विदा हुई, तो वह कुछ कहना चाहती थी, पर कह नहीं सकी। उसका हृदय दुःख से भरा हुआ था। उसने अपने चेहरे को दोनों हथेलियों से ढक लिया और रोने लगी। जब उसे थोड़ा सुकून मिला, तो वह बड़ी मुश्किल से घर लौटी।
अगले दिन सुबह-सुबह फुलमो की पड़ोसी संतो उनके घर आई और बोली, “ओह फुलमो, क्या तुमने सुना है कि रंझू की शादी की तैयारियां चल रही हैं और आज उस पर वटना लगाया जाएगा?” फुलमो डर गई और कुछ बोल नहीं पाई। ढोल की आवाज़ सुनकर वह लंबरदार के घर भागी। उसने देखा कि लछमन के घर में शादी की तैयारियां चल रही थीं और रंझू पर वटना लगाया जा रहा था। रंझू की चाचियां, भाभी और पड़ोसी उस पर वटना मल रही थीं और गीत गा रही थीं। फुलमो अपने घर में दाखिल हुई।

(पृष्ठ 369)
अपने माता-पिता द्वारा दिन-रात सिखाए-पढ़ाए जाने के कारण, रंझो उसे देखकर शर्मिंदा हो गया और बोला, “फुलमो, तुम मुझ पर वटना क्यों नहीं लगाती? तुम यहाँ क्यों खड़ी रहती हो?” यह सुनकर फुलमो का दिल छलनी हो गया। अमर प्रेम के उसके सारे वादे झूठे साबित हो गए। उसने सोचा कि यह बात सही है कि पुरुष धोखेबाज होते हैं और जवान लड़कों से प्रेम नहीं करना चाहिए। उसके शरीर को लूटकर उसकी जवानी छीनने के बाद, अब वह कहता है, “तुम मुझ पर वटना क्यों नहीं लगाती?” उसका चाँद जैसा चेहरा मुरझा गया और काला पड़ गया, उसके पैर काँपने लगे और शरीर पर ठंडा पसीना आ गया। उसने कहा, “रंझो, तुम्हारी चाचियों को तुम पर वटना लगाना चाहिए, वे ही तो तुम्हारे विवाह से खुश हैं। मैं क्यों लगाऊँ?” अपने प्रेमी के धोखे से उसकी आत्मा चकनाचूर हो गई और वह रोते हुए घर लौट आई।
उस स्त्री का हृदय गुलाब की पंखुड़ियों के समान कोमल था। जैसे गर्मी के महीनों में गर्म शौचालय गुलाब की पंखुड़ियों को झुलसा देता है, वैसे ही विरह की आग उस स्त्री

के कोमल हृदय को जला रही थी। फुलमो न केवल विरह की आग से जल रही थी, बल्कि वह असहाय और निराश भी महसूस कर रही थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

उसे लगा कि यह प्यार नहीं, बल्कि उसके लिए सिर्फ मनोरंजन था, ठीक वैसे ही जैसे कोई बच्चा किसी खिलौने को पसंद करता है लेकिन चार दिन खेलने के बाद उसे फेंक देता है और जल्द ही नया खिलौना ढूंढने लगता है। रंझू का व्यवहार भी कुछ ऐसा ही निकला।

पहाड़ उसके दुख और चिंता पर रो पड़े; पेड़ भी सहानुभूति में अपने पत्ते बिखेरने लगे। उसकी भेड़ें भी उसे उदास देखकर दुखी हो गईं और चरने से मना कर दिया। उनकी छत के लकड़ी के तख्तों के बीच दो गौरैया रहती थीं; वे हर दिन चहचहाती थीं। फुलमो का उदास चेहरा देखकर ये पक्षी भी चहचहाना भूल गए, वे शोक में डूबे बैठे रहे। फुलमो बेहद स्तब्ध रह गई, और उसकी सारी इच्छाएँ और मनोकामनाएँ चकनाचूर हो गईं। उसे केवल अँधेरा ही दिखाई दे रहा था। घोर अंधेरी रातें, और उल्लू की भयानक आवाज ने उसके हृदय में और भी भय भर दिया। उसका हृदय मानो आकाश से चाँद को छोड़कर विधवा हो गया हो। “हे आकाश के तारों! मेरे साक्षी बनो, देखो कि मैं अपनी अंतिम साँस तक अपने प्रेम के प्रति सच्ची रही। हे पक्षियों और वृक्षों! तुम मेरे साक्षी हो कि मैं वफ़ादार रही।” इन्हीं विचारों में खोई हुई फुलमो ने मिट्टी के दीपक की लौ पर फूँक मारी। लौ बुझ गई, और उसके साथ ही उसकी इच्छाएँ और मनोकामनाएँ भी समाप्त हो गईं।

(पृष्ठ 370)

वह कैसे सो सकती थी, वह रोई, भूखी-प्यासी थी; वह फर्श पर लेट गई और अपना चेहरा एक काले कंबल से ढक लिया।

अगले दिन, लाल सूरज पहाड़ से जलती हुई लोहे की थाली की तरह निकला। दूर से नरसिंघा की आवाज़ सुनाई दे रही थी और ढोल की थाप उसके कानों में गूंज रही थी। रंझू पालकी में बैठा था, सिर पर सेहरा था। उसके पिता और रिश्तेदार जुलूस में उसके पीछे चल रहे थे। ढोल की थाप शोक से भरी थी और ऐसा लग रहा था जैसे कोई

भयानक घटना घटी हो। रंझू ने देखा कि चार आदमी 'राम नाम सत्य है' कहते हुए जनाज़े की अर्थी उठा रहे थे। जब उसने जुलूस का ध्यान से निरीक्षण किया, तो उसने फुलमो के पिता और भाई को पहचान लिया। उन्हें देखकर वह स्तब्ध रह गया, उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसका पुराना, दबा हुआ प्यार फिर से जाग उठा। उसने पालकी उठाने वालों से पालकी को ज़मीन पर रखने को कहा। तब तक फुलमो का शव चिता पर रखा जा चुका था; रंझू ने उसका चेहरा खोलकर अपनी प्रेमिका को देखकर ज़ोर-ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। उसने चिता में आग लगा दी, उसके पास बैठ गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा।
जब उसकी प्रेमिका का सुंदर शरीर जल रहा था, तब लपटें आकाश से बातें कर रही थीं। रंझू खुद को रोक नहीं पाया, उसने अपना सेहरा आग में फेंक दिया और फिर खुद भी आग में झोंक दिया। लोगों को ऐसा लगा मानो वे ऊंची लपटों में फुलमो का हंसता हुआ चेहरा देख रहे हों। ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो, "मुझे बहुत खुशी है कि हम दोनों फिर से एक साथ हैं।"

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

चंडीगढ़

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 53

हरित क्रांति की नींव और खाद्य सुरक्षा की समस्या का समाधान
लाखो लोग
(1955-1966)

कैरन और सचर के बीच बड़ा विवाद हुआ था, जिससे मुझे लगा कि पंजाब में कोई भी प्रगतिशील कार्य करना अब मुश्किल है। विकास आयुक्त होने के साथ-साथ मैं पुनर्वास विभाग का भी प्रभारी था। भूमि आवंटन का काम लगभग पूरा हो चुका था। यह काम जालंधर स्थित इस्लामिया कॉलेज की इमारत से किया जा रहा था। लायलपुर खालसा कॉलेज के प्रशासकों ने मुझे एक आवेदन भेजा, जिसमें उन्होंने इस्लामिया कॉलेज की इमारत उन्हें आवंटित करने का अनुरोध किया, क्योंकि लायलपुर स्थित उनकी इमारत जालंधर स्थित इस्लामिया कॉलेज ने ले ली थी और दोनों संस्थान इस अदला-बदली के बारे में बातचीत कर रहे थे। मैंने इसे एक जायज़ मांग समझा, क्योंकि लायलपुर खालसा कॉलेज अब जालंधर में स्थापित हो चुका था; इसलिए उन्हें यह इमारत आवंटित कर दी गई। जब सचर को इस अदला-बदली के बारे में पता चला, तो वे बहुत क्रोधित हुए। वे इस इमारत को आर्य प्रतिनिधि सभा को आवंटित करना चाहते थे। मेरा निर्णय सही था और पुनर्वास मंत्री सरदार उज्ज्वल सिंह ने भी मेरे निर्णय का समर्थन किया।
जब मैं साचर से मिलने गया, तो मैंने देखा कि वह बहुत गुस्से में था। मैंने उससे कहा कि मैंने जो कुछ भी किया वह सही और न्यायसंगत था।

(पृष्ठ 374)
मुझे इस बात का दुख हुआ कि पंजाब के मुख्यमंत्री रह चुके यह व्यक्ति किसी भी मुद्दे पर विचार करते समय सांप्रदायिकता से ऊपर नहीं उठ सके।
काम के दबाव के कारण मेरी सेहत बहुत बिगड़ गई थी और मुझे विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स के इंजेक्शन लेने पड़ते थे। गुड़गांव घूमते समय मेरी मुलाकात एक पुराने दोस्त से हुई। 247 उसने कहा, “तुम बहुत कमजोर हो गए हो। तुम्हें उतना ही काम करना चाहिए जितना तुम आराम से कर सको। यह सरकार तुम्हारे लिए ताजमहल नहीं बनाएगी।” मैंने उससे कहा कि कड़ी मेहनत से कोई नहीं मरता, बल्कि तुच्छता और अन्याय आत्मा को चोट पहुंचाते हैं, और यही मेरी कमजोरी का कारण था।
मेरे मित्र पी.एन. थापर का तबादला हो गया और वे योजना आयोग के सलाहकार बन गए। उन दिनों साई अजीत प्रसाद जैन भारत सरकार में कृषि मंत्री बने। वे मेरे काम से भली-भांति परिचित थे। उन्होंने थापर साहब का तबादला योजना आयोग से करवा दिया और उन्हें अपना निजी सहायक नियुक्त कर लिया। एक दिन थापर ने मुझे फोन

किया और बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में उपाध्यक्ष का पद रिक्त है और मुझे दिल्ली आना चाहिए। मैं कैरन से मिला और उनसे कहा कि मैं दिल्ली जाना चाहता हूँ क्योंकि पंजाब में अनावश्यक संघर्ष के बिना कुछ नहीं किया जा सकता। उन्होंने यह बात सचर को बताई। सचर ने कैरन के इस सुझाव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

247 गुरुग्राम, आज।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

मैं सितंबर 1965 में दिल्ली पहुँचा और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) का कार्यभार संभाला। आईसीएआर एक विशाल संगठन है और कृषि अनुसंधान इसकी मुख्य जिम्मेदारी है। इस परिषद के उपाध्यक्ष कई अनुसंधान समितियों की देखरेख करते थे जो विभिन्न फसलों पर शोध करती थीं। कपास समिति का मुख्यालय बंबई में था। नारियल और सुपारी समिति केरल में स्थित थी। जूट की समिति कलकत्ता में, तंबाकू की मद्रास में और तिलहन की हैदराबाद में थी। मुझे इन समितियों की देखरेख के लिए पूरे भारत में यात्रा करनी थी। मुझे संदेह था कि क्या मैं इस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा कर पाऊँगा। हालाँकि, जब मैं काम में व्यस्त हो गया, तो मुझे पहले से अधिक शक्ति का अनुभव होने लगा। आईसीएआर में काम करते समय, मैंने देखा कि हमारे देश की फसलों और उनसे संबंधित विषयों पर कोई पुस्तकें उपलब्ध नहीं थीं। रूसी वैज्ञानिकों का एक समूह मुझसे मिलने आया।

(पृष्ठ 375)

मैंने अपने सचिव को बुलाया और उनसे पूछा कि उन्हें कौन सी पुस्तक भेंट की जा सकती है। वे कर्नल श्री राम नाथ चोपड़ा द्वारा लिखित 'भारत के विषैले पौधे' नामक पुस्तक लाए। मुझे लगा कि हमारे यहाँ आए मित्र देश के वैज्ञानिकों को ऐसी पुस्तक भेंट करना उचित नहीं होगा। इस समस्या से निपटने के लिए मैंने पुस्तकों से संबंधित एक बड़ी परियोजना शुरू की। हमारे देश के जिन वैज्ञानिकों ने अपने काम के बारे में लिखा, उन्हें पुस्तकें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया गया और उन्हें उचित भुगतान

दिया गया। इस परियोजना को जारी रखने के लिए मैंने एक प्रकाशन विभाग की स्थापना की और इस कार्य के लिए संपादकों, फोटोग्राफरों और कलाकारों की भर्ती की। हरि कृष्ण गोरखा नाम का एक फोटोग्राफर था, जिसने पंजाब में मेरे साथ काम किया था। वह राज्यों के दौरे के दौरान मेरे साथ कार में बैठता था और मेरी देखरेख में खेतों, गांवों, फसलों, जानवरों और किसानों की तस्वीरें लेता था। उन दौरों के दौरान दस हजार तस्वीरें खींची गईं। तस्वीरों का यह खजाना पुस्तक को सुशोभित करने में बहुत उपयोगी साबित हुआ। हमारे पास हर विषय पर तस्वीरें थीं। इस परियोजना के तहत मैंने भारत की फसलों और किसानों पर पाँच पुस्तकें लिखीं। ये सभी पुस्तकें बेहद लोकप्रिय हुईं। डॉ. बी.पी. पूसा संस्थान के निदेशक पाल ने भी इस परियोजना में योगदान दिया और गुलाब और पुष्पीय लताओं पर पुस्तकें लिखीं। फिर मैंने वैज्ञानिकों के मोनोग्राफ पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। मैंने उनसे शैवाल और कवक पर मोनोग्राफ लिखवाए। हमारे देश के सभी प्रमुख वैज्ञानिकों ने इस कार्य में योगदान दिया।

मैल्कम ऑर्चर्ड नाम के एक अमेरिकी सलाहकार ने इस कार्यक्रम का विरोध किया। उनका मानना था कि आईसीएआर को किसानों के लिए केवल बुलेटिन ही प्रकाशित करने चाहिए। मेरा मानना था कि बुलेटिन और पुस्तकें दोनों प्रकाशित होनी चाहिए। इस दौरान मुझे यह महसूस हुआ कि हमारे देश में आए कई अमेरिकी सलाहकारों को हमारे देश की समस्याओं की कोई समझ नहीं थी और वे यहाँ केवल मौज-मस्ती के लिए आए थे। इस बहस के कुछ दिनों बाद, मैंने मैल्कम ऑर्चर्ड को बर्खास्त कर दिया और उन्हें वापस अमेरिका भेज दिया गया।

अमेरिकी वैज्ञानिकों में डॉ. फ्रैंक पार्कर हमारे देश के अच्छे मित्र साबित हुए। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों की योजना बनाने में हमारे देश की मदद की। इस योजना के तहत तराई में पहला विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था। मैंने प्रताप सिंह कैरों को बुलाया और उनसे कहा कि लुधियाना में भी ऐसा ही एक विश्वविद्यालय स्थापित किया जाना चाहिए।

(पृष्ठ 376)

उन्होंने इस मुद्दे को बड़े जोश से उठाया, लेकिन योजना आयोग ने बिल्कुल भी मदद नहीं की। कैरन ने उनसे कहा कि अगर वे मदद नहीं करेंगे, तो वह खुद इस

विश्वविद्यालय की स्थापना करेंगे। इसके बाद, योजना आयोग ने अपना समर्थन दिया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

कपास समिति की वार्षिक बैठक बंबई में होती थी। बैठक के लिए मुझे बंबई के एक होटल में ठहरना पड़ा, जिसके पास ही एक बस स्टैंड था। उस स्टैंड के लगातार शोर से मेरी नींद खराब हो रही थी, इसलिए मैं पूरी रात सो नहीं पाया। चिमन लाल पारिख इस समिति के उपाध्यक्ष थे। उन्होंने मुझे अपने घर में रहने का न्योता दिया। मैं बाकी यात्रा में उनके साथ ही रहा। वे गुजराती मिल मालिक थे और एक अच्छे इंसान थे। इस समिति में मैंने देखा कि राज्यों के कृषि निदेशक अपने-अपने राज्यों में कपास की फसल का अनुमान लगाते थे। सभी कपड़ा मिल मालिक बैठकों में जरूर आते थे। जब उन्हें पता चलता कि उस साल फसल अच्छी हुई है, तो वे किसानों से कपास खरीदने का भाव कम कर देते थे, जिससे किसानों को नुकसान होता था।

नारियल समिति की बैठक केरल के बड़े शहरों त्रिवेंद्रम और एर्नाकुलम में हुई। केरल एक खूबसूरत राज्य है। यहाँ चारों ओर नारियल और सुपारी के बागान फैले हुए हैं। केरल में ईसाई आबादी काफी अधिक है। नारियल, सुपारी और रबर के कई बागान ईसाइयों के स्वामित्व में हैं। जब ट्रेन उनके गांवों से गुजरती है, तो वे एक ईसाई देश की तरह प्रतीत होते हैं। इन यात्राओं के दौरान, मुझे एहसास हुआ कि हमारा देश कितना विशाल है। यहाँ इतने अलग-अलग धर्मों के लोग रहते हैं। हमारे नेता, जो अपने राज्य के अलावा किसी और जगह को नहीं जानते, कुएँ के मेंढक की तरह हैं। वे अपने राज्य को ही पूरी दुनिया समझते हैं, इसलिए उन्हें पूरे देश की यात्रा करानी चाहिए ताकि वे इसकी विविधता को समझ सकें। दक्षिण भारतीय राज्य हिंदुस्तानी नहीं समझते। उन सभी की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं, जैसे केरल में मलयालम, तमिलनाडु में तमिल और आंध्र प्रदेश में तेलुगु। पढ़े-लिखे लोग अंग्रेजी जानते हैं, और हम उत्तर भारतीय उनसे केवल अंग्रेजी में ही बात कर सकते हैं। अगर किसी भाषा को अखिल भारतीय भाषा कहा जा सकता है, तो वह अंग्रेजी है, हिंदी नहीं। अंग्रेजी ने ही हमारे भीतर भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को विकसित किया है। आज के समय में रेडियो या टेलीविजन पर इस्तेमाल होने वाली हिंदी शब्दकोश की भाषा है, बोलचाल की भाषा नहीं। ऐसी भाषाओं की कोई जड़ या शाखा नहीं होती और वे केवल

सरकारी सहायता से ही जीवित रहती हैं।

(पृष्ठ 377)
मेरा पाँच साल का कार्यकाल सितंबर 1960 में पूरा हुआ, और तब मुझे यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि मैं कहाँ काम करूँगा। मैंने तीन महीने की छुट्टी ली और राजस्थान का दौरा किया। जयपुर, चित्तौड़, किशनगढ़, उदयपुर, जोधपुर, कोटा और बूंदी—इन सभी स्थानों पर मैंने प्राचीन चित्रों पर शोध किया। तरलोक सिंह योजना आयोग के सचिव थे। उन्होंने आयोग में मेरे लिए सलाहकार का पद सृजित करने के लिए बहुत प्रयास किए, और इस कार्य में भारत के प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण करना शामिल था। योजना आयोग में मेरे सहकर्मी एम.एस. शिवरामन और कृष्णस्वामी थे। वे दोनों इस क्षेत्र के काम से नाखुश थे। जब कोई व्यक्ति अपने करियर में एक निश्चित मुकाम पर पहुँच जाता है, तो वह जीवन के नीरस पहलुओं से दूर हो जाता है। मैंने भी यही महसूस किया।
उन दिनों मेरी मुलाकात प्रोफेसर गैलब्रेथ से हुई, जो भारत में अमेरिकी राजनयिक थे। वे भी भारतीय चित्रकला से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने मेरी पुस्तकें पढ़ी थीं। हम दोनों ने कांगड़ा घाटी का भ्रमण किया और नूरपुर, गुलेर, तिरा सुजानपुर और आलमपुर गए। राजा संसार चंद सुजानपुर और आलमपुर में रहते थे और उन्हीं के संरक्षण में कांगड़ा कला का विकास हुआ। इस भ्रमण के दौरान हम दोनों ने यह निश्चय किया कि भारतीय चित्रकला पर एक ऐसी पुस्तक लिखी जाए जिसे कोई भी आम व्यक्ति समझ सके। इस भ्रमण के बाद मैंने तीन महीने की छुट्टी ली। मैंने इस पुस्तक का एक मसौदा तैयार किया और गैलब्रेथ को सौंप दिया। यह पुस्तक विश्व भर में प्रसिद्ध हो गई।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
सन् 1963 में मैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए जिनेवा गया था। डॉ. हुसैन ज़हीर, डॉ. वी.के.आर.वी. राव, होमी भाभा, प्रो. बेकर और जे.आर.डी. टाटा मेरे साथी थे। इतने प्रतिष्ठित सम्मेलन में बोलने का यह मेरा पहला अवसर था। मेरा विषय था 'भारत के प्राकृतिक संसाधन'। मैंने दो-तीन दिन अपने

कमरे में रहकर अपने व्याख्यान की तैयारी की। यह सफल रहा। भाभा और बेकर ने मेरी बहुत प्रशंसा की।
भारत लौटने पर मेरी मुलाकात वित्त मंत्री टी.टी. कृष्णमाचारी से हुई। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ। उनके अनुसार, योजना आयोग बूढ़ी और विकलांग गायों के लिए एक आश्रय स्थल था। उन दिनों भारत में खाद्य सुरक्षा की समस्या बहुत गंभीर हो गई थी। भारत सरकार ने सघन कृषि की योजना बनाई थी। टी.टी. कृष्णमाचारी ने मुझे इस परियोजना का जिम्मा लेने और देश की खाद्य सुरक्षा की समस्या का समाधान करने को कहा।

(पृष्ठ 378)
उस समय सरदार स्वर्ण सिंह कृषि मंत्री थे। वे लाहौर के सरकारी महाविद्यालय में मेरे सहपाठी थे। मैंने उनसे कहा कि मैं इस परियोजना का कार्यभार संभालने के लिए तैयार हूँ। उन दिनों देश में बारिश की कमी के कारण भारी अराजकता थी और देश अमेरिका से मंगाई गई गेहूं पर निर्भर था। मैंने महसूस किया कि हमारे देश में खाद्य संकट का समाधान तभी संभव है जब रासायनिक उर्वरकों के कारखाने स्थापित किए जाएं और ये रासायनिक उर्वरक किसानों तक उनके खेतों में पहुंचाए जाएं। दूसरे, उन दिनों हमने सुना था कि डॉ. बोरलॉग ने गेहूं की नई किस्में विकसित की हैं जो कम ऊंचाई वाली और अधिक उपज देने वाली हैं।248 हमने पूसा संस्थान में इस गेहूं पर प्रयोग किए। प्रयोगों से सिद्ध हुआ कि यही देश की समस्या का समाधान है। पूसा संस्थान के निदेशक एम.एस. स्वामीनाथन ने इस दिशा में पूरी लगन से काम किया। मैंने गांवों में गेहूं की इन किस्मों की खेती को बढ़ावा देने और परीक्षण के लिए सभी गांवों में एक-एक एकड़ खेत आवंटित करने की योजना बनाई। जब किसानों ने देखा कि यह गेहूं उनकी अपनी किस्मों की तुलना में तीन गुना अधिक उपज देता है, तो उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। परिणामस्वरूप, सघन कृषि अत्यधिक सफल रही, लेकिन रासायनिक उर्वरकों की कमी के कारण देश की खाद्यान्न की आवश्यकता पूरी नहीं हो सकी। सी. सुब्रमण्यम नए कृषि मंत्री बने। वे बहुत ही चतुर और बुद्धिमान थे, लेकिन राज्यों के प्रति उनका पूर्वाग्रह था। आईसीएआर में सचिव पद के लिए एक रिक्ति थी। उन्हें उम्मीदवारों की एक सूची प्राप्त हुई। सूची में नायर नाम का एक व्यक्ति था, जो ओडिशा से था। केरल के उपनाम 'नायर' को पढ़कर सुब्रमण्यम ने

सोचा कि वह केरल से है। जब वे उससे मिलने गए, तो यह स्पष्ट हो गया कि नायर पंजाबी था, और सुब्रमण्यम ने उसे नियुक्त करने से इनकार कर दिया।
इस घटना से मुझे यह समझ आ गया कि सुब्रमण्यम के साथ काम करना मुश्किल होगा। वह अहंकारी था और किसी को भी अपने बराबर नहीं समझता था। इन्हीं परिस्थितियों के कारण मैंने पंजाब लौटने का फैसला किया।

248 नॉर्मन बोरलॉग, अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक जिनके काम के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में वैश्विक वृद्धि हुई जिसे लोकप्रिय रूप से हरित क्रांति कहा जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 54

चंडीगढ़
इस नए शहर को सुशोभित करना
(1966-68)

(पृष्ठ 379)
देश में अनाज की भारी कमी थी। कृषि उत्पादकता बढ़ाने का काम इतना कठिन था कि इसकी भविष्यवाणी भी नहीं की जा सकती थी। सभी प्रांतों का दौरा करना और चयनित उपजाऊ क्षेत्रों में पैकेज कार्यक्रम लागू करना कोई साधारण काम नहीं था। इस काम का मेरे स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ा और मेरे दाहिने पैर में साइटिका का दर्द शुरू हो गया। यह दर्द इतना तीव्र होता था कि कई बार असहनीय हो जाता था। मैंने मार्च 1966 में चार महीने की छुट्टी ली। इस छुट्टी के दौरान मैंने पूसा संस्थान पुस्तकालय में उपलब्ध कृषि संबंधी सभी पुरानी पुस्तकें पढ़ीं।
उन दिनों 'पंजाबी सूबा' (पंजाबी प्रांत) का प्रश्न उठा और पंजाब के क्षेत्रों को पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में विभाजित किया गया। पंजाब और हरियाणा दोनों ने चंडीगढ़ की मांग की। जब दो बिल्लियों के बीच एक रोटी के लिए लड़ाई होती है, तो बंदर को बड़ा हिस्सा मिलता है।249 इस मुद्दे को सुलझाने के लिए, भारत सरकार ने

चंडीगढ़ को दोनों राज्यों से अलग करने का निर्णय लिया।
इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने पंजाब जाने का फैसला किया। मेरे एक करीबी दोस्त धर्मवीर की कैबिनेट सचिव के पद पर तैनाती हुई थी।

(पृष्ठ 380)
मैंने उनसे कहा कि मुझे चंडीगढ़ में दिलचस्पी है। अगर भारत सरकार इसे अलग कर दे, तो मुझे इसका प्रशासन संभालने में खुशी होगी। उन्होंने मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।
मैं 1952 से चंडीगढ़ से जुड़ा हुआ था। 1952 में, पंजाब सरकार ने चंडीगढ़ परियोजना के लिए एक भूदृश्य समिति का गठन किया था। मैं इस समिति का अध्यक्ष था। इस समिति में ले कॉर्बूसियर, जेनरट और मुख्य अभियंता पी.एल. वर्मा सदस्य थे। मैंने समिति की सहायता से चंडीगढ़ के भूदृश्य और उद्यानों की सभी योजनाएँ बनाईं। इसके अलावा, मैं चंडीगढ़ में कला और विज्ञान के दो संग्रहालयों का निर्माण करवाना चाहता था।
पूरी दुनिया चंडीगढ़ परियोजना में दिलचस्पी ले रही थी। मैंने तय किया कि चंडीगढ़ में एक संग्रहालय बनाया जाए, जिसमें शहर की सभी महत्वपूर्ण इमारतों की तस्वीरें हों। यह संग्रहालय एक नई इमारत में स्थापित किया गया था, जो आज मुख्य आयुक्त और वास्तुकारों के कार्यालय के रूप में कार्य करती है। इस संग्रहालय के एक कोने में जेनरट के घर की वस्तुएं भी हैं। मेरा मानना है कि कॉर्बुसियर के बाद, जेनरट ने समर्पण के साथ सबसे महत्वपूर्ण काम किया, लेकिन यह शर्मनाक है कि किसी ने उनके योगदान को महत्व नहीं दिया। लगातार काम करने के कारण, जेनरट की आंखों में मोतियाबिंद हो गया और उनकी दृष्टि कमजोर हो गई। उन्हें मजबूरन

249 यह एक बच्चों की कहानी के संदर्भ में है जिसमें दो बिल्लियाँ रोटी/चपाती के लिए लड़ती हैं और तभी एक बंदर वहाँ आ जाता है। वे उससे कहानी के अपने-अपने पक्ष का फैसला करने को कहती हैं, और फैसले और बंटवारे की प्रक्रिया में, बंदर धीरे-धीरे भोजन का बड़ा हिस्सा अपने लिए ले लेता है। थोड़ा-थोड़ा करके, बंदर बिल्लियों के बीच बराबर बाँटने के नाम पर सारा भोजन ले लेता है और चला जाता है। बिल्लियाँ अचंभित होकर देखती रहती हैं।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। स्विट्ज़रलैंड लौटते समय, पंजाब सरकार के किसी भी मंत्री ने उन्हें विदाई पार्टी नहीं दी। जब मैं उनसे पालम हवाई अड्डे पर मिला, तो वे बहुत दुखी थे और उनकी आँखों में आँसू भरे थे। कुछ महीनों बाद, उनका अपने देश में निधन हो गया। उनकी इच्छा थी कि उनकी अस्थियों को चंडीगढ़ की झील में विसर्जित किया जाए। उनकी भतीजी उनकी अस्थियाँ लेकर आई और हमने उन्हें शहर की झील में विसर्जित कर दिया। जेनरट की स्मृति को जीवित रखने के लिए, मैंने उस बड़ी इमारत का नाम उनके नाम पर रखा है जहाँ मुख्य आयुक्त, मुख्य अभियंता और वास्तुकार का कार्यालय है। मैंने सेक्टर 5 के उस घर पर एक उत्कीर्ण पट्टिका लगाई है जहाँ वे रहते थे, जिस पर लिखा है, 'जेनरट यहाँ 1952-1964 तक रहे'। जेनरट ने बाँस की कुर्सियाँ बनाई थीं जो बेहद आरामदायक थीं और कढ़ाई से सुंदर दीपक बनाए थे। ये सभी वस्तुएँ उस संग्रहालय में रखी हैं। मैंने संग्रहालय के बगल वाले कमरे में फूलों के पौधों के चित्र लगाए हैं, ये चित्र चंडीगढ़ की भूदृश्य योजना को दर्शाते हैं। 1966 में, मैंने दिल्ली छोड़ दी और खानपुर गार्डन कॉलोनी में अपने घर आ गया।

(पृष्ठ 381)

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सिर से पहाड़ का बोझ उतर गया हो। मुझे साइटिका का दर्द लगातार महसूस हो रहा था। डॉक्टरों ने सलाह दी कि यह दर्द दवाइयों से ठीक नहीं होगा। इसका एकमात्र उपाय तख्तपोश पर सोना और रीढ़ की हड्डी को मजबूत करने वाले व्यायाम करना था। डॉक्टरों ने मुझे आगे की ओर न झुकने और हमेशा सीधा बैठने की हिदायत भी दी। कुछ समय बाद, भारत सरकार ने धर्मवीर को पंजाब का राज्यपाल नियुक्त किया और मुझे राजधानी परियोजना का वित्त आयुक्त बनाया। पंजाब सरकार के अधीन दो-तीन महीने काम करने के बाद, मैंने पाया कि वहाँ कोई भी काम तेज़ी से नहीं हो सकता था। अधिकांश नियम और कानून इस तरह से बनाए गए थे कि सरकार उन्हीं नियमों से बंधी रहती थी।

सितंबर 1966 में चंडीगढ़ की नई सरकार का गठन हुआ; इस प्रशासन को केंद्र शासित प्रदेश कहा जाता है। भारत सरकार ने मुझे इसका मुख्य आयुक्त नियुक्त किया। अब मुझे नई सरकार का ढांचा तैयार करना था। शुरू में मुझे लगा कि शहर के

लिए किसी जटिल ढांचे की आवश्यकता नहीं है, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि पंजाब और हरियाणा सरकारों की तरह चंडीगढ़ में भी उतने ही विभाग स्थापित करना महत्वपूर्ण है। भारत सरकार ने इस नए काम के लिए मुझे 3500 रुपये का वेतन देने का फैसला किया। इससे पहले मुझे भारत सरकार में काम करने के लिए 4000 रुपये मिलते थे। मैंने सोचा कि इस शहर का काम इतना दिलचस्प है और यहां इतने सारे काम किए जा सकते हैं कि वेतन के बारे में सोचना ही गलत है। इसलिए, मैंने दिए गए वेतन को स्वीकार कर लिया। दूसरी बात, मुझे दखलअंदाजी पसंद नहीं है। अब सवाल यह था कि मैं कहां रहूंगा। मैंने सरकार को साफ-साफ बता दिया कि मैं खरार तहसील स्थित अपने फार्महाउस में रहूंगा। उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया। मैंने अपना कार्यालय एस्टेट कार्यालय भवन में स्थापित किया। मैंने देखा कि पूरी इमारत उपेक्षित अवस्था में थी, मानो कोई पशुशाला हो। मैंने सबसे पहले इमारत की सफाई करवाने, सभी अतिरिक्त फाइलों को व्यवस्थित करने और कमरों में जगह बनाने का आदेश दिया। फिर मैंने कोने में दो कमरों को मिलाकर उसे अपना कार्यालय बना लिया। मैंने दो अधिकारियों को अपना सहायक नियुक्त किया। मैंने दलजीत सिंह को वित्त सचिव और दामोदर दास को गृह सचिव नियुक्त किया। ये दोनों अधिकारी अत्यंत मेहनती, निष्पक्ष और बुद्धिमान थे। फिर मैंने देखा कि मुख्य अभियंता के काम में बहुत सारी समस्याएं थीं, जो पूरे शहर की स्थापना के लिए जिम्मेदार थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 382)

मैंने मुख्य अभियंता और मुख्य वास्तुकार दोनों को सचिव का अधिकार दिया। मुख्य अभियंता कुलबीर सिंह एक मेहनती, बुद्धिमान और ईमानदार अधिकारी थे। उन्होंने इस अधिकार और स्वतंत्रता का भरपूर उपयोग करते हुए कार्य की गति और दक्षता में काफी वृद्धि की। सबसे पहले, मैंने कला संग्रहालय पर ध्यान केंद्रित किया। यह योजना कई वर्षों से लागू नहीं हुई थी। संग्रहालय के सामने एक बड़ा गड्ढा था, जो कभी गांव का गड्ढा हुआ करता था। इसे भरने के लिए, मैंने स्वास्थ्य अधिकारी को पूरे शहर के कचरे से इसे भरने का आदेश दिया। यह गड्ढा कचरे से भर गया। फिर, इसे ढकने के लिए मिट्टी डाली गई, जिससे हजारों रुपये की बचत हुई। जब संग्रहालय

भवन तैयार हो गया, तो मैंने दिल्ली से रत्ना फैबरी को इसकी मूर्तियों और चित्रों की प्रस्तुति का डिज़ाइन तैयार करने के लिए बुलाया। उन्होंने उन्हें बड़ी कुशलता से स्थापित किया। इस संग्रहालय में गांधार मूर्तियों और कांगड़ा चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह है; भारत और दुनिया के कोने-कोने से लोग यहां आते हैं।

मैं जीवन के विकास को दर्शाने वाला एक संग्रहालय स्थापित करना चाहता था। इसमें दिखाया जाएगा कि पौधे कैसे पैदा हुए, किन-किन चरणों से गुज़रते हुए आज के वनस्पतियों में परिवर्तित हुए, कैसे वे फसल और फलदार वृक्ष बने, कैसे उनका विकास हुआ। इसी प्रकार, मनुष्य आज के विकास के चरण तक कैसे पहुँचा। जन्म लेने वाले जीव मछली, मेंढक और छिपकली के चरणों को पार करते हुए स्तनधारियों के चरण में प्रवेश करते हैं और फिर होमो सेपियंस प्रजाति में विकसित होते हैं। मैंने स्वयं यह योजना भारत सरकार के समक्ष रखी और शिक्षा एवं योजना आयोग ने इसे एक ही दिन में मंज़ूरी दे दी। यहाँ मैं यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि ऐसी योजना पहले कभी इतनी तेज़ी से पारित नहीं हुई थी। इस भवन का डिज़ाइन वास्तुकार शिव दत्त शर्मा ने तैयार किया था और कलाकार जसवंत सिंह और किरपाल सिंह ने इसके लिए विशाल चित्र बनाए थे। प्रतिदिन हज़ारों लोग इस संग्रहालय में आते हैं और जीवन की उत्पत्ति और विकास के बारे में सीखते हैं।

मुख्य आयुक्त भवनों से संबंधित अपीलों की सुनवाई के लिए भी उत्तरदायी हैं। कई मामले ऐसे होते हैं जिनमें व्यक्ति भूखंड खरीद तो लेता है लेकिन उस पर कोई निर्माण कार्य नहीं करता। ऐसे लोगों को भूखंड ज़ब्ती के नोटिस मिलते हैं। मैं उनमें से कई को मोहलत देता हूँ और उन्हें एक महीने के भीतर अपने घर का नक्शा प्रस्तुत करने और दो महीने के भीतर निर्माण कार्य शुरू करने की अनुमति देता हूँ।

(पृष्ठ 383)

मैंने किसी की भी जमीन नहीं छीनी। इस तरह कई मकान बनने शुरू हो गए।

मैंने सबसे पहले शहर की झुग्गी-झोपड़ियों की गंदगी साफ करवाई। ये झुग्गी-झोपड़ियाँ पूरे शहर में फैल गई थीं और परिणामस्वरूप शहर गंदा हो गया था। सेक्टर 22 की शास्त्री मार्केट को हटवाना बेहद मुश्किल था। उन दुकानदारों को उनकी दुकानों के लिए वैकल्पिक स्थान दिए गए, और इस तरह सेक्टर 22 को साफ किया गया।

इस स्वच्छता अभियान के बाद, मैंने एक गुलाब उद्यान की योजना बनाई। मैंने दो साल के भीतर इस उद्यान को विकसित करवा लिया। मुझे नहीं पता कि मेरे चंडीगढ़ छोड़ने के बाद इसका नाम ज़ाकिर गुलाब उद्यान किसने रखा। अगर इस उद्यान का नाम गुलाबों के नाम पर रखा गया था, तो इसके साथ किसी व्यक्ति का नाम जोड़ना अनावश्यक था। लेकिन इस देश में चापलूसी का रिवाज बहुत प्रचलित है। लोग सत्ताधारी को खुश रखने के लिए वैध और अवैध दोनों तरह के प्रयास करते हैं। इस उद्यान का नाम 'गुलाब उद्यान' ही रहना चाहिए। मैं इस उद्यान से जुड़ी एक और समस्या साझा करना चाहता हूँ। हमने सोचा था कि इस उद्यान के भीतरी द्वार पर गुलाबों पर एक कविता उत्कीर्ण की जाए। अंततः हमने भाई वीर सिंह द्वारा गुलाबों पर लिखी गई एक कविता को चुना, जो इस प्रकार है:

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

डाली नालों तोड़ ना साणू, मत तोड़ो हमें शाख से,
Assan hatt mehek di laayi. We have set up a perfume shop.
लाख गाहक जे सुंघे आके, लाखों ग्राहक आते हैं हमारी खुशबू,
खाली इक्क ना जाई. हमारी खुशबू के बिना कोई नहीं जाता.
Tu je ikk tod ke lai gyon, If you pluck one and take it,
आपको इसका स्वाद केवल एक बार ही मिलेगा।
ओह, वी पलक झलक दा मेला, यह पलक झपकते ही गायब हो जाएगा।
रूप महक नस जाई। सुगंध उड़ जाएगी।

जब यह कविता गुरुमुखी लिपि में वहाँ उत्कीर्ण की गई, तो शहर के कुछ लोग मुझसे मिलने आए। उन्होंने कहा कि यहाँ एक हिंदी कविता भी उत्कीर्ण की जानी चाहिए। मैंने उनसे एक उपयुक्त हिंदी कविता खोजने को कहा जिसे मैं देवनागरी लिपि में द्वार पर उत्कीर्ण करवा सकूँ। मैंने उन्हें एक महीने का समय दिया, लेकिन उनमें से कोई भी मुझे गुलाब पर हिंदी कविता नहीं दे सका।
शहर के पर्यावरण की रक्षा के लिए मैंने एक और बड़ा फैसला यह लिया कि औद्योगिक क्षेत्र में कोयले का उपयोग करने वाले कारखानों को स्थापित करने की

अनुमति नहीं दी जाएगी, ताकि कोयले से निकलने वाला धुआं हवा को प्रदूषित न करे।

(पृष्ठ 384)
चंडीगढ़ शहर की स्थापना कई गांवों को अपने अधिकार में लेकर की गई थी। बिजवाड़ा गांव के कई घर अभी भी बचे हुए थे, जिनमें लोहार अपनी छोटी मशीनों से काम करते थे। वे सभी मेहनती लोग थे और अगर उन्हें मुआवजा दिया जाता तो उनके घर भी तोड़े जा सकते थे। मैंने उन सभी को औद्योगिक भूखंड और कारखाने स्थापित करने के लिए ऋण दिए। इस तरह बिजवाड़ा के सभी लोहार अच्छी तरह बस गए और उनके पुराने घर तोड़ दिए गए। मेरा मानना है कि जब ऐसी कोई योजना लागू करनी हो, तो उसे बल प्रयोग से नहीं बल्कि सहानुभूति से लागू किया जाना चाहिए।
फिर मैंने शहर की आबादी पर गौर किया और पाया कि केवल अमीर या काले धन वाले लोग ही भूखंड खरीद सकते थे। प्रतिभाशाली लोग, चाहे वे कलाकार हों, लेखक हों, वैज्ञानिक हों या सरकारी अधिकारी हों, भूखंड खरीदने की आर्थिक क्षमता नहीं रखते थे। सबसे पहले, मैंने तीन अकादमियां बनाईं: साहित्य, संगीत-नाट्य और ललित कला। मैंने साहित्य अकादमी में उन सभी लोगों को सदस्य बनाया जिन्होंने कोई पुस्तक लिखी थी। मैंने संगीत-नाट्य अकादमी में नर्तकों को शामिल किया। मैंने ललित कला अकादमी में सभी प्रख्यात कलाकारों को सदस्य बनाया। मैंने इन सभी सदस्यों को निश्चित मूल्य पर सस्ते भूखंड दिए। इसी प्रकार, मैंने पीजीआई के डॉक्टरों, परियोजनाओं के इंजीनियरों और परियोजनाओं में सहयोग देने वाले वास्तुकारों को भी भूखंड दिए। इनके अलावा, मैंने सोचा कि पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान देश की रक्षा करने वाले सेना अधिकारियों को भी यहां बसाया जाना चाहिए। मैंने जनरल हरबख्श सिंह की मदद से एक योजना विकसित की और सेना अधिकारियों को तीन हजार से अधिक भूखंड दिए गए।
मैंने काम करने का एक ऐसा तरीका अपनाया था जिसमें कोई भी मुझसे दोपहर 2 बजे से 4 बजे के बीच मिल सकता था। इससे लोगों को अपनी परेशानियाँ मुझसे साझा करने का मौका मिला। इस नीति के माध्यम से मुझे एक बात पता चली कि मकान योजनाओं को मंजूरी देने वाले विभाग का काम बहुत ही लापरवाही से किया जा रहा था। क्लर्क योजनाओं को महीनों तक रोक कर रखते थे और उन्हें पास करने

के लिए रिश्वत मांगते थे। मुझे इसका निम्नलिखित समाधान मिला: संपदा विभाग...

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उन्हें उन योजनाओं को प्रस्तुत करना होगा जिन्हें 15 दिनों में पारित नहीं किया गया था और यह बताना होगा कि उन्हें अभी तक क्यों अनुमोदित नहीं किया गया है।

(पृष्ठ 385)
इस तरह इस विभाग में भ्रष्टाचार समाप्त हुआ और आवेदकों के मकानों के प्लान को कुशलतापूर्वक मंजूरी मिलने लगी।
भ्रष्टाचार की संभावना वाला दूसरा क्षेत्र औद्योगिक भूखंडों का आवंटन था। मैंने एक तारीख तय की और सभी औद्योगिक भूखंडों के आवेदन समय सीमा से पहले जमा करने को कहा। आवंटन प्रक्रिया में बेरोजगार इंजीनियर स्नातकों और कारीगरों को प्राथमिकता दी गई। क्लर्कों को हस्तक्षेप करने देने के बजाय, मैंने सभी आवेदकों के साथ एक बैठक बुलाई ताकि उनसे सीधे बात कर सकूं और भूखंड किसे मिलेगा, इसका फैसला वहीं सुना दिया।
इसके बाद मैंने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करना शुरू किया। मैं जिम्मेदार अधिकारियों के साथ हर क्षेत्र का निरीक्षण करता और लोगों की समस्याओं का समाधान करता। इस तरह मैंने शहर के सभी दुकानदारों के साथ अच्छे संबंध विकसित किए।
शिक्षा संबंधी मुद्दों के लिए, मैंने एक अलग समिति का गठन किया जिसमें सभी कॉलेजों के प्रधानाचार्य सदस्य थे। सरकारी बालिका महाविद्यालय की प्रधानाचार्य कौशल्या आत्मा राम, जो अपने महाविद्यालय का कुशलतापूर्वक संचालन कर रही थीं, ने इस समिति में उपयोगी सलाह दी। इस प्रकार, पीजीआई के निदेशक संतोख सिंह और उनके सहयोगी डॉ. चुतानी ने भी इसमें गहरी रुचि दिखाई। पीजीआई में इलाज के लिए आने वाले बीमार मरीजों के परिजनों के लिए कोई आवास व्यवस्था नहीं थी। मैंने निर्णय लिया कि वहाँ एक सराय बनाई जाए। इसके अलावा, पीजीआई से सटी हुई 60 एकड़ भूमि थी, जो मैंने अस्पताल को दे दी ताकि मरीजों की सेवा में समर्पित यह संस्था निरंतर प्रगति और विकास करती रहे।
राव बीरेंद्र सिंह हरियाणा के मुख्यमंत्री थे और मेरे उनसे अच्छे संबंध थे। उनकी सरकार

चुनाव हार गई और चौधरी बंसीलाल हरियाणा के नए मुख्यमंत्री बने। उन्होंने भारत सरकार से शिकायत की कि मुख्य आयुक्त उनसे मिलने नहीं आए। भारत सरकार के सचिव ने मुझे बंसीलाल से मिलने के लिए कहा। जब मैं उनसे मिलने गया, तो उन्होंने औपचारिक रूप से मुझे चाय पिलाई। उनसे मिलने के बाद मुझे लगा कि वे बहुत रूखे स्वभाव के व्यक्ति हैं और उनसे दोस्ती करना मुश्किल होगा। बंसीलाल ने भारत सरकार से शिकायत की कि हरियाणा के लोगों को औद्योगिक भूखंड नहीं मिल रहे हैं। मैंने बंसीलाल से औद्योगिक भूखंड खरीदने के इच्छुक हरियाणवासियों की सूची भेजने को कहा। कोई सूची नहीं आई। इससे साबित हो गया कि उनका आरोप कितना निराधार और खोखला था।

(पृष्ठ 386)
उन दिनों लक्ष्मण सिंह गिल पंजाब के मुख्यमंत्री बने। वे मोहाली के विकास की योजना लेकर मेरे पास आए। मैंने उन्हें चंडीगढ़ के नक्शे को न बिगाड़ने की सलाह दी। लेकिन उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि मोहाली में भी चंडीगढ़ की तरह सेक्टर होंगे। नगर योजनाकार एन.एस. लांबा ने औद्योगिक भूखंडों की एक योजना विकसित की, जिसके तहत कारखाने चंडीगढ़-खरार सड़क के उत्तर में स्थित थे। ये कारखाने, और विशेष रूप से स्टार्च कारखाना, पश्चिम से आने वाली हवा के साथ चंडीगढ़ की ओर भारी मात्रा में धुआं छोड़ते हैं।
उन दिनों मेरी मुलाकात नेक चंद सैनी नाम के एक व्यक्ति के काम से हुई। वह सड़क निरीक्षक थे। उन्होंने उच्च न्यायालय के पूर्व की ओर ड्रमों की एक सीमा बनाई थी और उस सीमा में उन्होंने बड़ी कुशलता से विभिन्न प्रकार के पत्थर लगाए थे जो उन्हें खानों से मिले थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। मैंने देखा कि वह व्यक्ति बहुत समर्पित था। मैंने कैपिटल प्रोजेक्ट के माध्यम से उसे आर्थिक सहायता दी और रॉक गार्डन स्थापित करने में उसकी मदद की। यह रॉक गार्डन आज काफी प्रसिद्ध है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 55

एक बाग में रहना

(पृष्ठ 387)

भारतीय सेना के एक कैप्टन ने सेवानिवृत्ति के बाद चंडीगढ़ में एक भूखंड खरीदा। उन्होंने वहां घर बनवाया ताकि वे अपना शेष जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत कर सकें। घर के निर्माण के दौरान वे निर्माण सामग्री खरीदने और श्रमिकों की देखरेख में व्यस्त रहे। घर बनकर तैयार होने और वहां रहने के बाद उनकी जीवनशैली पूरी तरह बदल गई। पंजाब सरकार के अधिकारियों और क्लर्कों को सचिवालय जाते और दुकानदारों को अपनी दुकानों पर लौटते देखकर उन्हें आलस महसूस होता। कुछ और करने को न होने पर वे 'द ट्रिब्यून' अखबार का हर शब्द पढ़ने लगे। फिर वे फल-सब्जियां खरीदने बाजार जाते।

वह शाम को पार्कों में टहलने जाता था। निष्क्रियता उसे मलेशिया में जापानियों के साथ हुए उन युद्धों की याद दिलाती थी जिनमें उसने भाग लिया था, वह शिविरों में बंद युद्धबंदियों के जीवन को याद करता था। फिर वह लखनऊ और अंबाला की छावनियों में अपनी सेवा के बारे में सोचता था। अब कोई उसे सलाम नहीं करता था; सलाम करना सेना के अधिकारियों को शराब की तरह मदहोश कर देता है। कुछ ही महीनों में वह इस शांत जीवन से ऊब गया। उसे अपने पैतृक गांव की याद आने लगी। इसलिए उसने अपने गांव जाने का फैसला किया और महसूस किया कि वह वहां बेहतर काम कर सकता है। गांव वालों ने उसे सरपंच चुना; वह अपने गांव के लोगों के लिए सड़कें और नालियां बनवाने की परियोजनाओं में उत्साहपूर्वक जुट गया।

(पृष्ठ 388)

उन्हें फसलों की खेती की देखरेख करना अच्छा लगता था। खेतों की हरियाली उन्हें चंडीगढ़ के नीरस जीवन से दूर, अपने गाँव की ओर खींच लाती थी।

जब मैंने फ्रांसीसी उपन्यासकार वोल्टेयर का उपन्यास 'कैंडाइड' पढ़ा, तो मुझे लगा कि उनका अनुभव इस पंजाबी कप्तान के अनुभव से मिलता-जुलता है। कैंडाइड, एक

सीधा-सादा युवक, वेस्टफेलिया के एक महल में बैरन के साथ रहता था। उसे बैरन की बेटी कुनेगोंडे से प्यार हो गया। एक शाम, जब कैंडाइड और कुनेगोंडे खाने की मेज से उठे, तो वे एक पर्दे के पीछे चले गए। कुनेगोंडे का रुमाल ज़मीन पर गिर गया, जिसे कैंडाइड ने उठा लिया। लड़की ने मासूमियत से उसका हाथ थाम लिया। कैंडाइड ने प्यार से उसके हाथ को चूमा। उनके होंठ मिले, आँखें चमक उठीं, घुटने काँपने लगे और हाथ एक-दूसरे पर चलने लगे। बैरन पर्दे के पीछे हो रही हर बात देख सकता था। उसने कैंडाइड को लात मारी और महल से बाहर निकाल दिया।
इस घटना के कुछ दिनों बाद बुल्गारियाई लोगों ने इस किले पर हमला कर दिया। पूर्वी यूरोप में बुल्गारियाई लोगों की वैसी ही खौफनाक प्रतिष्ठा है जैसी भारत में पठानों की है। बुल्गारियाई सैनिकों ने कुनेगोंडे का बलात्कार किया। बाद में उनके कप्तान ने उसे बचाया। जब वह कप्तान के साथ चली गई और उनका जहाज समुद्र के बीच में था, तो काले समुद्री लुटेरों ने जहाज पर हमला कर उसे अपने कब्जे में ले लिया। अब, कुनेगोंडे को फिर से पकड़ लिया गया, इस बार काले समुद्री लुटेरों के कप्तान ने। बुल्गारियाई लोगों के हमले के दौरान कैंडिड को भी पकड़ लिया गया था। फिर उसे बुल्गारियाई सैनिकों की कतारों के बीच से ले जाया गया ताकि वे उसे बारी-बारी से कोड़े मार सकें। बाद में वह भागकर स्पेन चला गया जहाँ उसे बेंत से पीटा गया। अंततः, कैंडिड, कुनेगोंडे और वेस्टफेलिया के महल से उनके दो मित्र, दार्शनिक पैंग्लॉस और पुजारी मार्टिन, कॉन्स्टेंटिनोपल पहुँचे। उन्होंने कुछ ज़मीन खरीदी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। एक दिन, वे अपने तुर्क पड़ोसी से मिलने गए और बूढ़े तुर्क को संतरे के पेड़ों की छाया में बैठे हुए पाया। उन्होंने उनका स्वागत किया और उन्हें संतरे का मुरब्बा और पिस्ता भेंट किए। इलाके में यह अफवाह फैली हुई थी कि दो मंत्रियों और एक मुफ्ती का गला घोंटकर हत्या कर दी गई है और उनके कई साथियों को सूली पर चढ़ा दिया गया है। उन्होंने बूढ़े तुर्क से मारे गए मुफ्ती का नाम पूछा।

(पृष्ठ 389)
उस बूढ़े ने कहा, “मुझे कुछ नहीं पता। मैं किसी मंत्री या मुफ्ती का नाम नहीं जानता।

जिस घटना की आप बात कर रहे हैं, उसके बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। मेरा मानना है कि राज्य के प्रशासन में दखल देने वालों को बेरहमी से मार दिया जाता है, और उनके साथ यही किया जाना चाहिए। मैं कांस्टेंटिनोपल में होने वाली घटनाओं के बारे में कभी कुछ नहीं पूछता। मैं अपने बाग की उपज को बाजार में बेचकर संतुष्ट हूं। मेरे पास केवल 20 एकड़ जमीन है। मैं अपने बच्चों की मदद से उस पर खेती करता हूं। यह जीवनशैली मुझे तीन बुराइयों - ऊब, दुराचार और गरीबी - से दूर रखती है।"
कैंडाइड और उसके साथियों ने महसूस किया कि उस बूढ़े तुर्क की जीवनशैली उन छह सम्राटों की जीवनशैली से बेहतर थी जिनके साथ उन्हें भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कैंडाइड और मार्टिन ने निराई का काम संभाला, पैंग्लॉस ने सिंचाई में मदद करने का फैसला किया और कुनेगोंडे ने उन सभी के लिए खाना पकाने का जिम्मा लिया।
हर सरकारी कर्मचारी पचास साल की उम्र पार करते ही अपने सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन के बारे में सोचने लगता है। कई लोगों को लगता है कि सेवानिवृत्ति का मतलब कुछ न करना है।
जब वे अपनी रोज़मर्रा की नौकरी खो देते हैं, तो उनका जीवन दिशाहीन हो जाता है। अपनी शक्तियों को खोने का यह दर्द सहना भी उनके लिए मुश्किल होता है। उनकी हालत उस साइकिल सवार जैसी होती है जिसे अचानक पता चलता है कि उसकी साइकिल के दोनों टायर पंचर हो गए हैं। वे निजी समस्याओं के बारे में सोचते रहते हैं और उनका जीवन नरक बन जाता है। कुछ लोग सेवानिवृत्ति के बाद बागों में रहने और पेड़ लगाने की योजना बनाते हैं। एक बाग को फलने-फूलने में लगभग दस साल लगते हैं, और इस तरह उनकी अगली पीढ़ी उनके श्रम का फल भोगती है।
सन् 1964 में जब मैं भारत के योजना आयोग में सलाहकार के रूप में कार्यरत था, तब मैंने सोचा कि सेवानिवृत्ति के बाद मुझे कहाँ रहना है, यह तय करना होगा। मैंने दिल्ली की हौज खास कॉलोनी में एक प्लॉट खरीदा था। सन् 1947 में मैं कई बार घोड़े पर सवार होकर इस इलाके से गुजरा था। तुगलक सम्राटों के भव्य मकबरों वाला यह स्थान मुझे बसने के लिए आदर्श लगा। हालांकि, जल्द ही यहाँ कई घर बन गए, जिससे इस इलाके की शांति भंग हो गई। पेंशनभोगी अपने घरों के बरामदों में बैठकर अखबार ध्यान से पढ़ते थे। यह एक निराशाजनक दृश्य था।

उनकी बातचीत आम तौर पर अपने भूतल के कमरों के लिए अमीर विदेशी किराएदार ढूंढने के इर्द-गिर्द घूमती थी ताकि वे आराम से रह सकें। यह देखकर मैंने फैसला किया कि न तो हौज खास और न ही कोई अन्य कॉलोनी मेरे रहने के लिए उपयुक्त थी।

मैं 1954 से खानपुर गांव की गार्डन कॉलोनी में अपनी ज़मीन पर फलों का बाग लगा रहा था। यह चंडीगढ़ से आठ मील दूर था। यह एक खूबसूरत जगह है, जिसके उत्तर में शिवालिक पहाड़ियाँ स्थित हैं। मैंने खेतों में सिंचाई की समस्या को हल करने के लिए यहाँ एक ट्यूबवेल लगवाया था। इसका पानी मीठा तो था, लेकिन कपड़े या बाल धोने के लिए अच्छा नहीं था। इसमें धातु की मात्रा अधिक थी। मेरे एक दोस्त, जो रसायनज्ञ थे, ने मुझे इस पानी को शुद्ध करने की एक विधि बताई।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। इस तरह मैं यहाँ रहने से संबंधित अपनी आखिरी समस्या का समाधान कर रहा था। दूसरी ओर, रुपये के गिरते मूल्य के कारण मेरी बचत कम होती जा रही थी। मैंने अपने भविष्य निधि से 50,000 रुपये निकालने का फैसला किया और उससे बगीचे में घर बनाना शुरू कर दिया।

घर का मुख्य डिज़ाइन इस तरह बनाया गया था कि अंदर से बाग-बगीचे और पहाड़ियाँ दिखाई दें। हमारे वास्तुकार श्री बी.पी. माथुर ने घर का डिज़ाइन बनाते समय दोनों तरफ बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियाँ लगवाईं। सभी कमरों में किताबों के लिए पर्याप्त जगह थी और दीवारों में बड़ी-बड़ी अलमारियाँ लगाई गई थीं। मेरे पास कई अनमोल किताबें थीं जिन्हें मैं बारिश और दीमक से बचाना चाहता था। श्रीमती नोरा रिचर्ड के इस अजीब विचार से मैं सहमत नहीं था कि कच्चे मकानों में रहना चाहिए। कच्चे मकानों की दीवारों में एक-दो साल में दरारें पड़ने लगती हैं और लकड़ी की छतों में छिपकलियाँ और चूहे पनपने लगते हैं। नतीजतन, छत के लकड़ी के ढांचे को हर तीन साल में बदलना पड़ता है। वास्तव में, इस तरह रहना एक महँगी विलासिता है। कच्चे मकानों में लगे लकड़ी के दरवाजों और खिड़कियों में दीमक लग जाती है। इस स्थिति में किताबें भी सुरक्षित नहीं रहतीं। यही कारण है कि गर्म देशों में ज्ञान का उतना विकास नहीं हो पाया जितना ठंडे देशों में हुआ। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए,

मैंने चौखट वाला पक्का मकान बनवाने का फैसला किया।
शुरू में मुझे उम्मीद थी कि बाग से मुझे अच्छा आर्थिक लाभ होगा। इसलिए मैंने उसमें अमरूद, आम और संतरे लगाए। लेकिन बाग के सभी खर्चों को जोड़ें तो पता चलता है कि बाग से कोई मुनाफा नहीं होता: डीजल, मजदूरी, खाद, बिजली और मशीनों की टूट-फूट। मई और जून के तेज धूल भरे तूफान आमों के विकास में बाधा डालते हैं।

(पृष्ठ 391)
जब बाग में आम की पहली फसल खिली, तो धूल भरी आंधी ने उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। इस आम के बागान को धूल भरी आंधी से बचाने के लिए, मैंने इसके चारों ओर यूकेलिप्टस के पेड़ों की एक दीवार लगाने का फैसला किया। ये पेड़ छह साल के भीतर एक घनी हरी दीवार में तब्दील हो गए और धूल भरी आंधी की हवाओं को आम के पेड़ों से दूर मोड़ने लगे। जब यूकेलिप्टस के पेड़ों की हरी चोटियाँ हवा में लहराती हैं, तो वे बहुत सुंदर लगती हैं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यूकेलिप्टस के पेड़ इतनी जल्दी इतने ऊंचे हो जाएंगे और पहाड़ियों का हमारा नज़ारा भी रोक देंगे।
मैंने अपने बगीचे में कुछ फूलदार पेड़ लगाने का भी फैसला किया ताकि रंग-बिरंगे वातावरण की मेरी इच्छा पूरी हो सके। मेरे मित्र बी.पी. पॉल ने मुझे बाहिनिया × ब्लेकियाना ऑर्किड का एक पौधा दिया, जो वे हांगकांग से लाए थे। ऑर्किड की कोई अन्य प्रजाति इस किस्म का मुकाबला नहीं कर सकती। अन्य प्रजातियों के विपरीत, यह किस्म अपने पत्ते नहीं गिराती और पूरे साल हरी-भरी रहती है। नवंबर में इसमें गहरे लाल रंग के फूल खिलते हैं। यह साल भर फूलों से ढका रहता है। इसके फूल पक्षियों और मधुमक्खियों को आकर्षित करते हैं। मधुमक्खियां अक्सर इस पेड़ पर छत्ते बनाती हैं, इसलिए यह न केवल शहद का स्रोत है, बल्कि आगंतुकों के लिए खतरा भी है।
मैंने बाग के दक्षिणी भाग में जावा कैसिया के पेड़ लगाए थे। उन पर पहली बार मई 1971 में फूल खिले। ये गुलाबी फूल मेरी आँखों को बहुत भाए। फूलों के अलावा, इस पौधे की कटी हुई टहनियाँ भी अच्छी जलाऊ लकड़ी का काम करती हैं। मैंने नींबू, बेर और खुबानी भी लगाए थे। खुबानी के पौधे नम वातावरण में नहीं उग सकते, इसलिए वे सूख गए, लेकिन बेर बाग में खूब फले-फूले। मुझे चमेली का पौधा, जिसे डेला भी कहते हैं, बहुत पसंद है। यह सर्दियों में सुंदर सफेद फूल देता है। चांदनी रातों

में यह चमेली बेहद खूबसूरत लगती है। मेरे बाग के दक्षिणी भाग में लगाया गया मैरी पामर बोगनविलिया मुझे रंगों से भर देता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। यह पौधा कई महीनों तक खिलता है। इसके फूल बहुत सुंदर होते हैं; खासकर अप्रैल और अक्टूबर में। इन्हें पानी या खाद जैसी किसी भी देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है। इनकी छंटाई आसानी से की जा सकती है और सितंबर से फरवरी के महीनों में ये हमें जलाऊ लकड़ी प्रदान करते हैं।
मैं 29 जून 1966 को बाग में बने अपने घर में रहने लगा। इससे पहले मैंने कभी इतना आराम महसूस नहीं किया था। भारतीय कृषि के कठिन समय में फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए लगातार बैठकें करने का मानसिक बोझ मुझसे दूर हो गया।

(पृष्ठ 392)
इतने वर्षों बाद मुझे तारों की सुंदरता दिखाई दी। शहरों में स्ट्रीटलाइटों के कारण तारे दिखाई नहीं देते। गांवों में अंधेरी रातों में कई तारे दिखाई देते हैं, नक्षत्रों का मार्ग ठंडी, सुखद रोशनी की तरह चमकता है। बाग में रहना प्रकृति के करीब रहने जैसा है। मैं सूर्योदय के समय उठता हूँ और सूर्यास्त देखने के लिए घर लौटता हूँ। जीवन में पहली बार मैंने ऋतुओं के परिवर्तन के साथ सूर्योदय की दिशा में होने वाले क्रमिक बदलाव को देखा। यह सर्दियों में दक्षिण की ओर और गर्मियों में उत्तर की ओर खिसक जाता है।
यदि कोई खेत में रहने का फैसला करता है, तो रात में खेत की रखवाली के लिए एक कुत्ता रखना जरूरी होता है। कुत्ता पिछले तीस हजार वर्षों से मनुष्य का साथी रहा है। धातु युग में, मनुष्य जानवरों का शिकार करके उन्हें खाते थे। आज, शहरों में कुत्तों की कुछ किस्में लोकप्रिय हैं, जिन्हें उनकी नस्ल के अनुसार नाम दिया गया है। हालांकि, गांवों में केवल मजबूत नस्ल ही जीवित रह सकती है क्योंकि उसे स्थानीय आवारा कुत्तों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। आज पंजाब में शुद्ध नस्ल के अल्सेशियन या मिश्रित नस्ल के अल्सेशियन आसानी से मिल जाते हैं। बाग के प्रबंधक, संपूर्ण सिंह, मेरे लिए 'पप्पू' नाम का एक मजबूत मिश्रित नस्ल का कुत्ता लाए। हमें उसकी सही नस्ल का पता नहीं था। पप्पू का ऊपरी शरीर काला था, उसकी आंखों के आसपास

पीले धब्बे थे, और उसके पैर और निचला शरीर भूरे रंग का था।
पप्पू कई तरह की चीजें खाता है। मानसून में वह मेंढक खाता है। हालाँकि उसे मेंढकों का स्वाद कुछ अलग ही पसंद है, लेकिन उसे घर की छिपकलियाँ खाने में भी कोई आपत्ति नहीं होती। प्रजनन का मौसम जून में होता है, जिससे घरों और संतरे के पेड़ों पर चिड़ियों की चहचाहट बढ़ जाती है। उन दिनों मैंने पप्पू को चिड़ियों को खाते हुए उछलते-कूदते देखा था।
पप्पू को अपनी ही प्रजाति से दुश्मनी थी। एक दिन, जब मैं आम के पेड़ से बीमार आम के फूल काट रहा था, कृषि विभाग के एक उप निदेशक मुझसे मिलने आए। उनकी बेटी, जो अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ी थी, उनके साथ थी। वे यह जानने आए थे कि क्या हमें मैक्सिकन गेहूं के संकर बीज मिले हैं या नहीं। संपूर्ण सिंह ने उन्हें बताया कि बीज ब्लॉक कमेटी के सदस्यों में बाँट दिए गए थे, और किसी और को एक भी बीज नहीं दिया गया था। मैंने उप निदेशक से आम की शाखाओं की छंटाई में मेरा साथ देने को कहा। इसी बीच, उनकी बेटी, जो अनजाने में अपने कुत्ते को साथ ले आई थी, उस छोटे से प्यारे कुत्ते को ज़मीन पर छोड़ गई।

(पृष्ठ 393)
यह कुत्ता अपनी पूंछ हिलाने लगा और खुशी से उछलने-कूदने लगा। पता नहीं पप्पू कहाँ से आया। उसने बिजली की तेज़ी से इस बेचारे कुत्ते पर झपट्टा मारा। उसने छोटे कुत्ते की गर्दन पकड़ ली और चूहे को ले जा रही बिल्ली की तरह भागने लगा। हमने पप्पू पर पत्थर फेंके, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। फिर हमने उसे लाठियों से मारा और छोटे कुत्ते को छुड़ाया। हम घायल कुत्ते को पशु चिकित्सालय ले गए, लेकिन दो घंटे के भीतर ही उसकी मौत हो गई। हम सब इस छोटे कुत्ते की मौत से बहुत दुखी थे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
पप्पू को बाग की सीमाओं का पूरा ज्ञान था। वह इस क्षेत्र पर राज करता था और किसी को भी पार नहीं जाने देता था। वह किसी भी जानवर को अपने पास नहीं आने देता था, लेकिन उसे अपनी ही प्रजाति से सबसे ज़्यादा नफ़रत थी। अगर कोई दूसरा

कुत्ता उसके राज्य में घुस आता, तो वह उसे भगाए बिना चैन से नहीं बैठता था। वह बड़े कुत्तों को भी बड़ी नफ़रत से काटता था, लेकिन छोटे कुत्तों को तो वह पूरी तरह से चीर-फाड़ देता था।
जब भी उसे तातिरी पक्षी की आवाज़ सुनाई देती, वह उसके पीछे दौड़ने लगता, पर उसे पकड़ नहीं पाता। मुझे भी घंटों तक तातिरी की आवाज़ सुनाई देती रहती थी।
पप्पू को जंगली बिल्लियों से बहुत दुश्मनी थी। ये बिल्लियाँ रात में बगीचे में मुर्गियाँ चुराने और चूहे खाने आती थीं।
पप्पू छोटे कुत्तों को कभी नहीं छोड़ता था। वह बड़े कुत्तों से भी नहीं डरता था। एक दिन, उसने हमारे पड़ोसियों के एक विशालकाय, अपने से दोगुने आकार के अल्सेशियन कुत्ते पर झपट्टा मारा। उसने उस कुत्ते को नीचे गिरा दिया। उसके बाद, वह अल्सेशियन कुत्ता पप्पू के रास्ते से दुम दबाकर भाग जाता था। इन सभी जीतों ने पप्पू को आवारा कुत्तों से निपटने का आत्मविश्वास दिया। संपूर्ण सिंह का घर हमारे घर से आधा मील दूर था और पप्पू हर दिन उनसे मिलने जाता था। रास्ते में उसे आवारा कुत्तों के कई झुंड मिलते थे। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कई वर्षों तक उसने संपूर्ण सिंह के परिवार और हमारे परिवार के बीच प्यार को जीवित रखा। वह हर शाम संपूर्ण सिंह के घर जाता था। उसने जाना तभी बंद किया जब संपूर्ण सिंह की ट्रैक्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई। एक बार, पाँच आवारा कुत्तों ने उसे घेर लिया। उसने बहुत बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन उन्होंने उसकी त्वचा का एक टुकड़ा काट लिया। पप्पू ने हमें उस पर दवा लगाने नहीं दी। वह अपने घाव को मक्खियों से बचाने के लिए गेहूं के भूसे से भरे कमरे के एक कोने में छिप जाता था।
घाव भर नहीं रहा था। हमने उसकी पीड़ा समाप्त करने के लिए उसे हमेशा के लिए सुला देने का फैसला किया। हमने एक पशु चिकित्सक को बुलाया और उससे उसे जहर का इंजेक्शन लगवाया।

(पृष्ठ 394)
डॉक्टर ने पप्पू के कंधे में इंजेक्शन लगाने की कोशिश की, लेकिन वह इंजेक्शन लेकर भाग गया। फिर हमने पप्पू को गोली मारने के लिए एक बंदूकधारी को बुलाया। वह दिन भर छिपा रहा और किसी ने उसे नहीं पकड़ा। जब बंदूकधारी इंतज़ार करते-करते थक गया, तो वह अपने घर लौट गया। अगले दिन हमने उसके दूध में एल्ड्रिन मिला

दिया। इससे भी पप्पू पर कोई असर नहीं हुआ। अब हमें यकीन हो गया कि किसी काले जादू की वजह से वह ज़िंदा है। हमने कुत्ते का नाम 'रसपुतिन' रखा और उसे दोबारा मारने की कोशिश नहीं की। एक महीने में उसके घाव भर गए; वह फिर से अपने रास्ते में आने वाले किसी भी कुत्ते से लड़ने के लिए तैयार था।

बाग-बगीचे के प्रबंधन से जुड़ी कई चिंताएँ होती हैं। मेरे लिए सबसे बड़ी समस्या सितंबर 1966 से दिसंबर 1966 के दौरान उल्लुओं की आवाज़ थी। उनकी आवाज़ इतनी भयानक होती है कि अगर आधी रात को भी सुनाई दे तो पूरी रात नींद नहीं आती। उल्लुओं को किसानों का दोस्त माना जाता है क्योंकि वे रात में चूहे खाते हैं। लेकिन मैं उल्लुओं की भयानक आवाज़ सुनने के बजाय चूहों से होने वाले नुकसान को सहने के लिए तैयार था। मैंने उन्हें भगाने के लिए छत पर एक पुतला बनवाया। मैंने एक मिट्टी के बर्तन को सफेद रंग से रंगा और उस पर लंबी मूंछों वाला एक इंसान का चेहरा बनाया। इसके नीचे एक पुरानी चादर लटका दी ताकि वह हवा में लहराए। यह तरकीब कुछ महीनों तक काम आई। लेकिन जल्द ही उल्लू समझ गया और उस पर बैठने लगा। मैंने अपने बेटे जतिंदर को इस जिद्दी उल्लू को खत्म करने के लिए कहा। एक सुबह उसने उस उल्लू पर गोली चलाई; वह घायल तो हुआ लेकिन गन्ने के खेत में गायब हो गया। अगली सुबह हमने उसे गाजर के खेत में देखा। उसके पंखों में गोलियों के छेद थे। वह उछल सकता था लेकिन उड़ नहीं सकता था। दो लड़कों ने उसका पीछा किया। उसने अपनी विशाल, डरावनी आँखें बड़ी कर लीं और उसके कान खड़े हो गए, और उसने उन पर हमला कर दिया। उनमें से एक ने उसे लोहे की जंजीर से मारा और वह मर गया। उन दिनों, एक

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। अंबाला से एक टैक्सिडर्मिस्ट मुझसे मिलने आया था। मैंने उसे यह मृत उल्लू दिया। उसने इसे भरकर चंडीगढ़ के एक कॉलेज के प्राणी विज्ञान विभाग को बेच दिया।

मैंने देखा कि मक्का पकने पर आवारा कुत्तों की संख्या बढ़ जाती थी। वे भुट्टे खाते और ज़ोर-ज़ोर से रोते थे। सितंबर का महीना भी वसंत ऋतु जैसा होता है। मैंने देखा कि उस समय कुत्तियाँ मद में होती थीं। खेतों में कुत्तों के झुंड घूमते रहते थे। कौवे मक्का खाते थे और तोते दिन भर अमरूद चुगते रहते थे।

(पृष्ठ 395)
शहरी लोग कभी नहीं समझ सकते कि अपने बच्चों और परिवारों के साथ रहने वाले बागों के ठेकेदारों को अपने फलों को बचाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है। वे सुबह भर 'होये, होये' की आवाजें करते हैं और शाम को पटाखे फोड़ते हैं। शहर के लोग तो दुकानों में फलों से सजी टोकरियाँ ही देखते हैं। भला उन्हें इस बात का क्या पता कि इस उपज को बाजार तक पहुँचाने में कितनी मेहनत लगती है?
अब तक मैंने बाग में रात के समय सुनाई देने वाली आवाज़ों का ज़िक्र किया है। अब मैं सुबह की आवाज़ों के बारे में बात करूँगा। पानीपत वूलन मिल्स का सायरन सुबह-सुबह बज उठता है। किसी न किसी त्योहार के लिए दिन-रात लाउडस्पीकर बजते रहते हैं। विज्ञान के इस भयानक तोहफे ने भारतीय गाँवों की शांति भंग कर दी है। किसी और देश में लाउडस्पीकरों का इस्तेमाल इतनी लापरवाही से नहीं होता। यह शर्मनाक हो गया है।
सन् 1965 की सुबहों में पशुओं के गले में बंधी घंटियों की मधुर ध्वनि सुनाई देती थी। अब, कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति द्वारा लाए गए परिवर्तनों के बाद, यह ध्वनि अब सुनाई नहीं देती। अब सितंबर से नवंबर और फिर जून के महीनों में रात भर ट्रॉलियों की कर्कश ध्वनि और ट्रैक्टरों की गूंज सुनाई देती है। मई और जून के महीनों में अनाज फटकने के लिए दिन-रात थ्रेशर मशीनों का उपयोग किया जाता है। हालांकि इन मशीनों ने श्रम को कम करके उत्पादन बढ़ाया है, लेकिन साथ ही साथ इन्होंने पर्यावरण में एक नए प्रकार का शोर भी पैदा कर दिया है।
बाग में रहने का एक आनंद पक्षी देखना भी है। अप्रैल के महीने में बैंगनी सनबर्ड ऑर्किड के फूलों से रस चूसती है। टेलीफोन के तार भारतीय कठफोड़वा, भारतीय नीलगाय और हरी गौरैया से गहनों की तरह सजे होते हैं। यह कठफोड़वा का प्रजनन काल है। कुछ कठफोड़वा तो बिल्कुल पागल हो जाते हैं। एक कठफोड़वा दस दिनों तक मेरी खिड़की के शीशे पर चोंच मारता रहा। मैं उसे भगाता, लेकिन वह फिर लौट आता। मुझे लगा कि इस समस्या से निकलने का एकमात्र उपाय उसे गोली मारना ही है, लेकिन सुबह-सुबह किसी पक्षी को गोली मारना बहुत अप्रिय होता है क्योंकि इससे पूरा दिन खराब हो जाता है।
मैंने कुछ छोटी-मोटी समस्याओं का वर्णन किया है जिनका सामना करना पड़ता है।

अब मैं आपको बाग में रहने के सुखों के बारे में बताऊंगा। ट्यूबवेल के पानी में नहाना सबसे बड़ा सुख है। मैंने ट्यूबवेल के चारों ओर एक दीवार बनवाई और उसमें लोहे का फाटक लगवाया।

(पृष्ठ 396)
मैंने अंदर नीली टाइलें लगवाईं और स्नानघर में खुरदरी टाइलें लगवाईं ताकि नहाते समय फिसलन न हो। छत का आधा हिस्सा लोहे की चादरों से बना था और आधा खुला छोड़ दिया गया था। खुले आसमान के नीचे और बहते पानी में नहाने का आनंद किसी और तरीके से नहीं मिल सकता। टब में नहाना गंदे पानी में नहाने जैसा है। लेकिन यहाँ, शरीर साफ हो जाता है, गंदा पानी खेतों में बह जाता है और फसलों के लिए खाद का काम करता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। ट्यूबवेल के पानी की एक और विशेषता इसका सही तापमान है। यह गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म होता है। जब भी मैं दिल्ली या विदेश जाता हूँ, मुझे ट्यूबवेल के पानी से स्नान करने की सबसे अधिक याद आती है। बाग में रहने का एक और आनंद ताजे संतरे तोड़कर उनका स्वाद लेना है। उनका स्वाद बिल्कुल अलग होता है। एक घंटा पहले तोड़ा गया संतरा उतना स्वादिष्ट नहीं होता। जुलाई में हमें खूब सारे आम मिलते हैं। ग्राफ्टेड आमों में से चौसा समर बहिश्त मेरी पसंदीदा किस्म है। इसका स्वाद स्वर्ग जैसा होता है। स्वाद में कोई और फल इसकी बराबरी नहीं कर सकता। दशहरी, बनारसी, लंगड़ा, रटौल और लखनऊ सफेदा कुछ अन्य अच्छी किस्में हैं। इनमें पतला रस टपकता है और ये बहुत स्वादिष्ट होते हैं। मैं टोकरी भर आम खा जाता हूँ। गर्मी से राहत पाने और सुकून व खुशी महसूस करने के लिए मैं एक गिलास ठंडा दूध पीता हूँ। मैं आम खाना ग्रामीण जीवन का सबसे बड़ा आनंद मानता हूँ।
मार्च में जब वसंत अपने चरम पर होता है, तब गुलाब पूरी तरह खिल जाते हैं। झाड़ियाँ सुगंधित सफेद विस्टेरिया से भरी होती हैं, लेकिन संतरे और माल्टा के फूलों की सुगंध अन्य सभी फूलों से कहीं अधिक मीठी होती है। मेरा बाग प्रकृति के प्रति मेरे प्रेम का प्रतीक है, यह जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। इसलिए, मैंने देश में

कृषि और बागवानी से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए कई प्रयोग किए। बाग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसने मुझे भारतीय कला और कृषि का अध्ययन करने के लिए एक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान किया। मैंने यहाँ चंद्रमा और तारों की सुंदरता का आनंद लिया है और पौधों की दुनिया के बदलते रंगों का भी लुत्फ़ उठाया है। इसने मुझे हमेशा व्यस्त रखा है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 56

एक सड़क का इतिहास

(पृष्ठ 397)

1947 में पंजाब का विभाजन हुआ; इस विभाजन से भारी तबाही हुई। पाकिस्तान से लाखों शरणार्थी आए। उनके पुनर्वास के लिए एक योजना बनाई गई और जालंधर के इस्लामिया कॉलेज की इमारत से भूमि आवंटन का कार्य संचालित किया गया। वहां 7000 से अधिक पटवारी और अन्य अधिकारी कार्यरत थे। पंजाब सरकार ने मुझे 1948 में पुनर्वास योजना का महानिदेशक नियुक्त किया। हमने इस योजना के अंतर्गत पंजाब की नई नींव रखी। उस समय पूरे पंजाब में एक भी ट्यूबवेल नहीं था और केवल कुछ ही लोगों के पास ट्रैक्टर थे। इससे तीन साल पहले मुझे अमेरिका जाने का अवसर मिला। मैं कनाडा के क्यूबेक शहर गया, जहां मैंने खाद्य एवं कृषि संगठन के दूसरे विश्व सम्मेलन में भाग लिया। यह एक फ्रेंच भाषी क्षेत्र है। ऐसा लगा जैसे हम फ्रांस के किसी प्रांत में आ गए हों। जब यह सम्मेलन समाप्त हुआ, तो मैंने और मेरे साथियों, सरदार हबीबुल्लाह, सरदार उज्ज्वल सिंह और सर विजय राघवाचारी ने सोचा कि जब हम इतनी दूर आ ही गए हैं, तो हमें टेनेसी घाटी प्राधिकरण की योजनाओं का अध्ययन करना चाहिए। हम क्यूबेक से वाशिंगटन आए और भारत के उच्चायुक्त सर गिरिजा शंकर बाजपेयी ने हमारे लिए टीवीए के दौरे की व्यवस्था की।

(पृष्ठ 398)
हम चारों नॉक्सविले में टीवीए के मुख्यालय पहुँचे। टेनेसी राज्य में श्वेत आबादी के अलावा अश्वेत आबादी भी काफी अधिक है। जिस होटल में हम ठहरे थे, वहाँ अश्वेत लड़कियाँ वेट्रेस का काम करती थीं। कुछ श्वेत लड़कियाँ भी वेट्रेस का काम करती थीं, अश्वेत लड़कियों के अलावा। शहर में श्वेत और अश्वेत लोगों के बीच काफी नफरत थी। शौचालय और बसें अश्वेतों और श्वेतों के लिए अलग-अलग चिह्नित थीं। हमने देखा कि हमारे साथी सर विजय राघवाचारी, जो एक मद्रासी ब्राह्मण थे, अश्वेत वेट्रेस की तुलना में श्वेत वेट्रेस को अधिक पसंद करते थे। उन दिनों गोअरिंग की मर्सिडीज बेंज कार नॉक्सविले शहर में आई थी। हजारों अमेरिकी उस कार को देखने आते थे। जब हमारा समूह उस कार को देखने गया, तो हमने देखा कि सभी श्वेत लोग सरदार उज्ज्वल सिंह को घूरने लगे, जिन्होंने पगड़ी पहनी हुई थी और अपनी दाढ़ी को फिक्सो से बड़े करीने से संवारा हुआ था। दूसरी ओर, सर विजय राघवाचारी की बनारसी पगड़ी भी श्वेतों का ध्यान आकर्षित कर रही थी। अमेरिकी लोग गोअरिंग की कार के बारे में भूल गए और इन दोनों आदमियों के चारों ओर जमा हो गए। हम बड़ी मुश्किल से भीड़ से बच निकले।
अगले दिन, हम खेतों का दौरा करने गए। वहाँ 350 एकड़ का एक खेत था जहाँ एक श्वेत अमेरिकी व्यक्ति अपने 15 वर्षीय बेटे की मदद से खेती कर रहा था। यह ट्रैक्टरों की मदद से संभव हो पा रहा था। मुझे लगा कि हमारे भारतीय किसान बड़े ट्रैक्टर नहीं रख सकते, लेकिन यह एक ऐसा आविष्कार था जिसे लोकप्रिय बनाने पर खेती में बहुत सुधार हो सकता था। यह इलेक्ट्रिक मोटर का आविष्कार था, जो आधे हॉर्सपावर से लेकर 5 हॉर्सपावर तक उपलब्ध है; अमेरिकी किसान आमतौर पर इसका इस्तेमाल करते थे। वे इस मोटर की मदद से पशुओं के लिए भूजल निकालते थे और पशुओं के चारे को काटते थे। कुछ लोगों ने इसका इस्तेमाल अपनी निजी आटा चक्कियों में भी किया था।
उन दिनों कृषि विकास की जिम्मेदारी मेरी थी। हमने बिजली से चलने वाले ट्यूबवेलों को लोकप्रिय बनाने के लिए एक सरल योजना बनाई। उस समय पंजाब में बिजली की कमी थी।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें। समय सीमित होने के कारण हम इसके व्यापक उपयोग को प्रोत्साहित नहीं कर सके। इसलिए, हमने उन गांवों का चयन किया जहां प्रवासियों को शहरों और कस्बों के पास भूमि आवंटित की गई थी।

(पृष्ठ 399)

सरदार लाल सिंह पंजाब के कृषि निदेशक थे। मेरे अनुभव में, पूरे भारत में लाल सिंह से बेहतर कृषि निदेशक कोई नहीं हुआ। लाल सिंह ने कई बोरिंग रिंग खरीदीं। हमने तय किया कि जिन शरणार्थियों के पास 10 एकड़ से अधिक भूमि है, उन्हें ट्यूबवेल दिए जाएंगे। हमने ऐसे किसानों की सूची बनाई और उन्हें ऋण दिए। इसके बाद, मैंने वह सूची लाल सिंह को दी और उनसे कहा कि वे इन किसानों के लिए जल्द से जल्द ट्यूबवेल खुदवाएं। विद्युत विभाग से इन ट्यूबवेलों के लिए बिजली उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया। पंजाब के शहरों के पास स्थित इन गांवों में काफी विकास हुआ। यहां मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि यदि हमने अमेरिकी यात्रा के दौरान इस योजना के बारे में नहीं सोचा होता, यदि हमने यह नहीं सोचा होता कि कृषि विकास के लिए बिजली से चलने वाले ट्यूबवेलों का उपयोग कितना महत्वपूर्ण है, तो यह योजना कई वर्षों तक शुरू ही नहीं हो पाती।

उन दिनों लाल सिंह ने गार्डन कॉलोनी योजना विकसित की थी। विभाजन के बाद, लायलपुर, मोंटगोमरी और सरगोधा में ही माल्टा के सारे बाग बचे थे और हमारे पंजाब में ऐसे कोई बाग नहीं थे, इसीलिए इस योजना की आवश्यकता पड़ी। इस योजना में 10,000 एकड़ भूमि बागों के लिए आरक्षित की गई थी। प्रत्येक जिले में दो गार्डन कॉलोनियां बनाने का निर्णय लिया गया। इन गांवों का एकीकरण अन्य क्षेत्रों से पहले किया गया और ट्यूबवेल के लिए ऋण वितरित किए गए। इस योजना को लागू करने में मैंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैंने डॉ. मुल्क राज आनंद की पत्रिका 'मार्ग' में इज़राइल की गार्डन कॉलोनियों के बारे में पढ़ा था। हमने सोचा कि पंजाब को न केवल अधिक फल उत्पादन की आवश्यकता है, बल्कि लोगों के जीवनशैली में भी बदलाव की आवश्यकता है।

मैंने खरार कस्बे से 1 किलोमीटर दूर खानपुर गांव में 15 एकड़ जमीन का आवंटन लिया। यह इलाका गार्डन कॉलोनी योजना के अंतर्गत आता था। उस समय चंडीगढ़ योजना भी चर्चा में थी। मैंने सोचा कि अगर मैं शहरी जीवन को खेतों की शांति के

साथ मिला दूं, तो गार्डन कॉलोनी में जीवन चंडीगढ़ शहर से बेहतर होगा। इस कॉलोनी के लोगों ने मुझे अपना अध्यक्ष चुना और मैं विभिन्न मामलों में उनकी मदद करता रहा।

(पृष्ठ 400)
मुझे लगा कि इस कॉलोनी के अधिकांश आवंटित कृषि स्नातक थे और बहुत ही सभ्य लोग थे। उनमें से, मैं चौधरी हरि सिंह और सरदार मोहन सिंह की सबसे अधिक सराहना करता हूँ। दोनों लायलपुर से आकर यहाँ बसे थे और उन्होंने ही मुझे यहाँ बसने के लिए प्रेरित किया था।
गुणवत्तापूर्ण खेती के लिए जल प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमने कृषि विभाग से बोरिंग रिंग की व्यवस्था की और 450 फीट की गहराई तक जमीन खोदी, लेकिन पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिला। इस ट्यूबवेल पर लगभग 5000 रुपये का खर्च आया, जिसे पुराने आम के पेड़ बेचकर चुकाया गया। तब हमने अपने खेतों में ट्यूबवेल खोदने का विचार किया। मुन्नी लाल नाम के एक सेवानिवृत्त बुजुर्ग ओवरसियर थे, जो पानी खोजने में हमारी मदद कर सकते थे। वे मुंडी खरार गांव में रहते थे। हमने उन्हें मदद के लिए बुलाया। वे मेरे खेत में भी मदद करने आए। वे धागे से बंधे पीतल के लट्टू का उपयोग करके पानी खोजते थे। जहां भी जमीन के नीचे पानी होता था, लट्टू से बंधे धागे से उनकी बांह में एक झटका लगता था। हम सभी ने इस व्यक्ति की मदद से पानी खोजा और हमने अपने-अपने खेतों में एक-एक ट्यूबवेल लगवा लिया।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
तभी हमने सामूहिक खेती का प्रयोग शुरू किया। संपूर्ण सिंह गार्डन कॉलोनी के प्रबंधक थे, वे भारतीय राष्ट्रीय सेना में पूर्व कप्तान थे। वे ट्रैक्टर चलाते थे और किसानों का सामूहिक हिसाब-किताब रखते थे। सामूहिक खेती का हमारा अनुभव बहुत ही कड़वा रहा क्योंकि किसान ट्रैक्टर से अपनी ज़मीन जोत तो लेते थे, लेकिन भुगतान करने से इनकार कर देते थे। यह प्रयोग विफल रहा और अंततः ट्रैक्टर बेच दिया गया।
संपूर्ण सिंह को गार्डन कॉलोनी से 50 रुपये प्रति माह वेतन मिलता था और उनके

पास 6-7 एकड़ जमीन थी जिस पर वे खेती करते थे। उस समय खानपुर में बिजली नहीं थी। मोहन सिंह, हरि सिंह और मैंने एक डीजल इंजन खरीदा। यह इंजन हमारे खेतों के ट्यूबवेलों के लिए काम करता था। 1955 में मेरा तबादला चंडीगढ़ से दिल्ली हो गया, जहाँ मुझे आई.सी.ए.आर. का उपाध्यक्ष बनाया गया। अब मुझे खेत के लिए कोई वैकल्पिक व्यवस्था सोचनी पड़ी। उस समय संपूर्ण सिंह को और जमीन किराए पर लेने की जरूरत थी, इसलिए उन्होंने कहा, "मैं आपका काम कर दूंगा और एक बाग लगा दूंगा।" मैंने उन्हें दो बैल खरीद दिए।

(पृष्ठ 401)
उन्हें सभी फसलों की आमदनी मिलती थी, लेकिन सारा खर्च मैं उठाता था। इस व्यवस्था से संपूर्ण सिंह को बहुत लाभ हुआ। मैं उन्हें सहारनपुर से अच्छी गुणवत्ता वाले माल्टा और आम के पौधे भेजा करता था, जिन्हें वे रोपकर उगाते थे। 1964 में, मैं योजना आयोग का सलाहकार था। उस समय मुझे लगा कि देश में सिक्कों के प्रचलन के कारण रुपये का मूल्य गिर जाएगा। मैंने अपने भविष्य निधि से 50,000 रुपये निकाले और उससे बाग में अपना घर बनाने का फैसला किया। चंडीगढ़ के वास्तुकार श्री भानु माथुर मेरे प्रिय मित्र थे। मैं जिनेवा में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने गया था। होटल रोन में ठहरने के दौरान, मेरे कमरे की खिड़कियों से जिनेवा झील का दृश्य दिखाई देता था। मैंने श्री माथुर से कहा कि वे ऐसा घर डिजाइन करें जिससे हर कमरे से बाग दिखाई दे। वैसे तो मुझे प्रकृति से बेहद प्यार है। मुझे न केवल रंग-बिरंगे फूल और पौधे पसंद हैं, बल्कि चांद और तारे भी बहुत प्यारे हैं। सुबह उगता हुआ सूरज मेरे कमरे से साफ दिखाई देता है, और रात में चंद्रमा भी।
घर तो बन गया था, लेकिन वहाँ तक पहुँचने के लिए कोई सड़क नहीं थी। यहाँ के बीडीओ बलदेव कपूर पहले भूमि समेकन योजना में काम करते थे। उन्होंने मेरे घर से कस्बे तक एक कच्ची सड़क बनवाई। यह सड़क खरार के बाज़ार से पहले ही खत्म हो जाती थी, क्योंकि सरदार हजारा सिंह लैंडरनवाले के खेत इसके रास्ते में पड़ते थे। उन्होंने कांटेदार तार लगाकर रास्ता रोक दिया था। मैंने हजारा सिंह से पूछा कि वे रास्ता क्यों नहीं खोल रहे हैं। खरार के सैनी समुदाय से उनकी कुछ दुश्मनी थी और वे ज्यादातर हिंदुस्तानी में बात करते थे। उन्होंने सैनी समुदाय को बुरा-भला कहा और कहा कि वे उन्हें रास्ता पार नहीं करने देंगे। जब मैं दिल्ली लौटा, तो मैंने उन्हें पत्र

लिखकर कहा कि हमें समाज कल्याण के रास्ते में बाधा नहीं बनना चाहिए, क्योंकि हमें नहीं पता कि हम कितने दिन जिएंगे। हजारा सिंह ने मेरी सलाह मान ली और रास्ता खोल दिया। इस घटना के तीन महीने बाद उनका निधन हो गया।
मानसून के महीनों में इस बस्ती से कोई गुजर नहीं सकता था। हर जगह कीचड़ ही कीचड़ था। सरदार प्रताप सिंह कैरों पंजाब के मुख्यमंत्री थे और वे बहुत मुश्किल में थे। वे मुझसे दिल्ली में मिले और बोले,

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

“पंजाब लौटकर मुख्य सचिव का पदभार संभालिए।” मैंने उनसे कहा कि अगर मैं पंजाब लौट भी जाऊं, तो भी मैं अपने खेत में रहना चाहता हूं, चंडीगढ़ में नहीं। वे मान गए और उन्होंने लोक निर्माण विभाग के मंत्री सरदार निरंजन सिंह तालिब को तुरंत उस कच्ची सड़क को पक्की सड़क में बदलने का आदेश दिया। पक्की सड़क बनाने से पहले उस पर मिट्टी डालना ज़रूरी था। खालसा हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक सरदार समुंद सिंह और मास्टर मोहन सिंह ने इस काम में बहुत मदद की। मैंने एक समय उन्हें एक आर्ट गैलरी और एक पुस्तकालय स्थापित करने में मदद की थी। स्कूली बच्चों के लिए एक शिविर आयोजित किया गया और लड़कों ने उस रास्ते पर मिट्टी डाली। हमने इस सड़क के लिए गार्डन कॉलोनी से मुफ्त ज़मीन दी, जबकि खरार के किसानों ने इस सड़क के लिए उचित मुआवज़ा लिया।
सरदार प्रताप सिंह कैरों के संघर्ष जटिल हो गए थे। मुझे लगा कि मैं उनकी कोई सार्थक सहायता नहीं कर सकता। श्री लाल बहादुर शास्त्री और श्री गुलज़ारी लाल नंदा उनके कट्टर शत्रु थे। उन दिनों ऐसा अपमानजनक राजनीतिक माहौल बन गया था कि कैरों के लिए जीवन यापन करना मुश्किल हो गया था।
उन दिनों पूरे देश में अनाज की भारी कमी थी। एक दिन मेरी मुलाकात नई दिल्ली के योजना भवन में श्री टी.टी. कृष्णमाचारी से हुई और उन्होंने मुझसे पूछा, “आप यहाँ क्या कर रहे हैं? यह तो गौशाला जैसी है जहाँ बूढ़ी और बीमार गायें रखी जाती हैं। आप एक योग्य व्यक्ति हैं। कृषि योजना का महानिदेशक पदभार संभालिए।” उस समय श्री स्वर्ण सिंह कृषि मंत्री थे। वे मेरे सहपाठी थे और मैं उनकी बुद्धिमत्ता का

बहुत सम्मान करता था। मैंने प्रगतिशील कृषि योजना को पूरे देश में बड़ी लगन से लागू किया। मैंने हवाई जहाज, मोटरगाड़ियों और जीपों से सभी राज्यों का दौरा किया। यह काम मेरे लिए बहुत मानसिक बोझ बन गया और इसके परिणामस्वरूप मुझे साइटिका का दर्द हो गया। मैंने तीन महीने की छुट्टी ली। इसी कारण मेरा तबादला पंजाब हो गया। मैंने जून 1966 में अपने नए घर में रहना शुरू किया। दिल्ली से लौटने के बाद मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे कंधों से हजारों बोझ उतर गए हों। मैंने कई वर्षों बाद चाँद और तारे देखे। शहरों में धूल और स्ट्रीटलाइटों के कारण चांद-तारे शायद ही कभी दिखाई देते हैं। मेरे लिए ट्यूबवेल के पानी में नहाना सबसे सुखद अनुभव था।

(पृष्ठ 403)
मुझे पंजाब सरकार में राजधानी परियोजना का आयुक्त नियुक्त किया गया। मैंने सोचा कि चंडीगढ़ में गुलाबों का एक बगीचा लगाया जाना चाहिए। सरदार संपूर्ण सिंह पंजाब के वित्त सचिव थे। जब मैंने उनसे इस विचार के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि उनके पास धनराशि नहीं है। सितंबर में, चंडीगढ़ केंद्र शासित प्रदेश बन गया और मुझे इसका मुख्य आयुक्त नियुक्त किया गया। मैंने केंद्र शासित प्रदेश में एक नई प्रणाली स्थापित की जिससे काम तेजी से और कुशलता से होने लगा। मैंने मुख्य अभियंता और मुख्य वास्तुकार को सचिव के अधिकार दिए। सरदार कुलबीर सिंह मुख्य अभियंता थे और उन्होंने योजनाओं को सक्रिय रूप से लागू किया। मैंने उनसे गुलाबों के बगीचे के मुद्दे पर चर्चा की, और उस समय तक सरदार दलजीत सिंह वित्त सचिव बन चुके थे। वे बड़े दिल वाले व्यक्ति थे। उन्होंने मुझे बताया कि बगीचा बनाया जा सकता है। मैंने दिल्ली के पूसा अनुसंधान संस्थान में गुलाब की कई किस्में विकसित की थीं। हमने वहां से पौधे लाकर बगीचे की शुरुआत की। पंजाब के राज्यपाल श्री धर्मवीर मेरे अच्छे मित्र थे। मैंने उनसे इस बगीचे का उद्घाटन करवाया क्योंकि वे भी फूल प्रेमी थे। एक दिन, मेरी मुलाकात फिर से संपूर्ण सिंह से हुई; तब तक वे सेवानिवृत्त हो चुके थे। मैंने उनसे पूछा

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। उसने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उसने कहा, "मैं गुलाब के बगीचे में टहलकर आ रहा हूँ।"

मैंने जवाब दिया, "शायद आपको बगीचे का आनंद नहीं लेना चाहिए।"
एक दिन बधेड़ी, पीर सोहाना और अन्य गांवों के लोग मुझसे मिलने आए और कहा कि वे भी सड़क से जुड़ना चाहते हैं। इसीलिए वे भी संपर्क मार्ग बनाने और कच्ची सड़क के विस्तार के लिए श्रमदान करने को तैयार थे। राजा नरिंदर सिंह अकाली सरकार में मंत्री थे। मैंने उन्हें बुलाया और इन लोगों से मिलवाया। राजा नरिंदर सिंह ने तुरंत सड़क के विस्तार का आदेश दिया। मुझे साइटिका के कारण अभी भी दर्द रहता था। मैंने सख्त पलंग पर सोना शुरू कर दिया। हर सुबह, मैं बधेड़ी गांव के लोगों द्वारा संपर्क मार्ग के काम की निगरानी करता, फिर चंडीगढ़ जाकर डॉ. प्रीतम सिंह से डायथर्मी उपचार करवाता। उसके बाद, मैं सचिवालय जाता और सोफे पर बैठकर काम करता। साइटिका के मरीजों को पीठ झुकाने की अनुमति नहीं होती। इसीलिए मुझे सोफे पर बैठकर काम करने की आदत डालनी पड़ी। धीरे-धीरे मुझे बेहतर महसूस होने लगा।
सड़क का निर्माण शुरू हुआ। सरदार हरनाम सिंह के खेत में एक तीखा मोड़ था, जिससे सड़क बनाने वालों को काफी परेशानी हो रही थी। मैंने हरनाम सिंह को सुझाव दिया कि वे अपनी ज़मीन का एक हिस्सा देकर सड़क के लिए और जगह छोड़ दें और ढलान वाले रास्ते को सड़क के दूसरे छोर से जोड़ दें। उन्होंने मेरा सुझाव मान लिया और इस तरह सड़क सीधी हो गई।

(पृष्ठ 404)
मैंने देखा कि इस सड़क ने खानपुर और छह-सात अन्य गांवों के जीवन में क्रांति ला दी। इन गांवों के लड़के-लड़कियां खरार के विद्यालयों में पढ़ने लगे। भैंस पालने वाले कई लोग चंडीगढ़ में उनका दूध बेचने लगे। लोगों में सब्जियां उगाने का चलन शुरू हुआ, जिससे कृषि का और विकास हुआ। कई युवाओं ने चंडीगढ़ में नौकरी कर ली। यहां मैं यह बताना चाहूंगा कि जब यह सड़क बनी, तो एक कांग्रेस नेता कहने लगे कि यह सड़क सिर्फ एक व्यक्ति के लिए बनाई गई है। वे मुझे बदनाम कर रहे थे क्योंकि उन्हें शक था कि मैं चुनाव लड़ूंगा। एक दिन, मेरी उनसे मुलाकात हुई और मैंने उनसे कहा, “आप एक कुर्सी लेकर सड़क के किनारे बैठ जाइए। अपने हाथ में एक नोटबुक रखिए और लिखिए कि कितने साइकिल सवार, मोटरसाइकिल सवार और पैदल यात्री इस सड़क का इस्तेमाल करते हैं। तब आपको पता चलेगा कि इस सड़क से हजारों

लोगों को फायदा हो रहा है।" इस सड़क से न केवल गांवों का विकास हुआ, बल्कि खरार कस्बे की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ। खरार एक बदहाल कस्बा था, जहां जर्जर दुकानें थीं। जब इन गांवों से गेहूं, चावल और सब्जियां खरार के बाजार में आने लगीं, तो खरार के लोगों को भी इसका लाभ मिला। हरित क्रांति से पहले, इस बाजार में 20-25 मन अनाज और गुड़ के ढेर ही दिखाई देते थे। लेकिन अब, हरित क्रांति के कारण, यहां इतना अनाज पैदा होने लगा कि एक अलग अनाज मंडी बनानी पड़ी। जब सड़क का इस्तेमाल बढ़ने लगा, तो खरार के कुछ निवासियों ने इसके आसपास अपने घर बनाने शुरू कर दिए। इनमें से एक व्यक्ति, भूरा, जिसकी बाजार में चाय की दुकान थी, को देखकर मुझे लगा कि वह पूरी जगह को बर्बाद कर देगा। बाद में, मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि उसने एक सुंदर घर बनाया था और उसके सामने ढेर सारे फूल लगाए थे। उसने अपने घर की दीवार पर रंधावा रोड लिखवाया था, और इसी तरह सड़क का नाम पड़ा क्योंकि यह नाम लोकप्रिय हो गया। सरदार शमशेर सिंह जोश कम्युनिस्ट पार्टी के विधायक थे, जो खरार का प्रतिनिधित्व करते थे। वे लोकप्रिय और ऊर्जावान थे। उन्होंने अपनी इच्छा से भंगो माजरा में एक कॉलेज की स्थापना की।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। और पहल। उन्होंने नगर समिति को बताया कि यह सड़क एम.एस. रंधावा के नेतृत्व में बनी थी, जिन्होंने लंबे समय तक पंजाब की सेवा की थी, और इसीलिए इस सड़क का नाम उनके नाम पर रखा जाना चाहिए।

(पृष्ठ 405)
नगरपालिका समिति ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और सड़क पर 'रंधावा रोड' लिखा हुआ एक बोर्ड लगा दिया गया। इस बोर्ड की मदद से दूर-दराज के शहरों के लोग भी आसानी से अपना घर ढूंढ सकते हैं।
यहां मैं एक और घटना साझा करना चाहता हूं जिसने पंजाब के विकास में योगदान दिया है। सरदार लक्ष्मण सिंह गिल ने गुरनाम सिंह जज को हराकर पंजाब के मुख्यमंत्री बने। मैं उन्हें दिल्ली में अपने समय से जानता था। मैंने देखा कि वे बहुत साहसी व्यक्ति थे, एकमात्र ठेकेदार जो पीडब्ल्यूडी अधिकारियों को डराकर बिना

रिश्वत दिए अपने बिल पास करवा लेते थे। लक्ष्मण सिंह गिल और दीवान सिंह माफतून मेरे विशेष प्रशंसक थे। मुख्यमंत्री बनने के बाद लक्ष्मण सिंह गिल मुझसे मिलने आए। उन्होंने कहा, "रंधावा साहब, मंत्रालय आते-जाते रहते हैं। कृपया मुझे एक ऐसी योजना के बारे में बताएं जिससे मैं आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रिय बन जाऊं।" मैंने उत्तर दिया, "पंजाब में कई ऐसे गांव हैं जो एक-दो मील लंबी कच्ची सड़कों के कारण सभ्यता से कटे हुए हैं। ऐसे क्षेत्रों के बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं, और न ही ग्रामीण आराम से अपनी फसल बेचने के लिए अनाज मंडी जा सकते हैं। आप बाकी सभी काम छोड़ दें, अपने पैसे का इस्तेमाल संपर्क सड़कों पर करें और परिणाम देखें।" मैंने उनसे यह भी कहा कि यदि वे संपर्क सड़कों के परिणाम देखना चाहते हैं, तो उन्हें रंधावा रोड के आसपास के गांवों में आए बदलावों को देखना चाहिए। चूंकि लक्ष्मण सिंह गिल स्वयं एक ग्रामीण थे, इसलिए वे इन समस्याओं से भली-भांति परिचित थे। उन्होंने मेरी बात समझी और अपने निर्वाचन क्षेत्र जगराओं में इस योजना को लागू किया। इससे गांवों का नक्शा बदलने लगा। परिणामस्वरूप, पंजाब के सभी ग्रामीणों ने मांग की कि उनकी संपर्क सड़कों को भी पक्की सड़क बनाया जाए। इस कार्य को देखते हुए, हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी बंसी लाल ने अपने राज्य में इस योजना को बड़े पैमाने पर लागू किया। जब अकाली दल चुनाव हार गया और कांग्रेस विजयी हुई, तो ज्ञानी जैल सिंह ने भी इस योजना का दायरा बढ़ाया। इस प्रकार, पंजाब के विकास का रहस्य केवल नई फसलों में ही नहीं, बल्कि इसकी संपर्क सड़कों में भी निहित है। अब आप भली-भांति जानते होंगे कि रंधावा रोड नामक इस सड़क से केवल कुछ गांवों को ही लाभ नहीं हुआ, बल्कि पूरे पंजाब को लाभ हुआ।

(पृष्ठ 406)

संपर्क मार्ग बनाने के अलावा, मैंने लक्ष्मण सिंह गिल को बसों और मील के पत्थरों पर गुरमुखी में लिखने की सलाह भी दी ताकि पंजाबी सूबे की भाषा लोगों को स्पष्ट रूप से समझ में आ सके। उन्होंने तुरंत आदेश पारित किया और मील के पत्थरों पर शहरों के नाम गुरमुखी में लिखे जाने लगे; पंजाब रोडवेज की बसों के नाम भी गुरमुखी में लिखे जाने लगे।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

अध्याय 57

खेती के क्षेत्र में हमारा अनुभव
(1966-1984)

(पृष्ठ 407)
अपने सरकारी कामों में इतना व्यस्त रहने के कारण मैं बागवानी और खेती पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाया। इसलिए मैंने यह काम अपनी पत्नी श्रीमती इकबाल कौर को सौंप दिया। नीचे दिया गया विवरण उन्हीं ने लिखा है। बहुत से लोग मानते हैं कि खेती पैसा कमाने का जरिया है। हमारे अनुभव में, खेती में सिर्फ मेहनत और परिश्रम लगता है, और सारे खर्चे निकालने के बाद मुनाफा बहुत कम ही बचता है। जो लोग खेती से बहुत मुनाफा दिखाते हैं, वे कालाबाजारी करने वाले होते हैं। उनका पैसा काला धन होता है, उनकी जमीन पर कोई काम नहीं होता और वे प्रति एकड़ 2000-3000 रुपये का मुनाफा दिखाते हैं। अगर खेती से सचमुच इतना मुनाफा होता, तो पंजाब में गरीबी न होती। खेती में सफलता सिर्फ उन्हीं लोगों को मिलती है जिन्हें विदेश से पैसा मिलता है। जो लोग सिर्फ खेती पर निर्भर हैं, वे फटेहाल हिजाब (परना) बांधते और गंदी कमीजें पहनते रहते हैं। यह बात मैंने न सिर्फ अपने खेत से समझी, बल्कि पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) के कृषि आय के आंकड़ों से भी इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। किसी भी खेत से प्रति एकड़ 200-300 रुपये से अधिक का लाभ नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि खेती की नई तकनीकें पुरानी विधियों की तुलना में अधिक महंगी हैं। यदि आप 25,000 रुपये कमाते हैं, तो 12,000 रुपये मजदूरों, नौकरों के वेतन और उनके भोजन पर खर्च हो जाते हैं। यहां तक कि 15-16 एकड़ के खेतों में भी 5000 रुपये का उर्वरक इस्तेमाल होता है। इसके अलावा, बिजली के बिल में 1000 रुपये से अधिक का खर्चा आता है।

(पृष्ठ 408)
डीजल पर 2000 रुपये, कीटनाशकों पर 500-600 रुपये और मशीनों की टूट-फूट

की मरम्मत पर भारी खर्च, जिसके बारे में किसानों को जानकारी भी नहीं होती। 80,000 रुपये में खरीदे गए ट्रैक्टर की टूट-फूट की मरम्मत पर कम से कम 10,000 रुपये खर्च हो जाते हैं। इन सभी खर्चों के बावजूद, यह स्वीकार करना होगा कि आज की खेती पहले के तरीकों की तुलना में कहीं अधिक उत्पादक है और यही देश को भुखमरी और गरीबी से बचा रही है। अगर मुझसे पूछा जाए कि आजादी के बाद किस वर्ग को 'हीरो' कहा जा सकता है, तो मैं कहूंगी कि पंजाब के सिख किसान इस उपाधि के पात्र हैं। उन्होंने हरित क्रांति के लिए कड़ी मेहनत की और देश को भुखमरी और गरीबी से बचाया। निम्नलिखित विवरण इकबाल कौर द्वारा लिखा गया है। इसे ध्यानपूर्वक पढ़ें:

“दरअसल, मैंने बाद की उम्र में कृषि क्षेत्र में कदम रखा। मेरे पति आईसीएस अधिकारी थे और अन्य अधिकारियों की तरह हमारा भी तबादला होता रहता था। किसी भी तबादले में खेती का कोई सवाल ही नहीं उठता था। आखिरकार, 1968 में मेरे पति का तबादला दिल्ली से चंडीगढ़ हो गया और उन्हें केंद्र शासित प्रदेश का मुख्य आयुक्त नियुक्त किया गया। चंडीगढ़ में रहने के बजाय, हमने चंडीगढ़ से 8 मील दूर स्थित अपने 15 एकड़ के खेत में रहने का फैसला किया। यह खेत खानपुर गार्डन कॉलोनी का हिस्सा है। गार्डन कॉलोनी योजना के तहत, पाकिस्तान से आए बागवानों को पाकिस्तान में खोई हुई जमीन के बदले यहां जमीन आवंटित की गई थी। इस तरह, मोंटगोमरी जिले में नहर से सिंचित हमारी 18 एकड़ जमीन के बदले, हमें यहां 15 एकड़ असिंचित जमीन आवंटित की गई। यह कोई एहसान नहीं था। यह योजना केवल इसलिए बनाई गई थी ताकि ये लोग खेती के अपने विशेष अनुभवों से एक-दूसरे को सीख सकें।”

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

जब हम दिल्ली में थे, तब आईएनए के सरदार संपूर्ण सिंह ने हमारी ज़मीन की देखभाल की ज़िम्मेदारी संभाली। वे गार्डन कॉलोनी में क्लर्क थे और उनके पास अपनी 6 एकड़ ज़मीन भी थी। हम सहारनपुर की एक नर्सरी से आम और अमरूद के अच्छे पौधे लाए, जिन्हें उन्होंने हमारी ज़मीन पर लगाया। हमने उनसे कहा कि वे उस खाली पड़ी ज़मीन पर फसल उगाएँ और उससे होने वाली आमदनी खुद रख लें। हमने

एक ट्यूबवेल भी लगवाया और बिजली व खाद के बिल भरने शुरू कर दिए। हमने उनके लिए दो बैल भी खरीदे। इस तरह, उन्हें सही मदद मिलने से उन्होंने हमारे बगीचे की अच्छी देखभाल की। इस तरह वे काफी पैसे बचा सके और 1967 में जब वे हमसे अलग हुए, तब उन्होंने अपना घर बनवाया।

(पृष्ठ 409)

जब हम दिल्ली में रहते थे, तब हमने 1964 में बाग में अपना घर बनवाया था। हम हर साल यहाँ आते और कुछ हफ़्ते यहाँ रहते। जब भी आते, हम संतरे, अमरूद और आम के पौधे लगाते। इस तरह, कुछ एकड़ ज़मीन इन फलों के पेड़ों की खेती के अंतर्गत आ गई। तब हमें लगा कि यहाँ रहना हमारे लिए मुश्किल नहीं होगा। वास्तव में, यह हमारे लिए एक नया अनुभव था। मेरे पति गाँव से हैं, और गाँव से हमारा रिश्ता कभी टूटा नहीं था। इसीलिए हम अपनी छोटी सी ज़मीन पर हर मौसम में नई फसलें और फल देखना चाहते थे। मैं खेतों और खेती से अपरिचित नहीं थी। मेरे पिता, स्वर्गीय डॉ. हरभजन सिंह, एक प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ थे, उनका गोजरान के पास एक खेत था। हमारा पूरा परिवार और मेरी दादी उस बगीचे में बहुत रुचि रखते थे। मुझे पता था कि वहाँ कौन सी फसलें बोई जाती थीं और कब उगती थीं। हमारे खेत में माल्टा, संतरे और पोमेलो उगते थे, और उसमें भी फसलें बोई जाती थीं, ठीक वैसे ही जैसे हम यहाँ अपने खेत में बोते हैं।

मैं जो खेती अभी कर रहा हूँ, वह पाकिस्तान में हमारी खेती से अलग है। पहली बात तो यह है कि मैं खेती में दूर से ही दिलचस्पी लेता था, लेकिन यहाँ मैं खेत और बाग के सभी कामों की ज़िम्मेदारी खुद लेता हूँ। दूसरी बात, अब मुझे रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल की जानकारी है, जो पहले मुझे नहीं थी। कुछ और चीज़ें भी हैं जिनसे मैं अब परिचित हो गया हूँ, जैसे ट्यूबवेल और उसका इलेक्ट्रिक मोटर, जिसे जलस्तर के अनुसार समायोजित करना पड़ता है। मुझे कीटनाशकों के बारे में भी पता चला है, जिन्हें हर साल एक निश्चित समय पर फसलों पर छिड़कना पड़ता है। मैंने बहुत जल्द ही रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर भरोसा करना शुरू कर दिया। इनका इस्तेमाल करने और न करने में अंतर तुरंत महसूस किया जा सकता है। खेती की एक और नई तकनीक है, क्षारीय मिट्टी में जिप्सम डालकर पीएच स्तर को ठीक करना। इस विधि के बारे में पहले किसी को जानकारी नहीं थी। हमारे पास एक एकड़ ज़मीन

थी जो बहुत क्षारीय थी, उस पर कोई फसल नहीं उगती थी। हमने जिप्सम डालकर इसे ठीक कर लिया है। हमने ट्यूबवेल के पास सीमेंट का एक छोटा सा तालाब (चुबच्छा) बनाया है, यहाँ से पानी खेतों में जाता है। मैं ट्यूबवेल के पानी से कपड़े धोता हूँ।

(पृष्ठ 410)
हमने इस पूल को ढक दिया है; इसमें एक दरवाजा भी है जिसे अंदर से बंद किया जा सकता है। परिवार के सदस्य यहाँ बिना किसी की नज़र में आए नहा सकते हैं। अन्य किसानों को भी ऐसा ही करना चाहिए। यह विशेष रूप से महिलाओं के लिए आरामदायक है।
ट्यूबवेल न केवल हमें आराम देता है, बल्कि समस्याएं भी पैदा करता है। गर्मियों में, जब जलस्तर नीचे चला जाता है, तो ट्यूबवेल मुश्किल से काम करता है। हवा के रिसाव के कारण, यह 15 मिनट बाद पानी खींचता है। बेल्ट, मोटर और डीजल की जांच के लिए इलेक्ट्रीशियन को बुलाना पड़ता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। ट्यूबवेल का इंजन अक्सर खराब हो जाता है; छोटी-मोटी मरम्मत में भी काफी पैसा खर्च होता है। मोटर अक्सर शॉर्ट-सर्किट हो जाती है, और वायरिंग की मरम्मत पर 300 रुपये खर्च हो जाते हैं।
कई वर्षों के अनुभव के बाद मुझे यह भी पता चला है कि आज की तकनीक जलवायु परिस्थितियों को नियंत्रित नहीं कर सकती। उदाहरण के लिए, हमारे क्षेत्र में आम और अमरूद तो खूब उगते हैं, लेकिन नींबू उगाना मुश्किल है। अगर बहुत ज्यादा बारिश हो जाए तो फल खराब हो जाते हैं। एक साल एक फल अच्छा उगता है, दूसरे साल दूसरा। एक साल सर्दी लंबी चली, फिर धूल भरी आंधी आई और उसके बाद बारिश हुई। इस वजह से संतरे के पेड़ों पर बहुत कम फल लगे। इसके अलावा, संतरे के पेड़ों पर अक्सर कीट और रोग लग जाते हैं। इन रोगों से बचाव के लिए उन पर कीटनाशक का छिड़काव करना पड़ता है। छाल खाने वाले कीड़े भी उन पर हमला करते हैं। पेड़ का जीवन उसकी छाल में होता है, और अगर कीड़े इसे खा लें तो पेड़ मर जाता है। यह बात मुझे कई वर्षों के अनुभव के बाद पता चली। अब हम पेड़ों के उन छेदों में

मिट्टी का तेल या केरोसिन डालते हैं जहाँ ये कीड़े छिपे रहते हैं। इसके बावजूद, कई संतरे के पेड़ मर गए, और हमें उन्हें उखाड़ना पड़ा। हमें उम्मीद थी कि कुछ अच्छे फल देने वाले पेड़ हमें अच्छी पैदावार देंगे, लेकिन मुझे पता चला कि वे भी 5-6 साल बाद ऊपर से सूखने लगे थे।
तोते बाग को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। हमने कुछ नाशपाती के पेड़ लगाए थे। उनमें 10 साल बाद फल लगे, लेकिन तोते सारे फल खा गए। आम और अमरूद को बाजार ले जाना संभव नहीं है, इसलिए हम उन्हें एक ठेकेदार को दे देते हैं। वे और उनके बच्चे दिन-रात 'हो, हो' चिल्लाकर तोतों को भगाते रहते हैं।
जब संपूर्ण सिंह हमारे बाग से निकलकर अपने खेत में गया, तो हमने अपने दो बैल भी उसे दे दिए।

(पृष्ठ 411)
अब हमारे पास फसल उगाने के लिए कुछ भी नहीं था। हमने अपने पड़ोसियों से मदद ली जिनके पास अपने ट्रैक्टर थे, ताकि वे हमारी ज़मीन जोत सकें। हमें पता चला कि जब हमें ट्रैक्टरों की ज़रूरत होती थी, तब वे अपने काम में व्यस्त होते थे, और हम सही समय पर अपनी ज़मीन नहीं जोत पाते थे। फिर 1968 में, हमने तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार गुरनाम सिंह को एक आवेदन भेजा, उन्होंने हमें ट्रैक्टर खरीदने की अनुमति दे दी। मेरे पति ने 25,000 रुपये में एक ज़ेटोर ट्रैक्टर, एक ट्रॉली, औज़ार, एक सीड-ड्रिल, एक हार्वेस्टिंग मशीन आदि खरीदीं। इसमें कोई शक नहीं कि छोटे खेत में ट्रैक्टर से फसल उगाना लाभदायक नहीं है, लेकिन हमारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। ट्रैक्टर के बिना खेती का कोई भी काम ठीक से नहीं हो सकता।
मैं मजदूरों से सबसे ज्यादा बातचीत करता हूँ। हमारे पास तीन मजदूर हैं जो पूरे साल काम करते हैं। एक मजदूर ट्रैक्टर चलाता है और बीज बोता है। वह सिर्फ खाली खेतों में ही ट्रैक्टर नहीं चलाता, बल्कि मानसून के बाद जब खेतों में खरपतवार उग आते हैं तब भी उसे ट्रैक्टर चलाना पड़ता है। इस मजदूर का नाम किशन है और उसने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से ट्रैक्टर चलाने का प्रशिक्षण लिया है। अब खेती-बाड़ी की जिम्मेदारी उसी पर है। दूसरा मजदूर, जसवंत हरिजन, मवेशियों की देखभाल करता है। वह चारा काटकर भैंसों को खिलाता है। वह बाग में मिट्टी भी खोदता है। प्रताप, एक और नौकर, ट्यूबवेल की देखभाल करता है। जब हम गेहूँ बोते हैं, तो आमतौर पर

रात में बिजली आती है, और वह पूरी रात खेतों की सिंचाई करता है। इसके अलावा, उसे खेतों के लिए कई औजार भी खरीदने पड़ते हैं... जैसे खाद, डीजल, कीटनाशक आदि। ट्यूबवेल की अक्सर मरम्मत करानी पड़ती है। इस तरह उसका काफी समय इन कामों में ही बीत जाता है। हमारा कार चालक अपने खाली समय में आम के पेड़ों की रोगग्रस्त शाखाओं को भी काटता है। वह सप्ताह में केवल दो दिन ही गाड़ी चलाता है, इसलिए उसके पास काफी खाली समय होता है। वह अन्य पौधों की छंटाई भी करता है और झाड़ियों को भी काटता-छाँटता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

(पृष्ठ 412)

बाग के चारों ओर कांटेदार तार लगे होने चाहिए ताकि जानवर और लड़के अंदर न आ सकें। इसीलिए हमने अपने सभी खेतों के चारों ओर सीमेंट के खंभे और कांटेदार तार बनवाए हैं। इनकी देखभाल में काफी खर्च आता है। इन तीन नौकरों के अलावा, हम दिहाड़ी मजदूर भी रखते हैं जो रविवार को काम करते हैं। धान की बुवाई के समय हम और अधिक मजदूर रखते हैं। गेहूँ की कटाई और आलू खोदने के लिए बहुत सारे आदमियों की आवश्यकता होती है।

आप मानें या न मानें, लेकिन हमारे मजदूर वही खाना खाते हैं जो हम खाते हैं। हर किसी को रोज़ एक अंडा और एक गिलास दूध दिया जाता है, साथ ही मौसम के अनुसार फल भी दिए जाते हैं। मेरा मानना है कि यही बात हमें दूसरे किसानों से अलग करती है। ये सब देना मेरे लिए इसलिए संभव है क्योंकि हम अपने खेत में अनाज और फल उगाने के अलावा मुर्गियां और भैंसें भी पालते हैं। ये अंडे और दूध सिर्फ घर के खर्चों के लिए ही इस्तेमाल होते हैं। कई लोग कहते हैं कि मजदूरों को अंडे देना जरूरी नहीं है, या उन्हें अंडों की जरूरत नहीं है, लेकिन मैं कहता हूं कि अगर अंडे हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छे हैं, तो उनके स्वास्थ्य के लिए भी अच्छे होने चाहिए। इसके अलावा, प्रोटीन युक्त भोजन उन्हें स्वस्थ रखता है, और उनके बच्चे भी बड़े होकर स्वस्थ रहेंगे। हमें यह जानना चाहिए कि जिन बच्चों को बचपन में पर्याप्त प्रोटीन नहीं मिलता, उनका विकास ठीक से नहीं होता। आहार में प्रोटीन की कमी से मस्तिष्क का विकास ठीक से नहीं होता। इसीलिए मैं चाहता हूं कि हमारे मजदूरों के

बच्चे भी मेरे पोतों की तरह स्वस्थ रहें। इसके साथ ही, मैं व्यावहारिक समाजवाद में विश्वास रखता हूं। इसीलिए मुझे अकेले नारे लगाना पसंद नहीं है।
पास के ही गांव नया शहर वडाला की कुछ महिलाएं भी हमारे यहां काम करने आती हैं। मैं उन्हें बैसाखी, लोहड़ी और राखरी के त्योहारों पर कपड़े उपहार में देता हूं। मैं उन्हें हमसे चारा लेने से भी नहीं रोकता। मैं उन्हें खाने के लिए और घर ले जाने के लिए भोजन देता हूं। जब उनके घर में कोई बीमार होता है, तो मैं उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों की दवा भी देता हूं। जो गरीब लोग डॉक्टर की फीस नहीं दे सकते, उनका इलाज मैं करता हूं। मैं अक्सर उन्हें अपनी गाड़ी से अस्पताल ले जाता हूं, खासकर जब कोई बहुत बीमार होता है।
रसोई घर खेती-बाड़ी का केंद्र है। हमारी रसोई में दिन भर कुछ न कुछ पकता रहता है; हमारे नौकर किशन की पत्नी शीला दिन भर मजदूरों के लिए खाना बनाती है। जब मैं कहीं और व्यस्त नहीं होता, तो मैं भी रसोई में काम करता हूँ। इसके अलावा, चाय की केतली हमेशा चूल्हे पर रहती है और मजदूरों को दिन में दो बार चाय मिलती है।

(पृष्ठ 413)
इस पर प्रति माह 200 रुपये की चीनी का खर्च आता है।
हिसाब-किताब रखना भी एक और काम है, जिसमें मुझे काफी समय लग जाता है। मैंने अपने नौकरों को निर्देश दिया है कि वे जो भी सामान खरीदें, उसकी रसीद जरूर लें। इसके अलावा, मैं उनके वेतन का हिसाब रखता हूँ। मैं भुगतान रिकॉर्ड पर उनके अंगूठे के निशान लेता हूँ। जो नौकर हर समय काम करते हैं, वे हर महीने भुगतान रजिस्टर में हस्ताक्षर करते हैं।
हमारी भैंसें भी हमारे परिवार के सदस्यों की तरह हैं; फर्क सिर्फ इतना है कि वे बोल नहीं सकतीं। इसीलिए मैं उनकी देखभाल पर विशेष ध्यान देती हूँ। मैं उन्हें या उनके बच्चों को लंबे समय तक धूप में नहीं रहने देती और सही समय पर उन्हें नहलाती हूँ। दूध दुहने की प्रक्रिया पर नज़र रखना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। मैं इस बात का ध्यान रखती हूँ कि पशुओं का दूध दुहने से पहले व्यक्ति ने साबुन से हाथ धो लिए हों। हमने एक नई प्रक्रिया शुरू की है जिसके तहत हम कूड़े, गोबर, मल और मूत्र से खाद बनाते हैं। हमने दो गड्ढे खुदवाए हैं; रसोई का सारा कचरा, छंटे हुए पेड़-पौधे, पत्ते और खरपतवार उनमें डाले जाते हैं। जानवरों का गोबर एक स्थायी नाली के माध्यम से इस

गड्ढे तक पहुँचता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। दूसरे गड्ढे के ऊपर शौचालय बनाए गए हैं, एक पुरुषों के लिए और दूसरा महिलाओं के लिए। इस तरह सारा मानव मल गड्ढे में जाता है और बाद में खाद के रूप में इस्तेमाल होता है। अब हमने इस गड्ढे में एक बायोगैस संयंत्र स्थापित किया है। इसे स्थापित करने में हमें 8000 रुपये का खर्च आया। इसका लाभ यह है कि हमें खाना पकाने के लिए गैस मिलती है और गोबर नाले के माध्यम से खेतों तक पहुँच जाता है। इसके दो मुख्य लाभ हैं - खाद और खाना पकाने की गैस; बायोगैस संयंत्र के निर्माण से पहले, गैस हवा में ही निकल जाती थी, लेकिन अब इसका उपयोग रसोई में किया जा सकता है।

कटाई के बाद, गेहूँ की देखभाल करना मेरी ज़िम्मेदारियों में से एक है। मैं मई और जून में गेहूँ में फॉस्फीन की गोलियाँ मिलाता हूँ। हम जुलाई में ही नए गेहूँ का इस्तेमाल शुरू कर देते हैं। इससे पहले हम पिछले साल का गेहूँ खा लेते हैं। चक्की में भेजने से पहले मैं गेहूँ और चने को साफ करवाता हूँ। हम छोटे, खराब दानों को मुर्गियों के लिए अलग कर देते हैं, या उन्हें पकाकर मवेशियों के लिए दलिया बना देते हैं।

(पृष्ठ 414)

चंडीगढ़ से आने वाले मेरे कई दोस्त और मेहमान मुझसे पूछते हैं, “क्या आपको यहाँ अकेले रहते-रहते थकान नहीं होती, खासकर तब जब आपके पति हफ्ते में पाँच दिन लुधियाना में रहते हैं?” मैं उन्हें बताती हूँ कि मैं काम में व्यस्त रहती हूँ, इसलिए मुझे अकेलापन महसूस नहीं होता। खेत में इतना काम रहता है कि कहीं जाने का समय ही नहीं मिलता। दूसरी बात, पेट्रोल महंगा होने के कारण मैं अपनी दोस्त श्रीमती सुमित्रा जोशी से मिलने के लिए हफ्ते में सिर्फ दो बार चंडीगढ़ जाती हूँ। वह स्वर्गीय डॉ. ए.सी. जोशी की पत्नी हैं; उन्हें अस्थमा है। वह मुझसे मिलकर खुश होती हैं और जब भी मैं उनसे मिलती हूँ, उन्हें पहले से बेहतर महसूस होता है।

मैंने आपको खेती के बारे में जो कुछ भी बताया है, उससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह हमारे लिए आय का स्रोत नहीं है। यह हमारे जीवनयापन का एक तरीका है। 1970 में खाद पर 2000 रुपये खर्च होते थे, आज 5000 रुपये लगते हैं। रासायनिक खाद

और गोबर दोनों ही महंगे हो गए हैं। ट्रकों से इन्हें लाना भी महंगा हो गया है। हमारी दो भैंसें और उनके बछड़े केवल 3 एकड़ जमीन के लिए गोबर देते हैं। बाकी जमीन पर रासायनिक खाद का छिड़काव किया जाता है, या फिर चंडीगढ़ से गोबर मंगवाना पड़ता है। हम चंडीगढ़ के आसपास के गांवों से 10 ट्रक गोबर खरीदते हैं। मजदूरों की मजदूरी भी जोड़ दें तो सालाना 10,000 रुपये खर्च हो जाते हैं।
इस खेती के बारे में मैंने जो समझा है, वह यह है कि यह पारंपरिक तरीकों से अधिक उत्पादक तो है, लेकिन अधिक खर्चीली भी है। यही कारण है कि जिनके पास आय का कोई अन्य स्रोत नहीं है, वे इस काम को नहीं अपना सकते। मशीनी खेती महंगी है। ट्रैक्टर और ट्यूबवेल के बिल बढ़ते ही रहते हैं, और उपज बेचकर जो भी पैसा मिलता है, वह कृषि उपकरण बेचने वाले दुकानदारों की जेब में चला जाता है। यह पैसा छोटे-मोटे मरम्मत के लिए बुलाए गए इलेक्ट्रीशियन को भी जाता है। बाकी पैसा खेत में काम करने वालों के पास चला जाता है। जब हम अपना हिसाब-किताब जोड़ते हैं, तो पता चलता है कि हम कुछ भी नहीं बचा पाते। मुझे फार्म मैनेजर के रूप में लगभग 250 रुपये प्रति माह मिलते हैं, जो एक मजदूर की कमाई के बराबर है। इमारतों, मशीनों और उपकरणों के रखरखाव पर सालाना 3000 रुपये खर्च हो जाते हैं। हमारी सारी उपज हमारे खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अधिकतम उत्पादन तभी होता है जब बारिश अच्छी होती है। मुझे नुकसान की भरपाई के लिए अपने पति के वेतन से काफी पैसा खर्च करना पड़ता है।

(पृष्ठ 415)
लेकिन हमें इस बात का कोई अफसोस नहीं है क्योंकि हमें स्वच्छ और मिलावट रहित भोजन मिलता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।
दूध से मक्खन बनाना व्यायाम के लिए अच्छा है। आजकल मक्खन निकालने की मशीनें आसानी से मिल जाती हैं, लेकिन मैं उनका इस्तेमाल नहीं करता। अगर मैं उनका इस्तेमाल करने लगूँ, तो व्यायाम करना छोड़ दूँगा। ट्यूबवेल में स्नान करना बहुत सुखद होता है। हम इस आनंद को नहीं छोड़ सकते। ट्यूबवेल का पानी गर्मियों में

ठंडा और सर्दियों में गर्म होता है। हमारा मानना है कि मनुष्य केवल पैसा कमाने के लिए पैदा नहीं हुआ है, वह काम करने के लिए पैदा हुआ है। उसे अपनी उपज बाँटनी और साझा करनी चाहिए। हम गुरु नानक देव जी के उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं; उन्हें अपने अंतिम वर्षों में जीता रंधावा ने करतारपुर में कुछ ज़मीन दी थी। वे अपने खेतों की सारी उपज लंगर में देते थे, और आगंतुक उस भोजन को ग्रहण करते थे। हम प्रकृति के बीच रहते हैं; हम अपनी उपज अपने श्रमिकों के साथ बाँटते हैं। मुझे यह जीवन पसंद है, और यह अनुभव हमारे लिए बहुत प्रिय है।

—

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

शब्दावली

आमलाना: वास्तव में/ वास्तविकता में
आरती: एक अनुष्ठानिक पूजा जिसमें जलते हुए दीपों से भरी थाली को किसी मूर्ति या व्यक्ति के सामने गोलाकार गति में घुमाया जाता है और साथ में स्तुति गीत गाया जाता है।
आहुति: अग्नि पूजा के लिए दी जाने वाली बलि, विशेषकर यज्ञ/हवन में। अलगोज़ा: दो बांसुरी वाला वाद्य यंत्र। अक्क: औषधीय पौधा।
अमृत: पवित्र जल
अनाबी: वाइन के रंग का
अन्ना थ: पुराना सिक्का जो अब प्रचलन से बाहर है, जिसका मूल्य रुपये का 1/16 भाग है। अराइन: पंजाब क्षेत्र की एक कृषि प्रधान जाति, जो अधिकतर मुस्लिम हैं।
अरदास: प्रार्थना, विशेष रूप से सिखों द्वारा की जाती है। अर्जुन: टर्मिनलिया अर्जुन, एक वृक्ष प्रजाति जिसका उपयोग आयुर्वेद में औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है।
अरोरा: पंजाब क्षेत्र से उत्पन्न एक समुदाय। यह खत्री जाति की एक शाखा है, दूसरी शाखा पंजाबी खत्री है।

अस्सलामु-अलेकुम: ‘आप पर शांति हो’ (अरबी)

बागड़ी: एक जनजाति जो क्षत्रिय होने का दावा करती है और बंगाल, राजस्थान, गुजरात और पंजाब में पाई जाती है। ये मुख्य रूप से कृषक हैं और इन्हें जाट और गुर्जर उपजातियों से भी संबंधित माना जाता है।
बहेड़ा: बहेड़ा एक जड़ी बूटी है, जिसे अंग्रेजी में आमतौर पर बेलिरिक मायरोबालन कहा जाता है, और इसका वानस्पतिक नाम टर्मिनलिया बेलेरिका है। संस्कृत में, इस वृक्ष को विभीता या विभीतक के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है निर्भय।
बैसाख/वैसाख महीना: उत्तर भारतीय पंचांग का महीना, जो आमतौर पर ग्रेगोरियन पंचांग के मध्य अप्रैल से मध्य मई के बीच पड़ता है। शब्दावली के अंत में दिए गए पंचांग को देखें। बैसाखी: बैसाख महीने (अप्रैल-मई) के पहले दिन मनाया जाने वाला वसंत उत्सव, जो फसलों की कटाई के मौसम का जश्न मनाता है।
बानी या वाणी का अर्थ है वाणी/शब्द। अतः, गुरबानी का अर्थ है गुरु का वचन, और इसका प्रयोग पवित्र ग्रंथों के संदर्भ में किया जाता है।
बनिया: हिंदू दुकानदार, किराना व्यापारी, सौदागर, साहूकार, व्यवसायी। व्यापारियों की वैश्य जाति से संबंधित।
बनवासी/वनवासी: वनवासी। (बन/वन: वन, और वासी, यानी निवासी/निवासी।)
बावड़ी: सीढ़ीदार कुआँ। संदर्भ के लिए अग्रसेन की बावड़ी और राजस्थान की प्रसिद्ध सीढ़ीदार कुएँ देखें। बारात: विवाह जुलूस
बाराती: शादी के जुलूस के सदस्य। बारहसिंगा: एक प्रजाति का दलदली हिरण जिसके कई सींग होते हैं (शब्द = 12, सिंघा = सींग)। बसुहती: केप मर्टल का फूल।
बाज़ार: व्यापारिक प्रतिष्ठान
बेदी: उत्तरी भारत में सिख खत्री/क्षत्रिय जाति। बीन: एक वाद्य यंत्र, जिसे पुंगी भी कहा जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। बेगम: रानी, पत्नी को भी दर्शाता है।
बेर/बेरी: उत्तर भारतीय बेर; ज़िज़िफ़स मॉरिटियाना, जिसे चीनी खजूर, बेर, चीनी सेब,

जुजुबे, भारतीय बेर, रेगी पंडू, भारतीय जुजुबे, डंक्स (बारबाडोस में) और मसाऊ (ज़िम्बाब्वे में) के नाम से भी जाना जाता है, रामनेसी कुल से संबंधित एक उष्णकटिबंधीय फल वृक्ष प्रजाति है। बेसन, वेसन: चने का आटा
Bhabhi ji: sister-in-law
भादों: उत्तर भारतीय पंचांग के अनुसार अगस्त-सितंबर। भजन: हिंदू भक्ति गीत, अन्य धर्मों के भक्ति गीतों पर भी लागू हो सकता है, जिसमें सिख धर्म के गीत भी शामिल हैं।
Bhakti or Bhagti: worship
भल्ला: दाल का पकौड़ा
भापा: आज, यह शब्द रावलपिंडी और आसपास के क्षेत्रों से भारत में पुनर्वास के लिए आए सिख शरणार्थियों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक अपमानजनक शब्द है। मूल रूप से, इस शब्द का प्रयोग (रंधावा सहित अन्य लोगों द्वारा जाति और क्षेत्र के सूचक के रूप में) खत्री और अरोरा सिख व्यापारियों के लिए किया जाता था, और यह पोठोहारी पंजाबी बोली में उनके द्वारा प्रयुक्त एक सम्मानजनक शब्द 'भापा' या 'भापा जी' से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'भाई' होता है।
भटूरा: फूली हुई तली हुई रोटी
बीबी: संज्ञा, स्त्रीलिंग सम्मानसूचक शब्द, अनौपचारिक: बोलचाल की भाषा में माँ/बहन/बेटी/बहू के लिए प्रयुक्त संबोधन।
बीघा: भूमि क्षेत्रफल मापने की एक इकाई जो स्थानीय रूप से 1/3 से 1 एकड़ (1/8 से 2/5 हेक्टेयर) तक भिन्न होती है। बिंदे: मानसूनी मौसम में पाए जाने वाले छोटे कीड़े।
बोली (बहुवचन: बोलियां): पंजाब में ताली बजाते हुए गाए जाने वाले लोकगीत। बुर्ज: मीनार, स्तंभ, गुंबद।

चाचा जी: चाचा, पिता का छोटा भाई। चाची जी: चाची, यानी पिता के छोटे भाई की पत्नी। चामर्दी: दलितों का निवास स्थान, जहाँ चमड़ी का काम करने वाली दलित जाति गाँव के बाहरी इलाके में रहती है।
चंबा/चंपा: मैग्नोलिया चंपाका, एक सुगंधित फूल वाला पेड़। चमेली: चमेली
चपाती: दक्षिण एशिया और दुनिया के अन्य हिस्सों में बनाई जाने वाली पतली, बिना

खमीर वाली रोटी। चरही या चारी: ज्वार।
चौर: मक्खियों को भगाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक उपकरण, जो याक की पूंछ, मोर के पंख या कृत्रिम सामग्री से बना होता है। उदाहरण के लिए, गुरुद्वारों में पुजारी इसका उपयोग गुरु ग्रंथ साहिब से मक्खियों को भगाने के लिए करते हैं। अब, मंदिरों में पंखे लगे होने के कारण, इसका उपयोग एक परंपरा बन गई है। चिमटे: संगीत उत्पन्न करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले लंबे, चिमटे जैसे वाद्य यंत्र।
चोंक-फूल: शायद सिर के ऊपर के बालों में गूंथा हुआ एक आभूषण। इसका अर्थ बालों में गुंथे हुए फूल भी हो सकता है।
चूड़ा: दुल्हनों द्वारा पहनी जाने वाली भारी लाल और सफेद चूड़ियाँ। चूड़ीदार: एक लचीला और शरीर से चिपका हुआ पायजामा, जिसे पुरुष और महिलाएं दोनों पहनते हैं। चूड़ीदार पैंट/पायजामा संकरा होता है और पैरों से चिपका रहता है।
चटनी: भारतीय मूल का एक मसालेदार व्यंजन, जो फलों या सब्जियों से सिरका, मसाले और चीनी मिलाकर बनाया जाता है; सॉस या सॉस के लिए एक सूखा आधार।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। दांग: बांस की छड़ी, गदा, लाठी, डंडा, लाठी, नाइटस्टिक। दादी: दादी (पिता की तरफ से)।
दादरासी: राहत
दरबार: सभा, न्यायालय, श्रोता सभा। दर्शन: शाब्दिक अर्थ, देखना। इसका प्रयोग आमतौर पर धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जहाँ तीर्थयात्री देवता के दर्शन करते हैं।
Darwaza: door
दातुन: दांत साफ करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली नीम की टहनी
डेरा: सामाजिक-धार्मिक संगठन
देसी घी: देसी का अर्थ है स्थानीय, देशी या स्वदेशी, घी एक प्रकार का शुद्ध मक्खन है। धड़: छोटा ड्रम।
धर्मशाला: यात्रियों के लिए सराय या विश्राम गृह। आमतौर पर धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए निर्मित।
धोबी: कपड़े धोने वाला व्यक्ति, आमतौर पर पुरुष।

धोती: कमर पर पहना जाने वाला और पैरों को ढकने वाला वस्त्र। डोगरा: भारत और पाकिस्तान का एक इंडो-आर्यन जातीय-भाषाई समूह। इस संदर्भ में, चूंकि एम.एस. रंधावा का परिवार शिवालिक पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित दोआबा क्षेत्र में रहता है, इसलिए डोगरा लोग आसपास ही, यानी जम्मू और आसपास के क्षेत्रों में रहते हैं। डोली: विवाह के दौरान दुल्हन को ले जाने वाली पालकी। दुपट्टा/चुन्नी: महिलाओं का दुपट्टा, लबादा या घूंघट।

फकीर: घुमंतू भिक्षु
फलाही का पेड़: अकेशिया मोडेस्टा, एक कांटेदार पेड़ है।

गैंडा: गैंडा
गलगल: सिट्रस स्यूडोलीमोन एक स्वदेशी खट्टे फल है जिसे 'पहाड़ी नींबू' या 'कुमाऊं नींबू' भी कहा जाता है।
गली: सड़क (जिसे गल्ली भी लिखा जाता है)
गणेश: हिंदू धर्म में हाथी के देवता, खाने के शौकीन, अपने माता-पिता की सेवा करने वाले, विद्वान और बुद्धिमान माने जाते हैं, और घरों को धन, सुख और सौभाग्य से भर देते हैं। घाघरा: लंबी, ढीली बहने वाली स्कर्ट।
ग़ज़ल: छोटी, लयबद्ध, तुकबंदी वाली कविता
गोलू: एक प्रकार का रंग। इसे नील या इंडिगो भी कहते हैं। गोपियाँ: ग्वालों की सहेलियाँ, भगवान कृष्ण की महिला साथी। गुलुबंद: मफलर।
गुरबानी: गुरु के वचन
गुरुद्वारा: सिखों का पूजा स्थल
गुरसिख: गुरु का सिख

हल्दू: एडिना कॉर्डिफोलिया, अंडाकार पत्तियों वाला एक पर्णपाती वृक्ष है जो 20 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई तक बढ़ सकता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। हलवा: गेहूं के आटे या दानेदार गेहूं, चीनी और घी से बना एक प्रकार का हलवा।

हनुमान: हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान राम के प्रमुख भक्त, जिन्हें बंदर के रूप में दर्शाया गया है। हरड़: एक औषधीय पौधा, वैज्ञानिक नाम: टर्मिनलिया चेबुला। हवन: अग्नि पूजा।
हवेली: महल
हवलदार: सार्जेंट के समकक्ष सैन्य पद। ब्रिटिश भारतीय सेनाओं में, देशी सैनिकों का एक गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारी।
हुक्का: धूम्रपान पाइप
हूरन, अप्सरा: सुंदर स्त्रियाँ, दिव्य नर्तकियाँ। होशियारपुरी: होशियारपुर की।
हुजूर: संबोधन का सम्मानजनक तरीका: योर ऑनर, सर, योर लॉर्डशिप; पुल्लिंग
संज्ञा: उपस्थिति, हाजिरी; दरबार।

Ittelahi: information

जागीरदारी: सामंतवाद, सामंती व्यवस्था, जहाँ जागीर एक ऐसा क्षेत्र होता है जिस पर शासन किया जाता है/कर वसूला जाता है। जागरण: हिंदू धर्म में रात भर देवी-देवताओं की स्तुति करना। जलेबी: चीनी की चाशनी में डूबी हुई एक सर्पिलाकार मिठाई। गेहूं के आटे की सर्पिलाकार पट्टियों को तेल में तलकर फिर चीनी की चाशनी में भिगोकर बनाई गई जलेबी दक्षिण एशिया की एक लोकप्रिय मिठाई है। जनाब: माननीय महोदय/महोदया।
जन्माष्टमी: भगवान कृष्ण के जन्म के सम्मान में प्रतिवर्ष अगस्त या सितंबर में मनाया जाने वाला हिंदू त्योहार।
जपजी साहिब: जपजी साहिब सिख धर्म के प्रमुख पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में पाई जाने वाली पहली पवित्र रचना है, जिसका श्रेय प्रथम सिख गुरु, गुरु नानक देव जी को दिया जाता है। जाट/जुट्ट: उत्तर-पश्चिमी भारत की एक कृषि प्रधान जाति का नाम; इस जाति के सदस्य, किसान, कृषक या खेतिहर मजदूर को संदर्भित करता है।
जत्था: एक ही उद्देश्य/लक्ष्य को पूरा करने वाले लोगों का समूह। जत्थेदार: किसी समूह या जत्थे का नेता/कमांडर। जवान: सेना के संदर्भ में, जवान का अर्थ सैनिक होता है। सामान्य अर्थ में, जवान का तात्पर्य युवा व्यक्ति से है।
जेठ-हाद: मई/जून से जून/जुलाई

झरोखा: राजस्थान और भारत-इस्लामी वास्तुकला में प्रयुक्त लटकती हुई बंद बालकनी।
झियोरी (झियोरी: स्त्री, झियोर: पुरुष): एक जाति के पुरुष और महिलाएं जो शादियों और बड़े समारोहों/अवसरों के लिए पेशेवर रसोइया के रूप में काम करते हैं। गांव के अधिकांश चूल्हे झियोर जाति के लोगों के स्वामित्व में हैं, यहां इसका तात्पर्य एक महिला झियोरी के चूल्हे से है। जी: सम्मान या आदर का प्रत्यय, स्नेह या श्रद्धा का शब्द, महोदय; क्रियाविशेषण: जी महोदय या जी महोदया।

कचनार: ऑर्किड वृक्ष की प्रजाति

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। काफ़िर: नास्तिक
कैंथा वृक्ष: कैसिया फिस्टुला, जिसे आमतौर पर गोल्डन शावर, पर्जिंग कैसिया, इंडियन लेबर्नम या पुडिंग-पाइप वृक्ष के नाम से जाना जाता है, इसमें प्रचुर मात्रा में पीले फूल लगते हैं, इसका उपयोग आमतौर पर सजावटी पौधे के रूप में किया जाता है, और यह भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया का मूल निवासी है। काको: स्नेह का शब्द। काका का अर्थ है बच्चा। यह पुल्लिंग रूप के लिए भी प्रयोग किया जाता है, जबकि काकी या काको स्त्रीलिंग रूप है।
कलश: एक धातु का बर्तन, जिसे आमतौर पर मंदिर के शिखर या शीर्ष पर रखा जाता है, लेकिन इसका उपयोग अन्य अनुष्ठानिक तैयारियों में भी किया जाता है।
कलीरा: शादी की चूड़ियों या चूड़े में लगाया जाने वाला सोने/चांदी का छाता के आकार का आभूषण है। कलगी: कलगी, पगड़ी का आभूषण।
Kamala or Kaamal tree: Mallotus philippensis, red kamala or Kumkum tree Kamni: orange jasmine flower
कानर: कैस्काबेला थेवेटिया, पीला ओलियंडर, अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगता है। कनुंगो: स्थानीय कानून अधिकारी।
कंवर: राजकुमार
कारा: लोहे की चूड़ी, सिख धर्म का प्रतीक। कराह प्रसाद: प्रार्थना के अंत में गेहूं के आटे, चीनी और घी से बनी मिठाई का अनुष्ठानिक अर्पण; हिंदी में प्रसाद भी कहा

जाता है। कढ़ाई: दक्षिण एशियाई खाना पकाने में इस्तेमाल होने वाला कड़ाहीनुमा फ्राइंग पैन। कट्टक: उत्तर भारतीय पंचांग के अनुसार 15 अक्टूबर से 13 नवंबर। कबाब और कीमा: मसालेदार मांस के रोल और कीमा। केशधारी: लंबे बाल रखने वाला व्यक्ति, शाब्दिक अर्थ: केश का अर्थ बाल और धारी (प्रत्यय) का अर्थ बाल रखने वाला व्यक्ति।
Khadi: hand-spun; also khaddar
खंडा: दोधारी तलवार
खार्तल: हाथों पर पहना जाने वाला एक वाद्य यंत्र। हाथों को तेजी से ताली बजाने की गति में हिलाने पर खार्तल के दोनों सिरे आपस में टकराते हुए तेज ताल उत्पन्न करते हैं। खेस: भारी सूती शॉल या चादर, कंबल का सूती विकल्प। आड़ी-तिरछी बुनाई से बनी ये चादर सर्दियों में गर्माहट प्रदान करती है।
खिचड़ी: चावल, दाल, घी और मसालों से बना एक प्रकार का नमकीन दलिया।
खोया: गाढ़ा दूध।
Khuda: god
किक्कर: बबूल का पेड़; बबूल या कांटेदार छुईमुई का पेड़, वाचेलिया निलोटिका।
कीर्तन: भक्ति संगीत.
कोठा: एक ऊपरी कक्ष या तल, जिसका अर्थ वेश्यालय भी हो सकता है। कुंभ: गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में रखा जाने वाला जल पात्र; ऐसा माना जाता है कि प्रार्थना समाप्त होने पर यह जल अमृत बन जाता है।
कुश्ती: कुश्ती
कच्चा: अस्थाई, अस्थायी, अधपका, आधा पका हुआ; पकी हुई ईंट या कंक्रीट से निर्मित नहीं

लड्डू: यह एक गोल आकार की मिठाई है जिसे विभिन्न भरावनों से बनाया जाता है। इसके मूल तत्व मैदा, घी और चीनी हैं। इसमें कई प्रकार के आटे, सूखे मेवे और नट्स, टॉपिंग, फ्लेवर और रंग जैसे कई प्रकार के लड्डू पाए जाते हैं, लेकिन इसका गोल आकार इसकी खासियत है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया

अनुमति के बिना प्रसारित न करें। लाला: हिंदू व्यापारी के लिए एक विशेषण या संबोधन। लंगर: सामुदायिक रसोई।

लंगोट: ग्रामीण क्षेत्रों में पहलवानों की पोशाक, जो सूमो पहलवानों की पोशाक के समान होती है। लस्सी: छाछ।

लाठी: एक लकड़ी की छड़ी, जो डंडे के आकार की होती है। लीला: खेल या चंचल संबंध। यहाँ, हिंदू पौराणिक कथाओं में कृष्ण, राधा और गोपियों के बीच प्रेम का खेल दर्शाया गया है।

लिंग: शैव धर्म में हिंदू देवता शिव का अमूर्त या निराकार प्रतिनिधित्व। आमतौर पर शिव को समर्पित हिंदू मंदिरों में यह मुख्य मूर्ति या पूजा प्रतिमा होती है, जिसका आकार लिंग के समान होता है, जो देवता की सृजनात्मक शक्ति को दर्शाता है।

लोबाना: उत्तर भारत की एक सिख जाति का सामान्य नाम है, जिसके विभिन्न पेशे हैं (परिवहन, कृषि, सैनिक आदि)।

लू: उत्तर भारत और पाकिस्तान के पश्चिमी इंडो-गंगा मैदान क्षेत्र में पश्चिम से चलने वाली तेज़, धूल भरी, तूफानी, गर्म और शुष्क ग्रीष्मकालीन हवा। लुगड़ी: पहाड़ियों में पिया जाने वाला मादक पेय, जो चावल या जौ को किण्वित करके बनाया जाता है।

मान्ह दाल: एक प्रकार की मसूर या दाल, शाब्दिक अर्थ: हॉर्स बीन, (पौधे का नाम: फेजोलस रेडिएटस)। माधवी बेल: हिप्टेज बेंगालेंसिस

माघी: उत्तर भारतीय पंचांग के ग्यारहवें महीने, माघ के पहले महीने में मनाया जाने वाला त्योहार।

महाजन: व्यापारियों, दुकानदारों और साहूकारों की जाति; सामान्यतः इन व्यवसायों को भी संदर्भित करता है।

महंत: मंदिर का मुख्य पुजारी

महाराजा: राजा, लिट. महा: महान, राजा: राजा महावत: हाथी प्रशिक्षक/ देखभालकर्ता

महसीर: कार्प परिवार की कई प्रजातियों की खाने योग्य मछली का सामान्य नाम।

मक्खन का पेड़: फिकस कृष्णाई, या कृष्ण का बटरकप; अंजीर की एक किस्म, जो अपने प्याले के आकार के पत्तों के लिए जानी जाती है और मक्खन प्रेमी भगवान कृष्ण से लोकप्रिय रूप से जुड़ी हुई है। मक्की दी रोटी: कॉर्नब्रेड

मालवाई: पंजाब के मालवा क्षेत्र के लोग। मामा जी: चाचा, शाब्दिक अर्थ, माता का भाई। मंडप: हिंदू मंदिर वास्तुकला में, सार्वजनिक अनुष्ठानों के लिए स्तंभों वाला हॉल या मंडप। मनसबदार: मुगल सम्राट अकबर द्वारा स्थापित सैन्य-सह-प्रशासनिक कमान की एक श्रृंखला। मनसब एक पद को दर्शाता है, और मनसबदार एक पदधारक को संदर्भित करता है। मरासी/मिरासी: वे लोग जो परंपरागत रूप से गाते और नाचते हैं, विभिन्न धार्मिक समुदायों से संबंधित हो सकते हैं।
मारवाड़ी: राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र से उत्पन्न एक समुदाय; एक सफल व्यावसायिक समुदाय
मश्क: पशु की खाल से बनी तैरने वाली नलियाँ। मश्क बकरी की खाल से बना एक पारंपरिक उपकरण है जिसका उपयोग पानी ढोने के लिए किया जाता है। यह पारंपरिक रूप से बिष्टी नामक उपजाति से जुड़ा है, जो सार्वजनिक स्थानों पर पानी से भरी मश्क ढोने के लिए जिम्मेदार होती है। माता: माँ

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। मौल्सरी: मिमुसोप्स एलेन्गी दक्षिण एशिया, दक्षिणपूर्व एशिया और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाने वाला एक मध्यम आकार का सदाबहार वृक्ष है।
मौलवी: मुस्लिम धर्मगुरु
मौंड या मान: अलग-अलग समयों पर और दक्षिण एशिया के अलग-अलग स्थानों में, मौंड का वजन 25 पाउंड (11 किलोग्राम) से लेकर 160 पाउंड (72.5 किलोग्राम) तक भिन्न-भिन्न रहा है। मीनार: बुर्ज या मीनार
मिश्री: चीनी के क्रिस्टल
मिसल: संप्रदाय/समूह
मोहल्ला: आवासीय क्षेत्र/इलाका; गली को भी संदर्भित कर सकता है। मूडी: एक बेलनाकार स्टूल (कभी-कभी मुढा भी लिखा जाता है)। मूंग दाल: हरी मूंग।
मोर्चा: युद्ध की एक तकनीक, जिसमें तोपखाना, पैदल सेना, घुड़सवार सेना आदि को समूह विभाजन के अनुसार अलग-अलग तैनात किया जाता है। समूहों को व्यवस्थित करने की इस विधि को रैलियों के आयोजन में भी अपनाया गया है।
मोतिया: चमेली के फूल की एक किस्म।

मुफ्ती: मुस्लिम कानूनी विशेषज्ञ जो धार्मिक मामलों पर निर्णय दे सकते हैं। मुजरा: दरबारी महिलाओं द्वारा किया जाने वाला गायन और नृत्य, जो मुगल काल में विकसित हुआ। मुंडन: हिंदू नवजात शिशुओं के लिए एक वर्ष के बाद किया जाने वाला पहला समारोह है, जिसमें उनके बाल मुंडवाए जाते हैं और उनके स्वस्थ विकास के लिए पूजा (प्रार्थना) की जाती है।

नायब तहसीलदार: सहायक/उप तहसीलदार। नैन: महिला नाई। वे विवाह कराने वाली होती थीं, इसलिए उन्हें विशेष रूप से शादियों में आमंत्रित किया जाता था।
नम्बरदार/लम्बरदार: गाँव के मुखिया नानी जी: नानी जी
नरसिंघा: तुरही
नैट: भारत के कुछ राज्यों में अनुसूचित जाति के रूप में वर्गीकृत एक हाशिए पर स्थित निम्न जाति है। नीम: ज़िज़िफ़स मॉरिटियाना, जिसे चीनी खजूर, बेर, चीनी सेब, जुजुबे, भारतीय बेर, रेगी पंडु, भारतीय जुजुबे, डंक्स (बारबाडोस में) और मसाऊ (ज़िम्बाब्वे में) के नाम से भी जाना जाता है, रहम्नेसी कुल से संबंधित एक उष्णकटिबंधीय फल वृक्ष प्रजाति है।
निहंग: मूल रूप से सिख योद्धा, आज पारंपरिक मार्शल आर्ट का अभ्यास करते हैं। वे कुछ डेरों में ब्रह्मचारी योद्धाओं के संप्रदायों के रूप में रहते हैं और विस्तृत पगड़ी पहनने के लिए जाने जाते हैं। नूर: दिव्य प्रकाश।

पाकड़: सफेद अंजीर का पेड़। इसका वैज्ञानिक नाम फिकस विरेन्स है। पान: सुपारी और पान के पत्तों से बना व्यंजन। पद्म: जंगली हिमालयी चेरी का पेड़।
पहाड़ी: शाब्दिक अर्थ, पहाड़ी/पर्वत का।
पकोड़ी रायता या बूंदी रायता: एक ठंडा, मसालेदार दही का व्यंजन जिसे आमतौर पर चावल के साथ परोसा जाता है, जिसमें तले हुए चने के आटे की बूँदें या पकौड़े जैसी चीज़ें भी मिलाई जाती हैं। पकोड़ा: पकौड़ा

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया बिना अनुमति के प्रसारित न करें। पंचायत घर: शाब्दिक अर्थ: पंचायत (ग्राम प्रशासन, पंच का अर्थ पाँच होता है, और पंचायत गाँव से चुने गए पाँच नेताओं की शासी निकाय

को संदर्भित करता है), और घर का शाब्दिक अर्थ घर होता है, लेकिन यहाँ इसका तात्पर्य पंचायत कार्यालय से है। परांडी: सजावटी हेयर एक्सटेंशन। परांडी बालों को बांधने या चोटी बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला एक लटकनदार टैग होता है। परांठा: मक्खन से भरा हुआ और तला हुआ/टोस्ट किया हुआ भारतीय ब्रेड। इसमें सब्जियों, मांस आदि से बनी कई तरह की भराई हो सकती है।

पर्दा: हिंदू और मुस्लिम धर्म में महिलाओं द्वारा पुरुषों या अजनबियों से मिलने से बचने के लिए घूंघट/पर्दे का उपयोग करने की प्रथा।

पताशा; बहुवचन पताशे, एक प्रकार की मीठी बूंद, चीनी का बुलबुला। पटवारी: ग्राम स्तर का राजस्व अधिकारी जिसे भूमि माप, भूमि जोत का रिकॉर्ड रखने, फसलों का सर्वेक्षण करने और भू-राजस्व की गणना करने का कार्य सौंपा जाता है, और भूमि विवादों के मामले में मध्यस्थता करने का प्रशासनिक अधिकार होता है।

पीपल का पेड़: पवित्र अंजीर का पेड़, फिकस रिलिजियोसा। फागुन: मध्य मार्च और चेट: मध्य अप्रैल। शब्दावली के अंत में दिए गए कैलेंडर को देखें। पीहाई: एक छोटी कुर्सी का नाम।

फुलकारी: कढ़ाई वाला कपड़ा, जिस पर फूलों या आकृतियों की डिज़ाइन हो सकती है, जिसे परंपरागत रूप से महिलाएं घर पर बनाती हैं।

पिन्नी: घी में भुने हुए सूखे मेवे, सूखे मेवे और आटे के मिश्रण को बेलकर बनाई जाने वाली एक गोल मिठाई। यह आमतौर पर उत्तर भारत में सर्दियों के मौसम में बनाई जाती है।

पीर: मुस्लिम सूफी गुरु या आध्यात्मिक मार्गदर्शक। पिता: पिता।

पोह: दिसंबर-जनवरी। शब्दावली के अंत में दिए गए चार्ट कैलेंडर को देखें। पूनी: धागे से ढकी हुई तकली।

पोठोहारी: शाब्दिक अर्थ, पोठोहार के लोग, पोठोहार क्षेत्र के निवासी। पोठोहार उत्तर पूर्वी पाकिस्तान का एक पठारी क्षेत्र है।

पुक्का: कंक्रीट या पकी हुई ईंटों से निर्मित, टिकाऊ, स्थायी। पुंगारा फूल: एक्लिप्टा प्रोस्ट्राटा या भृंगराज

रबाबी: शाब्दिक अर्थ, रबाब बजाने वाले; रबाब एक वीणा जैसा वाद्य यंत्र है। राग: संगीत का पैमाना।

रागी: राग गाने वाला, सिख भजन गायकों के लिए प्रयुक्त शब्द। राम चंद्र: हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान विष्णु के अवतार, भगवान राम। उनके जीवन की कथा महाकाव्य रामायण में वर्णित है।
रामधारी: भगवान राम के भक्त
रामलीला: रामायण का मंचन
रोशनदान: घर की दीवारों में बना एक वेंटिलेटर जैसा छिद्र, जो घर में सूर्य की रोशनी आने देता है और हवा का निरंतर प्रवाह बनाए रखता है। इसका दोहरा कार्य इसके नाम में ही निहित है, 'रोशन' का अर्थ है 'प्रकाश डालना' और 'रोशनी' का अर्थ है प्रकाश।

सावन: जुलाई-अगस्त। शब्दावली के अंत में दिए गए कैलेंडर चार्ट को देखें। साहिब: स्वामी, स्वामी, प्रमुख, आदरणीय व्यक्ति; सर, नामों या पदनामों के साथ प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द। इसका प्रयोग श्वेत पुरुषों और यूरोपीय लोगों के लिए भी किया जाता है।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। सलवार: पजामा के आकार का, तहों वाला ढीला निचला वस्त्र। संक्रांति: पारंपरिक पंचांग के अनुसार प्रत्येक माह का पहला दिन, जो चंद्रमा के घटने और बढ़ने के क्रम पर आधारित होता है।
सारंगी: धनुष से बजाया जाने वाला एक वाद्ययंत्र सरदारनी: सिख महिला
सरों दा साग: सरसों के साग से बनी सब्जी। सरोवर: पवित्र तालाब।
सेहरा: माला, लॉरेल या पुष्पांजलि, आमतौर पर एक हेडबैंड जिसमें लटकते हुए गुच्छे होते हैं जो दूल्हे के चेहरे को ढकते हैं।
सेठ: धनी व्यापारी या व्यवसायी, साहूकार, धनी व्यक्ति। सेवा: सेवा।
शबद कीर्तन: सिख धार्मिक भजन
शगुन: होने वाली दुल्हन के परिवार द्वारा शुभकामनाओं और सौभाग्य का प्रतीक के रूप में दिया जाने वाला उपहार। इस उपहार में आमतौर पर कपड़े, मिठाई और पैसे शामिल होते हैं।
शायरी: उर्दू में कविता

शीशम या तहली: भारतीय गुलाब की लकड़ी का पेड़। शिखर: मंदिर का ऊपरी नुकीला भाग। शिखरा: शिकारी पक्षी।
शिल्पकार: शाब्दिक अर्थ, शिल्पकार/शिल्पकारगण
श्रृंगार रस: कामुक प्रेम, आकर्षण और सौंदर्य का रस (लगभग, स्वाद)। सिंबल/सेमल वृक्ष: बॉम्बेक्स सीबा या कपास का पेड़, लाल रेशम-कपास; लाल कपास का पेड़। यह एशियाई उष्णकटिबंधीय वृक्ष है जिसका तना सीधा और लंबा होता है और इसके पत्ते सर्दियों में झड़ जाते हैं। वसंत ऋतु में नए पत्ते आने से पहले पाँच पंखुड़ियों वाले लाल फूल खिलते हैं।
सिंदूर: लाल रंग; बालों की रेखा के बीच में लगाया जाता है, जो हिंदू महिला के विवाहित होने का प्रतीक है।
सिरोपा: सम्मानात्मक वस्त्र, आमतौर पर एक स्कार्फ। सुआ: नहर की सहायक नदी।
सूबेदार: प्रांतीय राज्यपाल; भारतीय और पाकिस्तानी सेना में एक कनिष्ठ कमीशन प्राप्त पद। सुखमनिःसह साहिब: गुरु ग्रंथ साहिब का एक भाग, जिसकी रचना पाँचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव ने की थी। 84 लाख जन्म या जूनियान उस अपरिहार्य जन्म-मृत्यु चक्र को संदर्भित करता है जिससे सभी जीवित प्राणियों को मोक्ष प्राप्त करने से पहले गुजरना पड़ता है। हिंदू धर्मग्रंथों और व्याख्याओं में आमतौर पर उद्धृत यह विचार कुछ सिखों द्वारा भी व्यक्त किया जाता है।
सुक्खा: एक अफीमयुक्त मादक पदार्थ, जिसे भांग भी कहा जाता है। सुनियार: सुनार, सुनार जाति।

ताया: पिता का बड़ा भाई
तख्तपोश: तख्त या नीचा, लकड़ी का पलंग/चबूतरा। तालुकदार: मुगल और ब्रिटिश काल में शासक वर्ग के कुलीन लोग, जिनके पास पुश्तैनी जमीनें थीं और जो कर वसूलने के लिए जिम्मेदार थे। तालुकदारनी महिला तालुकदार होती है।
तालुकदारी/ तालुकदारी: तालुकदार द्वारा शासित जिला या संपत्ति

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें। तप्पे: अर्ध-शास्त्रीय गीत, तीव्र गति वाले, आमतौर पर प्रेमियों/प्रेमियों के वियोग को संबोधित। ये गीत गतिशील और लयबद्ध होते हैं,

जिनमें ताल प्रेमियों के मिलन और वियोग का प्रतीक होती है। तारखान: बढ़ई, बढ़इयों की एक जाति का नाम भी। तातिरी: लाल-वॉटल्ड लैपविंग
तहसील: जिले का राजस्व या प्रशासनिक उप-विभाग; उसका कार्यालय या मुख्यालय। तहसीलदार: तहसील के राजस्व प्रशासन का प्रमुख अधिकारी। तराई: हिमालय की निचली तलहटी और मैदानों के बीच स्थित दलदली जंगल की पट्टी।
टेर्ना: ऊन के गोले बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रकार का छोटा चरखा। थाडा: सीमेंटेड प्लेटफॉर्म।
ठाकुर: कुलीन व्यक्ति/जमींदार के लिए उपाधि
ठाकुरैन/ठाकुरानी: ठाकुर की पत्नी। थानेदार: पुलिस स्टेशन (थाना) का प्रभारी अधिकारी। तिल्यार: भारत और पाकिस्तान में पाया जाने वाला एक छोटा, भूरा या काला प्रवासी पक्षी। तांगा: एक या अधिक घोड़ों द्वारा खींचा जाने वाला हल्का दो पहिया वाहन। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में परिवहन के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें एक छत होती है और बड़े पहियों का एक जोड़ा होता है।
तूंबा: पंजाब क्षेत्र का एक पारंपरिक वाद्य यंत्र। इसे 'टुम्बी' भी कहा जाता है, इससे एक तीखी ध्वनि निकलती है और इसमें एक ही तार होता है जिसे लोकगीतों में संगीत जोड़ने के लिए बजाया जाता है।
कार्टून वृक्ष: लाल देवदार
टूटानी: दो बांसुरियों वाला एक वाद्य यंत्र

वड़ी: दाल के पकौड़े
वंझली: बांसुरी जैसा एक पारंपरिक वाद्य यंत्र। वटना: तेल, जौ के आटे और हल्दी से बना पेस्ट। इसका उपयोग विवाह अनुष्ठान के रूप में दूल्हा और दुल्हन की मालिश करने के लिए किया जाता है, जो पवित्र अग्नि के चारों ओर ली जाने वाली प्रतिज्ञाओं/आनंद कारज (सिख विवाह) को अंतिम रूप देने से पहले किया जाता है।
मंत्री: मंत्री
वेलना: वह क्षेत्र जहाँ गन्ने के रस को पकाकर गुड़ बनाया जाता है।

वाह: वाह! या महान!; प्रशंसा व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त। वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह!: सिख अभिवादन। वाहेगुरु: ईश्वर या परम सत्ता का नाम।

ज़ाराबक्तर: सैन्य वर्दी
ज़िला: स्थानीय प्रशासनिक प्रभाग
ज़िल्लादार: एक ज़िले का प्रशासक

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

परिवर्णी शब्द

ए.डी.सी.: अतिरिक्त उपायुक्त
ए.डी.एम.: अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट
ए.एस.पी.: अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
बी.डी.ओ.: ब्लॉक विकास अधिकारी
सी.आई.डी.: आपराधिक जांच विभाग
सी.एस.आई.आर.: वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद
डी.सी.: उपायुक्त/ जिला कलेक्टर
खाद्य एवं कृषि संगठन (F.A.O.):
आई.सी.ए.आर.: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
आई.सी.एस.: भारतीय सिविल सेवा
एन.ई.एफ.ए.: उत्तर पूर्वी सीमांत एजेंसी, जो आज अरुणाचल प्रदेश राज्य है।
पी.सी.एस.: प्रांतीय सिविल सेवा
पेप्सू: पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्य संघ
लोक निर्माण विभाग (P.W.D):
एस.डी.ओ.: उप-विभागीय अधिकारी
एस.पी.: पुलिस अधीक्षक
एस.एस.पी.: वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।

उत्तर भारतीय पंचांग में महीने

क्रमांक. नाम पंजाबी दिन ग्रेगोरियन महीने ऋतु
1 चेत 31 14 मार्च – 13 अप्रैल बसंत (वसंत) चेत

2 वैशाख 31 14 अप्रैल - 14 मई बसंत (वसंत) वैसाख

3 जेठ 31 15 मई - 14 जून गरिखाम (ग्रीष्म) जेठ

4 हरह 31 15 जून - 15 जुलाई गरीशम (ग्रीष्म) हरह

5 सावन 31 16 जुलाई-15 अगस्त रुत बारस (वर्षा ऋतु) विवरण

6 भादों 30 16 अगस्त - 14 रुत बारस (वर्षा ऋतु) भादों
सितम्बर
7 अस्सु 30 15 सितंबर - 14 सर्द (शरद ऋतु) अस्सु
अक्टूबर
8 कट्टक 30 15 अक्टूबर - 13 सर्द (शरद ऋतु) कटक
नवंबर
9 मगहर 30 14 नवंबर-13 सिसियार (शीतकालीन) मगहर
दिसंबर
10 पोह 30 14 दिसंबर – 12 सिसियार (शीतकालीन) पोह
जनवरी
11 माघ 30 (13 जनवरी – 11 फरवरी) हिमकार (शीतकालीन अंत/शीतकालीन आरंभिक)

वसंत)
12 फागुन 30/31 12 फरवरी – 13 मार्च हिमकार (शीतकालीन/प्रारंभिक फागुन)
वसंत)

नोट: पंजाबी नाम अंततः संस्कृत से व्युत्पन्न हैं, इसलिए महीनों के नाम उत्तर भारतीय भाषाओं में समान हैं, उच्चारण में मामूली अंतर के साथ।

कैलेंडर स्रोत: कोहली, सुरिंदर सिंह। गुरु ग्रंथ साहिब का एक वैचारिक विश्वकोश, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1992।

अनुवाद © रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड। कृपया अनुमति के बिना प्रसारित न करें।